

भोगमूर्तिमें सेरपा	७२०	पुद्गलका लक्षण	८०३
गुणस्वानामोंमें सेरपा	७२१	परमात्मा स्वरूप	८०४
देवोंमें सेरपा	७२१	एह द्रव्योंका लक्षण	८०४
अगुण सेरपावालोंकी संख्या	७२८	कालद्रव्यका स्वरूप	८०५
गुण सेरपावालोंकी संख्या	७३१	अमूर्त द्रव्योंमें परिणमन कैसे	८०७
सेरपावालोंका योग	७३५	पर्यायका काल	८०८
उपसाद क्षेत्रानयन	७४६	समय और प्रदेशका स्वरूप	८०८
गुणसेरपाका योग	७५८	भावली, उच्छ्वास, स्वीक और लक्षणा स्वरूप	८०९
अगुण सेरपाओंका स्पर्शन	७६०	नाभी मुहूर्त और मित्र मुहूर्तका स्वरूप	८१०
तेजोसेरपाका स्पर्शन तानेके लिए गणितही		व्यवहारका मनुष्यसौकर्म	८११
प्रक्रिया	७६२	अतीतकालका प्रमाण	८११
सब द्वीप-यमुओंका प्रमाण	७६८	वर्तमानकालका प्रमाण	८१२
एक योजनके अंगुल	७६९	भविष्यकालका प्रमाण	८१२
राज्यका प्रमाण	७७१	एह द्रव्योंका अवस्थानकाल	८१३
पद्म सेरपावालोंका स्पर्शन	७७६	एह द्रव्योंका अवस्थान क्षेत्र	८१४
गुणल सेरपावालोंका स्पर्शन	७७७	पुद्गल द्रव्य और कालानुके प्रदेश	८१५
एह सेरपाओंका काल	७७९	लोककाय और अलोककाय	८१७
” ” का अन्तर	७८०	द्रव्योंकी संख्या	८१७
सेरपासहित जीव	७८५	प्रदेशके तीन प्रकार	८२१
१६. मध्यमार्गणाधिकार	७८६-८००	फल, अफल फलाफल	८२१
मध्य और अमध्य जीव	७८६	पुद्गल वर्णानुके तैर्द्वि भेद	८२२
बी मध्य बी नहीं और अमध्य भी नहीं	७८७	वर्णानुओंका स्वरूप	८२३
अमध्य और मध्य जीवोंकी संख्या	७८७	वर्णानुओंमें व्यप्य-उल्लूह भेद	८२८
लोकमें द्रव्य परिवर्तन	७८८	पुद्गल द्रव्यके एह भेद	८४५
कर्म द्रव्य परिवर्तन	७९०	स्कन्ध, देश और प्रदेश	८४७
स्वदेश परिवर्तन	७९३	द्रव्योंका उपकार	८४८
परदेश परिवर्तन	७९३	जीव और पुद्गलका उपकार	८५०
काल परिवर्तन	७९४	कर्म वीरुगलिक है	८५०
भव परिवर्तन	७९५	वचन धर्मविक नहीं है	८५१
भाव परिवर्तन	७९६	मनके पृथक् द्रव्य और परमाणुरूप होनेका निराकरण	८५२
१७. सम्प्रवृत्त मार्गणाधिकार	८०१-८२१	पाँच ग्राह्य वर्णानुओंका कार्य	८५४
सम्प्रवृत्तका लक्षण	८०१	परमाणुओंके मध्यका कारण	८५४
सम्प्रवृत्तके दो भेद	८०१	तथा उसके नियम	८५६
द्रव्य, अर्थ और तत्त्व नाम क्यों ?	८०२	पाँच अस्तिकाय	८६०
एह द्रव्योंके अधिकार	८०२	नौ उदात्त	८६१
एह द्रव्योंके नामादि	८०३	गुणस्वानामोंमें जीवसंख्या	८६२
		उपशम धर्मोंमें जीवसंख्या	८६४

विषय-सूची

गुणस्थानों और मार्गणाओंमें

बीस प्ररूपणाओंका कथन

१५०

पर्याप्त गुणस्थानोंमें

"

अपर्याप्त गुणस्थानोंमें

"

सामान्य मिथ्यादृष्टियोंमें

१५१

पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंमें

"

अपर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंमें

"

सासादन गुणस्थानवालोंके

"

पर्याप्तक सासादन गुण.

१५२

अपर्याप्त सासादन गुण.

"

सम्बन्धिमिथ्यादृष्टिके

"

असंयत गुणस्थानवर्तीके

"

असंयत गुणस्थानवर्ती पर्याप्तके

१५३

असंयत गुणस्थानवर्ती अपर्याप्तके

"

देशसंयत गुणस्थानवर्तीके

"

प्रमत्त गुणस्थानवर्तीके

"

अप्रमत्त गुणस्थानवर्तीके

"

अपूर्वकरण, गुणस्थानवर्तीके

"

प्रथम भाग अनिवृत्तिकरणमें

१५४

द्वितीय भाग

"

तृतीय भाग

"

चतुर्थ भाग

"

पंचम भाग

"

सूक्ष्म साम्प्रदाय

१५५

उपशान्त कथाय

"

शीणकथाय

"

सयोगकेवली

"

अयोगकेवली

"

सिद्ध परमेष्ठी

"

सामान्य नारक

१५६

सामान्य नारक पर्याप्त

"

सामान्य नारक अपर्याप्त

"

सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि

"

सामान्य नारक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि

१५७

सामान्य नारक अपर्याप्त मि.

"

सामान्य नारक सासादन

"

सामान्य नारक मिथ

"

सामान्य नारक असंयत

"

सामान्य नारक पर्याप्त असंयतमें

बीस प्ररूपणाओंका कथन

१५०

सामान्य नारक अपर्याप्त असंयत

"

धर्मा सामान्य नारक

"

धर्मा सामान्य नारक पर्याप्त

"

धर्मा सामान्य नारक अपर्याप्त

"

धर्मा मिथ्यादृष्टि

"

धर्मा नारक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि

"

धर्मा नारक अपर्याप्त

"

धर्मा पर्याप्त सासादन

"

धर्मा मिथ गु.

"

धर्मा असंयत गु.

"

धर्मा पर्याप्त असंयत

"

धर्मा अपर्याप्त असंयत

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक सामान्य

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक पर्याप्त

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक अपर्याप्त

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक सामान्य

"

मिथ्यादृष्टि

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक पर्याप्त

"

मिथ्यादृष्टि

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक अपर्याप्त

"

मिथ्यादृष्टि

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक सासादन

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक सम्बन्ध-

"

मिथ्यादृष्टि

"

द्वितीयादि पृथ्वी नारक असंयत

"

सम्बन्ध

"

सामान्य त्रिवच

"

त्रिवच सामान्य पर्याप्तक

"

त्रिवच सामान्य अपर्याप्तक

"

" " मिथ्यादृष्टि

"

" " पर्याप्तक मि.

"

" " अपर्याप्तक

"

" " सासादन

"

" " सासादन पर्याप्त

"

" " सासादन अपर्याप्त

"

" " सम्बन्धिमिथ्यादृष्टि

"

[illegible]

वैक्रियिक काययोगी मिथ्यादृष्टि बोध प्रकरण	१०१२	नपुंसकवेदि पर्याप्तक	बोध प्रकरण	१०२०
" " साक्षादन	" "	अपर्याप्तक	"	१०२१
" " सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१०१३	मिथ्यादृष्टि	"	"
" " असंयत	" "	" पर्याप्तक	"	"
वैक्रियिक मिथ्याभाव	" "	अपर्याप्तक	"	"
" " मिथ्यादृष्टि	" "	साक्षादन	"	१०२२
" " साक्षादन	" "	" पर्याप्तक	"	"
" " असंयत	१०१४	" अपर्याप्तक	"	"
आहारक काययोगी	" "	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	"	"
आहारक मिथ्याकाययोगी	" "	असंयतसम्यग्दृष्टि	"	१०२३
कामंज काययोगी	" "	" पर्याप्तक	"	"
" " मिथ्यादृष्टि	" "	" अपर्याप्तक	"	"
" " साक्षादन सम्यग्दृष्टि	१०१५	" देशविरत	"	"
" " असंयत सम्यग्दृष्टि	" "	असंयत वेदि	"	१०२४
" " सयोगवैवलि	" "	लोपव्यापी	"	"
स्त्रीवेदी	" "	" पर्याप्तक	"	"
स्त्रीवेदि पर्याप्तक	१०१६	" अपर्याप्तक	"	"
स्त्रीवेदि अपर्याप्तक	" "	मिथ्यादृष्टि	"	१०२५
स्त्रीवेदि मिथ्यादृष्टि	" "	" पर्याप्तक	"	"
" " पर्याप्तक	" "	" अपर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	" "	साक्षादन	"	"
" " साक्षादन	१०१७	" पर्याप्तक	"	१०२६
" " पर्याप्तक	" "	" अपर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	" "	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	"	"
" " सम्यग्मिथ्यादृष्टि	" "	असंयत सम्यग्दृष्टि	"	"
" " असंयत	१०१८	" पर्याप्तक	"	"
स्त्रीवेदि देशविरत	" "	" अपर्याप्तक	"	१०२७
स्त्रीवेदि प्रमत्त	" "	देशविरत	"	"
" अग्रमत्त	" "	प्रमत्तसंयत	"	"
" कूपूर्वकरण	" "	अग्रमत्तसंयत	"	"
" अनिपुणकरण	१०१९	कूपूर्वकरण	"	"
पुंवेदि	" "	प्रथम अनिकृति	"	१०२८
" पर्याप्तक	" "	द्वितीय अनिकृति	"	"
" अपर्याप्तक	" "	अकथाय	"	"
" मिथ्यादृष्टि	१०२०	कुदृष्टि कुपुत्रजानि	"	"
" " पर्याप्तक	" "	" पर्याप्तक	"	१०२९
" " अपर्याप्तक	" "	" अपर्याप्तक	"	"
नपुंसकवेदि	" "	" मिथ्यादृष्टि	"	"

नियम काययोगो मिथ्यादृष्टि	दीप्त प्ररूपणा	१०१२	नपुंसकवेदि पर्याप्तक	दीप्त प्ररूपणा	१०२०
" " सासादन	"	"	अपर्याप्तक	"	१०२१
" " सम्यग्मिथ्यादृष्टि	"	१०१३	मिथ्यादृष्टि	"	"
" " असंयत	"	"	" पर्याप्तक	"	"
नियम मिथ्याकाय०	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" " मिथ्यादृष्टि	"	"	सासादन	"	१०२२
" " सासादन	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" " असंयत	"	१०१४	" अपर्याप्तक	"	"
हारक काययोगी	"	"	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	"	"
हारक मिथ्याकाययोगी	"	"	असंयतसम्यग्दृष्टि	"	१०२३
नियम काययोगी	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" मिथ्यादृष्टि	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" सासादन सम्यग्दृष्टि	"	१०१५	देशविरत	"	"
" असंयत सम्यग्दृष्टि	"	"	अपगत वेद	"	१०२४
" सयोगकेवलि	"	"	लोपकपायी	"	"
होवेदी	"	"	पर्याप्तक	"	"
होवेदि पर्याप्तक	"	१०१६	अपर्याप्तक	"	"
होवेदि अपर्याप्तक	"	"	मिथ्यादृष्टि	"	१०२५
होवेदि मिथ्यादृष्टि	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	सासादन	"	"
" सासादन	"	१०१७	" पर्याप्तक	"	१०२६
" " पर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	"	"
" सम्यग्मिथ्यादृष्टि	"	"	असंयत सम्यग्दृष्टि	"	"
" असंयत	"	१०१८	" पर्याप्तक	"	"
होवेदि देशविरत	"	"	" अपर्याप्तक	"	१०२७
होवेदि प्रमत्त	"	"	देशविरत	"	"
" अप्रमत्त	"	"	प्रमत्तसंयत	"	"
" अपूर्वकरण	"	"	अप्रमत्तसंयत	"	"
" अनिवृत्तिकरण	"	१०१९	अपूर्वकरण	"	"
पुंवेदि	"	"	प्रथम अनिवृत्ति	"	१०२८
" पर्याप्तक	"	"	द्वितीय अनिवृत्ति	"	"
" अपर्याप्तक	"	"	अकपाय	"	"
" मिथ्यादृष्टि	"	१०२०	कुमति कुपुत्रज्ञानि	"	"
" पर्याप्तक	"	"	" पर्याप्तक	"	१०२९
" अपर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" मिथ्यादृष्टि	"	"	" मिथ्यादृष्टि	"	"

वैज्ञानिक काययोगी मित्यादुष्टि	बीस प्ररूपणा	१०१२	मपुंस्तकवेदि पर्याप्तक	बीस प्ररूपणा	१०२०
" " सासादन	" "	" "	अपर्याप्तक	" "	१०२१
" " सम्मगिमित्यादुष्टि	" "	१०१३	मित्यादुष्टि	" "	" "
" " असंयत	" "	" "	" पर्याप्तक	" "	" "
वैज्ञानिक मिश्रकाय०	" "	" "	अपर्याप्तक	" "	" "
" " मित्यादुष्टि	" "	" "	सासादन	" "	१०२२
" " सासादन	" "	" "	" पर्याप्तक	" "	" "
" " असंयत	" "	१०१४	अपर्याप्तक	" "	" "
आहारक काययोगी	" "	" "	सम्मगिमित्यादुष्टि	" "	" "
आहारक मिश्रकाययोगी	" "	" "	असंयतसम्मगदुष्टि	" "	१०२३
कामण काययोगी	" "	" "	" पर्याप्तक	" "	" "
" " मित्यादुष्टि	" "	" "	अपर्याप्तक	" "	" "
" " सासादन सम्मगदुष्टि	" "	१०१५	देगविरत	" "	१०२४
" " असंयत सम्मगदुष्टि	" "	" "	अपरगत वेद	" "	" "
" " सयोगकेवलि	" "	" "	क्रोषकपायी	" "	" "
हवीवेदी	" "	" "	पर्याप्तक	" "	" "
हवीवेदि पर्याप्तक	" "	१०१६	अपर्याप्तक	" "	" "
हवीवेदि अपर्याप्तक	" "	" "	मित्यादुष्टि	" "	१०२५
हवीवेदि मित्यादुष्टि	" "	" "	" पर्याप्तक	" "	" "
" " पर्याप्तक	" "	" "	अपर्याप्तक	" "	" "
" " अपर्याप्तक	" "	" "	सासादन	" "	" "
" " सासादन	" "	१०१७	" पर्याप्तक	" "	१०२६
" " पर्याप्तक	" "	" "	अपर्याप्तक	" "	" "
" " अपर्याप्तक	" "	" "	सम्मगिमित्यादुष्टि	" "	" "
" " सम्मगिमित्यादुष्टि	" "	" "	असंयत सम्मगदुष्टि	" "	" "
" " असंयत	" "	१०१८	" पर्याप्तक	" "	" "
हवीवेदि देगविरत	" "	" "	अपर्याप्तक	" "	१०२७
हवीवेदि प्रमत्त	" "	" "	देगविरत	" "	" "
" " अप्रमत्त	" "	" "	प्रमत्तसंयत	" "	" "
" " अपूर्वकरण	" "	" "	अप्रमत्तसंयत	" "	" "
" " अनिवृत्तिकरण	" "	१०१९	अपूर्वकरण	" "	" "
पुंवेदि	" "	" "	प्रथम अनिवृत्ति.	" "	१०२८
" " पर्याप्तक	" "	" "	द्वितीय अनिवृत्ति	" "	" "
" " अपर्याप्तक	" "	" "	अकपाय	" "	" "
" " मित्यादुष्टि	" "	१०२०	कुमति कुशुतजानि	" "	" "
" " पर्याप्तक	" "	" "	" पर्याप्तक	" "	१०२९
" " अपर्याप्तक	" "	" "	अपर्याप्तक	" "	" "
नपुंमपुंवेदि	" "	" "	मित्यादुष्टि	" "	" "

तेजोलेख्या सम्मगिमध्या.	बीस प्ररूपणा	१०४७	तुक्कलेख्या अग्रमतसंयत	बीस प्ररूपणा	१०५५
" असंयत	"	"	" अथर्व	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	"	१०४८	" सम्यग्दृष्टि अपर्याप्तक	"	१०५६
" देशविरत	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" प्रमत्त	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" अग्रमत्त	"	"	" सायिक सम्यग्दृष्टि	"	१०५७
पद्मलेख्या	"	१०४९	" पर्याप्तक	"	"
" पर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" अपर्याप्तक	"	"	" असंयत	"	"
" विम्यादृष्टि	"	"	" पर्याप्त असंयत	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्त असंयत	"	१०५८
" " अपर्याप्तक	"	१०५०	" देशविरत	"	"
" सासादन	"	"	" वेदक सम्यग्दृष्टि	"	"
" " पर्याप्त	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्त	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" सम्यगिमध्यादृष्टि	"	"	" असंयत	"	१०५९
" असंयत सम्य.	"	१०५१	" " पर्याप्तक	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" " अपर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	" देशविरत	"	"
" देशविरत	"	"	" प्रमत्तसंयत	"	"
" प्रमत्तसंयत	"	"	" अग्रमत्तसंयत	"	१०६०
" अग्रमत्तसंयत	"	१०५२	" उपरम सम्यग्दृष्टि	"	"
शुक्ललेख्या	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" पर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" अपर्याप्तक	"	"	" असंयत	"	"
" विम्यादृष्टि	"	"	" " पर्याप्तक	"	१०६१
" " पर्याप्तक	"	१०५३	" " अपर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	" देशविरत	"	"
" सासादन	"	"	" प्रमत्त	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" अग्रमत्त	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	" संज्ञी	"	१०६२
" सम्यगिमध्यादृष्टि	"	१०५४	" संज्ञी पर्याप्तक	"	"
" असंयत सम्य.	"	"	" संज्ञी अपर्याप्तक	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" संज्ञी विम्यादृष्टि	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	" " पर्याप्तक	"	"
" देशविरत	"	"	" " अपर्याप्तक	"	१०६३
" प्रमत्तसंयत	"	१०५५	" सासादन	"	"

तेजोदेव्या साम्यमिथ्या.	बीस प्रकरण	१०४७	गुरुदेव्या अग्रमतसंयत	बीस प्रकरण	१०५५
" अंत्यत	"	"	" अमन्य	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	"	१०४८	" सम्प्रादुष्टि अपर्याप्तक	"	१०५६
" देशविरत	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" प्रमत	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" अग्रमत	"	"	" सामिक सम्प्रादुष्टि	"	१०५७
पुष्पलेखा	"	१०४९	" पर्याप्तक	"	"
" पर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" अपर्याप्तक	"	"	" अंत्यत	"	"
" मिथ्यादुष्टि	"	"	" पर्याप्त अंत्यत	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्त अंत्यत	"	१०५८
" " अपर्याप्तक	"	१०५०	" देशविरत	"	"
" शाश्वत	"	"	" वेदक सम्प्रादुष्टि	"	"
" " पर्याप्त	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्त	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" साम्यमिथ्यादुष्टि	"	"	" अंत्यत	"	१०५९
" अंत्यत साम्य.	"	१०५१	" " पर्याप्तक	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" " अपर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	" देशविरत	"	"
" देशविरत	"	"	" अग्रमतसंयत	"	"
" अग्रमतसंयत	"	"	" अग्रमतसंयत	"	१०६०
" अग्रमतसंयत	"	१०५२	" उग्रमत सम्प्रादुष्टि	"	"
पुष्पलेखा	"	"	" पर्याप्तक	"	"
" पर्याप्तक	"	"	" अपर्याप्तक	"	"
" अपर्याप्तक	"	"	" अंत्यत	"	"
" मिथ्यादुष्टि	"	"	" " पर्याप्तक	"	१०६१
" " पर्याप्तक	"	१०५३	" " अपर्याप्तक	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	" देशविरत	"	"
" शाश्वत	"	"	" प्रमत	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" अग्रमत	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	" संतो	"	१०६२
" साम्यमिथ्यादुष्टि	"	१०५४	" संतो पर्याप्तक	"	"
" अंत्यत साम्य.	"	"	" संतो अपर्याप्तक	"	"
" " पर्याप्तक	"	"	" संतो मिथ्यादुष्टि	"	"
" " अपर्याप्तक	"	"	" " पर्याप्तक	"	"
" देशविरत	"	"	" " अपर्याप्तक	"	१०६३
" अग्रमतसंयत	"	१०५५	" शाश्वत	"	"

ज्ञानमार्गणाधिकारः ॥१२॥

अनंतरं श्रीनेमिचंद्रसैद्धांतचक्रवर्तिनः ज्ञानमार्गणाय पेक्षलुपकमिति निरुक्तिपूर्वकं ज्ञानसामान्यलक्षणं पेक्षदपठ ।

जाणइ तिकालेविसए दब्बगुणे पज्जए य बहुभेदे ।

पच्चक्खं च परोक्खं अणेण जाणेत्ति षं वेत्ति ॥२९९॥

जानाति त्रिकालैर्विषयान् द्रव्यगुणान् पर्यायांश्च बहुभेदान् । प्रत्यक्षं परोक्षमनेन ज्ञानमिति इदं सूचितं ॥

त्रिकालविषयान् घृतवत्सर्वद्वर्तमानकालगोचरंगत्तुप्य बहुभेदान् जीवादि ज्ञानादि स्यादरादि ज्ञानाधिकारंगत्तुप्य द्रव्यगुणान् जीवपुद्गलधर्माध्यर्माङ्गकालगत्तुप्य द्रव्यंगत्तुप्य ज्ञानवर्तनसम्पत्त्वगुणवैपर्यायिगत्तुप्य स्पर्शरसगन्धवर्णादिगत्तुप्य गतिस्थित्यवगाहनवर्तनाहेतुत्वादिगत्तुप्यैवै जीवगुणगत्तुप्य पर्यायांश्च स्यादराद्यप्रसक्त्यङ्गमणुस्त्वत्कथंत्वंगत्तुप्य अर्थव्यञ्जनभेदंगत्तुप्य वैरुपुगुणैश्च पर्यायंगत्तुप्यभूतत्वं प्रत्यक्षं स्पष्टं परोक्षं च अस्पष्टमुपमाणि अनेन जानातीति अरिगुमिदरिते दितु ज्ञानमितीदं ज्ञानमेदितिदं करणभूतमप्य स्यादर्थव्यवसायात्मकमप्य जीवगुणं सुवेत्ति पेक्षरहंदादिगच्छे ज्ञानमे

जातवैः पूजपादाग्रं समवगुदितं हस्तम् ।

उदरं तीर्षकर्तारं बाणुपुण्यं जितं स्तुवे ॥१२॥

अथ श्रीनेमिचन्द्रसैद्धांतचक्रवर्ति ज्ञानमार्गणामुपक्रममाप्नो निरुक्तिपूर्वकं ज्ञानसामान्यलक्षणमाह—

त्रिकालविषयान् घृतवत्सर्वद्वर्तमानकालगोचरान् बहुभेदान्—जीवादिज्ञानादिस्यादरादिनामाप्रकारान् द्रव्याणि जीवपुद्गलधर्माधर्माङ्गकालास्थानि, गुणान् ज्ञानवर्तनसम्पत्त्वगुणवैपर्यायादीन् स्पर्शरसगन्धवर्णादीन् गतिस्थित्यवगाहनवर्तनाहेतुत्वादीन् पर्यायांश्च स्यादराद्यादीन् अणुत्वस्कन्धत्वादीन् अर्थव्यञ्जनभेदान्मात्रात्मप्रत्यक्षं स्पष्टं परोक्षं च अस्पष्टं अनेन जानातीति ज्ञानमितीदं करणभूतं स्वाधर्म्यवसायात्मकं जीवगुणं

श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ज्ञानमार्गणाको प्रारम्भ करते हुए निरुक्तिपूर्वक ज्ञानसामान्यका लक्षण कहते हैं—

त्रिकाल अर्थात् अतीत, अनागत और वर्तमान कालवर्ती बहुत भेदोंको अर्थात् जीव आदि स्यादरा आदि नाना प्रकारोंको, जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल नामक द्रव्योंको, ज्ञान वर्तन सम्पत्त्व सुख वीर्य आदि और स्पर्श रस गन्ध वर्ण आदि गुणोंको, तथा गतिहेतुत्व, स्थितिहेतुत्व, अवगाहनहेतुत्व, वर्तनाहेतुत्व आदि पर्यायोंको, स्यादरा प्रस आदिको, परमाणु स्कन्ध आदिको अर्थपर्याय और व्यञ्जनपर्यायोंको इसके द्वारा प्रत्यक्ष अर्थात् स्पष्ट और परोक्ष अर्थात् अस्पष्ट रूपसे जानता है इसलिये अर्हन्त आदि इसे ज्ञान कहते हैं यह जीवका व्यवसायात्मक गुण है । यह ज्ञान ही प्रत्यक्ष और परोक्षके भेदसे दो

१. म त्रिकालादिति । २. त्रिकालगृहीतान् ।

माद्योऽं ज्ञानोत्पत्तिप्रतिपातित्वाद्भावादिदमविवक्षेयपरिप्लव्युदु । केवलज्ञानं धार्मिकमेव कुमेको दोषे
केवलज्ञानावरणवीर्यतराय निरवरोपशयप्रातुर्भूतत्वादिर्, क्षये भवं क्षयः प्रयोजनमस्येति या
धार्मिक । येतलानुमात्रमेव केवलज्ञानं प्रतिबन्धकावस्थेयौऽऽशक्तिरूपविर्ब मिषुर्वंतिर्दोषं प्रतिबन्धक-
क्षयदिग्मे तद्वृत्तिव्यवकुमेदितु व्यक्त्यपेक्षेविर्ब काव्यत्वसंभवादिर्ब धार्मिकमेदितु येद्वत्पददुदु ।
आवरणशयमुंटागुत्तिरन् प्रातुर्भवति येद्वो निरुक्तिरे तद्वत्पश्येयशत्युञ्जुद्वरिर्ब ।

अन्तरं मिथ्याज्ञानोत्पत्तिकारणस्वरूपस्याभिभेदगळं येद्वत्पं :-

अण्णाणतियं होदि हु सण्णाणतियं खु मिच्छ अणउदय ।

णवरि विमंगं णाणं पंचिदिपसण्णिपुण्णैव ॥३०१॥

अज्ञानप्रयं भवति एतलु सग्नानप्रयं एतलु मिथ्यात्वानन्तानुवर्त्युदये । विदोपो विमंगं ज्ञानं
पंचेद्रियसंतिपुर्णं एव ॥

आयुवोऽं मतिप्रतावधिगळु सम्मन्दर्शनपरिणतजीवसंवेधि सम्मज्ञानप्रयं संतिपंचेद्रिय-
पम्याजिजीवनविशेषग्रहणरूपाकारसहितोपयोगलक्षणमप्य तत् सम्मज्ञानमे मिथ्यादर्शनानन्तानुवर्धि-
कपायान्वतमोदयमागुत्तिरलज्जत्वात्यंभद्धानपरिणतजीवसंवेधिमिथ्याज्ञानप्रयं एतलु स्फुटमवकुं ।
णवरि विशेषमुदुदु आयुवोऽं वधिजानविपम्याविरुपमप्य विमंगमेव पंचरनुञ्ज मिथ्याज्ञानमु

ज्ञानोत्पत्तिप्रतिपातित्वाद्भावादिदमविवक्षेयपरिप्लव्युदु । केवलज्ञानं पुनः धार्मिकमेव भवति केवलज्ञानावरणवीर्य-
न्तरायनिरवरोपशयने प्रातुर्भूतत्वात् । क्षये भवं, क्षयः प्रयोजनमस्येति वा धार्मिकम् । यद्यप्यात्मनः केवलज्ञानं
प्रतिबन्धकावस्थायोऽं शक्तिरूपेण विद्यमानं तद्यपि प्रतिबन्धकत्वेनैव तद्व्यतिः एतत् इति व्यत्ययेनाया
कार्यवर्त्मनश्च धार्मिकमित्युक्तं । आवरणशये सति प्रातुर्भवति इति निष्कर्षः तद्व्यत्ययेनास्तावत् ॥३००॥

अथ मिथ्याज्ञानोत्पत्तिकारणस्वरूपस्याभिभेदगळु—

सम्मन्दर्शनपरिणतजीवसंवेधिमतिपुत्रावधिगळं सम्मज्ञानप्रयं संतिपञ्चेन्द्रियपम्याजिजीवस्य विशेष-
ग्रहणरूपाकारसहितोपयोगलक्षणं तदेव मिथ्यादर्शनानन्तानुवर्धिकापायान्वतमोदये सति अतत्त्वार्थप्रदानपरिणत-
जीवमवधिगळमिथ्याज्ञानप्रयं एतलु-स्फुटं भवति । नवरीति विशेषीरित 'सदवधिज्ञानविपर्वपरुपं विमङ्गनामकं

है । जां दायोपशमसे होते है अथवा दायोपशम जिनका प्रयोजन है वे दायोपशमिक है ।
दायोपशमिक ज्ञानोमें यद्यपि घस-उम आधरण सम्बन्धी देशपाठी रूपकोका उदय विद्यमान
रहता है तथापि ये ज्ञानकी उत्पत्तिके प्रतिपाती नहीं है इसलिये यहाँ उनकी विवक्षा नहीं है ।
किन्तु केवलज्ञान धार्मिक ही होता है क्योंकि वह केवल ज्ञानावरण तथा धीर्यान्तरायके
सम्पूर्ण दायसे प्रकट होता है । जो क्षयसे होता है या क्षय जिसका प्रयोजन है वह धार्मिक
है । यद्यपि आत्मामें केवलज्ञान प्रतिबन्धक अवस्थामें शक्तिरूपसे विद्यमान है तथापि
प्रतिबन्धकके क्षयसे ही वह प्रकट होता है इसलिये व्यक्तिकी अपेक्षा कार्य होनेसे उसे धार्मिक
कहा है । आवरणका क्षय होनेपर प्रकट होता है ऐसी निरुक्ति होनेसे उसकी व्यक्तिकी
अपेक्षा है ॥३००॥

अथ मिथ्याज्ञानकी उत्पत्तिके कारण, स्वरूप और स्वामीभेदोंको कहते हैं—

जो सम्मदृष्टि जीवके मति, भुत और अवधि नामक तीन सम्मज्ञान हैं, संक्षो-
पंचेन्द्रिय पम्याजि जीवके विशेष ग्रहणरूप आकार सहित उपयोग जिनका लक्षण है, वे ही
तीनों मिथ्यादर्शन और अनन्तानुबन्धी कपायमेंसे किसी एक या एक उदय होनेपर
अतत्त्वार्थग्रद्धानरूप परिणत मिथ्यादृष्टि जीवके मिथ्याज्ञान

किन्तु इनका विशेष है

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

अनन्तरं मिथ्याज्ञानविशेषलक्षणं गायत्रयदिदं पेञ्चपं ।

विसर्जतकूटपंजरबंधादिसु विणुवएसकरणेण ।

जा खलु पवट्टइ मई मइअण्णाणेत्ति णं वेत्ति ॥३०३॥

विषयंत्रकूटपंजरबंधादिसु विनोपदेशकरणेन । या खलु प्रवर्तते मतिर्मत्पज्ञानमिते
विषयंत्रकूट पंजरबंधमे विवृ मोदलाव जीवमारणबंधनहेतुगळोळु या मतिः आ
परोपदेशकरणमिल्लदे प्रवर्तिसुगुमदे मत्पज्ञानमे दु अहंदादिगळु पेञ्चवरल्लि परस्परसं
मारणशक्तिविशिष्टतैलकपूरादिद्वयं विषये बुद्धिं । सिहव्याघ्रादि क्रूरमृगं गळु धरणात्यं
कृतच्छायाविजोवमनुळ्ळ काष्ठादिरचितमप्युदु तत्पावनिशेषमात्रकवादसंपटीकरणव
लितमप्युदु यंत्रमे बुद्धिं । मत्स्यकच्छमूपकादिग्रहणार्थमवष्टब्धकाष्ठादिमयं कूटमे
तित्तिरीलावकहरिणादिधारणात्यं विरचितप्रंयिविशेषकलितरज्जुमयमप्य जालं पंजरमे
गजोष्टादिधारणात्यंमवष्टब्धमप्यगतंमुलकीलितप्रंयिविशिष्टवारिरज्जुरचनाविशेषं बंधमे
आविशब्ददिवं पक्षिगळु पक्षमं पत्तिति सिचिकसत्ते दु बीर्यबंधाप्रदोळु तोडइ पिपलनि
चिकरणबंधं । गृहहरिणादिभृंगलग्नसूत्रप्रंयिविशेषादिगळ्ये ग्रहणमनशुमुपदेशपूव्यं
संभवति नेतरदेशसंपदादिषु गुणस्थानेषु तथाविषयविशेषाभावात् ॥३०२॥ अथ मिथ्याज्ञानविशे

गायत्रयैवाह—

विषयान्नकूटपंजरबंधादिसु जीवमारणबन्धनहेतुषु या मतिः परोपदेशकरणेन विना प्रवर्तते
मत्पज्ञानमित्यहंसादयो भ्रूयन्ति । तत्र परस्परसंयोगजनितमारणशक्तिविशिष्टं तैलकपूरादिद्वयं विषयं,
व्याघ्रादिक्रूरमृगधारणात्यंमयन्तरीकृतछायादिजोवं काष्ठादिरचितं तत्पावनिशेषमात्रकवादसंपटीकरण
सूत्रकीलितं यंत्रं, मत्स्यकच्छमूपकादिग्रहणार्थमवष्टब्धं काष्ठादिमयं कूटं, तित्तिरीलावकहरिणादिधार
विरचितं प्रंयिविशेषकलितरज्जुमयं जालं पञ्जरः, गजोष्टादिधारणात्यंमवष्टब्धो गतंमुलकीलितप्रंयिवि
वारीरज्जुरचनाविशेषो बन्धः । आदिशब्देन पक्षिगळ्यनार्थं बीर्यबंधाप्रदोळु तोडइ पिपलनिर्वादिचिक
महामुनियोंके होता है, अन्य देशसंयत आदि गुणस्थानमें नहीं होता क्योंकि वहाँ उस प्रक
का तपविशेष नहीं है ॥३०२॥

अथ तीन गायत्राओंसे मिथ्याज्ञानोंका विशेष लक्षण कहते हैं—

जीवोंको मारने और बन्धनमें हेतु विषय, यंत्र, कूट, पंजर, बन्ध आदिमें विन
परोपदेशके मति प्रवर्तित होती है वह मतिज्ञान है ऐसा अहन्त भगवान् आदि कहते हैं
परस्पर वस्तुके संयोगसे उत्पन्न हुई मारनेकी शक्तिसे युक्त तैल, रसकपूर आदि द्रव्य विष
हैं । सिंह, व्याघ्र आदि क्रूर जीवोंको पकड़नेके लिए, अन्दरमें बकरा आदि रखकर लकड़
हैं । सिंह, व्याघ्र आदि क्रूर जीवोंको पकड़नेके लिए काष्ठ आदिसे रचे गयेको कूट कहते
आदिसे बनाया गया, जिसमें पैर रखते ही द्वार बन्द हो जाता हो, ऐसा सूत्रसे कीलित
यंत्र होता है । मच्छ, कछुआ, चूहा आदि पकड़नेके लिए काष्ठ आदिसे रचे गयेको कूट कहते
हैं । तीतर, लावक, हरिण आदि पकड़नेके लिये रस्सीमें अमुक्त प्रकारकी गाँठ देकर बनाये
गये जालको पंजर कहते हैं । हाथी, ऊँट आदि पकड़नेके लिए गदा खोदकर और उसका
हते हैं । आदि शब्दसे पक्षियोंके पंख चिपकाने के लिए लम्बे बाँस आदिके अग्रभागमें
पल आदिका चिकना रस मोँद बगैरह लगाना और हरिण आदिके सींगके अग्रभागमें
न्दा आदि डालना आदि लिया जाता है । इस प्रकारके कार्योंमें जो विना परोपदेशके स्वयं

कर्णाटवृत्तिं वीरतत्त्वप्रदीपिका

[illegible]

विवरीयमोद्दिष्टाणां सञ्जीवसमिपं च फेडमवीजं च ।
वेमंगोत्ति पञ्चपद्म समत्तप्याणी

मिथ्यादानैः कर्मवित्तमप्य जीवन्मे व्यथितायाः कथमेव । शिर्षं इति श्रीभ्यते समाप्तशानिनां

मिष्यादशनं कर्म रितमप्य जीवमे अवपितानावरणो योऽप्यांतरायशोपशमनितमप्युतं इत्य-
 शोदहातभावमाधितमप्युतं एषिद्रव्यविषयमप्युतं आनागमपदारभग्योऽनु विपरीतपाहकमप्युतं
 तित्प्यंमनुदयगतिगजोऽनु तोयकायलेन इत्यसंयमदप्युतं प्रत्ययमप्युतं च शब्दविषं देवनारकागति-
 गजोऽनु भवप्रत्ययमप्युतं मिष्यादवविकर्मसंपदोऽनितमप्युतं पदार्थविषं देवतागुं नारकादिषोऽनु
 ग्राहंभयदुराचारमंविस्तु-कर्ममंभयतोऽनु-पवेदनाभिभजनितसमप्यदंनतानदप्यमंभयममुमप्युतं ।
 एवंविषयवपितानं विभंगमे विस्तु समाप्तज्ञानिगठ केवतज्ञानिगठ समये स्यादादहात्तदोऽनु
 प्रोच्यते वेदत्यदुदु । एकेदोहे नारकविभंगज्ञानदिर्वं वेदनाभिभजतत्कारणदशनंमरणानुसंपान-
 सर्वबंधात्तद्विषयैश्चावस्थितरकारदप्यमुनरोगोऽहियापागादिगुरुद्वयमंविस्तु-
 मदायंरुदरायंभावनादिपिनियोगमुनरुद्वयमंविस्तु-
 दहायमागतिगति-

[illegible]

पृथक्कर्म, शिष्टं तथा जटा धारण आदि तपस्वियोंका कर्म, नैयायिकोंका योद्धा पदार्थ-
वाद, वैशेषिकोंका पदपदार्थवाद, मीमांसकोंका भाषनाविधिनियोग, चार्वाकोंका भूत-
चतुष्टयवाद, मार्क्योंके पक्षीय तत्त्व, बौद्धोंका चार आर्यसत्य, विशानाद्वैत, सर्वतुल्यवाद २५
आदिके प्रतिपादक आगमाभासोंसे दोनेवादा जितना धुंगंतानाभास है वह सब सुतज्ज्ञान
जानता। क्योंकि प्रत्यक्ष और अनुमानसे विरुद्ध अर्थको विषय करता है ॥२०॥
निध्यादृष्टि जीवके अपविशानाकरण और वीर्यान्तरायके लिये
ब्रह्म-क्षेत्र-काल-भावकी मर्यादाको लिये ॥२१॥
काश्च और पदार्थोंके लिये ॥२२॥

मिथ्यावृत्ति जीवके अवधिज्ञानावरण और बीयांन्तरायके क्षयोपशमसे उत्पन्न हुआ, 'द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी मर्यादाकी लिये हुए रूपी द्रव्यकी विषय करनेवाला, किन्तु देव-प्राज्ञाधीन पदार्थोंको विपरीत रूपसे ग्रहण करनेवाला अवधिज्ञान केवलज्ञानियोंके द्वारा प्रविष्टादित थागममें विभंग कहा जाता है। यह विभंग ज्ञान वियंपगति और मनुष्यगतिमें तीव्रकायरलेख रूप द्रव्य संयमसे उत्पन्न होता है इसलिये, गृणप्रत्यय है। 'च' शब्दसे देवगति और नरकगतिमें भयप्रत्यय है तथा मिथ्यात्व आदि कर्मोंके बन्धका बीज है। 'च' शब्दसे पदार्थसे पदार्थ नरकगति आदिमें पूर्वजन्ममें किये गये दुराचारमेंसे संचित छोटे कर्मोंके फल तीव्र दुःख चेदनाके भोगनेसे होनेवाले सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान रूप धर्मका भी बीज है। ३५

स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुधोऽग्रं गच्छन्ते विचारं दं ज्ञानं पुष्टिदृक्कृमिर्दारुमिन्द्रियमनस्सुगन्धो मतिज्ञानोत्पत्ति-
कारणत्वं पेक्षत्पट्टदुदितु कारणभेदात् काव्यभेदः एदितु मतिज्ञानं पट्टप्रकारमेव पेक्षत्पट्टदुदु ।

मते प्रत्येकमोर्दोदु मतिज्ञानकके अवग्रहमुमोहपवापुं धारणे एदितु नाल्कु नाल्कु भेदगच्छ-
पुवु-१ मदे ते दोदो :—मानसोऽवग्रहः मानसोहा मानसोऽवायः मानसी धारणा एदितु नाल्कुपुवु ४ ।
स्पर्शनजोऽवग्रहः स्पर्शनजेहे स्पर्शनजोऽवायः स्पर्शनजा धारणा एदितु नाल्कुपुवु ४ । रसनजोऽवग्रहः
रसनजेहा रसनजोऽवायः रसनजा धारणा एदितु नाल्कुपुवु ४ । घ्राणजोऽवग्रहः घ्राणजेहा
घ्राणजोऽवायः घ्राणजा धारणा एदितु नाल्कुपुवु ४ । चाक्षुषोऽवग्रहः चाक्षुषोहा चाक्षुषोऽवायः
चाक्षुषी धारणा एदितु नाल्कुपुवु ४ । श्रोत्रजोऽवग्रहः श्रोत्रजेहा श्रोत्रजोऽवायः श्रोत्रजा धारणा
एदितु नाल्कुपुवु ४ । इतु मतिज्ञानं चतुर्विजतिप्रकारमक्कु २४ । मवग्रहादिगन्धो लक्षणमं मुवे
शास्त्रकारं ताने पेक्षत्प ।

वैजणअत्थअवग्गह भेदा दु इवन्ति पत्तपत्तत्थे ।

कमसो ते वावरिदा पढमं णहि चक्खुमणसाणं ॥३०७॥

ध्यानार्यावग्रहभेदो क्षु भवतः प्राप्ताप्राप्तात्वंयोः । क्रमशस्तौ ध्यापुतौ प्रयनो ॥ हि
चक्षुर्मनसोः ॥

इन्द्रियमिति स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि । तैम्यो जातमुत्पन्नं अनिन्द्रियैन्द्रियजं, अनेन इन्द्रियमनसोर्मति- १५
ज्ञानोत्पत्तिप्रकारेणत्वं वक्ष्यतम् । एवं च कारणभेदात्कार्यभेद इति मतिज्ञानं पट्टप्रकारमुक्तम् । पुनः प्रत्येकमेकैकस्य
मतिज्ञानस्य अवग्रहः ईहा अवायः धारणा इति चत्वारो भेदा भवन्ति । यथा—मानसोऽवग्रहः मानसोहा
मानसोऽवायः मानसी धारणा इति चत्वारः । स्पर्शनजोऽवग्रहः, स्पर्शनजा ईहा स्पर्शनजोऽवायः स्पर्शनजा धारणा
इति चत्वारः । रसनजोऽवग्रहः रसनजा ईहा रसनजोऽवायः रसनजा धारणा इति चत्वारः । घ्राणजोऽवग्रहः
घ्राणजा ईहा घ्राणजोऽवायः घ्राणजा धारणा इति चत्वारः । चाक्षुषोऽवग्रहः चाक्षुषीहा चाक्षुषोऽवायः चाक्षुषी २०
धारणा ४ । श्रोत्रजोऽवग्रहः श्रोत्रजा ईहा श्रोत्रजोऽवायः श्रोत्रजा धारणा इति चत्वारः । एवं मतिज्ञानं
चतुर्विजतिविकल्पं भवति अवग्रहादीनां लक्षणं उत्तरत्र ग्रन्थकारः स्वयमेव वदयति ॥३०६॥

होती है । अर्थात् सूक्ष्म परमाणु आदि, अन्तरित शंख चक्रवर्ती आदि तथा दूरार्थ मेरु आदि-
को ज्ञाननेकी शक्ति वनमें नहीं है । इससे मतिज्ञानका स्वरूप कहा । यह मतिज्ञान अनिन्द्रिय
मन और इन्द्रियाँ स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्रसे उत्पन्न होता है । इससे इन्द्रिय और २५
मनको मतिज्ञानकी उत्पत्तिका कारण दिखलाया है । इस प्रकार कारणके भेदसे कार्यमें भेद
होनेसे मतिज्ञान छह प्रकारका कहा । पुनः प्रत्येक मतिज्ञानके अवग्रह, ईहा, अवाय और
धारणा ये चार भेद होते हैं । यथा—मानस अवग्रह, मानस ईहा, मानस अवाय और
मानसी धारणा । स्पर्शनजन्य अवग्रह, स्पर्शनजन्य ईहा, स्पर्शनजन्य अवाय और स्पर्शनजन्य
धारणा । रसनाजन्य अवग्रह, रसनाजन्य ईहा, रसनाजन्य अवाय और रसनाजन्य १०
धारणा । घ्राणज अवग्रह, घ्राणज ईहा, घ्राणज अवाय और घ्राणज धारणा । चाक्षुष अवग्रह,
चाक्षुषी ईहा, चाक्षुष अवाय और चाक्षुषी धारणा । श्रोत्रजन्य अवग्रह, श्रोत्रजन्य ईहा,
श्रोत्रजन्य अवाय और श्रोत्रजन्य धारणा । इस प्रकार मतिज्ञानके चौबीस भेद होते हैं ।
अवग्रह आदिका लक्षण आगे ग्रन्थकार स्वयं ही कहेंगे ॥३०६॥

१. य कारणमुक्तं । २. य योदा कथितं । ३. य विभेदं । ४. य नमश्च शास्त्रकारः ।

३५

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

ईदृशकरणेण यदा सुनिर्णयः होदि सो अवाओ दु ।

कालंतरेवि निष्पिण्डवस्तुस्मरणस्य कारणं तुरियं ॥३०९॥

ईदृशकरणेन यदा सुनिर्णयो भवति सोऽव्यायस्तु । कालांतरेवि निर्णीतवस्तुस्मरणस्य कारणं

तुर्यं ॥

ईदृशकरणेन विनोपाकांशकारणविदं यज्जिकं यदा आगोम्मे ईहितविनोपात्यं सुनिर्णयः ५
उत्पन्ननिपतनपदाविशेषादिबिहृगंजिदमितु बलाकये येदितु बलाकाल्यकये आनुदो दु सुनिर्णय-
मस्तुमागजु ताः अनु अवाय इति अवायमेदितु अवयवोत्पत्तिरवायः एवं व्यपदेशमस्तु । तु दावं
वेत्याकांशितविशेषकये सुनिर्णयमवायमेदितवधारणात्यंमिदरिदं विपर्व्यासविदं निर्णयं मिप्या-
ज्ञानतेविदमवायमेतं विदु प्राह्यमस्तुमल्लि यज्जिकं स एवावायः आ अवायमे पुनः पुनः प्रवृत्ति-
रुपाभ्यासजनितसंस्कारात्मकमणि कालांतरदोः निर्णीतवस्तुस्मरणकारणत्वविदं तुरियं चतुर्थं १०
पारणात्यं ज्ञानं भवे अस्तु ।

बहुवहुविदं च सिप्पाणिस्सिदणुत्तं धुवं च इदरं च ।

उत्थैकैकैकै जादे छत्तीसं विसयमेदं तु ॥३१०॥

बहुवहुविपत्तिप्रानिःसुतानुक्तप्रुवं चेतरे च । तत्रैकैकस्मिन् जाते यदात्रिगत्तिरातमेवं तु ॥

अत्यंमुं ध्यंजनमुमे च मतिज्ञानविषयं द्वादशप्रकारमस्तुमेतं दोहे बहुवहुविषयः क्षिप्रोर्जिः १५
सुतोऽनुतोऽनु वदवेति । येन यदप्रकारमुं । एक एकविशोर्जिःसुत उत्तोऽनु वदवेति । येन
यदप्रकारमितरमेदमुं वृद्धि द्वादशविषयमस्तुमल्लि बहुविदद्वादशविषयमेदंमळोळु एकैकस्मिन्

ईदृशकरणेन विनोपाकांशविशेषाः पदवान् यदा ईहितविशेषात्यं सुनिर्णयः उत्पन्ननिपतनपदाविशे-
षादिबिहृगंजिदमितु बलाकये येदितु बलाकाल्यकये आनुदो दु सुनिर्णयः ५
प्राणाकांशितविशेषकये सुनिर्णयमवायमेदितवधारणात्यंमिदरिदं विपर्व्यासविदं निर्णयं मिप्याज्ञानतया अवायो २०
न मवतीति प्राह्यम् । ततः स एवावायः पुनः पुनः प्रवृत्तिरुपाभ्यासजनितसंस्कारात्मको मूर्खा कालांतरदोः
निर्णीतवस्तुस्मरणकारणत्वेन तुर्यं चतुर्थं पारणात्यं ज्ञानं भवति ॥३०९॥

अर्थो ध्यंजनं वा मतिज्ञानविषयः बहुः बहुविषयः क्षिप्रः अनिगुलः अनुक्तो प्रवृत्तयेति बोद्धा । तथा
इतरोर्जि एकः एकविषयः अनिगुलः दलः अस्तुवदवेति बोद्धा एवं द्वादशविषयः २०

विशेषकी आकांक्षारूप ईहा ज्ञानके पश्चात् जय ईहित विशेष अर्थका सुनिर्णय हो २५
जाता है । जैसे ऊपर-नीचे होने तथा पंथोके हिलाने आदि चिह्नोंसे यह बलाका ही है इस
प्रकार निदचयके होनेको अवाय कहते हैं । 'तु' शब्द पहले आकांक्षा क्रिये गये विशेष वस्तुके
निर्णयको ही अवाय कहते हैं यह अवधारणके लिए है । इससे यह ग्रहण करना चाहिय कि
वस्तु तो कुछ और है और निर्णय अन्य वस्तुका किया तो वह अवाय नहीं है । यही अवाय
बार-बार प्रवृत्तिरूप अभ्याससे उत्पन्न संस्काररूप होकर कालान्तरमें भी निर्णीत वस्तुके ३०
स्मरणमें कारण होता है तो धारण नामक चतुर्थ ज्ञान होता है ॥३०९॥

अर्थ या ध्यंजनरूप मतिज्ञानका विषय बारह प्रकारका होता है—यहु, बहुविषय,
क्षिप्र, अनिगुल, अनुक्त, ध्रुव ये छह तथा इनके प्रतिपक्षी एक, एकविषय, अक्षिप्र, निगुल, वक्त

१. य ए अवयवोत्पादः अवाय । २. य काङ्क्षालक्षित वि । ३. 'हं पश्चात् स' ।

‘वाणसिगनावासदोळग्नियुंटापुत्तिरले पुट्टिद धूमं काणल्पदुदु अनतिह्लाददोळ धूममनुपपन्नं निश्चितमते सर्वदेगसत्त्वकालसंबन्धितेयिदमग्नि धूमंगळ अन्यथानुपपत्तिरुपायविनाभावसंबन्धके ज्ञानं तत्त्वमं बुदकुं अदुयुं मतिज्ञानमवकुमितनुमानस्मृतिप्रत्यभिज्ञानतत्त्वार्थगळ नालकुं मतिज्ञान- गळमनिःसृतात्त्वविषयगंगळ केवलपरोक्षगळेके दोडेकदेगदिदमुं वैगद्याभावमप्युदरिदं । शेषस्पर्शना- दीद्रियानिद्रियव्यापारप्रभंगळप्य बह्वाद्यत्त्वविषयमतिज्ञानंगळ सांख्यवहारिकप्रत्यक्षंगळपुवेके- ५ दोडेकदेगदिदं वैगद्यसंभवादिदं प्रत्यक्षं विशदज्ञानमैदितु पूर्वाचार्यैर्गळिदं प्रत्यक्षार्कं लक्षणं पेळल्पदुदुदुदुदरिदं । पितवेल्लमुं मतिज्ञानंगळ प्रमाणंगळपुवेकेदोडे सम्यग्ज्ञानत्वादिदं सम्यग्ज्ञानं प्रमाणमैदितु प्रवचनदोळ पेळल्पदुदुदरिदं ।

एकचउपकं चउधीसद्वावीसं च तिप्पडि किच्चा ।

इगिछन्वारसगुणिदे मदिणाणे होंति ठाणाणि ॥३१४॥

१०

एकं चत्वारि चतुर्विंशतिमष्टाविंशति च त्रिः प्रति कृत्वा । एक पद्द्वादशगुणिते मतिज्ञाने भवन्ति स्थानानि ॥

यथा अत्र इषार्थदोउको वासव्यः उदाहरणप्रदसि प्रयुक्तः जलन्तरगायोवृत्तानिनुवार्थज्ञानस्य एतावन्पु- राहरणानि । पशान्तरसूचको वा । यथा महान्ते अग्नी सत्येव धूम उपपन्नो दृष्टः । त्वदे अन्यभावे धूमोऽनुप- पन्नो निश्चितः । तथैव सर्वदेगकालसंबन्धितया जनिपूपयोरुत्पद्यमानुपपत्तिरुपाय विनाभावसंबन्धस्य १५ ज्ञानं तर्कः शोऽपि मतिज्ञानं भवति । एवमनुमानस्मृतिप्रत्यभिज्ञानतत्त्वार्थगणि चत्वारि मतिज्ञानानि अनिसृताय- विषयाणि केवलं परोक्षाणि एकदेगशोऽपि वैगद्याभावात् । शेषाणि स्वर्शनादीन्द्रियानिन्द्रियगोपायप्रभवानि बह्वाद्यर्थविषयाणि मतिज्ञानानि सांख्यवहारिकप्रत्यक्षानि एकदेगजो वैगद्यसंभवात् । प्रत्यक्षं विशदं ज्ञानमिति पूर्वाचार्यैः प्रत्यक्षलक्षणैरूपोक्तत्वात् । तानि सर्वाणि अपि मतिज्ञानानि प्रमाणानि सम्यग्ज्ञानत्वात् । सम्यग्ज्ञानं प्रमाणं, इति प्रवचने प्रतिपादनात् ॥३१३॥ २०

गाथामें फहे अनिसृत अर्थके ज्ञानके ये उदाहरण हैं । अथवा वा तदद् पशान्तरका सूचक है । जैसे रसोई घरमें अग्निके होनेपर ही धूम देखा जाता है । तालाबमें अग्निका अभाव होनेसे धूम भी नहीं होता । तथा सर्वदेग और सर्वकाल सम्बन्धी रूपसे आग और धूमके अन्यथानुपपत्तिरूप अविनाभाव सम्बन्ध—कि जहाँ-जहाँ धूम होता है वहाँ-वहाँ अग्नि होती है । जहाँ आग नहीं होती वहाँ धूम भी नहीं होता—का ज्ञान तर्क है । यह भी मतिज्ञान है । २५ इस प्रकार अनुमान, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान और तर्क नामक चारों ज्ञान मतिज्ञान हैं । ये चारों अनिसृत अर्थको विषय करते हैं इससे केवल परोक्ष हैं, एकदेगसे भी इनमें स्पष्टताका अभाव है । शेष स्पर्शन आदि इन्द्रियों और मनके व्यापारसे उत्पन्न होनेवाले तथा वहू आदि अर्थको विषय करनेवाले मतिज्ञान सांख्यवहारिक प्रत्यक्ष हैं क्योंकि एकदेगसे स्पष्ट होते हैं । स्पष्ट ज्ञानको प्रत्यक्ष कहते हैं । इस प्रकार पूर्वाचार्योंने प्रत्यक्षाका लक्षण कहा है । ये सब मतिज्ञान प्रमाण हैं क्योंकि सम्यग्ज्ञान है । ‘सम्यग्ज्ञान प्रमाण है’ ऐसा आगममें कहा है ॥३१३॥ ३०

अल्लि श्रुतज्ञानवक्त्रानक्षरात्म अक्षरात्मकभेदविदे द्विभेदमवकु मल्लि अनक्षरात्मकमप्य श्रुत-
भेददोऽऽ पर्यायपर्यायसमासलक्षणसर्वजघन्यज्ञानं मोदल्लोऽऽ स्वोक्तप्रपञ्चतं असंख्येयलोकमात्राऽ
ज्ञानविकल्पगळपुववुमसंख्येयलोकमात्रवारपदस्थानवृद्धिर्विदं संवृद्धगळपुवु । अक्षरात्मकं श्रुतज्ञानं
द्विरूपवर्गधारातेपन्नपट्टवर्गमप्ये कट्टमैव पेसरनुलळोडिदोनेनितोऽऽरु लुपुगळनितुमेकरूपोनंगळ-
पुवुमनितुमक्षरंगळमपुनरुक्ताक्षरंगळनाथयिसि संख्यातविकल्पमवकुं । विवक्षितात्यर्हमिष्यवित-
निमित्तपुनरुक्ताक्षरग्रहणदोऽऽ नोडलधिकप्रमाणमुमकुमं बुदत्यं । ५

अनंतरं श्रुतज्ञानवक्त्रे प्रकारान्तरविदे भेदप्ररूपणात्यर्हमागि गाथाद्वयमं पेळदपं :—

पञ्जायस्खुरपदसंघादं पडिवत्तियाणि जोगं च ।

दुगवारपाहुडं च य पाहुडयं वत्थु पुळ्वं च ॥३१७॥

पर्यायानक्षरपदसंघातं प्रतिपत्तिकानुयोगं च । द्विकवारप्राभूतं च च प्राभूतकं वस्तुपूर्व च ॥ १०

तेसिं च समासेहि य वीसविधं वा हु होदि सुदणार्णं ।

आवरणस्स वि मेदा तत्तियमेचा हवंतित्ति ॥३१८॥

तेषां च समासेश्च विज्ञातिविधं वा हि भवति श्रुतज्ञानं । आवरणस्यापि भेदास्तापन्मात्रा
भवन्तीति ॥

श्रुतज्ञानस्य अनक्षरात्मकाक्षरात्मको द्वौ भेदौ, तत्र अनक्षरात्मके श्रुतज्ञाने पर्यायपर्यायसमासलक्षणे १५
सर्वजघन्यज्ञानमादि कृत्वा स्वोक्तप्रपञ्चतं असंख्येयलोकमात्रा ज्ञानविकल्पा भवन्ति । ते च असंख्येयलोकमात्र-
वारपदस्थानवृद्ध्या संवृद्धिः भवन्ति । अक्षरात्मकं श्रुतज्ञानं द्विरूपवर्गधारातेपन्नपट्टवर्गस्य एकद्वयान्मो यावन्ति
रूपाणि एकरूपोनानि सन्ति सावन्ति अक्षराणि अपुनरुक्ताक्षराण्यामित्ये संख्यातविकल्पं भवति । विवक्षितात्यर्ह-
मिष्यकनिमित्तं पुनरुक्ताक्षरग्रहणे ततोऽधिकप्रमाणं भवतीत्यर्थः ॥३१९॥ अथ श्रुतज्ञानस्य प्रकारान्तरेण भेदान्
गाथाद्वयेनाहु— २०

श्रुतज्ञानके अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक ये दो भेद हैं । अनक्षरात्मक श्रुतज्ञानके पर्याय १५
और पर्यायसमास दो भेद हैं । इसमें सर्वजघन्य ज्ञानसे लेकर अपने उत्कृष्ट पर्यन्त असंख्यात
लोक प्रमाण ज्ञानके भेद होते हैं । वे भेद असंख्यात लोकमात्र वार पदस्थानपतित वृद्धिको
लिये हुए हैं । अक्षरात्मक श्रुतज्ञानके संख्यात भेद हैं । सो द्विरूप वर्गधारामें उत्पन्न छठे
वर्गका, जिसका प्रमाण एकट्ठी है उसके प्रमाणमें-से एक कम करनेपर जितने अपुनरुक्त अक्षर २५
होते हैं उतने हैं । इसका आशय यह है कि विवक्षित अर्थको प्रकट करनेके लिए पुनरुक्त
अक्षरोंके ग्रहण करनेपर उससे अधिक प्रमाण हो जाता है ॥३१६॥

विशेषार्थ—दोसे लेकर वर्ग करते जानेको द्विरूपवर्गधारा कहते हैं । जैसे दोका प्रथम १५
वर्ग चार होता है । चारका वर्ग सोलह होता है । सोलहका वर्ग दो सौ छप्पन होता है ।
दो सौ छप्पनका वर्ग पैसठ हजार पाँच सौ छत्तीस होता है जिसको पण्णदट्ठी कहते हैं । १०
पण्णदट्ठीका वर्ग वादाल और वादालका वर्ग एकट्ठी प्रमाण होता है यही छठा वर्गस्थान है ।
इसमें एक कम करनेसे श्रुतज्ञानके समस्त अपुनरुक्त अक्षर होते हैं । उतने ही अक्षरात्मक
श्रुतज्ञानके भेद हैं ।

अथ अन्य प्रकारसे श्रुतज्ञानके भेद दो गाथाओंसे कहते हैं—

पोस्ततप विशेषमरियल्पद्रुमदाबुद्धेर्दोषे पर्यायमेव प्रथमभूतज्ञानं तु मत्ते सूक्ष्मनिगोद-
लक्ष्यपर्याप्तकन संबंधि सर्वजघन्यश्रुतज्ञानमवकुं । पुनः मत्ते पर्यायज्ञानदावरणमुं तदनन्तरज्ञान
भेददोहनंतभागवृद्धिपुक्तपर्यायसमासज्ञानप्रथमभेदोक्तकुमर्दते दोषे उदयगतपर्यायज्ञानावरण-
समयप्रबद्धोदयनियेकदनुभागगत सर्वधातिस्पष्टकंगदयाभावलक्षणसमयमुमवदकेये सदवस्था-
लक्षणोपशममुं देशधातिस्पष्टकंगदयपुमुंदागुत्तिरलुमंतप्पावरणोदर्यादिवं पर्यायसमासप्रथमज्ञानमे-
पावरणिसल्पद्रुगुं । तुमत्ते पर्यायज्ञानमावरणिसल्पडदेके दोषे तदावरणदोश जीवगुणसम्य ज्ञानक-
भावमागुत्तिरलु गुणियप्यजीवकेपुमभावप्रसंगमवकुमप्युदरिवं ।

अनुभागरचनेयं स्यापिसल्पट्टल्लि सिद्धान्तैकभागमात्रद्रव्यानुभागक्रमहानिवृद्धिपुक्तनाना-
गुणहानिस्पष्टकवर्गणात्मकमप्य श्रुतज्ञानावरणद्रव्यवर्तित सर्वतःस्तोकमप्य सर्वपश्चिमप्रतीणोदया-
नुभागासर्वधातिस्पष्टकद्रव्यवर्तकेयो पर्यायज्ञानावरणत्वविवं तावन्मात्रावरणद्रव्यवर्तके सर्वकालदोश-
मुदयाभावमप्युदरिवं ।

तवीनं विशेषं जानीहि, सः कः ? पर्यायज्ञानं-पर्यायाख्यं प्रथमं श्रुतज्ञानं, तु-पुनः, सूक्ष्मनिगोदलक्ष्य-
पर्याप्तकस्य संबंधि सर्वजघन्यं श्रुतज्ञानं भवति । पुनः-पदवात् पर्यायज्ञानस्य आवरणं तदनन्तरज्ञानमेवे
अनन्तभागवृद्धिपुक्ते पर्यायसमासज्ञानप्रथमभेदे भवति, सद्यथा-उदयागतपर्यायज्ञानावरणसमयप्रबद्धोदयनियेक-
स्यानुभागानां सर्वधातिस्पर्धकानामुदयाभावलक्षणः छयः, तेषामेव सदवस्थालक्षण उपशमः, देशधातिस्पर्ध-
कानामुदये सति तदावरणोदयेन पर्यायसमासप्रथमज्ञानमेव आव्रियते न तु पर्यायज्ञानम् । तदावरणे जीवगुणस्य
ज्ञानत्वाभावे गुणिनो जीवस्याप्यभावप्रसंगम् । अनुभागरचनायां विन्यस्ते सिद्धान्तैकभागमात्रे द्रव्यानुभाग-
क्रमहानिवृद्धिपुक्ते नानागुणहानिस्पर्धकवर्गणात्मके श्रुतज्ञानावरणश्चे सर्वतः स्तोकस्य सर्वपश्चिमप्रतीणोदयानु-
भागसर्वधातिस्पर्धकद्रव्यस्यैव पर्यायज्ञानावरणत्वात् । तावतः आवरणद्रव्यस्य सर्वकालेऽनुदयाभावात् ॥३१॥

यह विशेष जानना कि पर्याय नामक प्रथम श्रुतज्ञान सूक्ष्म निगोदिया लक्ष्यपर्याप्तकका २०
समयसे जघन्य श्रुतज्ञान होता है । किन्तु पर्यायज्ञानका आवरण उसके अनन्तर जो ज्ञानका
भेद है, जो उससे अनन्तभागवृद्धिको लिये हुए है उस पर्याय समास ज्ञानके प्रथम भेदपर
होता है । जो इस प्रकार है—उदयप्राप्त पर्याय ज्ञानावरणके समयप्रयुक्तका जो निषेक उदयमें
आया है उसके अनुभागके सर्वधाती स्पष्टकोंके उदयका अभाव ही छय है तथा जो अगले
निषेक सन्ध्याधी सर्वधाती स्पष्टक सत्तामें वर्तमान है उनका उपशम है और देशधाती २५
स्पष्टकोंका उदय है । ऐसा दायोपशम पर्याय ज्ञानावरणका सदा रहता है । अतः पर्याय
ज्ञानावरणके उदयसे पर्याय समास ज्ञानका प्रथम भेद ही आवृत होता है, पर्यायज्ञान नहीं ।
यदि उसका भी आवरण हो जाये तो जीवके गुण ज्ञानका अभाव होनेपर गुणो जीवके भी
अभावका प्रसंग आता है । तथा अनुभाग रचनामें स्थापित किया सिद्ध राशिका अनन्तर्वा
भागमात्र जो श्रुतज्ञानावरणका द्रव्य अर्थात् परमाणुसमूह है वह क्रम हानि और वृद्धिसे ३०
संयुक्त है, नाना गुणहानि स्पर्धक वर्गणात्मक है, उस श्रुतज्ञानावरणके द्रव्यमें जिसका वदयरूप
अनुभाग क्षीण हो गया है और जो सबसे थोड़ा तथा सबसे अन्तिम सर्वधाति स्पर्धक है
उसीका नाम पर्यायज्ञानावरण है । इतने आवरणका कभी भी वदय नहीं होता । इसलिये
भी पर्यायज्ञान निरावरणहै ॥३१॥

यद्दृष्ट्याभिभवभ्रमणसंभूतबहुतमसंज्ञेऽवृद्धिर्पिदभावरणके सोद्यानुभागेदयासंभवमप्युदात्तं ।
द्वितीयादिसमयपञ्चोक्तं ज्ञानदर्शनवृद्धि संभवमेतदु त्रिवर्जप्रथमवर्जतामपञ्चोक्तं पर्यायज्ञानसंभव-
मरित्युक्तं ।

सुदृढमणिगोद अपञ्चचपस्य बादस्त पठमसमयमि ।

फासिदियमदिपुर्वं सुदणानं लद्धिअकुररयं ॥३२२॥

सूक्ष्ममणिगोदलक्ष्यपर्याप्तकस्य ज्ञातस्य प्रथमतमये । स्वर्जनैश्चिपमतिपूर्वं धृतज्ञानं लक्ष्यक्षरकं ॥

सूक्ष्ममणिगोदलक्ष्यपर्याप्तकस्य जननप्रथमतमयवोक्तं तत्त्वज्ञप्यस्पर्शनैश्चिपमतिज्ञानपूर्वकं लक्ष्य-
लक्ष्यक्षरपरमावेद्यमस्य पूर्वोक्तचरमभरत्रिवर्जप्रथमतमयाविशेषणविशिष्टमस्य तत्त्वज्ञप्य-
पर्यायधृतज्ञानमवबुधेतिवितु ज्ञातव्यमवबुधेति । लक्ष्य एवमुक्तं धृतज्ञानावरणक्षयोपशममवबुधेतिवितुप्रहण-
शक्तिमेव लक्ष्या अक्षरमविनश्वरं लक्ष्यक्षरं तत्त्वज्ञानावरणक्षयोपशममवबुधेतिवितु विद्यमानत्वादित् ।

अनन्तरं दशाभाषागुणैर्वृद्धिं पर्यायसमाप्तप्रहरणं वेत्तव्यं :-

अवहवरिम्मि अणंतमसंखं संखं च भागवद्धीओ ।

संतुमसंखमणंतं गुणवद्धी होति हु कमेण ॥३२३॥

अवरोप्यनंतमसंखं संखं च भागवद्धयः । संखमसंखमनंतं गुणवद्धयो भवति हि क्रमेण ॥

तत्त्वज्ञप्यपर्यायज्ञानवले क्रमेण वक्ष्यमाणपरिपाटिषिदमनंतभागवृद्धिदुमसंख्यातभाग-
वृद्धिं संख्यातभागवृद्धिं संख्यातगुणवृद्धिदुमसंख्यातगुणवृद्धिदुमनंतगुणवृद्धिदुमेतिवितु यद्व्याख्या-

भवति । सूक्ष्मपर्यायमवभ्रमणसंभूतबहुतमसंज्ञेऽवृद्धिः आवरणस्य तीव्रतमानुभागेदयसंभवान्, द्वितीयादि-
समयेषु ज्ञानदर्शनवृद्धिसंभवान् त्रिवर्जप्रथमवर्जतामये एव पर्यायज्ञानपर्यायवोक्तं ज्ञानस्य ॥३२१॥

सूक्ष्ममणिगोदलक्ष्यपर्याप्तकस्य जननप्रथमतमये तत्त्वज्ञप्यस्पर्शनैश्चिपमतिज्ञानपूर्वकं लक्ष्यक्षरपरमावेद्य-
'पूर्वोक्तचरमभरत्रिवर्जप्रथमतमयाविशेषणविशिष्टं तत्त्वज्ञप्यं पर्यायधृतज्ञानं भवतीति ज्ञातव्यम् । लक्ष्यनाम-
धृतज्ञानावरणक्षयोपशमः अवबुधेतिवितु, लक्ष्या अक्षरं अविनश्वरं लक्ष्यक्षरं तावत् क्षयोपशमस्य सर्वथा
विद्यमानत्वात् ॥३२२॥ अथ दशविधाभिः पर्यायसमाप्तप्रकरणं प्रवक्ष्यति—

सर्वत्रपण्यपर्यायज्ञानस्य उपरि क्रमेण वक्ष्यमाणपरिपाट्या अनन्तभागवृद्धिः अक्षरपातभागवृद्धिः

संखल्लेखे यद्नेसे आवरणके तीव्रतम अनुभाषका नश्य होता है, तथा दूसरे मोढ़े आदिके
समयोंमें ज्ञान और दर्शनमें वृद्धि सम्भव है । इसलिये तीन मोढ़ोंमें-से प्रथम मोढ़ेके समयमें
ही पर्याय ज्ञान जानना ॥३२१॥

सूक्ष्म निगोद लक्ष्यपर्याप्तक जीवके जन्म लेनेके प्रथम समयमें सबसे जवन्य स्पर्शन
इन्द्रियजन्य मतिज्ञानपूर्वक तथा पूर्वोक्त विशेषणोंसे विशिष्ट सत्यसे जपन्य पर्याय धृतज्ञान
होता है । उसका दूसरा नाम लक्ष्यक्षर है । धृतज्ञानावरणके क्षयोपशमको अथवा अर्थको
ग्रहण करनेकी शक्तिको लक्ष्य कहते हैं । लक्ष्यसे जो अक्षर अर्थात् अविनाशी होता है वह
लक्ष्यक्षर है ; क्योंकि इतना क्षयोपशम सदा विद्यमान रहता है ॥३२२॥

अथ दस गाथाओंसे पर्यायसमाप्तका कथन करते हैं—

सबसे जपन्य पर्यायज्ञानके उपरि आगे कही गयी परिपाटीके अनुसार अनन्तभागवृद्धि,

द्वियारलितोच्चंकादिकमंगुलासंख्यातैकवारसंदृष्टिः ।

मत्तमित्ति सर्वजघन्यमप्य श्रुतज्ञानं पर्यायमेष लक्ष्यसंज्ञापरनामधेयस्यानन्द मुंदण पर्यायसमासज्ञानविकल्पगठनतैकभागवृद्धियुक्तस्यानंगठ्य सूर्यगुलासंख्यातैकभागमात्रविकल्प-
गठ्युपवर वृद्धिप्रमाण क्रमविधानप्ररूपण माहत्पट्टमुपदेते दोडनंतगुणजीवराशिप्रमितत्वात्य-
प्रकाशनशक्त्यविभागप्रतिच्छेदात्मकसर्वजघन्यश्रुतज्ञानमं । ज । एंवितु संस्थापिति मत्तमा राशिगं ५
सर्वजीवराशिप्यनंतदिवं भागिति तदेकभागमं तज्जघन्यज्ञानदीप्ते समच्छेदमं माडि कूटुत्तमिरलदु

अथानन्तभागवृद्धेरङ्गुलासंख्यातमात्रात्रवारान् वृत्तिको दस्यते तद्यथा—अनन्तगुणजीवराशिमान-
स्यायप्रकाशनशक्त्यविभागप्रतिच्छेदात्मकं सर्वजघन्यश्रुतज्ञानं ज इति संदृष्ट्या संस्थाप्य तं राशि सर्वजीवराशि-
स्थानान्तेन भवत्वा तदेकभागो ज तज्जघन्यस्थोपरि समच्छेदेन युवे सति यो राशिर्नाम्ये स पर्यायसमासश्रुत-
१६

होती है । उसकी पहचानके लिए यन्त्रमें जैसे प्रथम पंक्ति थी उसी प्रकार उसके नीचे दूसरी १०
पंक्ति लिखी । यहाँसे आगे—तीसरी पंक्ति प्रथम पंक्तिके समान लिखी । इतना विशेष कि
नीचे कोठेमें जहाँ दो उकार एक छहका अंक लिखा था वहाँ तीसरी पंक्तिमें नीचे कोठेमें दो
उकार और सातका अंक लिखा । यहाँसे आगे जैसे वीनों पंक्तिवोंमें आदिसे लेकर अनु-
क्रमसे वृद्धि हुई उसी अनुक्रमसे सूर्यगुलके असंख्यातयें भाग प्रमाण होनेपर जब असंख्यात
गुण वृद्धि भी सूर्यगुलके असंख्यातयें भाग प्रमाण हो तब पूर्ति हो । इसीसे यन्त्रमें जैसे प्रथम १५
तीन पंक्तियाँ थी वैसे ही दूसरी तीन पंक्तियाँ लिखी । इस तरह छह पंक्तियाँ हुईं । यहाँसे
आगे—जैसे आदिसे लेकर तीन पंक्तिवोंमें क्रमसे वृद्धियाँ कही थी वैसे ही क्रमसे पुनः सब
वृद्धियाँ हुईं । विशेष इतना कि तीसरी पंक्तिके अन्तमें जहाँ असंख्यात गुण वृद्धि कही थी,
उसके स्थानमें यहाँ तीसरी पंक्तिके अन्तमें एक बार अनन्त गुणवृद्धि होती है । इसीसे यन्त्रमें
पहली, दूसरी, तीसरीके समान तीन पंक्तियाँ और लिखीं । किन्तु तीसरी पंक्तिके नीचे २०
कोठेमें जहाँ दो उकार और सातका अंक लिखा है उसके स्थानमें यहाँ तीसरी पंक्तिके नीचे
कोठेमें दो उकार और आठका अंक लिखा । जो अनन्त गुणवृद्धिका सूचक है । इसके आगे
किसी वृद्धिके न होनेसे अनन्त गुणवृद्धि एक ही बार होती है । उसके होनेपर जो प्रमाण
हुआ वह पदस्थान पतित वृद्धिका प्रथम स्थान जानना । इस प्रकार पर्याय समास भुवज्ञानमें
असंख्यात लोक बार मात्र पदस्थान पतित वृद्धि होती है । २५

आगे उक्त कथनको स्पष्ट करते हैं—

सबसे जघन्य पर्याय श्रुतज्ञानके अपने विषयके प्रकाशनरूप शक्तिके अविभाग
प्रतिच्छेद जीवराशिसे अनन्तगुणे होते हैं । उस राशिको सब जीवराशिरूप अनन्तसे भाजित
करनेपर जो एक भाग आवे उसे उस जघन्य ज्ञानमें मिलानेपर पर्याय समास श्रुतज्ञानके २०
विकल्पोंमें—से सबसे जघन्य प्रथम भेद आता है । यह एक बार अनन्त भाग वृद्धि हुई । फिर
उस पर्याय समास ज्ञानके प्रथम विकल्पको जीवराशि प्रमाण अनन्तका भाग देनेपर जो एक
भाग आवे उसे पर्याय समास ज्ञानके प्रथम भेदमें मिलानेपर उसका दूसरा भेद होता है ।
यह दूसरी अनन्त भाग वृद्धि हुई । उस दूसरे भेदको अनन्तका भाग देनेसे जो एक भाग
आवे उसे उस दूसरे विकल्पमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका तीसरा विकल्प होता है ।
यह तीसरी अनन्तभाग वृद्धि हुई । फिर हम तीसरे भेदमें अनन्तसे भाग देनेपर जो एक भाग २५

तिरत्तु पर्यायसमासपठ धृत्तज्ञानविकल्पमस्तु ज १६ १६ १६ १६ १६ १६ मितु सूच्यगुला-
१६ १६ १६ १६ १६ १६

संख्यातेरुभागमात्रान्तैरुभागवृद्धियुक्तस्यानंगत्वं सर्वंमु नटसत्पद्भुवस्ति तद्दृष्टिगच्छे तज्जघन्यं

वृत्ते सर्वास्त्वयान्तराद्युक्तविरहः क १६ १६ १६ १६ १६ १६ एवं सूच्यगुलासंख्यातेरु-
१६ १६ १६ १६ १६ १६

भागमात्रानि अनन्तैरुभागवृद्धियुक्तस्यानानि सर्वास्थानेऽप्यानि ।

इसमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है । यहाँसे अनन्त भाग वृद्धिका प्रारम्भ हुआ । इसी प्रकार सूच्यगुलके असंख्यातवर्षे भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर जो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसमें पुनः असंख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आया उसको उसी भेदमें मिलानेपर दूसरी असंख्यात भाग वृद्धिको लिये पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है । ५

इसी क्रमसे सूच्यगुलके असंख्यातवर्षे भाग प्रमाण असंख्यात भाग वृद्धिके पूर्ण होनेपर जो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसमें अनन्तका भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसको उसीमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है । यहाँ पुनः अनन्त भाग वृद्धिका प्रारम्भ हुआ सो सूच्यगुलके असंख्यातवर्षे भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धिके पूर्ण होनेपर जो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसको उत्कृष्ट संख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आया उसको उसीमें मिलानेपर प्रथम संख्यात भाग वृद्धिको लिये पर्याय समासका भेद होता है । १०
इससे आगे पुनः अनन्त भाग वृद्धि प्रारम्भ होती है । सो जैसे पूर्वमें कहा है उसीके अनुसार वृद्धि जानना । इतना विनये है कि जिस भेदसे आगे अनन्त भाग वृद्धि होती है उसी भेदमें जीवराशि प्रमाण अनन्तका भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसे उसी भेदमें मिलानेपर अनन्तरवर्ती भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे असंख्यात भाग वृद्धि होती है वहाँ उसी भेदको असंख्यात छोड़ प्रमाण असंख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसको उसी भेदमें मिलानेपर उससे अनन्तरवर्ती भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे संख्यात भाग वृद्धि हो वहाँ उसी भेदको उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण संख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसे उसी भेदमें मिलानेपर उससे आगेका भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे संख्यात गुण वृद्धि होती है वहाँ उस भेदको उत्कृष्ट संख्यातसे गुणा करनेपर उस भेदसे अनन्तरवर्ती भेद होता है । जिस भेदसे आगे असंख्यात गुण वृद्धि होती है वहाँ उसी भेदको असंख्यात लोकसे गुणा करनेपर उससे आगेका भेद होता है । जिस भेदसे आगे अनन्त गुण वृद्धि होती है वहाँ उसी भेदको जीवराशि प्रमाण अनन्तसे गुणा करनेपर उससे आगेका भेद होता है इस प्रकार पट्टयान पवित वृद्धिका क्रम जानना । २०

यहाँ जो संख्या कही है सो सब संख्या ज्ञानके अविभागो प्रतिच्छेदोंकी जानना । तथा जो यहाँ भेद कहे हैं उनका मात्वा यह है कि जीवके पर्याय ज्ञानसे यदि बढ़ता हुआ ज्ञान होता है सो पर्याय समासका प्रथम भेद ही होता है । ऐसा नहीं है कि किसी जीवके पर्यायज्ञानसे एक-दो अविभाग प्रतिच्छेद बढ़ता हुआ भी ज्ञान हो । २५

तितल्लु पर्यायसमासपठ भुक्तज्ञानविकल्पमन्त्रकु अ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ मितु सूच्यगुला-
१६ १६ १६ १६ १६ १६ १६

संख्यातेकभागमात्रान्तैकभागवृद्धियुक्तस्यानंगत् सव्यंमु नटसत्पद्भुवस्ति तद्वृद्धिगन्त्ये तज्जघन्यं

युने पर्यायसमासपठभुक्तज्ञानविकल्पः अ १६ १६ १६ १६ १६ १६ एवं सूच्यगुलासंख्यातेक-
१६ १६ १६ १६ १६ १६

भागमात्राणि अनन्तरूपावृद्धियुक्तस्यानानि सर्वाण्यनेतन्मानि ।

वृत्तीमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है । यहाँसे अनन्त भाग वृद्धिका प्रारम्भ हुआ । इसी प्रकार सूच्यगुलके असंख्यातवै भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर जो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसमें पुनः असंख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आया उसको वृत्ती भेदमें मिलानेपर दूसरी असंख्यात भाग वृद्धिको लिये पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है । ५

इसी क्रमसे सूच्यगुलके असंख्यातवै भाग प्रमाण असंख्यात भाग वृद्धिके पूर्ण होनेपर जो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसमें अनन्तका भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसको वृत्तीमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है । यहाँ पुनः अनन्त भाग वृद्धिका प्रारम्भ हुआ सो सूच्यगुलके असंख्यातवै भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धिके पूर्ण होनेपर जो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसको वृत्त्युक्त संख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आया उसको वृत्तीमें मिलानेपर प्रथम संख्यात भाग वृद्धिको लिये पर्याय समासका भेद होता है । १०

इससे आगे पुनः अनन्त भाग वृद्धि प्रारम्भ होती है । सो जैसे पूर्वमें कहा है वृत्तीके अनुसार वृद्धि जानना । इतना विशेष है कि जिस भेदसे आगे अनन्त भाग वृद्धि होती है वृत्ती भेदमें जीवराशि प्रमाण अनन्तका भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसे वृत्ती भेदमें मिलानेपर अनन्तरवर्ती भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे असंख्यात भाग वृद्धि होती है वहाँ वृत्ती भेदको असंख्यात लोक प्रमाण असंख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसको वृत्ती भेदमें मिलानेपर उससे अनन्तरवर्ती भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे संख्यात भाग वृद्धि हो वहाँ वृत्ती भेदको वृत्त्युक्त संख्यात प्रमाण संख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसे वृत्ती भेदमें मिलानेपर उससे आगेका भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे संख्यात गुण वृद्धि होती है वहाँ उस भेदको वृत्त्युक्त संख्यातसे गुणा करनेपर उस भेदसे अनन्तरवर्ती भेद होता है । जिस भेदसे आगे असंख्यात गुण वृद्धि होती है वहाँ वृत्ती भेदको असंख्यात लोकसे गुणा करनेपर उससे आगेका भेद होता है । जिस भेदसे आगे अनन्त गुण वृद्धि होती है वहाँ वृत्ती भेदको जीवराशि प्रमाण अनन्तसे गुणा करनेपर उससे आगेका भेद होता है इस प्रकार पदस्थान पठित वृद्धिका क्रम जानना । २५

यहाँ जो संख्या कही है सो सब संख्या ज्ञानके अविभागो प्रतिच्छेदोंकी जानना । तथा जो वृत्ती भेद कहे हैं उनका भावार्थ यह है कि जीवके पर्याय ज्ञानसे यदि बढ़ता हुआ ज्ञान होता है तो पर्याय समासका प्रथम भेद ही होता है । ऐसा नहीं है कि वृत्ती जीवके पर्यायज्ञानसे एक-दो अविभाग प्रतिच्छेद बढ़ता हुआ भी ज्ञान हो । ३०

परलु पर्यायसमासपद्य भूतज्ञानविकल्पमवकु ज १६ १६ १६ १६ १६ १६ मितु सूच्यगुला-
१६ १६ १६ १६ १६ १६
ख्यातैकभागमाश्रान्तैकभागवृद्धियुक्तस्थानंगुलु सव्यंमु नदसत्पडुवुवलि तद्वृद्धिपङ्के तज्जघन्यं

ने पर्यायसमासपद्य भूतज्ञानविकल्पः ज १६ १६ १६ १६ १६ १६ एवं सूच्यगुलासंख्यातैक-
१६ १६ १६ १६ १६ १६

गमात्राणि अनन्तैकमागवृद्धियुक्तस्थानानि सर्वाभ्यानेतव्यानि ।

सीमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है । यहाँसे अनन्त भाग वृद्धिका प्रारम्भ ५
आ । इसी प्रकार सूच्यगुलके असंख्यातयें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर जो पर्याय
समास ज्ञानका भेद हुआ उसमें पुनः असंख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आया उसको
सी भेदमें मिलानेपर दूसरी असंख्यात भाग वृद्धिको लिये पर्याय समास ज्ञानका भेद
होता है ।

इसी क्रमसे सूच्यगुलके असंख्यातयें भाग प्रमाण असंख्यात भाग वृद्धिके पूर्ण होनेपर १०
तो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसमें अनन्तका भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसको
सीमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है । यहाँ पुनः अनन्त भाग वृद्धिका
प्रारम्भ हुआ सो सूच्यगुलके असंख्यातयें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धिके पूर्ण होनेपर जो
पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसको उत्कृष्ट संख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आया
उसको उसीमें मिलानेपर प्रथम संख्यात भाग वृद्धिको लिये पर्याय समासका भेद होता है । १५
उससे आगे पुनः अनन्त भाग वृद्धि प्रारम्भ होती है । सो जैसे पूर्वमें कहा है उसीके अनुसार
वृद्धि जानना । इतना विशेष है कि जिस भेदसे आगे अनन्त भाग वृद्धि होती है उसी भेदमें
जीवराशि प्रमाण अनन्तका भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसे उसी भेदमें मिलानेपर
अनन्तरवर्ती भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे असंख्यात भाग वृद्धि होती है वहाँ उसी
भेदको असंख्यात लोक प्रमाण असंख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसको उसी २०
भेदमें मिलानेपर उससे अनन्तरवर्ती भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे संख्यात भाग
वृद्धि हो वहाँ उसी भेदको उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण संख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आवे
उसे उसी भेदमें मिलानेपर उससे आगेका भेद होता है । तथा जिस भेदसे आगे संख्यात गुण
वृद्धि होती है वहाँ उस भेदको उत्कृष्ट संख्यातसे गुणा करनेपर उस भेदसे अनन्तरवर्ती भेद
होता है । जिस भेदसे आगे असंख्यात गुण वृद्धि होती है वहाँ उसी भेदको असंख्यात लोकसे २५
गुणा करनेपर उससे आगेका भेद होता है । जिस भेदसे आगे अनन्त गुण वृद्धि होती है वहाँ
उसी भेदको जीवराशि प्रमाण अनन्तसे गुणा करनेपर उससे आगेका भेद होता है इस प्रकार
पदस्थान पतित वृद्धिका क्रम जानना ।

यहाँ जो संख्या कही है सो सब संख्या ज्ञानके अविभागी प्रतिच्छेदोंकी जानना ।
तथा जो यहाँ भेद कहे हैं उनका भावार्थ यह है कि जीवके पर्याय ज्ञानसे यदि बढ़ता हुआ ३०
ज्ञान होता है तो पर्याय समासका प्रथम भेद ही होता है । ऐसा नहीं है कि किसी जीवके
पर्यायज्ञानसे एक-दो अविभाग प्रतिच्छेद बढ़ता हुआ भी ज्ञान हो ।

तद्वृद्धिगण्य प्रक्षेपकंगळारमं प्रक्षेपकप्रक्षेपकंगळं पदिनैदुमं पिगुलिगटिप्पत्तुमं पिगुलिपिगुलिगळं पदिनैदुमं चूर्णिगळारमनोदु चूर्णिचूर्णिगुमं यथाक्रमविदं केळगे केळगे स्थापिमुगुदितनंतभागगुट्टि-
युक्तस्यानंगळं सूच्यंगुलासंस्थापनमात्रंगळगट्टेष्टपरोळं वैकळ्यु तंतम्म जघन्यंगळ केळगे केळगे
तंतम्म प्रक्षेपकंगळ गळट्टमात्रंगळगुयवं स्थापिसि यवर केळगे प्रक्षेपकप्रक्षेपकंगळ हपोनगळट्टे
एकवारसंकलनघनमात्रंगळगुयवं स्थापिमुगुदवर केळगे पिगुलिगळं द्विहपोनगळट्टेय द्विकवार-
संकलनघनमात्रंगळगुयवं स्थापिसि यवर केळगे पिगुलिपिगुलिगळं त्रिहपोनगळट्टेय त्रिकवार-
संकलनघनमात्रंगळगुयवं स्थापिसि यवर केळगे चूर्णिगळं चतुहपोनगळट्टेय चतुर्वारसंकलनघन-
मात्रंगळगुयवं स्थापिसि यवर केळगे चूर्णिचूर्णिगळं पंचहपोनगळट्टेय पंचवारसंकलनघनमात्रंग-
गळगुयवं स्थापिमुगुदितु स्थापिमुत्तं पोगुतिरलु चरमाननंतभागवृद्धिमुक्तस्यानविकल्पदोळु

तत्रप्रथममुपरि न्यस्य तदपस्तनभागे तद्वृद्धेः पञ्च प्रक्षेपकान् दत्त प्रक्षेपकप्रक्षेपकान् दत्त पिगुलीन् पञ्च
पिगुलिपिगुलीन् एकं चूर्णि च अक्षेपो न्यस्येत् । यद्यविकल्पे छत्रव्यवस्थापरि न्यस्य तदपस्तनभागे तद्वृद्धेः
पद प्रक्षेपकान् पञ्चदश प्रक्षेपकप्रक्षेपकान् विधाय पिगुलीन् पञ्चदश पिगुलिपिगुलीन् पद चूर्णीन् एकं चूर्णिचूर्णि
च अक्षेपो न्यस्येत्, एवमनन्तभागवृद्धिमुक्तस्यानविकल्पे सूच्यंगुलासंस्थेयमात्रंगुलेषु सर्वेष्वपि स्वस्वरव्यवस्थानामयोः
स्वस्वरप्रक्षेपकान् गळट्टमात्रान् न्यस्येत्, तेषामयः प्रक्षेपकप्रक्षेपकान् कृतेनगळट्टस्य एकवारसंकलनघनमात्रान्
न्यस्येत् । तेषामयः पिगुलीन् द्विहपोनगळट्टस्य द्विकवारसंकलनघनमात्रान् न्यस्येत् । तेषामयः पिगुलिपिगुलीन्
त्रिहपोनगळट्टस्य त्रिकवारसंकलनघनमात्रान् न्यस्येत्, तेषामयः चूर्णीन् चतुहपोनगळट्टस्य चतुर्वारसंकलनघन-
मात्रान् न्यस्येत् । तेषामयः चूर्णिचूर्णीन् पञ्चहपोनगळट्टस्य पञ्चवारसंकलनघनमात्रान् न्यस्येत् । एवं गत्वा

छद्म प्रक्षेपक-प्रक्षेपक, चार पिगुलि और एक पिगुलि-पिगुली स्थापित करें । पाँचवें विकल्पमें
जघन्यको ऊपर स्थापित करके उसके नीचे-नीचे उसकी वृद्धि के पाँच प्रक्षेपक, दस प्रक्षेपक-
प्रक्षेपक, दस पिगुली, पाँच पिगुली-पिगुली और एक चूर्णि स्थापित करे । छठे विकल्पमें
जघन्यको ऊपर स्थापित करके उसके नीचे-नीचे उसकी वृद्धि के छद्म प्रक्षेपक, पन्द्रह प्रक्षेपक-
प्रक्षेपक, बीस पिगुली, पन्द्रह पिगुली-पिगुली, छद्म चूर्णि और एक चूर्णि-चूर्णि स्थापित करे ।
इस प्रकार सूच्यंगुल के असंस्थापित भाग मात्र अनन्त भाग वृद्धि युक्त सय पयाँय समाग
गान के स्थानोंमें अपने-अपने जघन्य के नीचे-नीचे अपने-अपने प्रक्षेपकोंको गळट्ट प्रमाण
स्थापित करना । उनके नीचे प्रक्षेपक-प्रक्षेपक एक कम गळट्ट के एक बार संकलन घन मात्र
स्थापित करना । उनके नीचे पिगुली दो हीन गळट्ट के दो बार संकलन घन मात्र स्थापित
करना । उनके नीचे पिगुली-पिगुली तीन हीन गळट्ट के तीन बार संकलन घन मात्र स्थापित
करना । उनके नीचे चूर्णि चार हीन गळट्ट के चार बार संकलन घनमात्र स्थापित करना ।
उनके नीचे चूर्णि-चूर्णि पाँच हीन गळट्ट के पाँच बार संकलन घन मात्र स्थापित करना ।
इसी प्रकार क्रमसे एक हीन गळट्ट का एक-एक अधिक बार संकलन चूर्णि-चूर्णि ही अन्त पर्यन्त
ज्ञानना । अनन्त भाग वृद्धि युक्त स्थानोंमें अनन्त का जो स्थान है उनमेंसे जघन्यको ऊपर
स्थापित करना । उसके नीचे क्रमानुसार प्रक्षेपकोंकी सूच्यंगुल के असंस्थापित भाग मात्र

संकलनधनमात्रगणं स्यापिसुबुदवर केळगे चूर्णिगळुं चतुष्पोनगळ्ळेय चतुर्वारसंकलनधनप्रमितंग-
ळपुवेदुं चतुष्पोनसूच्यंगुलासंख्यातभागगळ्ळेय चतुर्वारसंकलनधनमात्रगणं स्यापिसुबुदवर
केळगे चूर्णि चूर्णिगळुं पंचष्पोनगळ्ळेय पंचवारसंकलनधनप्रमितंगळपुवेदुं पंचष्पोनसूच्यंगुला-
संख्यातभागगळ्ळेय पंचवारसंकलनधनमात्रगणं स्यापिसुबुदितु तदधस्तनापस्तनचूर्णिचूर्णिगळुं

तदधः पिशुलिपिशुलयः त्रिष्पोनगळ्ळेय त्रिवारसंकलनधनमात्राः सन्तीति त्रिष्पोनसूच्यंगुलासंख्येयभाग-
गळ्ळेय त्रिवारसंकलनधनमात्रान् न्यस्येत् । तदधः चूर्णयः चतुष्पोनगळ्ळेय चतुर्वारसंकलनधनमात्राः
सन्तीति चतुष्पोनसूच्यंगुलासंख्येयभागगळ्ळेय चतुर्वारसंकलनधनमात्रान् न्यस्येत् । तदधः चूर्णिचूर्णयः पञ्च-
ष्पोनगळ्ळेय पञ्चवारसंकलनधनप्रमिताः सन्तीति पञ्चष्पोनसूच्यंगुलासंख्यातभागगळ्ळेय पञ्चवारसंकलन-

तरह चारका भाग देते रहनेसे द्वितीयादि चूर्णि-चूर्णिका प्रमाण चार, एक आदि जानना ।
ऊपर जघन्य ६५५३६ को स्थापित करके नीचे एक बार प्रक्षेपक १६३८४ स्थापित करके
जोड़नेपर पर्याय समासके प्रथम भेदका प्रमाण ८१९२० होता है । फिर ऊपर जघन्य
६५५३६ स्थापित करके उसके नीचे दो प्रक्षेपक १६३८४१६३८४ तथा एक प्रक्षेपक-प्रक्षेपक
४०९६ स्थापित करके जोड़नेपर पर्याय समासके दूसरे भेदका प्रमाण १०२४०० प्रमाण होता
है । फिर ऊपर जघन्य ६५५३६ स्थापित करके उसके नीचे तीन प्रक्षेपक १६३८४ । १६३८४ ।
१६३८४ । तीन प्रक्षेपक-प्रक्षेपक, एक पिशुली स्थापित करके जोड़नेपर तीसरे भेदका प्रमाण
१२८००० होता है । फिर ऊपर जघन्यको स्थापित करके नीचे-नीचे चार प्रक्षेपक, छह प्रक्षेपक-
प्रक्षेपक, चार पिशुली एक पिशुली-पिशुली स्थापित करके जोड़नेपर चौथे भेदका प्रमाण
१६०००० होता है । फिर ऊपर जघन्य स्थापित करके नीचे-नीचे पाँच प्रक्षेपक, दश प्रक्षेपक-
प्रक्षेपक, दस पिशुली, पाँच पिशुली-पिशुली, एक चूर्णि स्थापित करके जोड़नेपर पाँचवें भेदका
प्रमाण दो लाख होता है । फिर ऊपर जघन्य स्थापित करके उसके नीचे-नीचे छह प्रक्षेपक,
पन्द्रह प्रक्षेपक-प्रक्षेपक, बीस पिशुलि, पन्द्रह पिशुली-पिशुली, छह चूर्णि, एक चूर्णि-चूर्णि
स्थापित करके जोड़नेपर छठे स्थानका प्रमाण दो लाख पचास हजार होता है । इसी तरह
सब स्थानोंमें ऊपर जघन्य स्थापित करके उसके नीचे-नीचे जितना गच्छका प्रमाण है उतने
प्रक्षेपक स्थापित करना । जहाँ जिस नम्बरका स्थान हो वहाँ उतना ही गच्छ जानना । जैसे
छठे स्थानमें गच्छका प्रमाण छह होता है । उसके नीचे एक हीन गच्छका एक बार संकलन
धनका जितना प्रमाण हो उतने प्रक्षेपक-प्रक्षेपक स्थापित करना उनके नीचे दो हीन गच्छका
दो बार संकलन धनका जितना प्रमाण हो उतने पिशुली स्थापित करने । उनके नीचे तीन
हीन गच्छका तीन बार संकलन धनका जितना प्रमाण हो उतने पिशुली-पिशुली स्थापित
करने । उनके नीचे चार हीन गच्छका चार बार संकलन धनका जितना प्रमाण हो उतने चूर्णि
स्थापित करने । उनके नीचे पाँच हीन गच्छका पाँच बार संकलन धनका जितना प्रमाण हो
हो उतने चूर्णि-चूर्णि स्थापित करना । इसी तरह नीचे-नीचे छह आदि हीन गच्छका छह
आदि बार संकलन धनका जितना-जितना प्रमाण हो उतने द्वितीयादि चूर्णि-चूर्णि स्थापित
करना । इस तरह स्थापित करके जोड़नेपर पर्याय समास ज्ञानके भेदोंका प्रमाण आता है ।
यहाँ जो एक बार-दो बार आदि संकलन धन कहे हैं उनका विधान कहते हैं ।

ध्येरुपदोत्तरपातः सरूपवारोद्यूतो भुजेन युतः ।

रूपाधिकवारांतामपदाद्यैर्हृतोचितं ॥

एवंतु पञ्चायसमाप्तं ज्ञानविरहत्वंगच्छेत् विवक्षितपट्टविकल्पदोऽत्र चतुर्व्यां संकलन-
पदानपनदोऽत्र ध्येरुपद विगतमेकेन ध्येकं । तच्च तत्पदं च ध्येरुपदं । अत्र चतुर्दशोपगच्छ एव
६।४ पदं २ । तत्र एकस्मिन्नपनोते २-१ एव । तेनोत्तरपातः । एकवारादिसंकलनमाधिरायेयो- ५
त्पतिसंभवाद्ये गच्छेकोत्तरपातद्वयुत्तरपातः कर्तव्यः । १।१ । तदुपवारोद्यूतः रूपेण सहितः तदपः ।

त चातो पादस्य सरूपवार ४ स्तेनोद्यूतो भक्तः । १०१ । भुजेन युतः भुजमादिस्तेन युतः

समच्छेदो हृदय युते एवं ६ भुजः रूपाधिकवारांतामपदाद्यैर्हृतः । रूपाधिकवारायसान् १ । हार

विकल्पे ४।२।२।१ । रातभक्तपरायकेः । पदं गच्छ आविर्भूयते पदावपत्ते च ते अंगदय
तेहृतः ६।२।३।४।५ अपर्याप्तं वितं धनं भवति एवंतो सूत्रविं तरत्पट्ट विवक्षितपट्ट- १०
५।४।३।२।१

विकल्पदोऽत्र चतुर्व्यासंकलनपनमात्रकु । ६ । इते तत्पदं समस्तवारसंकलनपनगच्छं विवक्षितगच्छं
तदुक्तो बुद्धुः ।

प्रयोगप्रयोगादीनां प्रमाणानपने करणवृत्तिर्निर्ग-

ध्येरुपदोत्तरपातः सरूपवारोद्यूतो भुजेन युतः ।

रूपाधिकवारांतामपदाद्यैर्हृतो वितम् ॥

एव पदं विवक्षितं विवक्षितं हृदय पूर्णोत्तं चतुर्व्यासंकलनपनमात्रायते । तत्र पदं चतुर्दशोपगच्छ ६-४
मात्रं २ । ध्येकं एकरहितं २-१ अत्र उत्तरपे पातः एकवारादिसंकलनरचनामाधिरायेव द्विकवारादिमंगलन-
रचनोपतेः ध्येकवदिः उत्तरसर्वद्वैकः हृदयेन पातः कर्तव्यः १।१ । गुणिते एवं १, सरूपवारोद्यूतः

रूपाधिकवार ४ । भक्तः ४ । भुजमादिः १ तेन समच्छेदेन ५ सहितः ५ रूपाधिकवारांतामपदाद्यै-

हृतः एकरहितं २-१ अत्र उत्तरपे पातः एकवारादिसंकलनरचनामाधिरायेव द्विकवारादिमंगलन-
रचनोपतेः ध्येकवदिः उत्तरसर्वद्वैकः हृदयेन पातः कर्तव्यः १।१ । गुणिते एवं १, सरूपवारोद्यूतः
५ । वितं गच्छविद्वयगुणितं भवति, एवमेव तत्पदं समस्तवारसंकलनपनानि विवक्षिताप्यप्यानि ५०

प्रकार है—उसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट करनेके लिए छठे विकल्पको विवक्षित करके चूर्णियोंका
चार बार संकलित घन लाते हैं—यहाँ पद चार हीन गच्छ ६-४=मात्र २ है । उसमें एक
घटानेपर २-१=एक शेष रहता है । इसको उचारसे गुणा करना चाहिए । सो एक बार
आदि संकलन घन रचनाकी अपेक्षा ही दो बार आदि संकलनकी रचना घटपन्न होती है । २५
सर्वप्रथादि और उत्तर एक-एक है अतः उसे एकसे गुणा करने पर १×१=एक ही रहा ।
इसका यहाँ चार बार संकलन कहा है सो चारमें एक मिलानेपर पाँच हुआ । उसका भाग
देनेपर एकका पाँचवाँ भाग हुआ । इसमें मुख जो आदि, उसका प्रमाण एक, सो समच्छेद
करके मिलानेपर छहका पाँचवाँ भाग हुआ । यहाँ चार बार कहा है सो एकसे लेकर एक-एक

मत्तं केशण्णंगत्तु तम्मभिप्रायदि तरस्सड्ढव विशेषकरणगाथासूत्रद्वयं :—

तिरियपदे रुज्जणे तदिदुहेद्विल्ल संकलणवारा ।

कोट्टघणस्साणयणे पमवें इट्ठण्णिदुइदपदसंखा ॥

तिरियपदे रूपोने तदिष्टाघनस्तनसंकलनवारा । भवति कोट्टघनस्यानयने प्रभवः इष्टो नितो-
त्वंपदसंख्या ॥

ततो ह्यहियकमे गुणगारा होंति उइदगच्छोति ।

इगिरुवमादिरुउत्तरहारा होंति पमवोति ॥

ततो रूपाधिकक्रमेण गुणकारा भवन्त्युर्ध्वगच्छपर्यन्तं । एकरूपादिरूपोत्तरहारा भवति
प्रभवपर्यन्तं ।

इल्लिष्टमपुदायुदानुमोडु तिर्य्यक्पवदोऽङ्क ६ रूपो नमागुत्तिरल्ल ६ तत्तत्पदप्रमाणं इष्टाघ- १०
स्तनसंकलनवारा भवति । आ तिर्य्यगच्छेदव कर्जणे प्रक्षेपकोनेकवारसंकलनाविसर्ग्वसंभवद्वार-

आगयेत् । पुनरेतदेव केशववर्णिभिः स्वाभिप्रायेण आनेतुं गायत्रिपमुच्यते—

तिरियपदे रुज्जणे तदिदुहेद्विल्लसंकलणवारा ।

कोट्टघणस्साणयणे पमवें इट्ठण्ण उइदपदसंखा ॥१॥

तिरियपदे अनन्तभागवृद्धियुतत्वानेषु यद्विवक्षितं स्वानं तत् तिर्य्यक्पदं ६, तस्मिन् रुज्जणे रूपोने १५

इते ६ तदिदुहेद्विल्लसंकलणवारा तदिष्टपदे प्रक्षेपकादयस्त्वनकोष्ठेषु प्रतिकोट्टमेकैकं संकलनमिति संभवतां
क्रमेणैकवारद्विवाचिसंकलनानां संख्या भवति ५ ॥ एव इष्टय 'कोट्टघणस्स' चतुर्धरसंकलनघनगत्तकोट्टघनस्य
आणयणे आणयने 'इट्ठण्ण उइदपदसंखा' तदिष्टसंकलनवारस्य प्रमाणेन ४ न्यूनोर्ध्वपद-६-४ पमवो आदि-
भवति ॥२॥

ततो ह्यहियकमे गुणगारा होंति उइदगच्छोति ।

इगिरुवमादिरुउत्तरहारा होंति पमवोति ॥२॥

ततो तमादि २ मादि कृत्वा ह्यहियकमे रूपाधिकक्रमेण गुणकारा गुणकारा अनुलोमगत्या होंति—

यद्वते हुए चार पर्यन्त अंक रखकर $१ \times २ \times ३ \times ४$ परस्परमें गुणा करनेपर २४ हुए । यह
भागहार हुआ । और गच्छ दो के प्रमाणसे लेकर एक-एक बढ़ता अंक रखकर $२ \times ३ \times ४ \times ५$
परस्पर गुणा करनेपर १२० भाग्य हुआ । सी भाग्य १२० में भागहार २४ से भाग देनेपर १५
लब्ध पाँच आया । इस पाँचसे पूर्वोक्त छहके पाँचवें भागको गुणा करनेपर पाँच रहे । यही
दो का चार बार संकलन घन होता है । इसी तरह तीनका तीन बार संकलन घन जाना हो
तो गच्छ तीनमें एक कम करके दो शेष रहे । उसे उत्तर एकसे गुणा करनेपर भी दो ही हुए ।
यहाँ तीन बार संकलन है । अतः उसमें एक अधिक बार चारका भाग देनेपर आधा रहा ।
उसमें मुख एक जोड़नेपर डेढ़ हुआ । यहाँ तीन बार कहा है अतः एकसे लेकर एक-एक बढ़ते ३०
तीन पर्यन्त अंक रखकर $१ \times २ \times ३ =$ परस्परमें गुणा करनेपर भागहार छह हुआ । और
गच्छको आदि लेकर एक-एक अधिक अंक रख $३ \times ४ \times ५$ परस्परमें गुणा करनेपर भाग्य
साठ हुआ । भाग्य साठमें भागहार छहसे भाग देनेपर दस पाये । इस दससे पूर्वोक्त डेढ़को
गुणा करनेपर छठे भेदमें तीन कम गच्छका तीन बार संकलन घनमात्र पन्द्रह पिगुली-पिगुली
होती हैं । इसी तरह सर्वत्र विवक्षित संकलित घन जाना चाहिये । ३५

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

तत्त्वप्रमाणं । इदं हेतुस्तत्संकलनवारा इष्टावस्तनसंकलनवाराः तन्न विवक्षितं त्रिप्यंगच्छद केळगे

केळगे संभवितुव प्रसेपकोनेरवारसंकलन आविसव्यंवारसंकलनगत्र प्रमाणमस्तुः २ मयरोळ

कोटघनस्यानयने विवक्षित ४ चतुर्व्यारसंकलनयनमंतप्यल्लि प्रभवः आवि ये तुटवकुमे दोहे इष्टो-
नितोचंपदसंत्या स्यात् तन्न विवक्षितसंकलनवारप्रमाणमं मालकं कळेवुळिददूचंपदप्रमाणमस्तुः
२-४ मिल्लिपूच्यंगच्छमुं सव्यापस्तनचूर्णिचूर्णिप्याणि प्रसेपकाव्यपप्यायावसानमप्य स्थानंगळ ५
सूच्यंगुलासंख्यातमागमात्रमेयस्तु २ मयरोळातन्निटवारसंकलनांकं मालकं कळेवुळिद शेषप्रमाण-

मादिपचकुमेवुदत्तं ज २-४ ततो रूपायिकरुमेज ई यादित्यानं मोदलोां दु मुदे रूपायिक
१६।५।०

इमदिदं गुणकारा भवर्पूच्यंगच्छप्यंतं अनुलोमादि गुणकारंगळप्युच्यंगच्छप्रमाणांकवकेनेवर-
मुत्पत्तिपचकुमनेवरं ज २-४।२-३।२-२।२-१।२ ई गुणकारंगळगे एकरूपादि हपोत्तर-

१६।५।०० ० ० ०

तस्मिन् रूपोने २ अवशिष्टं तदिष्टावस्तनसंकलनवारा भवन्ति २ तेषु मध्ये विवक्षितस्य चतुर्वारसंकलन- १०
गतकोटघनस्यानयने उदाहरमाणे ४ ऊर्ध्वपदे २ अपनीते २-४ शेषप्रमाणमादिर्भवति ज २-४ ततः
१६।५।०

उमादिमादि इत्या अष्टे रूपायिकरुमेज गुणकारा भवन्ति ऊर्ध्वगच्छप्रमाणं यावदुत्पद्यते तावत् ज
१६।५।०

२-४।२-३।२-२।२-१।२ एषां गुणकाराणामपः एकाद्येकोत्तरा आदिर्यन्तं विलोमक्रमेण हारा
० ० ० ० ०

भाग देनेसे आता है । भागहार और गुणकार इस प्रकार है— २, ३, ४, ५, ६ । यहाँ दो
५, ४, ३, २, १

तीन, चार पाँच का वो अपवर्तन हो गया । दोसे दो, तीनसे तीन, चारसे चार और पाँचसे
पाँच अपवर्तित हो गये । छह और भागहार एक शेष रहा । सो छहगुना पूर्णिमात्र प्रमाण
रहा । इसी प्रकार अनन्तमाग वृद्धि युक्त अन्तिम विकल्पमें यह स्थान सूच्यंगुलके असंख्यातव
भागका जितना प्रमाण है उतनेका है इसलिये त्रियंग् गच्छ सूच्यंगुलका असंख्यातवर्षा भाग मात्र
है । उसमेंसे एक घटानेपर जो अवशेष है उतना अवस्तन संकलनके चार हैं । उनमेंसे
विवक्षित चार चार संकलन गत कोठाका घन लानेके लिए विवक्षित संकलन चारके प्रमाण
चारमें ऊर्ध्वगच्छ सूच्यंगुलके असंख्यातवर्षा भाग मात्रमेंसे घटानेपर जो अवशेष रहता है वह
आदि है । उसको आदि करके एक-एक बढ़ते क्रमसे ऊर्ध्वगच्छ सूच्यंगुलका असंख्यातवर्षा भाग
पर्यन्त तो गुणकार होता है । और इन गुणकारोंके नीचे बढ़ते क्रमसे एकको आदि लेकर एक-
एक बढ़ते हुए पाँच पर्यन्त भागहार होता है । यहाँ गुणकार और भागहार समान नहीं है

१. यं रूपोने २ अवशिष्टं भवन्ति २ तेषु मध्ये ।

अ : २।३।४।०००।२-३।२-२।२-२ को गुणधारणक केजमे एकदपादिरपोत्तराहारः

१६ $\frac{1}{2}$ ० ० ०

एकव्यक्तिरुत्तरेत्यत्र हारंगेन विनोयकमहि द्वापिकेष्टयार्मकद्वन्द्वमप्यवसानमागि भवति
अन्यत्राप्येते । तद्विमुक्तकारद्विरुपावसानमागिष्यन्तु :—

अ. २। ३। ४। ००००२-३। २-२२२

इति सप्तमोऽध्यायः

१५ २ २ २-२२-३१००००४०३१०२१०१

सूच्यं गुणा संख्यातः ।

भागमात्रातान्ताभारप्रत्यक्षमिदमस्तु: ज १। इतन्तभागवद्विपुतरूपानंगञ्ज गुण्यगुला-
१६।२

मार्गः— अ. १. २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

हाराः तिस्रोऽवस्थाः क्वापिदेष्टव्यासंभवात्प्राप्तानां भवन्ति प्रथमपर्यन्त—

[illegible]

वर्तते एव— न ३ अथपुनर्विशेषः संवत्सरे नाम्नि विविधादिवाक्यानाम् । शुद्धशुभांश्चाद-
 ११. ७
 ३।

भागमात्रशालानुप्रवृत्तपण्यधिति इत्याहुः अ १ एवमन्गभावाद्द्विपुत्रसंस्थाननि शुभ्यमुक्तारस्याभावा-

१९३

जन्मका अपवर्धन करनेपर शीघ्र सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भागका गुणकार और एकका भागद्वार रहता है। इस कोठेमें ज्ञानस्य पूर्णि-पूर्ण है उसका प्रमाण जपस्यको सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भाग मात्र बार भाग देनेपर जो प्रमाण आये उतना जानना। इसको पूर्वोक्त गुणकारसे गुणा करनेपर धीरे एकवें भाग देनेपर जो प्रमाण आता है वह उस कोठा मध्यस्थी प्रमाण है। १५ अन्तिम पूर्णि पूर्णिमें संकलन नहीं है क्योंकि उसके दूसरे आदि स्थान न होनेसे वह एक ही है। सो जपस्यकी सूर्य्यगुलके असंख्यात भाग मात्र बार अनन्तसे भाग देनेपर अन्तिम पूर्णि-पूर्णका प्रमाण होता है। उसमें एकसे गुणा करनेपर भी उतना ही उस कोठेमें वृद्धिका प्रमाण जानना। इस प्रकार सूर्य्यगुलके असंख्यात भाग मात्र अनन्त भाग वृद्धि युक्त स्थान

१. च द्वितीयादिष्वानां गृह्यद्गुलार्थस्वानुभाषणानां मीमा ।

छद्वाणाणं आदी अट्ठकं होदि चरिममुव्वकं ।

जम्हा जहण्णणाणं अट्ठकं होदि जिणदिट्ठं ॥३२८॥

पट्स्थानानामादिपट्ठांको भवति चरममुव्वकः । यस्माज्जघन्यज्ञानमष्टांको भवति जिनदृष्टः ॥

पट्स्थानवारंगळेनितोळवनितपकमादिस्थानमष्टांकमेयकुं चरममुव्वकमेयकुमंतागुत्तिरल्लु

प्रथमपट्स्थानदोळष्टांकमे तवकुमे दोळे यस्माज्जघन्यज्ञानमष्टांको भवति जिनदृष्टत्वात् । तस्मात् ५
आगुदोदु जिनदृष्टत्वकारणदिदं जघन्यज्ञानमष्टांकमवकुमदु कारणदिदं प्रथमपट्स्थानदोळष्टांकादि-
कत्वं युक्तमवकुं । इल्लि पट्स्थानपञ्चावियष्टांकमवसानमुव्वकमेव नियमं पेळत्पट्टुद्वारदं चरम-

पट्स्थानमेळ्ळादिपट्ठांकमवसानमुमुव्वकमुमागुत्तिरल्लि मुंण्णष्टांकमवेनवकुमे दोळद्वार-
ज्ञानमेव मुंवे पेळवपनदु कारणदिदं जघन्यपण्यापज्ञानमाविषेदु पेळ्ळावमं निर्वाधबोधविषयमवकु ।

ई पट्स्थानगळ्ळे स्थानसंख्ये समानमेव बुदं तोरिदपं :—

एक्कं खलु अट्ठकं सत्तकं कंडयं तदो हेट्ठा ।

रूवहियकंइएण य गुणिदकमा जाव मुव्वकं ॥३२९॥

एकः अष्टपट्ठांकः सत्तांकः कांडकं ततोऽप्यो रूपाधिककांडकेन गुणितक्रमा यावद्वर्चकः ॥

पट्स्थानवाराणां सर्वेषामादिः प्रथमस्थानमष्टाङ्कमेव अनन्तगुणवृद्धिस्थानमेव भवति तेषां चरमस्थान-
मूर्वङ्कुमेव अनन्तभागवृद्धिस्थानमेव भवति । तर्हि प्रथमस्थानस्य अष्टाङ्कत्वं कथं ? इति तन्न, यस्मात् कारणात् १५
जघन्यं ज्ञानं पर्यायाख्यं पूर्वस्मादेकजीवागुरुलघुगुणाविभापप्रतिच्छेदानां वर्गस्थानादनन्तगुणत्वेन अष्टाङ्कं
भवतीति जिनैः अर्हदादिभिः दिष्टं कथितं दृष्टं वा, तस्मात् कारणात् प्रथमपट्स्थानेऽपि अष्टाङ्कावित्वं
युक्तम् । अत्र पट्स्थानानामादिः अष्टाङ्कः, अवसानं उर्वङ्कः इति नियम उक्तोऽस्तीति । चरमपट्स्थानेऽपि

आदौ अष्टाङ्के अवसाने उर्वङ्के च सति तदप्रतनोऽष्टाङ्कः कीदृशस्ति ? इति चेत् अर्थाक्षर-ज्ञानस्यो भवति २०
तस्यैव अत्रैव वक्ष्यमाणत्वात् । तदेवं जघन्यपर्यायज्ञानमादिः इत्युक्तावगो निर्वाधबोधविषयः ॥३२८॥ एषां
पट्स्थानानां संख्या समानेति दर्शयति—

पट्स्थान पवित वृद्धिरूप सब स्थानोमे प्रथम स्थान अष्टांक अर्थात् अनन्तगुण वृद्धि
रूप स्थान ही होता है । यही आदि स्थान है । तथा अनन्त स्थान उर्वक अर्थात्
अनन्तभागवृद्धि युक्त स्थान ही होता है । तब प्रथम स्थानमें अष्टांक कैसे रहा, इसका समा-
धान यह है वह जो पर्याय नामक जघन्य ज्ञान है इस जघन्य ज्ञानसे पहला ज्ञान स्थान एक १५
जीवके अगुरु लघु गुणके अविभाग प्रतिच्छेद प्रमाण है उससे अनन्त गुणा जघन्य ज्ञान है
इसलिए जिनदेवने अष्टांक रूप देखा है । इस कारणसे प्रथम स्थानके भी आदिमें अष्टांक
और अन्तिम उर्वक है । यह नियम कहा है ।

शंका—अन्तिम पट्स्थानमें भी आदिमें अष्टांक और अन्तमें उर्वक होनेपर उससे
आगेका अष्टांक किस रूपमें है ?

३०

समाधान—वह अर्थाक्षर ज्ञान रूप है । ऐसा ही आगे कहेंगे ।

इस प्रकार जघन्य पर्याय ज्ञान आदि है यह कथन निर्वाध है ॥३२८॥

आगे इन पट्स्थानोंकी संख्या समान है यह दर्शाते हैं—

१. म नदोलादि ।

इंतु द्वितीयोपादि पदस्थानदोष्ठाविभूताष्टांकादिवं मुंवे उर्व्वकमक्कुमादोडमेक्कांखलु अट्टकमे'वी नियमवचनदिदष्टांकाक्कमंगुलासंख्यातभागमात्रवारारऽभावमेयक्कुमेक'दोडे खलुऽनन्दवक्के नियमात्य-वाचकत्वंदिदं ।

सर्व्वसमासो णियमा रूपाहियकंडयस्य वग्मास्स ।

विंदस्स य संवग्गो होदिचि जिणेहि णिदिट्ठं ॥३३०॥

सर्व्वसमासो नियमाद्रूपाधिकांडकस्य वर्गस्य । वृंदस्य च संवर्गो भवतीति जिनैर्निदिष्टं ॥

यत्ना अष्टांकादिपद्मद्विगुल संयोगं रूपाधिकांडकस्य रूपाधिकांडकद, वर्गस्य वर्गद, वृंदस्य च घनद, संवर्गः संवर्गमात्रं भवति अक्कुमे'दितु जिनैर्निदिष्टं अहंदादिगालिदं पेल्लपट्टु-दिल्लि तद्युतियं माळप क्रममेतेंदोडे अष्टांकदात्मप्रमाणमनो'दु रूपं तंदु सप्तांकद सूर्य्यगुला-संख्यातभागदोळू कूडुत्तिरलू रूपाधिकांडकमक्कुमदं तोरि तदात्मप्रमाणमनो'दु रूपं पडंक-संख्येयोळूकूडुत्तिरलू रूपाधिकांडकद्वयमक्कुमा वर्गरूपाधिकांडकारमप्रमाणमं पंचांकसंख्ये-

एवं द्वितीयवारपदस्थाने आदिमूलाष्टाङ्कतोऽग्रे उर्व्वङ्कोऽस्ति तथापि 'एकं खलु अट्टकं' इति नियम-वचनान्न तस्याङ्गुलासंख्यातभागमात्रवारः, खलुऽनन्दस्य नियमार्यवाचकत्वात् ॥३२९॥

सर्वासो अष्टाङ्कारिपद्मद्विगुलीं संयोगः रूपाधिकाण्डकस्य वर्गस्य वृन्दस्य च संवर्गमात्रो भवति इति जिनैरहंदादिभिर्निदिष्टं कथितम् । अत्र तद्युतिः क्रियते तद्यथा—

अष्टाङ्कस्य आत्मप्रमाणैकरूपे सप्ताङ्कस्य सूर्य्यङ्गुलासंख्यातभागे युते सति रूपाधिकाण्डकं भवति तस्मिन् पुनः आत्मप्रमाणैकरूपे षडङ्कसंख्यायां काण्डकगुणितरूपाधिकाण्डकमात्रा युते सति रूपाधिक-

गुण वृद्धि युक्त स्थान काण्डक अर्थात् सूर्य्यगुलके असंख्यात भाग मात्र ही होते हैं । उससे नीचेके पडंक, पंचांक, चतुरांक और उर्व्वक क्रमसे रूपाधिक सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भाग गुणित उसरोत्तर उर्व्वक पर्यन्त होते हैं अर्थात् असंख्यात गुण वृद्धिका प्रमाण सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भाग कहा है उसको एक अधिक सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भागसे गुणा करनेपर जो प्रमाण हो उतनी बार संख्यात गुण वृद्धि होती है । इसको भी एक अधिक सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भागसे गुणा करनेपर जो प्रमाण हो उतनी बार संख्यात भाग वृद्धि होती है । इसको भी एक अधिक सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भागसे गुणा करनेपर जो प्रमाण हो उतनी बार असंख्यात भाग वृद्धि होती है । इसको भी एक अधिक सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भागसे गुणा करनेपर जो प्रमाण हो उतनी बार अनन्त भाग वृद्धि होती है । इस प्रकार एक पद-स्थान पतित वृद्धिमें पूर्व्वोक्त प्रमाण एक-एक वृद्धि होती है । दूसरे पदस्थानमें आदिमें अष्टांक उससे आगे उर्व्वक है अतः एक ही अष्टांकका नियम जानना । वह अंगुलके असंख्यात भाग मात्र बार नहीं होता ॥३२९॥

अष्टांक आदि छह वृद्धियोंका जोड़ एक अधिक काण्डकके वर्गका तथा घनका परस्पर-में गुणा करनेसे जो प्रमाण हो उतना है ऐसा जिन भगवान्ने कहा है । यहाँ उनका जोड़ दियाते हैं—

अष्टांकके अपने प्रमाण एक रूपमें सूर्य्यगुलके असंख्यातवें भागको मिलानेपर सप्तांक-का प्रमाण एक अधिक काण्डक होता है । उसमें पडंककी संख्या, जो काण्डकसे गुणित एक अधिक काण्डक प्रमाण है, मिलानेपर रूपाधिक काण्डकका वर्ग होता है । उसमें पंचांककी संख्याको, जो काण्डकसे गुणित रूपाधिक काण्डकके वर्ग प्रमाण है, मिलानेपर रूपाधिक

उक्तस्संसर्गमेवं तत्तिचउत्पेकदालछप्पण्णं ।

सुचदत्तमं व भागं गंतूण य लद्धियकरं दुगुणं ॥३३१॥

उत्कृष्टसंख्यातमात्रं तत्तिचतुर्येकचत्वारिंशत् पट्यंजाग्रत् सप्तदशमं वा भागं गत्वा च सप्त्यष्टरं द्विगुणं ॥

हवापिरुक्ताङ्कगुणिताङ्गुलसंख्यातभागमात्रवारंगञ्जनंतभागवृद्धित्यानंगत् २ २ सवर ५

मप्यहोत्तु सूत्रं गुलासंख्यातभागमात्रवारंगञ्जनसंख्यातभागवृद्धित्यानंगत् सलुत्तिरलु २ तनुमय-

वृद्धियुक्तजपयव एरुवारं संख्यातभागवृद्धित्यानंगत्पन्नमवकु ज १५ मुदे मतं मुं पेत्तु क्राम- १५

वृद्धिद्वयाहपरिंतगञ्जोत्तु संख्यातभागवृद्धियुक्तस्यानंगत्तुत्कृष्टसंख्यातभागंगत् सलुत्तिमिरलु अल्लि प्रलोपकवृद्धिं कदुत्तिरलु सप्त्यष्टरं सत्त्यंजपयमप्य पय्ययिमे व धुत्तज्ञानं साधिकमागि द्विगुण- मवकुमेते दोहे प्रलोपकवृत्कृष्टसंख्यातभाग्यभागहारंगञ्जनपर्यवसिति कद्विदोहे अवक्के द्विगुणत्वसंभ- १०

क्याविककाङ्कङ्कगुणिताङ्गुलासंख्यातभागमात्रवारान् अनन्तभागवृद्धित्यानेषु अङ्गुलासंख्यातभाग- मात्रवारान् असंख्येयभागवृद्धित्यानेषु च गतेषु तदुभयवृद्धियुक्तजपयव एरुवारं संख्यातभागवृद्धित्यानंगत्पत्ते १
अ १५ अथ पुनः प्रागुक्तजमवृद्धिद्वयसहपरितेषु संख्यातभागवृद्धियुक्तस्यानेषु उत्कृष्टसंख्यातभागेषु गतेषु १५

एत प्रलोपकवृद्धिषु युक्तानु सप्त्यष्टरं सर्वजपयवपर्यायस्य वृत्तज्ञानं साधिकद्विगुणं भवति । कुतः ? प्रलोपकस्य उत्कृष्टसंख्यातभाग्यभागहारान्पर्यं मुने तस्य द्विगुणत्वसंभवात् तत्तिचतुर्थे पूर्वोक्तसंख्यातभागवृद्धिमूलोत्कृष्ट- १५

एक अधिक सूर्यगुलके असंख्यातवं भागसे गुणित अंगुलके असंख्यात भाग द्वार अनन्त भाग वृद्धियेकि होनेपर तथा अंगुलके असंख्यात भाग द्वार असंख्यात भाग वृद्धिके होनेपर एत दोनों वृद्धियोंसे युक्त जपयव पर्याय ज्ञानका एक द्वार संख्यात भाग वृद्धि युक्त स्थान उत्पन्न होता है । आगे पुनः पूर्वोक्त अनन्त भाग वृद्धि और असंख्यात भाग वृद्धिके साथ संख्यात भाग वृद्धिसे युक्त स्थानोंके उत्कृष्ट संख्यात मात्र होनेपर उनमें प्रलोपक वृद्धियोंको जो होनेपर सप्त्यष्टर नामक सर्व जपयव पर्याय ज्ञान साधिक दुगुणा होता है । कैसे होता है यह बतलाते हैं—पूर्ववृद्धिके होनेपर जो साधिक जपयव ज्ञान हुआ उसे अलग रखकर उस साधिक जपयव ज्ञानमें उत्कृष्ट संख्यातका भाग देनेपर प्रलोपक होता है । तथा उत्कृष्ट संख्यात मात्र प्रलोपक है क्योंकि गच्छमात्र प्रलोपक वृद्धि होती है सो यहाँ उत्कृष्ट संख्यात मात्र संख्यात वृद्धिके स्थान रूप इसलिये उत्कृष्ट संख्यात मात्र प्रलोपक बढाने दे । सो यहाँ उत्कृष्ट संख्यात मात्र प्रलोपक होनेसे उत्कृष्ट संख्यात ही गुणकार हुआ । इस तरह गुणकार भी उत्कृष्ट संख्यात और भागहार भी उत्कृष्ट संख्यात; क्योंकि साधिक जपयव ज्ञानमें उत्कृष्ट संख्यातका भाग देनेसे प्रलोपक होता है । सो गुणकार और भागहारका अपवर्तन करने पर साधिक जपयव ज्ञान रहा । उसे अलग रखे साधिक जपयव ज्ञानमें मिलाने पर जपयव ज्ञान साधिक द्वा होता है । तथा 'तत्तिचतत्त्व' अर्थात् पूर्वोक्त संख्यात भाग वृद्धि युक्त उत्कृष्ट ३०

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

साधिकजघन्यमरु ज मिदं मेलन साधिकजघन्यदोळरूडितिरलु लक्ष्यक्षरं द्विगु
(+ओ अथवा ज २) प्रशेषकप्रशेषकदोळगण ग्रहणयनमं ज १- नोडलु मसंख्यातगुणहं
३२

किंचिन्मूनं माडि क्षेपमं ज १- द्विगुणजघन्यदोळरूडिसाधिकं माडुयुदु ।
३२

एकदाळछप्पणं मुं पेज्ज संख्यात भागवृद्धिस्थानं गळंरूडित संख्यातप्रमितं गळोळु एकव
दात् पटपंचागमादभागमात्रं स्थानं गळु सलुसं विरलु प्रशेषक प्रशेषकप्रशेषकवृद्धिद्वययोगदोळु
जघन्यं द्विगुणमरुमल्लि प्रशेषकमिदु ज १५।४१ प्रशेषकप्रशेषकमिदु ह्योनगच्छ ए
१५।५६

संकलित घनमात्रं ज १५।४१।१५।४१ इल्लिय ग्रहणहपं तेपेदु वेति
१५।१५।५६।२।१।५६

युते सति साधिकजघन्यं भवति ज । अस्मिन् पुनः उपरितनसाधिकजघन्ये पुनै सति लक्ष्यक्षरं द्विगु
ज २ । प्रशेषकप्रशेषकावतग्रहणं घनतः संख्यातगुणहीनमिति किंचिदूनं इत्या रोपं ज १-द्विगुणजघन्ये
३२

साधिकं नुयान् । एकदाळछप्पणं प्रायुक्तसंख्यातभागवृद्धियुक्तस्थानानां उत्कृष्टसंख्यातमितेषु एकावत्स
षट्पञ्चागमादभागमात्रस्थानानि नीत्वा प्रशेषकप्रशेषकद्वययोगे साधिकजघन्यं द्विगुणं भवति तत्र प्रशेषको
ज १५।४१ । प्रशेषकप्रशेषकस्तु ह्योनगच्छस्य एकवारसंकलितघनमात्रः । ज १५।४१।१५।
१५।५६ १५।१५।५६

संख्यातके तीन चौथे भागसे गुणा करना । सो उत्कृष्ट संख्यात गुणकार भी और भागहा
वनका अपवर्तन करनेपर साधिक जघन्यका तीन चौथाई भाग मात्र प्रमाण रहा ।
पूर्वोक्त एक चौथा भाग जोड़नेपर साधिक जघन्य मात्र वृद्धिका प्रमाण होता है ।
मूल साधिक जघन्य क्षानको जोड़नेपर लक्ष्यक्षर दूना होता है । यहाँ प्रशेषक-
सम्बन्धी ग्रहण राशि घन राशिसे संख्यात गुणी कम है इसलिए साधिक जघन्यका यत्

ज ३ इट प्रक्षेपकदोष्ट कूडिदोष्टे ज १० अपर्याप्ततमिदु ज इवरीञ्च संख्यातगुणहीनमप्य
१० १०

प्रक्षेपकप्रक्षेपकश्रृणमं किञ्चिद्वनं माडि धनमं ज १३ = साधिकं माडि मेलन जघन्यदोष्ट
६०००

कूडिदोष्टे लग्न्यक्षरं द्विगुणमकुरु ज २ मुन्नं प्रक्षेपकप्रक्षेपकधनदोष्ट येरिरिसिद ज १३ त्रयोदश-
६००

रूपधनदोष्टतन्न संख्यातभागमात्र श्रृण रहितधनमं साधिकं माडिपुदु । अंतु माडितिरलु साधिक-
द्विगुणलग्न्यक्षरमकुरु ज २ । मोदलोञ्चकुष्टमंख्यातगुणितसंख्यातभागद सप्तवधमभागमात्रंगु १

ज १५ । ७ संख्यातभागवृद्धिपुस्तस्थानमग्न पिपुलिपर्यंतमागि नडदु लग्न्यक्षरं द्विगुणमकुरु ।
१५ । १०

अपवर्त्य ज ४१ । प्रातनपिपुलिधनकादयस्त्वानि मेरुयित्वा ज १० । अपवर्त्य इदं ज ३ । प्रक्षेपके
२०० २०० १०

ज ७ । संयोग ज १० । अपवर्त्येदं ज प्राक्पुष्पभूतकिञ्चिद्वनयोदयस्त्वः संख्यातगुणहीनप्रक्षेपकप्रक्षेपक-
१० १०

श्रृणेन पुनः किञ्चिद्वनैः ज १३ = साधिकं कृत्वा चरित्वनत्रयन्ये युते सति लग्न्यक्षरं द्विगुणं भवति ।
६०००

ज २ । प्रथमतः उत्कृष्टमंख्यातगुणितसंख्यातभागस्य सप्तवधमभागमात्रंगु ज १५ । ७ संख्यातभागवृद्धिपुल-
१५ । १० १०

सप्त सम्बन्धी द्वितीय श्रृणका प्रमाण साधिक जघन्यको धनचासका गुणकार तथा उत्कृष्ट संख्यात और छह हजारका भागहार करनेपर होता है । उसको अलग रखकर शेषका अप-
वर्तन करनेपर साधिक जघन्यको तीन सौ तीसरीसका गुणकार और छह हजारका भागहार होता है । यहाँ गुणकारमें तेरह कम करके अलग रखना । उसमें साधिक जघन्यको तेरहका गुणकार और छह हजारका भागहार जानना । शेष साधिक जघन्यको तीन सौ तीसरीसका गुणकार और छह हजारका भागहार रहा । तीससे अपवर्तन करनेपर साधिक जघन्यको ग्यारहका गुणकार और दस गुणित बीसका भागहार हुआ । उसे एक जगह स्थापित करना । यहाँ गुणकारमें-से तेरह कम करके जो अलग स्थापित किये थे उस सम्बन्धी प्रमाणसे प्रथम द्वितीय श्रृण सम्बन्धी प्रमाण संख्यात गुणा कम है इसलिए कुछ कम करके साधिक जघन्य किञ्चिन् कम तेरह गुणाको छह हजारसे भाग देनेपर इतना शेष रहा सो अलग रहे । तथा प्रक्षेपक-प्रक्षेपक सम्बन्धी गुणकारमें एक घटाया था उस सम्बन्धी श्रृणका प्रमाण साधिक जघन्यको सातका गुणकार और उत्कृष्ट संख्यात तथा दो सौका भागहार किये होता है । उसको अलग रखकर शेष पूर्वोक्त प्रमाण साधिक जघन्यको उत्कृष्ट संख्यातका गुणकार और

रूपकया निमित्तमस्मान्न स्थापनाशरं । एवंविधमप्य एकाग्रस्थवर्तमानात्संज्ञानमेकाग्रवृत्तज्ञान-
मेवितु जिनदर्शित्वं वेदत्यदुद्बेन्मिहं किञ्चित्प्रतिपादितमाप्नु ।

अनन्तरं अतन्निदुर्गमं धृतविषयमं वेद्वयं—

एकपक्षनिष्ठा भावा अणंतभागो नु अणमिलप्पाणं ।

एकपक्षनिष्ठाणं पुण अणंतभागो नु मुदणिवटो ॥३३४॥

प्रज्ञानतोया भावा अनंतभागानु अनभिज्ञाप्यानां । प्रज्ञापकोषाणां पुनरनंतभागः धृत-
निवृत्तः ॥

अनभिज्ञाप्येणस्य वाक्पिचयंगल्लदंतस्य केवलं केवलज्ञानमोक्षरम्य भावानां जीवाद्यर्थ-
गल्ल अनन्तरज्ञानमार्गगल्ल । भावाः जीवाद्यर्थगल्ल प्रज्ञानतोयाः तीर्थपरताविशयविध्यप्यनि
प्रतिपादयन्त्युपु । पुनः मत्ते प्रज्ञापकोषाणां तातितायदिव्यप्यनिप्रतिपादयन्त्य भावानां जीवाद्य-
र्थगल्ल अनन्तरभागः अनन्तरभावं धृतनिवृत्तज्ञानगल्लप्रत्यक्षमितिप्रवृत्ते विषयतोषिहं निमित्त-
मस्तु । धृतकेवलज्ञानमोक्षरम्यप्रतिपादनपरिचि दिव्यप्यनिपुटुमादिष्यप्यनिगमनोपर-
जीवाद्यर्थगल्लप्रति केवलज्ञानवेदे कुरत्ये ।

अवाच्यानामनन्तोभावाः प्रज्ञापमानवाः ।

प्रज्ञापमानवायानामनन्तोभावाः व्युत्थितः ॥

निमित्तमस्मान्न स्थापनाशरं । एवंविधमप्य एकाग्रस्थवर्तमानात्संज्ञानमेकाग्रवृत्तज्ञानमिति जिनः कवित्तानु
विचिदं प्रतिपादितम् ॥३३३॥ अथ युजनिवृत्तं धृतविषयं च प्रपचयति—

अनभिज्ञाप्यानां अवाच्यमानां केवलं केवलज्ञानमोक्षरम्य भावानां जीवाद्यर्थानां अनन्तरज्ञानमार्गाः
भावाः—जीवाद्यर्थः, प्रज्ञापकोषाः तीर्थपरताविशयविध्यप्यनिप्रतिपादाः सन्ति । पुनः प्रज्ञापकोषाणां भावानां
जीवाद्यर्थानां अनन्तरभागः धृतनिवृत्तः ज्ञानगल्लप्रत्यक्षमितिप्रवृत्ते विषयतोषिहं निमित्त-
मस्तु । धृतकेवलज्ञानमोक्षरम्यप्रतिपादनपरिचि दिव्यप्यनिपुटुमादिष्यप्यनिगमनोपर-
जीवाद्यर्थगल्लप्रति केवलज्ञानवेदे कुरत्ये ।

अवाच्यानामनन्तोभावाः प्रज्ञापमानवाः । प्रज्ञापमानवायानां अनन्तोभावाः व्युत्थितः ॥३३४॥

एव भावेऽपि हे । एव रूप अक्षर व्यप्यक्षर हे । क्योंकि वह अक्षर ज्ञानकी क्षरतिमें कारण
हे । कण्ठ, ओष्ठ, नासु आदि स्थानोंकी हृन्मन्-व्यञ्ज आदि रूप कित्वा तथा प्रयत्नसे जिनके
स्वरूपकी रचना होती है वे अक्षरादि स्वर, कक्षरादि व्यञ्जनरूप मूल वर्ण और उनके
संयोगसे बने अक्षर निरूप्यक्षर हैं । पुनर्कोमें एव-एव देशके अनुरूप लिखित अक्षरादिका
आकार रखापनाशर है । इस प्रकारके एक अक्षरके सुननेसे उत्पन्न हुआ अर्थज्ञान एकाक्षर
सुतज्ञान है ऐसा जिनदेशने कहा है । वसीके आधारमें मैंने किंचित् कदा है ॥३३३॥

अथ भुवने विषयको तथा भुवने कितना निवृत्त है इसको कहते हैं—

जो भाव अनभिज्ञाप्य अर्थात् धनने द्वारा कहनेमें नहीं आ सकते, केवल केवल-
ज्ञानके ही विषय हैं ऐसे पदार्थ जीवादिके अनन्तर्वं भाग मात्र प्रज्ञापनीय हैं अर्थात् तीर्थकरकी
मानिष्य दिव्यप्यनिहं द्वारा कहे जाते हैं । पुनः प्रज्ञापनीय जीवादि पदार्थोंका अनन्तर्वं
भाग ज्ञानगल्ल प्रत्यक्षमितिप्रवृत्ते विषय रूपसे निवृत्त होता है । धृतकेवलज्ञानमें भी अगोचर अर्थ-
को कहनेकी शक्ति दिव्यप्यनिहं होती है । और दिव्यप्यनिहं भी अगोचर अर्थको प्रहण
करनेकी शक्ति केवलज्ञानमें है ॥३३३॥

हीनाधिकमानंगळप्य प्रमाणपदेतत्त्वपदद्वयमध्यदोळे पेळलपट्ट संख्याक्षरपरिमितसमूहदोळ वृत्तमानत्व-
दिदं मध्यमपदमे दितन्वर्त्यतेतिदिदं परमाणमदोळा मध्यमपदमे गृहीतमात्येकं दोळे प्रमाणात्त्वपदंगळ
लोकव्यवहारदोळ गृहीतंगळागुत्तिरलो मध्यमपदमे लोकोत्तरमप्य परमाणमदोळ पदमेदितु
व्यवहारिसत्यट्टदु ।

अनंतरं सघातधृतज्ञानमं पेळ्ळयं :-

एयपदादो उवरि एगेगेणक्सरेण वड्ढंतो ।

संखेज्जसहस्सपदे उड्ढे संधादणाम सुदं ॥३३७॥

एकपदाबुप्येकेकाक्षरेण वड्ढमाने । संख्येयसहस्रपदे वड्ढे संधातनामधूतं ॥

एकपदवके पेळ्ळ प्रमाणाक्षरसमूहद मेले एकैकवर्णवृद्धिक्रमदिदमेकपदाक्षरमात्रपदसमास-
ज्ञानविकल्परंगळ सलुत्तं विरलु द्विगुणपदज्ञानमङ्कु-१ मवर मेले मतमेकैकवर्णवृद्धिक्रमदिदमेकपदा- १०
क्षरमात्रपदसमासज्ञानविकल्परंगळ सलुत्तं विरलु त्रिगुणपदधृतज्ञानमङ्कुमितु प्रत्येकमेकपदाक्षरमात्र-
विकल्पसहस्ररितंगळप्य धतुगुणपदादिसंख्यातसहस्रगुणितपदमात्रंगळ रूपोनपदसमासज्ञानविकल्प-

गळ सलुत्तं विरलु $\frac{1}{5} \frac{1}{1000} \frac{1}{2} \frac{1}{20000} \frac{1}{30000} \frac{1}{40000} \frac{1}{5000} १-१$ ई चरमपद-

अष्टाशोचिअ पवर्णाः ह्यपेत्तुदुमापोनतप्रमाणैकपदाशुनस्सताक्षरसमूहो मध्यमपदं १६३४८३०७८८८ ।

हीनाधिकमानयोः प्रमाणपदार्थपदयोर्मध्ये एतदुपतसंख्यापरिमिताक्षरसमूहे वर्तमानत्वात् मध्यमपदं इत्यन्वयतया १५
परमाणमे लवेव परिगृहीतं, प्रमाणपदार्थे पदे तु लोकव्यवहारे परिगृहीते । अत एव लोकोत्तरे परमाणमे
मध्यमपदमेव पदमिति व्यवहियते ॥३३६॥ अथ सघातधृतज्ञान प्ररूपयति—

एकपदस्य उक्तप्रमाणाक्षरसमूहस्योपरि एकैकाक्षरवृद्ध्या एकपदाक्षरमात्रेण पदसमासज्ञानविकल्पेण
गतेषु द्विगुणपदज्ञानं भवति । तस्योपरि पुनरपि एकपदाक्षरमात्रेण पदसमासज्ञानविकल्पेण गतेषु त्रिगुणपदज्ञानं
भवति । एवं प्रत्येकमेकपदाक्षरमात्रविकल्पसहस्ररितेषु धतुगुणपदादिषु संख्यातसहस्रगुणितपदमात्रेण रूपेणैव २०
पदसमासज्ञानविकल्पेषु गतेषु—

प । प । १०० । प । १२ । प । १२ । १०० । प । ३ । प । ३ । प । ३०००० । प । १००००० १ उ

१६ = १६ = १६ = १०००१

का समूह १६३४८३०७८८८ मध्यम पद है । प्रमाण पद और अर्थ पदमें हीन अधिक अक्षर
होते हैं । उन दोनोंके मध्यमें कही गयी संख्या परिमाणवाले अक्षर समूहमें वर्तमान होनेसे
इसका मध्यम पद नाम सार्थक होनेसे परमाणममें वही लिया गया है । प्रमाणपद और १५
अर्थपद तो लोकव्यवहारमें चलते हैं इसीसे लोकोत्तर परमाणममें मध्यमपदको ही पद
कहा है ॥३३६॥

अथ सघात धृतज्ञानको कहते हैं—

एक पदके उक्त प्रमाण अक्षर समूहके ऊपर एक-एक अक्षरकी वृद्धि होते-होते एक
अक्षर प्रमाण पद समास ज्ञानके विकल्पोंके होनेपर पद धृत ज्ञान हुना होता है । उसके २०
अर्थः एक पदके अक्षर प्रमाण पदसमास ज्ञानके विकल्प बीतनेपर पदज्ञान त्रिगुना होता

१. २. अ संखेज्जपदे उड्ढे सघादं णाम होदि सुदं ।

चउगइसरूवरूपपडिवचीदो दु उवरि पुव्वं वा।

वण्णे संसेज्जे पडिवची उद्धम्मि अणियोगं ॥३३९॥

चतुर्गोतिस्यरूपरूपकप्रतिपत्तिस्तुपरि पृथक्वत् । वर्णं संत्येये प्रतिपत्तिके वृद्धे अनुयोगं ॥

चतुर्गोतिस्यरूपरूपकप्रतिपत्तिकदिदं मुद्देयुमदर मेले प्रत्येकमेकैकवर्णवृद्धिक्रमविदं संत्यात-
सहस्रपदसंघातप्रतिपत्तिकंगळु संवृद्धिगङ्गागुत्तिरलु रूपोनतावन्मात्रप्रतिपत्तिकसमासज्ञानविकल्पंगळु
सलुसंमिरलु तच्चरमप्रतिपत्तिकसमासोत्कृष्टविकल्पद मेले एकाक्षरवृद्धिमागुत्तं विरलु अनुयोगादय-
श्चतुर्गोतिस्यः । अबुत्तुं चतुर्दशमार्गाणांस्वरूपप्रतिपादकानुयोगमं ब श-दसंदर्भमध्यगजातार्थ-
ज्ञानमं धुवत्तं ।

अनंतरं प्राभूतप्राभूतकमं गायाद्वपदिवं पेञ्चपरः—

चोदसमग्गणसंजुद अणियोगादुवरि वडिद्धे वण्णे ।

चउरादी अणियोगे दुगवारं पाहुडं होदि ॥३४०॥

चतुर्दशमार्गाणांसंयुतानुयोगादुपरि वर्द्धिते वर्णं । चतुराद्यनुयोगे द्विकवारं प्राभूतं भवति ॥

चतुर्दशमार्गाणांसंयुतानुयोगादुपरि मेले मुदे पूर्वोक्तक्रमविदं प्रत्येकमेकैकवर्णवृद्धिसहचरित-
पदाविबुद्धिगङ्गां चतुराद्यनुयोगंगळु संवृद्धिगङ्गागुत्तिरलु रूपोनतावन्मात्रप्रत्येकानुयोगसमासज्ञान-
विकल्पंगळु सलुसं विरलु तच्चरमानुयोगसमासोत्कृष्टविकल्पद मेले एकाक्षरवृद्धिमागुत्तिरलु
द्विकवारप्राभूतकमं ब चतुर्ज्ञानमङ्गु ।

चतुर्गोतिस्यरूपरूपकप्रतिपत्तिकान् परं तस्योपरि प्रत्येकमेकैकवर्णवृद्धिक्रमेण संत्यातसहस्रेषु पदसंघात-
प्रतिपत्तिकेषु वृद्धेयु र्गोतिसंघातमात्रेषु प्रतिपत्तिकसमासज्ञानविकल्पेषु वृद्धेयु तच्चरमप्रतिपत्तिकसमासोत्कृष्ट-
विकल्पस्योपरि एकस्मिन्मदरे वृद्धे मति अनुयोगमं चतुर्ज्ञानं भवति । तच्चतुर्दशमार्गाणांस्वरूपप्रतिपादकानु-
योगसंज्ञानमदरेनमध्यगजनिताद्यज्ञानमित्यर्थः ॥३३९॥ अथ प्राभूतप्राभूतकस्य स्वरूपं गायाद्वयेन प्रकथयति—

चतुर्दशमार्गाणांसंयुतानुयोगादुपरि तस्योपरि पूर्वोक्तक्रमेण प्रत्येकमेकैकवर्णवृद्धिसहचरितपदाविबुद्धिभिश्च-
तुराद्यनुयोगेषु संवृद्धेयु सलु र्गोतिसंघातमात्रानुयोगसमासज्ञानविकल्पेषु वृद्धेयु तच्चरमानुयोगसमासोत्कृष्टविकल्पा-
स्योपरि एकाक्षरवृद्धौ सत्यां द्विकवारप्राभूतकं नाम चतुर्ज्ञानं भवति ॥३४०॥

चार गवियोंके स्वरूपको कहनेवाले प्रतिपत्तिकसे आगे उसके ऊपर एक-एक अक्षरकी
वृद्धिके क्रमसे संख्यात हजार पदोंके समुदायरूप संख्यात हजार संघात और संख्यात
हजार संघातोंके समूहरूप प्रतिपत्तिककी संख्यात हजार प्रमाण वृद्धि होनेपर उसमें-से एक
अक्षर कम करनेपर प्रतिपत्तिक समास ज्ञानके विकल्प होते हैं । उसके अन्तिम प्रतिपत्तिक
समासके उत्कृष्ट विकल्पके ऊपर एक अक्षर बढ़ानेपर अनुयोग नामक चतुर्ज्ञान होता है ।
चौदह मार्गाओंके स्वरूपके प्रतिपादक अनुयोग नामक चतुर्गोतिस्यके मुननेसे हुआ अर्थज्ञान
अनुयोग चतुर्ज्ञान है ॥३३९॥

अथ दो गायाओंसे प्राभूतक-प्राभूतकका स्वरूप कहते हैं—

चौदह मार्गाओंसे सम्बद्ध अनुयोगसे आगे उसके ऊपर पूर्वोक्त क्रमसे प्रत्येक एक-
एक अक्षरकी वृद्धिसे युक्त पद आदिकी वृद्धिके द्वारा चार आदि अनुयोगोंकी वृद्धि होनेपर
प्राभूतक-प्राभूतक चतुर्ज्ञान होता है । उसमें एक अक्षर कम करनेपर चतुर्ज्ञान नामक अनुयोग

दीर्घं दीर्घं वाच्यं तद्दीर्घं वाच्यं वाच्यं वाच्यं ।

पञ्चमः अङ्कः ॥ १११ ॥

[illegible][illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासहिते श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्णोवाच ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(Faint handwritten notes at the bottom of the page)

[illegible][illegible]

1. 1990년대 초반부터 시작된 '문화의 대중화' 정책은 문화의 접근성을 높이고, 문화의 다양성을 증진시키는 데 중점을 두었다. 이 시기에 '문화의 소외' 문제를 해결하기 위한 다양한 정책들이 시행되었다.

[illegible]

“...한국의 경제는 1970년대 초부터 본격적으로 성장하기 시작했다. 이 시기에 한국은 수출 주도형 경제 정책을 추진하며, 급속한 경제 성장을 이루었다. 이 시기에 한국은 경제적으로 안정을 찾았으며, 국민들의 생활 수준도 크게 향상되었다.”

पूर्वभूतज्ञानमेवेति प्रत्येकमेवेति कर्णाटवृद्धिसहचरितपदादिवृद्धिपूर्व चतुर्दशवस्तुगण सलुप्तं विरल रूपोन्नायमात्रोत्पादपूर्वसमाप्तज्ञानविकल्पगण सलुप्तं विरल सत्त्वरमोत्प्रेष्टोत्पादपूर्वसमाप्तज्ञानविकल्पमेवेति एकाक्षरवृद्धियागुत्तविरल अत्रायणीयपूर्वभूतज्ञानमवगु- । मितु मुंवे मुंवे अष्ट अष्टादश द्वादश द्वादश द्वादश विंशति त्रिंशत् पंचदश दश दश दश दश यस्तुगण क्रमवृद्धिगणगुत्तं विरल रूपोन्नायमात्र साधनमान सत्तत्त्वं पूर्वसमाप्तज्ञानविकल्पगण सलुप्तं विरल तत्त्वसूत्र-समाप्तोत्प्रेष्टोत्पादविकल्पगणोत्प्रेष्टोत्पादवृद्धियागुत्तं विरल तत्त्वोन्मात्रादपूर्व-अस्तित्वास्तित्वात् प्रयादपूर्व ज्ञानप्रयादपूर्व-सत्यप्रयादपूर्व-आत्मप्रयादपूर्व-कर्मप्रयादपूर्व-प्रयादह्यमाननामधेयपूर्व-विद्यानुवादपूर्व-कल्याणवादपूर्व-प्राज्ञावादपूर्व-क्रियाविशालपूर्व-त्रिलोकविन्दुसारपूर्वमेवो धृत-ज्ञानगणरूपतिगणपुत्र । इति त्रिलोकविन्दुसारपूर्ववर्गे समाप्ताभावमेकैर्दोषे उत्तरज्ञानविकल्प-रहितवृद्धिर्द्वे ।

५

१०

१५

२०

२५

३०

३५

अनन्तरं चतुर्दशपूर्ववस्तु यस्तुप्राभूतजनसंख्येयं येन्यपरा :-

पण णउदिसया वत्थू पाहुडया तियसहससणवयसया ।

एदेषु चोदसेमु वि पुण्वेसु हयंति मिलिदाणि ॥३४७॥

पंचनयतिज्ञानानि वस्तूनि प्राभूतकानि त्रिसहस्रनवज्ञानानि । एतेषु चतुर्दशसु पूर्वेषु सार्धेषु भवन्ति मिलितानि ॥

उत्पादपूर्वमादिवाणि लोकाविन्दुसारपदानामाव चतुर्दशपूर्वगणोऽस्य वस्तुगण सार्धं मुं कूटि पंचनयसुतरज्ञानप्रमितगणपुत्र १९५ प्राभूतकंगल सार्धं मुं कूटि नवज्ञानोत्तरत्रिसहस्रप्रमितगणपुत्र

अत्रायणीयपूर्वभूतज्ञानं भवति । एवमत्रोत्प्रेष्टोत्पादगणदशगणदशपोषाविति विंशतिगणदशगणदशगणदश-वस्तुगण क्रमेण वृद्धेयु रूपोन्नायमात्रज्ञानमात्रसत्तत्त्वं समाप्तज्ञानविकल्पेण वतेषु उत्तरपूर्वसमाप्तोत्प्रेष्टज्ञान-विन्यस्योपरि एतद्विचारं कृते सति तत्तद्वीर्यप्रयादपूर्वविद्वान्निप्रयादपूर्वज्ञानप्रयादपूर्वसत्यप्रयादपूर्वविम-प्रयादपूर्वकर्मप्रयादपूर्वविद्याप्रयादपूर्वकल्याणवादपूर्वप्राज्ञावादपूर्वक्रियाविशालपूर्वत्रिलोकविन्दुसार-पूर्वनामधेयज्ञानानुवाद्यन्ते । अत्र त्रिलोकविन्दुसारस्य तु गमासो नास्ति उत्तरज्ञानविकल्पाभावान् ॥३४५-३४६॥ अथ चतुर्दशपूर्वगतवस्तुप्राभूतजनसंख्यां वक्ष्यति—

उत्पादपूर्वमादि कृत्वा त्रिलोकविन्दुसारवसानेषु चतुर्दशपूर्वेषु वस्तूनि सर्वाणि मिलित्वा पञ्चनवस्तु-सत्तावधिविधानि १९५ भवन्ति । प्राभूतकानि तु सर्वाणि मिलित्वा नवज्ञानोत्तरत्रिसहस्रप्रमितानि भवन्ति

उत्प्रेष्टोत्पादपूर्वं समाप्त ज्ञान विकल्पके ऊपर एक अक्षरकी वृद्धि होनेपर अत्रायणी पूर्व धृतज्ञान होता है । इसी प्रकार आगे-आगे आठ, अठारह, बारह, बारह, सोलह, बीस, तीस, पन्द्रह, दस, दस, दस, दस यस्तुओंकी क्रमसे वृद्धि होनेपर एक अक्षर कम उतने-उतने उस-उस पूर्व गमास ज्ञान पर्यन्त उम-उस पूर्व समाप्त ज्ञान सम्यन्धी विकल्प होते हैं । उस-उस पूर्व गमास ज्ञानके उत्प्रेष्ट विकल्पके ऊपर एक-एक अक्षर बढ़ानेपर उस-उस वीर्य प्रयाद पूर्व अग्नि, नाग्नि, प्रयाद, पूर्व आदि त्रिलोकविन्दुसार पर्यन्त पूर्व धृतज्ञान उत्पन्न होते हैं । त्रिलोकविन्दुसारका समाप्त ज्ञान नहीं है क्योंकि उसके आगे धृतज्ञानके विकल्प नहीं हैं ॥३४५-३४६॥

आगे चौदह पूर्वगत वस्तुओंके प्रासूतक नामक अधिकारोंकी संख्या कहते हैं—

उत्पाद पूर्वसे लेकर त्रिलोकविन्दुसार पर्यन्त चौदह पूर्वमें मिलकर सद्य वस्तु अधिकार एक सौ पंचानवे होते हैं । यद्यपि सद्य प्रासूत मिलकर बीन हजार नौ सौ होते हैं

स्वरूपमप्य भावभूतम् च शब्दविन्यावाह्यमप्य सामायिकादिचतुर्दशप्रकीर्णकभेदद्रव्यभावात्मक-
श्रुतं समुच्चयं माडल्पदुद्गु । पुद्गलद्रव्यरूपं वर्णपदवाक्यारमकं द्रव्यश्रुतमवक्तुं । तच्छ्रवण-
समुत्पन्न श्रुतज्ञानपर्यायरूपं भावश्रुतमवक्तुमिति दितिदाचार्याभिप्रायः ।

पर्यायादिशब्दगन्धो निरुक्तिः तोरल्पदुग्मदेते दोषे परीयते व्याप्यते सर्वे जीवा अनेनेति
पर्यायः । सर्वजघन्यज्ञानमित्यप्य ज्ञानरहितजीवकभावमेवमुक्तमुदाहरत् । केवलज्ञानवन्तरूप
जीवगण्डोऽभा ज्ञानमुक्तमुक्तमदेते दोषे महासंख्येयस्य कोट्यादियोज्य एकाग्रतत्त्वसंख्येयुमल्लियतेते
ज्ञातव्यमवक्तुं ।

अक्षमिद्वयं तस्मै अक्षाय भोत्रेन्द्रियाय राति ददाति स्वमर्पयसीत्यक्षरम् । पश्यते गच्छति
ज्ञानात्यर्थमात्माज्ञेनेति पदम् । सम् संक्षेपेणकदेशेन हन्यते गम्यते ज्ञायते एका गतिरनेनेति
संघातः । प्रतिपद्यते सामस्त्येन ज्ञायते चतस्रो गतयोऽनयेति प्रतिपत्तिः । संज्ञायाम् कप्रत्ययविधाना-
प्रतिपत्तिरुः । अनु गुणस्थानानुसारेण गत्यादिषु मार्गणासु युज्यते संबध्यते जीवा अस्मिन्ननेनेति
वा अनुयोगः ।

प्रकर्षेण नामस्थापनाद्रव्यभावनिर्देशस्वामित्यसाधनाधिकरणस्थितिविधानसःसंख्याक्षेत्र-
स्पर्शनकालांतरभावाल्पबहुत्वादिविशेषेण वस्तुधकारात्यर्थराभूतं परिपूर्णं प्राभूतं वस्तुनोधिकारः
प्राभूतमिति संज्ञास्यास्तीति प्राभूतकं प्राभूतकस्याधिकारः प्राभूतकप्राभूतकं । वसंति पूर्वमहाग-
१५

स्वरूपं भावभूतम् । अक्षयत्वात् अक्षवाह्यसामायिकादिचतुर्दशप्रकीर्णकभेदद्रव्यभावात्मकश्रुतं पुद्गलद्रव्यरूपं
वर्णपदवाक्यारमकं द्रव्यश्रुतं, तच्छ्रवणसमुत्पन्नश्रुतज्ञानपर्यायरूपं भावभूतं च समुच्चयते इति आचार्यस्य
अभिप्रायः । पर्यायादिशब्दानां निरुक्तिः प्रदस्यते । तद्यथा-परीयन्ते व्याप्यन्ते सर्वे जीवा अनेनेति पर्यायः-
सर्वजघन्यज्ञानं, ईदृशज्ञानरहितस्य जीवस्याभावात् । केवलज्ञानवन्तस्य वस्तुमभावात् महासंख्यामा कोट्यादौ
एकाग्रतत्त्वसंख्याम् । अक्षाय-भोत्रेन्द्रियाय राति ददाति स्वमर्पयसीत्यक्षरम् । पश्यते गच्छति ज्ञानात्यर्थमात्मा
अनेनेति पदम् । सं-संक्षेपेण एकदेशेन हन्यते गम्यते ज्ञायते एका गतिः अनेनेति संघातः । प्रतिपद्यते सामस्त्येन
ज्ञायते चतस्रो गतयः अनयेति प्रतिपत्तिः, संज्ञायाम् कप्रत्ययविधानात् प्रतिपत्तिरुः । अनु गुणस्थानानुसारेण
गत्यादिषु मार्गणासु युज्यन्ते संबध्यन्ते जीवा अस्मिन्ननेनेति अनुयोगः । प्रकर्षेण-नामस्थापनाद्रव्यभावनिर्देश-
स्वामित्यसाधनाधिकारणस्थितिविधान-सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वादिविशेषेण वस्तुधकारार्थरा-

रूप वर्णपद वाक्यारमक द्रव्यश्रुत होता है और इसके सुबनेसे उत्पन्न हुए ज्ञानरूप भावभूत १५
है यह आचार्यका अभिप्राय है । अथ पर्याय आदि शब्दोंकी निरुक्ति कहते हैं—इसके द्वारा
सब जीव 'परीयन्ते' व्याप्य किये जाते हैं यह पर्याय अर्थात् सर्वजघन्य ज्ञान है । इस प्रकारके
ज्ञानसे रहित कोई जीव नहीं है, केवलज्ञानियोंमें भी यह रहता है । जैसे कोटि आदि महा-
संख्यामें एक आदि अल्प संख्या गमित रहती है । 'अक्षाय' अर्थात् भोत्रेन्द्रियके लिए 'राति'
अपनेको देता है वह अक्षर है । जिसके द्वारा आत्मा अर्थको 'पश्यते' जानता है वह पद है । १०
जिसके द्वारा एक गति 'सं' संक्षेप रूपसे एकदेशसे 'हन्यते' जानी जाती है वह संघात है ।
जिसके द्वारा चारों गतियाँ 'प्रतिपद्यन्ते' पूर्ण रूपसे जानी जाती हैं वह प्रतिपत्ति है । संज्ञामें
'क' प्रत्यय करनेसे प्रतिपत्तिक होता है । जिसमें या जिसके द्वारा जीव 'अनु' गुणस्थानके
अनुसार गति आदि मार्गणाओंमें 'युज्यन्ते' युक्त किये जाते हैं वह अनुयोग है । 'प्रकर्षेण'
नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव, निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति, विधान, सत्, १५
संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व आदि विशेषोंसे वस्तु अधिकार

द्वादशोत्तररातप्रमितकोटिगच्छु त्रैशोतिलक्षं गच्छु मध्वत्तैटु सात्तिरद्वयु द्वादशांगमध्यमसाध्य-
पदप्रमाणमवकुं ११२८३५८००५ ।

अनंतरमंगवाह्याभरसंख्येयं पेञ्चदपननु मेरुपदाभरं गच्छि देस्कट्टनं भागिगुतिरनु शेषाभरं-
गळवर प्रमाणमं पेञ्चदपं :—

अडकोटिपयलकसा अट्टसहससा य एयसदिशं च ।

पण्णत्तरिवण्णाओ पइण्णयाणं पमाणं तु ॥३५१॥

अडकोटपेकलक्षमष्टसहस्रं चैकशतिकं च । पञ्चोत्तरसप्ततिचर्याः प्रकीर्णकानां प्रमाणं तु ॥

एदु कोटिगच्छुमेकलक्षमुमं दुसहस्रगच्छु मुरेयत्तैटु ८०१०८१७५ मंगवाह्यांगच्छु सामायि-
कादिषुतुद्वंशभेदंगच्छु संभयिषु प्रकीर्णकाभरंगच्छु प्रमाणमवकुं । तु शब्दविदं पूर्वगुणदोशु
द्वादशांगपदसांख्ये पेञ्चत्पददुदी सूत्रदोशंगवाह्याभरसंख्ये पेञ्चत्पददुद्वंशो विरोपमरियत्पदुगु ।

अनंतरमी पत्थेनिणंयात्थं गाथाद्वयमं पेञ्चदपं :—

तेत्तीसयेंजणाइं सत्तावीसा सरा सहा भणिपा ।

चत्तारिय जोगवहा चउसट्ठी मूलवण्णाओ ॥३५२॥

प्रयत्तिरशद्वपंजनाति सामयिगति स्वराः तथा भणिताः । चत्वारदच योगवाहाः चतुःपटि-
मूलयणाः ॥

द्वादशोत्तररातकोट्यः त्रैशोतिलक्षानि अष्टशतसहस्रानि पञ्च च द्वादशाङ्गानां मध्यमपदप्रमाणं
भवति ११२, ८३, ५८, ००५ । [अथैते मध्यमपदैरेवमेव इत्यङ्गम् । अथवा आचार्यादिशब्दसंज्ञाभेदगच्छु-
धुत्तसंख्यया अङ्गं अवयवः एकदेशः आचार्यादिकैरुपलब्धमित्यर्थः] ॥३५०॥ अवाह्याभरंगच्छु
कययि—

अष्टकोट्येकलक्षसहस्रं द्वादशपञ्चमसप्ततिचर्याः प्रकीर्णकानां अङ्गवाह्यानां सामयिवादीनां च
चतुर्गणानां भवन्ति ८०१०८१७५ गुणः पूर्वगुणे द्वादशाङ्गपदसंख्योक्त, अस्मिन् गुणे च अङ्गवाह्या-
भरसंख्योक्त इति विरोधं नास्ति ॥३५१॥ अवागुमेवार्थं गाथाद्वयेनाह—

द्वादशांगके सद्य मध्यम पदोका प्रमाण एक सी यारह कोटि, तेरासी लाख, अठावन
हजार पाँच है । अङ्गपते अर्थात् मध्यम पदोके द्वारा जो लक्षित होता है यह अंग है ।
अथवा आचार आदि यारह शास्त्रममूह रूप धृतस्कन्धका जो अंग अर्थात् अवयव या पद-
देश है । अर्थात् आचार आदि एक-एक शास्त्र अंग है ॥३५०॥

अय अंगवाहकी अक्षर संख्या कहते हैं—

प्रकीर्णक अर्थात् सामायिक आदि चौदह अंगवाहोके अक्षर आठ कोटि, एक लाख
आठ हजार एक सी पिचहत्तर प्रमाण होते हैं । तु शब्द विज्ञेयार्थक है वह स्थापित करता है
कि पूर्व गाथासूत्रमें द्वादशांगके पदोकी संख्या कहो है । इस गाथा सूत्रमें अंगवासके अक्षरोंकी
संख्या कही है ॥३५१॥

इसी अर्थको दो गाथाओंसे कहते हैं—

१. [] एतत्कोट्यन्तरमंजनाय भाति च इती ।

मूलवर्णप्रमाणमप्य चतुःषष्ट्यंशस्यानुरूपं विरलसि तिष्यैवपञ्क्तिरूपदिदं स्यापिसि
रूपं प्रति द्विकंनित्तु संगुणं कृत्वा परस्पर गुणनयं भाडि तल्लब्धदोष्ट रूपोर्न माडुतिरलु श्रुत-
ज्ञानस्य द्वादशांगप्रकीर्णक श्रुतस्फेदव्यश्रुतद अपुनस्तथाक्षरं तल्लब्धप्रमितं गण्युवे ते दोडे
वाक्यार्थप्रतीतिनिमित्तं गळप्युनस्तथाक्षरं लो संख्यानियमाभावमप्युदरिदं । एकद्विश्चादि चतुः-
षष्टिसंयोगव्यं तमप्य संयोगक्षरं गळ संकलितमागुतिरलु श्रुतस्फेदाक्षरप्रमाणोत्पत्तियक्कुमा ५
संकलितधनमेनिते दोडे पेळ्ळपह :-

एकदठ च च य छस्सत्तयं च न य गुणसत्तयिसत्ता ।

गुणं णव पण पंच य एकं छस्केकगो य पणं च ॥३५४॥

एकादचतुःचतुःषष्ट्यां च चतुःचतुःशून्यसप्तत्रिंशत् । शून्यं नव पंच पंच च एकं षट्कैक-
कश्च पंचकं च ॥

एदितेनां क्रमादियागि पंजाकावसानमादविशतिस्थानात्मकद्विरूपवर्गाधाराह्योनयष्टवर्गा-
प्रमाणाक्षरं गळप्यु—१८४६७४४०७३७०९५५१६१५ ।

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	००००६४
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	प्रत्येक
१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	द्विसंयोग
	२	१	३	६	१०	१५	२१	२८	३६	त्रिसंयोग
		४	१	४	१०	२०	३५	५६	८४	चतुःसंयोग
			८	१	५	१५	३५	७०	१२६	पञ्चसंयोग
				१६	१	६	२१	५६	१२६	षट्संयोग
					३२	१	७	२८	८४	सप्तसंयोग
						६४	१	८	३६	अष्टसंयोग
							१२८	१	९	नवसंयोग
								२५६	१	दशसंयोग
									५१२	

मूलवर्णप्रमाणं चतुःषष्टिदं एवैकस्थेन विरलमित्वा रूपं रूपं प्रति द्विकं दत्त्वा परस्परं सङ्गुण्य तल्लब्धे

मूल अक्षर प्रमाण चौसठ पदोको एक-एक रूपसे विरलन करके एक-एक रूपपर दो- २५

४।५।६।७।८।९ अपवर्तितमिदु ८४। अष्टसंयोगंगळु । सप्तरूपोनपदपद्दवारसंकलितमवकु
६।५।४।३।२।१
३।४।५।६।७।८।९ अपवर्तितमिदु ३६। नवसंयोगंगळु अष्टरूपोनपदसप्तवारसंकलितमवकु
७।६।५।४।३।२।१
२।३।४।५।६।७।८।९ अपवर्तितमिदु ९। दशसंयोगंगळु नवरूपोनपदाष्टवारसंकलित-
८।७।६।५।४।३।२।१
मवकुमादोडमल्लि परमाहर्षोदिवं संकलितमिल्लिल्लियो'दे रूपमवकु-। मिबेल्लं कूडि ५१२। इतो
प्रकारविवेलेडेयोळु संडु को'बुडु।

चरमस्थानदोळु तोपे'व'रते'दोडे चरमदोळं प्रत्येकभंग एकः प्रत्येकभंगमो'डु। द्विसंयोगी ५
द्विरूपपदमात्रः। द्विसंयोगंगळुवसंरूपे विरूपपदमात्रमवकु'। ६३। त्रिसंयोगादिक्रमाः त्रिसंयोगवतु-
संयोगवचसंयोगावि स्वसंभवचतुःषष्टिसंयोगावसानमाद संयोगंगळु प्रमाणं यथाक्रमं क्रममनति-
क्रमिसदे रूपाधिकवारहीनपदसंकलितं रूपाधिकैकद्वित्रिवारादि-स्वसंभवद्विपुतरपट्टिपदमवसाने-

१२९। सप्तसंयोगः पङ्कपोनपदस्य पञ्चवारसंकलनमात्राः ४।५।६।७।८।९ अपवर्तिता ८४।
६।५।४।३।२।१

अष्टसंयोगः सप्तरूपोनपदस्य पद्दवारसंकलनमात्राः ३।४।५।६।७।८।९ अपवर्तिताः ३६। १०
७।६।५।४।३।२।१

नवसंयोगः अष्टरूपोनपदस्य सप्तवारसंकलनमात्राः २।३।४।५।६।७।८।९ अपवर्तिताः ९।
८।७।६।५।४।३।२।१।

दशसंयोगः नवरूपोनपदस्य अष्टवारसंकलनमात्राः। अत्र परमाहर्षः संकलनमेव नास्ति इत्येकः। एते सर्वे
एकप्रत्येकमङ्गलवद्विसंयोगीः द्वादशोत्तरपञ्चशतभङ्गा भवन्ति ५१२। एवं सर्वपदेव्यानयेत्। चरमस्थाने
प्रत्येकभंगः एकः १। द्विसंयोगो विरूपपदमात्राः। यद्य त्रिसंयोगाः द्विरूपोनपदस्यैकवारसंकलनमात्राः

पाँच हीन गच्छका चार वार संकलन धन मात्र हैं। सो पाँच, छह, सात, आठ, नौको पाँच, १५
चार, तीन, दो, एकसे भाग देकर ५।६।७।८।९। अपवर्तन करनेपर एक सौ छब्बीस
५।४।३।२।१।

होते हैं। सात संयोगी भंग छह हीन गच्छका पाँच वार संकलन धन मात्र हैं। सो चार,
पाँच, छह, सात, आठ, नौ में छह, पाँच, चार, तीन, दो, एकका भाग देकर ४।५।६।७।८।९
६।५।४।३।२।१

अपवर्तन करनेपर चौरासी होते हैं। आठ संयोगी भंग सात हीन गच्छका छह वार संकलन
धन मात्र हैं। सो तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ को सात, छह, पाँच, चार, तीन, २०
दो, एकका भाग देकर ३।४।५।६।७।८।९। अपवर्तन करनेपर छत्तीस होते हैं।
७।६।५।४।३।२।१।

नौ संयोगी भंग आठ हीन गच्छका सात वार संकलन धन मात्र हैं। सो दो, तीन, चार,
पाँच, छह, सात, आठ, नौको आठ, सात, छह, पाँच, चार, तीन, दो, एकका भाग देनेपर
नौ होते हैं। दस संयोगी भंग नौ हीन गच्छका आठ वार संकलन धन मात्र हैं। सो यहाँ
वास्तवमें संकलन नहीं है क्योंकि एकका संकलन एक ही होता है अतः एक ही भंग है। २५
इस प्रकार सबको जोड़नेपर दसवें स्थानमें पाँच सौ बारह भंग होते हैं इसी प्रकार सब

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

मागतराशि ७।५७।२९।५९। ०।६१।३१। ० अपवर्तितगुणितमिदु ३८।७२८९४६९७
 ५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२।६३
 ८।७।६।५।४।३।२।१

दशसंयोगदोः नवहोमपद अष्टवारसंकलितमयम् अप ५५। ७।२९।२९।५९। ०।६१।३१। ०
 ५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२।६३
 ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १

होनीप्रकारविदमशसंवारसंज्ञितैकादशसंयोगादिभंगगज् यथासंभवंगज् नञ्च द्विचरमप्रियटि-

संयोगगज् रूपाधिरैवयष्टिवारसंकलनसंख्याजिहोनपद ६४-६१ एकयष्टिवारसंकलितमयम्
 २३।४।००००।६०।६१।६२।६३ अपवर्तितमिदु ६३। चतुःपष्टिसंयोगमो देयम् १।१।
 ६२ ६२।६०।५५४। ३। २। १
 मय्य
 ००००

ई चरमचतुःपष्टघसरस्यानदोः प्रत्येकभंगमादिपानि चतुःपष्टघसर संयोगभंगायेतानमादसमस्त
 शरविरुत्तंगज् युति एकरुन अष्टमयकु-१८-२ मितैकायेकोत्तरषण्दुद्धिरुमदिवं चतुःपष्टिषणां

नवसंयोगाः अष्टहोमपदम्य सप्तवारसंकलनमायाः ५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२।६३
 ८।७।६।५।४।३।२।१

अपवर्तिताः ३८७२८९४६९७। दशसंयोगाः नवहोमपदसंवारसंकलनमायाः
 ५६।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२।६३। अनेन दशम.....दशसंवारसंज्ञितैकादश
 ९।८।७।६।५।४।३।२।१।

मादिभङ्गा यथासंभव मोत्या द्विचरमप्रियटिगंयोगाः द्वापष्टिकोनपदसंवारपष्टिवारसंकलन
 २।३।४।०००।६०।६१।६२।६३। आरविना ६३। चतुःपष्टिसंयोगः एक एव
 ६२।६१।६०। मय्य ४।३।२।१।

अथ चतुःपष्टिमैत्रातपाने प्रवेशादीनां चतुःपष्टिसंयोगात्माना सर्वनामघराणा मुक्तिरेतदुक्त्याह

भंग सान हीन गच्छका छद् वार संकलन मात्र होते हैं सो सत्तायन, अठ्ठावन,
 साठ, इकमठ, वासठ, तिरमठको मान, छद्, पाँच, चार, तीन, दो, एकका भाग
 पचपन करोड़ पत्तीस लाख मत्तर हजार छद् सो इकदत्तर होते हैं। नौ संयोगी
 हीन गच्छका मान वार संकलन मात्र। मो छप्पन, सत्तावन, अठावन, उनमठ, वा
 मठ, वामठ, तिरसठको आठ, मान, छद्, पाँच, चार, तीन, दो, एकका भाग दे
 शरय मत्तामी करोड़ अठ्ठाईस लाख चौरानवे हजार छद् सो सत्तानवे होते हैं। च
 भंग नौ हीन गच्छका आठ वार संकलन मात्र। सो पचपन, छप्पन, सत्तावन
 छनमठ, माठ, इकमठ वासठ, तिरमठको नौ, आठ, साठ, छद्, पाँच, चार, तीन
 भाग देनेपर होते हैं। इसी प्रकार ग्यारह संयोगी आदि भंग जानना।
 तिरमठ संयोगी भंग वामठ हीन गच्छ दोका इकसठ वार संकलन
 दो, तीन आदि एक-एक बढ़ते तिरसठ पर्यन्तको वासठ इकसठ आदि एक-ए
 पर्यन्तका भाग देनेपर तिरमठ भंग होते हैं। चौसठ संयोगी भंग एक ही

एवं पाप न वध्यते । इत्याद्युत्तरवाक्यप्रतिपादितमुनिजनसमस्ताचरणं वनिसत्त्वट्टुदु । मूत्रपति-
संश्लेषेणात्थं मूत्रपतीति सूत्रं परमागमः । तदर्थं कृतं करणं ज्ञानविनयादि निर्विघ्नाध्ययनादि क्रिया ।
अथवा प्रज्ञापना कल्प्याकल्प्यच्छेदोपस्थापना व्यवहारधर्म्मक्रियाः स्वसमय-परसमयस्वरूपं च
सूत्रैः कृतं करणं क्रियाविरोधो यस्मिन् वध्यते तन्मूत्रकृतं नाम द्वितीयमंगं । त्रिष्टन्त्रिधर्मिकेकाद्ये-
कोत्तराणि स्थानानीति स्थानं स्थानार्थं तस्मिन् संप्रहृतयेन एक एवात्मा व्यवहारनयेन संतारी
मुक्तयेति द्विविकल्पः उत्पादव्ययधोव्ययुक्त इति त्रिलक्षणः, कर्म्मवशाच्चतुर्गोतिषु संज्ञामनीति
चतुःसंज्ञमण्युक्तः, औपगमिकसाधिविशयोपगमिकोदविरुपादिगामिकभेदेन पंच त्रिष्टन्त्रिधर्म-
प्रधानः, पूर्ववद्विगणपदिवयोत्तरोर्ध्वाधोगतिभेदेन संतारासंज्ञायां पट्कापक्रमयुक्तः, स्यादस्ति-
स्यान्नास्ति स्यादस्तिनास्ति स्यादवक्तव्यः स्यादस्तवक्तव्यः स्यान्नास्तवक्तव्यः स्यादस्तिनास्तव-
क्तव्यः इत्यादितामभंगितरूपावे उपयुक्तः, अष्टविधधर्म्मनियमयुक्तश्चाष्टाश्रयः, मरजीवाजीवा-
द्यत्रयसंपरनिर्जंतामोक्षपुण्यपापतयाः अर्थाः पदार्थाः विषयाः पश्य स मन्त्रार्थः, धुविष्यसेजो-
धापुत्रयेरताधारणद्वित्रिचतुःपंचेद्विषयेषादृशस्थानकः इत्यादीनि शेषस्य, सामान्यान्वयगा एकः

भूयसीत । एवं पापं न वध्यते । इत्याद्युत्तरवाक्यप्रतिपादितमुनिजनसमस्ताचरणं वनिसत्त्वट्टुदु । मूत्रपति-
संश्लेषेणात्थं मूत्रपतीति सूत्रं परमागमः । तदर्थं कृतं करणं ज्ञानविनयादि निर्विघ्नाध्ययनादि क्रिया, अथवा प्रज्ञापना,
कल्प्याकल्प्यं, छेदोपस्थापना, व्यवहारधर्म्मक्रिया, स्वसमय-परसमयस्वरूपं च सूत्रैः कृतं करणं क्रियाविरो-
धो यस्मिन् वध्यते तन्मूत्रकृतं नाम द्वितीयमंगम् । त्रिष्टन्त्रिधर्मिकेकाद्येकोत्तराणि स्थानानीति स्थानं
स्थानार्थं तस्मिन् संप्रहृतयेन एक एवात्मा व्यवहारनयेन संतारी मुक्तयेति द्विविकल्पः । उत्पादव्ययधोव्ययुक्त इति
त्रिलक्षणः । कर्म्मवशाच्चतुर्गोतिषु संज्ञामनीति चतुःसंज्ञमण्युक्तः । औपगमिकसाधिविशयोपगमिकोदविरु-
पादिगामिकभेदेन पञ्च त्रिष्टन्त्रिधर्मप्रधानः । पूर्ववद्विगणपदिवयोत्तरोर्ध्वाधोगतिभेदेन संतारासंज्ञायां पट्कापक्रम-
युक्तः । स्यादस्ति स्यान्नास्ति स्यादस्तिनास्ति स्यादवक्तव्यः स्यादस्तवक्तव्यः स्यान्नास्तवक्तव्यः स्यादस्तिनास्तव-
क्तव्यः इत्यादितामभंगितरूपावे उपयुक्तः । अष्टविधधर्म्मनियमयुक्तश्चाष्टाश्रयः । मरजीवाजीवाद्यत्रय-
संपरनिर्जंतामोक्षपुण्यपापतयाः अर्थाः पदार्थाः विषयाः पश्य स मन्त्रार्थः । धुविष्यसेजोधापुत्रयेरताधारण-

और साधनतापूर्वक भोजन करिए । ऐसा करनेसे पापका वन्ध नहीं होता, इत्यादि कलर
पापयोमें प्रतिपादित मुनिजनको समस्त आचरण वनित है । 'मूत्रपति' अर्थात् जो मंशोने
अर्धको मूत्रित करता है वह मूत्र नामक परमागम है । कथमें कृत्र अर्थात् ज्ञानको विनय आदि,
निर्विघ्न अध्ययन आदि क्रिया अथवा प्रज्ञापना, कल्प्य-अकल्प्य, छेदोपस्थापना, व्यवहार

वाक्यानि प्रताप्यन्ते कस्यन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञाप्रतिनाम पंचममंगं । नायस्त्रिलोकेऽपराणां स्वामी तीर्थंकरपरमभट्टारकस्तस्य धर्मकथा जीवादिवस्तुस्वभावकथनं । घातिकर्मशयानन्तर-केवलज्ञानसहोत्पन्नतीर्थंकरत्वपुण्यातिशयविजृम्भितमहिम्नस्तोत्यंकरस्य पूर्वार्द्धमध्याह्नापराह्ण-द्वेरात्रिषु षट् षट् घटिकाकालपर्यन्तं द्वादशगणसभामध्ये स्वभावतो दिव्यध्वनिद्गच्छत्यन्यकालेपि गणधरराजचक्रधरप्रश्नानन्तरं चोद्भवति । एवं समुद्भूतो दिव्यध्वनिः समस्तासन्नभ्रोतुगणानु-दिश्य उत्तमशमादिलक्षणं वा धर्मं कथयति । अथवा ज्ञातुगणधरदेवस्य जिज्ञासमानस्य प्रश्नानु-सारेण तदुत्तरवाच्यरूपा धर्मकथातत्पट्टास्तित्वनास्तित्वादित्वरूपकथनं । अथवा ज्ञातॄणां तीर्थंकर-गणधरराजचक्रधरादीनां धर्मानुबन्धिकपोपकथाकथनं ज्ञातुधर्मकथानाम् पष्ठमंगं ।

तो वासयअज्झयणे अंतपडेणुत्तरोववाददसे ।

पण्हाणं वापरणे विचायसुत्ते य पदसंखा ॥३५७॥

१०

तत उपासकाध्ययने अंतहृद्दो अनुत्तरोपवाददसे । प्रश्नानां व्याकरणे विपाकसूत्रे च पद-संख्या ॥

गणधरदेवप्रश्नवाक्यानि प्रताप्यन्ते कस्यन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञाप्रतिनाम पञ्चममङ्गं । नायः—त्रिलोकेऽपराणां स्वामी तीर्थंकरपरमभट्टारकः तस्य धर्मकथा जीवादिवस्तुस्वभावकथनं, घातिकर्मशयानन्तरकेवलज्ञानसहो-त्पन्नतीर्थंकरत्वपुण्यातिशयविजृम्भितमहिम्नः तीर्थंकरस्य पूर्वार्द्धमध्याह्नापराह्णधर्मात्रेषु षट्पट्घटिकाकाल-पर्यन्तं द्वादशगणसभामध्ये स्वभावतो दिव्यध्वनिद्गच्छति । अन्यकालेऽपि गणधरराजचक्रधरप्रश्नानन्तरं चोद्भवति । एवं समुद्भूतो दिव्यध्वनिः समस्तासन्नभ्रोतुगणानुदिश्य उत्तमशमादिलक्षणं रत्नत्रयात्मकं वा धर्मं कथयति । अथवा ज्ञातुगणधरदेवस्य जिज्ञासमानस्य प्रश्नानुसारेण तदुत्तरवाच्यरूपा धर्मकथा तत्पट्टा-स्तित्वनास्तित्वादित्वरूपकथनं, अथवा ज्ञातॄणां तीर्थंकरगणधरराजचक्रधरादीनां धर्मानुबन्धिकपोपकथाकथनं नायधर्मकथा ज्ञातुधर्मकथानाम् वा पष्ठमङ्गम् ॥३५६॥

१५

२०

अंगमें होता है । क्या जीव है या नहीं है ? क्या जीव एक है या अनेक है ? क्या जीव नित्य है या अनित्य है ? क्या जीव वच्छेद्य है या अवच्छेद्य है इत्यादि गणधरदेवके साठ हजार प्रश्न भगवान् अर्हन्त तीर्थंकरके पासमें पड़े गये जिसमें विशेष अर्थात् बहुत प्रकारसे प्रताप्यन्ते कहे जाते हैं वह व्याख्याप्रज्ञाप्रति नामक पाँचवाँ अंग है । नाथ अर्थात् तीनों लोकों-के ईश्वरोंका स्वामी तीर्थंकर परम भट्टारककी धर्मकथा—जीवादि वस्तुओंके स्वभावका कथन, कि घातिकर्मके शयके अनन्तर केवलज्ञानके साथ उत्पन्न तीर्थंकर नामक पुण्याति-शयसे जिनकी महिमा बढ़ गयी है उन तीर्थंकरकी पूर्वाह्ण, मध्याह्ण, अपराह्ण और अर्धरात्रिमें छह-छह घड़ी काल पर्यन्त बारह गणोंकी समाके मध्य स्वभावसे दिव्यध्वनि-खिरती है, अन्य समयमें भी गणधर, इन्द्र और चक्रवर्तिके प्रश्न करनेपर खिरती है । इस प्रकार उत्पन्न हुई दिव्यध्वनि समस्त निकटवर्ती श्रोतागणोंके वहेससे उत्तमशमादि लक्षणरूप रत्नत्रयात्मक धर्म-का कथन करती है । अथवा ज्ञाता जिज्ञासु गणधर देवके प्रश्नके अनुसार उत्तर वाच्यरूप धर्मकथा, पड़े गये अस्तित्व-नास्तित्व आदिके स्वरूपका कथन अथवा ज्ञाता तीर्थंकर गण-धर इन्द्र चक्रवर्ती आदिके धर्मानुबन्धी कपोपकथन जिसमें हो वह ज्ञातुधर्मकथा नामक छठा अंग है ॥३५६॥

२५

३०

वाक्यानि प्रज्ञाप्यन्ते कथ्यन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम पञ्चममङ्गं । नायस्त्रिलोकेश्वराणां स्वामी तीर्थंकरपरमभट्टारकस्तस्य धर्मकथा जीवादिवस्तुस्वभावकथनं । धातिकर्मशयानन्तर-केवलज्ञानसहोत्पन्नतीर्थंकरवपुष्यातिशयविजृम्भितमहिम्नस्तोत्र्यंकरस्य पूर्वार्हमध्याह्नापराह्णा-द्वारात्रिपु पद् पद् घटिकाकालपर्यन्तं द्वादशगणसमामध्ये स्वभावतो दिव्यध्वनिद्वग्दृग्दृश्यकालेषि गणधरशक्रचक्रधरप्रश्नानन्तरं चोद्भवति । एवं समुद्भूतो दिव्यध्वनिः समस्तासन्नश्रोतृगणानु-दृश्य उत्तमक्षमादिलक्षणं वा धर्मं कथयति । अथवा ज्ञातुर्गणधरदेवस्य जिज्ञासमानस्य प्रश्नानु-सारेण तदुत्तरवाक्यरूपा धर्मकथातत्पुष्टास्तित्यनास्तित्वादिवस्वरूपकथनं । अथवा ज्ञातृणां तीर्थंकर-गणधरशक्रचक्रधरादीनां धर्मानुबन्धिकथोपकथाकथनं ज्ञातृधर्मकथानाम षष्ठमङ्गं ।

तो वासयअज्जयणे अंतयडेणुत्तरोववाददसे ।

पण्हाणं वायरणे विवायसुत्ते य पदसंखा ॥३५७॥

तत उपासकाध्ययने अंतहृद्देशे अनुत्तरोपपाददशे । प्रश्नानां व्याकरणे विपाकसूत्रे च पद-संख्या ॥

गणधरदेवप्रदत्तवाक्यानि प्रज्ञाप्यन्ते कथ्यन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम पञ्चममङ्गं । नायः—त्रिलोकेश्वराणां स्वामी तीर्थंकरपरमभट्टारकः तस्य धर्मकथा जीवादिवस्तुस्वभावकथनं, धातिकर्मशयानन्तरकेवलज्ञानसहो-त्पन्नतीर्थंकरवपुष्यातिशयविजृम्भितमहिम्नः तीर्थंकरस्य पूर्वार्हमध्याह्नापराह्णाद्वारात्रिपु पदपद्घटिकाकाल-पर्यन्तं द्वादशगणसमामध्ये स्वभावतो दिव्यध्वनिद्वग्दृच्छति । अन्यकालेषि गणधरशक्रचक्रधरप्रश्नानन्तरं चोद्भवति । एवं समुद्भूतो दिव्यध्वनिः समस्तासन्नश्रोतृगणानुदृश्य उत्तमक्षमादिलक्षणं रत्नत्रयात्मकं वा धर्मं कथयति । अथवा ज्ञातृगणधरदेवस्य जिज्ञासमानस्य प्रश्नानुसारेण तदुत्तरवाक्यरूपा धर्मकथा तत्पुष्टा-स्तित्वनास्तित्ववादिस्वरूपकथनं, अथवा ज्ञातृणां तीर्थंकरगणधरशक्रचक्रधरादीनां धर्मानुबन्धिकथोपकथाकथनं नायधर्मकथा ज्ञातृधर्मकथानाम षष्ठमङ्गम् ॥३५६॥

अंगमें होता है । क्या जीव है या नहीं है ? क्या जीव एक है या अनेक है ? क्या जीव नित्य है या अनित्य है ? क्या जीव ब्रह्म है या अब्रह्म है इत्यादि गणधरदेवके साठ हजार प्रश्न भगवान् अहंन्त तीर्थंकरके पासमें पूछे गये जिसमें विशेष अर्थात् बहुत प्रकारसे प्रज्ञाप्यन्ते कहे जाते हैं वह व्याख्याप्रज्ञप्ति नामक पाँचवाँ अंग है । नाय अर्थात् तीनों लोकों-के ईश्वरोंका स्वामी तीर्थंकर परम भट्टारककी धर्मकथा—जीवादि वस्तुओंके स्वभावका कथन, कि धातिकर्मके साथके अनन्तर केवलज्ञानके साथ उत्पन्न तीर्थंकर नामक पुण्याति-शयसे जिनकी महिमा बढ़ गयी है उन तीर्थंकरकी पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न और अर्धरात्रिमें छह-छह घड़ी फाल पर्यन्त बारह गणोंकी समाके मध्य स्वभावसे दिव्यध्वनि खिरती है, अन्य समयमें भी गणधर, इन्द्र और चक्रवर्तिके प्रश्न करनेपर खिरती है । इस प्रकार उत्पन्न हुई दिव्यध्वनि समस्त निकटवर्ती श्रोतागणोंके वक्षसे उत्तमक्षमादि लक्षणरूप रत्नत्रयात्मक धर्म-का कथन करती है । अथवा ज्ञाता जिज्ञासु गणधर देवके प्रश्नके अनुसार उत्तर वाक्यरूप धर्मकथा, पूछे गये अस्तित्व-नास्तित्व आदिके स्वरूपका कथन अथवा ज्ञाता तीर्थंकर गण-धर इन्द्र चक्रवर्ती आदिके धर्मानुबन्धी कथोपकथन जिसमें हो वह ज्ञातृधर्मकथा नामक छठा अंग है ॥३५६॥

पावनानि प्रगायन्ते ब्रह्मन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रतिनिधाय संवत्सरम् । नायस्त्रिभोतेन्दुरागो
स्यामो शीर्षंरपरममट्टारकस्तस्य धर्मरूपा जीवदिवस्तुत्यभावकपन । धातिरुर्मधायान्तरे-
बेवत्तानरहोत्तन्नोत्तरेन्दुरवदुन्वातिशयिजम् भिनमहिमन्तीत्येकरस्य पूर्वाह्णमप्याह्णराह्ण-
र्त्तानिनु यद् यद् पट्टिवाहापयमेतं ह्यारामन्तसामाम्ये स्वभावतो दिव्यप्यनिदृग्गन्तव्यरुतंवि
मनपररागपदपदमनान्तरे चोरमवति । एवं समुद्रभूतो दिव्यप्यनिः समातागन्धोनुगानानु-
दित्य उत्तमसमादिशतनं वा धर्म्यं ब्रह्मनि । अथवा ज्ञानुर्गन्धपरदेवस्य जिज्ञासयामस्य प्रदानानु-
सारेण तनुत्तरदावरूपा धर्मरूपातनुत्तरास्तित्वनास्तित्वारित्यरूपकपन । अथवा ज्ञानुर्गा तीर्थकर-
गन्धपदागन्धपरादोता धर्मानुबन्धितयोपकृष्टकपनं ज्ञानुधर्मरूपानाम वद्वर्गम् ।

तो धामपप्रज्ञापणे अंतपडेनुत्तरोववाददो ।
पण्डानं धापरणे विवायमुचे य पदमंता ॥३५७॥

तत्त ज्ञासाकाप्यपने अंतपडेनुत्तरोववाददो । प्रदानां व्याकरणे विचारमुने च पर-
संन्या ॥

गणपरदेवजनसाराणि प्रगायन्ते ब्रह्मन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रतिनिधाय पञ्चमवत् । नायः-त्रिभोतेन्दुरागो
स्यामो शीर्षंरपरममट्टारकः तस्य धर्मरूपा जीवदिवस्तुत्यभावकपन, धातिरुर्मधायान्तरेबेवत्तानरहो-
त्तन्नोत्तरेन्दुरवदुन्वातिशयिजम् भिनमहिमन्तीत्येकरस्य पूर्वाह्णमप्याह्णराह्णर्त्तानिनु यद् यद् पट्टिवाहाप-
यमेतं ह्यारामन्तसामाम्ये स्वभावतो दिव्यप्यनिदृग्गन्तव्यरुतंवि मनपररागपदपदमनान्तरे चोरमवति । एवं समुद्रभूतो दिव्यप्यनिः समातागन्धोनुगानानु-
दित्य उत्तमसमादिशतनं वा धर्म्यं ब्रह्मनि । अथवा ज्ञानुर्गन्धपरदेवस्य जिज्ञासयामस्य प्रदानानु-
सारेण तनुत्तरदावरूपा धर्मरूपातनुत्तरास्तित्वनास्तित्वारित्यरूपकपन, अथवा ज्ञानुर्गा तीर्थकर-
गन्धपदागन्धपरादोता धर्मानुबन्धितयोपकृष्टकपनं ज्ञानुधर्मरूपानाम वद्वर्गम् ॥३५९॥

अंगमें होता है । क्या जीव है या नदी है ? क्या जीव एक है या अनेक है ? क्या जीव नित्य
है या अनित्य है ? क्या जीव ब्रह्मण्य है या अवच्छन्न्य है इत्यादि गणपरदेवके साठ हजार
प्रश्न मगधाम् यहाँ लीधंरकरके पागमें पूछे गये जिसमें विशेष अर्थात् बहुत प्रकारसे
प्रगायन्ते पड़े जाते हैं वह व्याख्याप्रज्ञति नामक शौचर्षी अंग है । नाथ अर्थार्थ शौचर्षी शौचर्षी-
के ईश्वरीका यामो शीर्षंर परम मट्टारककी धर्मरूपा—जीवादि वस्तुओंके स्वभावका
कपन, छि धातिकर्मके हाथके अनन्तर केवलज्ञानके माथ चलन् लीधंरकर नामक पुण्याति-
शयसे जिनकी महिमा यद् गयो है उन लीधंरकरकी पूर्वाह्ण, मध्याह्ण, अपराह्ण और अर्धरात्रिमें
छट्-छट् पड़ों काट पयन्त बारह गानोंकी सभाके मध्य स्वभावसे दिव्यप्यनि गिरती है, अन्य
ममयमें भी गणपर, इन्द्र और चक्रवर्तिके प्रश्न करनेपर गिरती है । इस प्रकार वरान्न दुई
दिव्यप्यनि मगन् निष्ठवर्षी भोतागर्गके प्रश्नसे उत्तमसमादि सदाग्रूप रत्नप्रसारमक धर्म-
का कपन करती है । अथवा ज्ञाता जिज्ञासु गणपर देवके प्रश्नके अनुसार उत्तर धाम्यरूप
धर्मरूपा, पड़े गये अस्तिरव-नास्तिरव आदिके स्वरूपका कपन अथवा ज्ञाता लीधंरकर गण-
पर इन्द्र चक्रवर्षी आदिके धर्मानुबन्धी कयोपकपन जिसमें दो यह ज्ञानधर्मरूपा नामक
एक अंग है ॥३५६॥

यावयानि प्रज्ञाप्यन्ते कथ्यन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम पञ्चममङ्गं । नायस्त्रिलोकेश्वराणां स्वामी तीर्थंकरपरमभट्टारकस्तस्य धर्मकथा जीवादिवस्तुस्वभावकथनं, धातिकर्मक्षयानन्तर-केवलज्ञानसहोत्पन्नतीर्थंकरत्वपुण्यातिशयविजृम्भितमहिम्नस्तीर्थंकरस्य पूर्वार्हमध्याह्नपरार्हो-द्धारात्रिषु पद पद घटिकाकालपर्यन्तं द्वादशगणसभामध्ये स्वभावतो दिव्यध्वनिरद्गच्छत्यन्यकालेपि गणधरसकचक्रधरप्रश्नानन्तरं धोदभवति । एवं समुद्भूतो दिव्यध्वनिः समस्तासन्नधोतुगणानु-दिश्य उत्तमशमादिलक्षणं वा धर्मं कथयति । अथवा ज्ञातुर्गणधरदेवस्य जिज्ञासमानस्य प्रश्नानु-सारेण तदुत्तरवाक्यरूपा धर्मकथातत्पुष्टास्तिवत्वास्तिवद्विस्वरूपकथनं । अथवा ज्ञातृणां तीर्थंकर-गणधरसकचक्रधरादीनां धर्मानुबन्धिकथोपकथाकथनं ज्ञातृधर्मकथानाम षष्ठमङ्गं ।

तो वासयअज्झयणे अंतयडेणुत्तरोववादसे ।

पण्हाणं धायरणे विवायसुत्ते य पदसंखा ॥३५॥

१०

तत उपासकाध्ययने अंतकृद्दशे अनुत्तरोपपाददशे । प्रश्नानां व्याकरणे विपाकसूत्रे च पद-संख्या ॥

गणधरदेवप्रश्नवाक्यानि प्रज्ञाप्यन्ते कथ्यन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम पञ्चममङ्गं । नायः—त्रिलोकेश्वराणां स्वामी तीर्थंकरपरमभट्टारकः तस्य धर्मकथा जीवादिवस्तुस्वभावकथनं, धातिकर्मक्षयानन्तरकेवलज्ञानसहो-त्पन्नतीर्थंकरत्वपुण्यातिशयविजृम्भितमहिम्नः तीर्थंकरस्य पूर्वार्हमध्याह्नपरार्होद्धारात्रिषु पदपदघटिकाकाल-पर्यन्तं द्वादशगणसभामध्ये स्वभावतो दिव्यध्वनिरद्गच्छति । अन्यकालेपि गणधरसकचक्रधरप्रश्नानन्तरं धोदभवति । एवं समुद्भूतो दिव्यध्वनिः समस्तासन्नधोतुगणानुदिश्य उत्तमशमादिलक्षणं रत्नप्रयात्मकं वा धर्मं कथयति । अथवा ज्ञातुर्गणधरदेवस्य जिज्ञासमानस्य प्रश्नानुसारेण तदुत्तरवाक्यरूपा धर्मकथा तत्पुष्टा-स्तिवत्वास्तिवद्विस्वरूपकथनं, अथवा ज्ञातृणां तीर्थंकरगणधरसकचक्रधरादीनां धर्मानुबन्धिकथोपकथाकथनं नायधर्मकथा ज्ञातृधर्मकथानाम वा षष्ठमङ्गम् ॥३५॥

२०

अंगमें होता है । क्या जीव है या नहीं है ? क्या जीव एक है या अनेक है ? क्या जीव नित्य है या अनित्य है ? क्या जीव वक्तव्य है या अवक्तव्य है इत्यादि गणधरदेवके साठ हजार प्रश्न भगवान् अर्हन्स्य तीर्थंकरके पासमें पूछे गये जिसमें विशेष अर्थात् बहुत प्रकारसे प्रज्ञाप्यन्ते कहे जाते हैं वह व्याख्याप्रज्ञप्ति नामक पाँचवाँ अंग है । नाय अर्थात् तीनों लोकों-के ईश्वरोंका स्वामी तीर्थंकर परम भट्टारककी धर्मकथा—जीवादि वस्तुओंके स्वभावका कथन, कि धातिकर्मके क्षयके अनन्तर केवलज्ञानके साथ उत्पन्न तीर्थंकर नामक पुण्याति-शयसे जिनकी महिमा बढ़ गयी है उन तीर्थंकरकी पूर्वाह्ण, मध्याह्न, अपराह्ण और अर्धरात्रिमें छह-छह घड़ी काल पर्यन्त बारह गणोंकी सभाके मध्य स्वभावसे दिव्यध्वनि-खिरती है, अन्य समयमें भी गणधर, इन्द्र और चक्रवर्तिके प्रश्न करनेपर खिरती है । इस प्रकार उत्पन्न हुई दिव्यध्वनि समस्त निकटवर्ती श्रोतागणोंके उद्देशसे उत्तमशमादि लक्षणरूप रत्नत्रयात्मक धर्म-का कथन करती है । अथवा ज्ञाता जिज्ञासु गणधर देवके प्रश्नके अनुसार उत्तर वाक्यरूप धर्मकथा, पूछे गये अस्तित्व-नास्तित्व आदिके स्वरूपका कथन अथवा ज्ञाता तीर्थंकर गण-धर इन्द्र चक्रवर्ती आदिके धर्मानुबन्धी कथोपकथन जिसमें हो वह ज्ञातृधर्मकथा नामक छठा अंग है ॥३५॥

२५

३०

पारानां प्रताप्यन्ते कल्पन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञाविनाम पंचममंगं । नाथस्त्रिलोकेश्वराणां स्वामी तीर्थंकरपरमभट्टारकस्तस्य धर्मरूपा जीवादिवस्तुस्वभावकथनं । धातिकर्मसाधानन्तर-
केवलज्ञानाहो-तन्तरीयं करस्तुपुण्यातिशयविजुंभितमहिम्नस्तोत्रंकरस्य पूर्वाह्णप्याह्णपरामुखा-
होरादिषु पदं पदं पट्टिकाशालयपर्यंतं द्वारगणनसमायप्ये स्वभावतो दिव्यध्वनिदृग्गच्छत्यव्यक्तालेपि
गणपरराजचक्रपरप्रदानानंतरं धोदुभवति । एवं समुद्भूतो दिव्यध्वनिः समस्तातन्मधोतुगणानु-
द्वित्य उत्तमतमारादिलक्षणं वा धर्मं कथयति । अथवा शातुगणधरदेवस्य जिज्ञासमानस्य प्रश्नानु-
सारेण तदुत्तरपारपरूपं धर्मकथातत्पुष्टास्तित्वनास्तित्वादित्वरूपकथनं । अथवा शातुगणं तीर्थंकर-
गणपरराजचक्रपरराजोनां धर्मानुबन्धिरूपोपकथाकथनं शातुधर्मकथानाम पट्टमंगं ।

तो वातपञ्चज्ञापणे अंतपट्टेणुचरोववाददसे ।

पण्हाणं वायरणे विवायमुचे य पदसंखा ॥३५७॥

तत उपाराजप्यपने अंतहृद्दो अनुत्तरोपपाददसे । प्रदानां व्याकरणे विपारगुण्ये च पद-
संख्या ॥

गणपरदेवराजपारानां प्रताप्यन्ते कल्पन्ते यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञाविनाम पञ्चममङ्गं । नाथः-त्रिलोकेश्वराणां
स्वामी तीर्थंकरपरमभट्टारकः तस्य धर्मरूपा जीवादिवस्तुस्वभावकथनं, धातिकर्मसाधानन्तरकेवलज्ञानाहो-
तन्तरीयं करस्तुपुण्यातिशयविजुंभितमहिम्नः तीर्थंकरस्य पूर्वाह्णप्याह्णपरामुखाहोरादिषु पदपदपट्टिकाशाल-
यपर्यंतं द्वारगणनसमायप्ये स्वभावतो दिव्यध्वनिदृग्गच्छति । अथवालेत्रि गणपरराजचक्रपरप्रदानानंतरं
धोदुभवति । एवं समुद्भूतो दिव्यध्वनिः समस्तातन्मधोतुगणानुद्वित्य उत्तमतमारादिलक्षणं रत्नत्रयात्मकं वा
धर्मं कथयति । अथवा शातुगणधरदेवस्य जिज्ञासमानस्य प्रश्नानुसारेण तदुत्तरपारपरूपं धर्मकथा तत्पुष्टा-
स्तित्वनास्तित्वादित्वरूपकथनं, अथवा शातुगणं तीर्थंकरगणपरराजचक्रपरराजोनां धर्मानुबन्धिरूपोपकथाकथनं
नाथधर्मकथा शातुधर्मकथानाम वा पञ्चममङ्गम् ॥३५६॥

अंगमें होता है । क्या जीव है या नहीं है ? क्या जीव एक है या अनेक है ? क्या जीव नित्य
है या अनित्य है ? क्या जीव ब्रह्म है या अब्रह्म है इत्यादि गणधरदेवके साठ हजार
प्रश्न भगवान् अर्हन्त तीर्थंकरके पासमें पूछे गये जिसमें विशेष अर्थात् बहुत प्रकारसे
प्रज्ञाप्यन्ते फंदे जाते हैं वह व्याख्याप्रज्ञा नामक पाँचवाँ अंग है । नाथ अर्थात् तीनों लोकों-
के ईश्वरोंका स्वामी तीर्थंकर परम भट्टारककी धर्मकथा—जीवादि वस्तुओंके स्वभावका
कथन, कि धातिकर्मके शयके अनन्तर केवलज्ञानके साथ उत्पन्न तीर्थंकर नामक पुण्याति-
शयसे जिनकी महिमा बढ़ गयी है उन तीर्थंकरकी पूर्वाह्ण, मध्याह्न, अपराह्न और अर्धरात्रिमें
छह-छह घड़ी काल पर्यंत बारह गणोंकी समाके मध्य स्वभावसे दिव्यध्वनि सिरती है, अन्य
समयमें भी गणधर, इन्द्र और चक्रवर्तिके प्रश्न करनेपर सिरती है । इस प्रकार उत्पन्न हुई
दिव्यध्वनि समस्त निकटवर्ती श्रोतागणोंके वदनेसे उत्तमसमाधि लक्षणरूप रत्नत्रयात्मक धर्म-
का कथन करती है । अथवा शाता जिज्ञासु गणधर देवके प्रश्नके अनुसार उत्तर वाक्यरूप
धर्मकथा, पूछे गये अस्तित्व-नास्तित्व आदिके स्वरूपका कथन अथवा शाता तीर्थंकर गण-
धर इन्द्र चक्रवर्ती आदिके धर्मानुबन्धी कथोपकथन जिसमें हो वह शातुधर्मकथा नामक
छठा अंग है ॥३५६॥

अभय वारिपेण चिलातपुत्रा इत्येते दाहण महोपसर्गांन्विजित्येन्द्रादिकृतां पूजां लब्ध्वाऽनुत्तरविमाने-
पूयपन्नाः । एवं धूपभादितीर्थेष्वपि परमागमानुसारेण ज्ञातव्याः । प्रश्नस्य दूतवाक्यनष्टमुष्टिचिन्तादि-
रूपस्यार्थः त्रिकालगोचरो घनघान्यादिलामालामसुखदुःखजीवितमरणजयपराजयादिरूपो व्याक्रियते
व्याख्यायते यस्मिन् तत्प्रश्नव्याकरणं । अथवा शिष्यप्रश्नानुरूपतया आक्षेपणी विक्षेपणी संवेजनी
निर्व्वेजनी चेति कथा चतुर्विधा । तत्र प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोगद्रव्यानुयोगरूपपरमागम-
पदार्थानां तीर्थंकरादिवृत्तान्तलोकसंस्थानवेदसकलयतिधर्मपञ्चास्तिकायादीनां परमताशंकारहितं
कथनमाक्षेपणीकथा । प्रमाणनयात्मकयुक्तियुक्तहेतुवादबलेन सर्वैकान्तादिपरसमायात्वं निराकरणरूपा
विक्षेपणीकथा । रत्नत्रयात्मकधर्मनिष्ठानुष्ठानफलभूततीर्थंकराद्यैर्धर्मप्रभावते मोक्षोद्यमज्ञाननुखादिवर्णनात्प्रा
वर्णनात्प्रा संवेजनीकथा । संसारशरीरभोगजनितदुःकर्मफलनारकादिदुःखदुःकुलविरूपांग-
वारिद्र्यापमानदुःखादिवर्णनाद्वारेण वैराग्यकथनरूपा निर्व्वेजनीकथा । एवंविधाः कथाः ध्याक्रियन्ते ५

धन्य-सुनक्षत्र-कार्तिकेय-नन्द-नन्दन-शालिभद्र-अभय-वारिपेण-चिलातपुत्रा इत्येते दाहणमहोपसर्गान् विजित्य
इन्द्रादिकृतां पूजां लब्ध्वाऽनुत्तरविमानेपूयपन्नाः । एवं धूपभादितीर्थेष्वपि परमागमानुसारेण ज्ञातव्याः ।
प्रश्नस्य-दूतवाक्यनष्टमुष्टिचिन्तादिरूपस्य अर्थः त्रिकालगोचरो घनघान्यादिलामालामसुखदुःखजीवितमरणजय-
पराजयादिरूपो व्याक्रियते व्याख्यायते यस्मिन्तत्प्रश्नव्याकरणम् । अथवा शिष्यप्रश्नानुरूपतया आक्षेपणी विक्षे-
पणी संवेजनी निर्व्वेजनी चेति कथा चतुर्विधा । तत्र प्रथमानुयोगकरणानुयोगचरणानुयोगद्रव्यानुयोगरूपपरमागम-
पदार्थानां तीर्थंकरादिवृत्तान्तलोकसंस्थानवेदसकलयतिधर्मपञ्चास्तिकायादीनां परमताशंकारहितं कथनमाक्षेपणी
कथा । प्रमाणनयात्मकयुक्तियुक्तहेतुवादबलेन सर्वैकान्तादि परसमायायं निराकरणरूपा विक्षेपणी कथा ।
रत्नत्रयात्मकधर्मनिष्ठानुष्ठानफलभूततीर्थंकराद्यैर्धर्मप्रभावते मोक्षोद्यमज्ञाननुखादिवर्णनात्प्रा संवेजनी कथा । संसार-
शरीरभोगरागजनिवदुःकर्मफलनारकादिदुःखदुःकुलविरूपाङ्गवारिद्र्यापमानदुःखादिवर्णनाद्वारेण वैराग्यकथनरूपा

स्वामीके तीर्थमें श्रुजुदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्तिकेय, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिपेण,
चिलातपुत्र ये दाहण महा उपसर्गोंको जीतकर इन्द्रादिके द्वारा की गयी पूजाको प्राप्त करके
अनुत्तर विमानमें उतग्न हुए । इसी प्रकार श्रुभ आदि तीर्थंकरोंके तीर्थमें भी परमागमके
अनुसार जानना । प्रश्न अर्थात् दूतवाक्य, नष्ट, मुष्टि चिन्तादि विषयक प्रश्नका त्रिकाल
गोचर अर्थ जो घनघान्य आदिकी लाम-हानि, सुख-दुःख, जीवन-मरण, जय-पराजय आदि-
से सम्बद्ध है वह जिसमें व्याक्रियते अर्थात् उत्तरित किया गया हो, वह प्रश्नव्याकरण है ।
अथवा शिष्योंके प्रश्नके अनुसार अवक्षेपणी विक्षेपणी, संवेजनी और निर्व्वेजनी ये चार
कथाएँ जिसमें वर्णित हैं वह प्रश्नव्याकरण है । तीर्थंकर आदिके इविष्टको कहनेवाले
प्रथमानुयोग, लोकके आकार आदिका कथन करनेवाले करणानुयोग, देशचारित्र और
सकलचारित्रको कहनेवाले चरणानुयोग तथा पंचास्तिकाय आदिका कथन करनेवाले
द्रव्यानुयोग रूप परमागमके पदार्थोंका परमतकी आज्ञाको दूर करते हुए कथनको आक्षे-
पणी कथा कहते हैं । प्रमाणनयात्मक युक्ति तथा हेतु आदिके बलसे सध्या एकान्त आदि
अन्य मतोंका निराकरण करानेवाली कथाको विक्षेपणी कथा कहते हैं । रत्नत्रयात्मक धर्मका
अनुष्ठान करनेके फलस्वरूप तीर्थंकर आदिके ऐश्वर्य, प्रभाव, तेज, ज्ञान, सुख, वीर्य आदिका
कथन करनेवाली संवेजनी कथा है । संसार शरीर और भोगोंसे राग करनेसे दुष्कर्मका बन्ध
होता है और उसके फलस्वरूप नारक आदिका दुःख, दुष्कुलकी प्राप्ति, शरीरोंके अंगोंका
विरूपपना, दारिद्र्य, अपमान आदिके वर्णनके द्वारा वैराग्यका कथन करनेवाली निर्व्वेजनी

कर्ममेंदु प्रकोरकमुमदेंते' बोडे चंद्रप्रज्ञप्तियं । सूर्यप्रज्ञप्तियं । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तियं । द्वीपसागरप्रज्ञप्तियं
व्याख्याप्रज्ञप्तियंमे'दितु चंद्रप्रज्ञप्तियं बुधु चंद्रविमानाणुःपरिवारश्चद्विगमनहानिबुद्धिसकलाद्धं-
चतुर्थांशग्रहणादिगळं वर्णिसुगुं । सूर्यप्रज्ञप्तियं बुधु सूर्यनायुमंङ्गलपरिवारश्चद्विगमनप्रमाणग्रहणा-
दिगळं वर्णिसुगुं । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तियं बुधु जम्बूद्वीपगतमेरुकुलचललहृदवर्षकुंडवेदिकावनपंडव्यंतरावास
महानदिगळमोदलादुवं वर्णिसुगुं । द्वीपसागरप्रज्ञप्तियं बुधु असंख्यातद्वीपसागरगळं स्वरूपं तत्र- ५
स्थितज्योतिर्वर्षानभावनावासंगळोळ विद्यमानंपळप्पकृत्रिमजिनभवनादिगळं वर्णनं माळकुं ।
व्याख्याप्रज्ञप्तियं बुधु रूप्यरूपिजीवाजीवद्रव्यंगळं भव्याभग्यभेदप्रमाणलक्षणंगळं, अनंतरसिद्ध परंपरा-
सिद्धरूपगळं परेयुं वस्तुगळं वर्णनं माळकुं । सूत्रयति सूचयति कुदृष्टिदर्शानानिति सूत्रं । जीवोऽब्ध-
कोऽकर्ता निर्गुणोऽमोक्तस्वप्रकाशकः परप्रकाशकोऽस्त्येव जीवो नास्त्येव जीव इत्यादिक्रियाक्रिया-
ज्ञानविनयकुदृष्टिनां त्रिपष्टपुत्तरजिनतमिव्यादर्शनंगळं पूर्वपक्षतोऽपि पेरुगुं । प्रयमानुयोगे' बुधु १०
प्रथमं मिथ्यादृष्टिमव्रतिकमप्युत्पन्नं वा प्रतिपाद्यमाश्रित्य प्रवृत्तोऽनुयोगोऽधिकारः प्रयमानुयोगः ।

परितः सर्वतः कर्माणि गणितकरणसूत्राणि यस्मिन् तत्परिकर्म, तच्च पञ्चविधं चन्द्रप्रज्ञप्तिः सूर्यप्रज्ञप्तिः
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः द्वीपसागरप्रज्ञप्तिः व्याख्याप्रज्ञप्तियश्चेति । तत्र चन्द्रप्रज्ञप्तिः चन्द्रस्य विमानाणुःपरिवारश्चद्वि-
गमनहानिबुद्धिसकलाधंचतुर्थांशग्रहणादीन् वर्णयति । सूर्यप्रज्ञप्तिः सूर्यस्यायुमंङ्गलपरिवारश्चद्विगमनप्रमाणग्रह-
णादीन् वर्णयति । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः जम्बूद्वीपगतमेरुकुलचललहृदवर्षकुंडवेदिकावनपंडव्यन्तरावासमहानद्यादीन् १५
वर्णयति । द्वीपसागरप्रज्ञप्तिः असंख्यातद्वीपसागराणां स्वरूपं तत्रस्थितज्योतिर्वर्षानभावनावासेषु विद्यमानाकृत्रिम-
जिनभवनादीन् वर्णयति । व्याख्याप्रज्ञप्तिः रूप्यरूपिजीवाजीवद्रव्याणां भव्याभग्यभेदप्रमाणलक्षणानां अनंतर-
सिद्धपरम्परासिद्धानां अन्यवस्तूनां च वर्णनं करोति । सूत्रयति—सूचयति कुदृष्टिदर्शानानिति सूत्रम् । जीवः
अवग्यकः अकर्ता निर्गुणः अमोक्तस्वप्रकाशकः परप्रकाशकः अस्त्येव जीवः नास्त्येव जीवः इत्यादि क्रिया-
क्रियाज्ञानविनयकुदृष्टिनां त्रिपष्टपुत्तरजिनतमिव्यादर्शनानि पूर्वपक्षतया कथयति । प्रयमानुयोगः प्रथमं मिथ्या- २०
दृष्टिमव्रतिकमप्युत्पन्नं वा प्रतिपाद्यमाश्रित्य प्रवृत्तोऽनुयोगोऽधिकारः प्रयमानुयोगः । चतुर्विधतितोर्यकप्रादसा-

‘परितः’ अर्थात् पूरी तरहसे ‘कर्माणि’ अर्थात् गणितके करणसूत्र जिममें हैं वह परिकर्म हैं ।
उसके भी पाँच भेद हैं—चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, व्याख्या-
प्रज्ञप्ति । उनमें-से चन्द्रप्रज्ञप्ति चन्द्रमाके विमान, आयु, परिवार, ऋद्धि, गमन, हानि, बुद्धि,
पूर्णग्रहण, अर्धग्रहण, चतुर्थांशग्रहण आदिका वर्णन करती है । सूर्यप्रज्ञप्ति सूर्यकी आयु, १५
मण्डल, परिवार, ऋद्धि, गमनका प्रमाण तथा ग्रहण आदिका वर्णन करती है । जम्बूद्वीप-
प्रज्ञप्ति जम्बूद्वीपगत मेरु, कुलाचल, तालाब, क्षेत्र, कुण्ड, वेदिका, वनखण्ड, व्यन्तरोके
आवास, महानदी आदिका वर्णन करती है । द्वीपसागरप्रज्ञप्ति असंख्यात द्वीप-समुद्रोंके
स्वरूप, उनमें स्थित ज्योतिषोदेवों, व्यन्तरो और भवनवासी देवोंके आवासोंमें वर्तमान
अकृत्रिम जिनालयोंका वर्णन करती है । व्याख्याप्रज्ञप्ति रूपी-अरूपी, जीव-अजीव द्रव्योंका, ३०
भग्य और अभग्य भेदोंका, उनके प्रमाण और लक्षणोंका, अनन्तर सिद्ध और परम्परा सिद्धों-
का तथा अन्य वस्तुओंका वर्णन करती है । ‘सूत्रयति’ अर्थात् जो मिथ्यादृष्टि दर्शनोंको
सूचित करता है वह सूत्र है । जीव अवग्यक है, अकर्ता है, निर्गुण है, अमोक्ता है, स्वप्रकाशक
नहीं है, परप्रकाशक है, जीव अस्ति हो है या नास्ति ही है इत्यादि क्रियावादी, अक्रियावादी,
अज्ञानी और वैतनिक मिथ्यादृष्टियोंके तीन सौ तिरसठ भगोंको पूर्वपक्षके रूपमें कहता है । ३५

१. म प्रकारमर्तेने । २. क तु मल्लि चं ।

गतनम मनगं गोरम मरगत जवगातनोननं जजलक्खा ।

मननन धममननोनननामं रनधजधरानन जलादी ॥३६३॥

याजकनामेनाननमेदाणि पदाणि ह्येति परियम्मे ।

कानवधिदाचनाननमेसो पुण चूलियाजोगो ॥३६४॥

ग । त्रि । त । षट् । न । शून्य । म । पंच । म । पंच । न । शून्य । पं । त्रि । गो । त्रि ।
१ । द्वि । म । पंच । म । पंच । रा । द्वि । य । त्रि । त । षट् । ज । अष्ट । य । चतुः । गा । त्रि ।
त । षट् । नोननं । शून्य । शून्य । शून्य । ज । अष्ट । ज । अष्ट । ललाणि । म । पंच । न । नन ।
शून्य । शून्य । शून्य । य । नय । म । पंच । म । पंच । न । शून्य । नो । शून्य । न । शून्य । ना ।
शून्य । म । पंच । रा । द्वि । न । शून्य । य । नय । ज । अष्ट । य । नय । रा । द्वि । न । शून्य ।
त । शून्य । जलादयः ॥

या । एक । ज । अष्ट । क एक । ना शून्य । मे । पंच । ना शून्य । न शून्य । न शून्य ।
मेतानि पदानि भवन्ति । परिकर्मणि । का । एक । न शून्य । य । चतुः । पि । नय । वा चतुः ।
च षट् । ना शून्य । न शून्य । न शून्य । मेयः पुनश्चूलिकायोयः । अक्षरसंज्ञेयं गतनमनोननं
षट्त्रिंशत्क्षपपक्षसहस्रपदंगळु चंद्रप्रज्ञप्तमियोळपुयु ३६०५००० । मनगं गोननं पंचलक्षत्रिंशत्क्षपपदंगळु
सूर्यप्रज्ञप्तमियोळपुयु ५०३००० । गोरमनोननं त्रिलक्षपञ्चविंशतिसहस्रपदंगळु जंबूद्वीपप्रज्ञप्तमियोळपुयु
३२५००० । मरगतनोननं द्विपञ्चाशत्क्षपषट्त्रिंशत्क्षहस्रपदंगळु द्वीपसागरप्रज्ञप्तमियोळपुयु
५२३६००० । जवगातनोननं चतुरशीतिलक्षषट्त्रिंशत्क्षहस्रपदंगळु व्याख्याप्रज्ञप्तमियोळपुयु ।
८४३६००० । जजलक्खा अष्टाशीतिलक्षपदंगळु सूत्रदोळपुयु ८८०००००० । मननन पंचसहस्रपदंगळु
प्रयमानुयोगदोळपुयु ५००० । धममननोनननामं पंचनवतिकोटियं पञ्चाशत्क्षममपुन पदंगळु
चतुर्दशसुखं समुच्चयदोळपुयु ९५५०००००५ । रनधजधराननजलादि द्विकोटिनवलक्षनवाशीति-
सहस्रद्विंशतोत्तरपदंगळु प्रत्येकं जलगतादि पंचचूलिकास्थानंगळोळु समानंगळेपुयु । जलगत-
गळु २०९८९२०० स्थलगतंगळु २०९८९२०० मायागतंगळु २०९८९२०० आकाशगतंगळु

अक्षरसंज्ञया चन्द्रप्रज्ञप्तौ गतनमनोननं-षट्त्रिंशत्क्षपञ्चराहसाणि पदानि ३६०५००० । सूर्यप्रज्ञप्तौ
मनगंनोननं-पञ्चलक्षत्रिंशत्क्षपदंगळु पदानि ५०३००० । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ गोरमनोननं त्रिलक्षत्रिंशतिसहस्राणि
पदानि ३२५००० । द्वीपसागरप्रज्ञप्तौ मरगतनोननं द्विपञ्चाशत्क्षपषट्त्रिंशत्क्षहसाणि पदानि ५२३६००० ।
व्याख्याप्रज्ञप्तौ जवगातनोननं-चतुरशीतिलक्षषट्त्रिंशत्क्षहसाणि पदानि ८४३६००० । सूत्रे जजलक्खा-
अष्टाशीतिलक्षणि पदानि ८८०००००० । प्रयमानुयोगे मनन-पञ्चसहस्राणि पदानि ५००० । चतुर्दशसुखं-
समुच्चये धमनोनननामं-पञ्चनवतिकोटिपञ्चाशत्क्षपञ्चपदानि ९५५०००००५ । जलादी जलगतादिपञ्च-
चूलिकास्थानेषु प्रत्येके रनधजधराननं-द्विकोटिनवलक्षनवाशीतिहस्रद्विंशतानि पदानि । २०९८९२०० ।

अक्षरोंकी संज्ञासे चन्द्रप्रज्ञप्तिमें 'गतनमनोनन' अर्थात् छत्तीस लाख पाँच हजार
३६०५००० पद हैं । सूर्यप्रज्ञप्तिमें 'मनगंनोनन' पाँच लाख तीन हजार ५०३००० पद हैं ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिमें 'गोरमनोनन' तीन लाख पच्चीस हजार ३२५००० पद हैं । द्वीपसागर
प्रज्ञप्तिमें 'मरगतनोनन' बावन लाख छत्तीस हजार ५२३६००० पद हैं । व्याख्याप्रज्ञप्तिमें
'जवगातनोन' चौरासी लाख छत्तीस हजार ८४३६००० पद हैं । सूत्रमें 'जजलक्खा' अठासी
लाख ८८००००० पद हैं । प्रयमानुयोगमें 'मननन' पाँच हजार ५००० पद हैं । चौदह पूर्वोंमें
'धममननोनननाम' पंचानवे कोटि पचास लाख पाँच ९५५०००००५ पद हैं । जलगता आदि

परिणतद्रव्यवर्णनं मान्नु-१। अस्ति द्विलक्षगणितं गुणितरंघात्तत्तुङ्गोत्पिपदगच्छपुत्रु
१०००००००। अयस्य द्वाद्वागंगेयु प्रधानमूतस्य वस्तुनः अयत्नं ज्ञानमप्रापणं तत्प्रयोजनमप्रापणीयं
द्वितीयं पूर्वमोयप्रापणी पृथक् समस्तं सुनय दुर्गं पंचास्तिकाय पदद्रव्य सप्ततत्त्व नवपदात्तपंचक
मोदलादयन्तु वनिमुमुमल्लि द्विलक्षगुणिताष्टचत्वारिंशत्पदगच्छ पण्यवतिलक्षगच्छपुत्रे मुदत्तं।—
१६००००००। दीर्घस्य जीवादिबस्तुसामर्थ्यस्य अनुप्रवादोनुवर्णनमस्मिन्निति दीर्घानुप्रवादमंगं
तृतीयपुत्रं मनु आत्मवीर्यं परवीर्यं उभयवीर्यं क्षेत्रवीर्यं कालवीर्यं भाववीर्यं तपोवीर्यं
मैदिर्याशितमस्तद्रव्यगुणपर्यायवीर्यमंगं वनिमुमुमल्लि द्विलक्षगुणितरंघात्तत्तुङ्गोत्पिपदगच्छ
गच्छपुत्रे मुदत्तं—३०००००००। अस्तिनास्तोत्यादि धर्मानां प्रवादः प्ररूपणमस्मिन्निति अस्ति-
नास्तिप्रवादं पुत्रुचं पूषमिदु।

जीवादिबस्तु स्यादस्ति स्वद्रव्यशेत्रकालभावानाश्रित्य। स्यात्तास्ति परद्रव्यशेत्रकालभावा-
नाश्रित्य। स्यादस्ति च नास्ति च क्रमेण स्वपरद्रव्यशेत्रकालभावद्वयं संयुक्तमाश्रित्य। स्यादवतत्तयं
युगपत्स्वपरद्रव्यशेत्रकालभावद्वयमाश्रित्य तथा वचनुमश्रयत्वात्। स्यादस्ति चावतत्तयं च
स्वद्रव्यशेत्रकालभावान् युगपत्स्वपरद्रव्यशेत्रकालभावद्वयं च संयुक्तमाश्रित्य। स्यात्तास्ति
चावतत्तयं च परद्रव्यशेत्रकालभावान् युगपत्स्वपरद्रव्यशेत्रकालभावद्वयं च संयुक्तमाश्रित्य।
स्यास्ति च नास्ति चावतत्तयं च क्रमेण स्वपरद्रव्यशेत्रकालभावद्वयं युगपत्स्वपरद्रव्यशेत्रकालभाव-
द्वयं च संयुक्तमाश्रित्य एवितेकानेकनित्यानिन्त्यापन्नतयमंगं विधिनिषेधावतत्तयमंगं प्रत्येक-

पदद्रव्यवर्णनं करोति। तत्र द्विलक्षगुणितरंघात्तत्तुङ्गोत्पिपदगच्छपुत्रु
प्रधानमूतस्य वस्तुनः अयत्नं ज्ञानं अप्रापणं। तत्प्रयोजनम् अप्रापणीयं, द्वितीयं पूर्व। तच्च गतगतगुणयदुर्गं-
पञ्चास्तिकायपरद्रव्यसप्ततत्त्वनवपदात्तपंचकं वर्णयति। तत्र द्विलक्षगुणिताष्टचत्वारिंशत्पदगच्छ पण्यवतिलक्षगच्छपुत्रे
मुदत्तं। १६००००००। दीर्घस्य—जीवादिबस्तुसामर्थ्यस्य अनुप्रवादः—अनुवर्णनं अस्मिन्निति दीर्घानुप्रवादं नाम
तृतीयं पूर्व। तच्च आत्मवीर्यं परवीर्यं उभयवीर्यं क्षेत्रवीर्यं कालवीर्यं भाववीर्यं तपोवीर्यं मैदिर्याशितमस्तद्रव्यगुणपर्यायवीर्याणि
वर्णयति। तत्र द्विलक्षगुणितरंघात्तत्तुङ्गोत्पिपदगच्छपुत्रु मुदत्तं। अस्तिनास्तोत्यादिधर्मानां
प्रवादः प्ररूपणमस्मिन्निति अस्तिनास्तिप्रवादं पुत्रुचं पूर्व। तच्च जीवादिबस्तु स्यादस्ति स्वद्रव्यशेत्रकालभावा-
नाश्रित्य, स्यात्तास्ति परद्रव्यशेत्रकालभावानाश्रित्य। स्यादस्ति नास्ति च क्रमेण स्वपरद्रव्यशेत्रकालभावद्वयं
संयुक्तमाश्रित्य। स्यादवतत्तयं युगपत्स्वपरद्रव्यशेत्रकालभावद्वयमाश्रित्य तथा वचनुमश्रयत्वात्। स्यादस्ति

प्रकार दो राकते हैं अतः इक्षयासी धर्म परिणत द्रव्यका वर्णन करता है। उसमें दो
लापसे गुणित पचास अर्थात् एक कोटि पद होते हैं। अथ अर्थात् द्वाद्वागंगेयु प्रधान
मूत वस्तुना 'अयत्न' अर्थात् ज्ञान अप्रापण है। यह जिसका प्रयोजन है वह दूसरा पूर्व
अप्रापण है। यह मात्र सो सुनयों, दुर्गयों, पाँच अस्तिकाय, छह द्रव्य, सात तत्त्व, नौ
पदार्थ आदिका वर्णन करता है। उसमें दो लापसे गुणित अड़वालीस अर्थात् छानये लाप
पद हैं। धीरे अर्थात् जीवादि वस्तुकी सामर्थ्यका 'अनुप्रवाद' अर्थात् वर्णन जिसमें होता है
यह धीर्यानुप्रवाद नामक सीमरा पूर्व है। यह अपने धीर्य, पराये धीर्य, उभय- क्षेत्रवीर्य,
कालवीर्य, भाववीर्य, तपोवीर्य आदि समस्त द्रव्य गुण पर्यायोंके धीर्य- करता है।
उसमें दो लापसे गुणित पैंतीस अर्थात् सत्तर लाप पद हैं। अस्ति धर्माका
'प्रवाद' अर्थात् प्ररूपण जिसमें है यह अस्ति-नास्ति नाम- जीवादि
वस्तु स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल और स्वभावकी- जोन, परकाल
और परभावकी अपेक्षा स्यात्नास्ति- क्रमसे

मदेतद्दोष्टे असत्यनिवृत्तिर्यु मेनु मोनम् यागुमियुमे बुदवकुं । उरःकंठ गिरीजिह्वामूलदंत-
नासिकातात्थ्योद्गारंगच्छस्वानंगं स्फुटतेयस्फुटता विवृततेयस्फुटता संवृतता स्फण्डप्य पंच-
प्रयत्नंगं यावत्संस्कार कारणंगं बुदवकुं । शिष्टदुष्टदपमप्य वाक्प्रयोगं तल्लक्षणगालं संस्फुटादि
व्याकरणंगं वाक्प्रयोगमे बुदवकुं । इतिरिचिर् माहत्पट्टदुष्टे अनिष्टकथनदपमभ्याख्यानम् ।
परस्परविरोधकारणकलहवचनं परंगे दोषमूचनपैगुन्यवचनम् । धर्मार्थकाममोक्षसाधयवचन-
रूपमयप्रलापम् इन्द्रियविषयंगञ्जे रसुत्पादिकेप्य वाक्परीतिवचनम् । अयरोक्षरसुत्पादिका
वाक्पारतिवचनं परिग्रहजनसंरक्षणासाक्षितहेतु वाक्पविषयवचनमे बुदवकुं । व्यवहारदोष-
वचनाहेतुवाक् निवृत्तिवाक्मे बुदवकुं । तपोज्ञानाधिकरोजमविनयहेतुवाक्प्रणतिवागे बुदु अवकुं ।
स्तेयहेतुवचनं मोषवागे बुदवकुं । सन्मार्गापदेशवाक् सम्यग्दर्शनवागे बुदवकुं । मिथ्यामार्गापदेशवाक्
मिथ्यादर्शनवागे बुदवकुमितु द्वादशभाषेयमे बुदवकुं ।

द्वौन्द्रियादिपञ्चेन्द्रियपर्यन्तमाद औषंगं व्यक्तवस्तुत्वपर्यायमनुक्तं वस्तुगच्छपुयु । द्रव्य-
क्षेत्रकालभावाश्रितमप्य बहुविधमसत्यवचनं मुषाभिधानमवकुं । जनपदसत्यादिब्रह्मप्रकारमप्य सत्यं
मुपेक्ष्य दृष्टं छलपुन्युक्तद्वयमौ सत्यप्रवादीकं द्विलक्षणितरं वान्त्यपदंगं द्रुततरकोटिपयु-

वक्तुमेतान् बहुविधं मृगभिधानं दसविधं एवं च प्रकल्पयि । तद्यथा-असत्यनिवृत्तिर्मात्रं वा वामुक्तिः ।
उरःकंठगिरीजिह्वामूलनासिकातात्थ्योद्गारंगानि अष्टौ स्थानानि । स्फुटतेयस्फुटताविवृततेयस्फुटतामकुत-
रुवाः पञ्च प्रयत्नारं वाक्संस्कारकारणानि । शिष्टदुष्टाः प्रयोगः वाक्प्रयोगः तल्लक्षणगालं संस्फुटादि-
व्याकरणं वा । इदमेतत् इतिमित्यनिष्टवचनरूपमभ्याख्यानं । परस्परविरोधकारणं कलहवचनं । परतोपमूचन
पैगुन्यवचनं । धर्मार्थकाममोक्षसाधयवचनरुपः अव्ययप्रलापः । इन्द्रियविषयेषु रसुत्पादिका वाक् रतिवाक् ।
तेषु अरतिसुत्पादिका वाक् अरतिवाक् । परिग्रहजनसंरक्षणासाक्षितहेतुर्वाक् रतिवाक् । व्यवहारदोषाहेतुर्वाक्
निवृत्तिवाक् । तपोज्ञानादिषु अविनयहेतुर्वाक् अग्रणतिवाक् । स्तेयहेतुर्वाक् मोषवाक् । सन्मार्गापदेशवाक्
सम्यग्दर्शनवाक् । मिथ्यामार्गापदेशवाक् मिथ्यादर्शनवाक् । एवं द्वादशभाषाः । द्वौन्द्रियादिपञ्चेन्द्रियपर्यन्ता जीवा
व्यक्ताव्यक्तवस्तुत्वपर्यायाः वनतः । इत्येतेष्वालभावाश्रितं बहुविधमसत्यवचनं मुषावाक् । जनपदसत्यादि-

दस प्रकारके सत्यका कथन करता है । इन सत्यका स्वरूप इस प्रकार है—असत्यसे निवृत्ति या
मोनको वचन गुप्ति कहते हैं । उर, कण्ठ, शिर, जिह्वा मूल, दाँव, नाक, तालु, ओठ ये आठ
स्थान हैं । स्फुटता, किंचित् स्फुटता, विष्टवता, किंचित् विष्टवता, संवृतता ये पाँच प्रयत्न हैं ।
ये सप्त स्थान और प्रयत्न वचन संस्कारके कारण हैं । शिष्टरूप और दुष्टरूप वचनप्रयोग होता
है । 'यह इसने किया है' ऐसा अनिष्ट वचन अभ्याख्यान है । परस्परमें विरोधका कारण वचन
कलह वचन है । दूसरेके दोषको सूचन करना पैगुन्य वचन है । धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-
से असम्यक् वचन असम्यक् प्रलाप है । जो वचन इन्द्रियोंके विषयोंमें रति उत्पन्न करे वह
रतिवाक् है । जो उनमें अरति उत्पन्न करे वह अरतिवाक् है । परिग्रहके अर्जन और संरक्षण-
में आसक्ति उत्पन्न करनेवाले वचन उपधिवाक् है । व्यवहारमें छल-कपट करनेमें हेतु वचन
निवृत्तिवाक् है । तपस्वी और ज्ञानी जनोके प्रति अविनयमें हेतु वचन अग्रणतिवाक् है ।
चोरी करनेमें हेतु वचन मोषवाक् है । सन्मार्गाका उपदेश करनेवाले वचन सम्यक्दर्शनवाक्
है । मिथ्या मार्गाका उपदेश करनेवाले वचन मिथ्यादर्शनवाक् है । इस प्रकार धारद प्रकार-
की भाषा है । द्वौन्द्रियसे लेकर पंचेन्द्रिय पर्यन्त जीव, जिनमें वस्तुत्व पर्याय व्यक्त और
अव्यक्त हैं वे सत्ता हैं । द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाषकी अपेक्षा अनेक प्रकारका असत्य वचन

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

अथवा समे रागदेवाभ्यामनुग्रहे मध्यस्थे आत्मनि आय उपयोगस्य प्रवृत्तिः समायः ॥
 प्रयोजनमस्येति सामायिकं नित्यनैमित्तिकानुष्ठानम् तत्प्रतिपादकं शास्त्रम् सामायिकमिदमुत्तरं ।
 नामस्थापनाद्व्यक्षेत्रकालमात्रभेदविदं सामायिकं पश्चिमपञ्चकुलानि इष्टानिष्टानामंगलौ, रागद्वेय-
 निवृत्तियं सामायिकाभियानम् मेणु नामसामायिकमङ्कम् । मनोज्ञानमोक्षरूपेणुत्पादका-
 काष्ठलेप्यचित्रादिप्रतिमेगङ्गौ रागद्वेयनिवृत्तियं यिदु सामायिकमेवितु स्याप्यमानासंज्ञावस्थापने-
 गुमप्यज्ञताविषुज मेणु स्यापनासामायिकमङ्कम् । इष्टानिष्टगङ्गप्य चेतनाचेतनद्वयमङ्गौ रागद्वेय-
 निवृत्तियं सामायिकशास्त्रानुपयुक्तज्ञायकतच्छरीरादि मेणु द्व्यसामायिकमङ्कम् । ग्रामनगरवनादि-
 क्षेत्रगङ्गानिष्टगङ्गौ रागद्वेयनिवृत्तिक्षेत्रसामायिकमङ्कम् । वसन्तादि ऋतुगङ्गौ शुक्लपक्ष-
 कृष्णपक्षगङ्गौ दिवसवारनक्षत्रादिगङ्गानिष्टकालविशेषगङ्गौ रागद्वेयनिवृत्तियं सामा-
 यिकशास्त्रोपयोगयुक्तज्ञायकम् तत्पर्यायपरिणतमप्य सामायिकं मेणु भावसामाधिकमङ्कम् ।
 तत्कालसंर्घाभिगङ्गप्य चतुर्विधप्रतितीत्यङ्कगङ्ग नामस्थापनाद्व्यक्षेत्रमात्रविषितं पञ्चमहावस्थाप-
 नमङ्कम् ।

अथवा स एमे
 नयनद्वौ शास्त्रा इष्टा चेति आत्मविषययोग इत्यर्थः, आत्मनः एवैव ज्ञेयज्ञायकत्वसंभवान् । अथवा स एमे
 रागदेवाभ्यामनुग्रहे मध्यस्थे आत्मनि आयः उपयोगस्य प्रवृत्तिः समायः स प्रयोजनमस्येति सामायिकं १५
 नित्यनैमित्तिकानुष्ठानं तत्प्रतिपादकं शास्त्रं वा सामायिकमित्यर्थः । तच्च नामस्थापनाद्व्यक्षेत्रकालमात्रभेदा-
 त्पश्चिमम् । ७७ इष्टानिष्टानामु रागद्वेयनिवृत्तिः सामायिकमित्यभिधानं वा नाम सामायिकम् । मनोज्ञानमोक्षानु-
 र्गोपयाकारानु काष्ठलेप्यचित्रादिप्रतिमासु रागद्वेयनिवृत्तिः । हर्ष सामायिकमिति स्याप्यमानं यन् किञ्च-
 इत्युक्तं वा स्थापनासामायिकम् । इष्टानिष्टेषु चेतनाचेतनद्वयेषु रागद्वेयनिवृत्तिः सामायिकशास्त्रानुगुणज्ञायकः २०
 तच्छरीरादिर्वा द्व्यसामायिकम् । ग्रामनगरवनादित्रयेषु इष्टानिष्टेषु रागद्वेयनिवृत्तिः क्षेत्रसामायिकम् ।
 ऋतुषु शुक्लकृष्णपक्षयोर्दिनवारनक्षत्रादिषु च इष्टानिष्टेषु कालविशेषेषु रागद्वेयनिवृत्तिः कालसामायिकम् ।
 भावस्य बीजानितत्त्वविषययोगकृतस्य पर्यायस्य निष्पादसंनक्षत्रादिप्रतिमेनिवृत्तिः सामायिकशास्त्रोपयोग-
 युक्तज्ञायकः तत्पर्यायपरिणतसामायिकं वा भावसामायिकम् । तत्तत्कालसम्बन्धिनो चतुर्विधप्रतितीत्यङ्कगङ्गा
 'आय' अर्थात् आगमनको समाय कहते हैं । अर्थात् परद्वयोसे निवृत्त होकर आत्मामें
 प्रवृत्तिका नाम समाय है, यह मैं ज्ञाता-वृष्टा हूँ इस प्रकारका आत्मविषयमें उपयोग समाय
 है, क्योंकि आत्मा ही ज्ञेय और यही ज्ञायक होता है । अथवा 'सं' यानी सम—राग-द्वेयसे
 अपाधित मध्यस्थ आत्मानमें 'आय' अर्थात् उपयोगकी प्रवृत्ति समाय है । वह प्रयोजन
 जिसका है वह सामायिक है । नित्य-नैमित्तिक अनुष्ठान और वनका प्रतिपादक शास्त्र
 सामायिक है यह इसका अर्थ है । वह सामायिक नाम, स्थापना, इत्य, तोत्र, काल और भाव-
 के भेदसे छह प्रकारकी है । इष्ट-अनिष्ट नामोंमें राग-द्वेयकी निवृत्ति अथवा सामायिक नाम
 नामसामायिक है । मनोज्ञ और अमनोज्ञ स्वरूप आदिके आकारोंमें काष्ठ, लेप्य और चित्र
 आदिमें अंकित प्रतिमाओंमें राग-द्वेय न करना, अथवा जिस-किसी चरित्रमें 'यह सामायिक
 है' इस प्रकार स्थापना करना स्थापनासामायिक है । इष्ट-अनिष्ट, चेतन-अचेतन द्वयों
 राग-द्वेयकी निवृत्ति अथवा सामायिक शास्त्रका ज्ञाता जो उसमें उपयोगवान् नहीं है, अथवा
 उसका शरीर आदि द्व्यसामायिक है । इष्ट-अनिष्ट, ग्राम-नगर आदि क्षेत्रोंमें राग-द्वेय
 करना क्षेत्रसामायिक है । वसन्त आदि ऋतु, शुक्ल-कृष्ण पक्ष, दिन, वार, नक्षत्रादि इ
 अनिष्टकाल विशेषोंमें राग-द्वेय न करना कालसामायिक है । भाव अर्थात् जीवादि व
 विषयक उपयोगरूप पर्यायकी निष्पादार्जन कथाय आदि संकल्पोंसे निवृत्ति, अथवा सा

शास्त्रं मुनिजनंगलाचरण गोचारविधिं पिंडशुद्धिलक्षणं वर्णिसुगुं । उत्तराग्न्यधीयते पठ्यन्तेऽस्मिन्निष्पत्तराध्ययनं । ई उत्तराध्ययनशास्त्रं चतुर्विधोपसर्गमगळ द्वाविजतिपरीपहंगळ सहनविधानं तत्फलमुमं पितु प्रश्नमादोडितुत्तरर्मेदितुत्तरविधानं वर्णिसुगुं । कल्प्यं योग्यं व्यवहियते अनुष्ठेयतेऽस्मिन्निति अनेनेति वा कल्प्यव्यवहारः । ई कल्प्यव्यवहारशास्त्रं साधुगळ योग्यानुष्ठानविधानं अयोग्यसेवेधोळ प्रायश्चित्तमुमं वर्णिसुगुं । कल्प्यं चाकल्प्यं च कल्प्याकल्प्यं तद्व्यपेक्षेऽस्मिन्निति कल्प्याकल्प्यं । ई कल्प्याकल्प्यशास्त्रं द्रव्यक्षेत्रकाल भावंगळनाथयिसि मुनिगण्डिडु कल्प्यमिदकल्प्यमेडु योग्यायोग्यविभागं वर्णिसुगुं ।

५

महतां कल्प्यमस्मिन्निति महाकल्प्यं । ई महाकल्प्यशास्त्रं जिनकल्पसाधुगळो उत्कृष्टसहननादिविशिष्टद्रव्यक्षेत्रकालभाववर्तितगळो योग्यमप्य त्रिकालयोगाद्यनुष्ठानं स्वविरकल्पगळ दीक्षाशिक्षागणपोषणात्मसंस्कार सल्लेखनोत्तमात्यस्थानगतोत्कृष्टप्रायश्चित्तविशेषमुमं वर्णिसुगुं । पुण्डरीकमेव शास्त्रं भावनव्यन्तरज्योतिष्ककल्पवासिबिमानंगळोत्पत्तिकारणदानपूजातपश्चरणाकामनिर्ज-

१०

दश वैकालिकानि वर्ण्यन्तेऽस्मिन्निति दशवैकालिकं तच्च मुनिजनानां आचरणगोचरविधिं पिंडशुद्धिलक्षणं च वर्णयति । उत्तराग्नि अधीयन्ते पठ्यन्ते अस्मिन्निति उत्तराध्ययनं तच्च चतुर्विधोपसर्गाणां द्वाविसतिपरीपहाणां च सहनविधानं तत्फलं एवं प्रप्ते एवमुत्तरमिषुत्तरविधानं च वर्णयति । कल्प्यं योग्यं व्यवहियते अनुष्ठेयतेऽस्मिन्ननेनेति वा कल्प्यव्यवहारः, त च साधूनां योग्यानुष्ठानविधानं अयोग्यसेवायां प्रायश्चित्तं च वर्णयति । कल्प्यं चाकल्प्यं च कल्प्याकल्प्यं, तद्व्यपेक्षे अस्मिन्निति कल्प्याकल्प्यम् । तच्च द्रव्यक्षेत्रकालभावानाश्रित्य मुनीनामिदं कल्प्यं योग्यं हृदयकल्प्यं अयोग्यमिति विभागं वर्णयति । महतां कल्प्यमस्मिन्निति महाकल्प्यं शास्त्रं तच्च जिनकल्पसाधूनां उत्कृष्टसहननादिविशिष्टद्रव्यक्षेत्रकालभाववर्तितानां योग्यं त्रिकालयोगाद्यनुष्ठानं स्वविरकल्पानां दीक्षाशिक्षागणपोषणात्मसंस्कारसल्लेखनोत्तमात्यस्थानगतोत्कृष्टप्रायश्चित्तविशेषं च वर्णयति । पुण्डरीकं नाम शास्त्रं भावनव्यन्तरज्योतिष्ककल्पवासिबिमानेषु उत्पत्तिकारणदानपूजातपश्चरणाकामनिर्जाराद्यव्यसंयममादिविधानं तत्तदुपपादस्थानवैभवविशेषं च वर्णयति । मह्यं तत्पुण्डरीकं तत्पहापुण्डरीकं शास्त्रं

१५

२०

चार सिर नमाना, चारह आवर्त आदि रूप नित्य नैमित्तिक क्रिया विधानका वर्णन होता है । विशिष्ट कालोंको विकाल कहते हैं, उनमें होनेको वैकालिक कहते हैं । जिसमें दस वैकालिकोंका वर्णन हो वह दशवैकालिक है । उसमें मुनियोंका आचार, गोचरीकी विधि और भोजन शुद्धिका लक्षण कहा गया है । जिसमें उत्तरीका अध्ययन हो वह उत्तराध्ययन है । उसमें चार प्रकारके उपसर्गों और चाईस परीपहोंके सहनेका विधान, उनका फल तथा इस प्रकारके प्रश्नका उत्तर इस प्रकार होता है इसका कथन होता है । जो कल्प्य अर्थात् योग्यके व्यवहारका कथन करता है वह कल्प्यव्यवहार है । उसमें साधुओंके योग्य अनुष्ठानके विधानका और अयोग्यका सेवन होनेके प्रायश्चित्तका कथन होता है । जिसमें कल्प्य और अकल्प्यका कथन हो वह कल्प्याकल्प्य है । वह द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके आश्रयसे यह मुनियोंके योग्य और यह अयोग्य है ऐसा कथन करता है । महान् पुरुषोंका कल्प्य जिसमें हो वह महाकल्प्य शास्त्र है । उसमें जिनकल्पी साधुओंके उत्कृष्ट, संन्यस आदि विशिष्ट द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावको लेकर त्रिकाल योग आदि अनुष्ठानका तथा स्वविर करपी साधुओंकी दीक्षा, शिक्षा, गणका पोषण, आत्मसंस्कार, सल्लेखना, उत्तम स्थानगत उत्कृष्ट आराधना विशेषका कथन होता है । पुण्डरीक नामक शास्त्र भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और कल्पवासी देवोंके विमानोंमें उत्पत्तिके कारण दान, पूजा, तपश्चरण, अकामनिर्जरा, सम्यक्त्व, संयम आदिका विधान तथा उस-उस उपपाद स्थानके वैभव विशेषको कहता है । महान्

२५

३०

३५

स्पर्शनं केवलज्ञानं प्रत्यक्षं । समस्तत्वविदं विशदं स्पष्टमखण्डं । मूर्तामूर्तसर्वव्यञ्जनपारम्यस्यैवमूलमदमांश-
गुरुत्वं सर्वपरोक्षं प्रवृत्तिं संभविमुगुणपुण्डरिदं । साक्षात्करणविदमुं अक्षमात्मानमेव प्रतिनियतं
परानपेक्षं प्रत्यक्षं । उपात्तानुपात्तपरप्रत्ययापेक्षं परोक्षमिति । एवंतु प्रत्यक्षपरोक्षद्वन्द्वनिर्दिष्ट-
सिद्धलक्षणमेवविदमा श्रुतज्ञानकेवलज्ञानं गन्धो सादृश्याभावमखण्डमुं समन्तभद्रस्याभिगच्छदमुं
पेक्षत्पट्टदुः । “स्याद्वाद केवलज्ञाने सर्वतत्त्वप्रकाशने । भेदः साक्षादसाक्षाच्च ह्यवस्तव्यतमं भवे”
वेदितु । [आप्तमी०]

अनन्तरं शास्त्रकारं पञ्चपट्टिगाथासूत्रगञ्जिदमवधिज्ञानप्ररूपणैयं पेक्षलुपन्नमितिदपं ।

अवहोपदिचि ओही सीमाणाणेचि वर्णिणयं समये ।

भवगुणपञ्चयविद्वियं जमोहिणाणेचि णं वेति ॥३७०॥

अवहोपयत इत्यर्थः सोमाज्ञानमिति वर्णितं समये । भवगुणप्रत्ययविहितं यदवधिज्ञान- १०
मितीदं वृणति ।

अवधीयते इत्यसौत्रकालभावंगञ्जं परिमोयते एवमित्यप्युक्तं भेदितवधि येनमुदकेनोदो
मतिश्रुतकेवलज्ञाने इत्यादिगञ्जिदमपरिमितविषयत्वाभावात्पुण्डरिदं सीमाविषयज्ञानमेव समये
परमागमदोषं भगितं पेक्षत्पट्टदुः । यत् आधुनोदुः सूतोपज्ञानं भवगुणप्रत्ययविहितं भवो मरकादि-
परम्याः गुणः साम्यादर्शनविशुद्धपादिः । भद्रश्च गुणश्च भवगुणो तावेव प्रत्ययौ साम्यां कारणाभ्यां १५

स्वविनयेषु अवधिज्ञानादिव साक्षात्करणाभावाच्च । मरकावरणवीर्यान्तरावनिरवक्षेपशयोत्पन्नं केवलज्ञानं
प्रत्यक्षं समस्तत्वेन विदं स्पष्टं भवति । मूर्तामूर्तसर्वव्यञ्जनपारम्यस्यैवमूलमदमांश-
गुरुत्वं सर्वपरोक्षं प्रवृत्तिं संभविमुगुणपुण्डरिदं । साक्षात्करणविदमुं अक्षमात्मानमेव प्रतिनियतं
परानपेक्षं प्रत्यक्षं । उपात्तानुपात्तपरप्रत्ययापेक्षं परोक्षमिति निर्दिष्टलक्षणमेवविदमा श्रुतज्ञानकेवलज्ञानयोः सादृश्याभावात् । तथा धोवत् समन्तभद्रस्याभिग-
च्छदमुं पेक्षत्पट्टदुः ।

स्याद्वादकेवलज्ञाने सर्वतत्त्वप्रकाशने । भेदः साक्षादसाक्षाच्च ह्यवस्तव्यतमं भवे ॥— [आप्तमी०] २०

॥३६९॥ अथ शास्त्रकारः पञ्चपट्टिगाथासूत्रैः अवधिज्ञानप्ररूपणापुराणमे—

अवधीयते—इत्यसौत्रकालभावं परिमोयते इत्यर्थमिति श्रुतकेवलज्ञानादिव साक्षात्करणविदमुं अक्षमात्मानमेव प्रतिनियतं
परानपेक्षं प्रत्यक्षं । उपात्तानुपात्तपरप्रत्ययापेक्षं परोक्षमिति निर्दिष्टलक्षणमेवविदमा श्रुतज्ञानकेवलज्ञानयोः सादृश्याभावात् । तथा धोवत् समन्तभद्रस्याभिग-
च्छदमुं पेक्षत्पट्टदुः ।

स्थूल अंशको अवधिज्ञानकी तरह साक्षात्कार करनेमें असमर्थ है । किन्तु समस्त ज्ञानावरण
और वीर्यान्तरावके शयसे उत्पन्न केवलज्ञान पूर्ण रूपसे स्पष्ट होता है । मूर्त अमूर्त, अर्थ- २५
पर्याय, व्यञ्जनपर्याय, स्थूल अंश, सूक्ष्म अंश सभीमें वसकी प्रवृत्ति है और सभीको साक्षात्
ज्ञानता है । अथ अर्थात् आत्मासे ही जो ज्ञान होता है, परकी अपेक्षा नहीं करता उसे
प्रत्यक्ष कहते हैं । उपात्त इन्द्रियादि और अनुपात्त प्रकाशादि परकारणोंकी अपेक्षासे होनेवाला
ज्ञान परोक्ष है । इस प्रकार निरुच्छिसे सिद्ध लक्षणोंके भेदसे श्रुतज्ञान और केवलज्ञानमें समा-
नता नहीं है । स्वामी समन्तमद्रने भी अपने आप्तमीमांसामें कहा है— ३०

स्याद्वाद अर्थात् श्रुतज्ञान और केवलज्ञान दोनों ही सर्व तत्त्वोंके प्रकाशक हैं किन्तु
भेद यही है कि केवलज्ञान साक्षात् प्रत्यक्ष ज्ञानता है और श्रुतज्ञान परोक्ष ज्ञानता है । जो
इन दोनों ज्ञानोंमेंसे एकका भी विषय नहीं है वह अवस्तु है ॥३६९॥

अथ शास्त्रकार पञ्चपट्टिगाथासूत्रोंसे अवधिज्ञानका कथन करते हैं—

‘अवधीयते’ अर्थात् द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावके द्वारा जिसका परिमाण किया जाता है ३५
वह अवधि है । अर्थात् जैसे मति, श्रुत और केवलज्ञानका विषय द्रव्यादिकी अपेक्षा

गुणपञ्चङ्गो छद्वा अणुगावट्ठदपवद्धमाणिदरा ।

देसोही परमोही सञ्जोहिचि य तिधा ओही ॥३७२॥

गुणप्रत्ययकः षोढा अनुगावस्थितप्रवर्द्धमानेतरे । देशावधिः परमावधिः सर्वावधिरिति च त्रिधावधिः ॥

आयुदोडु गुणप्रत्ययावधितानमडु अनुगमनुगामियेडुमवस्थितमेडु प्रवर्द्धमानमेडु मूढ-
तेरनप्पुवु । इतरंगळ अननुगमननुगामियेडुमवस्थितमेडु हीयमानमुमेदितिवु मूढतेरनप्पुवुतु
कंडि अनुगामि अननुगामि अवस्थितमनवस्थित वद्धमानहीयमानमेदितु पद्धविधमवकुमल्लि आयु-
दोदवधितानं तन्न स्वामियप्प जीवनं वळिसलगुमवननुगामियेडुवदक्कुमडुवु क्षेत्रानुगामियेडु भवानु-
गामियेडु उभयानुगामियेडितु त्रिविधमवकुमल्लि आयुदोडु तां पुट्टिव क्षेत्रादिदमन्यक्षेत्रदोडु
बिहारिवुव जीवनं वळिसल्लु । भवांतरदोळ वळिसल्लदु क्षेत्रानुगामियेडुवदक्कुमायुदोडु तां पुट्टिव
भवादिदमन्यभवदोळ स्वस्वामियं वळिसल्लुमडु भवानुगामियेडुवदक्कुमायुदोडु तां पुट्टिव क्षेत्र-
भयंगळेरदरत्तागिदमन्य भरतैरावस्थितिवेहाविक्षेत्रदोळ देवमनुष्यादिभयंगळोळं वर्तमानजीयमुं वळि-
सलगुमडुभयानुगामियेडुवदक्कुमायुदोडु तन्न स्वामियप्प जीवनं वळिसल्लुदल्लददननुगामियेडुवदक्कु-
मडुवु क्षेत्राननुगामियेडु भवाननुगामियेडुमुभयाननुगामियेडु त्रिविधमवकुं । मल्लि आयुदोडु
क्षेत्रांतरमं वळिसल्लुदल्लदु तां पुट्टिव क्षेत्रदोळे किडुगुं । भवांतरं वळिसल्ले मेष्माण्णे अनु क्षेत्रा- १५

यद्गुणप्रत्ययावधितानं तदनुगाम्यननुगाम्यवस्थितमनवस्थितं प्रवर्धमानं हीयमानं चेति पद्धविधम् ।
तत्र यदवधितानं स्वस्वामिनं जीवमनुगच्छति तदनुगामि । तच्च क्षेत्रानुगामि भवानुगामि उभयानुगामीति
त्रिविधम् । यत् स्वोत्पत्तिक्षेत्रात् अन्यक्षेत्रे विहरन्तं जीवमनुगच्छति भवान्तरं नानुगच्छति तत्क्षेत्रानुगामि
भवति । यत् उत्पत्तिभवादन्यत्र स्वस्वामिनं अनुगच्छति तद्विधानुगामि भवति । यत्स्वोत्पत्तिक्षेत्रमवाप्त्यं
अन्यत्र भरतैरावस्थितिवेहाविक्षेत्रे देवमनुष्यादिभवे च वर्तमानं जीवमनुगच्छति तदुभयानुगामि भवति । २०
यदवधितानं स्वस्वामिनं जीवं नानुगच्छति तदननुगामि । तदपि क्षेत्राननुगामि भवाननुगामि उभयाननुगामीति
त्रिविधम् । तत्र यत्क्षेत्रान्तरं न गच्छति स्वोत्पत्तिक्षेत्रे एव विनश्यति भवान्तरं गच्छतु वा मा गच्छतु तत्
क्षेत्राननुगामि । यद्भवान्तरं नानुगच्छति स्वोत्पत्तिभवे एव विनश्यति, क्षेत्रान्तरं गच्छतु वा मा वा गच्छतु

नही होती, केवल सन्यदर्शनादि गुणोंके कारण ही अवधिज्ञान प्रकट होता है इसलिये यह
गुणप्रत्यय कहा जाता है ॥३७१॥

गुणप्रत्यय अवधिज्ञान, अनुगामी, अननुगामी, अवस्थित, अनवस्थित, वर्धमान, हीय-
मानके भेदसे छह प्रकारका है । उनमें-से जो अवधिज्ञान अपने स्वामी जीवका अनुगमन
करता है वह अनुगामी है । वह तीन प्रकारका है-क्षेत्रानुगामी, भवानुगामी और उभयानु-
गामी । जो अवधिज्ञान अपने उत्पत्तिक्षेत्रसे अन्य क्षेत्रमें जानेवाले जीवके साथ जाता है, किन्तु
भवान्तरमें साथ नहीं जाता वह क्षेत्रानुगामी है । जो उत्पत्तिक्षेत्रसे स्वामीका भरण होनेपर ३०
दूसरे भवमें भी साथ जाता है वह भवानुगामी है । जो अपने उत्पत्तिक्षेत्र और भवसे अन्यत्र
भरत, ऐरावत, विदेह आदि क्षेत्रमें और देव, मनुष्य आदिके भवमें जीवका अनुगमन
करता है वह उभयानुगामी है । जो अवधिज्ञान अपने स्वामी जीवका अनुगमन नहीं करता
वह अननुगामी है । वह भी क्षेत्राननुगामी, भवाननुगामी, उभयाननुगामीके भेदसे तीन
प्रकारका है । जो अवधि अन्य क्षेत्रमें नहीं जाता अपने उत्पत्तिक्षेत्रमें ही नष्ट हो जाता है, ३५

गुणे दर्शनविमुक्त्यादिलक्षणगुणमुंटागुतिरलेषकुं । मितु गुणप्रत्ययं मूलमवधिगणं संभविसुबधुं ।
भ्रमप्रत्ययं देशावधिरे येदितु निश्चितमाप्नु ।

देसोद्दिस्स य अवरं णरतिरिये होदि संजदम्मि वरं ।

परमोद्दी सज्जोद्दी चरमसरीरस्स विरदस्स ॥३७४॥

देशावधिरवरं नरतिर्प्यंशु भवति संयते वरं । परमावधिः सर्वावधिश्चरमशरीरस्य विर-

तस्य ॥

देशावधिज्ञानव जघन्यं नररोजं तिर्य्यचरोजं संयतरोजमसंयतरोजमवकुं । देवनारकरोजं पुदु
एकंदोडे देशावधिय सव्वोत्कृष्टं नियमदिदं मनुष्यगतिय सकलसंयतरोज्येयकुं- । मितरगतित्रयदो-
हिल्ले के दोडे महाव्रताभायमप्युदरिदं । परमावधिसर्वावधिगणं जघन्यदिदमुत्कृष्टदिदमु मनुष्य-
गतियोजे चरमांगरण महाव्रतिगण्ये संभविसुबधु । चरमं संसारंतर्वातितदभवमोक्षकारणरत्नप्र- १०
पाराधकजोबसंदंधिगरीरं वञ्चय्यभनाराचसंहननयुक्तं यस्यासौ चरमशरीरः ।

पडिवादी देसोद्दी अप्पडिवादी हवन्ति सेसा ओ ।

मिच्छत्तं अविरमणं ण य पडिबज्जन्ति चरिमदुगे ॥३७५॥

प्रतिपाती देशावधिरप्रतिपातिनौ भवतः शेषौ बहो । मिथ्यात्वमविरमणं न च प्रतिपद्यन्ते
चरमद्विके ॥

सम्यक्त्वमुं चारित्रमुमें को येरदरिदं यल्लिचे मिथ्यात्वासंयमंगत्तप्राप्ति प्रतिपातमवकुमद-
मुच्छुदं प्रतिपातियवकुमितप प्रतिपाति देशावधियेयकुं । शेष परमावधि सर्वावधिगणं पुदुम-

संयमलक्षणगुणानावे तयोरभावात् । देशावधिरपि गुणे दर्शनविमुक्त्यादिलक्षणे सति भवति । एवं गुणप्रत्ययात्म-
नोऽयवधयः संभवन्ति । भ्रमप्रत्ययस्तु देशावधिरेवेति निश्चितं वातम् ॥३७६॥

देशावधेरानस्य जघन्यं नरतिरस्चोरेव संयतासंयतयोः भवति, न देवनारकयोः । देशावधेः सर्वोत्कृष्टं २०
तु नियमेन मनुष्यगतिसकलसंयते एव भवति नेतरगतित्रये तत्र महाव्रताभावात् । परमावधिसर्वावधि द्वावपि
जघन्येनोत्कृष्टेन च मनुष्यगतावेव चरमाङ्गस्य महाव्रतिन एव संभवतः । चरमं संसारंतर्वातितदभवमोक्ष-
कारणरत्नपाराधकजीवसंबन्धि शरीरं वञ्चय्यभनाराचसंहननयुक्तं यस्यासौ चरमशरीरः ॥३७७॥

सम्यक्त्वचारित्रान्यां प्रच्युत्य मिथ्यात्वासंयमयोः प्राप्तिः प्रतिपातः, तद्युतः प्रतिपाती स तु देशावधिरेव

नियमसे गुणप्रत्यय ही होते हैं । क्योंकि संयमगुणके अभावमें वे दोनों नहीं होते । २५
देशावधि भी दर्शनविमुक्ति आदि गुणोंके होनेपर होता है । इस प्रकार गुणप्रत्यय दो चीनों
भी अवधि होते हैं । किन्तु भ्रमप्रत्यय देशावधि ही है यह निश्चित हुआ ॥३७६॥

देशावधिज्ञानका जघन्य भेद संयमी या असंयमी मनुष्यों और तिर्य्यचोंके ही होता है,
देवों और नारकियोंके नहीं होता । किन्तु देशावधिका सर्वोत्कृष्ट भेद नियमसे सकलसंयमी
मनुष्यके ही होता है, शेष तीन गतियोंमें नहीं होता, क्योंकि वहाँ महाव्रत नहीं होते । ३०
परमावधि सर्वावधि जघन्य भी और उत्कृष्ट भी मनुष्यगतिये ही चरमशरीरी महाव्रतीके
ही होते हैं । चरम अर्थात् संसारके अन्तमें होनेवाले उसी भवसे मोक्षके कारण रत्नत्रयकी
आराधना करनेवाले जीवके होनेवाला वञ्चय्यभनाराच संहननसे युक्त शरीर जिसका है
उसीके होते हैं । वही चरमशरीरी है ॥३७७॥

सम्यक्त्व और चारित्रसे च्युत होकर मिथ्यात्व और असंयममें आनेको प्रतिपात
कहते हैं । और जिसका प्रतिपात होता है वह प्रतिपाती है । देशावधि ही प्रतिपाती है । ३५

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

देशावधिजघन्यमानं इत्यतः इष्यदितं मध्यमयोगाजितमण्य नोरुम्मीशारिकसंचयमं द्रष्टुं-
 पुनर्हानिप्रमितसमयप्रयत्नसमूहद्वयमं स्वयोग्यविश्रसोपचयपरमाणुसंयुक्तमं लोकादितं भागितत्त्वद्रष्टुं
 नियमदितं तावन्मात्रमने जानाति प्रायश्चित्तापरिगुमररितं किरिदनरियवेमुदत्तं । जघन्ययोगाजित-
 मण्य नोरुम्मीशारिकसंचयपरत्पत्तवमनरिवदत्तं सूक्ष्मत्वसंभवदितं । तदुपहृन्बोळु तदुपहृन्बोळु
 दत्तिप्रभायमनुर्धारितं । उत्तुष्ट्रयोगाजितनोरुम्मीशारिकसंचयपरत्तुल्लयमण्यं तदुपहृन्बोळु ५
 प्रतिपेपरहितःवदिदमदितं नियमदितं मध्यमयोगाजितमण्य नोरुम्मीशारिकसंचयद्रव्यनियमं

देष्टव्यद्रष्टुं स ० १२-१५ त

गुह्यमणिगोदप्रपञ्चचयस्य जादस्म तदियममयमि ।
 अवरोगाहणमाणं जहण्यं ओहिरासं तु ॥३७८॥

सूक्ष्मनिगोदाप्यमिरस्य जातस्य तृतीयसमये । अवरोगाहणमाणं जघन्यमयमिसें तु ॥ १०
 सूक्ष्मनिगोदलक्ष्यपयामिरस्य पुष्टिद तृतीयसमयबोझातुर्बोझु दृष्टोक्तजघन्यावगाहनमानसु
 तु मते जघन्यदेशावधितानवियममण्य क्षेप्रप्रमाणमण्यं ६१८१२२
 ५१९१८९१८१२११९
 ० ० ०

देशावधिजघन्यमानं इत्यतः मध्यमयोगाजितं नोरुम्मीशारिकसंचयं द्रष्टुं पुनर्हानिप्रमितसमयप्रयत्नसमूह-
 रणं स्वयोग्यविश्रसोपचयपरमाणुसंयुक्तं लोकादितं भागितत्त्वद्रष्टुं नियमदितं तावन्मात्रमने जानाति प्रायश्चित्तापरिगुमररितं
 किरिदनरियवेमुदत्तं । जघन्ययोगाजितमण्य नोरुम्मीशारिकसंचयपरत्पत्तवमनरिवदत्तं सूक्ष्मत्वसंभवदितं । तदुपहृन्बोळु
 तदुपहृन्बोळु दत्तिप्रभायमनुर्धारितं । उत्तुष्ट्रयोगाजितनोरुम्मीशारिकसंचयपरत्तुल्लयमण्यं तदुपहृन्बोळु १५
 प्रतिपेपरहितःवदिदमदितं नियमदितं मध्यमयोगाजितमण्य नोरुम्मीशारिकसंचयद्रव्यनियमं

तेन नियममध्यमयोगाजितनोरुम्मीशारिकसंचयो इत्यनियमः कथितः । स ० १२-१५ त ॥३७९॥

सूक्ष्मनिगोदलक्ष्यपयामिरस्य उत्पत्तिनृतीयसमये मन्मूर्धन्यजघन्यावगाहन दत्तुं पुनः जघन्यदेशावधि-

मध्यम योगके द्वारा ज्ञाजित नोर्कर्म औदारिक शरीरके संचयको, जो हेतु गुण हानि
 प्रमाण समयवर्द्धोका समूहरूप है और अपने योग्य विश्रसोपचयके परमाणुओंसे संयुक्त है २०
 क्रममें टोकराशिसे भाग देनेपर जो एक भाग मात्र द्रव्य होता है उसे जघन्य देशावधि ज्ञान
 जानता है । वमसे कमको नहीं जानता । जघन्य योगके द्वारा ज्ञाजित नोर्कर्म औदारिक
 शरीरका संचय वमसे अल्प होनेसे सूक्ष्म होता है । उसको जाननेकी शक्ति इस ज्ञानकी नहीं
 है । और उत्कृष्ट योगसे उपार्जित नोर्कर्म औदारिकका संचय स्थूल होता है उसको जाननेका
 नियेष नहीं है । तथा विश्रमोपचय रहित सूक्ष्म होता है इसलिए उसको जाननेकी शक्ति २५
 नहीं है । इस प्रकार मक्त संचयके घनलोके प्रदेश प्रमाण खण्ड करके नममें-नो एकलण्डरूप
 धर्तांशिय पुद्गाठ स्कन्धको सबसे जघन्य देशावधितान प्रत्यक्ष जानता है, इस प्रकार
 द्रव्यका नियम कहा है ॥३७९॥
 सूक्ष्म निगोद लक्ष्यपयामिरके उत्पत्तिके तीसरे समयमें जो जघन्य अवगाहनाका
 प्रमाण पहले कहा है वह जघन्य देशावधि ज्ञानके विषयभूत क्षेत्रज्ञ प्रमाण होता है । इतने

भुजकोटिवेदिगच्छ सूर्यगुलासंख्यातैकभागमात्रंगळरिपल्पडुवु २ २ ।
२२ २२
२
२२

आवलि असंख्यभागं तीद भविस्सं च कालदो अवरं ।

ओही जाणदि भावे काल असंखेज्जमार्गं तु ॥३८३॥

आवत्यसंख्यभागं अतीतं भविष्यं तं च कालतोवरावधिज्ज्ञानाति भावे कालासंख्येय भागं तु ।

कालादिदं जघन्यावधिज्ञानं अतीतं भविष्यत्कालमनावत्यसंख्यातभागमात्रमनरिगुं ८

स्वविषयैकद्रव्यगतव्यञ्जनपर्यायंगळनावत्यसंख्यातैकभागमात्रपूर्वोत्तरंगळ नरिगुमे बुद्धत्यं । एक-
दोडे व्यवहारकालक द्रव्यस्य पर्यायस्वरूपमल्लदन्त्यत् स्वरूपांतराभावमप्युदरिर्व । भावे भावदोडु
तु भवे कालासंख्येयभागं तज्जघन्यावधिषियकालावत्यसंख्यातैकभागद असंख्येयभागमात्रमन-
रिगुं । इनु जघन्यदेशावधिज्ञानविषयद्रव्यभेदकालमात्रं गळ्णे सीमाविभागमं पेळु तद्देशावधिज्ञान- १०
विकल्पगळं चतुस्त्रयविषयभेददिदं पेळ्ळवं ।

भागमात्रमेव भवति । तन्भुजकोटिवेदाः सूर्यगुलासंख्यातैकभागमात्रा ज्ञातव्याः २ २ ॥३८२॥

२२ २२
२
२२

कालेन जघन्यावधिज्ञानं अतीतभविष्यत्कालमावत्यसंख्यातभागमात्रं जानाति ८ । स्वविषयैकद्रव्यगत-

व्यञ्जनपर्यायान् पूर्वोत्तरान् तावतो जानातीत्यर्थः । व्यवहारकालस्य द्रव्यस्य पर्यायस्वरूपं विनाश्रयस्वरूपान्त-
राभावात् । भावे तज्जघन्यद्रव्यगतवर्तमानपर्याये तु पुनः कालासंख्येयभागं तज्जघन्यावधिषियकालस्यावत्य-
संख्यातैकभागस्य असंख्यातैकभागमात्रं जानाति ८ । एवं अवन्यदेशावधिज्ञानविषयद्रव्यभेदकालमात्रां सी- १५
माविभागं प्रख्यादानीं द्वितीयादीन् देशावधिज्ञानविकल्पान् चतुर्विषयभेदानाह—

होता है । तथापि घनागुलके असंख्यातवें भाग मात्र ही होता है । उसके मुजा, कोटि और
वेष सूर्यगुलके असंख्यातवें भागमात्र हैं ॥३८२॥

कालकी अपेक्षा जघन्य अवधिज्ञान आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अतीत और
अनागतकालकी जानता है । अर्थात् अपने विषयभूत एक द्रव्यकी अतीत और अनागत २०
व्यञ्जनपर्यायोंको आवलीके असंख्यातवें भागमात्र जानता है क्योंकि व्यवहारकालके और
द्रव्यके पर्याय स्वरूपके विना अन्य स्वरूप सम्भव नहीं है । भावकी अपेक्षा उस जघन्य
द्रव्यगत वर्तमान पर्यायोंको कालके असंख्यातवें भाग जानता है अर्थात् जघन्य अवधिका
विषय जो आवलीके असंख्यातवें भागमात्र काल है उसके असंख्यातवें भागमात्र अर्थपर्यायों-
को जानता है ॥३८३॥

इस प्रकार जघन्य देशावधिज्ञानके विषय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी सीमाका
विभाग कहकर अब देशावधिज्ञानके द्वितीय आदि विकल्पोंके विषयभूय द्रव्यादिको
कहते हैं— २५

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

भुजकोटिवेदिगङ्गा सूच्यंगुलासंख्यातैकभागमात्रगणरिपत्यडुबुबु

२ २ ।
०० ००
२
००

आवलि असंख्यभागं तीद भविस्सं च कालदो अवरं ।

ओही जाणदि भावे काल असंख्यभागं तु ॥३८३॥

भावत्यसंख्यभागं अतीतं भविष्यं तं च कालतोवराधविज्जानाति भावे कालासंख्येय भागं तु ।

कालविदं जघन्यावधिज्ञानं अतीतं भविष्यकालमनावत्यसंख्यातभागमात्रमनरिगुं स्वविषयैकद्रव्यगतवर्जनपर्यायगणनावत्यसंख्यातैकभागमात्रपूर्योत्तरंगळ नरिगुनेषुदत्यं । एकं-
बोडे व्यवहारकालक द्रव्यद पर्यायस्वरूपमल्लदत्यत् स्वरूपांतराभावमप्युवरिदं । भावे भावदोळ
तु मत्ते कालासंख्येयभागं तज्जघन्यावधिषियकालावत्यसंख्यातैकभागव असंख्येयभागमात्रमन-
रिगुं । इंदु जघन्यवेशावधिज्ञानविषयद्रव्यक्षेत्रकालभावं गळगे सीमाविभागमं पेळु तद्देशावधिज्ञान-
विकल्पगळं चतुर्विधविषयभेदविदं पैळ्वयं ।

भागमात्रमेव भवति । तदुभुजकोटिवेद्याः सूच्यंगुलासंख्यातैकभागमात्रा ज्ञातव्याः २ २ ॥३८२॥
०० ००
२
००

कालेन जघन्यावधिज्ञानं अतीतमविष्यकालमावत्यसंख्यातभागमात्रं जानाति । स्वविषयैकद्रव्यगत-
व्यजनपर्यायान् पूर्वोत्तरान् तावतो जानातीत्यर्थः । व्यवहारकालस्य द्रव्यस्य पर्यायस्वरूपं विनाश्रयस्वरूपान्त-
राभावान् । भावे तज्जघन्यद्रव्यगतवर्तमानपर्याये तु पुनः कालासंख्येयभागं तज्जघन्यावधिषियकालस्यावत्य-
संख्यातैकभागस्य असंख्यातैकभागमात्रं जानाति । एवं जघन्यवेद्यावधिज्ञानविषयद्रव्यक्षेत्रकालभावानां तौ- १५

मानिभागं प्रख्यादानीं द्वितीयादीन् देशावधिज्ञानविकल्पान् चतुर्विधविषयभेदानाह—

होता है । तथापि घनांगुलके असंख्यातवें भाग मात्र ही होता है । उसके मुजा, कोटि और
वैध सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र हैं ॥३८३॥

कालकी अपेक्षा जघन्य अवधिज्ञान आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अतीत और
अनागतकालको जानता है । अर्थात् अपने विषयमूल एक द्रव्यकी अतीत और अनागत
व्यंजनपर्यायोंको आवलीके असंख्यातवें भागमात्र जानता है क्योंकि व्यवहारकालके और
द्रव्यके पर्याय स्वरूपके विना अन्य स्वरूप सम्भव नहीं है । भावकी अपेक्षा उस जघन्य
द्रव्यगत वर्तमान पर्यायोंको कालके असंख्यातवें भाग जानता है अर्थात् जघन्य अवधि
विषय जो आवलीके असंख्यातवें भागमात्र काल है उसके असंख्यातवें भागमात्र अर्थपर्यायों-
को जानता है ॥३८३॥

इस प्रकार जघन्य देशावधिज्ञानके विषय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी सीमाका
विभाग कहकर अब देशावधिज्ञानके द्वितीय आदि विकल्पोंके विषयभूय द्रव्यादिकी
कहते हैं—

भुजगोद्विरेदिगन्तुं सूच्यंगुलात्तत्पातैरुभागमात्रं गच्छति त्वद्विषु २ २ ।
 ४४ ४४
 २
 ४४

आवलि असंख्यमात्रं तीद मविस्सं च कालदो अवर् ।

ओही जाणदि मावे काल असंख्यमात्रं तु ॥३८३॥

आवत्पसंख्यमात्रं अतीतं मविस्सं तं च कालतोयरावधिर्जातिनाति भावे कालासंख्येय
 भागं तु ।

कालोद्भवं जघन्यावधिज्ञानं अतीतं भविष्यत्कालमात्रवत्पसंख्यातभागमात्रमनरिणं ८

इवविषयैरुद्भूतगतसंज्ञनरूप्यावंगुलनावन्यसंख्यातैरुभागमात्रसूच्योत्तरंगुलं नरिणमेवमुच्यते । एके-
 शोऽप्येवमहाकालोऽप्यस्य पञ्चावत्पसंख्यमत्संख्यन्तु इवदृष्टांतराभावमप्युच्यते । भावे भावदोऽनु-
 तु मते कालासंख्येयभागं सज्जघन्यावधिषिययकालावत्पसंख्यातैरुभागद असंख्येयभागमात्रमन-
 रिणं । इदं जघन्यदेगावधिज्ञानविषयवत्पसंख्यातैरुभागद असंख्येयभागमात्रं पेच्छु तद्देगावधिज्ञान-
 विषयवत्पसंख्यातैरुभागद असंख्येयभागमात्रं पेच्छु तद्देगावधिज्ञान- १०

भागमात्रमेव भवति । तदनुभविरेदिगन्तुं सूच्यंगुलात्तत्पातैरुभागमात्रं गच्छति २ २ ॥३८३॥

४४ ४४

२

४४

कालेन जघन्यावधिज्ञानं अतीतमविष्यत्कालमात्रवत्पसंख्यातभागमात्रं जानाति ८ । इवविषयैरुद्भूतगत-

४

संज्ञनरूप्यावंगुलनावन्यसंख्यातैरुभागमात्रसूच्योत्तरंगुलं नरिणमेवमुच्यते । एके-
 शोऽप्येवमहाकालोऽप्यस्य पञ्चावत्पसंख्यमत्संख्यन्तु इवदृष्टांतराभावमप्युच्यते । भावे भावदोऽनु-
 तु मते कालासंख्येयभागं सज्जघन्यावधिषिययकालावत्पसंख्यातैरुभागद असंख्येयभागमात्रमन-
 रिणं । इदं जघन्यदेगावधिज्ञानविषयवत्पसंख्यातैरुभागद असंख्येयभागमात्रं पेच्छु तद्देगावधिज्ञान- १५

४४

प्राप्तिमात्रं प्रत्यक्षेण द्वितीयादीन् देगावधिज्ञानविकल्पात् अनुविधिविषयभेदानाह—

होवा है । तद्विषय पनागुलके असंख्यातवै भाग मात्र ही होवा है । उसके मुजा, कोटि और
 येप सूच्यंगुलके असंख्यातवै भागमात्र है ॥३८४॥

कालकी अपेक्षा जघन्य अवधिज्ञान आवलीके असंख्यातवै भागमात्र अतीत और
 अनागतकालकी जानता है । अर्थात् अपने विषयभूत एक द्रव्यकी अतीत और अनागत
 पञ्चजनपर्यायीको आवलीके असंख्यातवै भागमात्र जानता है क्योंकि स्वपहारकालके और
 द्रव्यके पर्याय स्वरूपके बिना अन्य स्वरूप सम्भव नहीं है । भावकी अपेक्षा उस जघन्य
 द्रव्यगत वर्तमान पर्यायीको कालके असंख्यातवै भाग जानता है अर्थात् जघन्य अवधिका
 विषय जो आवलीके असंख्यातवै भागमात्र काल है उसके असंख्यातवै भागमात्र अर्थपर्यायी-
 को जानता है ॥३८५॥ २५

इस प्रकार जघन्य देगावधिज्ञानके विषय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी सीमाका
 विभाग कहकर अब देगावधिज्ञानके द्वितीय आदि विकल्पोंके विषयभूत द्रव्यादिको
 कहते हैं—

विशेषविदं ध्रुवहारप्रमाणं पेञ्चदश :-

मणद्वयवर्गणाण विप्याणंतिमसमं शु धुवहारो ।

अवरुक्कस्सविसेसा रुवहिया तन्विथप्पा हु ॥३८६॥

मनोद्वयवर्गणानां विकल्पाणामनंतैकभागसमः स्फुटं ध्रुवहारः । अवरोत्कृष्टविशेषाः
रूपाधिकास्तद्विकल्पाः खलु ॥

ध्रुवहारप्रमाणमरित्यनुष्ठुमदेते दोहे मनोद्वयवर्गणैक विकल्पं गच्छितोऽवधि ज १
ख

तदनंतैकभागदोहने ज १ समानमक्कुं । खलु स्फुटमापि । अंतदोहा मनोद्वयवर्गणाविकल्प-
ख ख

गच्छतानेतिपुबेदोहे पेञ्चस्पदुं । अवरोत्कृष्टविशेषाः रूपाधिकास्तद्विकल्पाः खलु जघन्यमनो-
द्वयवर्गणैपनुत्कृष्टमनोद्वयवर्गणैपौक्कच्छेदुळिब दोषदोहेकरुपं कूडुत्तिरला मनोद्वयवर्गणा-

विकल्पगच्छपुवु । आदो । ज । अन्ते ज ख सुद्धे ज १ वडिडहिबे ज १ रुवसंजुदे ठाणा १०
ख ख ख

ज ई स्थानविकल्पं गच्छतैकभागदोहने ज समानं ध्रुवहारप्रमाणमक्कुमे बुदत्यंमंतदोहा
ख ख ख

जघन्योत्कृष्टमनोद्वयवर्गणैक प्रमाणमेनिते दोहे पेञ्चदश :-

अवरं होदि अणंतं अणंतभागेण अहिपमुक्कस्सं ।

इदि मणमेदाणंतिमभागो दव्वम्मि धुवहारो ॥३८७॥

अवरो भवत्यनंतोऽनंतभागेनाधिक उरकृष्ट, इति मनोभेदानामनंतैकभागो द्वये ध्रुवहारः ॥ १५

शास्त्रव्यम् ॥३८५॥ विशेषेण ध्रुवहारप्रमाणमाह—

मनोद्वयवर्गणाया यावन्तो विकल्पास्तेषामनन्तैकभागेन समं संख्यया खानं खलु ध्रुवहारप्रमाणं

स्यात् । ते च विकल्पाः कति ? मनोवर्गणात्रयं ज तदुत्कृष्टे ज ख विशेष्ये दोषे च रूपाधिरूते एतावन्तः
ख ख ख

ज खलु स्फुः ॥३८६॥ ते जघन्योत्कृष्टे प्रमाणवति—
ख

भूत द्रव्य कहा था उसे ही यहाँ समयप्रसङ्गके रूपमें स्थापित किया है । इसमें ही ध्रुवहारका २०
भाग दे-देकर आगेके विकल्पके विषयभूत द्रव्य लायेंगे ॥३८५॥


सामान्य रूपसे ध्रुवहारका प्रमाण सिद्धराशिके अनन्तवें भाग कहा । अथ विशेष
रूपसे ध्रुवहारका प्रमाण कहते हैं—

मनोद्वयवर्गणाके जितने भेद हैं उनके अनन्तवें भागकी संख्याके बराबर ध्रुवहारका
प्रमाण है । मनोवर्गणाके जघन्यको मनोवर्गणाके उत्कृष्टमें-से घटाकर जो प्रमाण दोष रहे २५
उसमें एक जोड़नेपर मनोवर्गणाके भेदोंका प्रमाण होता है ॥३८६॥

आगे मनोवर्गणाके जघन्य और उत्कृष्ट भेदका प्रमाण कहते हैं—

[illegible]

४. अत्रापि सान्तरात्रं अत्रिहोत्रं सुप्रसन्नार्थमवर्णनेन सुप्रसन्नमात्रं.



मनुष्यो जन्मैरवर्गैराकृतकारणैरेवकां ॥ ३ ॥ कारकमायै बुद्धयैवा मन्त्रकारकान्मन्त्राणां संश्रुतानां
कारणैरवर्गैराकृतकारणैरेवकां ॥ ४ ॥ अथानेकविधैराकृतकारणैरेवकां ॥ ५ ॥ ओजस्यैराकृत-

॥ दशमस्कन्धः समाप्तः ॥

[illegible]

1
 2
 3
 4
 5
 6
 7
 8
 9
 10
 11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 32
 33
 34
 35
 36
 37
 38
 39
 40
 41
 42
 43
 44
 45
 46
 47
 48
 49
 50
 51
 52
 53
 54
 55
 56
 57
 58
 59
 60
 61
 62
 63
 64
 65
 66
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100

अभिज्ञान भेदका विषय काम्यजन्यगोत्राणां एकवार भुवदास्ये गुणा करिनेर ओ प्रमाण आये जना दे । जगत् मीये त्रिपरम भेदका विषय काम्यजन्यगोत्राणां प्रमाण दे । जनके मीये त्रिपरम भेदका विषय काम्यजन्यगोत्राणां एकवार भुवदास्ये गुणा करिनेर ओ प्रमाण हो जना दे । जगत् मीये चतुर्ष्वे परम भेदका विषय हो नाह भुवदास्ये काम्यजन्यगोत्राणां गुणा करिनेर ओ प्रमाण हो जना दे । इस प्रकार एकवार अधिक त्रिपरमसे काम्यजन्यगोत्राणां गुणा करते-करते हो चम देनापछि त्रिपरम प्रमाण भुवदास्ये की परम्परसे गुणा करेये एते गुणकारका प्रमाण हुआ इससे काम्यजन्यगोत्राणां गुणा करिनेर ओ प्रमाण होना दे वही उपर्य देनापछि ज्ञानके

केरुभागमात्रद्रव्यविकल्पंगत्त सूच्यंगुलासंख्यातेरुभागमात्रंगत्त नडेनइदेवैराश्रयेनाशेषमुद्रियागुत्त
योगियुक्तुद्देशावयिष्य सध्वोत्प्रेष्टद्रव्यशेषविकल्पं मुद्रिदापत्तु सदुरुक्तस्यैवं संपूर्णलोकमादुषु कारण-
विदं । आदिशेषमनंतर्यशेषप्रदीपकत्वे सुच्यंगुलासंख्यातदिवं गुणिसि लब्धशेकोदु रूपं कूडिदोडे
देगावयितानविकल्पंगत्त द्रव्यविकल्पंगत्तमप्युपविबर्ककसंहृष्टिदेगावयिगुत्तुद्रव्यशेषंगत्त इति
जघन्यशेषमनुत्प्रेष्टशेषप्रदीपकत्वेदु दोषम ४ नंगुलासंख्यातराङ्कमर-

५

४	८
२	७
४	
४२	७
४२२	६
४२२२	६
४२२२२	५
४२२२२२	५
४२२२२२२	४
४२२२२२२२	४
इत्य	क्षेत्र

इतिदं गुणिसि एकरूपं कूडिदोडे— ४।२ देगावयितर्द्रव्यविकल्पंगत्तपुवु । १। 'आदी अंते
मुदे धट्टिहिदे रूपसंगुदे टागा' । दिदी स्थानविकल्पमं साधियुव करणमूत्रवक्के क्वाल्यानं विरोध-
भागि यवकुंमं देनत्त्येदेके'दोडिडिलि चगाध्वमनरथं कयचनमप्युवरिनलिल किचिदिष्टतापनमत्रुमवे-
ते'दोडे प्रंपहारं 'येतवियप्पा अयदरुस्तयितेतां ह्ये एरव' एवु जघन्योत्प्रेष्टंगत्तं शेषेमुत्तिरकलिल
क्षेत्रविकल्पंगत्तं दु मेरुदोडिलि कूडिदेकरूपं येरिरिसि सूच्यंगुलासंख्यातदिवं गुणिसि लब्धशेकोदु रूपं
कूडिदोडे द्रव्यविकल्पंगत्त प्रमाणमपुदे'दो विरोधगूचरुमवकुं ।

१०

रूपपुनशेषविकल्पंगत्तं सूच्यंगुलासंख्यातदिवं गुणिसिदोडे वुष्टेष्टविरोधमक्कुमवे'ते'दोडे
अंसंसंवृट्टियोळु रपपुतदोत्रविकल्पंगत्तु ४ इवं काङ्करुमप्येरइरिदं गुणिसिदोडे पत्तु १०। इपु

एने एव गुचरगुलासंख्यातेन गुणविरा एकरूपपुताः देगावयितर्द्रव्यविकल्पंगत्तः स्युः ३-१।२ कुनः ?
५ ७

जघन्यद्रव्यं भूवहारेण भवत्वा भवत्वा सूच्यंगुलासंख्यातेरुभागमात्रद्रव्यविकल्पेण गतेषु जघन्यशेषोत्तरयोगैकप्रदेशो

१५

और वे क्षेत्रही अपेक्षा विकल्प इस प्रकार है—देशावधिके उत्प्रेष्ट क्षेत्रमें जघन्य क्षेत्रको
घटानेपर जो प्रदेशका प्रमाण शेष रहता है उसने क्षेत्रकी अपेक्षा विकल्प है । उनको ही
सूच्यंगुलके असंख्यातवर्ग भागसे गुणा करके एक जोड़नेपर देशावधिके द्रव्यकी अपेक्षा
विकल्प होते हैं । यह कैसे यह कहते हैं—जघन्य द्रव्यको भूवहारेसे भाग देते-देते सूच्यंगुल-
के असंख्यातवर्ग भाग मात्र द्रव्यके भेद घीतनेपर जघन्य क्षेत्रके ऊपर एक प्रदेश बढ़ता है । इसी
प्रकार लोकप्रमाण उत्प्रेष्ट देशावधिके पर्यन्त जानना । इसका आशय यह है कि सूच्यंगुलके
असंख्यातवर्ग भागपर्यन्त द्रव्यके विकल्प होने तक क्षेत्र वही रहता है जो जघन्य भेदका विषय
था । इतने विकल्प घीतनेपर क्षेत्रमें एक प्रदेशकी वृद्धि होती है । पुनः सूच्यंगुलके असंख्यातवर्ग

२०

वर्गणराशिप्रमाणं सिद्धान्तमपमानमेतन्नि ।

दुग्गसहियपरमभेदप्रमाणवहाराणसंवर्गो ॥३९२॥

वर्गणराशिप्रमाणं सिद्धान्तैकभागप्रमाणमात्रमपि । द्विकसहितपरमभेदप्रमाणावहाराणां संवर्गः ॥

वर्गणराशिप्रमाणं इन्ना कर्मण्य वर्गणराशिप्रमाणं ताने तुटे दोडे सिद्धान्तैकभागप्रमाण-
मात्रमपि सिद्धराश्यन्तैकभागप्रमाणमप्युवंतादोडं द्विकसहितपरमभेदप्रमाणावहाराणां संवर्गः
द्विरूपयुक्तपरमावधितानसर्वविकल्पंगळेतनु ध्रुवहारंगळ संवर्गसंजनितलब्धप्रमितमकुर्मतादोडा
परमावधितानविकल्पंगळतावेनिते दोडे येळवपः—

परमावहिस्स भेदा सगओगाहणवियप्पहदतेऊ ।

इदि ध्रुवहारं वर्गणगुणगारं वर्गणं जाणे ॥३९३॥

परमावधेभेदाः स्वावगाहनविकल्पहततैजसाः । इति ध्रुवहारं वर्गणगुणकारं वर्गणं जानीहि ॥

परमावधेभेदाः परमावधितानविकल्पंगळं स्वावगाहनविकल्पहततैजसाः मुग्गं जीवसमासा-
धिकारदोळपेळल्पट्ट स्वकीयावगाहनविकल्पंगळिदं गुणिसल्पट्ट तेजस्कायिकजीवंगळ संख्यातराशिगु
तदवगाहनविकल्पंगळोळु सध्वंजघन्यावगाहनमिदु ६।८।२२ तदुत्कृष्टा- १५

५ १ ९ १ ७ १ ८ १ २ २ १ ९
७ ७ ७

कार्मण्यवर्गणराशिप्रमाणं सिद्धराश्यन्तैकभागमात्रमपि द्विरूपाधिकपरमावधिसर्वभेदमात्रध्रुवहार-
संवर्गमात्रं स्यात् ॥३९२॥ ते भेदाः कति ? इति चेदाह—

परमावधितानस्य भेदा तेजस्कायिकावगाहनविकल्पगुणिततेजस्कायिकजीवराशिः ७ मात्रा भवन्ति

७।१।७।१ ते अवगाहनविकल्पाः प्रामत्स्वरचनायां तज्जघन्यमिदं ६।८।२२

५
७

५ १ ९ १ ७ १ ८ १ २ २ १ ९

— ७ ७ ७

उतनी वार ध्रुवहारोको परस्परमें गुणा करनेपर जो प्रमाण होता है वही कार्मण्यवर्गणका गुणकार होता है ॥३९३॥

अथ क्रमानुसार वर्गणका प्रमाण कहते हैं—

कार्मण्यवर्गण राशिका प्रमाण सिद्ध राशिके अनन्तवें भाग है तथापि परमावधिके समस्त भेदोंमें दो मिलानेपर जितना प्रमाण हो उतनी वार ध्रुवहारोको परस्परमें गुणा करनेपर जो प्रमाण हो उतना है ॥३९३॥

वे परमावधिके भेद कितने हैं, वह कहते हैं—

तेजस्कायिककी अवगाहनाके विकल्पोसे तेजस्कायिक जीवराशिको गुणा करनेपर जो प्रमाण हो उतने परमावधिके भेद हैं । तथा अग्निकायिककी जघन्य अवगाहनाके प्रमाण-

क्रमविदमसंख्यातवारं पञ्चरित्यनुवृत्तु । इतसंख्यातवारं ध्रुवहारभजतैकैकभाषंगकागुत्तं पोषुर्वतु -
पोषत्कैः—

देसोहिमज्झभेदे सविस्ससोपचयतेजकम्मंगं ।

तेजोभासमणाणं वग्गणयं केवलं जत्थ ॥३९५॥

देशावधिमध्यभेदे सविस्ससोपचयतेजः काम्मंगाणं । तेजोभाषामनसां वर्गणां केवलां यत्र ॥ ५

पस्सदि ओही तत्थ असंखेज्जाओ हवंति दीउवही ।

वासाणि असंखेज्जा होंति असंखेज्जगुणिदकमा ॥३९६॥

पश्यत्यवधिस्तप्रासंख्येया भवंति द्वीपोदधयः । सर्वाण्यसंख्येयानि भवंत्यसंख्येयगुणित-
क्रमाणि ॥

देशावधिमध्यभेदे देशावधिज्ञानमध्यमविकल्पदोषो यत्र आयुदानुमो देहेयोऽनु विस्ससोपचय- १०
सहितमप्य तैजसशरीरस्कन्धमुमं कार्मणशरीरस्कन्धमुमं विस्ससोपचयरहित केवलं तैजसवर्गणेषुमं
भाषावर्गणेषुमं मनोवर्गणेषुमं पश्यत्यवधिः अवधितानं प्रत्यक्षमागरिदुमा येडेगळोऽनु क्षेत्रगळ-
संख्यातद्वीपोवधिगळपुवु । कालंगळुमा येडेगळोऽनु असंख्यातवर्गणेषुमा द्वीपोदधिगळं धर्मागळुम-
संख्यातंगळगुत्तमुं तैजसशरीरस्कन्धस्यानं मोदल्लोऽनु उत्तरोत्तरगळसंख्यातगुणितक्रमंगळुमपुवु ।

तत्तो कम्महयस्सिगितसमयपवद्धं विविस्ससोपचयं ।

१५

ध्रुवहारस्स विमज्जं सच्चोही जाव ताव हवे ॥३९७॥

ततः काम्मंगस्यैकसमयप्रवद्धं विविस्ससोपचयं । ध्रुवहारस्य विभाज्यं सत्त्वावधिध्यायसा-
वद्भवेत् ॥

विषयद्वयं भवति—स ७ १२-१६ स । एवं तृतीयादिविकल्पेनवि असंख्यातवारपर्यन्तमेव एव क्रमः

३ ९

कर्तव्यः ॥३९४॥ तथा सति किं स्यादिति चेदाह—

२०

देशावधिज्ञानमध्यमविकल्पेषु यत्र सविस्ससोपचयं तैजसशरीरस्कन्धं तदपे यत्र तादृशं कार्मणशरीर-
स्कन्धं तदपे यत्र केवलां विविस्सोपचयां तैजसवर्गणां तदपे यत्र केवलां भाषावर्गणां तदपे केवलां मनोवर्गणां
य अवधिज्ञानं जानाति । तत्र पञ्चसु स्थानेषु क्षेत्राणि असंख्यातद्वीपोदधयः काला असंख्यातवर्षाणि य भवन्ति
तथापि उत्तरोत्तरासंख्यातगुणितक्रमानि ॥३९५-३९६॥

भाग दूसरे भेदके विषयभूत द्रव्यमें देनेपर तीसरे भेदके विषयभूत द्रव्यका प्रमाण आता है । २५
ऐसा ही क्रम असंख्यात बार पर्यन्त करना चाहिए ॥३९४॥

ऐसा करनेसे क्या होता है यह कहते हैं—

देशावधिज्ञानके मध्यम भेदोंमेंसे जहाँ देशावधिज्ञान विस्ससोपचय सहित तैजस-
शरीररूप स्कन्धको जानता है, उससे आगे जहाँ विस्ससोपचय सहित कार्मणस्कन्धको जानता
है, उससे आगे जहाँ विस्ससोपचय रहित तैजस वर्गणाको जानता है, उससे आगे जहाँ १०
विस्ससोपचय रहित भाषावर्गणाको जानता है, उससे आगे जहाँ विस्ससोपचयरहित
मनोवर्गणाको जानता है वहाँ इन पाँचों स्थानोंमें क्षेत्र असंख्यात द्वीप समुद्र और काल
असंख्यात वर्ष होता है । तथापि उत्तरोत्तर असंख्यात गुणितक्रम होता है । अर्थात् पहलेसे

[illegible]

मंगुर्नाश गमया दृष्टमे पञ्चमि उमपदो षट्पदो ।

भैरवं कान्तं अभिषेच पद्मनाभा कन्दर्पे योज्यं ॥४०३॥

संन्यासीनाः शम्भवाः प्रथमे वर्गनि उभयतो वृद्धिः । शीघ्रं वृत्तमाश्रित्य प्रथमारिहाद्वयानि
वर्जयामि ॥

प्रथमे चरन्ति मोदतश्चिह्नं संप्रतीताः समयाः अतस्तदात्मनोऽनु पूर्वोक्तप्रति- १५
 तत् ८५१ उच्यते कृतिः प्रजापतिविरचितं कृतिपरिचयः। शत्रुघ्नं राजमुपनामयति

बसन्तः १९६३

[illegible]

१६।८ प्रमदपदवचनार्थव्यक्तिगो शेषश्रीगो व्याप्तः । इतः परं शेषं वार्त्तं आधित्य प्रथमश्रीं व्याप्त-
१११

पनागुदके अर्गल्यानके भाग ओर कभी पनागुदके संख्याके भाग प्रेसोरी एदि होमेपर
पाउने एद समकरी गृदिके होमेरी आगवुदि बहते हैं ॥१०॥

इस प्रकार पहले काण्डकमें भूतस्व और अज्ञानस्वरूपमें एक-एक समय बढ़ते-बढ़ते असांख्यता समझकी वृद्धि होती है। सो प्रथमकाण्डकके उत्तरकाण्डके समर्थोंमें से जगन्मकान-
के समर्थोंको पटानेपर जो श्रेय रहे वगने असांख्यता समझकी वृद्धि प्रथम काण्डकमें होती
है। इसी तरह प्रथमकाण्डकके उत्तरकाण्डके प्रवेशोंमेंसे उनके जगन्म क्षेत्रके प्रवेशोंको
पटानेपर जो श्रेय रहे वगने प्रवेशप्रमाण प्रथम काण्डकमें क्षेत्र वृद्धि होती है। इन वृद्धिरूप क्षेत्र
और काण्डकी जगन्म क्षेत्र और जगन्म काण्डमें जोड़नेपर प्रथम
और काण्ड होते हैं। असांख्य वृद्धिरूप प्रवेशोंके परिमाणको जगन्म
भागमें मिलानेपर प्रथम काण्डकके अन्तिम प्रवेश प्रमाण
रूप समर्थोंके परिमाणकी जगन्म काण्ड आखरीके

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

भरहम्मि अद्धमासं साहियमासं च जंबुदीवम्भि ।
वासं च मणुवलोए वासपुधत्तं च रुजगम्भि ॥४०६॥

भरतेदंमासः साधिकमासश्च जंबुद्वीपे । वर्षं च मनुजलोके वर्षंपृथक्त्वं च रुचके ॥
अष्टमकांडकद्वीपः भरतक्षेत्रमुमदंमासमवकुं । भर । अद्धं मा । नवमकांडकद्वीपः जंबुद्वीपम्
साधिकमासमवकुं । जं मा. १ । दशमकांडकद्वीपः मनुष्यलोकमुमेकवर्षमुमवकुं । म ४५ ल ।
वर्षं १ । एकादशकांडकद्वीपः रुचकद्वीपम् वर्षंपृथक्त्वं मवकुं । व । व प ।

संखेज्जपमे वासे दीवसमुदा हवन्ति संखेज्जा ।
वासम्मि असंखेज्जे दीवसमुदा असंखेज्जा ॥४०७॥

संखेयप्रमे वर्षे द्वीपसमुदा भवन्ति संखेयाः । वर्षे असंखेये द्वीपसमुदा असंखेयाः ॥
द्वादशकांडकद्वीपः संखेयमात्र द्वीपसमुद्रंगुत्वं संख्यातवर्षंगुत्वं मणुष्यु । द्वी = त = १ ॥ वर्षं
१ । मेरु प्रयोदशादि कांडकंगुत्वं तैजसशरीरादि द्रव्यविकल्पंगुत्वं द्वेयोत्वं मुं पेक्ष्वजसंख्यातद्वीप
समुद्रंगुत्वं तत्कालंगुत्वं संख्यातवर्षंगुत्वं संख्यातपुणितक्रमंगुत्वं मणुष्यु । इंतु देशावधितानविययंगुत्वं
द्रव्यक्षेत्रकालं भावंगुत्वं एकान्तविशतिकांडकंगुत्वं चरमकांडक चरमद्रव्यक्षेत्रकालभावंगुत्वं
पेक्ष्व ध्रुवहारैकवारभक्तकामर्गनयमंगुत्वं व संपूर्णक्रमुं = समयोनैकवर्षमुं ॥ प १ ॥ ययात्र

दिदमणुषुमाद्यदेशावधितानवियय द्रव्यक्षेत्रकालभावंगुत्वं संवृष्टि—

अष्टमकाण्डके क्षेत्र—भरतक्षेत्र, काल वर्षमासः, भर वर्षमा = १ नवमकाण्डके क्षेत्रं जम्बुद्वीपः,
साधिकमासः, जं = १ मा १ । दशमकाण्डके क्षेत्रं मनुष्यलोकः कालः एकवर्षः, ४५ ल वर्षं १ ।
काण्डके क्षेत्रं रुचकद्वीपः, कालः वर्षंपृथक्त्वं व । व प ॥४०९॥
द्वादश काण्डके क्षेत्रं संखेयद्वीपसमुद्राः । कालः संख्यातवर्षाणि द्वी = त = १ वर्षं १ । उपरि
दिपु काण्डकेपु तैजसशरीरादिद्रव्यविकल्पस्थानेषु क्षेत्राणि असंख्यातद्वीपसमुद्राः कालः असंख्या
उभयेष्वपि असंख्यातपुणितक्रमेण भवन्ति । चरमकाण्डकचरमे द्रव्यं ध्रुवहारमत्तकामर्गनयमंगुत्वं व क्षेत्रं

श्लोकः = कालः समयोनवर्षं प—१ ॥४०७॥

अष्टमकाण्डकमे क्षेत्र भरतक्षेत्र और काल आधामास है । नीचे काण्डकमें
द्वीप काल कुछ अधिक एक मास है । दसवें काण्डकमें क्षेत्र मनुष्य लोक, काल
है । ग्यारहवें काण्डकमें क्षेत्र रुचकद्वीप काल वर्षंपृथक्त्वं है ॥४०६॥

चारहवें काण्डकमें क्षेत्र संख्यात द्वीप-समुद्र और काल संख्यात वर्ष है ।
आदि काण्डकमें जो तैजस शरीर आदि द्रव्यकी अपेक्षा ध्यान कहे हैं, उनमें क्षेत्र
द्वीप समुद्र है और काल असंख्यात वर्ष है । दोनों ही आगे-आगे क्रमसे
असंख्यातगुने होते हैं । अन्तके उन्नीसवें काण्डकमें द्रव्य तो कामर्गनावर्गमा
मात्र देनेसे जो प्रमाण आवे उतना है । क्षेत्र सम्पूर्ण लोक है और काल एक स

॥४०७॥

काल विशेषेण बहिर्दशे च विशेषेण पुनः इवे बद्धो ।

अधुन बद्धो वि पुनो अविरुद्धं इदं कंडम्भि ॥४०८॥

कालविशेषेनाप्यहृतक्षेत्रविशेषो भवेत् प्रुवा वृद्धिः । अधुन वृद्धिरपि पुनरविच्छिन्नमिच्छादिके ।
कालविशेषेनाप्यहृतः क्षेत्रविशेषो प्रुवा वृद्धिर्भवेत् । प्रथमकांडकबोद्धु जप्यकालम् ८

तन्मुहुराकालबोद्धु ८ विशेषिति ८०-१ अर्धरत्नं भागितत्पट्ट क्षेत्रविशेषं जप्यक्षेत्रम् ६ ५

तन्मुहुराक्षेत्रबोद्धु ६ क्षेत्रविशेषदुर्बल ६०-१ भागितत्पट्ट लक्ष्य ६०-१ जप्यकालितमितु ६ ८
१ ० १ ० ८ ० १ १ ०

प्रुवा भवेत् वृद्धिः । प्रथमकांडकबोद्धु प्रुवरूपक्षेत्रवृद्धिप्रमाणमरुतु । सूर्यगुलामं ग्यातभागमात्र-
द्वयमित्येव गच्छति तत्पट्टविशेषं नष्टबोद्धु प्रदेशं क्षेत्रबोद्धु वेत्तुगुमो हर्मादिसमायावलि भक्तपनागुल-
प्रमितप्रदेशंगत् जप्यक्षेत्रं प्रदेशं वेत्ति कालबोद्धु समयं जप्यकालद मेले वेत्तुगुमितु तत्कांडक
क्षरमप्यंतं प्रुवरूपविशेषं जप्यकालद मेले वेत्ति च समयंगतिनितपुपु ८०१ इयं जप्य- १०
१ ०

कालबोद्धु ८ समयपट्टं भाट्ट कूटिबोद्धे प्रथमकांडक क्षरमबोद्धु आवलि संक्षेपभागमश्नुमे पुत्रपं ८ १

जप्यक्षेत्रं प्रदेश मेले ६ वेत्ति च प्रदेशंगत् गुमितपुपु ६०१ विषं जप्यक्षेत्रं प्रदेशं कूटिबोद्धे १ ६

प्रथमकांडकक्षरमबोद्धु घनागुलसंक्षेपभागमात्रमरुतु ६ इति स्ला कांडकबोद्धु अधुन वृद्धिः १

विशेषितकाण्डके जप्यक्षेत्रं क्षेत्रविशेषं जप्यकालं च स्तोत्रकाले विशेष्य क्षेत्रादी क्षे-
त्रकालविशेषो ह्यस्याम् । तत्र प्रथमकाण्डके कालविशेषे ८१०-१ क्षेत्रविशेषः ६१०-१ भक्त्या ६०-१ १५
१ ० १ ० १ ० ८ ०-१ १ ०

भक्त्या ६ प्रुवा वृद्धिर्भवेत् । सूर्यगुलामं ग्यातभागमात्रद्वयमित्येव गच्छति तत्पट्टविशेषं नष्टबोद्धु ८

वर्षं । क्षेत्रविशेषं भागितमपनागुलप्रमितप्रदेशः जप्यक्षेत्रं क्षेत्रविशेषं वर्षं । तत्र जप्यकालस्योपरि
एकः समयो वर्षं । एवं तत्काण्डकक्षरमप्यंतं प्रुवरूपेण जप्यकालस्योपरि विशेषमप्यप्रमाणमिदम् । ८०-१ १ ०

विशेषित काण्डकके अपने उत्कृष्ट क्षेत्रं जप्यक्षेत्रको और अपने उत्कृष्ट कालमें ।
जप्यक्षेत्र कालको घटानेपर जो क्षेत्र राशि रहती है उसको क्षेत्र विशेष और काल विशेष कहते २०
हैं । प्रथम काण्डकके कालविशेषसे क्षेत्रविशेषमें भाग देनेपर ध्रुववृद्धिका प्रमाण होता है ।
सूर्यगुलके असंख्यातवर्षं भागमात्र द्वयके विकल्पोंके धीरेनेपर क्षेत्रमें एक प्रदेश पड़ता है ।
इस प्रसंगसे जप्यक्षेत्रके ऊपर आधलीसे भाजित घनागुल प्रमाणप्रदेश जप्यक्षेत्रके ऊपर
बढ़ते हैं । इतने प्रदेश जप्यक्षेत्रके ऊपर बढ़नेपर जप्यकालके ऊपर एक समय बढ़ता है ।
इस प्रकार प्रथम काण्डकके अन्त पर्यन्त ध्रुववृद्धिसे जितने समय बढ़ें उन्हें जप्यकालमें २५
मिलानेपर आधलीका संख्यातवर्षां भाग प्रथम काण्डकका उत्कृष्ट काल होता है । इसी तरह
जितने जप्यक्षेत्रके ऊपर प्रदेश बढ़ें उन्हें जप्यक्षेत्रमें मिलानेपर घनागुलका संख्यातवर्षां

मत्तमा परमावधिसर्वोत्कृष्टद्रव्यमं प्रवहारप्रमितं । ९ । तु मत्ते प्रवहारदिदं भागिसि-
दोदो हे परमाणवश्चुमा द्रव्यं सर्वविधिज्ञानविषयद्रव्यमवचुमा सर्वविधिज्ञानमु निर्विकल्पमेवचु-
मितु देशावधिज्ञानविषयमप्य जघन्यद्रव्यराशियोजु मध्यमयोगाग्निजतनोकम्मादारिकशरीरसंचय-
सविशसोपचयलोकाविभूतप्रमितद्रव्यस्कंधोदु देशावधिज्ञानद्वितीयविकल्पं मोदलोडु परमा-
वधिज्ञानसर्वोत्कृष्टद्रव्यपर्यंतमदमोदु पोन्दु गेपानदोमहाप्रवाहमेतु हिमाचलदोडुदृष्टि पूर्वोदधि-
पद्यंतमविच्छिन्नरूपदिदं परिदु पोगि तदुदधिप्रविष्टमादुदंते प्रवहारमुमविच्छिन्नरूपदिदं प्रवेगिसि
प्रवेगिसि परमाणुद्रव्यपर्यंतवसानमागि निदुदेकेदोडे विषयभूतपरमाणुडु विषयिप्यसर्वावधिज्ञानमु
निर्विकल्पसंगळप्युदरिद ।

परमोद्दिद्व्यभेदा जेचियमेचा हु तेचिया होंति ।

तस्सेव सेचकालविषया विसया असंखगुणिकमा ॥४१६॥

परमावधिद्रव्यभेदाः यावन्मात्राः एतत् तावन्मात्रा भवन्ति । तस्यैव क्षेत्रकालविकल्पाः विषया
असंख्यगुणितक्रमाः ॥

परमावधिज्ञानविषयद्रव्यविकल्पंगळु यावन्मात्रंगळु तावन्मात्रंगळ्येप्युवु । परमावधिज्ञान-
विषयंगळप्य क्षेत्रविकल्पंगळु कालविकल्पंगळु तावन्मात्रविकल्पंगळुगुणितं तंतम्म जघन्यविकल्पं
मोदलोडु तंतम्मुरकृष्टपर्यंतमसंख्यातगुणितक्रमंगळप्युदंतप्यसंख्यातगुणितक्रमंगळप्युवे दोडे
येळदं ।

पुनस्त्वपरमावधिसर्वोत्कृष्टं द्रव्यं ९ प्रवहारेणैकवारं भवत् एकपरमाणुमात्रं सर्वविधिज्ञानविषयं द्रव्यं
भवति । तन्मात्रं निर्विकल्पमेव स्यात् । स च प्रवहारः गङ्गाप्रवाहनाः प्रवाहवद्भवति-यथा गङ्गाप्रवाहो-
प्रवाहः हिमाचलादविच्छिन्नं प्रवाह पूर्वोदधी गत्वा स्थितस्नवायंहा रोषि देशावधिषयत्रप्यद्रव्यात्परमावधि-
सर्वोत्कृष्टद्रव्यपर्यंतं प्रवह परमाणुपर्यंताने स्थितः विषयस्य परमाणोः, विषयिणः परमावधेः निर्विकल्पक-
स्यात् ॥४१५॥

परमावधिज्ञानविषयद्रव्यविकल्पा यावन्मात्राः तावन्मात्रा एव भवन्ति तस्य विषयभूतक्षेत्रकाल-
विकल्पाः । तावन्मात्रा अपि स्वस्वत्रयंगळु स्वस्वोत्कृष्टपर्यंतं असंख्यातगुणितक्रमा भवन्ति ॥४१६॥ कौदुग-
संख्यातगुणितक्रमाः ? इत्युक्ते प्राह—

उस परमावधिके सर्वोत्कृष्ट द्रव्यको एक बार प्रवहारसे भाग देनेपर एक परमाणु मात्र
सर्वावधिज्ञानका विषयभूत द्रव्य होता है । यह ज्ञान निर्विकल्प ही होता है इसमें जघन्य-
वत्कृष्ट भेद नहीं है । वह प्रवहार गंगा महानदीके प्रवाहकी तरह है । जैसे गंगा महानदीका
प्रवाह हिमाचलसे अविच्छिन्न निरन्तर बहता हुआ पूर्व समुद्रमें जाकर ठहरता है वैसे ही
यह प्रवहार भी देशावधिके विषयभूत जघन्य द्रव्यसे सर्वावधिके वत्कृष्ट द्रव्य पर्यन्त बहता
हुआ परमाणुपर जाकर ठहरता है । सर्वावधिका विषय परमाणु और सर्वावधि ये दोनों ही
निर्विकल्प हैं ॥४१५॥

परमावधिज्ञानके विषयभूत द्रव्यकी अपेक्षा जितने भेद कहे हैं उतने ही भेद उसके
विषयभूत क्षेत्र और कालकी अपेक्षा होते हैं । फिर भी अपने-अपने जघन्यसे अपने-अपने
वत्कृष्ट पर्यन्त क्रमसे असंख्यात गुणित क्षेत्र व काल होते हैं ॥४१६॥

किस प्रकार असंख्यात गुणित होते हैं यह कहते हैं—

[illegible][illegible]

भाषाजी उपहारोत्सवसमय प्रकाशितदिन देखावत :-

मत्पुत्रमा तदकालिष्ठादि रुद्रणमप्युपगमेण ।

उदये चि य गन्धस्य य भग्नदेशा होति गुणमाता ॥४१८॥

नृपलाभा मन्त्रनिहासोऽपि दत्तेनैवैक्यमायाः । उभयविभक्तिं नृपलाय च धाम्नाः
भवति नृपलायः ॥

[illegible]

२१
 मयिमिदितेति च ई एतेनचलनमात्रं विवक्षितमात्रं च ४ वृत्तितु गच्छत १५
 चनमात्रा भवति भूदेवते विवक्षितमात्रं च ५ वृत्तितु गच्छत १५
 १८१०-१८१०-१८१०

[illegible]

११ नारदसू १० । उभयव्यभिचारेण च ई भूतोदगच्छयमात्रं १० । विपश्चिपण्ड

मात्रद्वयं ५ दृष्टिरित्युक्तं तत्र च धनमात्रा भवति भुवि नैवेद्ये विधित्तगच्छपनमात्रं गच्छ पतिरित्यु २०

वर्ग-५—**प्रश्न नं० १४६७।** पुनः प्रचारणार्थे लाते वृत्तान्तम् पञ्चाशति—
उत्तरम्.—पुनर्विचारणायां अग्रिमविधाने अन्तर्गतं, सामाजिकवादीषु च मनीषित्वमने आदिष्टम्।

ममान् भावे वदन्। परमापत्तिर्येषां भेदे विषयभूत क्षेत्रका परिमाण होता है। तथा
हमी हलवादी हेतुभाविनि विस्तरक इत्यत्र प्राप्त एक सामान्य हीन एक सामान्यी प्रमाः अनेकेषाम्

पुनः प्रकाशान्तरसे कन्दी गुणकारांको कह्यो हैं—

गण्डमे गमान पन ओर गण्डमे लकाय अतीन जो बिबसित भेदो रहल। भेद, यो बिबसित गण्डमे एक कम गण्डका जो सक्रिय पन, हा दोनोको मिलानेते गण्डका सक्रिय पन प्रमाण गणकार होला है। ब्याहारण कहते हैं—जिवनेवा भेद बिबसित हो

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

येसदृष्ट्यङ्गगङ्गु संवर्ग माडिद सङ्घं तृतीयपदबोद्ध परमावधिप्रकाशङ्ग्ये गुणकारप्रमाण-
मस्तु ॥ ६५ ॥ २५६ । य-१ । ६५ = २५६ । मिते चरमबोद्धं देयमावत्यसंख्यातभागमस्तु ८

सो राशिगङ्गच्छेदंगञ्जेनितप्युषे बोद्धे संख्यातरूपहीनावलिच्छेदमात्रंगङ्गप्युषु १६-४ वदेते बोद्धे—
विरिञ्चज्जमाणरासो दिग्ससङ्गच्छिदोहि संगुणिवे ।

अङ्गच्छेदसञ्ज्ञाया होति समुपपन्नरासिस्स ।

एदितावलिष्येयुषु परिमितासंख्यातजघन्यराशिष्यं विरिञ्चिस्ति प्रतिहपमा राशिष्ये कोट्टु
वर्णितसंघर्ग माडे सज्जनितराशिष्यपुर्दारवमा परिमितासंख्यातजघन्यराशिष्यद्वच्छेदंगङ्गु संख्यात-
हपंगङ्गिदं गुणितसत्पट्ट परीतासंख्यातजघन्यराशिप्रमाणमावलिष्यद्वच्छेदंगङ्गप्युषु । १६ । १-७ ।
गुणिसिदोद्धे सव्यपारावि सद्योप्यपारिगङ्गोद्धे परीतासंख्यातमध्यपतितासंख्यातराशिष्यकुमुदके
संवृष्टि पविनासं १६ इदरोद्धे हारभूतासंख्याताद्वच्छेदंगङ्गु संख्यातरुपंगङ्गप्युषुवव ४ कच्छेदोद्धे
सैयमावत्यसंख्यातराशिगङ्गच्छेदंगङ्गप्युषु १६-४ । इतु त्रैराशिकं माडिष्यङ्गु प्र वि छे ८ वि छे
१ । ६-४

छे १ । फ ३ । इ ३ ० ६ ० ३ ८ ३ ० ६ ० ३ ई त्रैराशिकं कटाक्षिस्ति पैल्लवपं । देयच्छेदे-
प २ ० पा १ ०

यल्लवपं तन्मात्र ३ वेगदृष्ट्यङ्गाना गुणने परस्परसंघर्गसंज्ञितराशिः तृतीयपदे परमावधिप्रकाशङ्ग्ये गुणकार-
प्रमाणं भवति ॥ ६५ ॥ २५६ । य-१ । ६५ = २५६ एवं चरमेति देयमावत्यसंख्येयभागः तस्य अर्धच्छेदाः
भागद्वार्षच्छेदयुनभाग्यार्धच्छेदमात्रत्वात् संख्यातरूपयुनपरीतासंख्यातमध्यमभेदमात्राः संदृष्ट्वा एता-
व्यः १६-४ एभिः देयार्धच्छेदमैकतेन लोकार्धच्छेदराशिना पदघने-परमावधितानचरमविकल्पसंकलितसर्वघने
नर्त्तते सति यल्लवपं तन्मात्रलोकानां परस्परगुणने परमावधिचरमगुणकारो भवति । यद्येतावता देयह्वावत्य-
संख्येयभागानां दे ८ परस्परगुणने लोक उत्पद्यते फ ३ तदा एतावता देयह्वावत्यसंख्येय-

प्र । वि छे छे १
१६-४

उससे विवक्षित पदके संकलित घनमें भाग दें । उससे जो प्रमाण आवे उतनी जगह लोक-
राशिको रखकर परस्परमें गुणा करनेपर जो प्रमाण आवे वह विवक्षित पद सम्बन्धी क्षेत्र
या कालका गुणकार होता है । इसी प्रकार परमावधिके अन्तिम भेदमें गुणकार जानना ।
जैसे देयराशि चौंसठका चौथा भाग अर्थात् सोलह, उसके अर्धच्छेद चार, उसका भाग दो
सौ छप्पनके अर्धच्छेद आठमें देनेपर दो लब्ध आया । उसका भाग विवक्षित पद तीनके
संकलित घन छहमें देनेसे तीन आया । सो तीन जगह दो सौ छप्पन रखकर परस्परमें गुणा
करनेसे जो प्रमाण होता है वही तीसरे स्थानमें गुणकार जानना । इसी तरह यथार्थमें
देयराशि आषट्ठीका असंख्यातवां भाग, उसके अर्धच्छेद आवलीके अर्धच्छेदोंमें-से भाजक
असंख्यातके अर्धच्छेदोंको घटानेपर जो प्रमाण रहे, उतने हैं । सो वे संख्यातहीन परीता-
संख्यातके मध्यमभेद प्रमाण होते हैं । इनका भाग लोकराशिके अर्धच्छेदोंमें देनेपर जो
प्रमाण आवे, उसका भाग परमावधिके विवक्षित भेदके संकलित घनमें देनेसे जो प्रमाण

कणादवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

देशावधिज्ञानविषयजघन्यकालमं नोडलु ८ मत्संख्यातं गुणहोनमानं गुण्यु ८ स

सर्वोद्दिष्टिय कमसो आवलियसंख भागगुणितकमा ।
द्व्याणं भावाणं पदसंखा सरिसगा होति ॥४२३॥

सर्वाविज्ञानपर्यन्तं क्रमशः आवल्यसंख्यभागगुणितक्रमाः । द्व्याणां भावा
सदृशाः भवन्ति ॥

देशावधिज्ञानविषयजघन्यद्रव्यदपर्यायगुण्य भावगुण्य जघन्यदेशावधिज्ञान
सर्वाविज्ञानपर्यन्तं क्रमदिवं आवल्यसंख्यातगुणितक्रमगुण्यु कारणमागि द्व्ययान
स्थानसंख्यागुण्य समानगुण्यु ।
अनंतरं नरकगतिर्यो नारकर्गावधिषयक्षेत्रं वेच्छदपर—

सत्तमखिदिभि कोसं कोसस्तद्वं पवड्डदे ताव ।
जाव य पडमे गिरये जोयणमेवकं हवे पुण्णं ॥४२४॥

सममभितो क्रोशः क्रोशस्यादं प्रवदति तावत् । यावत्प्रथमे नरके योजनमेकं भवेत्
सममभितिमाधविपो नारकर्गावधिविषयमप्य क्षेत्रमेकक्रोशमात्रमवकुं । पट्टदि
क्रोशादं वेच्छं । पंचमभितियो नरकमत्तं नोडे क्रोशादं वेच्छं । चतुर्थभितियो
क्रोशादं वेच्छं । तृतीयक्षेत्रदोच्छर नेले क्रोशादं वेच्छं । द्वितीयपुट्टिविपो
वेच्छं । प्रथमभितियो क्रोशादं वेच्छं संपूर्णं योजनप्रमाणमवकुं । ना क्रोश १ ।
म ३ । अ । क्रोश २ । अ क्रोश ५ । मे क्रोश ३ । वं क्रो ७ । घ क्रो ४ ।
२ २

मत्संख्यातगुणहीनभावाः स्फुटं भवन्ति ८ ॥४२२॥

देशावधिजघन्यद्रव्यस्य पर्यायानभावाः जघन्यदेशावधितः सर्वाविज्ञानपर्यन्तं क्रमेण आवल्यसंख्य
गुणितक्रमाः स्युः । तेन द्व्याणां भावानां च स्थानसंख्या समाना एव ॥४२३॥ अथ नरकगतावधिषय
क्षेत्रमाह—

सममभितो अवधिषयक्षेत्रं एकक्रोशः । तत्र उपरि श्रुतिपुट्टिव तावत् क्रोशस्याधार्पं प्रवर्तते यावत्प्रथम
है । तथापि उसके विषयभूत जघन्य कालसे असंख्यातगुणा हीन है ॥४२२॥
देशावधिके विषयभूत द्रव्यके पर्यायरूप भाव जघन्य देशावधिते सर्वाविज्ञान पर्यन्त
क्रमसे आवलीके असंख्यातवं माग प्रमाणसे गुणित है । अर्थात् देशावधिके विषयभूत द्रव्य-
को अपेक्षा जहाँ जघन्य भेद है वहाँ ही द्रव्यके पर्यायरूप भावकी अपेक्षा आवलीके
असंख्यातवं माग प्रमाण भावको जाननेरूप जघन्य भेद है । जहाँ द्रव्यकी अपेक्षा दूसरा
भेद है वही भावकी अपेक्षा उस प्रथम भेदको आवलीके असंख्यातवं भागसे गुणा करनेपर
जो प्रमाण आवे उस प्रमाण भावको जानने भेद द्रव्यकी अपेक्षा है । इसी प्रकार सर्वाविधिपर्यन्त
ज्ञानना । इस तरह अवधिज्ञानके जितने भेद द्रव्यकी अपेक्षा हैं उतने ही भावकी अपेक्षा हैं ।
अथ नरकगतिमें अवधिज्ञानका विषयक्षेत्र कहते हैं—
सातवीं पृष्ठीमें अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्र एक कोश है । उससे ऊपर

अमुराणमसंखेज्जा कोडीओ सेसजोइसंताणं ।

संखातीदसहसा उक्कस्सोहीण विसओ दु ॥४२७॥

अमुराणमसंखेया कोटयः शेषज्योतिष्कांतानां । संख्यातीतसहस्रमुत्कृष्टावधीनां विषयस्तु ॥

अमुरदगाजिमुत्कृष्टक्षेत्रमसंख्यातकोटियत्नकुं । शेषनवविधभावनदेवकर्कळं व्यंतरज्योतिष्क- ५
देवसंज्ञं असंख्यातसहस्रमुत्कृष्टावधिमानविषयमवकुं ।

अमुराणमसंखेज्जा धरिसा पुण सेसजोइसंताणं ।

तस्संखेज्जदिभागं कालेण य होदि णियमेण ॥४२८॥

अमुराणमसंखेयानि वर्षाणि पुनः शेषज्योतिष्कांतानां । तत्संखेयभागः कालेन च भवति नियमेन ॥

अमुरकुलद भवनामररिगुत्कृष्टकालमसंखेयवर्षगणपुत्रु । मुत्ते शेषनवविधभावनदेवकर्कळं १०
व्यंतरज्योतिष्कदेवकर्कळं अमुरकुलसंभूतगं पेळ्ळकालमं नोडलु संख्यातैकभागमयकुमुत्कृष्टकालं ।
व ० ।

१

भवनतियाणमधोधो थोवं तिरिएण होदि बहुगं तु ।

उड्ढेण भवनवासी सुरगिरिसिहरोचि पस्संति ॥४२९॥

भवनत्रयाणामधोयः स्तोकां तिष्यंगवहृकं भवति तु कर्ष्वतो भवनवासिनः सुरगिरिशिलर- १५
पर्यंतं पश्यंति ॥

भवनत्रयामरगेल्लं केळ्ळो केळ्ळो अवधि विषयक्षेत्रं स्तोकास्तोकमवकुं । तिष्यंगकाणि १०
वहृक्षेत्रं विषयमवकुं । तु मत्ते भवनवासिदेवकळु तम्मिहूँडेपिदंवि मेगे सुरगिरिशिलरपर्यंतम-

अमुराणां उत्कृष्टविषयक्षेत्रं असंख्यातकोटियोननमानम् । शेषनवविधभावनव्यन्तरज्योतिष्काणां च २०
असंख्यातसहस्रयोननानि ॥४३०॥

अमुरकुलस्योत्कृष्टकालः असंखेयवर्षाणि पुनः शेषनवविधभावनव्यन्तरज्योतिष्काणां तस्य संख्यातैक-
भागः च ० ॥४३१॥

१

भवनत्रयामराणामधोषोऽवधि विषयक्षेत्रं स्तोकां भवति । तिर्यक्षेण बहुकं भवति । तु-पुनः, भवनवासिनः

अमुरकुमार जातिके भवनवासी देवोंके अवधिज्ञानका उत्कृष्ट विषयक्षेत्र असंख्यात २५
कोटि योजन प्रमाण है । शेष नौ प्रकारके भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषीदेवोंके असंख्यात
हजार योजन है ॥४३०॥

अमुरकुमारोंका उत्कृष्ट काल असंख्यात वर्ष है । शेष नौ प्रकारके भवनवासी व्यन्तर १०
और ज्योतिषी देवोंके उत्कृष्ट अवधिज्ञानका काल एक कालके संख्यातवें भाग है ॥४३१॥

भवनवासी, व्यन्तरों और ज्योतिषी देवोंके नीचेकी ओर अवधिज्ञानका विषयक्षेत्र १०
थोड़ा है किन्तु तिर्यक् रूपसे बहुत है । भवनवासी अपने निवासस्थानसे ऊपर मेरुपर्वतके

यदिदर्शनदिदं काण्वरं ।

जघन्य	जघन्य	उ	उ
भयनव्यंतर	जोयित्ति	असुर	भ ९। ३०। जो
यो २५	२५३	को ०	१०००। ०
दि १	यठुकाल	य ०	य ०

सक्रीसाणा पढमं विदियं तु सणक्कुमारमाहिंदा ।

तदियं तु पम्ह लांतव सुक्कसहस्सारया तुरियं ॥४३०॥

शकेशानो प्रथमो द्वितीयो तु सनत्कुमारमाहेन्द्रो । तृतीयो तु ब्रह्मलांतवो गुरुसाहस्रारजो
तुम्यो ॥

सौधर्मेशानकल्पजराळु प्रथमपुण्योपर्यंतं काण्वरं । सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पसंतभूतव तु मते
द्वितीयपुण्योपर्यंतं काण्वरं । ब्रह्मलांतवकल्पजरा तुतीयपुण्योपर्यंतं काण्वरं । गुरुसाहस्रारकल्पजरा
चतुर्थपुण्योपर्यंतं काण्वरं ।

आणदपाणदवासी आरण तह अचुदा य पसंति ।

पंचमखिदिपेरंतं छट्ठि मेवेज्जगा देवा ॥४३१॥

आनतप्रागतवासिनः आरणास्तथाऽणुताइच पश्यन्ति पंचमश्रुतिपर्यंतं यष्टि धेयेयका देवाः ।

आनतप्रागतवासिणः आरणाच्युतकल्पजरा मते पंचमश्रुतिपर्यंतं काण्वरं । तद्वर्षेयमन्त्रं
मित्रं यष्टपुण्योपर्यंतं काण्वरं ।

सव्यं च लोपनालिं पसंति अणुचरेसु जे देवा ।

सक्खेत्ते य सकम्मे रुवगदमणंतभागं च ॥४३२॥

सर्पा च लोकनाथी पश्यन्त्यनूत्तरेषु ये देवाः । स्वक्षेत्रे स्वकर्मणि रूपगतमनंतभावं ।

स्वकीयावस्थितस्यानादुपरि गुरगिरिजिखरपर्यन्तं अवधिदर्शनेन पश्यन्ति ॥४३२॥

सौधर्मेशानदाः प्रथमपुण्योपर्यन्तं पश्यन्ति । सनत्कुमारमाहेन्द्रजाः पुनर्द्वितीयपुण्योपर्यन्तं

ब्रह्मलान्तव आस्तृतीयपुण्योपर्यन्तं पश्यन्ति । गुरुसाहस्रारजाः चतुर्थपुण्योपर्यन्तं पश्यन्ति ॥४३३॥

आनतप्रागतवासिनः तथा आरणाच्युतवासिनश्च पञ्चमपुण्योपर्यन्तं पश्यन्ति, नवमं

पष्ठपुण्योपर्यन्तं पश्यन्ति ॥४३३॥

शिखरपर्यन्तं अवधिदर्शनके द्वारा देखते हैं ॥४३२॥

सौधर्म और ऐशान स्वर्गों के क्षेत्र अवधिदर्शनके द्वारा

कप्पसुराणं सगसग ओहीखेत्तं विविस्ससोवचयं ।

ओद्दीद्वपमाणं संठाविय धुवहारेण हरे ॥४३३॥

सगसगखेत्तपदेससलायपमाणं समप्पदे जाव ।

तत्थतणचरिमखांडं तत्थतणोद्दिस्स दब्बं तु ॥४३४॥

कल्पमुराणां स्वकृत्स्नकवधिभेदे विविक्तसोपचय—मवधिद्वयप्रमाणं संस्थाप्य ध्रुवहारेण
हरेत् ॥

स्यस्वशेषप्रदेशदालाकाप्रमाणं समाप्यते यावत् । तत्रतनचरमखंडं तत्रतनावधेर्द्रव्यं तु ।

स्वायत्ति—

[illegible]

१० असुनेवाचं दिवाहयति—

कृताशक्तिना कश्चादवस्थितो न शिवाभिरस्योपचयावयिज्ञानाभरणद्वयं च संस्थाप्य—

[illegible]

इसमें बाज की आगे स्पष्ट करते हैं—

इन्द्रधामो देवीकि अपने-अपने अवधितानके क्षेत्रको और अपने-अपने विससोपपद-

एक बार धुनहार का भाव देना। ऐसा व्यवहार करना चाहिए जबतक अपने-अपने अवधि-ज्ञान के उस उच्चतम प्रदर्शनों का परिमाण समझ हो। ऐसा करनेसे जो अधविज्ञानारम्य कर्म-युक्त व्यक्ति धनक संग्रह करता है उतना ही उस अधविज्ञान के विषयभूत द्रव्य का परिमाण होता है।

विशेषः—येन सौख्यं पेशान स्वर्गवाद्योऽत्र क्षेत्र प्रथम नरक पापयोग्यं कदा रे।

[illegible]

जोइसियंताणोही खेत्ता उच्चा ण होंति घणपदरा ।

कल्पसुराणं च पुणो विमरित्यं आयदं होदि ॥४३७॥

ज्योतिष्कांतानामवधिसेत्राण्युक्तानि न भवन्ति घनप्रतराणि । कल्पसुराणां च पुनर्विषय-
मायतं भवति ॥

- १ ज्योतिषिकांतानामुक्तान्यवधिसेत्राणि भावनव्यंतरज्योतिष्करिगेल्लगं पेरगे पेळल्पदृवधि-
विषयक्षेत्रंगळु समचतुरस्र घनक्षेत्रंगळु एकंदोडे अचमंगळवधिविषयक्षेत्रंगळु सूप्रबोळु विसदु-
सत्वकयनमुट्पुदरि । इदरि पारिशेष्यवि तद्योग्यस्यानबोळु नारकतिथ्यंचक्षगळवधिविषयक्षेत्रे
समघनक्षेत्रमेंबुदत्यं । कल्पामरगेल्लं पुनः मत्ते तंतम्मवधिज्ञानविषयक्षेत्रं विसदुशमायतमभुं ।
आपतचतुरस्रक्षेत्रमें बुदत्यंमवधिज्ञानं समाप्तमाप्नु ।

- १० चितियमचितियं वा अद्धं चितियमणेयमेयगयं ।

मणपज्जवं ति उच्चइ जं जाणइ तं सु णरलोए ॥४३८॥

चितितमचितितं वा अद्धं चितितमनेकभेदगतं । मनःपर्यय इत्युच्यते यत् जानाति तत्सत्त्वं
नरलोके ।

- ११ चितितं पेरदिदं चितिसत्त्वदुदं । अचितितं वा मुंदे चितिसत्त्वदुवुवं । मेणु अद्धंचितितं
चित्ताविषयमं संपूर्णमाणि चितिसत्त्वे अद्धं चितिसत्त्व दुवुवुमं । अनेकभेदगतं इतनेकप्रकारदिवं पेर
मनबोळिदुवुवं यत् आधुबोडु ज्ञानं जानाति अरिगुमा ज्ञानं पल्लु स्फुटमाणि मनःपर्ययज्ञानमेविनु

जानां यथायोग्यं पत्थासंख्यातभागः प तत उपरि लान्त्रादिसर्वार्थसिद्धिपर्यन्तानां यथायोग्यं किंचिद्व्याप्तं
५-॥४३५-४३६॥

- २० ज्योतिष्कान्ताविषयदेवानां उक्तावधिविषयक्षेत्राणि समचतुरस्रघनरूपाणि न भवन्ति, मूत्रे तेषां
विषयसत्त्वकयनान् । अनेन पारिशेष्यान् तद्योग्यस्याने नरनारकतिथ्यंगवधिविषयक्षेत्रमेव समघनमित्यर्थः ।
कल्पामरणा पुनर्विषयमायतं आपतचतुरस्रमित्यर्थः ॥४३७॥

चिन्तितं—चिन्ताविषयीकृतं, अचिन्तितं—चिन्तयिष्यमाणं, अर्धचिन्तितं—असंपूर्णचिन्तितं वा इत्यनेक-
भेदगतं अर्धं परमनस्ववस्थितं यज्ज्ञानं जानाति तन् सत्त्वं मनःपर्यय इत्युच्यते । तत्त्वोत्पत्तिप्रवृत्ती नरलोके

- २५ देवोंके अवधिज्ञानका विषयभूत फाल यथायोग्य पत्त्यके असंख्यातवें भाग हैं । इतसे
ऊपर लान्त्रव स्वर्गसे लेकर सर्वार्थसिद्धिपर्यन्त देवोंके यथायोग्य कुछ कम पत्त्य प्रमाण
है ॥४३५-४३६॥

- ३० ज्योतिषी देख पर्यन्त तीन प्रकारके देवोंके अर्थात् भवनवासी व्यन्तर और ज्योतिष्क
देवोंके जो अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्र कहा है वह समचतुरस्र अर्थात् बराबर चौकोर
घनरूप नहीं है क्योंकि आगममें उसकी लम्बाई चौड़ाई ऊँचाई बराबर एक समान नहीं कही
है । इससे शंभ रहे जो मनुष्य नारक, तिर्यंच उनके अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्र समान
चौकोर घनरूप है यह अर्थ निश्चलता है । कल्पवासी देवोंके अवधिज्ञानका विषयक्षेत्र
विमदुस्र आयत है अर्थात् लम्बा बहुत और चौड़ा कम है ॥४३७॥

॥ अवधिज्ञान प्ररूपणा ममाप्त ॥

चिन्तित—जिसका पूर्वमें चिन्तन किया था । अचिन्तित—जिसका आगामी कालमें

- ११ चिन्तन करेगा, अर्धचिन्तित—जिसका पूर्णरूपसे चिन्तन नहीं किया, इत्यादि अनेक प्रकार

विदं त्रिविधमवकुं ।

विउलमदीवि य छद्वा उजुगाणुजुवयणकायचित्तगयं ।

अत्थं जाणदि जम्हा सहत्थमया हु ताणत्था ॥४४०॥

विपुलमतिरपि च पट्था ऋज्वनूजुवचनकायचित्तगतमत्थं जानाति यस्मात् शब्दात्थंगतः ।

१ तलु तपोरत्थाः ।

विपुलमतिमनःपर्ययमुं पट्प्रकारमप्युदवेते बोधे ऋजुमनोगतात्थंविषयमनःपर्ययमेवं ऋजुवचनगतात्थंविषयमनःपर्ययमेवं ऋजुकायगतात्थंविषयमनःपर्ययमेवं दितु । अनुजुमनोगतात्थं विषयमनःपर्ययमेवं अनुजुवचनगतात्थंविषयमनःपर्ययमेवं अनुजुकायगतात्थंविषयमनःपर्ययमेवं दितिल्लि । यस्मात् ऋज्वनूजुमनोवचनकायगतात्थंविषयत्वात्कारणात् । तपोरत्थाः बाधुशोऽनु

- १० ऋज्वनूजुमनोवचनकायगतात्थंविषयत्वरूपवत्तर्जितमा ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययंगळ अत्थाः विषयंगळ शब्दगतात्थंगळे वं तलु स्फुटमाणि द्विप्रकारंगळप्युव । अवेते बोधे ऋजुमतिमनःपर्ययं भानं पोथ्ये ऋजुमनविदं निर्व्योत्तितमाणि निष्पन्नमाणि त्रिकालविषयंगळप्य पवात्थंगळं चित्ति-
तिदं । ऋजुवचनविदं निष्पन्नमाणि त्रिकालविषयंगळप्यत्थंगळं नुडिदं । ऋजुभूतकायविदं निष्पन्न-
माणि त्रिकालविषयात्थंगळं कायव्यापारविदं माडिदवमरेवु । कालांतरविदं नेनेयलारवे वं
११ वेसगो बोधं वेसगोविदो इमरिणुं एंवितु शब्दगतात्थंगळमत्थंगतात्थंगळ मेवु द्विप्रकारंगळप्युव ।
विपुलमतिमनःपर्ययपराधर्मते ऋज्वनूजुमनोवचनकायगतात्थंगळं निर्व्योत्तितमाणि निष्पन्नमाणि
त्रिकालविषयपराधर्मंगळं चित्तिसिद्धुं नुडिदुं माडिदुं मरेवु कालांतरविदं नेनेयलारवे वं वेसगो-

विचिखः ॥४३९॥

विपुलमतिमनःपर्ययोऽपि यस्मान् ऋज्वनूजुमनोवचनकायगतात्थं जानाति तस्मात्कारणात् ऋजुमनो-

- २० यथाविषय ऋजुवचनगतात्थंविषयः ऋजुकायगतात्थंविषयः अनुजुमनोगतात्थंविषयः अनुजुवचनगतात्थंविषयः
अनुजुकायगतात्थंविषयवदंति पोडा । तपोः ऋजुविपुलमतिमनःपर्यययोः अर्थाः—विषयाः शब्दगता अर्थगताश्च
स्फुटं भवन्ति । तदथा—कटिचग्गोव ऋजुमनसा निर्वोतवः—निष्पन्नः त्रिकालविषयपराधान् चित्तिसिद्धान्
ऋजुवचनेन विदंतिउत्तानुत्तान् ऋजुकायेन निष्पन्नस्तान् कउवान्, विस्मृत्य कालान्तरेण स्मरुंमगतं, भास्य
पुण्ड्रि वा भूमीं विदंति तथा ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानं जानाति । तथा ऋज्वनूजुमनोवचनकायविदोऽपि-

- ११ अर्थको जाननेवाळा, सरळ वचनके द्वारा कहे गये मनोगत अर्थको जाननेवाळा और सरळकायसे दिये गये मनोगत अर्थको जाननेवाळा ॥४३९॥

विपुलमति मनःपर्यय छद् प्रकाशका हे—क्योंकि वह सरळ और कुटिल मन-वचन-
कायसे दिये गये मनोगत अर्थको जानता है । अतः ऋजु मनोगत अर्थको विषय करनेवाळा
ऋजु वचनगत अर्थको विषय करनेवाळा, ऋजुकायगत अर्थको विषय करनेवाळा तथा

- १० कुटिल मनोगत अर्थको विषय करनेवाळा, कुटिल वचनगत अर्थको विषय करनेवाळा तथा
कुटिल कायगत अर्थको विषय करनेवाळा इस तरह छद् प्रकाशका है । उन ऋजुमति और
विपुलमति मनःपर्ययके विषय शब्दगत और अर्थगत होते हैं । यथा—किसी सरळमनसे
निष्पन्न अर्थके विषयक वस्तु पदार्थोंके विषयमें चिन्तन किया, सरळ वचनसे निष्पन्न होते
पूर मन-वचनका कथन किया और सरळकायसे निष्पन्न होकर उनको किया । फिर दूसरे
११ मनः, कायका अर्थका उद्देश्य स्मरण नहीं कर सका । आकरके पूछता है अर्थका पुन-
वेदना है । वह ऋजुमति मनःपर्ययज्ञान जान लेता है । तथा सरळ या कुटिल मन-वचन-

अंगोपांगोदयात्कारणात् अंगोपांगनामरूपमोदयकारणविषयं मनोवर्गणास्करूपमिति चिह्नं
सिताष्टच्छदारविषयवन्ते द्रव्यमनं हृदयशोष्ठपुत्रु तत् स्फुटमाणि ।

नोइंद्रियमिति सण्णा तस्य हवे सेतइंद्रियाणं वा ।

वृत्तचाभावादो मण मणपञ्चं च तत्त हवे ॥४४४॥

५ नो इन्द्रियमिति संज्ञा तस्य भवेत् शोषेन्द्रियाणामिव व्यक्तत्वाभावात् मनो मनःपर्ययश्च तत्र
भवेत् ॥

मनः वा द्रव्यमनं शोषेन्द्रियाणामिव स्पर्शनादीन्द्रियगन्धेन संस्थाननिर्देशगन्धेन व्यक्तर-
मुंदते । तस्य वा द्रव्यमनस्य व्यक्तत्वाभावात् कर्णनासिकानयनादित्य व्यक्तत्वाभावादिबं नोइंद्रिय-
मिति संज्ञा भवेत् । ईपदिन्द्रियं नोइंद्रियमिति तस्य पर्ययपुमरुं । तत्र आ द्रव्यमनशोऽन मनः भावमनो-

१० ज्ञानमुं मनःपर्ययश्च भवेत् मनःपर्ययज्ञानं पुटदुगुं ।

मणपञ्चं च णाणं सत्तसु विरदेसु सत्तइडोणं ।

एगादिजुदेसु हवे यद्धंतविसिद्धचरणेषु ॥४४५॥

मनःपर्ययज्ञानं सप्तसु विरतेषु सप्तर्द्धोनामेकाविपुतेषु भवेत् यद्धमानविशिष्टाचरणेषु ॥

१५ सप्तर्द्धोनामेकाविपुतेषु बुद्धितपोवेकुम्बोपपरसबलाक्षीणमेध सप्तश्चद्विगुणोऽंशे द्विष्याविपुतरोऽंशे
वर्द्धमानविशिष्टाचरणेषु पेश्येतिष्यं विशिष्टाचारमनुच्छ महापुनियलोऽन मनःपर्ययश्च ज्ञानं
भवेत् मनःपर्ययज्ञानं पुटद्वे बुद्ध तात्पर्यं ।

इंद्रियणोइंद्रियजोगादि पेशिखत्तु उजुमदी होदि ।

णिरपेशिखत्तु विउलमदी ओहिं वा होदि णियमेण ॥४४६॥

२० इन्द्रियनोइंद्रिययोगादीनपेक्ष्य तु श्रजुमतभवति । निरपेक्ष्य च विपुलमतिरपेशिखत्तु
नियमेन ॥

अङ्गोपाङ्गनामकर्मोदयकारणात् मनोवर्गणास्करूपविकसिताष्टच्छदारविन्दसदृशं द्रव्यमनो हृदये उत्पद्यते
स्फुटम् ॥४४७॥

२५ तस्य द्रव्यमनसः शेषस्पर्शनादीन्द्रियाणामिव स्वाननिर्देशाभावात् व्यक्तराभावात् ईपदिन्द्रियपत्वेन
नोइन्द्रियमित्यनर्थनाम भवेत् । तत्र द्रव्यमनसि भावमनो मनःपर्ययश्चोत्पद्यते ॥४४८॥

प्रमत्तादिसप्तगुणस्थानेषु बुद्धिउपवीकुम्बाणीपधरमवनाक्षीणनामसप्तधिमध्ये एषद्विष्याविपुतेष्वेव
वर्द्धमानविशिष्टाचरणेषु मनःपर्ययज्ञानं भवति, नान्यत्र ॥४४९॥

अंगोपांग नामकर्मके उदयसे मनोवर्गणारूप स्फुटोकि द्वारा हृदयस्थानमें मनकी
उत्पत्ति होती है । यह खिळे हुए आठ गोलुङ्गोके कमलके समान होता है ॥४४३॥

१० उस द्रव्यमनका नो इन्द्रिय नाम सार्थक है क्योंकि जैसे स्पर्शन आदि इन्द्रियोंका स्थान
और विषय प्रकट है वैसे मनका नहीं है । इसलिये ईपत्त अर्थात् किंचित् इन्द्रिय होनेसे वसका
नाम नोइन्द्रिय है । उस द्रव्यमनमें भावमन और मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न होते हैं ॥४४४॥

१५ प्रमत्तसंयत्तसे द्वाणकपाय पर्यन्त सात गुणस्थानोंमें, बुद्धि-वप-विक्रिया-ओपध-रस-
पल और अशोण नामक सात श्रद्धियोंमेंसे एक-दो-तीन आदि श्रद्धियोंके धारी तथा जिनका
१५ विशिष्ट पारित्र पर्यमान होता है उन महापुनियोंमें ही मनःपर्ययज्ञान होता है, अन्यत्र
नहीं ॥४४५॥

पेरर मनबोळिहंत्यं ऋजुस्थितं ऋजु यथा भवति तथा स्थितं इहामविद्या इहामतिज्ञान-
दिवं मुन्नं लब्ध्वा पदेषु पश्चात् वक्तिकं ऋजुमतिना ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानदिवं प्रत्यक्षेण च
प्रत्यक्षमागि मनःपर्ययज्ञानी जानीते अरिगुं नियमात् नियमदिवं ।

चितियमचितियं वा अद्वं चितियमणेयमेयगयं ।

ओहिं वा विउलमदी लहिरुण विजाणए पच्छा ॥४४९॥

चितितमचितितं वा अद्वंचितितमनेकभेदगतं । अवधिबन्धुपुलमतिर्लब्ध्वा विजानाति
पश्चात् ॥

चितितममचितितममं मेणद्वंचितितममनितनेकभेदबोळिहं परकीयमनोगतार्थं मुन्नं
पदेषु वक्तिकं विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानमवधिज्ञानमेतत् प्रत्यक्षमागरिगुं ।

दव्वं खेचं कालं भावं पडि जीवलक्षितं रुपिं ।

उजुविउलमदी जाणदि अवरवरं मज्झिमं च तथा ॥४५०॥

द्रव्यं क्षेत्रं कालं भावं प्रति जीवलक्षितं रूपिणं । ऋजु-विपुलमती जानीतः अवतरं
मध्यमं च तथा ॥

द्रव्यं प्रति क्षेत्रं प्रति कालं प्रति भावं प्रति प्रत्येकं जीवलक्षितं जीवनिबं चितिसत्पदेषु
१९ रूपिणं पुद्गलं पुद्गलद्रव्यमं तत्संबंधिजीवद्रव्यमं । अवरवरं जघन्यममनत्कृष्टममं । तथा अति
मध्यमं च मध्यमममं ऋजुविपुलमती ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययगच्छेरं जानीतः अरिवपु ।

पराय मनसि ऋजुतया स्थितमर्थं इहामतिज्ञानेन पूर्वं लब्ध्वा पश्चात् ऋजुमतिज्ञानेन प्रत्यक्षतया
मनःपर्ययज्ञानी जानीते नियमात् ॥४४८॥

चिन्तितं अचिन्तितं अथवा अर्धचिन्तितं इत्यनेकभेदगतं परमनोगतार्थं पूर्वं लब्ध्वा पश्चाद्विपुलमतिमनः-
२० पर्ययः अवधिरेक प्रत्यक्षं जानाति ॥४४९॥

द्रव्यं प्रति क्षेत्रं प्रति कालं प्रति भावं प्रति प्रत्येकं जीवलक्षितं-जीवचिन्तितं, रूपि-पुद्गलद्रव्यं
तत्संबन्धिजीवद्रव्यं च जघन्यं उत्कृष्टं तथा मध्यमं च ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययो जानीतः ॥४५०॥

आत्माकी निर्मलता रूप विमुद्विसे उत्पन्न होता है । किन्तु विपुलमतिमनःपर्यय अविज्ञाय
विमुद्व होता है ॥४४७॥

१९ दूसरेके मनमें सरलता रूपसे विचार किया गया जो अर्थ स्थित है उसे पहले
इहामतिज्ञानके द्वारा प्राप्त करके पीछे ऋजुमतिज्ञानसे मनःपर्ययज्ञानी नियमसे प्रत्यक्ष
जानता है ॥४४८॥

चिन्तित, अचिन्तित, अथवा अर्धचिन्तित इत्यादि अनेक भेद रूप दूसरेके मनोगत
१० अर्थको पहले प्राप्त करके पीछे विपुल मति मनःपर्यय अवधिज्ञानकी तरह प्रत्यक्ष जानता
है ॥४४९॥

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावको लेकर जीवके द्वारा चिन्तित पुद्गल द्रव्य और उससे
सम्बद्ध जीवद्रव्यको जघन्य मध्यम उत्कृष्ट भेदको छिए हुए ऋजुमति और विपुलमति मनः-
पर्यय जानते हैं ॥४५०॥

पेरर मनबोळिहंत्यं ऋजुस्थितं ऋजु यथा भवति तथा स्थितं इहामविद्या इहामतिज्ञान-
दिवं मुनं लब्ध्वा पश्येत् पश्चात् वक्तुं ऋजुमतिना ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानदिवं प्रत्यक्षेण च
प्रत्यक्षमागि मनःपर्ययज्ञानी जानीते अरिगुं नियमात् नियमदिवं ।

चित्तिमचित्तियं वा अद्वं चित्तिमणेयमेयगयं ।

५ ओहिं वा विउलमदी लहिरुण विजाणए पच्छा ॥४४९॥

चितितमचितितं वा अद्वंचितितमनेकभेदगतं । अवधिवद्विपुलमतिर्लब्ध्वा विजानाति
पश्चात् ॥

चितितममचितितममं मेणद्वंचितितममनितनेकभेदबोळिहं परकीयमनोगतार्थं मुनं
पश्येत् पश्चात् विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानमवधिज्ञानमेतत् प्रत्यक्षमागरिगुं ।

१० दव्वं खेचं कालं भावं पडि जीवलक्षितं रुपिं ।

उजुविउलमदी जाणदि अवरवरं मज्झमं च तथा ॥४५०॥

द्रव्यं क्षेत्रं कालं भावं प्रति जीवलक्षितं रूपिणं । ऋजु-विपुलमती जानीतः अवरवरं
मध्यमं च तथा ॥

द्रव्यं प्रति क्षेत्रं प्रति कालं प्रति भावं प्रति प्रत्येकं जीवलक्षितं जीवचिन्तितं चित्तिसत्त्वदुर्ब-
१५ रूपिणं पुद्गलं पुद्गलद्रव्यं तत्संबंधिजीवद्रव्यं । अवरवरं जघन्यममनन्तृष्टममं । तथा अति
मध्यमं च मध्यमममं ऋजुविपुलमती ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययगणेरं जानीतः अरिवपु ।

परस्य मनसि ऋजुतया स्थितमर्थं इहामतिज्ञानेन पूर्वं लब्ध्वा पश्चात् ऋजुमतिज्ञानेन प्रत्यक्षतया
मनःपर्ययज्ञानी जानीते नियमात् ॥४४८॥

चिन्तितं अचिन्तितं अथवा अर्धचिन्तितं इत्यनेकभेदगतं परमनोगतार्थं पूर्वं लब्ध्वा पश्चाद्विपुलमतिमनः-
२० पर्ययः अवधिरिव प्रत्यक्षं जानाति ॥४४९॥

द्रव्यं प्रति क्षेत्रं प्रति कालं प्रति भावं प्रति प्रत्येकं जीवलक्षितं-जीवचिन्तितं, रूपि-पुद्गलद्रव्यं
तत्संबंधिजीवद्रव्यं च जघन्यं उत्कृष्टं तथा मध्यमं च ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययो जानीतः ॥४५०॥

आत्माकी निर्मलता रूप चिनुद्विसे उत्पन्न होता है । किन्तु विपुलमतिमनःपर्यय अवशिष्ट
चिनुद्व होता है ॥४४७॥

२५ दूसरेके मनमें सरलता रूपसे विचार किया गया जो अर्थ स्थित है उसे पहले
इहामतिज्ञानके द्वारा प्राप्त करके पीछे ऋजुमतिज्ञानसे मनःपर्ययज्ञानी नियमसे प्रत्यक्ष
जानता है ॥४४८॥

चिन्तित, अचिन्तित, अथवा अर्धचिन्तित इत्यादि अनेक भेद रूप दूसरेके मनोगत
अर्थको पहले प्राप्त करके पीछे विपुल मति मनःपर्यय अवधिज्ञानकी तरह प्रत्यक्ष जानता

१० है ॥४४९॥

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावको लेकर जीवके द्वारा चिन्तित पुद्गल द्रव्य और उससे
सम्बद्ध जीवद्रव्यको जघन्य मध्यम उत्कृष्ट भेदको लिए हुए ऋजुमति और विपुलमति मनः-
पर्यय जानते हैं ॥४५०॥

पेरर मनबोळिहंत्यंमं ऋजुस्थितं ऋजु यथा भवति तथा स्थितं इहामविद्या ईहामतिज्ञान-
दिवं मुन्नं लब्ध्वा पश्येत् पश्चात् बहिरं ऋजुमतिना ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानदिवं प्रत्यक्षेण च
प्रत्यक्षमाणि मनःपर्ययज्ञानो जानीते अरिमुं नियमात् नियमदिवं ।

चित्तियमचितियं वा अहं चित्तियमणेयमेयमयं ।

१ ओहिं वा विउलमदी लहिरुण विजाणए पच्छा ॥४४९॥

चितितमचितितं वा अहंचितितमनेकभेदगतं । अवधिविपुलमतिलब्ध्वा विजानाति
पश्चात् ॥

चितितममचितितममं भेदहंचितितममनितनेकभेदबोळिहं परकीयमनोगतार्थंमं मुन्नं
पश्येत् बहिरं विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानमवधिज्ञानमेतंत प्रत्यक्षमाणरिमुं ।

१० दच्चं रोचं कालं भावं पडि जीवलक्षितं रुविं ।

उजुविउलमदी जाणदि अवरवरं मज्झिमं च तथा ॥४५०॥

इत्थं रोचं कालं भावं प्रति जीवलक्षितं कृपिणं । ऋजु-विपुलमती जानीतः अवरवरं
मध्यमं च तथा ॥

इत्थं प्रति रोचं प्रति कालं प्रति भावं प्रति प्रत्येकं जीवलक्षितं जीर्वनिवं चित्तिसत्त्वदुर्गं
११ हरिणं पुद्गलं पुद्गलद्वयं तत्तत्तदधिजीवद्वयं । अवरवरं जघन्यमुमनूत्कृष्टमुमं । तथा अति
मध्यमं च मध्यममुमं ऋजुविपुलमती ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययगच्छेत् जानीतः अरिविमुं ।

पेरर मनवि ऋजुता स्थितमयं ईहामविज्ञानेन पूर्वं लब्ध्वा पश्चात् ऋजुमतिज्ञानेन प्रत्यक्षमा
कल्पवृक्षद्वारी जानीते नियमात् ॥४४८॥

विनिर्दिष्टं विनिर्दिष्टं यथा अर्थविनिर्दिष्टं इत्यनेकभेदगतं परमनोगतार्थं पूर्वं लब्ध्वा पश्चाद्विपुलमतिमनः
१० पश्येत् बहिरं पश्येत् जानाति ॥४४९॥

इत्थं प्रति रोचं प्रति कालं प्रति भावं प्रति प्रत्येकं जीवलक्षितं-जीवचित्तितं, रूपि-पुद्गलद्वयं
११ विनिर्दिष्टं विनिर्दिष्टं च अहं विनिर्दिष्टं तथा मध्यमं च ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययो जानीतः ॥४५०॥

पश्चात्तद्विनिर्दिष्टता रूप विमुक्तिमे उत्पन्न होता है । किन्तु विपुलमतिमनःपर्यय अतिज्ञ
विमुक्त होता है ॥४४९॥

११ दूसरेके मनने सरलता रूपसे विचार किया गया जो अर्थ स्थित है उसे पहले
ईहामविज्ञानके द्वारा प्राप्त करके पीछे ऋजुमतिज्ञानसे मनःपर्ययज्ञानो नियमसे प्रत्यक्ष
जाना है ॥४४८॥

विनिर्दिष्ट, विनिर्दिष्ट, यथा अर्थविनिर्दिष्ट इत्यादि अनेक भेद रूप दूसरेके मनोद्वय
१० पश्येत् बहिरं पश्येत् करके पीछे विपुलमति मनःपर्यय अवधिज्ञानकी वरद प्रत्यक्ष जाना
११ है ॥४५०॥

इत्थं, इत्थं, इत्थं, यथा अर्थ विनिर्दिष्ट द्वारा विनिर्दिष्ट पुद्गल द्वय और रूप
१० पश्येत् बहिरं पश्येत् करके मध्यम अहं भेदको विपुलमति और विपुलमति मनः
११ पश्येत् बहिरं पश्येत् ॥४५०॥

पेरर मनबोद्धिहृत्पमं ऋजुस्थितं ऋजु मया भवति तथा स्थितं इहामविद्या ईहामतिज्ञान-
दिवं मुनं लब्ध्वा पश्येत् पश्चात् बहिरं ऋजुमतिना ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानदिवं प्रत्यक्षेण च
प्रत्यक्षमागि मनःपर्ययज्ञानी जानीते अरिगुं नियमात् नियमविवं ।

चित्तिमचित्तियं वा अद्वं चित्तिमणेयमेयगयं ।

ओहिं वा विउलमदी लहिरुण विजाणए पच्छा ॥४४९॥

चित्तितमचित्तितं या अद्वंचित्तितमनेकभेदगतं । अवधिविपुलमतिर्लब्ध्वा विज्ञानाति
परचात् ॥

चित्तितममचित्तितममं भेदद्वंचित्तितममनितनेकभेदबोद्धिहृत् परकीयमनोगतार्थमं मुनं
पश्येत् पश्चात् विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानमवधिज्ञानमेतत् प्रत्यक्षमागरिगुं ।

दधं रोचं कालं भावं पडि जीवलक्षितं रुचिं ।

उज्जुविउलमदी जाणदि अवरवरं मज्झिमं च तथा ॥४५०॥

दधं रोचं कालं भावं प्रति जीवलक्षितं रुचिं । ऋजु-विपुलमती जानीतः अवरवरं
मध्यमं च तथा ॥

दधं प्रति रोचं प्रति कालं प्रति भावं प्रति प्रत्येकं जीवलक्षितं जीवनिर्द्वं चित्तितलपदुर्द्वं
१९ कतिचं पुरगत् पुरगत्तद्व्यमं तत्तत्तद्विरोधतद्व्यमं । अवरवरं जघन्यमममनुकृष्टममं । तथा अति
मध्यमं च माध्यमममं ऋजुविपुलमती ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययगच्छेत् जानीतः अरिगुं ।

पेरर मनवि ऋजुता स्थितमर्धं इहामविज्ञानेन पुनं लब्ध्वा परचात् ऋजुमतिज्ञानेन प्रत्यक्षमा
कलत्तत्तद्विरोधतद्विरोधं निवर्तय ॥४४८॥

विनिन्द, अविनिन्द, अथवा अर्धविनिन्द इत्यादि अनेक भेद परमनोगतार्थं पुनं लब्ध्वा पश्चाद्विपुलमतिमनः
२० पश्येत् पश्चात् विपुलमतिमनःपर्यय जानीति ॥४४९॥

दधं प्रति रोचं प्रति कालं प्रति भावं प्रति प्रत्येकं जीवलक्षितं-जीवचिन्तितं, कति-पुरगत्तद्व्यमं
२१ पश्येत् पश्चात् विपुलमतिमनःपर्यय जानीतः ॥४५०॥

अज्ञानाको निर्मलता रूप विपुलमतिमनःपर्यय होता है । किन्तु विपुलमतिमनःपर्यय अविज्ञान
विपुल होता है ॥४४८॥

२२ दूसरेके मनमें सरलता रूपमें विचार किया गया जो अर्थ स्थित है उसे पश्ये
ईहामविज्ञानके द्वारा प्राप्त करके पीछे ऋजुमतिज्ञानसे मनःपर्ययज्ञानी नियमसे प्रत्यक्ष
जानीत है ॥४४८॥

विनिन्द, अविनिन्द, अथवा अर्धविनिन्द इत्यादि अनेक भेद रूप दूसरेके मनमें
२३ पश्येत् पश्चात् विपुलमतिमनःपर्यय जानीति ॥४४९॥

दधं, रोचं, कालं, भावं पीछे जीवलक्षितं द्वारा विनिन्द पुरगत्तद्व्यमं और दूसरे
पश्येत् पश्चात् विपुलमतिमनःपर्यय जानीति ॥४४९॥

मणद्वयवर्गणाणमणंतिमभागेण उज्जुगउककस्सं ।

खंडिदेमेत्तं होदि हु विउलमदिस्सावरं दब्बं ॥४५२॥

मनोद्वयवर्गणाणामनंतैरुभागेण ऋजुमतेच्छुद्धं । खंडितमात्रं भवति एतु विपुल-
मतेरवरं द्रव्यं ॥

- ५ मनोद्वयवर्गणेष्वनंतैरुभागां ध्रुवहारप्रमाणमरुहु ज १ मो ध्रुवहार भागविं ऋजुमति-
स स
पर्ययज्ञानविषयोरुष्टद्रव्यमं खंडितरत्नयुवोदेकलंडं तावन्मात्रं खलु स्फुटमाणि विपुलमतिमन-
पर्ययज्ञानविषयजघन्यद्रव्यमरुहु स ० १६ ख ६ य

६१११११११११

० ०

अद्वयं कस्माणां समयपचद्वं विविस्ससोवचयं ।

ध्रुवहारेणिगिवारं भजिदे विदियं हवे दब्बं ॥४५३॥

- १० अष्टानां कर्मणां समयप्रवद्धो विविस्ससोपचयो । ध्रुवहारेणैकवारं भाजिदे द्वितीयं भवेद्द्रव्यं ।
ज्ञानावरणाष्टविधकर्मसामान्यसमयप्रवद्धं विगतविलसोपचयमवेकवारं ध्रुवहारविं
भागिसत्पुष्टिरलेकखंडमात्रं विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानविषयद्वितीयद्रव्यधिकल्पमरुहु स ०-ख स
९ ३ ३

मनोद्वयवर्गणाधिकल्पानामनंतैरुभागेण ध्रुवहारेण ज १ ऋजुमतिविषयोत्कृष्टद्रव्ये खंडिते तावन्मात्रं
तत्पुष्टं विपुलमतिविषयजघन्यद्रव्यं भवति स ० १६ ख १ ६ य ॥४५२॥

६१११११११११

० ०

- १५ अष्टमं सामान्यमयप्रवद्धं विविस्ससोपचये ध्रुवहारेण एकवारं भक्ते यदेकखण्डं तद्विपुलमतिविषय-
द्वितीयद्रव्यं भवति— स ० ३ ३ ख स ॥४५३॥

मनोद्वय वर्गणाके विकल्पोंके अनन्तवें भागरूप ध्रुवहारसे ऋजुमतिके विषय उत्कृष्ट-
द्रव्यमें भाग देनेपर जो प्रमाण आता है उतना विपुलमतिके विषयभूत जघन्यद्रव्यका परि-
माण होता है ॥४५२॥

- २० आठों कर्मोंके विविस्सोपचय रहित सामान्य समय प्रवद्धमें ध्रुवहारसे एक बार भाग
देनेपर जो एक खण्ड आता है यह विपुलमतिका विषय द्वितीयद्रव्य होता है ॥४५३॥

मणद्वयवर्गणाणमणंतिमभागेण उज्जुगउक्कसं ।

खंडिमेत्तं होदि हु विउलमदिस्सावरं दव्वं ॥४५२॥

मनोद्वयवर्गणानामनंतैरुभागेन ऋजुमतेष्टकृष्टं । खंडितमात्रं भवति सन् विजु-
मतेरवरं द्रव्यं ॥

५ मनोद्वयवर्गणैर्गणनंतैरुभागे ध्रुवहारप्रमाणमरकु ज १ मो ध्रुवहार भागद्विवं ऋजुमति-
स १

पथ्यंयज्ञानविषयोत्कृष्टद्रव्यं खंडिसुतिरलावुवोदेकखंडं तावन्मात्रं सन् स्फुटमाणि विपुलमतिमन-

पथ्यंयज्ञानविषयजघन्यद्रव्यमवकु स ० १६ ख ६ प

६११५११५०९

० ०

अट्ठण्हं कम्मणां समयपयदं विविस्ससोवचयं ।

ध्रुवहारेणिगिवारं भजिदे विदियं हवे दव्वं ॥४५३॥

१० अष्टानां कर्मणां समयप्रबद्धो विविस्ससोपचयो । ध्रुवहारेणैकवारं भजिदे द्वितीयं भवेद्द्रव्यं ।

ज्ञानावरणाद्यष्टविधकर्मसामान्यसमयप्रबद्धं विमलविस्ससोपचयमदेकवारं ध्रुवहारेणै-
भागिसत्पटुतिरलेकखंडमात्रं विपुलमतिमनःपथ्यंयज्ञानविषयद्वितीयद्रव्ययिकल्पमरकु स ०-ख ६
९ ० ०

मनोद्वयवर्गणाधिकल्पानामनंतैरुभागेन ध्रुवहारेण ज १ ऋजुमतिविषयोत्कृष्टद्रव्ये खंडिते मास्मानं

सत्स्फुटं विपुलमतिविषयजघन्यद्रव्यं भवति स ० १६ ख १ ६ प ॥४५२॥

०

६११५११५१

० ०

१५ अष्टकर्मसामान्यसमयप्रबद्धे विविस्ससोपचये ध्रुवहारेण एकवारं भक्ते यदेकखंडं तद्विपुलमतिविषय-

द्वितीयद्रव्यं भवति— स ० ० ० ख ६ ॥४५३॥

९

मनोद्वयवर्गणाधिके विकल्पोके अनन्तवर्गे भागरूपे ध्रुवहारसे ऋजुमतिके विषय उत्कृष्ट-
द्रव्यमेव भाग द्वेनेपर जो प्रमाण आता है उतना विपुलमतिके विषयभूत जघन्यद्रव्यका परि-
माण होता है ॥४५२॥

२० आठों कर्मोंके विस्ससोपचय रहित सामान्य समय प्रबद्धमें ध्रुवहारसे एक बार भाग
द्वेनेपर जो एक खण्ड आता है वह विपुलमतिका विषय द्वितीयद्रव्य होता है ॥४५३॥

मणद्वयवर्गणाणामणंतिमभागेण उज्जुगउत्तकस्सं ।

खंडिदमेत्तं होदि हु विउलमदिस्सावरं दब्बं ॥४५२॥

मनोद्वयवर्गणाणामणंतेरुभागेण ऋजुमतेरुत्तं । संडितमानं भवति सलु विजु-
मतेरवरं दब्बं ॥

मनोद्वयवर्गणाणामणंतेरुभागे ध्रुवहारप्रमाणमारु ^{ज १} मो ध्रुवहार भागिद्वं ऋजुमति-
स स

पथ्यंयजानविषयोत्तंरुत्तद्वयं खंडिमुत्तिरलायुवोवेरुत्तं तावन्मात्रं सलु स्फुटमाणि विपुलमतिन-

पथ्यंयजानविषयजघन्यद्वयमवहुं ॥ ० १६ स ६ प

६।१।५११५०९

अट्टण्हं कम्माणं समयप्रबद्धं विविस्ससोचयं ।

ध्रुवहारेणिगिवारं भजिदे विदियं हवे दब्बं ॥४५३॥

१०

अष्टानां कर्मणां समयप्रबद्धो विविस्ससोपचयो । ध्रुवहारेणैकवारं भाजिदे द्वितीयं भवेद्दब्बं ।

ज्ञानावरणाद्यविषयकर्मसामान्यसमयप्रबद्धं विगतविस्ससोपचयमदेकवारं ध्रुवहारि-
भागिसत्पडुतिरलेकखंडमात्रं विपुलमतिमनःपथ्यंयजानविषयद्वितीयप्रबद्धविकल्पमस्तु स ०-स ४ ९ ४ ४

मनोद्वयवर्गणाधिकल्पानामणंतेरुभागेण ध्रुवहारेण ज १ ऋजुमतिविषयोत्तंरुत्तद्वये सगिते यावन्मात्रं

सस्फुटं विपुलमतिविषयजघन्यद्वयं भवति स ० १६ स १ ६ प ॥४५२॥

६।१।५११५।९

१५

अष्टकर्मसामान्यसमयप्रबद्धे विविस्ससोपचये ध्रुवहारेण एकवारं भक्ते यदेकखंडं तद्विपुलमतिविषय-
द्वितीयद्वयं भवति— स ० ० ० स स ॥४५३॥

मनोद्वयवर्गणाके विकल्पोके अनन्तवै भागरूप ध्रुवहारसे तज्जुमतिके विषय वत्तु-
द्रव्यमें भाग देनेपर जो प्रमाण आता है उतना विपुलमतिके विषयभूत जघन्यद्वयका परि-
माण होता है ॥४५२॥

२०

आठों कर्मों के विस्ससोपचय रहित सामान्य समय प्रबद्धमें ध्रुवहारसे एक बार भाग
देनेपर जो एक खण्ड आता है वह विपुलमतिका विषय द्वितीयद्वय होता है ॥४५३॥

मणद्वयवर्गणाणामन्तिमभागेन उज्जुगउत्तसं ।

खंडिदमेत्तं होदि हू विउलमदिससारं दव्वं ॥४५२॥

मनोद्वयवर्गणानामन्तिमभागेन ऋजुमोदकृष्टं । तद्विजितमात्रं भवति तत्तु गितु
मतेरवरं द्रव्यं ॥

५ मनोद्वयवर्गणैर्गणकृतं तैरुभाषं ध्रुवहारप्रमाणमाहु ज १ मो ध्रुवहार भागिरे ऋजुमति
स स
पथ्यं यज्ञानविषयो रूद्रद्रव्यं चंडिमुतिरलाजुवेरुत्तं तावन्मात्रं तलु स्रुटमाणि विपुलमतिमनः
पथ्यं यज्ञानविषयजपन्यद्रव्यमवहुं स ० १६ स ६ ५

६१११५११५०९

अदृष्टं कम्माणं समयप्रवद्धं विविस्ससोचनयं ।

ध्रुवहारेणिगिवारं भजिदे चिदियं हवे दव्वं ॥४५३॥

१० अद्यान्तं कर्मणां समयप्रवद्धो विविस्ससोपचयो । ध्रुवहारेणैकवारं भाजिदे द्वितीयं भवेद्दमं ।
ज्ञानावरणाद्यविषयकर्मसामान्यसमयप्रवद्धं विगतविस्ससोपचयमदेकवारं ध्रुवहारं
भागिसत्त्वबुद्धिरलेकखंडमात्रं विपुलमतिमनःपथ्यं यज्ञानविषयद्वितीयद्रव्यविकल्पमसक्तुं स ० स ४
९ ३ ४

मनोद्वयवर्गणाधिकल्पानामानन्तिमभागेन ध्रुवहारेण ज १ ऋजुमतिविषयो रूद्रद्रव्ये सगिरिते यावन्मात्रं
स स
सत्स्रुटं विपुलमतिविषयद्रव्यं भवति स ० १६ स १ ९ ५ ॥४५४॥

६१११११५१९

१५ अष्टकर्मसामान्यमयप्रवद्धे विविस्ससोपचये ध्रुवहारेण एकवारं भजते यदेकखण्डं तद्विपुलमतिविषयं
द्वितीयद्रव्यं भवति— स ० ० ० स ४ स ॥४५५॥

मनोद्वयवर्गणाके विकल्पोके अनन्तत्वे भागरूप ध्रुवहारसे काजुमतिके विषय वस्तु
द्रव्यमें भाग देनेपर जो प्रमाण आता है उतना विपुलमतिके विषयभूत जघन्यद्रव्यका परि-
माण होता है ॥४५२॥

२० आठों कर्मोंके विस्ससोपचय रहित सामान्य समय प्रवद्धमें ध्रुवहारसे एक बार भाग
देनेपर जो एक खण्ड आता है यह विपुलमतिका विषय द्वितीयद्रव्य होता है ॥४५३॥

मनुष्यक्षेत्रं समचतुरस्रघनप्रतारप्रमितं विपुलमतिमनःपद्म्यं यज्ञानविषयसर्वात्कृष्टक्षेत्रप्रमाणमेतु
समुद्दिष्टं अनादिनिधनार्थबोद्धुं पेठल्पदुष्टवपुदे कारणमाणि मानुषोत्तरपद्म्यं ताभ्यन्तरदिक्कर्म
नाल्वतपुलक्षायोजनप्रमाणमवर समचतुरस्रक्षेत्रघनप्रतारप्रमाणं केकोळल्पदुष्टदेके बोडे वा मानुषो-
त्तरपद्म्यं तदिदं पोरगण नाल्कुं कोणंगळोळिहं तिप्यंचदममरं चित्तिसिनुं विपुलमतिमनःपद्म्यं-
१ ज्ञानमरिगुमपुदे कारणमाणि ।



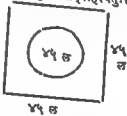
दुगतिगभवा हु अवरं सचट्टभवा हवन्ति उक्कस्सं ।

अडणवभवा हु अवरमसंखेज्जं विउलउक्कस्सं ॥४५७॥

द्वित्रिभवाः खलु जघन्यं सप्ताष्ट भवा भवन्ति उत्कृष्टं । अष्टनवभवाः खलु जघन्यमसंख्यातं

विपुलोत्कृष्टं ॥
कारणं प्रति श्रजुमतिमनःपद्म्यं यज्ञानविषयजघन्यं द्वित्रिभवंगळु खलु स्फुटमाणि अप्पु
उत्कृष्टदिदं समष्टभवंगळुपुपु । विपुलमतिमनःपद्म्यं धरके जघन्यमष्टनवभवंगळुविषयमपुपु
उत्कृष्टमसंख्यातसमयमपुपुमावोडं पत्त्यासंख्यातैकभागमायमपुकुं ५

भवति न तु युक्तस्य । कुतः ? यतस्तत्पञ्चत्वारिंशत्संख्येयं यज्ञानप्रमाणं समचतुरस्रघनप्रतारं मनःपद्म्यं विषयोत्कृष्ट-
क्षेत्रं समुद्दिष्टं ततः कारणात् तदपि कुतः ? मानुषोत्तरपद्म्यं द्विचतुःकोणस्थितवियं गमराणां परचिन्तितानां
१ उत्कृष्टविपुलमतेः परिश्रमात् ॥४५६॥



कारणं प्रति श्रजुमतेविषयजघन्यं द्वित्रिभवाः स्फुः । उत्कृष्टं सप्ताष्टभवाः स्फुः । विपुलमतेविषयजघन्यं
अष्टनवभवाः स्फुः । उत्कृष्टं पत्त्यासंख्यातैकभागः स्यात् ५ ॥४५७॥

मनुष्यलोकके विदग्धभक्ता निरुचयक हे गोलाईका नहीं । अर्थात् मनुष्यलोक तो गोलाकार
है । यह नहीं लेना चाहिए । क्योंकि पैतालीस लाख योजन प्रमाण समचतुरस्र घनप्रतार
अर्थात् समान चौकोर घनप्रतार रूप मनःपद्म्यं का उत्कृष्ट विषयक्षेत्र कहा है । अर्थात् पैतालीस
लाख योजन लम्बा उदना ही चौड़ा लेना । क्योंकि मानुषोत्तर पर्वतके बाहर चारों कोनोंमें
स्थित देवी और त्रिपंचोंके द्वारा चिन्तित अर्थको भी उत्कृष्ट विपुलमति जानता है ॥४५६॥
कालका अपेक्षा श्रजुमति का जघन्य विषय दो तीन भव होते हैं । और उत्कृष्ट सात-
आठ भव होते हैं । विपुलमति का जघन्य विषय आठ-नौ भव होते हैं और उत्कृष्ट पत्त्यका
असंख्यातवा भाग है ॥४५७॥

श्री० जोरहाडे					
स० १ क० ९। ० ० ०	त स २९ ० ० ०	४५००००००		भा. ० ० ०	उत्पन्न विन्यासमिति
स०	त स				
स० १६ स	६ प	जोयण । ८।९	भय । ८।९	८०० ३००	अधन्य
६।१।प।११।प।९					
स० १६ स ६ प		जोयण । ७।८	भय । ७।८	८० ३०० ० ० ० ८	उत्पन्न विन्यासमिति
६।१।प।११।प					
स० १६ स		गाऊय । २।३	भव २।३	३०० भाव	अधन्य ॥०
ब्रह्म		क्षेत्र	काल		
संपुर्णं तु समग्रं केवलमसवत्त सद्व्यपकरणम्					
लोयालोयनिदि					

संपुष्णं तु समग्रं केवलमसत्त सत्त्वभावगयं ।
लोयालोयवित्तिमिरं केवलण्णं

संपूर्णं तु समग्रं केवलमसपत्नसत्त्वं भावगतं । लोकादयो विविधाः ।

जीवद्रव्यव शक्तिगतज्ञानाविभागप्रतिष्ठेवंग्रन्थेनितोक्तं ॥४३०॥

कारणमागि संपूर्णमुं सोहनीययोप्यतिरायनिरवशेषधर्मपुद्गरिदं केवलमुं । सपत्न्यगृह्य घातिचतुष्टयप्रशयादिदं क्रम-
विदमुं समग्रमुं इन्द्रियसत्तापनिरपेक्षमप्युद्गरिदं केवलमुं । कारणविदमसपत्न्यमुं लोकालोकगञ्जोन्मिषगत-
करणव्ययधानरहितमागि सकलपदार्थगतमप्युद्गारणविदमसपत्न्यमुं ।

जीवद्रव्यस्य शक्तिगतसर्वज्ञानाविभागप्रतिच्छेदानां व्यक्तित्वव्याप्तिसंभूतम् । मोहनीयजीवन्तिरायनिरप-
दप्रतिहतशक्तियुक्तत्वात् निवृत्तलक्षणाच्च समग्रम् । इन्द्रियसहायनिरपेक्षत्वात् केवलम् । पातिचतुष्टयप्रधाना
व्यवधानरहितत्वेन सकलपदार्थगतत्वात् अतपत्नम् । लोकालोकांगच्छिन्नव्यगत-
जीवद्रव्येण शक्तिरूपं जीवः सः सर्वज्ञानके अविभागप्रतिच्छेदेनैव निवृत्तः केवलज्ञान-
न सम्पूर्णः है । मोहनीय और जीवः

जीवद्रव्यके शक्तिरूप जो सब ज्ञानके अविभागावस्थितिमें है वे सब व्यक्त हो जानेसे केवलज्ञान सम्पूर्ण है। मोहनीय और वीर्यान्तरायका सम्पूर्ण क्षय होनेसे केवलज्ञानकी शक्ति वैरोध और निश्चल है इसलिए वह समग्र है। इन्द्रियोंकी सहायता न लेनेसे केवल है। चार पाँचवा कर्मोंका अत्यन्त क्षय हो जानेसे तथा क्रम और इन्द्रियोंके व्यवधानसे रहित होनेके कारण समस्त पदार्थोंको जाननेसे असंपन्न है। लोक और अलोकको प्रकाशित करनेवाला ऐसा यह केवलज्ञान जानना ॥४६०॥

पल्लासंखधर्णगुलद्वदसेदितिरिक्त्वगदिविभंगजुहा ।

गरसहिदा किंचूनाचदुगदीवेभंगपरिमाणं ॥४६३॥

पत्यासंख्यातधर्णागुलहतथेणितिरिक्त्वगति विभंगयुताः । नरसहिता किंचूना चतुगतिविभंग-
ज्ञानिपरिमाणं ॥

१ पत्यासंख्यातधर्णागुलगुणित १ जगच्छ्रेणिमात्रं तिर्य्यचविभंगज्ञानिगळप्पद - ६ प नर-

सहिता इति तिर्य्यचविभंगज्ञानिगळोक्तु मनुष्यविभंगज्ञानिगळु संख्यातप्रमितरूप १ रयगर्गळ संख्येयं
साधिकं माडि - १ प दो राशियमं सम्यग्दृष्टिगर्गळं किंचिदूनधर्णागुलद्वितीयमूलगुणितजग-

च्छ्रेणिप्रमितसामान्यनारकर संख्येयमं १-२-१ सम्यग्दृष्टिगर्गळं किंचिदून ज्योतिष्कर संख्येयं
नोडि साधिकगुण्य देवगतिजर संख्येयुमनितुं नाल्कुं गतिगळ विभंगज्ञानिगळ संख्येयं कूडिदो

१० चतुगंतिसमस्तविभंगज्ञानिगळ संख्येयवकुं = १

४ । ६५-१

सण्णाणरासिपंचयपरिहोणो सव्वजीवरासी हु ।

मदिसुद अण्णाणीणं पत्तेयं होदि परिमाणं ॥४६४॥

सदज्ञानराशिपंचकपरिहोणः सव्वजीवराशिः खलु । मतिश्रुताज्ञानिना प्रत्येकं भवति
परिमाणं ॥

१५ पत्यासंख्यातधर्णागुलहतजगच्छ्रेणिमात्रतिर्य्यचः-६ प संख्यातमनुष्याः १ सम्यग्दृष्टपूनधर्णागुलद्वितीय-

मूलगुणितजगच्छ्रेणिमात्रनारकाः-२-सम्यग्दृष्टपूनज्योतिष्करसंख्यासाधिकदेवाः १-मिलित्वा चतु-

= १-

४ । ६५ = १

मंडिविभंगज्ञानिगळस्या भवति १-

= १-

॥४६३॥

४ । ६५ = १

पश्यके असंख्यातवर्गे भागसे गुणित धर्णागुलसे जगतथ्रेणिको गुणा करनेपर जितना
प्रमाण हो उतने तिर्य्यच, संख्यात मनुष्य तथा धर्णागुलके द्वितीय मूलसे जगतथ्रेणिको गुणा
२० करनेपर जितना प्रमाण हो उतने नारकियोंके प्रमाणमेंसे सम्यग्दृष्टी नारकियोंका प्रमाण
घटानेसे जो शेष रहे उतने नारकी तथा ज्योतिषी देवोंके परिमाणमें भयनवासी, व्यन्तर और
धैर्यानिष्ठ देवोंका प्रमाण मिलानेपर जो सामान्यदेव राशिका प्रमाण होता है उसमें सम्यक्-
दृष्टि देवोंका परिमाण घटानेपर जो शेष रहे उतने देव । इन सब तिर्य्यच, मनुष्य, नारकी
और देवोंके प्रमाणको जोड़नेपर चारों गतिके विभंगज्ञानियोंको संख्या होती है ॥४६३॥

२५ १. ५ न साधिकसंख्यातजगच्छ्रेण्यदेवाः ।

गंभीररचनेन परिरंभेयं विडितं निरसितुवनेयुव प्रा-१ रंभसि गोम्मटवृत्ति मुपांभो
वियिनोडिगे मोहवञ्चाचलमं ॥

इत्याचार्योनेमिबन्धरचिताया गोम्मटसारापरनामग्रन्थसंग्रहणी जीवतत्त्वप्रदीपिकाया जीवकाण्डे
विंशतिप्ररूपणानु ज्ञानमार्गणाप्ररूपणानाम द्वादशोऽधिकारः ॥ १२ ॥

- ५ इस प्रकार आचार्य श्री नेमिचन्द्र विरचित गोम्मटसार अपर नाम पंचसंग्रहकी भगवान् भट्टन्त देव
परमेश्वरके सुन्दर चरणकमलोंकी वन्दनासे प्राप्त पुष्पके पुंजस्वरूप राजगुरु मण्डकाचार्य
महापाद श्री भगवन्मन्दी सिद्धान्त चक्रवर्तीके चरणकमलोंकी भूमिसे शोभित छटादराजे
श्री केशवपर्णीके द्वारा रचित गोम्मटसार कर्णाटगुप्ति जीवतत्त्व प्रदीपिकाकी
अनुसारिणी संस्कृतटीका तथा उसकी अनुसारिणी पं. टोडरमकरचित
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका नामक मापाटीकाकी अनुसारिणी हिन्दी भाषा
टीकामें जीवकाण्डकी बीस प्ररूपणामोंमेंसे ज्ञानमार्गणा प्ररूपणा
नामक चारहवाँ अधिकार सम्पूर्ण हुआ ॥ १३ ॥

प्रमत्ताप्रमत्तरोक्तं संज्वलनकथायंगच्छो सर्वधातिस्पष्टकंगच्छदयाभावलक्षणशयमुं उच्यते
 निरुद्ध उचरितनिरुद्धकंगच्छदयाभावलक्षणमुपपन्नमुनिमु चारित्रमोहनीयशयोपशममुं वादरसं
 ननदेनगतिस्पष्टकच्छे संयमाविरोधविद्वमद्वयोक्तं सामाधिकछेदोपस्थापनसंयमंगच्छपुत्रमा गु
 स्थापनद्वयोक्तं परिहारगुद्विसंयममममकुं । सूक्ष्मकृष्टिकरणानिवृत्तिपम्यंतं वादरसंज्वलनोदयसि
 १० द्रव्यानिवृत्तिकरणदोक्तं सानाधिकछेदोपस्थापनसंयमंगच्छपुत्र । सूक्ष्मकृष्टिकृष्टविनिर्दं संज्वल
 मोहोदयविद्व सूक्ष्मसांख्यसंयमममकुं । चारित्रमोहनीयसंज्वलपतामविद्वमुं यथास्थापनसंयमममकुं
 चारित्रमोहनीयनिरुद्धोदयविद्व यथास्थापनसंयमं क्षीणकथायाविगुणस्थानप्रयवोक्तं नियमविद्वममकुं
 मंति प्रमत्ताप्रमत्तं निरुद्धसंयमममकुं पुस्त्यमोक्तयमने मंदवगाथासूत्रद्वयविद्वं विगणं माद्विरस

वादरसंज्वलनगुदए वादरसंज्वलनसंयमं सु परिहारो ।

१० पमद्विरसं गुदमुदए गुदमुो संज्वमगुणो होदि ॥४६७॥

वादरसंज्वलनोदये वादरसंयमममकुं रालु परिहारः । प्रमत्ततरयोः सूक्ष्मोदये सूक्ष्मः सयम
 गुणो ॥४६७॥

वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारोपस्थापनसंयममकुं वादरसंज्वलन सामाधिकछेदोप
 स्थापनसंयमममकुं गुदमुदयमकुं वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयमं प्रमत्ताप्रमत्तरोदयमकुं

१० परिहारगुद्विसंयमममकुं । सूक्ष्मकृष्टिकृष्टसंज्वलनलोभोदयमागुत्तरिलु सूक्ष्मसांख्यसंयमम

१० ॥४६७॥ वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयममकुं वादरसंज्वलन सामाधिकछेदोप
 स्थापनसंयमममकुं गुदमुदयमकुं वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयमं प्रमत्ताप्रमत्तरोदयमकुं

१० परिहारगुद्विसंयमममकुं । सूक्ष्मकृष्टिकृष्टसंज्वलनलोभोदयमागुत्तरिलु सूक्ष्मसांख्यसंयमम

१० ॥४६७॥ वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयममकुं वादरसंज्वलन सामाधिकछेदोप
 स्थापनसंयमममकुं गुदमुदयमकुं वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयमं प्रमत्ताप्रमत्तरोदयमकुं

१० परिहारगुद्विसंयमममकुं । सूक्ष्मकृष्टिकृष्टसंज्वलनलोभोदयमागुत्तरिलु सूक्ष्मसांख्यसंयमम

१० ॥४६७॥ वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयममकुं वादरसंज्वलन सामाधिकछेदोप
 स्थापनसंयमममकुं गुदमुदयमकुं वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयमं प्रमत्ताप्रमत्तरोदयमकुं

१० परिहारगुद्विसंयमममकुं । सूक्ष्मकृष्टिकृष्टसंज्वलनलोभोदयमागुत्तरिलु सूक्ष्मसांख्यसंयमम

१० ॥४६७॥ वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयममकुं वादरसंज्वलन सामाधिकछेदोप
 स्थापनसंयमममकुं गुदमुदयमकुं वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयमं प्रमत्ताप्रमत्तरोदयमकुं

१० परिहारगुद्विसंयमममकुं । सूक्ष्मकृष्टिकृष्टसंज्वलनलोभोदयमागुत्तरिलु सूक्ष्मसांख्यसंयमम

१० ॥४६७॥ वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयममकुं वादरसंज्वलन सामाधिकछेदोप
 स्थापनसंयमममकुं गुदमुदयमकुं वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयमं प्रमत्ताप्रमत्तरोदयमकुं

१० परिहारगुद्विसंयमममकुं । सूक्ष्मकृष्टिकृष्टसंज्वलनलोभोदयमागुत्तरिलु सूक्ष्मसांख्यसंयमम

१० ॥४६७॥ वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयममकुं वादरसंज्वलन सामाधिकछेदोप
 स्थापनसंयमममकुं गुदमुदयमकुं वादरसंज्वलनसंयमममकुं परिहारगुद्विसंयमं प्रमत्ताप्रमत्तरोदयमकुं

मनोभूतनेय पूर्व्वं पठियसि मत्ते परिहारविमुद्धिसंयमं पोद्दिग्गे तनुकृष्टकालं संभविमु-
मप्युर्व्वरिदं । 'परिहारविमुद्धिसमेतः पद्जीवनिकायसंकुले विहरन् । पयसेव पद्मपत्रं न लिप्यते पाप-
निवहेन' ।

अणुलोहं वेदंती जीवो उवसामगो व खवगो वा ।

५ सो मुहुमसांपराओ जहखाएणूणवो किंचि ॥४७४॥

अणुलोभं वेदयमानो जीवः उपग्रामको वा क्षपको वा । स मुहुमसांपरायो यथाख्यातेनोः
किंचित् ॥

सूक्ष्मलोभकृष्टिगतानुभायमनावनोर्ध्वनन् भविसुतं जीवन् उपग्रामकनागलि मेणु क्षप-
नागलि मेणु सः आ जीवं सूक्ष्मसांपरायनं वनक्कुं । सूक्ष्मः सांपरायः कपायो यस्य स मुहुमसांपरायः
१० एवो यन्त्वर्यनामविशिष्टमहामुनि यथाख्यातसंयमिपलौकने किंचिदूननगुं ।

उवसंते खीणे वा असुहे कम्मम्मि मोहणीयम्मि ।

छदुमट्ठो व जिणो वा जहखादो संजदो सो तु ॥४७५॥

उपज्ञाते क्षीणे वा अशुभे कम्मणि मोहनीये छप्स्यो वा जिने वा यथाख्यातसंयतः स तु ॥

अशुभमप्य मोहनीयकम्ममुपज्ञातमागुत्तिरलु मेणु धीणमागुत्तं विरलावनोर्ध्वं छप्स्यं
१५ उपज्ञातकपायनागलि मेणु क्षीणकपायछप्स्यनागलि मेणु जिने वा सयोगकेवलियुगयोगकेवलियु-
मेनागलि सः आ जीवं तु मत्ते यथाख्यातसंयतने वनक्कुं । मोहस्य निरवशेषस्योपज्ञातक्षयाच्चा-

दिवसादारम्य विचट्ठपाणि सर्वदा मुक्तेन नोत्वा संयमं प्राप्य नप्युपवत्त्वं तीर्थंकरपादमूले प्रत्यास्थानं पठित्स्व
वदन्तीकरणान् ॥

उक्तं च-

परिहारविमुद्धिसमेतः पद्जीवनिकायसंकुले विहरन् ।

२० पयसेव पद्मपत्रं न लिप्यते पापनिवहेन ॥४७६॥

सूक्ष्मलोभकृष्टिगतानुभायमनुभवन् यः उपग्रामकः क्षपको वा स जीवः सूक्ष्मसांपरायः स्यात् । सूक्ष्म-
सांपरायः कपायो यस्येत्यन्वयनामा महामुनिः यथाख्यातसंयमिभ्यः शिष्यभ्यूनो भवति ॥४७४॥

अशुभमोहनीयकर्मणि उपज्ञाते क्षीणे वा यः उपज्ञान्तोऽप्यकपायछप्सवः सयोगोपायिजिने वा, स,
तु-पुनः, यथाग्रहादुपगतो भवति । मोहस्य निरवशेषस्य उपज्ञात् ध्याना आत्मस्वभावावस्थायेशास्त्रजं

२५ सदा मुग्धसे विताकर संयम धारण करके वर्षपृथक्स्व तर्क तीर्थंकरके पादमूलमें प्रत्याख्यात
पदनेके पदचान् परिहारविमुद्धि संयम स्वीकार करना होता है । कहा है—'परिहारविमुद्धि
श्रद्धिसे संयुक्त जीव छह कार्यके जीवोंसे भरे स्थानमें विहार करते हुए भी पाप समूहसे बचे
ही छित्त नहीं होता जैसे कमलका पत्ता पानीमें रहते हुए भी पानीसे छिन्न नहीं होता' ॥४७३॥

सूक्ष्म कृष्टिको प्राप्त लोभ कपायके अनुभागको अनुभव करनेवाला उपग्रामक वा
१० क्षपक जीव सूक्ष्म साम्पराय होता है । सूक्ष्म साम्पराय अर्थात् कपाय जिसकी है वह सार्यक
नामवाला महामुनि यथाख्यात संयमियाँसे किंचित् ही छिन्न होता है ॥४७४॥

अशुभ मोहनीय कर्मके उपज्ञान्त या ह्यय हो जानेपर उपज्ञान्त कपाय और क्षीण
कपाय गुणस्थानवर्ती छप्सव अथवा सयोगी और अयोगी जिन यथाख्यात संयमी होते हैं ।

इत्यादिलक्षणंगलु देशविरतरुगळणे प्रयांतरबोद्धरित्यडुपुतु ।

जीवा चोद्दसभेया इंदियविसया तहद्वीसंतु ।

जे तेसु नेव विरया असंजदा ते मुणेयन्वा ॥४७८॥

जीवाश्चतुर्दशभेवाः इन्द्रियविषयास्तथाष्टाविंशतिः तु । ये तेषु नैव विरताः असंयतास्ते
५ संतव्याः ॥

पदिनाल्क जीवभेदंगळोळं तु मत्ते इन्द्रियविषयंगळिपतें दुभेवं गळोळामारहेंलंबव विरतरल-
दवर्गळु असंयतरे दरियन्पडुवह ।

पंचरस पंचवर्णा दो गंधा अड्ढाससचसरा ।

मणसहिदट्ठावीसा इंदियविसया मुणेदव्वा ॥४७९॥

१० पंचरसाः पंचवर्णाः द्वौ गंधौ अष्टस्पर्शाः सप्तस्वराः । मनः सहिताष्टविंशतिरिन्द्रियविषया
संतव्याः ॥

तिवतकटुकपायाम्लमधुरमेव पंचरसंगळुं श्वेतपीतहरितारुगळुगमेव पंचवर्णंगळुं सुगंध-
दुर्गंधमेव धरदु गंधमुं मृदुककंठामृदुलघुनीतोष्णस्निग्धरूक्षमेव अष्टस्पर्शंगळुं पद्मज-शृणुभग्नोपार-
मध्यम-पंचमधैवतनिपादमेव सरिगमपध निगळप्पसप्तस्वरंगळुं कूर्जिवितिन्द्रियविषयंगळिपतेंतु
१५ मनोविषयमोचितु इन्द्रियमोइन्द्रियविषयंगळुपटाविंशतिप्रमितंतेळु संतव्यंगळुं ।

अनंतरं संयममार्गणेषोळु जीवसंख्येयं पेळदवं :-

पमदादिचउण्डजुदी सामाइयदुगं कमेण सेसविणं ।

सत्तसहस्रा णवसय णवलक्खा तीहि परिहीणा ॥४८०॥

प्रमत्तादिचतुर्णां मुतिः सामायिकद्विकं क्रमेण शेषत्रयं । सप्तसहस्रं नवशतं नवलक्षं त्रिभिः
२० परिहीनानि ॥

चतुर्दशजीवभेदाः, सु-पुनः इन्द्रियविषयाः अष्टाविंशतिः तेषु ये नैव विरतास्ते असंयता इति
मन्तव्याः ॥४७८॥

रसाः-तिक्तमृदुकफपायाम्लमधुराः पञ्च । वर्णाः-श्वेतपीतहरितारुगळुगमाः पञ्च । गन्धौ सुगन्धदुर्गन्धौ
द्वौ । स्पर्शाः मृदुककंठामृदुलघु-नीतोष्णस्निग्धरूक्षाः अष्टौ । स्वराः-पद्मज-शृणुभ-गान्धार-मध्यम-पञ्चम-धैवत-

२५ निपादा सरिगमपधनिरूपाः सप्त एते इन्द्रियविषयाः सप्तविंशतिः । मनोविषय एका, एवमष्टाविंशतिभि-
स्तव्यः ॥४७९॥ अथ संयममार्गणया जीवसंख्यामाह—

चोद्द प्रकारके जीव और अठाईस इन्द्रियोके विषय, इनमें जो विरत नही हैं वे
असंयमो जानना ॥४७८॥

जीवा, फटुक, कसेळा, चट्टा, मोठा ये पाँच रस हैं । श्वेत, पीला, हरा, लाल, काळा ये
१० पाँच वर्ण हैं । सुगन्ध, दुर्गन्ध ये दो गन्ध हैं । कोमल, कठोर, भारी, हल्का, शीव, उष्ण,
चिकना, रूखा ये आठ स्पर्श हैं । पद्मज, शृणुभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निपाद ये
सा रे ग म प ध नि रूप सात स्वर हैं । ये सत्ताईस इन्द्रियविषय हैं और एक मनका विषय
है । इस प्रकार अठाईस विषय जानना ॥४७९॥

अथ संयम मार्गणामे जीवोंकी संख्या कहते हैं—

संसारिराशिजविरतप्रमाणमककु :-

सोमायिक ८९०९९१०३	छेदोपस्थापन ८९०९९१०३	परिहार ६९९७	सूक्ष्म ८९७	ययाख्यात ८९९९९७	वेदसंय = ५ ३ ३ ४ ३	संय = १३ -
---------------------	-------------------------	----------------	----------------	--------------------	--------------------------	---------------

इत्तु भगवदहंत्परमेश्वरचारुचरणारविदहं द्वंद्वनानंबित पुष्पपुंजायमानधोमद्रायराजगुह
मंडलाचार्यमहोपाध्यायशेखररायवाविपितामह सकलविद्वज्जनघरुयति धोमदभयसूरिसिद्धांत-
चक्रवर्त्तिशोपायकंजरजोरंजितललाटपट्टं धोमरुकेअवण्णविरचितमप्य गोमटसारकर्णटवृत्तिजोष-
५ तत्वप्रबोधिकेयोळ जीवकांडविज्ञातिप्ररूपणंगळोळ प्रयोदशं संयममार्गणाधिकारं निगदितमाद्यु ॥

जविरतानां प्रमाणं भवति । १३-॥४८१॥

हयाचार्यथीनेमिचन्द्रविरचितायां गोमटसारापरनामपञ्चसंयहनुत्ती तत्त्वत्रदीपिकाख्यात
जीवकाण्डे विद्वत्तिप्ररूपणानु संयममार्गणाप्ररूपणा नाम त्रयोदशोऽधिकारः ॥१३॥

संसारी जीवोंकी राशिमें भाम देनेपर जो शेष रहे उतना ही असंयमियोंका प्रमाण
१० होता है ॥४८१॥

इस प्रकार आचार्य श्री नेमिचन्द्र विरचित गोमटसार अपर नाम पंचसंग्रहकी भगवान् अहंन्त देव
परमेश्वरके सुन्दर चरणकमलोंकी धन्दनासे प्राप्त पुष्पके पुंजस्वरूप राजगुह मण्डकाचार्य
महापादी श्री भमयनन्दी सिद्धान्त चक्रवर्त्तिके चरणकमलोंकी धूलिसे शोभित ललाटवाले
श्री केशववर्णिके द्वारा रचित गोमटसार कर्णटवृत्ति जीवतत्त्व प्रदीपिकाकी
अनुसारीणी संस्कृतटीका तथा उसकी अनुसारीणी पं. दोहरमल रचित
संयमज्ञानचन्द्रिका नामक भाषाटीकाकी अनुसारीणी हिन्दी भाषा
टीकामें जीवकाण्डकी बीस प्ररूपणाओंमेंसे संयममार्गणा प्ररूपणा
नामक तेरहवाँ अधिकार सम्पूर्ण हुआ ॥१३॥

भावसाधनं दर्शनमरिपल्पद्वयम् ।

अनंतरं चक्षुर्दर्शनं अचक्षुर्दर्शनं गच्छ स्वल्पमं पेक्ष्यम् :—

चक्षुः कं पयासइ दिसइ तं चक्षुर्दंसणं वेति ।

सेसिदियप्पयासो णायव्वो सो अचक्खु ति ॥४८४॥

- ५ चक्षुषा यत्प्रकाशते दृश्यते तच्चक्षुर्दर्शनं भवति । यः शेषेन्द्रियप्रकाशो ज्ञातव्यः सोऽवभु-
व दर्शनमिति ॥

नयनं गच्छाद्युर्ध्वं प्रतिभासितमुत्तमिहं पुनः काण्त्पद्विहं पुनः तद्विषयप्रकाशनमे चक्षुर्दर्शन-
मेति न गणधरदेवादि विषयज्ञानि गच्छ पेक्ष्यम् । शेषेन्द्रियं गच्छाद्युर्ध्वं तोषतिहं पुनः अचक्षुर्दर्शनमेति
ज्ञातव्यमवकुं ।

- १० परमाणु आदिषाहं अंतिमखंधंति मुत्तिदव्वाहं ।

तं ओहिदंसणं पुणं जं पसइ ताइ पच्चखं ॥४८५॥

परमाण्वाविकान्यंतिमस्कंधपर्यंतानि मूर्तद्रव्याणि । तदवधिदर्शनं पुनर्यत्पश्यति तानि
प्रत्यक्षं ॥

- परमाण्वादिषाणि महास्कंधपर्यंतमस्य मूर्तद्रव्यं गच्छयेति तन्निमुननाद्युर्ध्वं दर्शनं मत्ते
१५ प्रत्यक्षमाणि काण्मुमदवधिदर्शनमे बुदवकुं ।

बहुविहं बहुप्पयासा उज्जोवा परिमियम्मि खेत्तम्मि ।

लोलालो गविति मिरो जो केवलदंसणुज्जोओ ॥४८६॥

बहुविषयहृप्रकारा उद्योताः परिमिते क्षेत्रे । लोलालोकविति मिरो यः केवलदर्शनोद्योतः ॥

- सत्तावभासनं तद्दर्शनं भवति । पश्यति दृश्यते अनेन दर्शनमार्थं वा दर्शनम् ॥४८३॥ अथ चक्षुश्चक्षुर्दर्शनं
२० लक्षणमिति—

चक्षुषोः—नयनयोः संबन्धि यस्मान्यग्रहणं प्रकाशते पश्यति तदा दृश्यते जीवेनानेन कृत्वा तदा
तद्विषयप्रकाशनमेव तदा चक्षुर्दर्शनमिति गणधरदेवादयो भवन्ति । यद्यपि शेषेन्द्रियप्रकाशः स अचक्षुर्दर्शन-
मिति ॥४८४॥

परमाणोरारभ्य महास्कन्धपर्यन्तं मूर्तद्रव्याणि पुनः यद्दर्शनं प्रत्यक्षं पश्यति तदवधिदर्शनं भवति ॥४८५॥

- २५ मात्र दर्शनं हे ॥४८३॥

अथ चक्षुर्दर्शनं और अचक्षुर्दर्शनं के लक्षण कहते हैं—

दोनों नेत्र सम्बन्धी सामान्य ग्रहणको जो देखता है अथवा इस जीवके द्वारा देखा
जाता है अथवा सामान्य मात्रका प्रकाशन दर्शन है, यह गणधरदेव आदि कहते हैं । शेष
इन्द्रियोंका जो प्रकाश है वह अचक्षु दर्शन है ॥४८४॥

- ३० परमाणुसे लेकर महास्कन्ध पर्यन्त सब मूर्तिक द्रव्योंको जो प्रत्यक्ष देखता है वह
अवधिदर्शन है ॥४८५॥

त्रैराशिकं माडि प्र ४।५ = इ।२ वंदलब्धबोळु पर्याप्तकरं किंचिद्वनं माडिबोडु शक्तिगतचक्षु-

४
२ ०

द्वंद्वनिगळ संख्येयवकु = १२— मिते व्यक्तिगतचक्षुर्द्वंद्वनिगळं त्रैराशिकं माळ्यागळोडु

४।
२ ४

विशेषमुंडाबुढे दोडे फलराशिप्रसपर्याप्तराशियवकु प्र = ४५ = इ।२। सो वंद लब्धं व्यक्ति-

४

गतचक्षुर्द्वंद्वनिगळ संख्येयवकु = १२ अवधिद्वंद्वनिगळ संख्येयवधितानिगळ प्रमाणमेनितनिते-

४।४

५

५ यरकु प ० केवलद्वंद्वनिगळसंख्ये केवलज्ञानिगळसंख्येमेनितनितेयवकु १।

२ ०

किपू? इति त्रैराशिके कृते प्र ४।५ = इ।२ लब्धं पर्याप्तसंख्यया किंचिद्वनं शक्तिगतचक्षुर्द्वंद्वनिगळा

४

२

०

भरति = १२ = द्वितीयत्रैराशिके फलराशिः प्रसपर्याप्तकटाशिः प्र ४।५ = इ।२ लब्धं व्यक्तिगतचक्षुर्द्वंद्वनिगळा

४।४

४

२

५

०

भरति = २-४ अधिदर्शनराशिरवधितानराशिवत् प ०—१ केवलद्वंद्वनिगळा केवलज्ञानिसंख्याय १ ॥८८॥

४।४

० ०

१

५

- पंचेन्द्रियका कृतिना परिमाण हे ऐसा त्रैराशिक करनेपर प्रमाण राशि चार, फडराशि
- १० प्रसज्योका प्रमाण, इच्छाराशि दो। सो इच्छाराशिको फडराशिसे गुणा करके प्रमाणराशि से भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उतने पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जोवराशि हे। उसमेंसे पर्याप्त जोबोड प्रमाणको घटानेपर जो प्रमाण आवे उसमेंसे कुछ घटानेपर, क्योंकि दोइन्द्रिय आदि कमसे घटते हुए शक्तिगत चक्षुर्द्वंद्वनिगळा प्रमाण जानना। इसी तरह प्रसपर्याप्त जोबोड प्रमाणको चारसे भाग देकर दोसे गुणा करनेपर जो प्रमाण आवे उसमेंसे कुछ कम करनेपर व्यष्टिकर चक्षुर्द्वंद्वनिगळा प्रमाण होता हे। अवधिदर्शनी जोबोड प्रमाण अधिदर्शनिबोड प्रमाणके समान जानना। और केवल दर्शनी जोबोड प्रमाण केवलज्ञान जोबोड परिमाणके समान जानना ॥८८॥

लेइया-मार्गणा ॥१५॥

दर्शनमार्गोणानंतरं लेइयामार्गोणं वेठलुपक्रमिति निरस्तिपुत्रं लेइयेते लक्षणं
वेठवपं—

लिपइ अप्पोकीरई एदीए गियअप्पुणपुणं च ।

जोवोचि होदि लेस्ता लेस्तागुणजाणयक्खादा ॥४८९॥

१ लिपस्यात्मोक्तोत्पेतया निजाऽपुणं पुणं च जीव इति भवति लेइया लेइयागुणजायका-
ख्याता ।

द्रव्यलेइयेयं बुं भावलेइयेयं बुं लेइये द्विप्रकारमप्युवत्ति । भावलेइयापेक्षेयिबं लिपस्यात्मोक्तोत्पे-
तिजापुणं पुणं च जीव एतयेति लेइया । लेइयागुणजायकाऽख्याता भवति । जीवं निजपापमुनं
पुण्यमुनं लिपति तन्नं पोरेणुं आत्मोक्तोत्पेति तन्नवागि माळपनिवरिदमोदितु लेइया लेइये बुं लेइया-
१० गुणमनरिच धृतज्ञानिगळप गणधरदेवादिगोळबं पेळत्पट्टुवक्कुं । अनया कम्मभिरात्मानं लिपतीति
लेइया । कपायोदयानुरंजिता योगप्रवृत्तिर्वा लेइया । कपायाणामुदयेनानुरंजिता कमप्यतिशयांतरमु-
पनीता भवतीत्यर्थः । ई यत्थंमने विशदमागि माडिदपव ।

यः सद्धर्ममुपावर्षं ब्रह्मस्यानि ग्रीषयन् ।

नीतवान् स्वेष्टिर्हि तं धर्मानायनं भवे ॥१९॥

११ अथ लेइयामार्गणां वचनुमना निश्चिपूर्वकं लेइयालक्षणमाह—

लेइया द्रव्यभावभेदाद् द्वेधा । तत्र भावलेइयां लब्धयितु इदं मूलम् । लिप्पति-आत्मोक्तोत्पेति निवमपुणं
पुणं च जीव एतयेति लेइया लेइयागुणजायकैर्मणधरदेवादिभिरास्वाता । अनया कर्मभिरात्मानं लिप्पतीति
लेइया । कपायोदयानुरंजिता योगप्रवृत्तिर्वा लेइया कपायाणामुदयेन अनुरंजिता कमप्यतिशयान्तरमुपनीता
योगप्रवृत्तिर्वा लेइया ॥४८९॥ अमुयेवार्थं स्पष्टयति—

२० लेइया मार्गणाको कइनेकी भावनासे निश्चिपूर्वकं लेइयाका लक्षण कइते हैं—

लेइया द्रव्य और भावके भेदसे दो प्रकारकी है । उनमें-से भावलेइयाका लक्षण कइनेके
लिए यह मूल है । 'लिप्पति' अर्थात् इसके द्वारा जीव अपने पुण्य-पापको अपनाता है, लेइया-
का यह लक्षण लेइयाके गुणोंके ज्ञाता गणधर देव आदिने कहा है । जिसके द्वारा जीव
आत्माको फर्मोंसे लिप्त करता है वह लेइया है । कपायके उदयसे अनुरंजित मन वचन
२१ फायकी प्रवृत्ति लेइया है । अथवा कपायोंके उदयसे अनुरंजित अर्थात् किसी भी अवस्था-
न्तरको प्राप्त योग प्रवृत्ति लेइया है ॥४८९॥

इसीको स्पष्ट करते हैं—

नारपुत्रेकं दोषं लेख्यानां साधनाख्यं लेदयेगळ भवप्रभेदंगळं साधितसत्त्वेषु अदुकारणमाणि तैरपि कारैः आपविनामधिकारंगळं यथाक्रमं क्रममनतिक्रमसत्त्वं लेदयेयं यथ्यानि पेरुवें ॥

किण्हा णीला काऊ तेऊ पम्मा य सुक्कलेस्सा य ।

लेस्साणं णिव्देसा छल्लेव हवन्ति णियमेण ॥४९३॥

१ कृष्णा नीला कापोती तेजः पद्मा च शुक्ललेक्ष्या च । लेक्ष्यानां निर्देशः पदं चैव भवति नियमेन ॥

कृष्णलेक्ष्येषु नीललेक्ष्येषु कपोतलेक्ष्येषु तेजोलेक्ष्येषु पद्मलेक्ष्येषु शुक्ललेक्ष्येषु षण्डमितु लेक्ष्येगळ निर्देशंगळारेयपुत्तु । नियमविदं । इल्लि पट्चैय एदितु नैगमनयाभिप्रायविदं पेरुत्तुपट्टु । पर्यायवृत्तिविदं मत्तमसंख्येयलोकमात्रंगळु लेदयेगळपुदेवितु नियमशब्दविदं सूचि-

१० सत्पट्टु । निर्देशं निगदितमाप्नु ॥

वर्णोदयेण जणिदो सरीरवर्णो दु दग्गदो लेस्सा ।

सा सोढा किण्हादी अणेयमेया समेयेण ॥४९४॥

वर्णोदयेन जनितः शरीरवर्णस्तु द्रव्यतो लेक्ष्या । सा षोढा कृष्णावयोऽनेकभेदाः स्वभेदेन ॥

१५ वर्णनामकर्मोदयविदं जनितः पुट्टपट्टु शरीरवर्णस्तु शरीरवर्णं द्रव्यतो लेक्ष्या इत्यविदं लेदयेयकुमा द्रव्यलेक्ष्येयं षोढा पट्प्रकारमकुमा पट्प्रकारंगळं कृष्णावयः कृष्णादिगळकुं । अनेकभेदाः स्वभेदेन स्वस्वभेदाः स्वभेदाः तैः स्वभेदेरनेकभेदाः स्युः तंतम्म भेदविदमनेकभेदंगळपु पदेतें दोषं ॥

अन्तरं भावः अल्पबहुत्वं चेति षोडशाधिकाराः लेखाभेदप्रभेदशाधनार्थं भवन्तीति तैर्यथाक्रमं लेखा वदामि ॥४९१-४९३॥

२० कृष्णलेक्ष्या नीललेक्ष्या कपोतलेक्ष्या तेजोलेक्ष्या पद्मलेक्ष्या शुक्ललेक्ष्या चेति लेखानिर्देशाः-लेखानामपि पदेन भवन्ति नियमेन । अत्र एवकारेणैव नियमस्य अवगमान् पुनरनर्थकं नियमसाधोपादानं नैगमनयेन लेखा षोडश पर्यायाधिकरणेन अर्थव्यापनोक्तपेक्षाचार्यस्य अभिप्रायं ज्ञापयति ॥४९३॥ इति निर्देशाधिकारः ।
वर्णनामकर्मोदयवर्णितशरीरवर्णस्तु इत्यलेक्ष्या भवति । सा च षोडश-पट्प्रकाराः । ते च प्रकाराः कृष्णादयः स्वस्वभेदेरनेकभेदाः स्युः ॥४९४॥ तथाहि—

२५ काल, अन्तर, भाव, अल्पबहुत्वं ये सोलह अधिकार लेक्ष्याके भेद-प्रभेदोंके साधनके द्वि-
१५ दे । उनके द्वारा क्रमानुसार लेक्ष्याको कहेंगा ॥४९१-९२॥

कृष्णलेक्ष्या, नीललेक्ष्या, कपोतलेक्ष्या, तेजोलेक्ष्या, पद्मलेक्ष्या, शुक्ललेक्ष्या ये छह ही लेक्ष्याओंके नाम नियमित हैं । यहाँ एवकार (हो) से ही नियमका ज्ञान हो जानेसे पुनः नियम शब्दका महान् निरर्थक हो दे । अतः वह नैगम नयसे लेक्ष्या छह हैं और पर्यायाधिकरणयसे अर्थव्यापनशब्द है, इस आधारोंके अभिप्रायको सूचित करता है ॥४९३॥ निर्देशाधिकार

१० समाप्त हुआ ।

वर्णनाम कर्मके उदयसे उत्पन्न शरीरका वर्ण वो द्रव्य लेक्ष्या है । उसके भी छह भेद हैं । वे कृष्ण आदि भेद अपने-अपने अवान्तर भेदोंसे अनेक भेद खाके हैं ॥४९४॥

वादरआऊतेऊ सुक्कातेऊ य वाउकायाणं ।

गोमूत्रमुग्गवण्णा कमसो अच्चवण्णा य ॥४९७॥

वादरआकयिकतेजस्कायिकाः शुक्लास्तेजसश्च वातकायानां । गोमूत्रमुग्गवण्णां कमसोऽप्य-
क्तवर्णाश्च ॥

- ५ वादरआकयिकतेजस्कायिकंगळं ययाक्रमविवं शुक्लाः शुक्लवर्णंगळु तेजसश्च पीतवर्णंगळु-
मप्पुवु । वातकायंगळ शरीरवर्णंगळ घनोदपिघनानिलंमज्जे गोमूत्रमुग्गवण्णंगळु ययाक्रमविवं-
मप्पुवु । तनुवातकायिकंगळ शरीरवर्णमप्यक्तवर्णमवकुं ॥

सच्चैसिं सुद्धमाणं कावोदा सच्चविग्गहे सुक्का ।

सच्चो मिस्सो देहो कवोदवण्णो हवे णियमा ॥४९८॥

- १० सर्वेषां सूक्ष्माणं कापोताः सच्चविग्रहे शुक्लाः । सर्व्या मिथो देहः कपोतवर्णो भवे-
प्रियमा ॥

सर्वसूक्ष्मजीवंगळ देहंगळु कपोतवर्णदेहंगळेयप्पुवु सर्वजीवंगळु विग्रहगतियोळु शुक्ल-
वर्णंगळेयप्पुवु । सर्वजीवंगळु शरीरपर्याप्तिनेरिवस्त्रेयरं कपोतवर्णरियप्पव ह नियमविवं । वर्णाधिकारं
द्वितीयं ॥ अनंतरं लेइयापरिणामाधिकारमं गाथापंचकविवं येळवपः—

- १५ लोमाणमसंखेज्जा उदयट्ठाणा कसायगा हौति ।

तत्थ फिलिट्ठा असुहा सुहा विसुद्धा उदालावा ॥४९९॥

लोकानामसंखेयान्पुदयस्थानानि कसायगाणि भवन्ति । तत्र क्लिष्टान्यशुभानि शुभानि
विशुद्धानि तदालापानि ।

- २० वादरआकयिककौ क्रमेण शुक्लपीतवर्णविव, वातकयिकेणु घनोदपिघनघनघनघरीराणि क्रमेण
गोमूत्रमुग्गवर्णानि तनुवातघरीराणि अव्यक्तवर्णानि ॥४९७॥

सर्वसूक्ष्मजीवदेहाः कपोतवर्णा एव । सर्वे जीवा विग्रहगती शुक्लवर्णा एव । सर्वे जीवाः स्वस्ववर्ति-
प्राप्तिप्रथमप्रथमाच्छरीरपर्याप्तिनिष्पत्तिपर्यन्तं कपोतवर्णा एव नियमेन ॥४९८॥ इति वर्णाधिकारः ।
अथ परिणामाधिकारं गाथापञ्चकेनाह—

- २५ भोगभूमिके मनुष्य और तिर्यंच क्रमसे सूर्यके समान, चन्द्रमाके समान तथा हरित वर्णवाले
होते हैं ॥४९६॥

वादर तेजस्कायिक और वादर जलकायिक क्रमसे पीतवर्ण और शुक्लवर्ण ही होते हैं ।
वादरवायुकायिकोंमें घनोदपि घातका शरीर गोमूत्रके समान वर्णवाला है । घनवातका शरीर
मूत्र के समान वर्णवाला है और तनुवातके शरीरका वर्ण अव्यक्त है ॥४९७॥

- सब सूक्ष्मजीवोंका शरीर कपोतके समान वर्णवाला ही होता है । सब जीवोंका
१० विग्रहगतिमें शुक्लवर्ण ही होता है । सब जीव अपनी-अपनी पर्याप्तिके प्रारम्भ होनेके प्रथम
समयसे छेकर शरीरपर्याप्तिके पूर्णता पर्यन्त कपोतवर्ण ही नियमसे होते हैं ॥४९८॥
वर्णाधिकार समाप्त हुआ । आगे पाँच गाथाओंसे परिणामाधिकार कहते हैं—

मंदसंक्लेशस्थानंगळ तवसंस्थातलोकभक्तबहुभागमात्रंगळपुत्रु $\equiv a \text{ } ८$ पक्षलेइयाविशुद्धिस्थानंगळ ९९

मंदतरसंक्लेशस्थानंगळ तवेकभागबहुभागमात्रंगळपुत्रु $\equiv a \text{ } ८$ शुक्ललेइयाविशुद्धिस्थानंगळ ९९९

मंदतमसंक्लेशस्थानंगळ शेपैकभागमात्रंगळपुत्रु $\equiv a \text{ } १$ ई कृष्णलेइयाविद्याबावं स्थानंगळोळ ९९९

प्रत्येकमशुभंगळोळकृष्टदिवं जघन्यपर्यंतं शुभंगळोळं जघन्यदिवमुत्कृष्टपर्यंतमसंस्थातलोकमात्र-
५ पदस्थानपतितहानिवृद्धिपुक्तस्थानंगळपुत्रु खलु नियमदिवं ।

असुहाणं वरमज्झिमअवरंसे किण्हणोलकाउतिण ।

परिणमदि क्रमेणप्पा परिहाणीदो किलेसस्त ॥५०१॥

अशुभानां वरमध्यमावरांशे कृष्णनीलकपोतत्रये परिणमति क्रमेणात्मा परिहानितः
संक्लेशस्य ।

१० कृष्णनीलकपोतत्रिस्थानंगळ अशुभंगळपुत्कृष्टमध्यमजघन्यांशंगळोळ जीवं संक्लेशहानि-
पिबं क्रमदिवं परिणमिसुगुं ।

लोकभक्तभागमात्रेणु $\equiv a \text{ } १$ तेजोलेइयामन्दसंक्लेशस्थानानि तवसंस्थातलोकभक्तबहुभागमात्राणि $\equiv a \text{ } ८$ ९१९

पक्षलेइयाविशुद्धिस्थानानि मन्दतरसंक्लेशस्थानानि तवेकभागबहुभागमात्राणि $\equiv a \text{ } ८$ शुक्ललेइयाविशुद्धि- ९१९१९

स्थानानि मन्दतमसंक्लेशस्थानानि शेपैकभागमात्राणि $\equiv a \text{ } १$ एतेषु कृष्णलेइयाविपदस्थानेषु प्रत्येकमशुभे
 ९१९१९

१५ उत्कृष्टजघन्यपर्यन्तं शुभेषु च जघन्यादुत्कृष्टपर्यन्तं असंस्थातलोकमात्रपदस्थानपतितहानिवृद्धिस्थानानि भवन्ति
खलु-नियमेन ॥५००॥

कृष्णनीलकपोतत्रिस्थानेषु अशुभकरोत्कृष्टमध्यमजघन्यांशेषु जीवः संक्लेशहानितः क्रमेण परिण-
मति ॥५०१॥

नीललेइया सम्बन्धी वीप्रतर संक्लेश स्थान हैं । शेष रहे एक भाग प्रमाण कपोतलेइया
२० सम्बन्धी वीप्र संक्लेश स्थान हैं । पहले कपायोंके उद्य स्थानोंमें असंख्यात लोकसे भाग देकर
जो एक भाग प्रमाण शुभ लेइया सम्बन्धी स्थान कहे ये वे तेज, पक्ष और शुक्लके भेदसे
तीन प्रकारके हैं । उनमें असंख्यात लोकसे भाग देकर बहुभाग प्रमाण तेजोलेइया सम्बन्धी
मन्द संक्लेश स्थान हैं । शेष बचे एक भागमें पुनः असंख्यात लोकसे भाग देकर बहुभाग
प्रमाण पक्षलेइया सम्बन्धी मन्दतर संक्लेशस्थान है । शेष रहे एक भाग प्रमाण शुक्ल लेइया
२५ सम्बन्धी मन्दतम संक्लेश स्थान हैं । इन कृष्णलेइया आदि सम्बन्धी छह स्थानोंमेंसे
प्रत्येकमें अनुभवे वो उत्कृष्टसे जघन्य पर्यन्त और शुभ लेइयाओंमें जघन्यसे उत्कृष्ट पर्यन्त
असंख्यात लोकमात्र पदस्थान पतित हानि-वृद्धि स्थान नियमसे होते हैं ॥५००॥

यदि जीवके संक्लेश परिणामोंमें हानि होती है तो वह अशुभ कृष्ण नील और कपोत
लेइयाओंके उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य अंशोंमें क्रमसे परिणमन करता है अर्थात् उस लेइयाके
१० उत्कृष्ट अंशसे मध्यममें और मध्यमसे जघन्यरूप परिणमन करता है ॥५०१॥

भागमसंख्यातभागं संख्यातभागं संख्यातगुणमसंख्यातगुणमनंतगुणमेवं हानिवृद्धिगुणं नामगच्छ-
मुत्कृष्टसंख्यातमुमसंख्यातलोकं सर्वजोवराप्रियुमेवं प्रमाणगच्छ भागक्रमबोद्धं गुणितक्रमबोद्धं-
मिवेयपुत्रेषु धृतज्ञानमार्गणेष्वोक्तं केन्द्र क्रममिलितमुमरियत्पटुगुमेव बुद्ध तात्पर्यं ॥ नात्कनेय
संक्रमनाधिकारस्तिदुर्बु ॥ अनंतरं कर्माधिकारमं गायार्थदिवं केन्द्रवर्ष :-

- १ धृतज्ञानमार्गनायां उत्क्रमेणैव भवन्ति । तत्र अनन्तभागः असंख्यातभागः संख्यातभागः संख्यातगुणः अयंभ्याव-
गुणः अनन्तगुणस्त्विति नामानि । उत्कृष्टसंख्यातसंख्यातलोकः सर्वजोवराप्रियुमेवं भागक्रमे गुणितक्रमे व
द्वयानि भवन्ति ॥१०६॥ इति संक्रमणाधिकारस्तत्पर्यः ॥ अथ कर्माधिकारं गायार्थमेनाह—

- नाम और उनका प्रमाण पहले धृतज्ञानमार्गणामे जैसा कहा है वैसा ही जानना । इनके
नाम अनन्तभाग, असंख्यात भाग, संख्यात भाग, संख्यात गुण, असंख्यात गुण और अनन्त
१० गुण हैं । उनका प्रमाण जोवराप्रि, असंख्यात लोक और उत्कृष्ट संख्यात क्रमसे हैं । यह भाग
और गुणोंका प्रमाण है ॥१०६॥

- विशेषार्थ—अनन्त भाग, असंख्यात भाग, संख्यात भाग, संख्यात गुण, असंख्यात
गुण, अनन्त गुण ये छह स्थानोंके नाम हैं । इनका प्रमाण गुणकार और भागहारमें पूर्ववत्
जानना । पूर्वमें वृद्धि अनुक्रम कहा है हानिमें वससे उल्टा अनुक्रम है । वही कहते हैं ।
११ कपोतलेस्याके जपन्यसे लगाकर कृष्णलेस्याके उत्कृष्ट पर्यन्त विवक्षा हो तो क्रमसे संक्षेपको
वृद्धि होती है । यदि कृष्णलेस्याके उत्कृष्टसे लगाकर कपोतलेस्याके जपन्य पर्यन्त विवक्षा हो
तो संक्षेपको हानि होती है । तथा पीतके जपन्यसे लगाकर सुवर्णके उत्कृष्ट पर्यन्त विवक्षा
हो तो क्रमसे विमृष्टिको वृद्धि होती है । यदि सुवर्णके उत्कृष्टसे लगाकर पीतके जपन्य पर्यन्त
विवक्षा हो तो क्रमसे विमृष्टिको हानि होती है । सो वृद्धिमें पदस्थानपतित वृद्धि और
१० हानिमें पदस्थानपतित हानि जानना ।

- पूर्वमें कहा था कि सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग मात्र बार अनन्त भागवृद्धि होने-
पर एक बार अनन्त गुणवृद्धि होती है । उसमें अनन्त गुणवृद्धिरूप स्थान नवीन पदस्थान
पतित वृद्धिका प्रागल्भ्य प्रथम स्थान है । उसके पहले जो अनन्त भाग वृद्धिरूप स्थान है
वह विवक्षित पदस्थानपतित वृद्धिका अन्तस्थान है । नवीन पदस्थानपतित वृद्धिके अनन्त
११ गुणवृद्धिरूप प्रथम स्थानके आगे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग मात्र अनन्त भागवृद्धिरूप
स्थान होते हैं उसके आगे पूर्वोक्त अनुक्रम जानना ।

- यहैकर कृष्णलेस्याका उत्कृष्ट स्थान पदस्थानपतितका अन्त स्थानरूप होनेसे पूर्व-
स्थानमें अनन्तभाग वृद्धिरूप है । और कृष्णलेस्याका जपन्य स्थान पदस्थान पतितका
प्रागल्भ्य प्रथम स्थान है । उसके पूर्व नीललेस्याका उत्कृष्ट स्थान उससे अनन्त गुण वृद्धि-
१० का है । तथा कृष्णलेस्याके जपन्यका समोत्पत्ती स्थान उस जपन्य स्थानसे अनन्त भाग
वृद्धिरूप है । हानिके अर्थका कृष्णलेस्याके उत्कृष्ट स्थानमें उसके समोत्पत्ती स्थान अनन्त
भाग हानिके होते हैं । कृष्णलेस्याके जपन्य स्थानमें नीललेस्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्त
गुण हानिके होते हैं । इसी प्रकार अन्य स्थानोंमें भी जानना ॥१०६॥

यदुर्बलकर्मप्रतिकार भवति तथा । अथ कर्माधिकारं गायार्थमेनाह—

मत्ते कृष्णलेइयेयनुळ जीवनवकुं ॥

मंदो बुद्धिविहीणो निव्विण्णाणी य विसयलोलो य ।

माणो माई य तद्वा आलस्सो चेव भेज्जो य ॥५१०॥

मंदो बुद्धिविहीनो निव्विज्ञानो च विषयलोलुच । मानो मायो च तथा आलस्यश्चैव

५ भेद्यश्च ॥

मंदः स्वच्छंदसंज्ञिकं क्रियेगच्छोऽमंदं मेणु बुद्धिविहीनः वर्तमानकार्यानिभिज्ञः । निर्विज्ञानो च विज्ञानविहीनः । विषयलोलुचः विषयगच्छोऽस्यार्थादिबाह्यैरिन्द्रियार्थगच्छोऽलपटुः । मानो अहंकारिणः । मायो च कुटिलवृत्तिः तथा आलस्यश्चैव क्रियेगच्छोऽकर्मगच्छोऽकृच्छुः । भेद्यश्च परैरवबोधोऽपरित्यक्तवस्तुभेदिनितुं कृष्णलेइयेयं जीयलक्षणमवकुं ॥

१०

णिद्दावंचणवहुलो धणधण्णे होदि तिव्वसणा य ।

लवखणमेयं भणियं समासदो णीललेस्सस्स ॥५११॥

निद्रावंचनाबहुलः धनधान्ये भवति तीव्रसंज्ञश्च । लक्षणमेतद् भणितं समासतो नीललेइयस्य ॥

निद्राबहुलं वंचनाबहुलं धनधान्यगच्छोऽतीव्रसंज्ञेयनुळं धनधान्यगच्छोऽतीव्रसंज्ञेयनुळं एवित्ती लक्षणं संक्षेपदिवं नीललेइयेयनुळ जीवमे पेळस्पट्टुदु ॥

१५

रूसइ णिदइ अपणे दूसइ वहुसो य सोयभयवहुलो ।

असुयइ परिभवइ परं पसंसये अप्पयं वहुसो ॥५१२॥

रोषति निदत्यन्यान् दुष्यति बहुशश्च शोकभयबहुलः । असुयति परिभवति परं प्रशंसते वारमानं धट्टाः ।

एतल्लक्षणं तु—गुनः कृष्णलेइयस्य भवति ॥५०९॥

२०

मन्दः स्वच्छन्दश्चिन्तामनु मन्दो वा, बुद्धिविहीनः वर्तमानकार्यानिभिज्ञः, निर्विज्ञानी च—विज्ञानरहितश्च विषयलोलुचः—स्पर्शादिबाह्यैरिन्द्रियार्थेषु लम्पटश्च, मानो—अभिमानो, मायो च—कुटिलवृत्तिश्च तथा आलस्यश्च—चिन्तामनु कर्मण्येषु कुष्ठश्चैव भेद्यश्च परेणानवबोधोऽभिप्रायश्च एतदपि कृष्णलेइयस्य लक्षणं भवति ॥५१०॥

निद्राबहुलः वञ्चनबहुलः धनधान्येषु तीव्रसंज्ञश्च इत्येतल्लक्षणं संक्षेपेण नीललेइयस्य भणितम् ॥५११॥

हो, दुष्ट और निर्दय हो, किसीके चक्षुमें न आता हो, ये कृष्णलेइयावालेके लक्षण २५ हैं ॥५०९॥

स्वच्छन्द अथवा कार्य करनेमें मन्द हो, बुद्धिहीन हो—वर्तमान कार्यको न जानता हो, अज्ञानी हो, स्पर्शन आदि इन्द्रियोंके विषयमें लम्पट हो, अभिमानी हो, कुटिल वृत्तिवाला मायाकारी हो, कर्ममें आलसी हो, दूसरोंके द्वारा जिसका अभिप्राय न जाना जा सके ये सब भी कृष्ण लेइयाके लक्षण हैं ॥५१०॥

१०

बहुव सोवा हो, दूसरोंको खूब ठगता हो, धन्य-धान्यकी तीव्र लालसा हो ये संक्षेपे नीललेइयावालेके लक्षण हैं ॥५११॥

किण्ववरसेण मुदा अवधिदृष्टाणम्मि अवरांसमुदा ।

पंचमचरिमतिमिस्ते मज्झे मज्झेण जायंते ॥५२४॥

कृष्णवराणेन मृताः अवधिस्थाने अवरांसमृताः । पंचमचरमतिमिथे मध्ये मध्ये जायंते ॥५२४॥

- ५ कृष्णलेस्याल्लोकांशविदं मृतराव जीवंगल्ल सप्तमपुण्ययोक्को दे पटलमस्कुमवरवधिसानेन्द्रं विलबोत्तु जायंते पुट्टुवर । कृष्णलेस्याजघन्यांशविदं मृतराव जीवंगल्ल पंचमपुण्य चरमपटल तिमिधेन्द्रकविलबोत्तु जायंते पुट्टुवर । कृष्णलेस्यामध्यमांशविदं मृतराव जीवंगल्ल सप्तमपुण्य अवधिस्थानेन्द्रकदे चतुःश्रेणिवदं योक्को दे वा विलविदं मेलण पप्पपुण्यमपविदे बुबवर पटलमं गलोत्तु तत्तद्योग्यमाणि जायंते पुट्टुवर ।

- १० नीलुक्कस्संसमुदा पंचमअंधिदयम्मि अवरामुदा ।

वालुकस्सपज्जलिदे मज्झे मज्झेण जायंते ॥५२५॥

नीलोत्कृष्टांगमृताः पंचम अंध्रेन्द्रके अपरमृताः । बालुकासंप्रवर्जिते मध्ये मध्येन जायंते ॥

नीललेस्याल्लोकांशविदं मृतराव जीवंगल्ल पंचमपुण्यपटलपंचकबोत्तु द्विचरमपटल अंध्रेन्द्रकविलबोत्तु जायंते पुट्टुवर । पंचमपटलबोत्तु कैलंबव पुट्टुवरत्तु कारणमाणि पंचमारिष्टेबोत्तु

- १५ चरमपटलबोत्तु कृष्णलेस्याजघन्यांशविदं नीललेस्याल्लोकांशविदं, मृतराव कैलंबु जीवंगल्ल पुट्टुवरं भी विशेषमरियत्पशुं । नीललेस्याजघन्यांशविदं मृतराव जीवंगल्ल बालुकाप्रभेयनवपटलं

कृष्णलेस्याल्लोकांशेन मृता जीवाः सप्तमपुण्यमात्रेकमेव पटलं तस्यावधिस्थानेन्द्रके जायन्ते । कृष्णलेस्याजघन्यांशेन मृता जीवाः पञ्चमपुण्योचरमपटलस्य तिमिधेन्द्रके जायन्ते । कृष्णलेस्यामध्यमांशेन मृता जीवाः तदवधिस्थानेन्द्रकस्य चतुःश्रेणिवदेषु पप्पपुण्यपटलस्येव पञ्चमपुण्योचरमपटले च तत्तद्योग्यमाणि जायन्ते ॥५२५॥

- २० नीललेस्याल्लोकांशेन मृता जीवाः पञ्चमपुण्योद्विचरमपटलस्याधेन्द्रके जायन्ते । केचित् पञ्चमपटलं नै जायन्ते । ततोऽपरिष्ठाचरमपटले कृष्णलेस्याजघन्यांशेन नीललेस्याल्लोकांशेनापि मृताः केचिज्जीवाः उत्पद्यन्ते ।

कृष्णलेस्याके उत्कृष्ट अंशसे मरे जीव सातवी पृथिवीमें एक ही पटल है उसके अवधिस्थान नामक इन्द्रक विलमें उत्पन्न होते हैं । कृष्णलेस्याके जघन्य अंशसे मरे जीव पाँचवी पृथ्वीके अन्तिम पटल सम्बन्धी तिमिध नामक इन्द्रक विलमें उत्पन्न होते हैं ।

- २५ कृष्णलेस्याके मध्यम अंशसे मरे जीव अवधिस्थान नामक इन्द्रक विलमें उत्पन्न होते हैं । श्रेणीयद् विलोंमें, छठी पृथ्वीके तीनों पटलोंमें और पाँचवी पृथ्वीके अन्तिम पटलमें अपनी योग्यतानुसार उत्पन्न होते हैं ॥५२४॥

नीललेस्याके उत्कृष्ट अंशसे मरे जीव पाँचवी पृथ्वीके द्विचरम पटलके आग्नेन्द्रके उत्पन्न होते हैं । कोई-कोई पाँचवें पटलमें भी उत्पन्न होते हैं । अरिष्ट पृथ्वीके अन्तिम

- १० पटलमें कृष्णलेस्याके जघन्य अंशसे और नीललेस्याके उत्कृष्ट अंशसे भी मरे कोई-कोई जीव उत्पन्न होते हैं इतना विशेष जानना । नीललेस्याके जघन्य अंशसे मरे जीव बालुकाप्रभा नामक तीसरी पृथ्वीके नौ पटलोंमेंसे अन्तिम पटल सम्बन्धी संप्रवर्जित इन्द्रकमें उत्पन्न

१. म० क० विरचितं मंत्रे, पृष्ठाध्व मपविबोत्तु पंचमपुण्य, अरिष्टेयंबुदवर पटल पंचकबोत्तु चरमपटलं

देतेन पशु ।

किण्डचउत्फलाणं पुण मज्जंगमुदा इ भाणमादिनिवे ।

पुटवी-आउउणफट्टजीवेमु हांनि रालु जीवा ॥५२७॥

कृष्णचनुत्फलाणां पुनः मध्यमांशमृताः एतु भवनमादिनिवे । पृथिव्यान्तर्गतं
खलु जीवाः ॥

- १ कृष्णनीलरूपोत्तेजोऽश्याचनुत्पद्यः मध्यमांशमांशं मृतरात्र कर्मभूमिः
भोगभूमितिर्यग्मनुष्यकं भवनत्रयवोक्तं भवन्ति परिणमन्ति पुटुवः । एतु
भोगभूमिजतिर्यग्मनुष्यमिष्यावृष्टिगत् तजोलेस्यामध्यमांशं मृतरात्रगत्
पुटुवः कारणविवं तेजोलेस्यासंभ्रमुपरित्यज्यतु । तु मत्ते कृष्णादिवनुत्फलाणाम्
मृतरात्र तिर्यग्मनुष्यकं भवनत्रयज्योतिर्विकृतं सोधर्मज्ञानरूपवद्वगत्तमस्य मिष्यावृष्टिः
१० यादरपर्याप्तपृथ्वीकायिकजोवंगळोळं यादरपर्याप्तकायिकजोवंगळोळं
कायिकजोवंगळोळं भवन्ति—परिणमन्ति पुटुवः । भवनत्रयादिं जीवंगळोळं
तेजोलेस्यासंभ्रमपरित्यज्यतु ।

किण्डितियाणं मज्झिमअसंमुदा तेउवाउवियलेमु ।

सुरणिरया सगलेस्सहि णरतिरियं जांति समजोगं ॥५२८॥

- १५ कृष्णत्रयाणां मध्यमांशमृताः तेजोवायुविकलेषु । मुरनारकाः स्वलेर्यान्निर्दिष्टा
यांति स्वयोगं ॥

कृष्णाद्यनुभलेस्याप्रथमं मध्यमांशविवं मृतरात्र तिर्यग्मनुष्यवद्वगत् तेजस्कांतं
कायिकविकलत्रय असंज्ञितं त्रिद्विषयाधारवणनस्पतिगळे भी जीवंगळोळं जांति जायते पुटुवः

- अत्र पुनः शब्दो विशेषप्ररूपोऽस्ति । तेन कृष्णादिनिर्लेस्यामध्यमांशमृताः कर्मभूमितिर्यग्मनुष्यकं
२० तेजोलेस्यामध्यमांशमृताः भोगभूमितिर्यग्मनुष्यमिष्यावृष्टयश्च भवनत्रये खलु उत्पद्यन्ते इति ज्ञातव्यम् । इतः
कृष्णादिवनुत्फलाणाम्भ्रममृतविर्यग्मनुष्यभवनत्रयसौधर्मज्ञानमिष्यावृष्टयः यादरपर्याप्तपृथ्वीकायिकेण तत्र
वनस्पतिकायिकेषु बोधयन्ते । भवनत्रयाद्येतेषां अत्रापि तेजोलेस्यासंभ्रमो बोधयः ॥५२९॥
कृष्णाद्यनुभलेस्यावर्षेण मध्यमांशमृतविर्यग्मनुष्याः तेजोवायुविकलत्रयांसंज्ञितामारवणनस्पतिगळे

इस गायामे 'पुनः' शब्द विशेष कथनका सूचक है । अतः कृष्ण आदि तीन लेस्याके

- २५ के मध्यम अंशसे मरे कर्मभूमिके मिष्यावृष्टि तिर्यच और मनुष्य तथा तेजोलेस्याके मध्यम
अंशसे मरे भोगभूमि या मिष्यावृष्टि तिर्यच और मनुष्य भवनवासी व्यन्तर और ज्योतिर्देवोंमें
उत्पन्न होते हैं यह जानना । तथा कृष्ण आदि चार लेस्याके मध्यम अंशसे मरे तिर्यच
मनुष्य, भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौधर्म ऐशान स्वर्गके देव ये सब मिष्यावृष्टि
यादर पर्याप्तक पृथ्वीकायिक, जलकायिक और वनस्पतिकायिकोंमें उत्पन्न होते हैं । अतः
३० त्रिको अपेक्षा यहाँ भी तेजोलेस्या सम्भव है यह जानना ॥५२९॥

कृष्ण आदि तीन अनुभ लेस्याओंके मध्यम अंशसे मरे तिर्यच और मनुष्य तेजो

१. क पर्याप्तपृथ्वीकायिक । २. म जीवंगळोळ । ३. अ. अत्रापि तेजोलेस्या भवनत्रयाद्येतेषां
४. व भवन ।

७२४
 चतस्रोऽमंतिनः असंतिर्बेदियपर्यायजोमे ऋणाद्यनुभ्लेऽप्यात्रयमुं तेजोनेनेगुमरुमेकं राप
 असंतिजोबं कपोतलेनेपर्यिबं मृतनामि धमे योऽनुदुग्मुं । तेजोनेनेपर्यिं मृतनामि मयनभंरदेगति-
 द्वपदेऽनुदुग्मुमनुभ्लेऽप्यात्रयिदं मृतनामि नरनिर्धमतिदपरोऽनुदुग्मुगण्णरिदं । संयपुन-
 मिप्यादुदो संतिर्बेदियकज्यपर्यामरुनोत्तं मरुदलकज्यपर्यामरुनोत्तं अपि प्रभविममतिर्बेदिय-
 कज्यपर्यामरुनोत्तं सासावनसम्यवुदो निरुज्यपर्यामरुनोत्तमासासावननु ।
 ॥ १७ ॥

५ ["निरयं सासनतम्यो न गच्छति य न तस्य निरपाणु । एउ,
"यहि सासावगो अपुण्णे साहारगमुदमगे ये तुउणे ॥" एरिगु]

"यहि सासावनो अपुणे साहारागमुपगे य तेजुग ।। धारु ।।
 लक्ष्यपर्याप्तकरोळं साधारणतोऽंगठोळं नारकरोळं मूखमतेऽंगठोळं तेनस्कायिक-
 कोळं पातकायिदंगठोळं संभवितसन्धरिदं भजनत्रयाध्याप्रकरोळं शेषतिथ्यंगमुप्यरोळं
 संभविषुमुमा निर्वृत्त्यपर्याप्तकसासावननोळं अनुभवयो हृत्वाद्यनुभवेद्रायवमेपाकं । तिथ्यं-
 गमुपगमुमा निर्वृत्त्यपर्याप्तकसासावननोळं अनुभवयो हृत्वाद्यनुभवेद्रायवमेपाकं । तिथ्यं-

१० मनुष्योपशमसम्यग्दर्शिनः तत्कालान्तरबोधं मुमुक्षु संश्लिष्टराशिमयमग्नौ दशसप्ततिसं
कृष्णनीलकपोतलेश्याप्रयंगमग्नयेदितु तद्विराषमसात्वननोऽप्यतिशयबोध्यभेदमात्र-
मेववकुर्वन्परिवृत्तु ।

मोगापुण्यगसम्मे काउस्त जहणियं हवे नियमा ।

सम्मे वा मिच्छं वा पञ्चत्ते तिण्णि सुहलेस्सा ॥२३१॥

१५ भोगापूर्णसम्यग्दृष्टौ कापोतस्य जघन्यं भवेन्नियमान् । सभ्यादृष्टौ वा मिथ्यादृष्टौ वा पर्व्याति तिस्रः शुभलेखाः ॥

पय्यासि तिस्रः शुभलेख्याः ॥
 सगुनलेखा एव । अर्धजिघासत्य तरवर्गं तेषोल्लेखा च, कुतः ? तस्य क्खोत्रमूत्रस्य घमांश तेषोमूत्रस्य
 भवनव्यन्तरपोरुमभ्रवमूत्रस्य संजिघासिर्गम्यत्योच्यते उत्पत्तान् । सतिःस्य योतिःप्रियंमनुष्यामन्यापुत्रो
 अनिष्टादभ्रजितिलज्ज्यायसीति त्विदंमनुष्यभवनवनिर्मुक्तपयसीतरुणापारस्ते च कृत्वा सगुभ्रवमेव । त्रिघंमनुष्यो
 २० पत्रमस्यमृद्योना सम्यक्तरुकात्म्यन्तरे मुहुः संवत्सरेषु देशसंबन्धवत् तरवर्गं नास्ति तदपि तदित्यपकृष्टान्
 द्वायसीतानामस्तौचि जातव्यम् ॥५३॥

२५ चतुर्मे-ये पञ्चिन्द्रिय और विकलत्रय जीवर्णि कृष्णादि तीन अनुभ लेख्या ही होती हैं । असंख्य पञ्चिन्द्रिय पर्याप्तके कृष्णादि तीन और तेजोलेख्या होती है । क्योंकि यदि यह कपोलेख्यासे भरता है तो पर्या नरकमें उत्पन्न होता है । तेजोलेख्यासे भरता है तो भवनघासी और व्यन्तरोमें उत्पन्न होता है । और यदि तीन अनुभ लेख्याओंसे भरता है तो मनुष्यगति, त्रिव्यं गतिमें उत्पन्न होता है । संख्यी लक्ष्यपर्याप्तके त्रिव्यं और मनुष्य निष्पादष्टिमें 'अपि' सन्देश असंख्यी लक्ष्यपर्याप्तके त्रिव्यंमें तथा सासादन गुणस्थानचर्चा निशृत्यपर्याप्त त्रिव्यं, मनुष्य और भवनत्रिकमें कृष्णादि तीन अनुभलेख्या ही होती हैं । उपरान्त सम्यग्दृष्टि त्रिव्यं और मनुष्योंके सम्यक्त्वकालके भीतर अतिसंयत्की तरह तीन अनुभ लेख्या नहीं होती है । तथापि उपरान्त सम्यक्त्वके विराधक सासादन सम्यग्दृष्टिके अपर्याप्त अवस्थानमें

उपशान्तरूपायादिगुणस्थानत्रयेऽङ्ग कृपायोदनाभावेऽपि या लेख्या उच्यते या भूतदूर्गन्तिष्ठा
लेख्येषु । तु मत्तं भूतपूर्वगतिन्यायान् उपशान्तरूपायवोत्तरगाऽप्यन्वयोऽङ्गं शोभरूपायवोत्तरगाऽ
प्यन्वयोऽङ्गं सयोगिकेवलित्थनोऽङ्गं भूतपूर्वगतिन्यायविरमेयवहुमः ॥ योगप्रवृत्तिर्मुच्यते
योगप्रवृत्तिर्लेख्या येषु योगप्रवृत्तिरानन्तरां तस्मिन्मे लेख्याऽङ्गयावोत्तरां
५ लेख्यासंभवम् ॥

तिष्ठं दोषं दोषं छणं दोषं च तिरसणं च ।

एतो य चोद्दसणं लेस्मा भाणादिदेशान् ॥५३४॥

प्रयाणां द्वयोऽङ्गो, पश्चां द्वयोश्च त्रयोऽङ्गानां च इतरस्य पुरातनो लेख्या भाषणादिदेशान् ।

तेऊ तेऊ तह तेऊम्मा पम्मा य पम्मगुक्का य ।

१० सुक्का य पम्मसुक्का भवणतिया पुण्णगे अगुहा ॥५३५॥

तेजस्तेजस्तया तेजःपक्षे पक्षा च पक्षगुणे च । गुणता च परमगुणता भवनत्रया गुणे
अनुभाः ।

भवनत्रयद भवनादिप्रिधामरणी पर्याप्तपेक्षेयि तेजोऽद्वयाजपयमवहुं । सौधर्मज्ञानद्वय
वैमानिकार्थे तेजोऽद्वयामध्यमांशमवहुं । सनत्कुमारमाहेन्द्रद्वय कल्पत्रये तेजोऽद्वयोऽद्वयान्

१५ पक्षलेख्याजपयमवहुं । ब्रह्मप्रहोत्तरलतवक्रापिष्टान्-धमहान्-गण्डं बादरुपगच्छ कल्पत्रये पक्ष-
लेख्यामध्यमांशमवहुं । शतारसद्व्यारकल्पत्रयद वैमानिकार्थे पक्षत्रयोऽद्वयोऽद्वयान्-
मुमवहुं । आनतप्राणत आरणाच्युतगच्छ नवपेक्षेयकगन्धमेवितु पविमूरर मुरगे गुणलेख्यामध्य-
मांशमवहुमिलिलं मेले अनुदिशानुत्तरविमानगच्छवितारर कल्पातोतजगे गुणलेख्योऽद्वयान्

उपशान्तरूपायादिगुणस्थानत्रये कृपायोदनाभावेऽपि या लेख्या उच्यते या भूतदूर्गन्तिष्ठा
२० यादेव । अथवा योगप्रवृत्तिर्लेख्येति योगप्रवृत्तिप्राधान्येन तत्र लेख्या भवति ॥५३३॥
भवनत्रयादिदेशान् लेख्योच्यते । तत्र पर्याप्तपेक्षया भवनत्रयस्य तेजोऽद्वयान्तरः । सौधर्मज्ञानमे-
तेजोमध्यमाः । सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः तेजोऽद्वयोऽद्वयान्तरादिपक्षस्य पक्षमध्यमाः ।
शतारसद्व्यारयोः पक्षोऽद्वयोऽद्वयान्तरादिपक्षस्य पक्षमध्यमाः । आनतप्राणतानु-
नवपेक्षेयकाया च गुणलेख्यमाः । इत उरि

उपशान्तरूपायादिगुणस्थानत्रये कृपायोदनाभावेऽपि या लेख्या उच्यते या भूतदूर्गन्तिष्ठा
२५ तेरह्वंमे वो कृपाय नष्ट ही हो गयी है । फिर भी वहाँ जो लेख्या कही जाती है वह भूतपूर्व
गतिन्यायसे ही कही जाती है । अथवा योगकी प्रवृत्तिको लेख्या कहते हैं और योगकी
प्रवृत्तिकी प्रधानता है इसलिए वहाँ लेख्या है ॥५३३॥

भवनत्रय आदि देवोकि लेख्या कहते हैं । पर्याप्तकी अपेक्षा भवनवासी, न्यन्तर और
ज्योतिषी देवोकि तेजोलेख्याका जपय अंश है । सौधर्म पेक्षानमे तेजोलेख्याका मध्यम अंश
१० है । सानत्कुमार माहेन्द्रमे तेजोलेख्याका उत्कृष्ट अंश और पक्षलेख्याका जपय अंश है ।
मह-प्रहोत्तर आदि छह स्वर्गोंमें पक्षलेख्याका मध्यम अंश है । शतार-सद्व्यारमें पक्षका
उत्कृष्ट अंश और गुणलेख्या जपय अंश है । आनत आदि चार स्वर्गोंमें और नौ मैत्रेयकोंमें
गुणलेख्या मध्यम अंश है । उससे ऊपर अनुदिश और अनुत्तर सम्बन्धी बौद्ध विमानोंमें

संचयमनाश्रयित इत्यतः प्रमाणं वेळत्पट्टु ।

खेत्तादो असुहतिया अणंतलोका क्रमेण परिहीणा ।

कालादोतीदादो अणंतगुणिदा कमा हीणा ॥५३८॥

क्षेत्रतोऽनुभ्रयाः अनंतलोकाः क्रमेण परिहीनाः । कालावतीतादनंतगुणाः क्रमाद्वीनाः ॥

क्षेत्रप्रमाणदिवे अनुभ्रया जीवाः अनुभलेदयात्रयव जीवंगळु अणंतक्रोमा अनंतलोक

प्रमितगळामुत्तं क्रमदिवे परिहीनंगळाम्पुवु किंचिदूनक्रमंगळाम्पुवु क्षेत्र कृ = ख नो ए - क ए = इल्लियुं त्रेराशिकं माडल्पडुगुं प्र = फ ग १ । इ १३ लघ्य शला । ख । प्रमा ग १ । क = इ ख ।

लघ्य = य । कालावतीताव कालप्रमाणदिवे अनुभलेदयात्रय जीवंगळु अतीतकालमं नोडलु अनंत-
गुणिताः अनंतगुणितंगळामुत्तलु क्रमाद्वीनाः क्रमहीनंगळाम्पुवु । का । कृ । अ ख । नो अ ए - का
१० अ ए = इल्लियुं त्रेराशिकं माडल्पडुगुं । प्र अ । क अ १ । इ १३ - लघ्य शलाका । ख । मत्तं

प्र ग १ । फ अ । इ । ग ए । लघ्य अ ए ।

कपोतयोरपि ज्ञातव्यम् । कृ ११- । नो १३- । क १३- । इति कालसंचयमाधिरय इत्यतः प्रमाणमुक्तम् ॥५३९॥

१- ३- ३-

क्षेत्रप्रमाणेन अनुभविल्लेयाजीवाः अनंतलोका अपि क्रमेण परिहीनाः किंचिदूनक्रमा भवन्ति ।
कृ ३३ । नो ३४- । क ३३ ३३ । अत्र त्रेराशिकं प्र = फ ग १ । इ १३- लघ्यशलाका । ख । पुनः प्र । ए १ ।

१५ कृ ३३ । इ ए ख । लघ्य ३३ । कालप्रमाणेनानुभविल्लेया जीवा अतीतरसनादनंतगुणिता अपि क्रमाद्वीना
भवन्ति । का कृ अ ख । नो अ ख- । क अ ख- । अत्रापि त्रेराशिकं-प्र अ फ ग १ । इ १३- लघ्यशलाकाः

ख । पुनः प्र ए १ । फ अ । इ ए ख । लघ्य अ ख ॥५३८॥

जीवोंक प्रमाणमे देनेपर जो लघ्य आवे वता है । इसी तरह नीळ और कापोतलेस्यावालोंका
प्रमाण जाना चाहिये । इस तरह कालकी अपेक्षा अनुभलेदयावाले जीवोंका प्रमाण
१० कृ ३१ ॥५३९॥

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा तीन अनुभलेदयावाले जीव अनन्तलोक प्रमाण हैं किन्तु क्रमसे
कुट-कुट होन हैं । यही प्रमाणराशि लोक, फडराशि एक शलाका, इच्छा राशि अपने-अपने
जीवोंका प्रमाण । ऐसा करनेपर लघ्यराशि मात्र अनन्त शलाका हुई । तथा प्रमाण एक
शलाका, फड एक लोक, इच्छा अनन्त शलाका । ऐसा करनेपर लघ्यराशि अनन्त लोकमात्र
२५ कृष्णादि लेदयावाले जीवोंका प्रमाण होता है । तथा काल प्रमाणसे तीन अनुभ लेदयावाले
जीव अतीतकालके समयसे अनन्तपूर्व हैं । किन्तु क्रमसे होन हैं । यही भी त्रेराशिक करना ।
प्रमाणराशि अतीतकाल, फडराशि एक शलाका, इच्छा राशि अपने-अपने जीवोंका प्रमाण ।
ऐसा करनेपर लघ्यराशिमात्र अनन्त शलाका हुई । फिर प्रमाण एक शलाका, फड एक अतीत
काल, इच्छा अनन्त शलाका । ऐसा करनेपर लघ्यराशि अनन्त अतीतकाल प्रमाण कृष्णादि
१० लेदयावाले जीव होते हैं ॥५३८॥

मात्रघनांगुलगुणितजगच्छ्रेणीमात्रकृष्णलेखावैक्रियकराशिपं — ६ प संख्यातद्विदं भागिति
३ ०

बहुभागं — ६ प ४ स्वस्थानस्वस्थानबोद्धितु मत्तमिते शेषब शेषब संख्यातब बहुभाग-
३-० ५

बहुभागगळं विहारवत्स्वस्थानबोद्धं — ६ प ४ वेदनासमुद्घातबोद्धं — ६ प ४
३-१ ५ ५ ३-५ १ ५ १

कपायसमुद्घातबोद्धं — ६ प ४ दातव्यगळप्युवु शेषैकभागं वैक्रियिकसमुद्घातबोद्धं दातव्य-
३-१ ५ ५ ५ ३-५ ५ ५ ५

५ मवकु - ६ प १ मिवं यथायोग्यवैकुर्वणावगाहनोत्पन्न संख्यातघनांगुलगणितं गुणिमुत्तं
३-१ ५ ५ ५ ५

यिरलु घनांगुलवर्गगुणितासंख्यातश्रेणीमात्रं वैक्रियिकसमुद्घातपदबोद्धं क्षेत्रमनकुं = ० ६।६।
इंती वगपवंगळ रचनासंबुद्धिपं स्थापिति रचनेयिदु :

भवति = मू २ १। पुनः पत्यासंख्यातमात्रघनांगुलगुणितजगच्छ्रेणि कृष्णलेखावैक्रियकराशिपं — ६ प अंभतव
३-०

भवत्वा बहुभागं — ६ प ४ स्वस्थानस्वस्थाने^२ हत्वा शेषवेषस्य संख्यातबहुभागसंस्थानबहुभागो भिदा-
३-० ५

१० यत्स्वस्थाने — ६ प ४ वेदनासमुद्घाते — ६ प ४ कपायसमुद्घाते च ६।५ ४ पतितोद्गति-
३-० ५ ५ ३-० ५ ५ ५ ३-० ५ ५ ५ ५

नात्वा शेषैकभागो वैक्रियिकसमुद्घाते देयः — ६ प १ अयमेव यथायोग्यवैगुर्वाणावगाहनोत्पन्नसंख्या-
३-० ५ ५ ५ ५

घनांगुलगुणितः — घनांगुलवर्गगुणितासंख्यातश्रेणिमात्रं वैक्रियिकसमुद्घाते क्षेत्रं भवति — ० ६।६। पुनः
सामान्याप उर्ध्वतिर्यग्नप्यलोकान् पञ्च संस्थाप्यालापः क्रियते —

- वैक्रियिक समुद्घातमें क्षेत्र घनांगुलके वर्गसे गुणित असंख्यात जगदश्रेणि प्रमान^१ है।
१५ यह इस प्रकार है—कृष्णलेखावाले वैक्रियिक शक्तिसे युक्त जीवोंके प्रमाणको संख्यात
भाग दो। बहुभाग प्रमाण जीव स्वस्थानस्वस्थानमें हैं। शेष एक भागमें पुनः संख्यात
भाग दो। बहुभाग प्रमाण जीव विहारवत्स्वस्थानमें हैं। शेष एक भागमें पुनः संख्यात
भाग दो। बहुभाग प्रमाण जीव वेदना समुद्घातमें हैं। शेष एक भागमें संख्यातसे भाग
दो। बहुभाग प्रमाण जीव कपाय समुद्घातमें हैं। शेष एक भाग प्रमाण जीव वैक्रिय
२० समुद्घातमें हैं। इस प्रकार जो वैक्रियिक समुद्घातवाले जीवोंका प्रमाण है उसको
यथायोग्य एक जीव सम्बन्धी वैक्रियिक समुद्घातवाले जीवोंका प्रमाण है उसको
घनांगुलके वर्गसे गुणित असंख्यात श्रेणिमात्र वैक्रियिक समुद्घातका क्षेत्र होता है।

हृत्पिण्डके दोडसंख्यातघनांगुलवर्गमात्रजगन्ध्रुणीमात्रं तज्जीवक्षेत्रमप्युर्वारवं । ई प्रसारं नीललेदयेगं कपोतलेदयेगं वक्तव्यमवहुं ।

मत्तं तेजोलेदया राशिगं $\text{III } 9 \text{ (१) } \frac{1}{1}$ संख्यातदिवं भागिसि बंब बहुभागं स्वस्थानस्-

$$४६५=१$$

स्थानदोडित्तु दोषैकभागं मत्तं संख्यातदिवं भागिसि बहुभागं विहारवत्स्वस्थानदोडित्तु

$$\frac{1}{(७)}$$

५ $\text{III } ११४$ दोषैकभागं मत्तं संख्यातदिवं भागिसि बहुभागं वेदनासमुद्घातदोडित्तु-

$$४६५=१५५$$

$$\frac{1}{(७)}$$

$\text{III } ११४$ दोषैकभागं मत्तं संख्यातदिवं भागिसि बहुभागं कषायसमुद्घात दोडित्तु-

$$४६५=१५५५$$

$$\frac{1}{(७)}$$

$\text{III } ११४$ दोषैकभागं वैक्रियिकपददोडित्तु ।-

$$४६५=१५५५५$$

कृतः ? असंख्यातघनांगुलवर्गमात्रजगन्ध्रुणीमात्रं तज्जीवत्वात् । एवं नीलकपोतयोरेत वक्तव्यम् । पुनस्तेजोलेदया

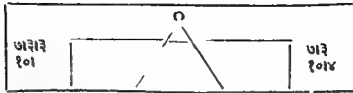
जीवराशि $\text{III } १$ संख्यातेन भक्त्वा अथवा बहुभागं स्वस्थानस्थाने—
४१६५=१

$\text{III } १$ विहारवत्स्वस्थाने $\text{III } १$ वेदनासमुद्घाते—
१० ४१६५=१५ ४१६५=१५५५५ ४१६५=१५५५५५

भागमें और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । क्योंकि वैक्रियिक समुद्घातबालों का क्षेत्र असंख्यात घनांगुलके वर्गसे गुणित जगत्त्रयेण प्रमाण है । इसी प्रकार नील और कपोतलेदयाका भी फहना चाहिये ।

अथ तेजोलेदयाका क्षेत्र फहते हैं—तेजोलेदयावाले जीवोंकी राशिमें संख्यातसे भाग देकर बहुभाग विहारवत्स्वस्थानमें जानना । ज्ञेय रहे एक भागमें संख्यातसे भाग देकर बहुभाग वेदना समुद्घातमें जानना । पुनः ज्ञेय रहे एक भागमें संख्यातसे भाग देकर बहुभाग कषाय समुद्घातमें जानना । ज्ञेय रहा एक भाग सो वैक्रियिक समुद्घातमें जानना । इस

प्रदेश विसर्पणक्रमदिबं वृद्धिपुच्छविबं त्रिगुणितविस्तारविबं पुष्टिव रात्रि मूलराशिं नोद्गु नवगु-
१।२
मवकु ६।६।६।००।६।९ मा^३ नवगुणमूलराशिं मुत्तभूमि समासात् मध्यफलमे-
७ ७ ७ ७



दु मुखं क्षुण्णमपकुमेको बोधे द्वितीयविकल्पं मोदलो^३ बु प्रदेशवृद्धिक्रममप्युर्वारं भा क्षुण्णं कृत्रि-
ल्लियितबोधे समीकरणवि पुष्टिव मध्यमायगाहनं नवाङ्घनांगुलसंख्यातीकभागमश्नुमवरिबं वेदना-

५ समुद्रपातराशियमं कपायसमुद्रपातराशिपुमं गुणिमुपुतु येव $\frac{111 \cdot 1}{94619} = 1164$ कपाय
 $8164 = 9442$

$\frac{111 \cdot 1}{94619}$ मत्तं संख्यातयोजनायाममुं सूच्यंगुलसंख्यातभागविष्कंभोत्सेधमुमागि मूल-
४।६५।५५५।२

संख्येयभागेन ६ हतस्तक्षेत्रं स्यात् । वेदनाकपायराशी द्वौ तत्समुद्रपातयोर्मूलराशीरात्रद्वेत्तोत्तरवृद्धपा उत्कृ-

विकल्पस्य त्रिगुणितव्यासस्य वासो त्रिगुणो परिहीत्याद्यानीत-७।३।३।७।३।७ घनफलस्य नव-
१०।१०।४

वेना । ऐसा करनेसे प्रमाणरूप घनांगुलके संख्यातवें भाग एक देवके शरीरकी अवगाह
१० हुई । इस अवगाहनासे पहले जो स्वस्थानस्वस्थानमें जीवोंका प्रमाण कहा था उसे गुना
करनेपर जो प्रमाण हो उतना स्वस्थानस्वस्थानका क्षेत्र जानना ।

१५ वेदना समुद्रपात और कपाय समुद्रपातमें आत्माके प्रदेश मूल शरीरसे बाहर निकल-
कर एक प्रदेश क्षेत्रकी रोकें या एक-एक प्रदेश बढ़ते-बढ़ते उत्कृष्ट क्षेत्रकी रोकें तो चौड़ाईमें
मूल शरीरसे त्रिगुने क्षेत्रकी रोकते हैं और ऊँचाई मूल शरीर प्रमाण ही है । इसका घनत्व
क्षेत्रफल करनेपर मूल शरीरके क्षेत्रफलसे नौगुणा क्षेत्रफल होता है । सो जपन्य एक प्रदेश
और उत्कृष्ट मूल शरीरसे नौगुणा क्षेत्र हुआ । इनका समीकरण करनेसे एक जीवके मूल-
शरीरसे साढ़े चार गुना क्षेत्र हुआ । शरीरका प्रमाण पहले घनांगुलके संख्यातवें भाग कहा
था । सो उसे साढ़े चार गुना करनेपर एक जीव सम्बन्धी क्षेत्र होता है । उससे वेदना
समुद्रपातवाले जीवोंके प्रमाणको गुना करनेपर वेदना समुद्रपात सम्बन्धी क्षेत्र आता है ।
२० तथा कपाय समुद्रपातवाले जीवोंके प्रमाणसे गुणा करनेपर कपाय समुद्रपात सम्बन्धी क्षेत्र
आता है । विहार करते हुए देवोंके मूलशरीरसे बाहर आत्माके प्रदेश फैलें तो वे प्रदेश एक
जीवकी अपेक्षा संख्यात योजन तो लम्बे और सूच्यंगुलके संख्यातवें भाग प्रमाण चौड़े व
ऊँचे क्षेत्रकी रोकते हैं । उसका क्षेत्रफल संख्यात घनांगुल प्रमाण होता है । इससे पूर्वमें कई
विहारवत्स्वस्थानवाले जीवोंके प्रमाणको गुना करनेपर सब जीवोंके विहारवत्स्वस्थान

२५ १. म राशि ७।३।३।७।३।७ मूल^३ । २. म मा मूल^३ ।
१०।१०।४

संख्यातमूत्र्यगुलविक्रमभोत्तेधद्वचद्वरज्जायतक्षेत्र २१ २१ घनफलदिवं संख्यातप्रतरांगुलगुणित-

३
२

द्वचद्वरज्जुगणितं - ३।४१ गुणिमुत्तं विरलु उपपावक्षेत्रमरुत्तं - ३ प ७ - ३।४१ पप-
७ २

प प प प प।७ २
७ ७ ७ ७ ७

लेदयेयोळ पदलेदयाजीवराशिय संख्यातदिवं भागिसि बहुभागं स्वस्थानस्यस्थानपदबोद्धितु
= ४ दोषैकभागं मत्त संख्यातदिवं भागिसि बहुभागं विहारवत्स्वस्थानबोद्धितु

४।६५ = १।६।५

५ = ४। दोषैकभागं मत्तं संख्यातदिवं भागिसि बहुभागं वेदनासमुद्घातपद-

४।६५ = १।६।५।५

बोद्धितु = ४ दोषैकभागं कपायसमुद्घातपदबोद्धितु = १

४।६।५ = १६।५।५।५

४।६५ = १६।५।५।५

बलिकमल्लि प्रथमराशिय द्वितीयं द्वितीयराशियुं क्रोशायाम तन्नयमभागमुखविक्रमभितर्यंगोवा-

राशिमवति— ३। प प १ १ अस्मिन् समीकरणकृतदियंगोवमुखप्रपणसंख्यातमूत्र्यगुलविक्रमभोत्ते-

प प प प प
७ ७ ७ ७ ७

धद्वचद्वरज्जुवत्क्षेत्रपनपलेन २ १।२ १ संख्यातप्रतरांगुलगुणितद्वचद्वरज्जुप्रमितेन — ३।४।१ गुणिते
— ३
७।२

१० उपपावक्षेत्रं भयति— ३ प प - ३।४।१। पदलेदयायां लम्बीवराक्षेत्रे संख्यातभक्तबहुभागः स्वस्थान-

७ ७ ७ ७ ७
७ ७ ७ ७ ७

स्वस्थाने देयः— ४ दोषैकभागस्य संख्यातभक्तबहुभागो विहारवत्स्वस्थाने देयः—

४।६५ = १६।५

॥
= ४ दोषैकभागस्य संख्यातभक्तबहुभागो वेदनासमुद्घाते देयः— ४
४।६५ = १६।५।५।५

१५ फी मुख्यतासे एक जीव सम्बन्धी प्रदेश केन्द्रनेकी अपेक्षा देद राज् लम्बा संख्यात सूत्र्यगुल प्रमाण षोडा ऊँचा क्षेत्र है। इसका घनक्षेत्रफल संख्यात प्रतरांगुलसे देद राज्को गुणा करने पर जो प्रमाण है वतना है। इससे उपपाद जीवोंके प्रमाणको गुणा करनेपर उपपाद सम्बन्धी क्षेत्र आता है। यह पदलेदयायें क्षेत्रका कथन किया। अब पदलेदयायें करते हैं—

पदलेदयावाले जीवोंको संख्यामें संख्यातका भाग देकर बहुभाग स्वस्थानस्वस्थानमें जानना। एक भागमें पुनः संख्यातमें भाग देकर बहुभाग विहारवत्स्वस्थानमें जानना। दोष एक भागमें संख्यातक्षेत्र भाग देकर बहुभाग वेदना समुद्घातमें जानना। दोष रहा एक

येदनासमुद्घातपदबोद्धं वरिषुतु - ४ शेषैकभाग संख्यातबहुभागं कपायसमुद्घातपदबोद्धं
११।५।५।५।

वरिषुतु - ४ शेषैकभागं वैक्रियिकसमुद्घातपदबोद्धं - १ मा राशि-
११।५।५।५।५

यना जीयंगत् विगुब्बिसिद गजादिशरीररावगाहनसंख्यातघनांगुलंगति गुणिमुत्तं विरलु वैक्रियिक-
समुद्घातपदबोद्धं क्षेत्रमवकु - ६३ मो राशिपन्ने "मरवि असत्तेऽत्रदिमं तस्सासंख्यं
११।५।५।५।५

विगहे होति तस्सासंख्यं दूरे उववादे तस्स सु असंख्यं ॥" एवितु पल्यासंख्यातभागाविदं भागिमुत्तं
निरलेरुभागं प्रतिसमयं प्रियमाणजीवप्रमाणमवकु = १ मत्तं पल्यासंख्यातविदं भागितिव बहु-
११।५

०

भागं विप्रहृगतिम जीवप्रमाणमवकु - १ प मत्तमिदं पल्यासंख्यातविदं भागितिव बहुभागं मारणा-
११ प प
० ०

येदनासमुद्घाते ११।५।५।५।५ कपायसमुद्घाते ५ पवितीरुतीति ज्ञात्वा ११।५।५।५।५ शेषैकभागो
वैक्रियिकसमुद्घाते देय ११।५।५।५।५ अस्मिन् सगोविषुवितवज्जादितरीरावगाहनसंख्यातपदार्थमुत्ते
११।५

१० असमुद्घातजेषं भवति ११।५।५।५।५ पुनस्तस्मिन्नेव सनरकुमारमाहेऽत्रदेवराज्ञी—
मरवि असत्तेऽत्रदिमं तस्सासंख्यं य विगहे होति । तस्सासंख्यं दूरे उववादे तस्स सु असंख्यं ॥

एति पल्यासंख्यातमर्तैकभागः प्रतिसमयं प्रियमाणजीवप्रमाणं भवति ११।५।५। पुनः पल्यासंख्यातमर्त-
११।५।५।५

बहुभागे विप्रहृगतिजीवप्रमाणं भवति - १ पुनः पल्यासंख्यातमर्तैकभागो मारणान्ति असमुद्घातजीवप्रमाणं
११।५।५।५
५ ५
० ०

११ मारद्वयं वर्गमूलेन जगत्त्रयेणिको भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उतनी है । इस राशिमें
संख्यातमे भाग देकर बहुभाग प्रमाण स्वस्थानस्वस्थानमें जीव जानना । शेष रहे एक भागमें
पुनः संख्यातमे भाग देकर बहुभाग विहारवत्स्वस्थानमें जीव जानने । शेष रहे एक भागमें
पुनः संख्यातमे भाग देकर बहुभाग येदना समुद्घातमें जानना । शेष रहे एक भागमें पुनः
वैक्रियिक समुद्घातमें जीव जानना । इतने-इतने जीव इनमें होते हैं । इन वैक्रियिक समुद्घा-
तपदार्थों के अर्थों के प्रमाणों को एक जीव सम्बन्धी हाथी-घोड़ेकर विक्रिया को प्रमाणों
१० संख्यात पदार्थों में मूला करनेपर वैक्रियिक समुद्घातका ध्येय आता है । मारनान्वित
समुद्घात और मारद्वय ही ध्येय मानलुनार मारद्वयको अपेक्षासे बहुत है अतः इनका
ध्येय को ध्येय ही ध्येय मानने है—

राशिं गुनिसिद्धौ तन्माराणातिकसमुद्घातपदबोद्ध क्षेयमवकुं — प प १ १ ३ १४ मं
० ०
११ प प प प
० ० ० ०

निरन्त्यायतनं स्यात्तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १ आहार
क्षेयपनक्तविधं संख्यातप्रतरांगुलहतत्रिरज्जुमार्गगण्डिदं गुनिसिद्धौ उपपादबोद्ध क्षेयमवकुं

— प प १ १ ३ १ ४ १ तेजससमुद्घातबोद्ध आहारकसमुद्घातबोद्ध—क्षेयगण्ड तेजे
० ०
११ प प प प प
० ० ० ० ०

१ तैजसोऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १ आहार
१ १ १ १ १ मत्तं गुणितेऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १

मत्तं गुणितेऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १ आहार
१ १ १ १ १ मत्तं गुणितेऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १
० ० ० ० ०
११ प प प प प
० ० ० ० ०

११ प प प प प तैजसोऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १ आहार
१ १ १ १ १ मत्तं गुणितेऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १
० ० ० ० ०
११ प प प प प
० ० ० ० ०

११ प प प प प तैजसोऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १ आहार
१ १ १ १ १ मत्तं गुणितेऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १
० ० ० ० ०
११ प प प प प
० ० ० ० ०

१० तैजसोऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १ आहार
१ १ १ १ १ मत्तं गुणितेऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १
० ० ० ० ०
११ प प प प प
० ० ० ० ०

१० तैजसोऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १ आहार
१ १ १ १ १ मत्तं गुणितेऽयं तैजसोऽयं तन्माराणां गुणितसंख्यातजोयप्रमाणराशिगण्यन्तु सै १ १ १ १ १
० ० ० ० ०
११ प प प प प
० ० ० ० ०

बोडे द्वितीयपवबोळु क्षेत्रमवकुं ५४।६।१ वैक्रियिकसमुद्धातपंचमजीवराशिं स्वस्वयोगे
 ३५५
 मागिविगुण्वसिद शरीरावगाहनंगळिबं लब्धसंख्यातघनांगुलंगळिबं गुणिसिबोडे वैक्रियिकसमुद्धात
 पवबोळु क्षेत्रमवकुं ५ ६१ मत्तं मारणांतिकसमुद्धातपवबोळु रज्जुपट्टकायामनूच्यङ्गुलं
 ३५५५५
 संख्यातभागविष्कंभोत्तेष २ २ क्षेत्रघनफलमिदे — ६।४ कजीवप्रतिवटमरुमुो संभु
 १ १
 ७६

- ५ मानतादिदेवरुण्यो मनुष्यरोळंमुत्पत्तिनियममपुदरिबं च्युतकल्पबोळु संख्यातजीवंगळे मरु
 मनेपुवुवुदु कारणमागि संख्यातजीवंगळिबं गुणिसिबोडे मारणांतिकसमुद्धातक्षेत्रप्रमाणं
 १७।६।४ तैजससमुद्धातपवबोळं आहारकसमुद्धातपवबोळं पचलेइयेयोळेयेळदंतं क्षेत्रंगळु
 ११
 तै १।६।१।आ १।६।१। केवलिसमुद्धातपवबोळु क्षेत्रं येळत्पट्टगु मदेतं बोडेल्लि वंरनु

क्षेत्रघनफलसंख्यातघनाङ्गुलैः ६१ गुणिते विहारवत्स्वस्थाने क्षेत्रं भवति ५।४।६१। पुनः पत्रमपुनो
 ३५५।

- १० स्वस्वयोग्यतया विदुर्वितथारीरावगाहलम्बसंख्यातघनाङ्गुलैः ६१ गुणिते वैक्रियिकसमुद्धातपदे इति
 भवति ५।६१
 ३५।५।५५

पुनः रज्जुपट्टकायामनूच्यङ्गुलसंख्यातभागविष्कंभोत्तेष २।२ क्षेत्रघनफलनेरुजीवप्रतिवटं भाति
 १ १
 ७६

- ६।४ अस्मिन्मानतादिदेवानां मनुष्येष्वेवोत्पत्तेस्तत्र संख्यातरेव त्रियमासैर्गुणिते मारणान्तिरुसमुद्धातघनं
 ७।१
 भवति १।७६।४ तैजसाहारकसमुद्धातक्षेत्रं पचलेयावद् ।—तै १।६१।आ १।६१ केवलि

- ११ विहारवत्स्वस्थान सम्बन्धी क्षेत्र होता है। तथा अपने-अपने योग्य विक्रियारूप बनाने गये
 हाथी आदि के शरीरकी अवगाहना संख्यात घनांगुल है। उससे वैक्रियिक समुद्धातवाले
 जीवोंके प्रमाणको गुणा करनेपर वैक्रियिक समुद्धातमें क्षेत्रका प्रमाण आता है। मुक्कलेसा
 आनतादि स्वर्गोंमें होती है। सो आरण अच्युतकी मुख्यतासे वहाँसे मध्यलोक छह राजू
 है। अतः वहाँसे मारणान्तिक समुद्धात करनेपर एक जीवके प्रदेश छह राजू लम्बे और
 उसको संख्यातसे गुणा करना, क्योंकि आनतादिकसे मरकर देव मनुष्य ही होता है। इन
 मारणान्तिक समुद्धातवाले जीव संख्यात ही होते हैं। अतः संख्यातसे गुणा करनेपर
 क्षेत्र पचलेयामें जैसा कहा है वैसा ही जानना। अब केवलिसमुद्धातमें क्षेत्र कहते हैं—
 २५ १. म. ग. र. र. र. र.

मोडुवादीडे अतोत्पुतराटशतद्विसहस्रसूच्यंगुलगुणितजगत्प्रतरमात्रं निष्पन्नपूर्वाभिमुखकवाट-
समुद्रपातक्षेत्रमकुं = सू २। २८८०। किंचिद्वनचतुर्द्विगरजुशीर्षं पूर्वापरविं सप्तैकपंचैकरजु
विष्कंभं द्वादशांगुलरं द्रसमीकृतक्षेत्रफलं मुख = १। भूमि-७ जोग ८ बन्ने-४ प-७ गुणिते = ४ पदयमं

होवि एदिदधोलोकक्षेत्रफलमकुं = ४। मत्त। मुख-१ भूमि-५ जोग-६ बन्ने-३ पद-७ गुणिते-२।

५ पदपणं होवि। अपर्वत्तितं = ३ इवं द्विगुणितसिबोद्विष्यलोकक्षेत्रफलमनुकुमोद्विष्यलोकक्षेत्रफल-

मुमं = ३ अधोलोकक्षेत्रफलमुमं = ४ कूडि जगत्प्रतरमितमानकुमं द्वादशांगुलरं द्विविद गुणित-

सिबो = १२ डेकजीवप्रतिबद्धक्षेत्रमकुमं जीवगुणकारविं ४० गुणितसिबोडे चतुःशताशीति सूच्यंगुल-

गुणितजगत्प्रतरमात्रमुत्तराभिमुखस्थितकवाटसमुद्रपातक्षेत्रमकुं = सू २। ४८०। मिवं त्रिगुणितं

माडिबोडे चत्वारिंशदुत्तरचतुःशतैकसहस्रसूच्यंगुलसंगुणितजगत्प्रतरमात्रमुत्तराभिमुखासीनकवाट-

समुद्रपातक्षेत्रमकुं = सू २। १४४०। ई कयाटसमुद्रपातक्षेत्रमं नोडलसंख्यातगुणमप्युतु सत्वं-

१० लोकमं नोडलमसंख्यातभागहीनमुमप्युतु प्रतरसमुद्रपातक्षेत्रमकुमं तै बोडे :-

नवशतपष्टिसूच्यंगुलहृतजगत्प्रतरं पूर्वाभिमुखस्थितकवाटसमुद्रपातक्षेत्रं भवति = सू २। १६० एतदेव

त्रिगुणितं द्विसहस्राष्टशताशीतिमूच्यंगुलहृतजगत्प्रतरं निष्पन्नपूर्वाभिमुखकवाटसमुद्रपातक्षेत्रं भवति सू २।

२८८० किंचिद्वनचतुर्द्विगरजुशीर्षं पूर्वापरं सप्तैकपंचैकरजुविष्कंभस्य मुख = १। भूमि-जोग-८

-४ पद-गुणिते = ४ पदपणं होदीत्यपोलोकफलं = ४ मुख-१ भूमि-५ जोग-६ दले-१ पद-

गुणिते = २१ पदपणं होदीत्यपवर्त्य = ३ द्विहते ऊर्ध्वलोकफलं = ३ अस्मिन्नपोलोकफले मिलिते जगत्-

वत्पादाष्टगुलं एतेन गुणितः = १२ एकजीवप्रतिबद्धं तदेव जीवगुणकारेण ४० गुणितं चतुःशताशीतिमूच्यंगुल-

लहृतजगत्प्रतरमुत्तराभिमुखस्थितकवाटसमुद्रपातक्षेत्रं भवति = सू २। ४८० एतदेव निहत्तं एकसहस्रपुं-

इससे नीसे गुणा किया है। पूर्वाभिमुख स्थित कपाट समुद्रातमें एक जीवके प्रदेश वातबल्य

२० चोड़ाई सात राजु, सो रतने चौड़े हैं। वारह अंगुल प्रमाण पूर्य पश्चिममें ऊंचे हैं। इसका

क्षेत्रफल चौबीस अंगुलसे गुणित जगत्प्रतर प्रमाण होता है। चूँकि एक समयमें इस समुद्रात

करनेवाले जीवोंका प्रमाण चालीस है अतः चालीससे गुणा करनेपर नौ सौ साठ

सूच्यंगुलसे गुणित जगत्प्रतर प्रमाण पूर्वाभिमुख स्थित कपाट समुद्रातका क्षेत्र होता है।

२५ पूर्वाभिमुख स्थित कपाट समुद्रातका क्षेत्र होता है। उत्तराभिमुख स्थित कपाट समुद्रातमें

एक जीवके प्रदेश वातबल्य बिना लोक प्रमाण अर्थात् कुछ कम चौदह राजु प्रमाण

उभये होते हैं। और पूर्य-पश्चिममें लोककी चौड़ाई प्रमाण चौड़े होते हैं। सो लोक

१. म. मादुरातोडे।

केवलि स वं	उपपाद				
	$\begin{array}{c} \overline{प} \quad \overline{प} \\ \text{३} \quad \text{३} \\ \text{प प प प प} \\ \text{३ ३ ३ ३ ३} \end{array}$	७२	३१४७		
	$\begin{array}{c} \overline{प} \quad \overline{प} \quad \overline{७} \\ \text{३} \quad \text{३} \\ \text{११ प प प प प} \\ \text{३ ३ ३ ३ ३} \end{array}$	३१४७		७-६१७	७
स्थित दंड	पू स्थि = क =	उत्थित क =	प्रतर		
- ४८६४०	= सू २१२६०	= २१४८०	$\frac{३}{३}$		
आसीन दंड	पू आसीन क	आसीन क	लोकपूर		
५-४७७६०	= सू २१२८८०	= २१२४४०	$\frac{३}{३}$		

स्पर्शाधिकारं सार्द्धगायापदकविं पेक्ष्यः—

ज्ञातं सव्यं लोथं तिद्वाणे असुहलेस्साणं ॥५४५॥

स्पर्शः सव्यलोकस्थित्यने अशुभलेन्यानां ॥

अशुभलेन्यानामर्के स्वस्थानमेवं समुदघातमेवं उपपादमेवं त्रिस्थानमाशु

- १० मल्लिया त्रिस्थानदोक्तं स्पर्शः स्पर्शं सव्यलोकः सव्यलोकमवकुं । विधेयं स्वस्थानस्वस्थानादि
द्वयपरंगच्छोक्तं स्पर्शं पेक्ष्यगुं ।

स्पर्शं बुद्धेर्दोष्टं स्वस्थानस्वस्थानादिवद्वयपरंगच्छोक्तं विवक्षितपदपरिणतंगच्छप जीवर्थात्
वर्तमानक्षेत्रसहितमागियतोत्कालदोक्तं स्पृष्टक्षेत्रं स्पर्शं बुद्धकुमल्लि अन्नेवरं कृष्णलेन्यादोर्गच्छे
स्वस्थानस्वस्थानवेदना कयाप भारणामित्तक उपपादमेवं वयं वयं परंगच्छोक्तं स्पर्शं सव्यलोकमवकुं विहा-

- १५ अशुभलेन्यानामर्के स्वस्थानमवद्वयपरंगच्छोक्तं स्पर्शः विवक्षितपदपरिणतंगच्छप जीवर्थात्
वर्तमानक्षेत्रसहितमागियतोत्कालदोक्तं स्पृष्टक्षेत्रं स्पर्शं बुद्धकुमल्लि अन्नेवरं कृष्णलेन्यादोर्गच्छे
स्वस्थानस्वस्थानवेदना कयाप भारणामित्तक उपपादमेवं वयं वयं परंगच्छोक्तं स्पर्शं सव्यलोकमवकुं विहा-

आगे माहृ छह गाथाओंसे स्पर्शाधिकार कहते हैं—

- १० क्षेत्रमे वो चैव वतमान काठमे रोके गये क्षेत्रका ही मह्य होता है किन्तु सत्यं
वर्तमान क्षेत्र मह्य अतीत काठमे शृष्ट क्षेत्रका मह्य होता है । अतः वीन अशुभ देशाओं
स्पर्श स्वस्थान, समुद्रात् और उदरात् इन वीन सामान्य स्थानोंमें सर्वलोक होता है । किन्तु
क्षेत्रमे दम स्वस्थाने कहते हैं—क्षेत्रमे स्वस्थान स्वस्थान, वेदना-समुद्रात्, कयाप-समुद्रात्,
भारणामित्तक और उदरात् इन पाँच स्थानोंमें कृष्णलेन्यादोर्गच्छे जीवर्थात् स्पर्शं सर्वलोक है ।
विहारकामस्थानेमे एक राज्ञ उवाच यथा आर और मंस्थान सूच्यंगुल उपा विवक्ष्यं मे

नोडुलमसंख्यातगुणं क्षेत्रं स्पृष्टं वैक्रियिकपदबोद्धुं कृष्णलेइयाजीवगळिदं कियत् क्षेत्रं स्पृष्टं मूर्तं लोकंगळ संख्यातिकभागं । तिर्यंग्लोकमुमं मनुष्यलोकमुमं नोडुलमसंख्यातगुणं क्षेत्रं स्पृष्टं । इते नोललेइयेयोळं कपोतलेइयेयोळं वक्तव्यमवक्तुं ।

तेजोलेइया।प्रस्थानबोद्धुं सामान्यदिवं स्पर्शमं पेळ्ळपं गायाद्वयदिवं :-

५ तेउस्स य सट्ठाणे लोगस्स असंख भागमेत्तं तु ।

अड चोद्दस भागा वा देखणा होंति णियमेण ॥५४६॥

तेजोलेइयायाः स्वस्थाने लोकस्यासंख्यभागमात्रं तु । अष्ट चतुर्वर्गभागा वा देशाना भवन्ति नियमेन ॥

तेजोलेइयेय स्वस्थानबोद्धुं स्पर्शं स्वस्थानस्वस्थानापेक्षेयि लोकद असंख्यातभागमात्रमवक्तुं ।
१० तु मत्ते अष्टचतुर्वर्गभागंगळ्ळ मेणु किंचिद्वृत्तंगळंप्पुत्तु नियमविदं विहारयत्स्वस्थानादिचतुःपर्वंगळं विवक्षिति :-

एवं तु समुद्घादे नवचोद्दसभागयं च किंचूणं ।

उपवादे पढमपदं दिवड्ढचोद्दस य किंचूणं । ॥५४७॥

एवं तु समुद्घाते नव चतुर्वर्गभागकं च किंचिद्वृत्तं । उपपादे प्रथमपदं द्वपदं चतुर्वर्ग-
१५ भागः किंचिद्वृत्तः ॥

समुद्घातबोळं स्वस्थानबोळ्ळेळ्ळदं किंचिद्वृत्तं अष्टचतुर्वर्गभागं किंचिद्वृत्तनवचतुर्वर्ग-
भागमु स्पर्शमवक्तुं । मारणातिकसमुद्घातापेक्षेयिदं उपपादबोद्धुं प्रथमपदं द्वपदं चतुर्वर्गभागं
किंचिद्वृत्तं स्पर्शमवक्तुं इत्तु सामान्यदिवं तेजोलेइयेये प्रस्थानबोद्धुं स्पर्शं पेळ्ळस्पददुत्तु ।

भवति ॥ ५ अत्र तैजसाहारककेवलिसमुद्घाताः पुनः न संभवन्ति । अत्रापि पञ्च लोकान् संस्थाप्य आलोक-
१४३

२० कर्तव्यः । एवं नोलकपोतयोरेषि वक्तव्यम् ॥५४५॥ अथ तेजोलेइयायां यायाद्वयेनाह—

तेजोलेइयायः स्वस्थाने स्वयं स्वस्थानात् स्वस्थानापेक्षया लोकस्यासंख्येयभागः । तु-पुनः, अष्टचतु-
र्वर्गभागाः अथवा किंचिद्वृत्ता भवन्ति नियमेन विहारस्वस्थानापेक्षया ॥५४६॥

समुद्घाते स्वस्थानवत् किंचिद्वृत्ताष्टचतुर्वर्गभागः किंचिद्वृत्तनवचतुर्वर्गभागश्च स्वर्सां भवति मारणान्ति-
समुद्घातापेक्षया । उपपादपदे द्वपदं चतुर्वर्गभागः किंचिद्वृत्तः इति सामान्येन तेजोलेइयायास्विस्थाने स्वयं

२५ लम्बा-चोड़ा तथा पाँच राजू ऊँचा क्षेत्र हुआ । उसका क्षेत्रफल लोकके संख्यातर्वा भाग हुआ ।
यही वैक्रियिक समुद्रावर्त स्पर्श जानना । इस कृष्णलेइयामें आहारक, तेजस और केवळि
समुद्राव नहीं होते । यहाँ भी पाँच लोकोंकी स्थापना करके यथासम्भव गुणकार भागहार
जानना । कृष्णलेइयाकी ही तरह नोललेइया और कपोतलेइयामें भी कथन करना ॥५४॥
तेजोलेइयामें दो गायाओंसे कहते हैं—

१० तेजोलेइयाका स्वस्थानमं स्पर्श स्वस्थानस्वस्थान अपेक्षा लोकका असंख्यातर्वा भाग
है । और विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा नियमसे प्रसनालीके चौदह भागोंमें-से कुछ कम आठ
भाग स्पर्श होता है ॥५४६॥

समुद्रावर्तमें स्वस्थानकी तरह प्रसनालीके चौदह भागोंमें-से कुछ कम आठ भाग स्पर्श
है । मारणान्तिक समुद्रावर्तकी अपेक्षा प्रसनालीके चौदह भागोंमें-से कुछ कम नौ भाग प्रमाण

[illegible]

५
३३३९८४। स
७८३३६०। दो
१९५०७२। स
४८३८४। वा
११९०४। स
२८८०। घ
६७२। स
१४४। वा
२४८८
१। ज

ई संडंगळ साधिगुक्करण सूत्रत्रय :-

१५ बाहिरसूईवर्गं अर्धमंतरसूईवर्गपरिहोणं ।
 जंबूवाससिधिते तत्तियमेताणि खंडाणि ॥ —प्रि. सा. ३१६ गा. ।
 बाहिरसूई ५ ल । वर्गं ५ ल । ५ ल । गुणिते । २५ ल ल । अर्धमंतरसूई १ ल । ख ।
 ल । १ ल । परिहोणं । २४ । ल ल । जंबूवास १ ल ल । विभिते २४ ल ल तत्तियमेता
 खंडाणि २४ । १ ल ल

२०
रुक्म सला वारस सळागुनिदे वु वळपळंडाणि ।
बाहिर सुद सलागा कदी तबता खिला खंडा ॥

तस्मिन् एकादशसहस्रनवसतपरवारि ११९०४। बाक्योद्गोपे अष्टवत्वारिंशसहस्रविंशतचतुरशीतिः ४८८
तस्मिन् एकलक्षपञ्चनवतिषट्शतसप्ततिः १९५७२। धीरवरद्वोपे सप्तलक्षस्योर्विंशसहस्रविंशतपरिः ७८१।
सप्ततिः एकत्रिंशत्कोटिचतवारिंशसहस्रपञ्चसतचतुरशीतिः। ३३२९५८४ एवं स्वयंभूतमयसमुत्पन्नम्
२५ भ्यानि। तदानीन्तनमूत्रत्रयं माहिरसूँ ५ ल, वयं ५ ल ५ ल, गुणिते पञ्चीय ल ल, अम्भस्तरसूँ १ ल,
१ ल १ ल, गुणिते लल परिहीर्णं २४ ल ल, जंबूवास १ ल ल, विभक्ते २४। ल ल अपवर्तिते त्रतिमनो
प्रमात्र धातुं लोकीय १ ल ल

१। ल ल

प्रमाण वाले चौबीस खण्ड होते हैं। भातकी खण्डमें एक सौ चबालीस खण्ड होते हैं। का
समुद्रमें छह सौ बहत्तर खण्ड होते हैं। पुष्कर द्वीपमें दो हजार आठ सौ अस्सी खण्ड
हैं। पुष्कर समुद्रमें ग्यारह हजार नौ सौ चार खण्ड होते हैं। वारुणी द्वीपमें अठ्ठा
१० हजार तीन सौ पौरासी खण्ड होते हैं। वारुणी समुद्रमें एक लाख पनचाने बजे हजार बा
खण्ड होते हैं। शीरवर द्वीपमें सात लाख विरामी हजार तीन सौ साठ खण्ड होते हैं।
वर समुद्रमें इक्कीस लाख उनवालीस हजार पाँच सौ पौरासी खण्ड होते हैं। इस प्र
त्यक्षभूत समुद्र पर्यन्त जाना चाहिये। इसके लानेके लिए तीन सूत्र हैं। वदनु
ल वनममूद्रकी बायें सूची पाँच लाख योजन, उसका वर्ग पचास लाख लाख योजन। व
११ समुद्रकी अन्त्यन्तर सूची एक लाख योजन। उसका वर्ग एक लाख लाख योजन। पदा

प्रतरांगुलदिवं गुणिति वल्लिक्कं :—

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि हीणरूपाणि ।

तेसि अण्णोण्हदी हारो उप्पण्णरासिस्स ॥

एतु लक्षयोजनच्छेदमात्रद्विकद्वयंगल संयर्गजनितलक्षयोजनवर्गदिवं येरुयोजनंगुलछेद-

- ५ मात्रद्विकद्वयसंयर्गजनितएकयोजनांगुलंगल वर्गदिवं मेरुमध्यच्छेदमोदर द्विकवर्गदिवं उच्चरसहितसमुद्रत्रयशलाकात्रयव गुणोत्तरगुणितघनप्रमितदिवं १६। १६। १६ गुणितप्रतरांगुलदिवं भागिति भाज्यभागहारंगलं निरोक्षिति :—

जम्बूदोपक्षेत्रफलयोजनाङ्गुलवर्गप्रतराङ्गुलं संगुण्य पचावत्—

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि हीणरूपाणि ।

१०

तेसि अण्णोण्हदी हारो उप्पण्णरासिस्स ।

इति लक्षयोजनछेदमात्रद्विकद्वयजनितलक्षयोजनवर्ग एकयोजनाङ्गुलछेदमात्रद्विकद्वयजनितइयोजनवर्ग संयर्ग मेशमध्यच्छेदस्य द्विकवर्ग जलचरसमुद्रशलाकात्रयस्य गुणोत्तरपनेन च १६। १६। १६ इत्यनुपादानं

- गुणकार वर्गरूप होता है अतः सात लाख अड़सठ हजारका दो बार गुणा करना होता है। सूर्यगुलके वर्गको प्रतरांगुल कहते हैं अतः इतने प्रतरांगुलसे उक्त राशिको गुणा करना।
- १५ पश्चात् 'विरलिदरासीदो' इत्यादि करणसूत्रके अनुसार द्वीप समुद्रोंके प्रमाणमेंसे राशिके अर्धच्छेदोंमेंसे जितने अर्धच्छेद पढाये हैं उनके आधे प्रमाणमात्र गुणकार सोलहके परस्परमें गुणा करनेसे जो प्रमाण हो उसे उक्त राशिका भागहार जानना। सो यहाँ जिसका आधा ग्रहण किया उस सम्पूर्ण राशि प्रमाण सोलहके वर्गमूल चारको परस्परमें गुणा करने भी यही राशि आती है। सो अपने अर्धच्छेद प्रमाण दो-दोके अंकोंको परस्परमें गुणा करने
- २० विवक्षित राशि होती है। यहाँ चार कहे हैं अतः इतने ही मात्र दो बार दो-दोके अंकोंको परस्परमें गुणा करनेसे विवक्षित राशिका वर्ग आता है। वदनुसार यहाँ लाख योजने अर्धच्छेद प्रमाण दो बार दो-दोके अंकोंको रखकर परस्परमें गुणा करनेसे एक लाख वर्ग आता है। एक योजनके अंगुलके अर्धच्छेद मात्र दो बार दो-दोको रखकर परस्परमें गुणा करनेसे एक योजनके अंगुल सात लाख अड़सठ हजारका वर्ग आता है। नेहके उत्तर
- २५ आनेवाले एक अर्धच्छेद मात्र दो दुओंको परस्परमें गुणा करनेसे चार हुआ। सूर्यगुलके अर्धच्छेदमात्र दो-दोको रखकर परस्परमें गुणा करनेसे प्रतरांगुल हुआ। ये सय भागहार होते हैं। तथा जलपरवाले तीन समुद्र गच्छमेंसे कम किये हैं अतः गुणोत्तर सोलहका तीन बार भाग होता है। इस प्रकार जगत्पर्वतमें प्रतरांगुल, दो, सोलह, चौबीस और सात सौ नौ करोड़ छगन लाख, पोरानवे हजार, एक सौ पचास तथा सात लाख अड़सठ हजार, १० सात लाख अड़सठ हजार दो गुणकार हुआ। तथा प्रतरांगुल, सात, सात, पन्द्रह, एक लाख एक लाख, तथा सात लाख अड़सठ हजार, सात लाख अड़सठ हजार और चार और सोलह-सोलह-सोलह भागहार हुआ। इनमेंसे प्रतरांगुल, दो बार सोलह, दो बार सात लाख अड़सठ हजार ये गुणकार और भागहारमें समान हैं अतः इनका अपवर्तन हो जाता है। गुणकारमें दो और चौबीसको परस्परमें गुणा करनेसे अड़वालीस होते हैं, तथा भू-

११

१. अ छेदः पतः ।

यग्यंदिदम् प्रतरांगुलदिदम् गुणिति यन्त्रिकं "विरञ्जितरासोदो पुण जेत्तिपमेत्तानि होगस्सपि।
तेसि यण्णोण्णह्वे हारो उप्पण्णरासिस्स" एण्डु ओठु लक्षयोजनंगुलदिदम् एण्णोजनंगुलदिदम्
मेदमप्यच्छेददिकदिदम् जलचरसहितसमुद्रशालाकात्रयजनितगुणोत्तरघनदिदम् । ४।४। ५।
सत्पट्ट सूच्यंगुल नागहारमयकु १६।४। २४। ७९०५६९४१५०। ७६८०००। ७६८००० दिक्
७३।२।१ ल। ७६८०००। २।४।४।४।

१ पर्वत्तितोडो संख्यातसूच्यंगुलप्रमितजगच्छ्रेणिगळप्पुववं २। किचिद्वनं माडिओडि १।

१९९

गुणेन द्विजे - ३ मुहेण १६। गुणयम्मि गुणनणियं - ३। १६। इदं चतुर्विंशतिसप्तजम्बूद्वीपेन चोत्तरं

मादगुण्यजगत्तरादगुलं संगुण्य पत्रचात् -

विरञ्जितरासोदो पुण जेत्तिपमेत्तानि होगस्सपि।

तेसि यण्णोण्णह्वे हारो उप्पण्णरासिस्स ॥

१० इति यक्षयोजनैरेण्योत्रमादगुलैर्मैच्छेदस्य द्विकेन समुद्रशालाकात्रयगुणोत्तरघनेन य। ४।४।४।

हृदगुण्यदगुलेन भवता - १६।४। २४। ७९०५६९४१५०। ७६८०००। ७६८००० अत्रविज्ञेयमात्रं

७३।२।१ ल। ७६८०००। २।४।४।४।

गुण्यदगुलमिति जगच्छ्रेणिमानं भवति - २३। अनेन किचिद्वनं = १ गुरोक्तं साधिकयगरपत्रकजगच्छ्रेणा

१९९९

इमसे गुणा करें। ऐसा करनेसे एक कम जगतश्रेणिको सोलहका गुणकार व सात ओं
कीनका भागहार हुआ। इसको पूर्वांश प्रकारसे चौबीस रखें, जम्बूद्वीपके क्षेत्रज्ञ ह
योत्रनोके प्रमाण और एक योत्रनके अंगुलोंने यगे तथा प्रतरांगुलोंसे गुणा करो। परत
"विरञ्जितरासीदो" इत्यादि सूत्रके अनुसार गच्छमेंसे जितने राजूके अर्धच्छेद पदावे
इमका आधा प्रमाण चारोंके अंकोंको परस्परमें गुणा करनेसे जो प्रमाण हो उतना भाग
जानना। जिस राशिका आधा प्रमाण दिया उस राशिमात्र चारोंके योगमूल दोको परतसे
गुणा करनेपर एक लाख योत्रनके अर्धच्छेद प्रमाण दुओंको परस्परमें गुणा करनेसे एक हजार
हूँ। एक योत्रनके अंगुलोंके अर्धच्छेद प्रमाण दुओंको परस्परमें गुणा करनेसे ह
लाख अड़सठ हजार अंगुल हुए। मेरुके मध्यमें एक अर्धच्छेदके दूने दो हूँ। मूरुनो
अर्धच्छेद प्रमाण दुओंको परस्परमें गुणा करनेसे मूरुच्यंगुल हुआ। ये सब भाग
हूँ। तीन मनुष्य चटोरे से सो तीन बार गुणोत्तर चारका भी भागहार जानना। ॥
हृद यक्षज जगत्श्रेणिको मोरुद, चार, चौबीस, और सात सो नये करोड़ ह
लाख चौबीस हजार एक सौ पचास तथा सात लाख अड़सठ हजार और न
लाख अड़सठ हजारका तो गुणकार हुआ। नवा माव, तीन, और मूरुच्यंगुल और
हृद यक्ष जगत्श्रेणिको मोरुद, चार, चार, चारका भागहार हुआ।
अपवर्तन करनेपर समस्त

तत्सम्पत्त्वं सरागवोतरागमविषयत्वविबं द्विप्रकारवरिभे' यत्पदुगु । पूर्व मोद सराग-
मविषयसम्पत्त्वं प्रशमाविगुणं प्रशमसंवेगानुर्कपास्तिरयाभिव्यक्तियोज्ज्वलितु । परं द्विती-
योतरागमविषयसम्पत्त्वं आत्मविशुद्धितः प्रतिपदाप्रदायजनितजीवविशुद्धिपिबमाहु । आस्तिरये-
युदेने' बोडे :—

- ५ आत्मे प्रते श्रुते तत्त्वे चित्तमस्तित्वसंपुतं ।
आस्तिरयमास्तिरकेरुषत् सम्पत्त्वेन युते नरे ॥ —[गो. उ. २३१ १०.]

अथवा तत्त्वार्थद्वानं सम्पददर्शनं अथवा तत्त्वदत्तिः सम्पत्त्वं ॥

“प्रवेशप्रचयात्कायाः द्रवणात् द्रव्यनामकाः ।

परिच्छेद्यत्वं तस्तेऽर्थास्तत्त्वं वस्तुस्वरूपतः ॥” —[]

- १० एतदित्तु सामान्यवि पंचास्तिकापद्द्रव्य नयपदात्पर्यगन्तो लक्षणमरुं ।

अनंतरं पद्द्रव्यगन्तुधकारनिर्बुद्धं माद्विषयं :—

छद्द्रव्येषु य नामं उपलक्ष्यगुणाय अत्यणे कालो ।

अत्यणखेत्तं संखा ठाणसरूपं फलं च ह्ये ॥५६२॥

पद्द्रव्येषु च नामानि उपलक्षणानुवादः आसने कालः । आसनेक्षेत्रं संख्यास्थानस्वरूपं इदं

- १५ च भवेत् ॥

पद्द्रव्यगन्तुध नामगन्तुधुपलक्षणानुवादमुं स्थितियुं क्षेत्रमुं संख्यां स्थानस्वरूपमुं कन-
मे'दितु सामाधिकार्यगुणु ।

‘ययोद्देशस्तथा निर्द्वेषः’ एवो न्यायविबं प्रयमोद्विष्ट नामाधिकारनं पद्विषयं :—

- २० आत्मे प्रते श्रुते तत्त्वे पित्तमस्तित्वसंपुतम् । आस्तिरयमास्तिरकेरुषत् सम्पत्त्वेन युते नरे ॥२॥
अथवा तत्त्वार्थद्वानं सम्पददर्शनम् । अथवा तत्त्वदत्तिः सम्पत्त्वं ।

प्रवेशप्रचयात्कायाः द्रवणात् द्रव्यनामकाः । परिच्छेद्यत्वं तस्तेऽर्थाः तत्त्वं वस्तुस्वरूपतः ॥१॥

इति सामान्येन पञ्चास्तिकापद्द्रव्यनयपदार्थानां लक्षणम् ॥५६१॥ अथ पद्द्रव्याणामधिकारि-
रिपति—

- २५ पद्द्रव्येषु नामानि उपलक्षणानुवादः स्थितिः क्षेत्रं संख्या स्थानस्वरूपं फलं चेति सत्ताधिकार-
भवन्ति ॥५६२॥ अथ प्रयमोद्विष्टनामाधिकारमाहु—

युक्तं मनुष्यका आस्तिरय गुण कहा है । अथवा तत्त्वार्थके अद्वानको सम्पददर्शन कहते हैं ।
अथवा तत्त्वार्थके रचितको सम्पत्त्वं कहते हैं । प्रवेशोंके समूह रूप होनेसे काय कहलाते हैं ।
गुण और पर्यायोंको प्राप्त करनेसे द्रव्य नामसे कहे जाते हैं । जीवके द्वारा जाननेमें आनेके
अर्थ कहलाते हैं और वस्तुस्वरूपके कारण तत्त्व कहलाते हैं । यह सामान्यसे पाँच
अस्तिकाय, छह द्रव्य और नौ पदार्थोंका लक्षण है ॥ ५६१ ॥

छह द्रव्योंके अधिकारोंको कहते हैं—

छह द्रव्योंके सम्बन्धमें नाम, उपलक्षणानुवाद, स्थिति, क्षेत्र, संख्या, स्थान, स्वरूप
और फल ये सात अधिकार होते हैं ॥ ५६२ ॥

प्रथम उद्दिष्ट नाम अधिकार को कहते हैं—

पदंशता । षण्णां समानदेशित्वे पिण्डं स्यादणुमात्रकम् ॥” [] एतितु पूर्वपक्षम् मातृतिरल
द्रव्यातिथकनयविषं निरंशत्वमुं पर्यायातिथकनयविषं पदंशतेयम्कुम् वितु परिहारं वेत्तत्पट्टदु ।

“आद्यन्तरहितं द्रव्यं विश्लेषपरहिताशकम् ।

स्कंधोपादानमत्यसं परमाणुं प्रचक्षते ॥” []

- ५ आद्यन्तरहितं आदियुगवसानमुमित्तिदुदुं द्रव्यं गुणपर्यायिगलनुच्छदुं विश्लेषपरहितांशकं
वेवकं यल्लिलद अंशमनुच्छदुं स्कंधोपादानं स्कंधस्के कारणमप्युदुं अतपक्षं इन्द्रियविषयमल्लुदुं
परमाणुं प्रचक्षते परमाणुवेदुयत्तव्यमागि परमाणुवत्तव्यं । नामाधिकारं तिदुदुं ।

उपजोगो षण्णचळ लक्ष्णमिह जीवपोग्गलाणं तु ।

गदिताणोग्गहवट्टणकिरियुववारो दु धम्मचळ ॥५६५॥

- १० उपयोगो षण्णचतुष्कं लक्षणमिह जीवपुद्गलयोस्तु । गतिस्थानावगाहवर्तनक्रियोपकारानु
धम्मचतुष्णां ॥

उपयोगमुं षण्णचतुष्कमुं ययासंलपमागिह परमाणुमदोळ जीवंगळं पुद्गलंगळं लक्षण-
मवकुं । तु मत्ते गतिस्थानावगाहवर्तनक्रियेगळे पुपकारंगळ तु मत्ते ययासंलपमागि धर्माधर्मा-
काशकालंगळे य नात्कं द्रव्यंगळ लक्षणमवकुं ।

१५

पदकेन युगपदयोगान् परमाणोः पदंशता ।

षण्णां समानदेशित्वे पिण्डं स्यादणुमात्रकम् ॥

सैतम्, द्रव्यातिथकनयेन निरंशत्वेऽपि परमाणोः पर्यायातिथकनयेन पदंशत्वे दोषाभावात् ।

आद्यन्तरहितं द्रव्यं विश्लेषपरहिताशकम् ।

स्कंधोपादानमत्यसं परमाणुं प्रचक्षते ॥

२०

॥५६४॥ इति नामाधिकारः ।

उपयोगः जीवार्ता, तु-पुनः षण्णचतुष्कं पुद्गलानां, इह परमाणवे लक्षणं भवति । गतिस्थानावगाह-
वर्तनक्रियाः उपकाराः । तु-पुनः ययासंलपं धर्माधर्माकाशकालानां लक्षणं भवति ॥५६५॥

करते हैं, प्राप्त करंगे और पहले प्राप्त कर चुके हैं इस व्युत्पत्तिके अनुसार द्व्यणुकादिमें भी
पुद्गलपना पटित होता है ।

२५

शंका—यदि परमाणु एक साथ छह दिशामें छह परमाणुओंसे सम्बन्ध करता है तो
परमाणु छह अंशवाला सिद्ध होता है । यदि छहों समान देश वाले माने जाते हैं तो छह
परमाणुओंका पिण्ड परमाणु मात्र सिद्ध होता है ?

समाधान—अपका कथन यथार्थ है, द्रव्यार्थिकनयसे यद्यपि परमाणु निरंश है किन्तु
पर्यायातिथकनयसे उसके छह अंशवाला होनेमें कोई दोष नहीं है । जो द्रव्य आदि और अन्यसे
१० रक्षित है, जिसके अंश कभी भी अलग नहीं होते, जो स्कन्धका उपादान कारण तथा
अवीन्द्रिय है उसे परमाणु कहते हैं ॥ ५६४ ॥

इस प्रकार नामाधिकार समाप्त हुआ ।

परमाणुमें जीवका लक्षण उपयोग और पुद्गलोंका लक्षण वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श कदा
है । तथा यथाक्रमसे गतिरूप उपकार, स्थानरूप उपकार, अवगाहनरूप उपकार और
१५ वर्तनाक्रियारूप उपकार धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और कालद्रव्यका लक्षण है ॥५६५॥

१. म परमाणवे वेत्तदु । २. व तस्यं पत्तिं ।

कालमाश्रयिषि जीवाविसर्गद्वयं स्वस्वपर्यायपरिणतमर्कम् । आ पर्यायावस्थानु
 ऋजुसूत्रनयदोऽनु यैकसमयमेवकुमत्यं पर्यायापेक्षेयं ।

व्यवहारो य विपण्यो भेदो तद् पञ्जओचि एयद्वो ।

व्यवहार अवद्वाणडिदी नु व्यवहारकालो नु ॥५७२॥

५ व्यवहारद्वय विकल्पो भेदश्च तथा पर्याय इत्येकार्थः । व्यवहारावस्थानस्थितिः क्षु
 व्यवहारकालस्तु ॥

व्यवहारमेवोडं विकल्पमेवोडं भेदमेवडमते पर्यायमेवोडमेकार्थमनुकुमलितं व्यंजन-
 पर्यायापेक्षेयिदं व्यवहारावस्थानस्थितिः व्यवहारमेवोडं पर्यायमेवोडं वेदनुवर्तिवमा पर्याय
 अवस्थानविदं वर्तमानतेयिवमावुदोऽनु स्थितिपु नु मते व्यवहारकालः व्यवहारकालमेवुदमर्कम् ।

अवरा पञ्जायडिदी खणमेतं होदि तं च समओचि ।

१० दोष्णमणुषामदिक्कमकालपरमाणं हवे सो नु ॥५७३॥

अवरा पर्यायस्थितिः क्षणमात्रा भवति सैव समय इति । दोषोरण्वोरतिक्कमकालप्रमाणो
 भवेत्तु ॥

द्वयंगल पर्यायंगलमे जपन्यस्थिति क्षणमात्रमनुमा स्थितये समयमेव संज्ञेयुक्तवर्कम् ।
 सा आ समयपुं तु मते गमनपरिणतंगलव्येर्कं परमाणुगल परस्परतिक्कमकालप्रमाणमनुमितं

१५ गुपयोगिण्य मायासूत्रमिदुः—

गमएयपएस्तथो परमाणू मंदगदुपवर्तते ।

बोधमणंतरखेतं जावदिपं जादि तं समयकालो ॥

कालमाश्रय जीवादि सर्वद्वयं स्वस्वपर्यायपरिणतं भवति । तत्पर्यायावस्थानं ऋजुसूत्रनयेन एकसमयो
 भवति नयैवर्थावावेतया ॥५७१॥

२० व्यवहारः विकल्पः भेदः तथा पर्यायः इत्येकार्थः तु पुनः तत्र भूयश्चनपर्यायस्य व्यवस्थानतया स्थितिः
 सैव व्यवहारकालो भवति ॥५७२॥

द्वयाणां जपन्या पर्यायस्थितिः क्षणमात्रं भवति । सा च समय इत्युच्यते । स च समयः दोषोर्गल-
 परिणतपरमाण्वोः परस्परतिक्कमकालप्रमाणं स्यात् ॥५७३॥ अत्रोपयोगिमायादय—

गमएयपएस्तथो परमाणू मन्दगदुपवर्तते ।

२५ बोधमणंतरखेतं जावदिपं जादि तं समयकालो ॥१॥

फालका आश्रय पाकर जीव आदि सय द्रव्य अपनो-अपनी पर्याय रूपसे परिणम
 करते हैं । उस पर्यायक ठहरनेका काल थजू सूत्रनयसे अर्थपर्यायकी अपेक्षा एक समय
 होश है ॥ ५७१ ॥

व्यवहार, विकल्प, भेद तथा पर्याय ये सय एक अर्थवाले हैं । अर्थात् इन सर्वोंका
 १. अर्थ एक है । उनमें-से व्यंजन पर्यायकी वर्तमान रूपसे स्थिति व्यवहार काल है ॥५७२॥

द्वयोंकी पर्यायकी जपन्य स्थिति क्षण मात्र होती है उसको समय कहते हैं । गमन
 करते हुए दो परमाणुओंके परस्परमें अतिक्रमण करनेमें जितना काल लगता है उतना ही
 समयका प्रमाण है ॥ ५७३ ॥

आद्यधनस्य सुखितनस्य अनालस्यनस्य निरुपहतनस्य जीवंगकुमावुदो दुच्छवासनिश्वात्म-
दो दु प्राणमेदितु पेक्षत्पददुदु । सप्तोच्छवाससो दु स्तोकमक्कुं । सप्तस्तोकगळो दु लयमे बुवक्कुं ।

अद्वत्तीसदलवा नाली वे नालिया मुहुचं तु ।

एगसमयेण हीणं मिण्णमुहुचं उदो सेसं ॥५७५॥

- ५ अष्टात्रिंशदलवाः नाडी द्वे नाडिके मुहूर्तस्तु । एकसमयेन हीनो भिन्नमुहूर्तस्ततः शेषः ॥
सूक्तं दुवरे लवेगळ धन्निगो यैववक्कुं । द्विघळिगोळो बु मुहूर्तमक्कुं । तु मत्ते एकसमयादि
हीनमाव मुहूर्तं भिन्नमुहूर्तमन्तम्मुहूर्तमुत्कृष्टमक्कुं । ततः मुवे द्विसमयोनाड्यावत्पसंख्यातकमान-
पप्यंतमाव शेषंगळनितुगंतम्मुहूर्तपळेषप्पुवु ।

इल्लिगुपयोगियप्प पायासूत्रमिदु :—

- १० सप्तमयावलि अवरे समऊण मुहूर्तयं तु उक्कस्सं ।

मज्झासंखविपप्पं विद्याण अंतोमुहूर्तमिणं ॥ []

सप्तमयाविकावलि जघन्यांतम्मुहूर्तमक्कुं । सप्तयोनमुहूर्तमुत्कृष्टांतम्मुहूर्तमक्कुं । मध्य-
असंख्यातविकल्पमे मध्यमांतम्मुहूर्तगळे विवहरि ।

दिवसो पक्खो मासो उडु अपणं वस्समेवमादी दु ।

- १५ संखेज्जासंखेज्जाणंततवो होदि ववहारो ॥५७६॥

दिवसः पक्षो मासश्चतुरयनं वर्षमेवमादिः खलु । संख्यातासंख्यातानंततो भवति
ध्यवहारः ॥

मुक्तिः अनलसस्य निरुपहतस्य गो जीवस्य उच्छवासनिश्वासः स एव एकः प्राण उक्तो भवेत् ।
सप्तोच्छवासः स्तोकाः । सप्तस्तोका लवः ॥५७४॥

- २० सार्धाष्टा त्रिंशदलवा नाडी षटिका । द्वे नाड्यो मुहूर्तः । स चैकसमयेन हीनो भिन्नमुहूर्तः, उरुहा-
संज्ञं हरपयः । उक्तोऽष्टे द्विसमयोनाया आवत्पसंख्यातकमान्ताः सर्वेऽन्तमुहूर्ताः ॥५७५॥ अष्टोपयोगि-
यासामुहूर्तम्—

सप्तमयावलि अवरे समऊणमुहूर्तयं तु उक्कस्सं ।

मज्झासंखविपप्पं विद्याण अंतोमुहूर्तमिणं ॥१॥

- २५ सप्तमयाविकावलिः जघन्यांतम्मुहूर्तः सप्तयोनमुहूर्तः उरुहासंखमुहूर्तः । मध्यमा असंख्यातविकल्पा-
वप्यन्तम्मुहूर्तः, इति यावोहि ॥१॥

निश्वास होता है । उसीको प्राण कहते हैं । मान उच्छ्वासका एक स्तोका और सात स्तोका
एक लव होता है ॥ ५७४ ॥

- साढ़े अठ्ठास लवकी एक नाडी होती है उसे षटिका कहते हैं । दो नाडीका मुहूर्त
१० होता है । एक समयहीन मुहूर्तको भिन्न मुहूर्त कहते हैं यह उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त है । इसमें
आगे ही समयहीन आदिमें देकर आखरीके एक असंख्यात भाग पर्यन्त सप्त अन्तमुहूर्त
होते हैं ॥ ५७५ ॥

यहाँ अष्टोपयोगी याया सूत्रका अर्थ इस प्रकार है—

बोडु द्रव्यबोलावु केलवुवत्यंपर्मायंगळं व्यंजनपर्मायंगळमुतीतानागतकालंगळोन्नवति-
मुयुतु वतिसत्पद्मयुमपि शब्दादिवं वर्तमानपर्माययवेत्तलमुं कूडि तत् अतु द्रव्यं भवति द्रव्यमरु-
स्थित्यधिकारंतिदुंतु ।

आगासं वज्जित्ता सव्वे लोमम्मि चैव णत्थि वहिं ।

५ वावी धम्माधम्मा अवट्ठिदा अचलिदा णिच्चा ॥५८३॥

आकाशं विवर्ज्यं सव्वं लोके चैव न संति वहिः । व्यापिनो धर्माधर्मा अवस्थितौ अव-
लितौ नित्यौ ॥

आकाशद्रव्यं पोरयागि शेषद्रव्यगळनितुं लोकबोलेयप्पवु । लोकविं पोरगित्तल । आ द्रव्यं
गळोळु धर्माधर्मद्रव्यगळेरुं व्यापिगळेके बोडे लोकप्रवेशगळेनितोन्नवनिंतं व्यापित्तुवु तिलबो-
१० तैलमे संते । अवस्थितौ स्थानचलनरहितंगळप्पुवरिदमवस्थितंगळ, अचलितौ प्रदेशचलनरहितंगळ-
प्पुवरिदमचलितंगळ, त्रिकालबोले नाशरहितंगळप्पुवरिदं नित्यौ नित्यंगळप्पुवु । इत्तिगुपयोगिदप
इलोकमिदुः—

“ओपश्लेषिकवैपयिकावभिग्यापक इत्यपि ।

आधारः त्रिविधः प्रोक्तः कटाकाशतिलेषु च ॥ []

१५ एकस्मिन् द्रव्ये ये अर्थपर्याया व्यञ्जनपर्यायाश्च अतीतानागताः अपिशब्दाद्वर्तमानाश्च सन्ति ताव-
त्तद् द्रव्यं भवति ॥५८२॥ इति स्थित्यधिकारः ॥

आकाशं विवर्ज्यं शेषसर्वद्रव्याणि लोके एव सन्ति न तद्बहिः । तेषु धर्माधर्मौ व्यापिनौ सर्वलोक-
ग्राह्यत्वात् तिले तैलवत्, अवस्थितौ स्थानचलनाभावात्, अचलितौ प्रदेशचलनाभावात्, नित्यौ नैकास्तेनै-
विनाशभावात् । अत्रोपयोगी इलोकः—

२० ओपश्लेषिकवैपयिकावभिग्यापक इत्यपि ।

आधारस्त्रिविधः प्रोक्तः कटाकाशतिलेषु च ॥५८३॥

एक द्रव्यमेव जितनी अतीत, अनागत और वर्तमान अर्थपर्याय तथा व्यञ्जनपर्याय इतौ
२५ हे उतना हो यह द्रव्य होता है ॥५८२॥ स्थिति अधिकार पूर्ण हुआ ।

आकाशको छोड़कर शेष सब द्रव्य लोकमें ही हैं, बाहर नहीं हैं । उनमें धर्म और
अधर्म तिलोंमें तेलको तरह सब लोकमें व्याप्त होनेसे व्यापी हैं । तथा अचलित हैं क्योंकि
अपने स्थानसे विचलित नहीं होते । प्रदेशों में हलन-चलन न होने से अपचलित हैं और वनों
काटोमें भी विनाश न होनेसे नित्य हैं । इस विषयमें उपयोगी इलोक—आधार तीन प्रकार
का कहा है—ओपश्लेषिक, वैपयिक और अभिग्यापक । इसके तीन उदाहरण हैं—चटाई,
आकाश और तेल । अर्थात् चटाईपर बालक सोता है, यहाँ चटाई ओपश्लेषिक आधार है ।
१० आकाश में पराश स्थित है, यहाँ आकाश वैपयिक आधार है । तिलोंमें तेल यहाँ अभिग्याप
आधार है । इसी तरह लोकाकाशमें धर्म-अधर्म व्यापी हैं यहाँ अभिग्यापक आधार
है ॥५८३॥

व्यवहारो पुण कालो योगलद्वयादणंतगुणमेवो ।

तचो अणंतगुणिदा आगासपदेसपरिसंखा ॥५९०॥

व्यवहारः पुनः कालः पुद्गलद्रव्यावनंतगुणमात्रः । ततोऽनंतगुणिताः आकाशप्रदेशपरि-
संख्याः ॥

५ व्यवहारकालमेव बुधु मते पुद्गलद्रव्यमं नोडलुमनंतगुणमात्रमनुकुमवं नोडलुमनंतगुणगन्ध-
काशद्रव्यं प्रदेशपरिसंख्यगन्ध ।

लोमागासपदेसा धर्माधर्मगजीवगपदेसा ।

सरिसा हु पदेसो पुण परमाणु अवट्ठदं खेचं ॥५९१॥

लोकाकाशप्रदेशाः धर्माधर्मकजीवप्रदेशाः सद्गुणाः खलु प्रदेशाः पुनः परमाव्यवस्थितं

१० क्षेत्रं ॥

लोकाकाशप्रदेशगन्धं धर्मद्रव्यप्रदेशगन्धमुपधर्मद्रव्यप्रदेशगन्धमेकजीवप्रदेशगन्धं सद्गुणद्रव्यं
खलु स्फुटमाणि । ईं नात्वं द्रव्यगन्ध प्रदेशगन्ध प्रत्येकं जगच्छ्रेणीधनप्रमितगन्धत्पुं । प्रदेशमेव बुधेति
प्रमाणमेवोडे पुनः मते पुद्गलपरमाव्यवस्थित क्षेत्रमिति प्रमाणमवकुमुदुकारणविदं जघन्यक्षेत्रं
जघन्यद्रव्यमुपविभागैकत्पुं । संवट्ठि :-

	जीव	पुद्गल	ध.	अ.	लो =	मु का	व्य-का	अलोकाकाश
१	१६	१६ ख	१	१	१	३	१६ ख ख	१६ ख ख ख
२	३६	३६ ख	३	३	३	३	३६ ख ख	३६ ख ख ख
३	अ-प्र	अ ख प्र	क अ	क अ	क अ	क अ	अ ख ख ख	अ ख ख ख ख
४	के ४	के ३	ओ.	ओ.	ओ	ओ	के	के १
५	ख ख ख ख	ख ख ख	अ	अ	अ	अ	ख ख	ख

१५

व्यवहारकालः पुनः पुद्गलद्रव्यावनंतगुणः । ततोऽनंतगुणिता आकाशप्रदेशपरिसंख्या ॥५९०॥
लोकाकाशप्रदेशा धर्मद्रव्यप्रदेशा अधर्मद्रव्यप्रदेशा एकैकजीवद्रव्यप्रदेशाश्च सद्गुणाः खलु संख्या वसाना
एष प्रत्येकं जघन्यक्षेत्रमवकुमुदुकारणविदं जघन्यक्षेत्रं । तेन जघन्यक्षेत्रं

व्यवहारकाल पुद्गल द्रव्यसे अनन्तगुणा हे । और उससे अनन्तगुणी आकाशके
प्रदेशोंकी संख्या हे ॥५९०॥

२० लोकाकाशके प्रदेश, धर्मद्रव्यके प्रदेश, अधर्मद्रव्यके प्रदेश और एक-एक जीवद्रव्यके
प्रदेश संख्याकी दृष्टिसे समान ही हैं क्योंकि प्रत्येकके प्रदेश जगत्क्षेत्रिके घन प्रमाण हैं ।
पुद्गलका परमाणु जितने क्षेत्रको रोकता है उतना ही प्रदेशका प्रमाण है । अतः जघन्यक्षेत्र
अर्थात् प्रदेश और जघन्यद्रव्य परमाणु अविभागी हैं उनका विभाग नहीं हो सकता । अतः

१. अक्षेत्रमिति । २. अक्षेत्रम् ।

पोगलदन्वाहि अणू संखेज्जादी हवन्ति चलिदा इ ।
चरिममहखंधम्मि य चलाचला हांति इ पदेसा ॥५९३॥

चरिममहास्वयंभि य चलाचला हति हु पदसा ॥५२२॥
पुद्गलद्रव्ये ऋणवः संख्यातादयो भवन्ति चलिताः खलु । चरममहास्वयं च चलाचला भवति

प्रवेद्याः ॥

५ प्रवेष्टाः ॥ पुद्गलद्रव्यबोधं अणुगुलं द्वयणुकादि संख्यातासंख्यातानंतरपरमाणुसंपादं चलितांशं ह्यस्फुटमानं, चरममहासंघबोधं प्रवेष्टाः परमाणुगुलं चलाचला भवन्ति चलावलंगनंशु।

अणुसंखासंखेज्जाणंता य अगेज्जगेहि अंतरिया ।

आहारतेजभासामणकम्मइया ध्रुवखंधा ॥५९४॥

आहारतेजसासामणकम्मइया ध्रुवक्खंदा ॥५९४॥
अणुसंख्यातासंख्यातानंताश्चाप्राह्येरंरतिताः आहारतेजोभाषामनःकामर्मण ध्रुवक्खंदाः ॥

१०. सांतरणिरंतरेण य सुण्णा पत्तेयदेह धुवसुण्णा ।

सांतरणिगोदसुण्णा सुद्धमणिगोदा णमा महक्खंधा ॥५९५॥

सांतरणिगोदसुण्णा सुहुमणिगोदा णमा महस्सुधा ॥५२॥
सांतरणिगोदसुण्णा सुहुमणिगोदा णमा महस्सुधा ॥५३॥

१५. महात्कथाः ॥
 अणुवर्गगणैर्गळे बुं संख्याताणुसमूहवर्गगणैर्गळे बुं मसंख्याताणुसमूहवर्गगणैर्गळे बुं ४ मन्त्रं
 परमाणुसमूहवर्गगणैर्गळे बुं आहारवर्गगणैर्गळे बुं मो आहारवर्गगण मोबलाबुमेल्मुमन्तं परमाणुसं
 गळेपपुपु-१ मप्राहवर्गगणैर्गळे बुं तैजसशरीरवर्गगणैर्गळे बुं मप्राहवर्गगणैर्गळे बुं भाषावर्गग
 गळे बुं मप्राहवर्गगणैर्गळे बुं मनोवर्गगणैर्गळे बुं मप्राहवर्गगणैर्गळे बुं कामगणवर्गगणैर्गळे बुं
 भ्रूवर्गगणैर्गळे बुं सांतिरणिर्तंरवर्गगणैर्गळे बुं शून्यवर्गगणैर्गळे बुं प्रत्येकमरीदवर्गग
 गळे बुं शून्यवर्गगणैर्गळे बुं सांतिरणिर्तंरवर्गगणैर्गळे बुं शून्यवर्गगणैर्गळे बुं शून्य
 गळे बुं शून्यवर्गगणैर्गळे बुं वादरनिगोदवर्गगणैर्गळे बुं शून्यवर्गगणैर्गळे बुं शून्य
 २०. निगोदवर्गगणैर्गळे बुं नभोवर्गगणैर्गळे बुं महात्कंधवर्गगणैर्गळे बुं पुदपलवर्गगणैर्गळे बुं

पुद्गलमध्ये अनवः द्वयुक्ताद्वयस्यातास्यतातान्तामुक्ताद्वयस्यता
 च प्रदेष्टाः परमाणवः भवाचला भवन्ति ॥५९३॥
 अनुवर्गणा संस्थातानुवर्गणा अर्धस्थातानुवर्गणा अनन्तानुवर्गणा आहारवर्गणा अष्टाहारवर्गणा दश
 घटीरवर्गणा अष्टाष्टवर्गणा आधावर्गणा अष्टाष्टवर्गणा मनोवर्गणा अष्टाष्टवर्गणा दशानुवर्गणा प्रभुवर्गणा
 सान्तरानिन्दवर्गणा मान्यवर्गणा प्रत्येकशरीरवर्गणा प्रभुमान्यवर्गणा वादरनिगोदवर्गणा मान्यवर्गणा मान्यवर्गणा
 वर्गणा मनोवर्गणा महास्फुटवर्गणा चेति पुद्गलवर्गणाः त्रयोविंशतिभेदा भवन्ति । अत्रोपयोगी दशोक्तः

पुद्गल द्रव्यमें परमाणु और द्वयणुक आदि संख्यात, असंख्यात और अनन्त परमाणुओं का स्थान चलिता होते हैं। अन्तिम महास्थानधर्म प्रदेश चल-अचल हैं ॥१५९॥

मानुओं कि स्कन्ध पलित होते हैं। अन्तिम महाकल्पमें प्रदेश चल-अचल हैं। ॥२२॥
अनुवर्गणा, संस्थातागुवर्गणा, असंस्थातागुवर्गणा, अनन्तागुवर्गणा, आहारवर्ग
१० अमासवर्गणा, वैजसरायवर्गणा, अमासवर्गणा, भाषावर्गणा, अमासवर्गणा, प्रवेक
अमासवर्गणा, कामेजवर्गणा, भूवर्गणा, सान्तरनिरन्तरवर्गणा, मूल्यवर्गणा, प्रवेक
वर्गणा, भूवमूल्यवर्गणा, पादरनिगोदवर्गणा, मूल्यवर्गणा, मृदमतिगोदवर्गणा, नमोवर्ग
महाकल्पवर्गणा ये तेऽहं प्रकारकी पुद्गलवर्गणाएँ होती हैं। इस विषयमें उपयोगी हैं

उ २५५ । २५५ । ० । २५५
०

ई संख्यातासंख्यातवर्गयोगेच्छोऽतन्तम्भस्तनराशिपिदमन्तरो-

म १६ १६ ०० १६

ज १६ । १६ । ०० । १६

परितनराशिगुलं भागिसिदोडोडु लब्धमदु विवक्षितवर्गगणे गुणकारमवकुमदंत बोडे संख्यात-
वर्गगणेच्छो जघन्यवर्गगणैयिद २ मुपरितनराशिं ३ भागिसि ३ वंद लब्धं द्वितीयवर्गगणेशु
२

गुणकारमवकुं गुण्यं जघन्यवर्गगणैयवकु २३ मिदनपवत्तिसिदोडे त्र्यणुकमवकु-३ । मन्ते द्विचरम-
२

५ वर्गगणैयिदं चरमवर्गगणैयं भागिसिदोडिदु १५ चरमवर्गगणैयुः गुणकारमवकुं । गुण्यं द्विचरम-
१४

वर्गगणैयवकु १४ १५ मिदनपवत्तिसिदोडे चरमवर्गगणैयवकु-१५ । मन्ते असंख्यातवर्गगणेशु
१४

द्विचरमवर्गगणैयिदमुपरितनचरमवर्गगणैयं भागिसिदोडे चरमवर्गगणैयुः गुणकारमवकुं गुण्यं द्विचरम-
वर्गगणैयवकु २५४ । २५५ मिदनपवत्तिसिदोडे चरमवर्गगणैयवकुं । २५५ । इत्थियोडु परमाणुव-
२५५

कूडिदोडे अनंतवर्गगणेशु जघन्यवर्गगणे परिमितानंतजघन्यराशिप्रमाणमवकुमेक बोडे द्विकवार्-
१० सख्यातोत्कृष्टबोडोडु रूपं कूडिदोडे या स्कंधमन्तवर्गगणेशु जघन्यवर्गगणैयपुवर्तितं । आ
जघन्यान्तवर्गगणैय मेलैकेक परमाणुविदमधिकगळापुत्तं पोषि तदुत्कृष्टवर्गगणे तजघन्यमं नोड-
न्तगुणितमवकुं उ २५६ ख मेलैपाहारजघन्यसद्वर्गवर्गगणैयुः एकपरमाणुविदमधिकग-
०

ज २५६

उ २५५ । २५५ ० ० २५५

० ० ०

म १६ । १६ । ०० १६

ज १६ । १६ । ०० १६

यस्य संख्यातावर्गगणैयुः असंख्यातावर्गगणैयुः ५ विवक्षितवर्गगणैयुः गुणकारः तद्वर्गगणैयुः ५
वर्गगणैयुः ५ विवक्षितवर्गगणैयुः ५ गुणकारः तद्वर्गगणैयुः ५
२

- १५ वर्गगणैयुः भाग देनेसे जो प्रमाण आवे उतना है । जैसे त्र्यणुक लानेके लिए द्व्यणुकका गुणकार
द्व्यणुकसे त्र्यणुकमें भाग देनेपर जितना प्रमाण आवे उतना है । उसके अनन्तर तद्वर्ग
असंख्यातावर्गगणैयुः एक परमाणु अधिक होनेपर अनन्तावर्गगणैयुः जघन्य होता है । उसे
मिदराशिक अनन्तवर्ग भाग प्रमाण अनन्तसे गुणा करनेपर अनन्तावर्गगणैयुः उत्पन्न होता
है । उसमें एक परमाणु अधिक होनेपर उससे ऊपरकी आहारवर्गगणैयुः जघन्य होता है । उसमें
२० मिदराशिक अनन्तवर्ग भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे जघन्यमें मिलानेपर आहारवर्गगणैयुः

तदनन्तरोपरितनकामर्मवर्गणाजघन्यमेकपरमाणुविदधिकमवकुं । अवकुल्लुटं तदनन्तरोपरितन

विशोपाधिकमवकुं उ २५६ ख १ ख ख ख १ ख १ ख ख १ ख ख ख
कामर्मणः ० ख ख ख ख ख

ज २५६ ख १ ख ख ख ख १ ख ख १ ख १ ख
ख ख ख ख ख

तदनन्तरोपरितनध्रुववर्गणोपलोठ जघन्यमेकपरमाणुविदधिकमवकुं तदुल्लुटमन्तजोवरागिगुणित-

मवकुं :—उ २५६ ख १ ख ख ख १ ख १ ख १ ख ख १ ख ख १६ ख
ध्रुवः ० ख ख ख ख ख

ज २५६ ख १ ख ख १ ख ख १ ख ख १ ख ख १ ख
ख ख ख ख ख

उ २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
० ख ख ख ख ख

अगेजः ०

ज २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
ख ख ख ख ख

५ तदनन्तरोपरितनकामर्मवर्गणाजघन्यमेकाणुनाधिकं तदुल्लुटं तदनन्तरोपरितन

उ २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
० ख ख ख ख ख

कम्मवः ०

ज २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
ख ख ख ख ख

तदनन्तरोपरितनध्रुववर्गणाजघन्यमेकाणुनाधिकं तदुल्लुटं तदोभन्तजोवरागिगुणित-

उ २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
० ख ख ख ख ख

ध्रुवः ०

ज २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
ख ख ख ख ख

अनन्तर्वै भागसे भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देनेपर उसका उत्पट्ट है। उससे एक परमाणु अधिक होनेपर उससे ऊपरकी अमास्यवर्गणाका जघन्य है। अनन्तगुणा उसका उत्पट्ट है। उससे एक परमाणु अधिक होनेपर उससे ऊपरकी कामर्मवर्गणाका जघन्य है। उसमें सिद्धराशि के अनन्तर्वै भागसे भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे उसमें मिलावेर उसका उत्पट्ट होता है। उससे एक परमाणु अधिक उससे ऊपरकी ध्रुववर्गणाका

अथसंख्येयभागमात्र पुनर्विगच्छोच्छिदतिर्हं गुणितकर्माशानंतानंतजोवंगच्छ सविस्सोपचय त्रिगो-
संचयमं कोळुत्तिरलन्कुं :—

उ स ३२ ० ० ख ख १२-१६ ख १३ ≡ ० ८ ०
वावरनिगोव ९ ≡ ० १५
ज स ० ० ० ० ख ख १२-१६ ख १३ ≡ ० ८ ५
९ ≡ ० ५ ५
०

ई वावरनिगोदोत्कृष्टवर्गणोदोच्छेदकल्पमनधिकं माडुत्तिरलु तृतीयशून्यवर्गणोदोच्छेद जपन्यवर्गणोद-
तृतीय शून्यः ०

ज स ३२ ० ० ख ख १२-१६ ख १३ ≡ ० ८ ०
९ ≡ ० १५

५ सूक्ष्मनिगोवजपन्यवर्गणोवावेडेयोळु संभविसुगुनेदोळे जलदोळु स्थलदोळुमाकाशदोळुने

कर्माशानन्तानन्तवावरनिगोदजीवानां सविस्सोपचयविशरीरसंचयः उत्कृष्टवावरनिगोदवर्गणा भवति—

उ ० स ३२ ० ० ख ख १२-१६ ख १३ ≡ ० ८ ०
वावरनिगोदसरीर ९ ≡ ० १५
ज ० स ० ० ० ख ख १२-१६ ख १३ ≡ ० ८ ५
९ ≡ ० ५ ५
०

इयमेकरूपाधिका तृतीयशून्यवर्गणाजपन्यं भवति—

विमशुण्यवगणा ज स ३२ ० ० ख ख १२-१६ ख १३ ≡ ० ८ ०
९ ≡ ० ५

एक परमाणु हीन करनेपर उत्कृष्ट ध्रुव शून्यवर्गणा होती है। तथा इस जपन्यको जपन्य
धेगिके असंख्यावर्गे भागसे गुणा करनेपर उत्कृष्ट वावरनिगोदवर्गणा होती है। स्वयम्भू-
रमणदोषमें जो मूलक आदि सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पतियोंके शरीर हैं उनमें एक वन्यवर्ग
१० जगत्धेगिके असंख्यावर्गे भागप्रमाण पुनर्विगच्छोच्छिदतिर्हं गुणितकर्माश अनन्तानन्त वा-
रनिगोद जोवांछा जो विमशोपचय सहित औदारिक तैजस कार्मणशरीरका उत्कृष्ट संभव है

गो० जीवकाण्डे

दुल्लष्टवर्गणेषु संभवमायेडेयोऽन्वकुम्बोडे महामत्स्यशरीरोऽन्व एकव्यनवद्वायत्यसंख्यातकमान्
मात्रपुत्रविगच्छोक्तिरतिवर्गुणितकमानान्तान्तजीवंगच्छसविप्रतोपचयप्रिगरीरसंवयमं प्रि

सुतिरलक्षुः— उ स ३२ ० ० स स १२- १६ स १३-८ ३ ० ८ सु २ ०
सूक्ष्मनिगोव ९ ३ ० ५ ० ०

मेलनेरडुवर्गणेषु सुगमंगच्छते बोडे सूक्ष्मनिगोदुल्लष्टवर्गणेषोऽन्वकुम्बं कूडिबोडे नभोवर्गणे
गच्छोऽन्व जघन्यवर्गणेषुः— ९ ३ ० ५

ज स ३२ ० ० स स १२- १६ स १३-८ ३ ० ८ सु २ ०
नभोवर्गणा ९ ३ ० ५ ०

५ ई जघन्यवर्गणेषु प्रतरासंख्येयभागविर्गुणिसुतिरल नभोवर्गणगच्छोऽन्वदुल्लष्टवर्गणेषुः—
उ स ३२ ० ० स स १२- १६ स १३-८ ३ ० ८ सु २ ० ०
नभोवर्गणा ९ ३ ० ५

निगोदवर्गणोत्कृष्टं महामत्स्यशरीरे एकव्यनवद्वायत्यसंख्यातकभापमात्रपुत्रविप्रतगुणितकमानान्तान्त
जीवानां सविससोपचयप्रिगरीरसंख्यो भवति—
सुक्ष्मनि उ ० स ३२ ० ० स स १२- १६ स १३-८ ३ ० ८ सु २ ०
१ ३ ० ५ ० ०
इदं एकरूपयुतं नभोवर्गणाजघन्यं भवति—

ज स ३२ ० ० स स १२- १६ स १३-८ ३ ० ८ सु २ ०
जघन्य १ ३ ० ५ ० ०
इदं प्रतरासंख्येयभागगुणितं नभोवर्गणोत्कृष्टं भवति—

ज स ३२ ० ० स स १२- १६ स १३-८ ३ ० ८ सु २ ०
जघन्य १ ३ ० ५ ० ०

समाधान—नदी, क्योंकि वादरनिगोदवर्गणाके शरीरोंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके शरीरों
का प्रमाण मूल्यगुलके असंख्यातवर्ग भाग गुणित है। इससे वहाँ जीव भी बहुत हैं। अतः
१० उन जीवोंके तीन शरीर सम्बन्धी परमाणु भी बहुत हैं। जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाको पक्ष

गौ० जीवकाण्डे

उक्तात्योपसंहारमं माहुतं त्रयो
तदल्पबहुत्वमुमं गाथापट्कविदं पेञ्चदशः—
परमाण्वस्य

परमाणुवगणान्मि ण अवरुक्कस्सं च सेसगे अत्थि ।
गेज्झमहाक्खंधाणं वरमहिंयं सेसगं गुणियं ॥५९६॥

परमाणुवर्गणायां नावरोक्तं च शेषकेऽस्ति । ग्राह्यमहास्कंधानां वरमधिकं शेषं गुणितं ॥५९६॥
परमाणुवर्गणयोः जघन्योक्तृष्टविशेषमित्तेकं बोधे परमाणुगच्छ निश्चित्यगच्छपुरां
शेषसंख्यातवर्गणां महास्कंधावसानमात्रं द्वाविंशतिवर्गणेष्वोक्तं ग्राह्यमहास्कंधानां आहारतेजोभायामनःकामंशेषवर्गणं
जुं । वा द्वाविंशतिवर्गणेष्वोक्तं ग्राह्यमहास्कंधानां आहारतेजोभायामनःकामंशेषवर्गणं
प्राह्यमेव बुद्धकुम्भरुष्टवर्गणेष्वोक्तं महास्कंधयोक्तृष्टवर्गणेष्वोक्तं ततश्च जघन्यं नोऽतु
नोऽतु विशेषाधिकं गच्छ, बुद्धिं पविनां वर्गणेष्वोक्तृष्टवर्गणेष्वोक्तं ततश्च जघन्यं नोऽतु गुण-
तं गच्छपुत्र ।
सिद्धाणामिदमभागे पडिभागे ते
पञ्चमं

सिद्धाणंतिमभागो पडिभागो गेज्झमाण जेदुदुं ।
पन्नासंखेज्जदिमं अंतिमखंधस्स जेदुदुं ।
पनंतैकभागः पडिभागो गेज्झमाण जेदुदुं ।

पन्नासंख्येज्जदिमं अंतिमखंधस्स जेड्ढठं ॥५९७॥
मनंतैकभागः प्रतिभागो ग्राह्याणां जेड्ढठं ।

१५ ज्येष्ठार्थं ॥

प्रतिभाषा ग्राह्याणां ज्येष्ठार्थः । पत्न्यासंबन्धेयभाषातिमत्त्वम्
भागहारविदं तन्मम जघन्यम् भागित्तिदेकभागमना प्रतिभागहारं सिद्धान्तं तन्भागमात्रमनुना
गलपुत्रं धुरार्थः । अंतिममहास्फण्डवर्गानामित्तमागि जघन्यद मेले कूडिबोडं तन्मृत्कुट्टवर्गमे
मायमकुमापत्न्यासंबन्ध्यातन्ममविदं जघन्यवर्गमेयं भागित्तिदेकभागमना जघन्यबोडु कूडिबो
जन्मपुत्रं हारं तासां मेव जघन्योक्तानुक्तजघन्यानि
परमापुत्रं हारं जघन्योक्तानुक्तजघन्यानि
न ग्राह्याणां भाहारं जघन्योक्तानुक्तजघन्यानि

[illegible]

पराधनानां पालनार्थं जपन्त्योऽनुष्ठानानुष्ठानानि तदवस्थानुष्ठानं च यायापदकैनाह—
 एष शास्त्राणां आहारेणोभावात्ततः कार्यवशं यायापदकैनाह—
 एष शास्त्राणां भवति भवति ॥१९९॥
 एष शास्त्राणां भवति भवति ॥१९९॥
 एष शास्त्राणां भवति भवति ॥१९९॥

१५ मकरा वरं निमित्तं स्वस्वोदयं भवतीति । प्रविभागाहारः विद्यानर्तकभाषः, तेन स्वस्व
वत् कथनका वरसंहार करते हुए वन्ही वर्णनायेने
अत्राप्य भेदा तथा अन्यद्वयको द्वय
परमावर्गगंगायाः प्रविभागाहारः पत्न्यव
होते ॥

प्रतिभाषाद्वाराः विद्वानन्तरूपायः, तेन स्वतः
अप्रपञ्च भेदो तथा अल्पवृत्तको छद् गायत्र्यां कहेते हैं—
परमाणुवर्गंगामे जपन्य-ऋक्ष भेद नही है क्योंकि परमाणु निर्विकृत-भेद रहित
होते हैं। जेप वाहेन वर्गंगामे तो जपन्य-ऋक्ष हैं। उनमें-से जो प्राक्षवर्गंग, आहूत-
वर्गंग, वैजसपरीवर्गंग, भागवर्गंग, मनोवर्गंग, कामवर्गंग तथा महाहन्ववर्गंग
हैं इनके ऋक्ष अपने-अपने जपन्यसे विभेजे अधिक हैं, जेप सोलह वर्गंगोंके मुनि
हैं। १५९॥

अने-से वांच माझवर्गाभोळा उच्छ्रष्ट लानेके लिए प्रतिभागहार सिद्धांतिम
अवन्नर्वा भाग दे। तमसे अपने-अपने उपन्यसे भाग देकर जो लक्ष आने वसे हने

गो० जीवकाण्डे
सर्वजोविराशियं नोडलनंतगुणितमप्य गुणकारं ध्रुवादि मूल वर्गंगेगच्छकृष्टवर्गंगानिमित्त
गुणकारप्रमाणमवकुमा गुणकारदिवं तंतम्म जघन्यवर्गंगेयं गुणिसुतं विरल तंतम्मुक्तृष्टवर्गंगानिमित्तमि
गठपुर्वबुद्धत्वं । तु मते ततः अलिंदं मेलण प्रत्येकशरीरवर्गंगेगच्छकृष्टवर्गंगानिमित्तमि
गुणकारं पत्यासंस्थातैकभागमवकुमा गुणकारगुणित तज्जघन्यवर्गंगेये प्रत्येकशरीरवर्गंगेयोद्-
५ वर्गंगेयवकुमे बुद्धयनिमित्त पत्यासंस्थातैकभागगुणकारमेतंबोडे :—प्रत्येकशरीरवर्गंगेयोद्भव-
शरीरसमयप्रवर्धं गुणितकर्माश्रीवप्रतिवद्रमपुर्वारिवमुक्तृष्टयोगाजितमपुर्वारिव । तज्जघन्य-
समयप्रवर्धतं नोडल पत्यन्वेदासंस्थातैकभागगुणितमवकुमदवक्त्रं संवृष्टि द्व्याग्रिशंकमवकुमपुर्वारिव
तज्जघन्यवर्गंगेयं तदगुणकारदिवं गुणिसुतिरल तदुक्तृष्टवर्गंगेयेयवकुमे बुद्धयं । ततः इति
मेलण ध्रुवज्ञान्यवर्गंगेयगळोड तदुक्तृष्टवर्गंगानिमित्तगुणकारमतस्यातलोकिभक्तसर्वमियाद्वि-
१० राशियवकु १ इ ३ २ सो गुणकारदिवं गुणिसिद तज्जघन्यराशि ध्रुवज्ञान्यवर्गंगेयोद्भव-
९ ३ ७ यगंगाप्रमाणमे बुद्धयं ।
सेढीसईपलाजगगा

अप्यप्यण अवरादो उक्कस्मा त्तेति ।

१५ श्रेयोमूचीपत्यजगत्प्रतरासंख्यभागगुणकाराः । स्वस्वावरायाः उत्कृष्टा भवन्ति नियमेन ॥
 श्रेयसंहयातेकभागमुं सूच्यंगुलासंख्यातेकभागमुं पत्यासंख्यातेकभागमुं जगत्प्रतरासंख्यातेक
 भागमुं ययासंख्यमाणि बाहरनिगोदन्नून्य—सूक्ष्मनिगोदन्मोवर्गंशेगुणकृष्टवर्गानामितियुग्मां
 गळ्ळुयु ।
 सर्वबीकरासितान्तगुणो प्रवाहिन्ये
 सपुपितनयवेद्यरीत्यंते
 मन्ति

[illegible]

११. वससे जारको प्रत्येक सरीरवर्गणाका उत्कृष्ट के लिए गुणकार समस्त राशिसे अतन्तगुणा है। गुणकार है। क्योंकि प्रत्येक सरीरवर्गणार्थ जो कामेण सरीरके समयप्रबद्ध हैं वे गुणि कर्मात् जीवसम्बन्धी हैं अतः जपन्य समयप्रबद्धसे प्रत्येक अर्थच्छेदोंके असंख्यातव भागगुने हैं। उनको संदृष्टि वर्णन है। वससे जपन्यमें गुणा करनेपर उसका उत्कृष्ट होता है। प्रत्येक सरीरवर्गणाके उत्कृष्ट के लिए गुणकार सब मिथ्यादृष्टियोंकी राशिमें असंख्यातवर्गोंके नव भागद्वारेण जो प्रमाण आये उनका है १/५१५।

१२. वादरनिगोदवर्गणा, नून्यवर्गणा, मूध्यनिगोदवर्गणा और नभोवर्गणाके उत्कृष्ट करने के लिए गुणकार क्रमसे धेनिका असंख्यातवर्गों भाग, सूर्यगुलका असंख्यातवर्गों भाग, पत्तः

क्रमविदमन्तवर्गणेषु सत्तुतं विरलु वल्लिरुमायुवो दन्तवर्गणेष्वरोऽनु यमर्गणेषु कथंचित्तु
 कथंचित्तु एतलानुमुदकुमण्डोडागः एकं मेणु द्वयं मेणु त्रयं मेणुः कृष्टविदमावल्पसंख्यातं
 भागमात्रं सवृश्वनिकां घटिपितुमुमुं घटिमुवो वं विशेषमुदायुवो दोडे पूर्ववर्गणेषु
 ५ नोडलिकेकवर्गणेषु विशेषाधिकं गच्छन्तु

मत्तमी विधानविधेयन्तवर्गणेषु नडेवयु । मत्तायुवो वन्तरोपरितनयर्गणेष्वोऽनु
 त्तनापस्तनवर्गणेषु नोडलिकेकवर्गणेषु वं विशेषाधिकं गच्छन्तु । ई विधानविदं नदस्त-
 ह्युदेनैवरं यममध्यमन्नेवरं मत्ता यममध्यमर्गणेषु कथंचित्तु कथंचिन्नास्ति यच्छति ता
 एकं मेणु द्वयं मेणु त्रयं मेणु उत्कृष्टविदमावल्पसंख्यातं नोडलेकवर्गणेषु विशेषाधिकं गच्छन्तु मत्तमिषुमन्त-
 १० विदमन्तराधस्तन सहशपनिकवर्गणेषु नोडलेकवर्गणेषु विशेषाधिकं गच्छन्तु मत्तमिषुमन्त-
 यमर्गणेषु यत्तित्क्रमादिदं नडेवयु । वल्लिरुमा अल्लिवं मेले यायुवो दन्तवर्गणेषु स्याति
 स्यान्नास्ति यच्छति तदा एकं मेणु द्वयं मेणु त्रयं मेणुः कृष्टविदमावल्पसंख्यातं भागमात्रं गच्छन्तु
 क्रमेण अनन्तरवर्गणा अतीत्य अनन्तरवर्गणाद्रव्यं कथंचित्तु कथंचिन्नास्ति यच्छति तदा एकं वा द्वयं वा तं
 उत्कृष्टेन आवल्पसंख्यातं कभागः । अयं पूर्वस्मादेकरूपाधिकः २ एवमन्तरवर्गणा अतीत्य अनन्तरवर्गणेषु

- १५ वर्गणा अपस्तनापस्तनवर्गणाम्यः एकैकाधिका भवन्ति । एवं यावत् यममध्यं तावन्तेवम् । यममध्यवर्ग-
 सद्गुणनिकाद्रव्यं कथंचित्तु कथंचिन्नास्ति यच्छति तदा एकं वा द्वयं वा त्रयं वा उत्कृष्टेन आवल्पसंख्यातं कभागः ।
 अयं ततोऽप्येकरूपाधिकः । एवमन्तरवर्गणा अतीत्य अनन्तरवर्गणाद्रव्यं स्यादस्ति स्यान्नास्ति, यच्छति तदा
 एकं वा द्वयं वा त्रयं वा उत्कृष्टेन आवल्पसंख्यातं कभागः । अयं पूर्वस्मादेकरूपहीनः । एवं यावत् तावन्तेव
 वर्गणा तावन्तेवम् । सद्गुणमपि स्यादस्ति स्यान्नास्ति यच्छति तदा एकं वा द्वयं वा त्रयं वा उत्कृष्टेन
- २० वर्गणासे एक परमाणु अधिक जो प्रत्येक वर्गणा है वह लोकमें होती भी है और नहीं भी
 होती । यदि है तब एक या दो या तीन या उत्कृष्टसे आवलीके असंख्यातवें भाग होती है ।
 इसी क्रमसे एक-एक परमाणु बढ़ाते-बढ़ाते अनन्त वर्गणा धीवनेपर उससे एक परमाणु
 अधिक अनन्तरवर्गणा कथंचित्तु है, कथंचित् नहीं है । यदि है तब एक या दो या तीन
 उत्कृष्टसे आवलीके असंख्यातवें भाग होती है । पहिलेसे इसका प्रमाण एक अधिक है ।
 २५ इस प्रकार अनन्त वर्गणा धीवनेपर अनन्तरकी ऊपरकी वर्गणाओंमें नोचे-नीचेकी वर्गणा
 एक-एक अधिक परमाणु होता है । इस प्रकार जबतक यममध्य आये तब तक ने जना
 परमाणुओंके हन्यरूप प्रत्येक वर्गणा लोकमें होती भी है या नहीं भी होती ? यदि है तो एक
 या दो या तीन उत्कृष्टसे आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण होती हैं । यह उससे जो
 एक अधिक है । ऐसे अनन्त वर्गणा धीवनेपर अनन्तर जो वर्गणा है वह कथंचित्तु
 कथंचित् नहीं है । यदि है तो एक दो या तीन या उत्कृष्टसे आवलीके असंख्यातवें भाग है ।

गदिठागोग्गहकिरियासाधणभूदं सु होदि धम्मतिथं ।

वत्तजक्रिरियासाहणभूदो णियमेण कालो दु ॥६०५॥

सन्निवृत्तानां गृह्यासाधनभूतं सत् भवति धर्मत्रयं । यत्तन्निवृत्त्यासाधनभूतो नियमो
व्यवस्था ॥

[illegible][illegible][illegible]

॥ ४ ॥ हमने दुन्दुभेय को प्राप्त होनेमें जो कारण दे दिये हैं, वे सब सत्य हैं। जयसे ॥ ५ ॥ ॥ ४ ॥ हमने दुन्दुभेय को प्राप्त होनेमें जो कारण दे दिये हैं, वे सब सत्य हैं। जयसे ॥ ५ ॥

[illegible]

मदवके पीदगलिकत्वमयुक्तमेदितु ये बोडाचार्यने बपं—आ इन्द्रियबोडनात्मगे संबधमुदो मेमु
संबधमिल्लमो ? येतलानु संबधमिल्ले येयप्पोडवत्तेके बोडे आत्मगुणकारमागत्वेत्तुमाउपसारं
माडु इन्द्रियकं साच्चिदमं सचिदवयुमं माडु अयवा संबधमुदे येयप्पोडे एरुप्रदेगसंबधमनु-
वरिवमा अणुमितरप्रवेगंजोळपकारमं माडु । अट्टवशाविना मनरकलातवळते परिभ्रम-
५ मुंदे येयप्पोडवुं संबधिसदेके बोडे अणुमात्रके तत्तामप्याभावमपुवरिवं ।

अमूर्तनप्पात्मगे निष्क्रियगे अट्टमप्य गुणमन्यत्रक्रियारंभवोळु समर्थमस्तु बहणे कान-
स्पट्टु । वायुद्रव्यविशेषं क्रियायंतमुं स्पर्शनयंतमुं प्राप्तमावुतु यनस्पतिपोळु परित्पंडहेतुवळुं
तद्विपरीतलक्षणमो यणुमेंदितु क्रियाहेतुस्याभावमरकुं । योर्पातरायज्ञानावरणक्षयोपगोपां-
नामोदयापेक्षदिदमात्मनिदुदस्यमानकल्पमप्य वायुउच्छ्वासलक्षणमप्युतु प्राणमेंदु वेळस्पट्टु । वा
१० वायुविदेयेयात्मगे घोरगण वायुवनम्यंतरीक्रियमाणनिश्वासलक्षणमपानमेंदु वेळस्पट्टु । इता
घेरकुमात्मगे अनुपाहिगळपुयेके बोडे जीवितहेतुत्वविदमा मनःप्राणापानंजोळु भूतिमत्त्वमिप्स-
डुवेके बोडे प्रतिघातादिदर्शनदिवं प्रतिभयहेतुगळप्यज्ञानिपातविगळिदं मनरके प्रतिघातं कान-
स्पट्टु । सुरादिगळि स्वादिगळिदमप्य पूतिगंधिप्रतिभयदिदं हस्ततलपुडादिगळिदमास्थसवरपांरं

सम्बन्धः स्यात् न वा ? यदि न, तन्न आत्मनः उपकारेण भाव्यं तन्नोपकुर्वात, इन्द्रियस्य साचिदं सचिदं
१५ न कुर्वात् । अय स्यात्, तदा एकदेशसम्बन्धेन सोऽणुः इतरप्रदेशेषु नोपकुर्वात् । अयादृष्टवगेन तत्सातावरण-
वत्परिभ्रमणं तद्व्यपसंभावं, अणुमात्रस्य तत्तामप्याभावात्, अमूर्तस्य आत्मनो निष्क्रियस्यादृष्टगुणः अन्य-
क्रियारम्भे समर्थो न । वायुद्रव्यं हि क्रियावत् स्पर्शवत् प्राप्तवनस्पतो परित्पट्टहेतुः तद्विपरीतलक्षणमप्यु-
त्तादृक् क्रियाहेतुर्न स्यात् । योर्पातरायज्ञानावरणक्षयोपसमाज्जोपायनामोदयापेक्षेणगमनोदस्यमानरज्जुगणः
उच्छ्वासलक्षणः स प्राणः । तेनैव वायुना आत्मनो बाह्यवायुरप्यन्तरीक्रियमाणो निश्वासलक्षणः अपानः ।

२० तौ च आत्मनोऽनुपाहिणौ जीवितहेतुव्यात्, ते च मनःप्राणापाना मृतिमन्तः, मनसः प्रतिभयहेतुवशातिपांरिः

नही हे तथा वह परमाणु यरायर हे, पीदगलिक नही हे । आचार्य कहते हैं—उस अनुरूप
मनका सम्बन्ध आत्माके साथ हे या नहीं हे । यदि नहीं हे तो वह आत्माका उपकार नही
कर सकता और न इन्द्रियोंकी ही सहायता कर सकता हे । यदि सम्बन्ध हे तो उस अनु-
रूप मनका सम्बन्ध आत्माके एक देशके साथ ही हो सकता हे और ऐसी स्थितिमें वह
२५ अन्य प्रदेशोंमें उपकार नहीं कर सकता । यदि कहोगे कि अवृष्टयश वह अनुरूप मन सदा
आत्मामें अलावचककी तरह भ्रमण करता हे इससे उसका सर्वत्र सम्बन्ध होता हे । तो वह
भी सम्भव नहीं हे क्योंकि अणुमात्र मनमें ऐसी सामर्थ्यका अभाव हे । तथा अमूर्त और
क्रियारहित आत्माका गुण अवृष्ट अन्यमें क्रिया करानेमें समर्थ नहीं हे । वायु क्रियावान् जो
स्पर्शवान् होनेसे प्राप्त घृष्टादिमें हलचलन करनेमें कारण होती हे । किन्तु वह अनुरूप
३० मन तो उससे विपरीत लक्षणवाला हे इसलिए उस प्रकारकी क्रियामें हेतु नहीं हो सकता ।
योर्पातराय और ज्ञानावरणके क्षयोपसम और अंगोपांग नामकर्मके उदयकी अपेक्षाने
आत्माके द्वारा जो अन्दरकी वायु बाहर निकाली जाती हे उसे उच्छ्वास रूप प्राण कहते
हैं । और उसी आत्माके द्वारा जो बाहरकी वायु भीतरकी ओर ली जाती हे उसे निश्वास
रूप अपान कहते हैं । ये प्राण अपान भी आत्माके उपकारी हैं क्योंकि उसके जीवनमें हेतु
३५ होते हैं । ये मन, प्राण अगान मृतिमान हैं क्योंकि भयके हेतु वज्रपाव आदिसे मनका, और

कर्मोदयविदं कामर्गवर्गभेदविदं कामर्गशरीरमाह । स्वरनामकर्मोदयविदं भाषावर्गभेदविदं वचनमाहुः । नोद्दिष्ट्यावरणक्षयोपशमोपेतमस्य संज्ञितो यत्कर्मोपांगनामोदयविदं मनोवर्गभेदविदं द्रव्यमनमवकुमुमेवदत्तं । ई पदार्थं मंदण मूत्रादयविदं पेयवपं ।

आहारवर्गणादो तिष्ठिणि शरीराणि ह्येति उस्तासो ।

निस्तासो च य तेजोवर्गणसंधा दृ तेजसं ॥६०७॥

आहारवर्गणापारोणि शरीराणि भवन्ति उन्मृतासो । निश्वातोपि च तेजोवर्गणास्कन्धः संज्ञतांगं ॥

ओदारिकवैक्रियकाहारकर्मो यो मूत्र शरीरंगत् उन्मृतासनिश्वातांगं आहारवर्गभेदविदं मप्युतु । तेजोवर्गणास्कन्धविदं तेजसशरीरमाहुः ।

भासमणवर्गणादो कमेण माता मणं तु रुम्मादो ।

अद्विविदकर्मदत्तं होदिति जिणेहि निश्चिदत्तं ॥६०८॥

भाषागनोवर्गणातः क्रमेण भाषामनस्तु कामर्गणात् । अष्टविधकर्मद्रव्यं भवतीति विदं निदिष्टं ॥

भाषावर्गणास्कन्धगच्छिदं चतुर्विधभाषेयम् । मनोवर्गणास्कन्धगच्छिदं द्रव्यमनमहुः ।

कामर्गवर्गणास्कन्धगच्छिदं अष्टविधकर्मद्रव्यमवकुमेवितु जिनस्यामिगच्छिदं पेयस्पर्शदुतु ।

निद्वत्तं लुक्लुत्तं बंधस्य य कारणं तु एयादो ।

संखेज्जासंखेज्जाणंतविहा निद्वलुक्लुगुणा ॥६०९॥

स्तिग्धत्वं कृच्छत्वं बंधस्य कारणं त्वेकावयः । संखेयासंखेयानतविधाः स्तिग्धकृच्छगुणाः ॥

कामर्गनामकर्मोदयात् कामर्गवर्गणा कामर्गशरीरम् । स्वरनामकर्मोदयाद् भाषावर्गणा वचनं, नोद्दिष्ट्या वरणक्षयोपशमोपेतसंज्ञितोऽङ्गोपाङ्गनामकर्मोदयान् मनोवर्गणा द्रव्यमनश्च भवतीत्यर्थः ॥६०९॥ अदुमेवार्थं मूत्रद्वयेनाह—

ओदारिकवैक्रियकाहारकनामानि श्रीणि शरीराणि उन्मृतासनिश्वातो च आहारवर्गणा भवन्ति । तेजोवर्गणास्कन्धः तेजःशरीरं भवति ॥६०७॥

भाषावर्गणास्कन्धविद्युतुविषभाषा भवन्ति । मनोवर्गणास्कन्धः द्रव्यमनः, कामर्गवर्गणास्कन्धोऽष्टविध कर्मोति निर्निदिष्टम् ॥६०८॥

तेजस वर्गणासे तेजस शरीरं, कामर्ग नामकर्मके उदयसे कामर्गवर्गणासे कामर्गशरीरं स्वरनामकर्मके उदयसे भाषावर्गणासे वचन और नोद्दिष्ट्यावरणके क्षयोपशमसे युक्त संज्ञिते अङ्गोपांगनामकर्मके उदयसे मनोवर्गणासे द्रव्यमन वनता है ॥६०९॥

इसी अर्थको दो भाषाओंसे कहते हैं—

आहारवर्गणासे ओदारिक, वैक्रिय और आहारक ये तीन शरीर और उन्मृतास निश्वास होते हैं । तेजसवर्गणाके स्कन्धोंसे तेजसशरीर होता है ॥६०७॥

भाषावर्गणाके स्कन्धोंसे चार प्रकारकी भाषा होती है । मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे द्रव्यमन होता है और कामर्गवर्गणाके स्कन्धोंसे आठ प्रकारके कर्म होते हैं ऐसा जिनने बने कहा है ॥६०८॥

एयगुणं तु जडगुणं निद्रातं त्रिगुणत्रिगुणसंसेज्जाऽ ।
संसेज्जाणंतगुणं होदि तदा रुखलुमावं न ॥६१०॥

एकगुणस्तु जघन्यं स्निग्धत्वं त्रिगुणत्रिगुणसंसेज्यासंसेज्यानंतगुणो भवति तथा रुखभाववत् ॥
आ स्निग्धत्वगुणबलियोऽ तु मते एकगुणमप्य स्निग्धत्वं जघन्यमत्रकुमवाविपणि त्रिगुण-
त्रिगुण संसेज्यासंसेज्यानंतगुणमत्रकुमते रुखत्वमुपरिपश्यन् ॥

एवं गुणसंयुक्ता परमाणू आदिवर्गगणहि ठिया ।
जोगदुगाणं बंधे दोणहं बंधो हवे गियमा ॥६११॥

एवं गुणसंयुक्ताः परमाणवः आदिवर्गणां स्थिताः । योग्यद्विकानां बंधे द्वयोर्वंधो
भवेन्नियमात् ॥
हं वेळत्पट्ट स्निग्धरुखगुणसंयुक्तगन्धपरमाणुमत्र मोवल अणुवर्गगोबोडितरत्पट्टु ।

योग्यद्विकगन्धो बंधमप्येदोऽ एरडक्कं बंधं नियमदिवमत्रुं । स्निग्धरुखत्वगुणनिमित्तमप्य
बंधमविशेषादिव प्रसक्तमादोडे अनिष्टगुणनिवृत्तिपूर्वकं विविधितिवपह ।

निद्राणिद्रा न वज्झंति रुखरुखा य पोगला ।
निद्रालुखा य वज्झंति रुखरुखी य पोगला ॥६१२॥

स्निग्धस्निग्धा न वप्यंते रुखरुखाश्च पुद्गलाः । स्निग्धरुखाश्च वप्यंते रुखरुखिणश्च
पुद्गलाः ॥

स्निग्धगुणपुद्गलंगळोडे स्निग्धगुणपुद्गलंगळ बंधमागल्पडव । रुखगुणपुद्गलंगळोडे
रुखगुणपुद्गलंगळमते बंधमागल्पडव । इदुत्सर्गविधियक्कुमेकं बोडे विशेषविधियं मुंवे वेळत्पट्ट-
पुद्गपुद्गलं स्निग्धगुणपुद्गलंगळोडे रुखगुणपुद्गलंगळ बंधमागल्पडवुद्वत्तप्य पुद्गलंगळ रुख-
पुद्गपुद्गलं

स्निग्धगुणावस्थां तु पुनः एकगुणं स्निग्धत्वं जघन्यं स्यात् । तदादि कृत्वा त्रिगुणत्रिगुणसंसेज्यासंसेज्या-
भगवत् भवति तथा रुखत्वमपि ॥६१०॥
एवं स्निग्धरुखगुणसंयुक्ताः परमाणवः अणुवर्गणां विधित योग्यद्विकानां बन्धस्थाने तयोरेव द्वयोर्वंधो
नियमेन भवति ॥६११॥ स्निग्धरुखगुणनिमित्तं बन्धस्याविशेषेण प्रसक्तावनिष्टगुणनिवृत्तिपूर्वकं विधि कृतेति-
स्निग्धगुणपुद्गलैः स्निग्धगुणपुद्गलाः न वप्यन्ते । तथा रुखगुणपुद्गलैः रुखगुणपुद्गलाः न वप्यन्ते ।

अथमूलगणविधिः । विशेषविशेषबंधमागल्पात् । स्निग्धगुणपुद्गलैः रुखगुणपुद्गलाः वप्यन्ते ते च पुनः

स्निग्ध गुणकी पंचिमे एक गुण स्निग्धताको जघन्य कहते हैं । उससे डेकर दो ।
वीन गुण, संख्यात गुण, असंख्यात गुण और अनन्त गुण रूप स्निग्ध गुण होता है ।
प्रकार रुखगुण भी जानना ॥६१०॥

इस प्रकारके स्निग्ध और रुखगुणोंसे संयुक्त परमाणु अणुवर्गणामें विद्यमान हैं ।
१० से योग्य दो परमाणुओंके बन्धस्थानको प्राप्त होनेपर ऊर्ही दोका बन्ध होता है ॥६११॥
स्निग्ध और रुख गुणके निमित्तसे सर्वत्र बन्धका प्रसंग प्राप्त होनेपर अनिष्ट गुण
बन्धका निषेध करते हुए बन्धका विधान करते हैं—स्निग्धगुण युक्त पुद्गलोंके साथ
गुण युक्त पुद्गलोंका बन्ध नहीं होता । तथा रुख गुण युक्त पुद्गलोंके साथ रुख

दोत्तिगपभवदुत्तरगदेसणंतरदुगाण बंधो दु ।

णिदूधे लुक्के वि तहा वि जहण्णुभये वि सव्वत्थ ॥६१७॥

द्वित्रिप्रभवद्वपुत्तरपतेष्वनंतरद्विकानां बंधस्तु । स्निग्धे रूक्षेऽपि तथा वि जघन्योभयस्मि

सर्वत्र ॥

- ५ स्निग्धे स्निग्धबोळं रूक्षेऽपि रूक्षबोळं द्वित्रिप्रभवमु द्वपुत्तरमाणि नडेयवरोळु उपरि
नंतरद्विकंगळगे स्निग्धव नात्कक्कं रूक्षव नात्कक्कं स्निग्धवेरडरोळं रूक्षवेरडरोळं बंधम
स्निग्धवेदक्कं रूक्षवपिदक्कं स्निग्धव मूररोळं रूक्षव मूररोळं बंधमक्कु । मितागुत्तिरलु जघन्य
पुतबोळं बंधप्रसंगभावोडे जघन्यवर्जितमप्युभयवरोळु स्निग्धरूक्षद्वयबोळु सर्वत्र बंधमरिपत्त
मे बुदत्थं ।

- १० णिदूधदरवरगुणाणू सपरट्ठाणे वि णेदि बंधट्ठं ।

वहिरंतरंगहेदुहि गुणंतरं संगदे एदि ॥६१८॥

स्निग्धेतरावरगुणाणुः स्वपरस्थानेऽपि नैति बंधात्थं । बाह्याभ्यंतरहेतुभ्यां गुणंतरं
एति ॥

- १५ स्ल्लडु । बाह्याभ्यंतरहेतुगळिदं गुणांतरं पोहि बंधक्के सल्लं । तत्त्वात्थंबोळं “न जघन्यगुणा
मे विदु पेळत्पट्ठुवु ।

स्निग्धे रूक्षेऽपि द्वित्रिप्रभवद्वपुत्तरक्रमेण गच्छन्ति तेषु उपरितनानन्तरद्विकानां स्निग्धवपु
रूक्षवपुष्कस्य च स्निग्धद्वये रूक्षद्वये च बन्धः स्यात् । स्निग्धपञ्चकस्य रूक्षपञ्चकस्य च स्निग्धत्रये स्
च बन्धः स्यात् । एवं जघन्यगुणयुतेऽपि बन्धप्रसक्तौ जघन्यवर्जिते उभयत्र स्निग्धरूक्षद्वये सर्वत्र बन्धो भ
इत्यर्थः ॥६१७॥

- २० स्निग्धजघन्यगुणाणुः रूक्षजघन्यगुणाणुश्च स्वस्थाने परस्थानेऽपि बन्धाय योग्यो न, बाह्याभ्यन्त
भिर्गुणाभ्यां प्राप्तस्तु योग्यः स्यात् । तत्त्वात्थंऽपि “न जघन्यगुणानां” इत्युक्तत्वात् ॥६१८॥

इसीको अन्य प्रकारसे कहते हैं—

- २५ स्निग्ध और रूक्षमें भी दोको आदि लेकर तथा तीनको आदि लेकर दो-दो व
जाते हैं । उनमें ऊपरके अनन्तरवर्ती दोका बन्ध होता है । जैसे चार गुण स्निग्धवाले
दो गुण स्निग्धवाले दो गुण रूक्षवालेके साथ तथा चार गुण रूक्षवालेका दो गुण रूक्षवा
दो गुण स्निग्धवालेके साथ बन्ध होता है । इसी तरह पाँच गुण स्निग्ध या पाँच गुण रूक्ष
का तीन गुण स्निग्ध या तीन गुण रूक्षवालेके साथ बन्ध होता है । इस प्रकार एक अंश
जघन्य गुणवालोंका भी बन्ध प्राप्त होनेपर निषेध करते हैं कि जघन्यको छोड़कर स्नि
१० और रूक्ष दोनोंमें सर्वत्र बन्ध जानना ॥६१७॥

जघन्य स्निग्ध गुणवाला या जघन्य रूक्ष गुणवाला परमाणु स्वस्थान और परस्थान
भी बन्धके योग्य नहीं है ।

जीवाजीवाः जीवंगळमजीवंगळ तेषां अवर पुण्यपापद्वयं पुण्यमुं पापमुमेंवेरडुं आसवमंवेर-
निज्जरावंधमोस्ताः आसवमुं संवरमुं निज्जरयं वंधमुं मोक्षमुमें वितु नयपदात्यंगळपुवुं । पदात्यं-
शब्दं सत्त्वंत्र संबंधिसत्त्वपुवुं । जीवपदात्यः अजीवपदात्यः इत्यादि ।

जीवदुगं उत्तयं जीवा पुण्णा इ सम्मगुण सदि दा ।
वदसहिदा वि य पावा तत्त्विवरीया इवंतित्ति ॥६२२॥
जीवद्वयमुक्तात्यं जीवाः पुण्याः एतत्त्वयगुणसहिताः । एतत्सहिताः अपि च पापात्-
द्विपरोता भवंतीति ॥

जीवपदात्यंमुमजीवपदात्यंमुं मुन्नं जीवसमासेयोळं पड्डम्याधिकारबोळं पेळ्ळुदेयत्तुं ।
सम्यक्त्वगुणयुक्तजीवंगळं एतयुक्तजीवंगळं पुण्यजीवंगळपुवुं । तद्विपरीतंगळं तद्वरहितंगळं पा-
१० जीवंगळेवरित्यपड्डवु खलु नियमविदं । चतुर्दशगुणस्यानंगळोळं जीवसंख्येयं पेळ्ळुत्तं मिथ्यादृष्टि-
गळं सासादनरं पापजीवंगळे वु पेळ्ळुदपं :—

मिच्छादृष्टी पावाणंताणंता य सासणगुणा वि ।

पन्नासंखेज्जदिमा अणअण्णदरुदयमिच्छगुणा ॥६२३॥

१५ अन्यतरोदेयमिथ्यागुणाः ॥
पापाः अनंतानंताश्च सासादनगुणा अपि । पत्त्यासंख्येयभागाः अनंतानुरा-
पापरूपरूपगळप्प मिथ्यादृष्टिजीवंगळं किंचिदून संसारिराशिप्रमाणरप्परके बोळे सासादनरं-

तरगुणस्यानजीवसंख्येयिव हीनरप्परिवरिं । अबु कारणविदमनंतंगळपुवु ॥ १३ ॥ सासादनरं-

जीवा अजीवाः तेषां पुण्यपापद्वयं आसवः संवरौ निर्जरा नश्यो मोक्षश्चेति नवपदार्था भवन्ति ।
२० पदार्थशब्दः सर्वत्र सम्प्रचलीयः, जीवपदार्थः अजीवपदार्थः इत्यादिः ॥६२१॥

जीवाजीवपदार्थौ द्वौ पूर्वं जीवसमासे पड्डम्याधिकारे चोक्तार्थौ । पुण्यजीवाः सम्यक्त्वगुण-
युक्ताश्च स्युः । तद्विपरीतलक्षणाः पापजीवाः खलु-नियमेन ॥६२२॥ चतुर्दशगुणस्यानेषु जीवसंख्या निम्न-
दृष्टिसासादनौ च पापजीवाविति आह—

मिथ्यादृष्टयः पापाः—पापजीवाः । ते चानन्तानन्ता एव इतरगुणस्यानजीवसंख्येयसंसारिभिरा-
जीव, अजीव, उनके पुण्य और पाप दो तथा आसव, बन्ध, संवर, निर्जरा, न-
२५ और मोक्ष ये नौ पदार्थ होते हैं । पदार्थ शब्द प्रत्येकके साथ लगाना चाहिए । जैसे जीव-
पदार्थ, अजीवपदार्थ इत्यादि ॥६२१॥

पहले जीवसमासमें तथा छह द्रव्योंके अधिकारमें जीवपदार्थ और अजीवपदार्थों
कथन कर दिया है । जो जीव सम्यक्त्वगुणसे युक्त हैं और प्रतीसे युक्त हैं वे जीव पुण्य-
होते हैं । उनसे विपरीत लक्षणवाले अर्थात् जो न सम्यक्त्वयुक्त हैं और न प्रतीसे युक्त हैं
१० नियमसे पापरूप हैं ॥६२२॥

आगे चौदह गुणधानोंमें जीवोंकी संख्या और मिथ्यादृष्टि तथा सासादन गुण-
वाले जीवोंको पापी कहते हैं—
मिथ्यादृष्टि जीव पापी हैं और वे अनन्तानन्त हैं; क्योंकि संसारी जीवोंकी राशिमें
तेषां उत्तर गुणस्थानवर्ती जीवोंकी संख्या पदानेपर मिथ्यादृष्टि जीवोंकी संख्या होगी ।

तिरधियसयणवणवुदी छणवुदी अप्पमत्त वे कोडी ।
पंचेय य तेणवुदी णवद्विसयच्छउत्तरं पमदे ॥६२५॥

त्रिभिरधिकशतं नवनवतिः पणवतिरप्रमत्त द्विकोटि पंचेय च त्रिनवतिर्नवाष्टमिदं
पडुत्तरं प्रमत्ते ॥

प्रमत्तरोळु संख्ये अय्पु कोटियं तो भत्तमूलक्षेयं तो भत्तं दु सात्तिख इन्नराखत्तं
॥ ५९३९८२०६ ॥ अप्रमत्तरोळु संख्ये येरदुकोटियं तो भत्ताय लक्षेयं तो भत्तो भत्तु सात्तिख
मूलखत्तु ॥ २९६९१०३ ॥

निसयं भणंति केई चउरुत्तरमत्थपंचयं केई ।

उवसामगपरिमाणं खवगाणं जाण तदुदुगुणं ॥६२६॥

१० त्रिगतं भणंति केचित् चतुस्तत्तमस्तपंचकं केचित् । उपशमकपरिमाणं क्षपकानां ग्रहं

तद्विगुणं ॥

केलंबराचाप्यंरुगळु उपशमकरप्रमाणं त्रिशतमेदु पेळवव । मत्तं केलंबराचाप्यंरु
चतुस्तत्तमिगतमेदु पेळवव । मत्तं केलंबराचाप्यंरुगळु अय्पु गुंविच चतुस्तत्तमिगतमेदु पे
॥ २९९ ॥ य ओडु गुंवे मूनूरं बुदत्तं । क्षपकर प्रमाणं तद्विगुणं नीनरियेदु शिष्यमरेक्ष

१५ मरुमुमी संख्येगळेळु प्रवाहोपवेगमप्य संख्येयं निरंतराष्टसमयंगळेळु विभागिति पेळवः—
सोलसयं चउवीसं तीसं छतीस तह य वादालं ।

अडदालं चउवणं चउवणं होति उवसमगे ॥६२७॥

योडगठं चतुर्विंशतिः त्रिंशत् पदत्रिंशत्तया च द्विचत्वारिंशदष्टचत्वारिंशच्चतुःपंचाशत्
पंचाशदभवंत्युपशमके ॥

२० प्रमत्ते पय कोट्यः त्रिनवतिरष्टाध्याष्टानवतिषहृशानि द्विगतं पदं च भवन्ति । ५, ९३, ९८, १०॥
अवमत्ते द्विकोटियणवति त्रिंशतनवतिमहृषहृशतनयो भवन्ति । २, ९९, ९९, १०३ ॥६२५॥

केचिदुपशमप्रमाणं त्रिगतं भवन्ति । केचित् चतुस्तत्तमिगतं भवन्ति । केचित् गुनः पञ्चोत्तरगुणं
त्रिगतं भवन्ति । एकोनविंशतिविरयः । क्षपकरप्रमाणं ततो द्विगुणं जानोहि ॥६२६॥ अथ प्रवाहोपवेगं

२५ प्रमत्तगुणस्थानमे पंच कोटि निरानवे लाख, अट्टानवे हजार दो सौ छह ५९३९८०६
जीव है । तथा अप्रमत्तगुणस्थानमे दो कोटि त्रियानवे लाख, निन्यानवे हजार एक सौ छह
५९६९१०३ जीव है ॥६२५॥

याटवे, नोरे, दमव, ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती उपशमभेजिवालोंका प्रमाण कोई ग्रह
तीन सौ दूधरे है, कोई आचार्य तीन सौ चार दूधरे है और कोई आचार्य तीन सौ चार
१० पंच दम अपरि दो सौ निन्यानवे दूधरे है । तथा आठवें, नोरे, दमव और ग्यारहवें गुण
स्थानकी श्रवणभेजिका दो जीवोंका प्रमाण उपशमवालोंसे दूना जानना ॥६२६॥

आचार्य परस्परमे आगम प्रवाही उपशेन तीन सौ चारकी संख्याका निरन्तर ३३
अनवधि विभाग करते हैं—

सयोगिजिनरुग्णसंख्ये लक्षाष्टकमुपगन्तवतिसहस्रं द्वयुत्तरपंचशतप्रमितमवहु ।
 ८९८५०२ । मिनित्वरं सर्वं वा वंदिसुवे । इल्लि निरंतरं अष्टसमयंगळो संचित्तपट्ट सयोगिजिन-
 रुग्णाचाप्यांतरापेक्षेयं सिद्धान्तवाच्यवोऽहम् "छमु मुदसमयेसु तिण्णि तिण्णि जीवा केवलमुप्याप-
 यंति । दोमु समयेषु दोहो जीवा केवलमुप्यापयंति एवमद्वयसमयसंचिदजीवा बावोसा हवति"
 १ येदित्ति पेत्तपट्टवाच समयंगळो मूव मूवमेरुद समयंगळोत्तरवरेदामलु जिनरुग्णं मोक्षगणि-
 गळमवधिगळ मेळेंदु समयंगळोन्नित्वरपरं वो विशेषकथनवोऽहम् त्रैराशिकपट्टकमवकुर्वते सो
 संहति :-

प्र के २२	फ का ८ ६	इ के = ८९८५०२	लब्ध मिथकाल ८ लब्ध का ४०८४१६
प्र का ८ ६	फ स ८ ।	इ का ४०८४१८ ६	लब्ध समयाधुदा ३२६७२८
प्र स ८	फ के २२	इ स ३२६७२८ ॥	लब्ध केवलिन : लब्ध के ८९८५०२
प्र स ८	फ के ४४	इ स ३२६७२८ । २	लब्ध ८९८५०२
प्र स ८	फ के ८८	इ स ३२६७२८ २।२	लब्ध के ८९८५०२
प्र स ८	फ के १७६	इ स ३२६७२८ २।२।२	लब्ध के ८९८५०२

सयोगिजिनसंख्या अष्टलक्षाष्टनवतिसहस्रद्वयुत्तरपंचशतानि ८, ९८, ५०२ तान् सदा वन्दे । १५
 निरुत्तरपट्टमयेसु सचित्तसयोगिजिनाः आपायान्तिरापेक्षया सिद्धान्तवाच्ये—वमुमुदसमयेसु तिण्णि तिण्णि जीवा
 केवलमुप्यापयन्ति, दोमु समयेषु दो दो जीवा केवलमुप्यापयन्ति एवमद्वयसमयसंचिदजीवा बावोसा हवति
 विशेषकथने त्रैराशिकपट्टम् । लघवा—प्र के २२ । फ का ९ । इ के ८, ९८, ५०२ । ल का ४०८४१, ९।
 पुनः प्र का ९ । फ स ८ । इ का ४०८४१, ९ । ल स ३, २६, ७२८ । पुनः प्र स ८ । फ के २२ । इ ।

सयोगी जिनींही संख्या आठ लाख अठानवे हजार पाँच सौ दो हे उन्हें सदा नमस्कार
 २० करना है । यही निरन्तर आठ समयोंमें संचित सयोगी जिनींही संख्या अन्य आपायांही
 थोड़ा सिद्धान्तमें इस प्रकार कहती है—छह मुद समयोंमें तीन-तीन जीव केवलज्ञानको उत्पन्न करते हैं और दो समयोंमें दो-दो जीव केवलज्ञानको उत्पन्न करते हैं । इस प्रकार आठ
 समयोंमें संचित जीव बाईस होते हैं । यहीं विशेष कथन छह त्रैराशिकोंके द्वारा करते हैं—
 १. यदि बाईस केवली छह मास आठ समयमें होते हैं तो आठ लाख अठानवे हजार
 २१ पाँच सौ दो केवली जितने काठमें होंगे ऐसा त्रैराशिक करनेपर प्रमाणराशि २२ केवली
 केवली छह मास आठ समयकाठ, इच्छाराशि आठ लाख अठानवे हजार पाँच सौ दो
 केवली । मो प्रमाणका भाग इच्छाराशिमें देनेमें चाहीम हजार आठ सौ इकनाईस भाग
 इस संख्याको छह मास आठ समयमें गुना करनेपर काठका प्रमाण आता है । २ छह मास

जेह्वावरवहुमज्झिम ओगाहणगा दु चारि अट्टेव ।

जुगवं हवन्ति खवगा उवसमगा अद्धमेदेसिं ॥६३२॥

ज्येष्ठावरवहुमध्यमावगाहनकाः द्विचतुरष्टेव । युगपदभवन्ति क्षपकाः उपशमकाः अद्धमेतेषां ।
बोधितबुद्धश्च क्षपकरेकसमयवोद्धु युगपन्नूरेंदु उपशमकर तदद्धमप्पर १०८ पुर्वेदिनः

५ क्षपकर नूरेंदुपशमकर तदद्धमप्पर । १०८ स्वर्गाविवं बंद क्षपकर युगपन्नूरेंदुपशमकर तदद्ध-
५४

इ ३, २६, ७२८ । ल के ८, ९८, ५०२ । तथा प्र स ८ । क के १७६ । इ ३, २६, ७२८ । ल के ८, ९८, २२ । २१२

५०२ । इवमेकपक्षान्तरम् ॥६३१॥ अयंकसमये युगपत्संभवती क्षपकोपशमकविरोपसंख्यां गाथाप्रयोगाह—
युगपदुत्कण्ठेन एकसमये बोधितबुद्धाः पुर्वेदिनः स्वर्गच्युताश्च प्रत्येकं क्षपकाः अष्टोत्तरशतम् उपशम-

आठ लाख अठ्ठानवे हजार पाँच सौ दो आता है । नीचे इन छह त्रैराशियोंको अंकित किया जाता है—

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्धराशि
केवली २२	काल छह मास ८ समय	केवली ८९८५०२	काल ४०८४१ × छह मास आठ समय
काल छह मास ८ समय	समय ८	काल ४०८४१ × छहमास आठ समय	समय ३२६७२८
समय ८	केवली २२	समय ३२६७२८	केवली ८९८५०२
समय ८	केवली ४४	समय ३२६७२८ का आधा	केवली ८९८५०२
समय ८	केवली ८८	समय ३२६७२८ का चौथाई	केवली ८९८५०२
समय ८	केवली १७६	समय ३२६७२८ का आठवाँ भाग	केवली ८९८५०२

आगे एक समयमें एक साथ होनेवाली क्षपकों और उपशमकोंकी विशेष संख्या तीन गाथाओंसे कहते हैं—

२० एक साथ अरुण्टसे एक समयमें बोधित बुद्ध क्षपक, पुरुषवेदी क्षपक, और स्वर्गसे
च्युत होकर मनुष्य जन्म लेकर क्षपकधेनो पदनेवाले प्रत्येक एक सौ आठ, एक सौ आठ

८९९९९९९७ ऋदरोऽत्र प्रमत्ताविसयोमिकेवल्पवसानमाव गुणस्यानवर्तितगळ संख्येयनेंदु कोटियं
तो भत्तो भत्तु लक्षमं तो भत्तो भत्तु सासिरव मुन्नूरतो भत्तो भत्तं ८९९९९३९९ कञ्जेयुत्तिरलु शेषन-
योगिकेवलिलसंख्ये धरदुगुविबन्नूरवदु ५९८ ॥ मितो पवि नालकुं गुणस्यानंगळोऽत्र पेञ्च संख्येने
संहट्टिरचनेयिदु :—

३	५९८	८९८५०२	५९८	३९९१०	३९९१९८१॥	३९९१९८१॥	३९९१९८१॥	३९९१९८१॥	५९३९९१०३	५९३९८२०६	५३४७॥ १३ को	५७०० को	५१०४ को	५५२ को	१३-
सि	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अनंतरं चतुर्गतिगळोऽत्र मिथ्यादृष्टि सासादनमिभासंयतर संख्येयं साधिसुय पत्यव भाव

५ हारविशेषगळं पेञ्चदशं :—

ओषासंजदमिस्तयसासणसम्माण भागद्वारा जे ।

रूऊणावलियासंखेज्जेणिह भजिय तत्थ णिक्खिचे ॥६३४॥

ओषासंयतमिभकसासादनसम्यग्दृष्टीनां भागद्वारा ये । रूपोनावल्यसंख्यातेनेह विभज्य तत्र
निक्षिप्ते ॥

१० देवाणं अवहारा होंति असंखेण ताणि अवहरिय ।

तत्थेव य पक्खिचे सोहम्मीसाण अवहारा ॥६३५॥

देवानामवहारा भवन्ति असंख्येन तानपहृत्य तत्रैव च निक्षिप्ते सोधर्मशानावहाराः ॥

प्रमत्ताविसयोमिकेवल्पवसानमाव ८९९९९३९९ अपनीतायां शेषं दृष्टूनपदछतं अयोगिसंख्या भवति ।
५९८ ॥६३३॥ अथ चतुर्गतिमिथ्यादृष्टिसासादनमिभासंयतसंख्यासाधकपत्यभासहारविशेषानाह—

१५ अं क टिपनेपर ८९९९९९९७ तीन कम नौ करोड संख्या प्रमाण सव संयमियोंको में हाथोंको
अंजलि मस्तकसे लगाकर मन, वचन, कायकी मुद्रिसे नमस्कार करता हूँ । यहाँ प्रमत्त गुण-
स्थानसे लेकर सयोग केवली पर्यन्त संख्या ८९९९९३९९ है । इस संख्याको सव संयमियोंको
संख्यामें पटानेपर शेष दो कम छह सौ ५९८ अयोगियोंकी संख्या होती है ॥६३३॥

आगे चारों गतिके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, मिथ और असंयतसम्यग्दृष्टियों-
२० की संख्याके साथ पत्यके भागद्वार विशेषोंको कहते हैं—

मकु ० ० ० ० ४ । १३ ० ० ४ मवं नोडलुं पठ्यहराऽसंयतहारमसंख्यातगुणमरकुं ।
 ० - १० - १
 ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १४ ० मवं नोडलुं तन्मिधहारमसंख्यातगुणमरकुं ० ० ० ४ ० ० ४ । १४ ० ०
 ० - १० - १
 ० - १० - १
 मवं नोडलुं तत्रत्यसासावनहारं संख्यातगुणमरकुं ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १४ ० ० ४ मवं नोडलुं
 ० - १० - १

सप्तमधराऽसंयतहारमसंख्यातगुणमरकुं ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १५ ० मवं नोडलुं तन्मिधहार-
 ० - १० - १
 संख्यातगुणमरकुं ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १५ ० ० मवं नोडलुं तत्रत्यसासावनहारं संख्यातगुण-
 ० - १० - १

मकु ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १५ ० ० ४ मन्तरमानतादिगळोऽह्वारमं पेश्यपं :-
 ० - १० - १

चरमधरासाणहरा आणदसम्माण आरणप्यहुडिं ।

अंतिमगेवेज्जंतं सम्माणमसंखसंखगुणहारा ॥६३८॥

धरमधरासासावनहाराः आनतसम्पगृष्टिनामारणप्रभृत्यंतिमप्रेवेयकांतं सम्पगृष्टिनाम-

संख्यसंख्यगुणहाराः ॥

तत्तो ताणुत्ताणं वामाणमणुद्धिसाण विजयादी ।

सम्माणं संखगुणो आणदमिस्से असंखगुणो ॥६३९॥

तत्तस्तेषामुवतानां वामानामनुदिगानां विजयादिसम्पगृष्टिनां संख्यगुणः आनतमिधे-

संख्यगुणः ॥

५ असंख्यातगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः । ततः पठ्यहरासंयतहारः असंख्यातगुणः । ततः मिधहार
 असंख्यातगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः । ततः सप्तमधरासंयतहारः असंख्यातगुणः । ततः मिधहार
 असंख्यातगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः ॥६३७॥ अथानवादिषु गाथात्रयेणाह—

तत्तत्तमपृथ्वीसासादनहारात् आनतद्रयासंयतहारः असंख्यातगुणः । ततः आरण्यद्रयाश्रितमप्रेवेयका
 दशपदासंयतानां दशहाराः संख्यातगुणक्रमाः स्युः । अत्र संख्यातस्य संदृष्टिः पञ्चाङ्कः ॥६३८॥

२० ततोऽन्तिमप्रेवेयकासंयतहारात् आनतद्रयादितदुक्तेकादशपदमिध्यादुष्टोनां एकादशहाराः संख्यातगुणि
 क्रमाः । अत्र संख्यातस्य संदृष्टिः पञ्चाङ्कः । ततः तदन्तिमप्रेवेयकवामहारात् नवानुदिगविजयादिषुविना

भागहार संख्यातगुणा हे । उससे छठी पृथ्वीमें असंयतका भागहार असंख्यातगुणा ।
 उससे मिथका भागहार असंख्यातगुणा हे । उससे सासादनका भागहार संख्यातगुणा
 उससे सातवें नरकमें असंयतका भागहार असंख्यातगुणा हे । उससे मिथका भाग

२५ असंख्यातगुणा हे । उससे सासादनका भागहार संख्यातगुणा हे ॥६३७॥

आगे आनवादिमें तीन गाथाओंसे कहते हैं—

सप्तम पृथ्वीसम्पन्धी सासादनके भागहारसे आनत-प्राणत सम्पन्धी असंय
 भागहार असंख्यातगुणा हे । उससे आरण-अच्युतसे लेकर अन्तिम प्रवेयक पर्यन्त
 स्थानोंमें असंयतोंका भागहार क्रमसे संख्यातगुणा संख्यातगुणा हे । यहाँ संख्यातकी

१० पाँचका अंक हे ॥६३८॥

उस अन्तिम प्रवेयक सम्पन्धी असंयतोंके भागहारसे आनत-प्राणत युगलसे

मक्कु ० ० ० ० ४ । १३ ० ० ४ मवं नोडलुं पळवराऽसंयतहारमसंख्यातगुणमक्कु।
०-१०-१

० ० ० ० ४ ० ० ४ । १४ ० मवं नोडलुं तन्मिथहारमसंख्यातगुणमक्कु ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १४ ० ०
०-१०-१ ०-१०-१

मवं नोडलुं तत्रत्यसासादनहारं संख्यातगुणमक्कु ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १४ । ० ० ४ मवं नोडलुं
०-१०-१

सप्तमधराऽसंयतहारमसंख्यातगुणमक्कु ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १५ ० मवं नोडलुं तन्मिथहारं
०-१०-१

५ संख्यातगुणमक्कु ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १५ । ० ० मवं नोडलुं तत्रत्यसासादनहारं संख्यातगुण-
०-१०-१

मक्कु ० ० ० ० ४ ० ० ४ । १५ । ० ० ४ मन्तरमानतादिगळोळु हारमं वेळवपं :—
०-१०-१

चरमधरासाणहारा आणदसम्माण आरणप्पहुडि ।

अंतिमगेवेज्जंतं सम्माणमसंखसंखगुणहारा ॥६३८॥

चरमधरासासादनहाराः आनतसम्यग्दृष्टिनामारणप्रनृत्यंतिमपेवेयकांतं सम्यग्दृष्टोना

१० संखसंखगुणहाराः ॥

तत्तो ताणुचाणं वामाणमणुदिसाण विजयादी ।

सम्माणं संखगुणो आणदमिस्से असंखगुणो ॥६३९॥

तत्तोत्तेयामुक्तानां वामानामनुदिशानां विजयादिसम्यग्दृष्टोनां संखगुणः आनतमिधे
संखगुणः ॥

१५ असंख्यातगुणः । तत्रः सासादनहारः संख्यातगुणः । तत्रः पष्ठपरसंयतहारः असंख्यातगुणः । तत्रः मिथहा
असंख्यातगुणः । तत्रः सासादनहारः संख्यातगुणः । तत्रः सप्तमधरासंयतहारः असंख्यातगुणः । तत्रः मिथहा
असंख्यातगुणः । तत्रः सासादनहारः संख्यातगुणः ॥६३७॥ अथानुवादिषु गाथात्रयेपाह—

तत्तत्तमपुष्पीसासादनहारान् आनतद्वयार्थयतहारः असंख्यातगुणः । तत्रः आरणद्वयान्तिमपेवेयका
द्वयद्वयार्थयतानां द्युहाराः संख्यातगुणक्रमाः स्युः । अथ संख्यातस्य संसृष्टिः पञ्चाष्टुः ॥६३८॥

२० तत्रोन्तिमपेवेयकासंयतहारान् आनतद्वयार्थयतुक्तेष्वद्वयान्तिमपुष्पीनां एकाद्वयहाराः संख्यातगुण-
क्रमाः । अथ संख्यातस्य संसृष्टिः पञ्चाष्टुः । तत्रः तदन्तिमपेवेयकासंयतहारान् नवानुवादिषु गाथात्रयेपाह—

भागहार संख्यातगुणा हे । उससे छठीं दृष्टीमें असंयतका भागहार असंख्यातगुणा ।
उससे मिथका भागहार असंख्यातगुणा हे । उससे सासादनका भागहार संख्यातगुणा ।
उससे सावर्णे नरकमें असंयतका भागहार असंख्यातगुणा हे । उससे मिथका भागहार

२५ असंख्यातगुणा हे । उससे सासादनका भागहार संख्यातगुणा हे ॥६३९॥

आगे आनवादिमें तीन गाथाओंसे कहते हैं—

मन्त्र दृष्टीमध्यगो सासादनके भागहारसे आनत-प्राणव सम्बन्धी अमंवा
भागहार असंख्यातगुणा हे । उससे आरण-अच्युतसे छेकर अन्तिम पेवेयक पदमें ।
स्वायंके असंयतका भागहार क्रमसे संख्यातगुणा संख्यातगुणा हे । यही संख्यातको

१० पंथका अंक हे ॥६३८॥

अथ अन्तिम पेवेयक सम्बन्धी असंयतके भागहारसे आनत-प्राणव

जीविदरे कम्मचये पुण्णं पावोत्ति होदि पुण्णं तु ।

सुहपयडोणं दब्बं पावं असुहाण दब्बं तु ॥६४३॥

जीवेतरस्मिन् कम्मचये पुण्यं पापमिति भवति पुण्यं तु । शुभप्रकृतौ नो द्रव्यं पापमनुमानं द्रव्यं तु ॥

- ५ जीवपदार्थं पेळवल्लि सामान्यदिवं गुणस्थानंगळोळु मिथ्यादृष्टिगुणस्थानवर्तिगळुं सासादनगुणस्थानवर्तिगळुं पापजीवंगळु । मिथगुणस्थानवर्तिगळु पुण्यपापमिथजीवंगळेकोरो सस्यक्त्वमिथ्यात्वमिथपरिणामिगळुपुवरिद्वमसंयतगुणस्थानवर्तिगळु पुण्यजीवंगळेकोरो सस्यक्त्वसंयुक्तजीवंगळपुवरिद्वं देशसंयतगुणस्थानवर्तिगळु सस्यक्त्वमुपेकदेशप्रतंगळोळु कूडि-
वपुवरिद्वं पुण्यजीवंगळपुह । प्रमत्ताद्ययोगिकेवल्लिगुणस्थानवर्तिगळुनितुं पुण्यजीवंगळं विनु
१० पेळदनंतरमजीवपदार्थं पेळवल्लि कम्मचयवोळु काम्मणस्कंधवोळु पुण्यमे'वुं पापमे'वुंमजीवपदार्थ-
मेरडु भेदमवकुमल्लि पुण्यमे'वुंवायुवे'वोडे मत्ते शुभप्रकृतिगळ द्रव्यमवकुमा शुभप्रकृतिगळावुबोरो
सद्वेधमुं शुभापुण्यंगळुं शुभनामकम्मप्रकृतिगळुमुच्चैर्गोत्रमे'वियु शुभप्रकृतिगळे'वुवक्कुं । पापमे'वुंवा-
युवे'वोडे अशुभकम्मप्रकृतिगळ द्रव्यमवकुमा अशुभप्रकृतिगळे'वुवायुवे'वोडे अतोम्यत्पापमे'वो
सूत्राभिप्रायविद्वमसद्वेधमुं नरकापुण्यमुं नोच्चैर्गोत्रमुमशुभनामकम्मप्रकृतिगळुमे'दिवशुभप्रकृति-
१५ गळे'वुवक्कुं ।

आसवसंवरदब्बं समयपवद्धं तु निज्जरादब्बं ।

तत्तो असंखगुणिदं उक्कस्सं होदि नियमेण ॥६४४॥

आसवसंवरद्रव्यं समयप्रयट्स्तु निज्जराद्वयं । ततोऽसंख्यगुणितमुत्कृष्टं भवति नियमेन ॥

- २० जीवपदार्थप्रतिपादने सामान्येन गुणस्थानेषु मिथ्यादृष्टयः सासादनाश्च पापजीवाः । मिथः पुण्य-
मिथजीवाः सस्यक्त्वमिथ्यात्वमिथपरिणामपरिणतत्वात् । असंयताः सस्यक्त्वेन, देशसंयताः सस्यक्त्वेन
देशप्रतेन च प्रमत्तादयः सस्यक्त्वेन प्रतेन च युतत्वात् पुण्यजीवा एव इत्युक्ताः । अनन्तरं अजीवपदार्थरूपे
कर्मचये—काम्मणस्कंधे पुण्यं पापमिति अजीवपदार्थो देया । तत्र शुभप्रकृतौ नो सद्वेधमुनायुनामिगोत्राणां इमं
पुण्यं भवति । अनुमानो असद्वेधादिसर्वप्रवृत्तप्रकृतौ द्रव्यं तु पुनः पापं भवति ॥६४३॥

- २५ जीवपदार्थं सम्बन्धी सामान्य कथनके अनुसार गुणस्थानोर्नि मिथ्यादृष्टि और
सासादन तो पापी जीव हैं । मिथगुणस्थानवाले पुण्यपापरूप मिथ जीव हैं क्योंकि उनके
सस्यक् मिथ्यात्वरूप मिथ परिणाम होते हैं । असंयत सस्यक्त्वसे युक्त हैं, देशसंयत सस्यक्त्व
और देशप्रवृत्तिसे युक्त हैं इसलिये ये तो पुण्यात्मा जीव ही हैं और प्रमत्तादि तो पुण्यात्मा
ही । इसके अनन्तर अजीव पदार्थका प्ररूपण करते हैं—काम्मणस्कन्ध पुण्यरूप भी होता है
और पापरूप भी होता है इस प्रकार अजीव पदार्थके दो भेद हैं । उनमें सातावेदनीय, शुभ
३० आयु, शुभनाम और उच्चगोत्र ये शुभ प्रकृतियाँ हैं इनका द्रव्य पुण्यरूप है । असातावेदनीय
आदि सब अप्रवृत्त प्रकृतियोंका द्रव्य पाप है ॥६४३॥

दर्शनमोहं क्षपितस्यङ्गितरलु तदभववोऽं सिद्धिसुमुं मेण तृतीयचतुर्थमङ्गलोऽं कर्मक्षयं माळुं । नालकनेय भवमनतिक्रमिसुबुदल्ल शेषसम्प्रवत्वगळंतं किङ्गुदुमल्लमकु कारणदिवं नित्यमं पेळत्पट्टु साधक्षयानंतमं बुदत्यंमनंतरमोपत्यंमने पेळ्वपं :—

ययणेहि वि हेदूहि वि इंदियमयथाणएहि रूवेहि ।

वोभच्छजुगुं छाहि य तेलोक्केण वि ण चालेज्जो ॥६४७॥

यचनेरपि हेतुभिरपीन्द्रियमयानकैः रूपैः । वोभत्स्यजुगुप्ताभिश्च त्रैलोक्येनापि न चालते ॥

कुत्सितोक्तिर्गळिवमुं कुहेतुवुष्टांतर्गळिवमुं इन्द्रियंगळ्य भयंकरंगळिवमुं विकृतवेपंगळिवमुं वोभत्स्यंगळत्तणदप्प जुगप्तिगळिवमुं किं बहुना त्रैलोक्येनापि भूयं लोकदिवमुं क्षायिकसम्प्रवत्तं चलिस्तत्पट्टु । अंतप्य क्षायिकसम्प्रवर्शनमागंगकुमं वोऽं पेळ्वपद :—

दंसणमोहवत्खवणापट्टवगो कम्मभूमिजादो हु ।

मणुसो केवलिसूले णिडुवगो होदि सच्चत्थ ॥६४८॥

दर्शनमोहक्षपणाप्रस्थापकः कर्मभूमिजातस्तु मनुष्यः केवलिसूले निष्ठापको भवति सर्वत्र ॥

दर्शनमोहक्षपणाप्रारंभकं मत्ते कर्मभूमिजनस्कुमिल्लियं मनुष्यनेयकुमावोऽं केवलिधोपा-

मूलवोऽं दर्शनमोहक्षपणाप्रारंभकं माळुं । चतुर्गतिगळोऽंल्लियावोऽं निष्ठापिसुगु ।

अनंतरं वेदकसम्प्रवत्स्वरूपमं पेळ्वपं—

दर्शनमोहे क्षपिते सति तस्मिन्नेव भवे वा तृतीयभवे वा चतुर्थभवे कर्मक्षयं करोति चतुर्थमव नति-
ब्रमति । शेषसम्प्रवत्त्वत्र विनश्यति । तेन नित्यमित्युक्तं । साधक्षयानन्तमित्यर्थः । अनुमेयार्थमाह—

कुत्सितोक्तिभिः—कुहेतुदुष्टान्तैः इन्द्रियभयोत्पादकविकृतवेपैः वोभत्स्यवस्तूत्पन्नजुगुप्ताभिः किं बहुना त्रैलोक्येनापि क्षायिकसम्प्रवत्त्वं न चालयितुं शक्यम् ॥६४७॥ तत्सम्प्रवर्शनं कस्य भवेत् ? इति चेदाह—

दर्शनमोहक्षपणाप्रारंभकः कर्मभूमिज एव सोऽपि मनुष्य एव तथापि केवलिधोपादमूले एव भवति । निष्ठापरस्तु सर्वत्र चतुर्गतिषु भवति ॥६४८॥ अथ वेदकसम्प्रवत्स्वरूपमाह—

निर्जराका कारण होता है । कहा है—दर्शन मोहका क्षय होनेपर वसी भवमें या वांस्ते अथवा चौथे भवमें कर्मोंका क्षय करके मुक्ति प्राप्त करता है । चतुर्थ भवका अतिक्रमण नहीं करता । और न अन्य सम्यक्त्वोंकी तरह नष्ट ही होता है । इसीसे इसे नित्य कहा है । अर्थात् यह सादि अक्षयानन्त होता है ॥६४६॥

इसी पावको कहते हैं—

कुत्सित वषणोसे, मिथ्याहेतु और दृष्टान्तोसे, इन्द्रियोंको भय उत्पन्न करनेवाड़े भयंकर रूपोसे, पिनावनी वस्तुओसे उत्पन्न हुई ग्लानिसे, बहुत कहनेसे क्या, तीनों लोकोंके द्वारा भी क्षायिक सम्यक्त्वको विचलित नहीं किया जा सकता ॥६४७॥

यह क्षायिक सम्यग्दर्शन किसके होता है यह कहते हैं—

दर्शनमोहको क्षपणाका प्रारंभ कर्मभूमिमें उत्पन्न हुआ मनुष्य ही केवलिके पाद-
मूलमें ही करता है । किन्तु निष्ठापक चारों गतियोंमें होता है ॥६४८॥
आगे वेदक सम्यक्त्वका स्वरूप कहते हैं—

साधारणगच्छेत्तु । करणलब्धि भव्यतोऽपेक्षुर्नरिं तस्य स्तपहृत्तमोऽं चारिणस्तमोऽमार्तु ।

अन्तरमो युगलसम्पत्तमं केतोऽं जोरं पेन्तरणः—

चतुर्गद भव्यो गण्णी पञ्चचो मुञ्चगो य सागारो ।

जागारो मन्तेस्मो गलद्गो सम्मपुगमद ॥६५२॥

५ चतुर्गतिभयः संतिगम्यतिः गुञ्जय साकारः । सत्तेश्यो जागरिता सलब्धिकः सम्पत्तं मुपगच्छति ॥

चतुर्गतिभयं संतिगुं पम्यतिरुनु विमुञ्जु भेदप्रहृत्तमाकारं भुञ्जरोऽङ्कुरितुमपुर्ति साकारं स्त्यानगृह्यारिनिद्राप्रवरहितं भावगुभलेस्यात्रयोऽन्यतमलेऽयागुतं करणलब्धि परिणतनुमितस्य जोरे यथातन्त्रमस्य तस्य सरसं पोरुं ॥

१० चचारि नि रोसाहं आउगन्धेण होइ सम्पत्तं ।

अणुवदमद्वदाहं ण लहइ देराउगं मोपुं ॥६५३॥

चतुर्णी क्षेत्राणामापुर्धेन भवति तस्य सरसं । अणुवदमद्वदाहं न लभते देवायुऽं मुत्वा ॥

नारकायुष्यमुपं तिर्यगायुष्यमुपं मनुष्यायुष्यमुपं देवायुष्यमुपं परभवायुष्यगच्छं कर्तुं यद्वायुष्यगच्छस्य जीवंगत्तं तस्यैवमं स्वोक्तस्मिन्परिणतं दोषमिहलमणुवदमद्वदाहं परपत्ते

१५ नेरेयरत्ति, देवायुर्धमाद जो गंगत्तं अणुवदमद्वदाहं स्वोक्तस्मिन्परिणतं ।

चतुर्गतिभयः सामान्याः भव्याभयवो संभवा । करणलब्धिस्तु भव्य एव स्यात् तथापि तस्यैव प्रहृत्तं चारिण प्रहृत्तं च ॥६५१॥ अयोपचमसम्पत्तं प्रहृत्तं योग्यजीवमाह—

यः चतुर्गतिभयः संज्ञो पर्याप्तः विमुञ्जः आकारेण भेदप्रहृत्तं गच्छतिः स्त्यानगृह्यारिनिद्राप्रवरहितं भावगुभलेस्यात्रये अन्यतमलेऽयः करणलब्धिपरिणतः स जोरो यथातन्त्रं तस्यैवमुपगच्छति ॥६५२॥

२० चतुर्णी परभवामुपा एतदमन्धेन जातरदायुष्यस्य तस्यैव भवत्यत्र दोषो नास्ति । अणुवदमद्वदाहं तु एकं बद्धदेवायुष्यं मुक्त्वा नान्ये लभते ॥६५३॥

है भव्य और अभव्य दोनोंकी होती है । किन्तु अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिष्टिकरण परिणत रूप करणलब्धि भव्यके ही होती है । वह भी सम्यक्त्व और चारित्र्य ग्रहणके समर्थ होती है ॥६५१॥

२५ उपक्षमसम्यक्त्वको ग्रहण करनेके योग्य जीवको कहते हैं—

जो चारों गतियोंमें-से किसी भी गतिमें वर्तमान है किन्तु भव्य, पर्याप्तक, विमुक्त साकार उपयोगवाला, स्त्यानगृह्य आदि तीन निद्राओंसे रहित अर्थात्, तीन दुष्ट भाव देश्याओंमें-से किसी एक देश्याका धारक और करणलब्धि रूप परिणत होता है वह जीव यथासम्भव सम्यक्त्वको प्राप्त करता है ॥६५२॥

३० परभव सम्बन्धी चारों आयुओंमें-से किसी भी एक आयुका बन्ध कर लेनेपर जो जीव बद्धायु हो गया है उसके सम्यक्त्व उत्पन्न होनेमें कोई दोष नहीं है । किन्तु अणुवद और महाव्रत एक बद्धदेवायु—जिसने परभव सम्बन्धी देवायुका बन्ध किया है—को छोड़कर अन्य आयुका बन्ध कर लेनेवाले बद्धायुऽङ्क के नहीं होते ॥६५३॥

अनंतरं सम्यक्त्वमार्गणयोः जीवसंख्येयं गायत्र्यविषं पेन्ड्यं—

वासपुधत्ते खयिया संखेज्जा जइ हवन्ति सोहम्मे ।

तो संखपल्लठिदिह केवडिया एवमणुपादे ॥६५७॥

५ वर्षपृथक्त्वे क्षायिकाः संख्येया भवन्ति सौधम्मं । तर्हि संख्यपत्त्यस्थितिके कियन्त एवमणुपाते ॥

वर्षपृथक्त्वबोद्धुं क्षायिकसम्यग्दृष्टिगन्तुं संख्यातप्रमितं सौधम्मकल्पद्रव्यबोद्धुं पुट्टुवरता-
बोद्धे संख्यातपत्त्यस्थितिकेनोद्धुं एनियं क्षायिकसम्यग्दृष्टिगन्तुं परितोदितमुपातत्रैराशिकं माङ्गलिकं
प्रवर्षं ७ फ। क्षा = ७। इ। ५७। वंद लम्पमेनितरुमं बोद्धे :—

८

संखावलिहिदपल्ला खइया तचो य वेदगुवसमया ।

१० आवलि असंखगुणिदा असंखगुणहीणया कमसो ॥६५८॥

संख्यातावलिहृतपत्त्याः क्षायिकाः ततश्च वेदकोपग्रामकाः । आवत्प्यसंख्यगुणिताः अतस्त-
गुणहीनकाः क्रमशः ॥

संख्यातावलिगणितं भागिसत्पट्ट पत्त्यप्रमितं क्षायिकसम्यग्दृष्टिगन्तुं प ५ मा क्षायिक-
६७

सम्यग्दृष्टिगन्तुं नोडलु वेदकसम्यग्दृष्टिगन्तुमुपग्रामसम्यग्दृष्टिगन्तुं क्रमविबभावत्प्यसंख्यातगुणिक-

१५ प्रमाणरुमसंख्यातगुणहीनरुमप्यह वे ५ ७ उ = ५

२१ ७ २१ ७

यदि वर्षपृथक्त्वे क्षायिकसम्यग्दृष्टयः संख्याताः सौधर्मद्वये उत्तरवन्ते तर्हि संख्यातपत्त्यस्थितिके कियं
इत्यणुपाते त्रैराशिके कृते प्रवर्षं ७ फ क्षा = १। ६ ५ १ लब्धाः ॥६५७॥

८

संख्यातावलिभनपत्त्यमात्रकाः क्षायिकसम्यग्दृष्टयो भवन्ति प । तेभ्यः वेदकोपग्रामसम्यग्दृष्टयः क्रमेण

२१

आवत्प्यसंख्यातगुणितासंख्यातगुणहीना भवन्ति । वे = ५ ७ उ = ५ ॥६५८॥

२१ ७ २१ ७

२० सम्यक्त्वमार्गणयोः जीवोकी संख्या तीन गायत्र्योसे कहते हैं—

यदि वर्षपृथक्त्वं कालमें सौधर्मपुगलमें क्षायिक सम्यग्दृष्टि संख्यात उत्पन्न होते हैं तो संख्यात पत्त्यकी स्थितिमें किये उत्पन्न होते हैं ऐसा त्रैराशिक करनेपर प्रमाणराशि वर्षपृथक्त्व, फलराशि संख्यात जीव और इच्छाराशि संख्यात पत्त्य । सो फलराशिसे इच्छाराशिको गुणा करके उसमें प्रमाणराशिसे भाग देनेपर जो लब्ध आया वह कहते हैं ॥६५७॥

२५ संख्यातआवलीसे भाजित पत्त्यप्रमाण क्षायिकसम्यग्दृष्टि होते हैं । क्षायिकसम्यग्दृष्टियों की संख्याको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणा करनेपर वेदकसम्यग्दृष्टियोंकी संख्या होती है । तथा क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणे हीन उपग्रामसम्यग्दृष्टि होते हैं ॥६५८॥

भागमात्रमवकं स ११-१ आस्रवपदात्थं समयप्रवद्धप्रमाणमवकं स ० संवरद्रव्यं समयप्रवद्ध-
प्रमितमवकं। स ०। निज्जराद्रव्यमिति स ० वंघद्रव्यं समयप्रवद्धमवकं। ॥ ० मोक्षद्रव्यं
१२।६४
५।८५
००

द्वयद्वंगुणहानिप्रमितमवकं स ० १२-१ संवृष्टिः—

सामान्यजीव १६

अजी=सा

सं० स ०

३

=

१६ स

पु स ० १२।१

मोक्ष सं ० १२

०

पाप ० १२-१

आस्र स ०

सं० स ०

निज्जं स ० १२=६४

५।८५।

०

५ पुण्यजीव ० ५००४
१११४

पापजीव १३ =

अजीवपापं द्वयद्वंगुणहानिसंख्यातबहुभागः स ० १२-१ आस्रवपदात्थं समयप्रवद्धः स ०। संवरद्रव्यं
समयप्रवद्धः स ०। निज्जराद्रव्यमेवावत्- स ० १२-१ ६४ वंघद्रव्यं समयप्रवद्धः स ०। मोक्षद्रव्यं
४ ५ ८५
०

किंचिद्रूपद्रव्यगुणहानिः स ० १२-१ ॥६५५॥

- १० समय प्रवद्धोंमें-से संख्यातवें भाग अजीवपुण्यका परिमाण है। संसारी राशियों-से मिश्रको
अपेक्षा कुछ अधिक पुण्यजीवोंके प्रमाणको घटानेसे पापजीवोंका प्रमाण होता है। देह पुण्य-
हानिप्रमाण समयप्रवद्धोंमेंसे संख्यात बहुभाग अजीवपापका परिमाण है। आस्रव पदा-
समयप्रवद्ध प्रमाण है। संवर द्रव्य समयप्रवद्ध प्रमाण है। निज्जराद्रव्य गुणधेनि निज्जरा-
वत्कृष्ट द्रव्यप्रमाण है। वंघद्रव्य समयप्रवद्धप्रमाण है। मोक्षद्रव्य कुछ कम देह गुणहानि-
१५ प्रमाण है ॥६५५॥

विगहगदिमावण्णा केवलिनो समुग्घदो अजोगी य ।

सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारया जीवा ॥६६६॥

विग्रहगतिमापन्नाः केवलिनः समुद्घातवन्तोऽयोगी च सिद्धाश्चानाहाराः शेषा आहारा जीवाः ॥
विग्रहगतियं पोद्दि जीवंगत्तु प्रतरलोकपूरणसमुद्घातसयोगकेवलिगत्तुमयोगकेवलिगत्तु
सिद्धपरमेष्ठिगत्तुमनाहारकमप्यह । शेषजीवंगत्तेनितोऽयनितुमाहारकरेयप्यह । समुद्घातमेनितो बो
येद्दपह ।

वेपणकसायवेगुब्बियो य मरणंतियो समुग्घादो ।

तेजाहारो छट्ठो सत्तमओ केवलीणं तु ॥६६७॥

वेदनाकषायवेगुब्बिकाश्च मारणांतिकः समुद्घातश्च । तेजः आहारः षष्ठः सप्तमः
केवलिनां तु ॥

वेदनासमुद्घातमे'दुं कषायसमुद्घातमे'दुं वेगुब्बिकसमुद्घातमे'दुं मारणांतिकसमुद्घातमे'दुं
तेजससमुद्घातमे'दुमाहारकसमुद्घातमे'दुं केवलिसमुद्घातमे'दुं वितु सप्तसमुद्घातंगत्तुपु ।

अनंतरं समुद्घातमे'दुवेने'दोडे येद्दवपं :—

मूलसरीरमच्छेदिय उत्तरदेहस्स जीवपिंडस्स ।

णिग्गमणं देहादो होदि समुग्घादणामं तु ॥६६८॥

मूलशरीरमत्यक्त्वा उत्तरदेहस्य जीवपिंडस्य । निग्गमनं देहाद् भवति समुद्घातनाम तु ॥

मूलशरीरमं विद्धे काम्मणतेजसोत्तरदेहवज्जीवप्रवेशप्रचयकके शरीरवि पोरणलो निर्गमनं
समुद्घातमे'दुदवकं

२०

विग्रहगत्याश्रितचतुर्गतिजीवाः प्रतरलोकपूरणसमुद्घातपरिणतसयोगिजिनाः अयोगिजिनाः सिद्धाश्च
अनाहारा भवति । शेषजीवाः सर्वेऽपि आहारा एव भवन्ति ॥६६९॥ समुद्घातः कतिथा ? इति चेद्—
समुद्घातः वेदनाकषायवेगुब्बिकमारणान्तिकतैजसाहारककेवलिसमुद्घातभेदात् सप्तथा भवति ॥६६९॥
स च किरूपः ? इति चेद्—

मूलशरीरमत्यक्त्वा काम्मणतैजससुत्तरदेहमुक्तस्य जीवप्रदेशप्रचयस्य शरीराद्बहिर्निर्गमनं इ

२५ समुद्घातो नाम भवति ॥६६८॥

विग्रहगतिमे'आये चारो गतियोके जीव, प्रतर और लोकपूरण समुद्घात करतेवाते
सयोगी जिन, और सिद्ध अनाहारक हैं । शेष सब जीव आहारक हैं ॥६६९॥

समुद्घातके भेद कहते हैं—

वेदना, कषाय, चिक्रिया, मारणान्तिक, तेजस, आहार और केवली समुद्घातके भेदे

३० समुद्घात सात प्रकारका होता है ॥६६७॥

समुद्घातका स्वरूप कहते हैं—

मूल शरीरको छोड़कर काम्मण और तेजस रूप उत्तर शरीरसे मुक्त जीवके प्रवेश
समुद्घात शरीरसे बाहर निकलना समुद्घात है ॥६६८॥

३५ १. व ५३ ५० ।

विग्गहगदिमावण्णा केवलिनो समुग्घदो अजोगी य ।

सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारया जीवा ॥६६६॥

विग्रहगतिमापन्नाः केवलिनः समुद्घातव्यतोऽप्योगो च सिद्धाश्चानाहाराः शेषा आहारका
जीवाः ॥

- ५ विग्रहगतियं पोद्दि व जीवंगळु प्रतरलोकपूरणसमुद्घातसयोगकेवलिगळुमयोगकेवलिगळु
सिद्धपरमेष्ठिगळुमनाहारकमप्यव । शेषजीवंगळेनितोळुयनितुमाहारकरेयप्यव । समुद्घातमेनितो
पेळ्ळपव ।

वेयणकसायवेगुब्बियो य मरणंतियो समुग्घादो ।

तेजाहारो छट्ठो सचमओ केवलीणं तु ॥६६७॥

- १० वेदनाकषायवेगुब्बिकाश्च मारणांतिकः समुद्घातश्च । तेजः आहारः षष्ठः सत्तक
केवलिनो तु ॥

वेदनासमुद्घातमे'डुं कषायसमुद्घातमे'डुं वैगूब्बिकसमुद्घातमे'डुं मारणांतिकसमुद्घातमे'डुं
तेजससमुद्घातमे'डुमाहारकसमुद्घातमे'डुं केवलिसमुद्घातमे'डुं वितु समसमुद्घातंगळुपुवु ।

अनंतरं समुद्घातमे'वुदेने'दोरे पेळ्ळपं :—

- १५ मूलशरीरमछंडिय उचरदेहस्स जीवपिंडस्स ।

णिग्गमणं देहादो होदि समुग्घादणामं तु ॥६६८॥

मूलशरीरमत्यक्त्वा उत्तरदेहस्य जीवपिंडस्य । निर्गमनं देहाद् भवति समुद्घातनाम तु ॥

मूलशरीरमं बिड्ढे काम्मणतेजसोत्तरदेहवजीवप्रवेशप्रचयवके शरीरदि पोरणो निर्गमनं
समुद्घातमे'डुववक्कं

- २० विग्रहगत्याधितचतुर्गतिजीवाः प्रतरलोकपूरणसमुद्घातपरिणतसयोगिजिनाः अयोगिजिनाः सिद्धा
अनाहारा भवन्ति । शेषजीवाः सर्वेऽपि आहारका एव भवन्ति ॥६६९॥ समुद्घातः कैतिथा ? इति चेदाह—
समुद्घातः वेदनाकषायवैगूब्बिकमारणान्तिकतजसाहारककेवलिसमुद्घातमे'डुत्वा सत्यथा भवति ॥६७०॥
स च किप्पः ? इति चेदाह—

- २५ मूलशरीरमत्यक्त्वा काम्मणतेजसोत्तरदेहयुक्तस्य जीवप्रवेशप्रचयस्य शरीराद्बहिर्निर्गमनं तु
समुद्घातो नाम भवति ॥६७१॥

विग्रहगतिमे'आये चारो' गतियोके जीय, प्रतर और लोकपूरण समुद्घात करनेवाते
सयोगी जिन, और सिद्ध अनाहारक हैं । शेष सब जीव आहारक हैं ॥६६९॥
समुद्घातके भेद कहते हैं—

- १० वेदना, कषाय, विक्रिया, मारणान्तिक, तेजस, आहार और केवली समुद्घातके भेदे
समुद्घात सात प्रकारका होता है ॥६६७॥

समुद्घातका स्वरूप कहते हैं—

मूल शरीरको छोड़कर काम्मण और तेजस रूप उत्तर शरीरसे युक्त जीवके प्रवेश
समुद्घात शरीरसे बाहर निकलना समुद्घात है ॥६६८॥

विग्गहगदिमावण्णा केवल्लिणो समुग्घदो अजोगी य ।
सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारया जीवा ॥६६६॥

विग्रहगतिमापन्नाः केवलिनः समुद्धातयन्तोऽयोगो च सिद्धाश्चानाहाराः शेषा आहारस्य

जीवाः ॥

विग्रहगतियं पोद्दिव जीवंगळु प्रतरलोकपूरणसमुद्धातसयोगकेवल्लिणमयोगकेवल्लिणं

सिद्धपरमेष्ठिगळुमनाहारकसम्पद । शेषजीवंगळेनितोऽव्यनितुमाहारकरेयम्पद । समुद्धातमनितोऽव्य

पेळदपद ।

वैयणकसायवेगुव्वियो य मरणंतियो समुग्घादो ।
तेजाहारो छट्ठो सत्तमओ केवलीणं तु ॥६६७॥

वेदनाकपायवैगुव्विकादय मारणांतिकः समुद्धातद्वच । तेजः आहारः षष्ठः सत्तम

केवल्लिणो तु ॥

वेदनासमुद्धातमे बुं कपायसमुद्धातमे बुं वैगुव्विकसमुद्धातमे बुं मारणांतिकसमुद्धातमे बुं

तैजससमुद्धातमे बुं माहारकसमुद्धातमे बुं केवल्लिसमुद्धातमे बुं वितु सत्तसमुद्धातंगळुपुत्तु ।

अनंतरं समुद्धातमे बुदेने बोडे पेळवणं :—

मूलसरीरमछंडिय उत्तरदेहस्स जीवपिंडस्स ।
णिग्गमणं देहादो होदि समुग्घादणामं तु ॥६६८॥

१५

मूलशरीरमत्यक्त्वा उत्तरदेहस्य जीवपिंडस्य । निगमनं देहाद् भवति समुद्धातनाम तु ॥

मूलशरीरमं विड्डे काम्मणंतैजसोत्तरदेहवज्जीवप्रवेशप्रचयक्के शरीरदि पोरगलो नित्तमं

समुद्धातमे बुववकुं

२०

विग्रहगपाथितचतुर्गतिजीवाः प्रतरलोकपूरणसमुद्धातपरिणतसयोगिनिनाः अयोगिनिनाः विज्ञात

अनाहारा भवति । शेषजीवाः सर्वेऽपि आहारका एव भवन्ति ॥६६९॥ समुद्धातः कैविया ? इति चेदाह—

समुद्धातः वेदनाकपायवैगुव्विकमारणान्तिकत्वेजसाहारककेवल्लिसमुद्धातमेवात् सत्तया भवति ॥६७०॥

ए च किरुणः ? इति चेदाह—

मूलशरीरमत्यक्त्वा काम्मणंतैजसोत्तरदेहयुक्तस्य जीवप्रवेशप्रचयस्य शरीरद्वर्हिनिगमनं द

२५ समुद्धातो नाम भवति ॥६७१॥

विग्रहगतिमे आये चारो गतियोके जीव, प्रतर और लोकपूरण समुद्धात करनेवाते

सयोगी जिन, और सिद्ध अनाहारक हैं । शेष सब जीव आहारक हैं ॥६६९॥

समुद्धातके भेद कहते हैं—

वेदना, कपाय, विद्रिया, मारणान्तिक, तेजस, आहार और केवली समुद्धातके भेद

२० समुद्धात सात प्रकारका होता है ॥६६७॥

समुद्धातका स्वरूप कहते हैं—

मूल शरीरको छोड़कर काम्मण और तेजस रूप उत्तर शरीरसे युक्त जीवके प्रवेश

समुद्धात शरीरसे बाहर निकलना समुद्धात है ॥६६८॥

१५ १. व ५३३ ५० ।

विग्गहगदिमावण्णा केवल्लिणो समुग्घदो अजोमी य ।

सिद्धा य अणाहारा सेसा आहारया जीवा ॥६६६॥

विग्रहगतिमापन्नाः केवलिनः समुद्घातयन्तोऽप्योगो च सिद्धाश्चानाहाराः शेषा आहारस्य जीवाः ॥

- ५ विग्रहगतियं षोड्वि जीवंगत्तु प्रतरलोकपूरणसमुद्घातसयोगकेवलिगत्तुमयोगकेवलिगत्तुं सिद्धपरमेष्ठिगत्तुमनाहारकमप्यह । शेषजीवंगत्तेनिर्तोळवनिनुमाहारकरेप्यह । समुद्घातमेनिर्तोळयेच्छप्यह ।

वेयणकसायवेगुव्वियो य मरणंतियो समुग्घादो ।

तेजाहारो छट्ठो सत्तमओ केवलीणं तु ॥६६७॥

- १० वेदनाकषायवेगुव्विकाश्च मारणांतिकः समुद्घातश्च । तेजः आहारः षष्ठः सत्तमकेवलिनो तु ॥

वेदनासमुद्घातमे'दुं कषायसमुद्घातमे'दुं वैगुण्यकसमुद्घातमे'दुं मारणांतिकसमुद्घातमे'दुं तेजससमुद्घातमे'दुं आहारकसमुद्घातमे'दुं केवलिसमुद्घातमे'दुं धितु सप्तसमुद्घातंगत्तुमु ।

अनंतरं समुद्घातमे'दुनेने'दोडे पेच्छप्यं :—

- १५ मूलसरीरमच्छिद्य उत्तरदेहस्स जीवपिंडस्स ।

णिग्गमणं देहादो होदि समुग्घादणामं तु ॥६६८॥

मूलशरीरमत्यक्त्वा उत्तरदेहस्य जीवपिंडस्य । निर्गमनं देहाद् भवति समुद्घातनाम तु ॥

मूलशरीरं विच्छेदं कर्म्मणतेजसोत्तरदेहवर्जिवप्रवेशप्रचपक्के शरीरं विपोरालो निर्गमनं समुद्घातमे'दुवक्कं

- २० विग्रहगत्याधितचतुर्गतिजीवाः प्रतरलोकपूरणसमुद्घातपरित्तसयोगिजिनाः अयोगिजिनाः विग्रहगत्याहारा भवन्ति । शेषजीवाः सर्वेऽपि आहारका एव भवन्ति ॥६६९॥ समुद्घातः कतिपा ? इति चेदह— समुद्घातः वेदनाकषायवैगुण्यिकमारणान्तिकर्तृजसाहारककेवलिसमुद्घातभेदात् सप्तपा भवति ॥११॥ स च किम् ? इति चेदाह—

मूलशरीरमत्यक्त्वा कर्म्मणतेजसूपोत्तरदेहमुक्तस्य जीवप्रदेशप्रचपस्य शरीरदुर्बहिर्निर्गमनं ॥

- २५ समुद्घातो नाम भवति ॥६७८॥

विग्रहगतिर्निम्न आये पारो गतियोकि जीव, प्रतर और लोकपूरण समुद्घात करनेवाले सयोगो जिन, और सिद्ध अनाहारक हैं । शेष सप्त जीव आहारक हैं ॥६६६॥

समुद्घातके भेद कहते हैं—

- १० वेदना, कषाय, विक्रिया, मारणान्विक, तेजस, आहार और केवली समुद्घातके भेदसे समुद्घात सात प्रकारका होता है ॥६६७॥

समुद्घातका स्वरूप कहते हैं—

मूल शरीरको छोड़कर कर्म्मण और तेजस रूप उत्तर शरीरसे युक्त जीवके निर्गमनं समुद्घात शरीरमे बाहर निकलना समुद्घात है ॥६६८॥

काम्मणकाययोगिगन्धु अनाहारकरपरिमाणमवहुं । तत्राशिविरहितमण्य संसारिरादि
आहारकर परिमाणमवकुमवत्ते दोडे काम्मणकाययोगकालं समयत्रयमवकुं । औदारिकनिष्-
कालमंतम्भुतंमवकुं । तत्कायकालं संख्यातगुणमवकुं । कूडि त्रिसमयाधिकसंख्यातगु-
णितान्तम्भुतंमवकुं ३ मित्रु प्रक्षेपकयोगमवकुमंतगुतं विरलु 'प्रक्षेपक्योगोद्वपूतमिधमि-

२१४

५ प्रक्षेपकाणां गुणको भवेत्सः । येनो सूत्रानिमिषादिवं त्रैराशिकं माडल्पडुगुं । प्र २१।५।

फ १३- । इ स ३ । लब्धमानाहारकर प्रमाणमवकुं । १३- । ३ मतं प्र २१।५। फ १३- । ६

३

२१।५

२१।५ । लब्धमाहारकर प्रमाणमवकुं १३- । २१।५ वैक्रियिकाहारकमज्जं यथायोम्ममि-

३

२१।५

यल्पडुगुं ।

१० काम्मणकाययोगिजीवराशिः अनाहारकपरिमाणं भवति । तद्विरहितसंसारिरादिः आहारकपरिमाणं
भवति । तद्यथा—योगकालः काम्मणस्य त्रिसमयाः । औदारिकमिधस्य अन्तर्मुहूर्तः । औदारिकस्य ततः संख्या-
गुणः । मिलित्वा त्रिसमयाधिकसंख्यातगुणितान्तर्मुहूर्तः । ३- १- "प्रक्षेपयोद्वपूतमिधमिधः प्रक्षेपकान्तं
२१४

गुणको भवेदिति प्र २१।५। फ १३- । इ स ३ । लब्धमानाहारकजीवप्रमाणं १३- ३ पुनः २१।५।

३-

२१।५

फ ११- । इ २१।५ । लब्धमाहारकजीवप्रमाणं १३- । २१।५ वैक्रियिकाहारकपोर्वावागेवं

३-

२१।५

जातम् ॥६७१॥

- १५ योगमार्गणार्थं काम्मणकाय योगियोंका जितना प्रमाण कहा है वतना ही अनाहारकोंका
प्रमाण है । संसारोराशिमें-से अनाहारकोंका प्रमाण घटानेपर आहारकोंका परिमाण होता
है । जो इस प्रकार है—काम्मणयोगका काल तीन समय है । औदारिक मिध काययोगका
काल अन्तर्मुहूर्त है । औदारिक काययोगका काल उससे संख्यातगुणा है । सब मिलानेपर
तीन समय अधिक संख्यात गुणित अन्तर्मुहूर्त फल होता है । करण सूत्रमें कहा है प्रक्षेपको
२० मिलाकर मिले हुए पिण्डसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उसे प्रक्षेपकसे गुणा करनेपर अपना
अपना प्रमाण होता है । सो चक तीनो योगोंके कालोंको मिलानेपर तीन समय अधिक
संख्यात अन्तर्मुहूर्त फल हुआ । इसका भाग कुछ हीन संसारोराशिमें देनेपर जो प्रमाण
आवे उसे तीनसे गुणा करनेपर अनाहारक जीवोंका प्रमाण होता है । शेष सब संसारो
आहारक जीव हैं । वैक्रियिक और आहारकवालोंका यथायोम्य जानना । उनके अन्त होनेसे
२५ यही उनकी मुख्यता मही है ॥६७१॥

उपयोगाधिकारः ॥२०॥

अनंतरमुपयोगाधिकारम् पेञ्चपं :—

वस्तुनिमित्तं भावो जातो जीवस्स जो दु उवजोगो ।

सो दुविहो णायब्बो सायारो चेव णायारो ॥६७२॥

- ५ वस्तुनिमित्तं भावो जातो जीवस्य वस्तुपयोगः । स द्विविधो जातव्यः साकारवचनाकारः ॥
वस्तुतो गुणपर्यायावस्मिन्निति वस्तु—जेयपदार्थस्तदग्रहणाय प्रवृत्तं ज्ञानं वस्तुनिमित्तं
भावः अर्थग्रहणव्यापार इत्यर्थः । अर्थप्रकाशननिमित्तमाणि जातः प्रवृत्तमप्य जीवस्य जीव
वस्तु आबुद्धो भावः परिणामः । क्रियाविशेषमनुपयोगमेव बुद्धु, अबु मते साकारोपयोगमेव मुक्क-
कारोपयोगमेव बु द्विप्रकारमेवे जातव्यमवकु ।

अनंतर साकारोपयोगमेव प्रकारमेव पेञ्चपं :—

- १० णाणं पंचविहंपि य अण्णाणतियं च सागरुवजोगो ।

चतुदंसणमणगारो सच्चे तल्लवखणा जीवा ॥६७३॥

ज्ञानं पंचविधमपि च अज्ञानप्रयं च साकारोपयोगः । चतुर्दशमनाकारः सर्वे तल्लज्जा
जीवाः ॥

- १५ मतिभूतावधिमनःपर्ययकेवलमेव सम्यग्ज्ञानपंचकमुं कुमतिकुभृतविभंगमेव मुक्क उर-
ज्ञानमुं साकारोपयोगमेव बुद्धकुं । चतुर्दशमचक्षुवर्शनमवधिदर्शनं केवलदर्शनमेवो नाल्लुं दर्शनम-
नुपयोगमेव बुद्धकुं । चतुर्दशमचक्षुवर्शनमवधिदर्शनं केवलदर्शनमेवो नाल्लुं दर्शनम-

मुक्कतः मुक्कतः सेव्यः मुक्कतः मुक्कतः सः ।

आप्तार्हन्त्यपदो वचात् स्वकोयां मुक्कतविद्यम् ॥२०॥

अप्योपयोगाधिकारमाह—

- २० वस्तुतः गुणपर्यायो अस्मिन्निति वस्तु जेयपदार्थः—तदग्रहणाय जातः—प्रवृत्तः यो भावः—परिणाम
क्रियाविशेषः जीवस्य स उपयोगो नाम । स च साकारोऽज्ञाकारश्चेति द्वेषा जातव्यः ॥६७२॥ अथ सागरे
पयोगोऽपि इत्याह—

मतिभूतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानानि कुमतिकुभृतविभङ्गाज्ञानानि च साकारोपयोगः । वस्तुवस्तु-

- २५ उपयोगाधिकारं कहेते हे—

त्रिसमं गुण और पर्यायोका वास हे वह वस्तु अर्थात् जेय पदार्थ हे । उसको प्रत्य
करनेके लिए जीवका जो भाव अर्थात् परिणाम होता है वह उपयोग है । वह दो प्रकारका
है—साकार और अनाकार ॥६७२॥

आगे इनके भेद कहेते हैं—

मति, ध्रुव, अवधि, मनःपर्यय और केवल ये पाँच ज्ञान तथा कुमति, कुभृत, विभंग ये

ज्ञानोपयोगयुक्तकण्ठ परिमाणं ज्ञानमार्गणेयोऽप्येच्छतेत्येकम् । दर्शनोपयोगिगण परिमाणं दर्शनमार्गणेयोऽप्येच्छ क्रममेव कुमवेतैर्बोद्धे कुमतिज्ञानिगण किंचिद्वन संसारिराशिप्रमानम् ।

III

१३—कुभृतज्ञानिगणं निबरेयकम् । १३—॥ विभंगज्ञानिगण = १ मतिज्ञानिगण ५ भूतज्ञानिगण
४।६५ = १

निगण ५ भवधिज्ञानिगण ५० मनःपर्ययज्ञानिगण १ केवलज्ञानिगण १ तिस्रं विभंग
१ ज्ञानिगण—१५ मनुष्यविभंगज्ञानिगण १। नारकविभंगज्ञानिगण—२— देवविभंगज्ञानिगण

= १ गतिः पुराणनिगण । प्र । वि । ति । च । पा । ४ । का । ४ । इ । च । पं । २ । लब्धम्
४।६५ = १

॥ १३३॥ गिगणं ज्ञानमार्गणम् । दर्शनोपयोगिगणं दर्शनमार्गणम् भवेत् । तद्यथा—कुमतिज्ञानिगण
III

१३—कुभृतज्ञानिगणं निबरेयकम् । १३— विभंगज्ञानिगण = १ । मतिज्ञानिगण ५ भूतज्ञानिगण
४।६५ = १

५०—मनःपर्ययज्ञानिगण १ केवलज्ञानिगण १ तिस्रं विभंगज्ञानिगण—१५ मनुष्यविभंगज्ञानिगण
१०—नारकविभंगज्ञानिगण—२— देवविभंगज्ञानिगण

II

१०—नारकविभंगज्ञानिगण—२— देवविभंगज्ञानिगण = १ । गतिः पुराणनिगण । प्र । वि । ति । च । पा । ४ । का । ४ । इ । च । पं । २ । लब्धम्
४।६५ = १

ओघादेशप्ररूपणाधिकारः ॥२१॥

अनंतरमुक्तविदातिप्ररूपणेगळं ययासंभवमाणि गुणस्थानंगळोळं मार्गांशास्थानंगळोळं
प्रत्येकं पेक्षदपं—

गुणजीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणुवजोगो ।
जोग्गा परुविदव्वा ओघादेसेसु पचेयं ॥६७७॥
गुणजीवाः पर्याप्तियः प्राणाः संज्ञाश्च मार्गाणां उपयोगे योग्याः प्ररूपयितव्याः बोधार्थेन
प्रत्येकं ॥

गुणस्थानमार्गांशास्थानंगळोळं प्रत्येकं । गुणस्थानंगळं जीवसमासेगळं पर्याप्तिगळं अं
गळं संज्ञेगळं मार्गांणेगळमुपयोगंगळमे बोविदातिप्रकारंगळं प्ररूपितत्पद्वपु । ययायोग्यमाणि ।
अदे ते दोडे—

१० चउ पण चोदस चउरो गिरयादिसु चोददसं तु पंचक्खे ।
तसकाये सेदिदियकाये मिच्छं गुणट्ठानं ॥६७८॥
चतुः पंच चतुर्दश चत्वारि नरकाविषु चतुर्दश तु पंचाशे । तसकाये शेवेन्द्रियकाये निम्न
बुद्धिगुणस्थानं ॥

नरकतिथ्यंगमनुष्यदेवगतिगळोळं ययासंख्यमाणि नाहकुमय्यवुं पविनालकुं नाहकुं गुणस्थानं
गळपुववे ते दोडे—नरकगतिपोळं मिथ्याबुद्धिसासावनमिधासंयतगुणस्थानचतुष्टयमरकुं । तियंनं
११ तियोळु मिथ्याबुद्धिसासावनमिधासंयतगुणस्थानपंचकमरकुं । मनुष्यगतिपोळु सामन्
नमिनंमत्सुरापीछीज्जन्तुमानादिबैभवः ।
हृत्पाठित्तजो जीवाह्वान्तः शासवत् पदम् ॥

अधोतरमभिषेयं ज्ञापयति—

२० उत्तविदातिप्ररूपणानु गुणस्थानमार्गांशास्थानयोः प्रत्येकं गुणस्थानानि जीवसमासाः पर्याप्तयः अं
संज्ञाः, मार्गाणाः उपयोगाश्च यथायोग्यं प्ररूपयितव्याः ॥६७७॥ तद्यथा—
नारकादिगतिषु क्रमेण गुणस्थानानि मिथ्याबुद्ध्याद्योनि चत्वारि पञ्च चतुर्दश चत्वारि भवन्ति ।
इन्द्रियमार्गाणां पञ्चेन्द्रिये तु पुनः कायमार्गाणां तसकाये च, चतुर्दश, शेवेन्द्रियकायेषु एकं मिथ्याबुद्धि
स्थानं । जीवसमासास्तु नरकगळो संज्ञिपर्याप्तियुत्पपप्राप्ती द्वौ । तियंगवतो चतुर्दश । मनुष्यगतौ छत्तिगंगळ

२१ यीस प्ररूपणाओंका कयन करनेके पश्चात् जो कुछ अभिषेय है उसे कहते हैं—
ऊपर कहो यीस प्ररूपणाओंमें-से गुणस्थान और मार्गांशास्थानमें गुणस्थान, जं-
सनास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा और उपयोगोंका यथायोग्य प्ररूपणा करना चाहिये ॥६७७॥
वही कहते हैं—
गतिनांगणामें कमसे गुणस्थान, मिथ्याबुद्धि आदि नरक गतिमें चार, त्रियंगगतिमें
पाँच, मनुष्यगतिमें चौदह और देवगतिमें चार होते हैं । इन्द्रियमार्गाणामें, पंचेन्द्रियमें, और
कायमार्गाणामें तसकायमें चौदह गुणस्थान होते हैं । शेष एकेन्द्रियादिमें और स्थावरकायमें

मज्झिमचउमणवयणे सण्णिप्पहुडिं तु जाव खीणोत्ति ।
सेसाणं जोगिच्छि य अणुमयवयणं तु वियलादो ॥६७९॥

मध्यमचतुर्म्मनोवचनेषु संज्ञिप्रभृतिस्तु यावत् । शीणकषायस्तावत्पर्यंतं दोषाणां योगिपर्यंतं
च अनुभयवचनं तु विकलात् ॥

मनोवचनयोगंगच्छोऽत्र मध्यमंगच्छप्प असत्यमनोयोगमुभयमनोयोगमसत्यवचनयोगमुभयवचन-
योगमैत्रो नात्करोळं मिथ्यादृष्टिसंज्ञिपंचेंद्रियमादियाणि शीणकषायगुणस्यानपप्यंतमप्य पनरेत्तु
पनरेत्तु गुणस्यानंगच्छोर्मां दो वे संज्ञिपंचेंद्रियपप्यामिजीवसमासंगच्छो प्रत्येकमप्युत्तु । दोषसत्यमनोयोग-
दोऽन्मुभयमनोयोगदोऽं सत्यवचनयोगदोऽं संज्ञिपंचेंद्रियपप्यामिमिथ्यादृष्टिगुणस्यानमादियाणि शोऽं
सयोगिक्वेवलिगुणस्यानपप्यंतं पदिमूर्धं गुणस्यानंगच्छं पंचेंद्रियसंज्ञिपप्यामिजीवसमासंगच्छो शोऽं
१० प्रत्येकमप्युत्तु । अनुभयवचनयोगदोऽं विकलत्रयमिथ्यादृष्टिगुणस्यानमादियाणि सयोगिक्वेवलिगुण-
स्यानपप्यंतमाव पदिमूर्धं गुणस्यानंगच्छं द्वौद्रियशौद्रियचतुरिद्रियसंज्ञिपंचेंद्रियासंज्ञिपंचेंद्रियपप्यामि-
जीवसमासंगच्छमद्वप्युत्तु :— मनोयोग

स । अ । उ । अ
गु १३ । १२ । १२ । १३
जी- १ । १ । १ । १ ।

वाय्योग
स । अ । उ । अ
१३ । १२ । १२ । १३
१ । १ । १ । १ ।

ओरालं पज्जत्ते यावरकायादि जाव जोगिच्छि ।
तम्मिस्समपज्जत्ते चदुगुणठाणेसु णियमेण ॥६८०॥

औदारिकः पप्यामि त्वावरकायादि यावद्योगिपर्यंतं । तन्मिश्रः अपप्यामि चतुर्गुणस्यानेषु
नियमेन ॥

औदारिककाययोगमैत्रोद्रियस्यावरकायपप्यामिमिथ्यादृष्टिगुणस्यानमादियाणि सयोगिक्वेवलि-
पर्यंतमाव पदिमूर्धं गुणस्यानंगच्छवकुमल्लि एकेंद्रियवावरसूक्ष्मद्वौद्रियशौद्रियचतुरिद्रियसंज्ञिपंचेंद्रिया-
संज्ञिपंचेंद्रियपप्यामिजीवसमासंगच्छमेलप्युत्तु । ७ । औदारिकमिधयोगमपप्यामिचतुर्गुणस्यानंगच्छो

२० मध्यमेषु असत्योभयमनोवचनयोगेषु चतुर्षु संज्ञिमिथ्यादृष्ट्यादीनि शीघ्ररूपायान्तानि द्वावत् । दु-द्व-
सत्यानुभयमनोयोगयोः सत्यवचनयोगे च संज्ञिगर्भापमिथ्यादृष्ट्यादीनि सयोगायान्तानि त्रयोदश गुणस्यानानि
भरन्ति । जीवसमासः संज्ञिगर्भाप एकैः । अनुभयवचनयोगे गुणस्यानानि विकलत्रयमिथ्यादृष्ट्यादीनि
त्रयोदश । औदारिकमासः द्वित्रिचतुरिद्रियसंज्ञिपप्यान्ताः पञ्च ॥६७९॥

औदारिककाययोगः एकेंद्रियवावरकायपप्यामिमिथ्यादृष्ट्यादिसयोगायान्तात्रयोदशगुणस्यानेषु भरति ।
मध्यम अर्थात् असत्य और उभय मनोयोग और वचन योग इन चारमें संज्ञो मिथ्या

दृष्टिसे लेकर शीणकषाय पर्यंत चारह गुणस्यान होते हैं । तथा सत्य और अनुभय मनोयोग
और सत्यवचनयोगमें संज्ञिपर्याप्त मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली पर्यंत चारह गुणस्यान
होते हैं । जीवसमास एक संज्ञिपर्याप्त ही होता है । अनुभयवचनयोगमें विकलत्रय
मिथ्यादृष्टिसे लेकर चारह गुणस्यान होते हैं । औदारिककाययोगमें एकेंद्रिय
औदारिक काययोग एकेंद्रिय त्वावरकाय पर्याप्त मिथ्यादृष्ट्यासे लेकर सयोगकेवली
पर्यंत चारह गुणस्यान होते हैं । औदारिक निमज्जायोग नियमसे अपर्याप्त अवस्थाने

काययोगदोऽत्र पंचेन्द्रियसंज्ञिपय्यामि जीवसमाप्तमो देयकं । तन्मिधदोऽत्र संज्ञिपंचेन्द्रियनिवृत्त्यप्यामि-
जीवसमाप्तमो देयकं वै मि
४। ३।
१। १।

आहारो पञ्चचे इदरे खलु होदि तस्मिन् मिस्तो दु ।
अंतोमुहृत्तकाले छहृगुणे होदि आहारो ॥६८३॥

आहारः ॥

आहारककाययोगसंज्ञिपंचेन्द्रियपय्यामि पृष्ठगुणस्थानवर्त्ति ॥ तस्य तस्य तस्य नोऽत्र कुमाहारककाययोग-
कालमुमुहृत्तद्विदमं जपन्य विदमं तस्मिन्मूर्तकालबोद्धेयकं । तन्मिधकाययोगं तद्गुणस्थान-
बोद्धे प्रमत्तगुणस्थानबोद्धे अंतर्मुहृत्तकालबोद्धेयकं । तन्मिधकाययोगं तद्गुणस्थान-
१० गुणस्थानमुनो वै जीवसमाप्तगुणस्थानं । तन्मिधकाययोगं तद्गुणस्थानमुनो वै जीवसमाप्तगुणस्थानं
आहारककाययोगदोऽत्र गु १ । मि गु १
जी १ । जों १

ओरालियमिस्सं वा चउगुणठाणेसु होदि कम्मदयं ।
चदुगदिविगहकाले जोगिस्स य पदरलोपूरणगे ॥६८४॥

ओरालियमिस्सं ॥

ओरालियमिधकाययोगबोद्धेयकं चतुर्गुणस्थानं यदोऽत्र कम्मर्णकाययोगमसं मत्तु
चतुर्गुणस्थानबोद्धेयकं तस्योपकेयलिय प्रतरलोपूरणसमुत्पातकालबोद्धेयकं कारणमसि
कामर्णकाययोगदोऽत्र निम्पाट्टिसादादनात्तस्यतस्मिन्मृष्टि समुत्पातस्योपिभूतारकरेयं पुन-

विधययोगः मिधयुपवने तु न होदि कारणान् देवमारकमिधकाययोगादनात्तस्यतस्मिन्मृष्टि समुत्पातस्योपिभूतारकरेयं पुन-
२० वयोः क्रमेण क्षत्रियैः तन्निवृत्त्यापिः एकेकः ॥६८२॥
आहारककाययोगः संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-
१० एतस्य चतुर्गुणस्थाने चतुर्गुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-
गुणस्थान जीवसमाप्तः स एव एकेकः ॥६८३॥
ओरालियमिधकाययोगः संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-

मिधकाययोगः संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-
१० संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-
आहारककाययोगः संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-
१० संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-

आहारककाययोगः संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-
१० संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-
आहारककाययोगः संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-
१० संज्ञिपंचेन्द्रियगुणस्थाने जपन्योऽत्र अंतर्मुहृत्तकाले एव भवति । तन्मिधकाय-

कपायमार्गणयोऽङ्गं क्रोषमानमायाकपायत्रयगन्तु स्यावरकायमिष्यादृष्टिगुणस्यानं
मोदलोऽनिवृत्तिकरणगुणस्यानद्वित्रिचतुस्रभागपर्यन्तमात्र गुणस्याननयकबोद्धव्यु। अतु कारण-
मात्रं क्रोधादिकपायत्रययोऽङ्गं प्रत्येकमो भूतमो भूतं गुणस्यानगन्तुमेकैन्द्रियवावरसूक्ष्मद्वित्रिचतुस्र-
संज्ञिपंचेंद्रिय संज्ञिपंचेंद्रियपण्यामिष्यादृष्टिगुणस्यानमादियागि सूक्ष्मसांपरायगुणस्यानपर्यन्तमात्र गुण-
कपायबोद्धमंतं स्यावरकायमिष्यादृष्टिगुणस्यानमादियागि सूक्ष्मसांपरायगुणस्यानपर्यन्तमात्र गुण-
स्यानदशकम् क्रोधादिगन्तुं पेरुतं चतुर्दशजीवसमासेगन्तुमप्युवेदुं
परमागमदोऽरिपल्लवुवु।

क्रो। मा। मा। लो
९। ९। ९। १०
१४। १४। १४। १४

थावरकायपद्दुडो मदिसुदअण्णाणं विभंगो दु।
सण्णोपुणपद्दुडो सासणासम्मोत्ति णापव्वो ॥६८७॥

१० स्यावरकायप्रभृति मतिभुताज्ञानद्वयं विभंगस्तु। संज्ञोपपूर्णप्रभृति सासादनसम्यग्दृष्टिपर्यन्तं
ज्ञानमार्गणयोऽङ्गं मतिभुताज्ञानद्वयं स्यावरकायमिष्यादृष्टिप्रभृति सासादनसम्यग्दृष्टिगुण-
स्यानपर्यन्तमेरुदुगुणस्यानदोऽङ्गपुवु। एकैन्द्रियवावरसूक्ष्मद्वित्रिचतुः पंचेंद्रियसंप्रसंज्ञिपण्यामि-
ष्यामिजीवसमासेगन्तु प्रत्येकं पविनात्कु पविनात्कुमप्युवु। विभंगज्ञानसुं संज्ञिपूर्णमिष्यादृष्टिपारि-
१५ यागि सासादनसम्यग्दृष्टिपर्यन्तमेरुदुगुणस्यानदोऽङ्गपुवु। संज्ञिपंचेंद्रियपण्यामिजीवसमासेयो देव-
पुवु। एवंतु परमागमदोऽरिपल्लवुवु।

कपायमार्गणयोऽङ्गं क्रोषमानमायाः स्यावरकायमिष्यादृष्ट्याचनिवृत्ति करणद्वित्रिचतुर्भागावन्तम्। लोभः पुनः
सूक्ष्मसांपरायगन्तुम्। तेन क्रोषत्रये गुणस्यानानि नव लोभे दश ज्ञेयानि। जीवसमासाः सर्वत्र चतुर्दश ॥६८७॥
ज्ञानमार्गणयोऽङ्गं मतिभुताज्ञानद्वयं स्यावरकायमिष्यादृष्ट्यादिसासादनान्तं नावस्थं तेन तत्र गुणस्याने
२० द्वे। जीवसमासाश्चतुर्दश। पुनः विभङ्गज्ञानं संज्ञिपूर्णमिष्यादृष्ट्यादिसासादनान्तं तत्र गुणस्याने द्वे।
जीवसमासाः संज्ञिपण्यामि एवैकः ॥६८७॥

कपायमार्गणामें क्रोष, मान, माया, स्यावरकायमिष्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणके
क्रमसे दूसरे, तीसरे और चौथे भागपर्यन्त होते हैं। लोभ सूक्ष्मसांपराय गुणस्यानपर्यन्त
होता है। इससे क्रोष, मान, मायामें जो और लोभमें दस गुणस्यान होते हैं। जीवसमास
२५ सर्वत्र चौदह होते हैं ॥६८६॥
ज्ञानमार्गणामें कुमति, कुभुतज्ञान स्यावरकायमिष्यादृष्टिसे लेकर सासादनपर्यन्त
ज्ञानना। इससे उनमें दो गुणस्यान होते हैं। जीवसमास चौदह होते हैं। विभंगज्ञान संज्ञि-
पण्यामिष्यादृष्टिसे लेकर सासादन पर्यन्त जानना। इससे उसमें भी दो गुणस्यान होते
हैं। जीवसमास एक संज्ञिपण्यामि ही होता है ॥६८७॥

१. मं दोलेकल्लवुवु।

- संयतमुमवकुमल्लि संजिपंचेद्रियपण्यामिजीवसमासमो देयक्कुं । सामायिकच्छेदोपस्थापनसंयमग्रे-
रदुं प्रत्येकं प्रमत्त संयतगुणस्थानमावियागऽनिवृत्तिकरणगुणस्थानपण्यंतं नाल्लुं नाल्लुं गुणस्थानं-
च्छप्पुवल्लि संजिपंचेद्रियपण्यामिजीवसमासमुं आहारकापण्यामिजीवसमासमुंमिंतरदरेदुं जीवसमासं-
पळपुवु । परिहारविशुद्धिसंयमं प्रमत्तसंयतरोळमप्रमत्तसंयतरोळमवकुमल्लि संजिपंचेद्रियपण्यामि-
जीवसमासमो दे यक्कुमेकं बोडे परिहारविशुद्धिसंयमश्चद्विषुमाहारकश्चद्विषुमोवन्नोळे संभवि-
यप्पुदरिवं । सूक्ष्मसांपरायसंयमं सूक्ष्मसांपरायगुणस्थानबोळेयक्कुमल्लि संजिपंचेद्रियपण्यामिजीव-
समासमो देयक्कुं । यथास्यात्चारित्र्यमुपशान्तकपायगुणस्थानबोळं क्षीणकपायगुणस्थानबोळं
सद्योगिकेवल्लिगुणस्थानबोळमयोगिकेवल्लिगुणस्थानबोळमिनु नाल्लुं गुणस्थानं गच्छोळमवकुमल्लि
संजिपंचेद्रियपण्यामिजीवसमासमुं समुदपातकेवल्लिय अपण्यामिजीवसमासमुं कूडि जीवसमासद्व-
१० मवकुं । संयममार्गणाभेदंगळु सिद्धपरमेष्ठिगळोळु संभविमुववत्तेदु परमागमबोळेय्चत्पदुडु ।

अ । वे । सा । छे । प । सु । य ।

४ । १ । ४ । ४ । २ । १ । १ । ४ ।

१४ । १ । २ । २ । १ । १ । १ । २ ।

चउरक्खथावरविरदसम्मादिट्ठी दु खीणमोहोत्ति ।

चक्खु अचक्खु ओही जिणसिद्धे केवलं होदि ॥६९१॥

चतुरिन्द्रियस्यावराविरतसंयमवृष्टितः क्षीणमोहपण्यंतं । चक्षुरचक्षुरवययो जिनसिं
केवलं भवन्ति ॥

- १५ देशसंयतगुणस्थाने तत्र जीवसमासः संक्षिपयान्त एव । सामायिकच्छेदोपस्थापनो प्रमत्तः। अनिवृत्तिकरण-
चतुर्गुणस्थानेषु । तत्र जीवसमासो संक्षिपयान्ताहारकपयान्तो द्वौ । परिहारविशुद्धिसंयमः प्रमत्तः। प्रमत्तपौर-
तत्र जीवसमासः संक्षिपयान्त एव तेन सह आहारकद्वौरेकत्वासंभवात् । सूक्ष्मसांपरायसंयमः सूक्ष्मसां-
रायगुणस्थाने तत्र जीवसमासः संक्षिपयान्तः । यथास्यात्चारित्र्यं उपशान्तकपायादिवचतुर्गुणस्थाने
तत्र जीवसमासो संक्षिपयान्तसमुदपातकेवल्यपयान्तो द्वौ । संयममार्गणाभेदाः सिद्धे न संतोति परमाग-
२० निदिष्टम् ॥६८९-६९०॥

- हे वसमें चौदह जीवसमास होते हैं । देशसंयम देशसंयत गुणस्थानमें होता है वसमें जीव-
समास एक संक्षिपयान्त ही होता है । सामायिक और छेदोपस्थापना प्रमत्तसे लेकर अनि-
वृत्तिकरणपर्यन्त चार गुणस्थानोंमें होते हैं । उनमें जीवसमास संक्षिपयान्त और आहारक
मिश्रकी अपेक्षा संक्षिपयान्त होते हैं । परिहारविशुद्धिसंयम प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानोंमें
२५ ही होता है । वसमें जीवसमास संक्षिपयान्त ही होता है क्योंकि परिहारविशुद्धि संयमके
साथ आहारकश्चद्वि नहीं होती । सूक्ष्मसांस्परायसंयत सूक्ष्मसांस्पराय गुणस्थानमें होता है ।
वसमें जीवसमास संक्षिपयान्त ही होता है । यथास्यात्चारित्र्य उपशान्तकपाय आदि चार
गुणस्थानोंमें होता है । वसमें जीवसमास संक्षिपयान्त तथा समुदपात केवलीकी अपेक्षा
अपयान्त इस तरह दो होते हैं । संयममार्गणाके भेद सिद्धोंमें नहीं होते ऐसा परमागमनें
१० कहा है ॥६८९-६९०॥

णवरि य सुक्का लेस्सा सजोगिचरिमोत्ति होदि णियमेण ।

गयजोगिम्मि वि सिद्धे लेस्सा णत्थिचि णिद्धिं ॥६९३॥

विशेषोस्ति शुक्ललेश्या सयोगचरमपर्यन्तं भवति नियमेन । गतयोगेऽपि सिद्धे लेश्या न संतीति निर्दिष्टं ॥

५ शुक्ललेश्येयोऽङ्गु विशेषमुंटावुबेंदोडे शुक्ललेश्यासंज्ञिपर्याप्तमिध्यादृष्टिगुणस्थानमादिपाणि सयोगिकेवल्लिगुणस्थानपर्यन्तं पविमूर्धं गुणस्थानगळोऽङ्गुबुबल्लि संज्ञिपंचेद्रियपर्याप्तमिध्यासंज्ञि जीवसमासमुं समुद्घातकेवल्लि औदारिकमिध्याकाम्भंकाययोगकालकृतापर्याप्तजीवसमासमुं कृति जीवसमासद्वयमचकुं नियमदिवं । कृ । नो । क । ते । प । शु । गतयोगरूप अयोगिकेवल्लि

४ । ४ । ४ । ७ । ७ । १३

१४ । १४ । १४ । २ । २ । २

१० गळोऽं सिद्धपरमेष्ठिगळोऽं लेश्येगळिल्लमे वितु परमागमवोऽप्येकस्पट्टु ।
थावरकायपुद्गुडो अजोगिचरिमोत्ति होति भवसिद्धा ।

मिच्छादृष्टिद्वारेण अभवसिद्धा इवंति ॥६९४॥

स्थावरकायप्रभृत्ययोगिचरमसमपर्यन्तं भवति अभ्यसिद्धाः । मिध्यादृष्टिस्थाने अभ्यसिद्धा भवन्तीति ॥

१५ अभ्यमार्गणेयोऽङ्गु स्थावरकायमिध्यादृष्टिगुणस्थानमादिपाणि अयोगिकेवल्लिचरमगुणस्थानपर्यन्तं पविनालकुं गुणस्थानगळोऽङ्गु अभ्यसिद्धरुगळोऽङ्गु पविनालकुं जीवसमासेगळोऽङ्गु । अभ्यसिद्धरुगळु मिध्यादृष्टिगुणस्थानमोऽङ्गुप्येक । अल्लि पविनालकुं जीवसमासेगळोऽङ्गु भ । ३

१४ । १

१४ । १४

मिच्छो सासणमिस्सो सगसगठाणम्मि होदि अयदादो ।

पट्ठुवसमवेदगसम्मत्तदुगं अप्पमत्तोत्ति ॥६९५॥

मिध्यादृष्टिः सासानो मिश्रः स्वस्वस्थाने भवति असंप्रतारप्रयमोपशमवेवकसम्यक्त्वद्विकम-

२० प्रमत्तपर्यन्तं ॥

शुक्ललेश्यायां विशेषः । स कः ? सा लेश्या संज्ञिपर्याप्तमिध्यादृष्टिपादिसंयोगान्तं भवति तत्र जीवसमासो संज्ञिपर्याप्तपर्याप्तो द्वावेव नियमेन केवल्लिपर्याप्तस्य अपर्याप्तो एवान्तर्भावात् । अयोगिजने सिद्धे च लेश्या न संतीति परमाणमे प्रतिपादितम् ॥६९३॥

२५ अभ्यमार्गणायां अभ्यसिद्धाः स्थावरकायमिध्यादृष्टिपादिसंयोगान्तं भवन्ति । अभ्यसिद्धाः मिध्यादृष्टिगुणस्थाने एव भवन्ति इत्युभयत्र जीवसमासावबतुंस ॥६९४॥

शुक्ललेश्यायामे विशेष इ । यद्वा संज्ञिमिध्यादृष्टिसे लेकर सयोगोपर्यन्तं होतो इ । उसमे जीवसमास संज्ञिपर्याप्त और संज्ञिअपर्याप्त दो ही नियमसे होते हैं । केवल्लिसमुद्घातगत अपर्याप्तका अन्तर्भाव अपर्याप्तमे ही हो जाता है । अयोग केवली और सिद्धांमे लेश्या नही होतो ऐसा परमाणममे कहा है ॥६९३॥

३० अभ्यमार्गणायामे अभ्य स्थावरकाय मिध्यादृष्टिसे लेकर अयोगकेवली पर्यन्तं होते हैं । अभ्य मिध्यादृष्टि गुणस्थानमे ही होते हैं । दोनोंमे जीवसमास चौदह ही होते हैं ॥६९४॥

द्वितीयोपशमसम्यक्त्वमसंयताद्युपशान्तकषायगुणस्थानपर्यन्तमेतदु गुणस्थानगच्छोक्तमुक्तं।
 उपशमश्रेण्यवरोहणबोद्धव्यमत्तप्रमत्तवेशसंयतासंयतरोजु द्वितीयोपशमसम्यक्त्वमसंभवमेव विवृते।
 बोद्धे उपशमश्रेण्यवरोहणावरोहणकालमे नोदतु तनुपशमसम्यक्त्वकालं संख्यातगुणमगुमेतत्तनुं
 चारित्र्यावरणोदयोगं देशसंयतासंयतरोजु पतनमुदप्युवरिब । अल्लि संज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तजीवसमा-
 ५ सेयुं देशसंयतापर्याप्तजीवसमासेयुमितेरदु जीवसमासेगच्छपुगु । क्षायिकसम्यक्त्वमसंयतादिपुन-
 योगिकेवल्लिगुणस्थानमवसानमागि पनोक्तुं गुणस्थानगच्छोक्तमुदल्लि । संज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तभूय-
 मानजीवसमासेयुं बद्धायुष्यापेक्षोयं धम्मंय नारकापर्याप्तनु भोगभूमिजमनुष्यतिर्यंचासंयता-
 पर्याप्तवं देवासंयतापर्याप्तनु संज्ञिगुणमप्युवरितपर्याप्ताजीवसमासेयुमितेरदुजीवसमासे-
 गच्छपुगु । संबुध्दिरचने :-

मि सा मि डि उ प्र वे क्षा
 १ १ १ ८ १ ४ ४ ११
 १४ ७ ११ २ १ १ २ २

गुणस्थानातीतरप्य सिद्धपरमेष्ठिगच्छो

१० क्षायिकसम्यक्त्वमसंयताद्युपशान्तकषायगुणस्थानपर्यन्तमेतदु गुणस्थानातीतरप्य सिद्धपरमेष्ठिगच्छो

सण्णी सण्णिप्पहुडी खीणकसाओत्ति होदि णियमेण ।

थावरकायप्पहुडी असण्णिप्ति हवे असण्णी दु ॥६९७॥

संज्ञी संज्ञिप्रभृति क्षीणकषायपर्यन्तं भवति नियमेन । स्थावरकायप्रभृति असंज्ञिप्यं

भवेवसंज्ञी तु ॥

१५ संज्ञिमारगणेषोक्तु संज्ञिजीवं संज्ञिमिध्यादृष्टिगुणस्थानमादियागि क्षीणकषायगुणस्था-
 पर्यन्तं पन्नेरदु गुणस्थानगच्छोक्तमुदल्लि संज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तापर्याप्तजीवसमासेयुमितेरदु ।
 मत्ते असंज्ञिजीवस्यावरकायमिध्यादृष्टिगुणस्थानमादियागि पंचेंद्रियासंज्ञिमिध्यादृष्टिपर्यन्तं मि

२० द्वितीयोपशमसम्यक्त्वं असंयताद्युपशान्तकषायान्तं भवति । अप्रमत्ते उत्साह उपरि उपशान्तकषाय-
 गत्वा अयोवतरणे असंयतान्तमपि तत्संभवात् । तत्र जीवसमासी संज्ञिपर्याप्तदेवासंयतापर्याप्ती द्वौ । क्षायि-
 सम्यक्त्वं असंयताद्युपशान्तम् । तत्र जीवसमासी संज्ञिपर्याप्तः बद्धायुष्यापेक्षया धर्मानारकभोगभूमिनरति-
 मानिकापर्याप्तिरचैति द्वौ । विदेजि क्षायिकसम्यक्त्वं स्यादिति जिनैवक्तम् ॥६९९॥

संज्ञिमारगणाय संज्ञिजीवः संज्ञिमिध्यादृष्टपादिक्षीणकषायान्तं भवति तत्र जीवसमासी संज्ञिपर्याप्तिर

२५ द्वितीयोपशम सम्यक्त्वं असंयतसे उपशान्तकषाय गुणस्थानपर्यन्तं होता है ; क
 अप्रमत्त गुणस्थानमे इस द्वितीयोपशम सम्यक्त्वंको उत्पन्न करके ऊपर उपशान्तकषाय प
 जाकर नीचे उतरनेपर असंयत पर्यन्त भी उसका अस्तित्व रहता है । उसमें जीवस
 संज्ञिपर्याप्त तथा देव असंयत अपर्याप्त दो होते हैं । क्षायिक सम्यक्त्वं असंयतसे अ
 पर्यन्त होता है । उसमें जीवसमास संज्ञिपर्याप्त होता है । किन्तु परभवकी आयु बाँ
 अपेक्षा प्रथम नरक, भोगभूमिया मनुष्य तिर्यंच और वैमानिक सम्बन्धी अपर्याप्त होने
 होते हैं । सिद्धोंमें भी क्षायिक सम्यक्त्वं जिनदेवने कहा है ॥६९९॥

३० संज्ञीमारगणाय संज्ञीजीव संज्ञिमिध्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानपर्यन्त
 है । उसमें जीवसमास संज्ञिपर्याप्त और अपर्याप्त दो होते हैं । असंज्ञीजीव स्थावर

मिथ्यादृष्टिगुणस्थानदोष्टं पविनात्कुं जीवसमासेगप्युतु । सासादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थानदोष्टं
मविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थानदोष्टं प्रमत्तविरतनोष्टं च शब्दविषं सयोगकेवलिगुणस्थानदोष्टमितु नात्कुं
गुणस्थानंगळोष्टं संज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तापर्याप्तिजीवसमासद्वयं प्रत्येकमक्कुं । शेषमिध्वेदशंस्यताप्रवला
पूर्वकरणानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसांपरायोपज्ञांतकपायक्षीणरूपायगुणस्थानाष्टकदोष्टमपि शब्दविषमणे-
गिगुणस्थानदोष्टमितु नवगुणस्थानंगळोष्टं प्रत्येकं संज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तिजीवसमासेपोवेरक्कुं :-
मि । सा । मि । अ । वे । प्र । अ । अ । अ । सू । उ । क्षी । स । अ
१४ । २ । १ । २ । १ । २ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । २ । १

अनंतरं मार्गणास्थानंगळोष्टं जीवसमासेयं सूचितिदपं :-

तिरियगदीए चोद्दस हवन्ति सेसेसु जाण दोद्दो दु ।

मगणठाणस्सेवं नेयाणि समासठाणाणि ॥७००॥

तिर्यगन्ती चतुर्दश भवन्ति शेषेषु जानोहि द्वौ द्वौ तु । मार्गणास्थानस्यैवं ज्ञेयानि स

१० स्थानानि ॥

तिर्यग्भ्रमतिषोष्टं जीवसमासंगळं पविनात्कुमप्युतु । शेषनारकदेवमनुष्यगतिगळोष्टं
संज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तापर्याप्तिजीवसमासद्वयमक्कुं । तु मत्ते एवमो प्रकारविदं मार्गणास्थानं
तोष्टपनितक्कुं । जीवसमासस्थानंगळं यथायोग्यमागि मुपेळ्वं क्रमवितरित्पपुतुपु ।

अनंतरं गुणस्थानंगळोष्टं पर्याप्तिप्राणंगळं निरूपितिवरः :-

पज्जची पाणावि य सुगमा भाविदिंसं ण जोगिम्मि ।

तहि याचुस्सासाउगकायत्तिगदुगमजोगिणो आऊ ॥७०१॥

पर्याप्तयः प्राणाः अपि च सुगमाः भावेद्वयं न योगिनि । तस्मिन्वागुच्छ्यासाकु-
ट्टिरुद्विक्रमयोगिनः आयुः ॥

मिथ्यादृष्टौ जीवसमासाववतुर्दश, सासादने अविरते प्रमत्ते च यस्यात् सयोगे च संज्ञिपर्याप्तापर्या-
२० षेवाष्टगुणस्थानेषु 'दु'दशान् अयोगे च संज्ञिपर्याप्ति एवैकः ॥६९९॥ अथ मार्गणास्थानेषु तान् गूढवर्ति-
तिर्यगन्ती जीवसमासाववतुर्दश भवन्ति शेषवर्तिषु संज्ञिपर्याप्तापर्याप्ती द्वौ । तु-मुनः सर्वमार्गना-
यथायोग्यं प्रागुक्तमेव जीवसमासा आठव्याः ॥७००॥ अथ गुणस्थानेषु पर्याप्तिप्राणानाह—

मिथ्यादृष्टिमें चोद्द जीवसमास होते हैं । सासादन, अविरत, प्रमत्त और च
सयोगीमें संज्ञिपर्याप्ति और अपर्याप्ति दो जीवसमास होते हैं । शेष आठ गुणस्थानों
२५ अपि शब्दसे अयोग्यवर्तीमें एक संज्ञिपर्याप्ति ही होता है ॥६९९॥

अथ मार्गणाश्रमोंमें जीवसमास कहते हैं :-

तिर्यगगतिमें चोद्द जीवसमास होते हैं । शेष गतियोंमें संज्ञिपर्याप्ति, अथ
जीव-नानाम होते हैं । इन प्रकार सब मार्गणास्थानोंमें यथायोग्य पूर्वाक्त क्रमसे जीव
जानना ॥७००॥

१० गुणस्थानोंमें पर्याप्ति और प्राण कहते हैं—

१. पु. १ अविदसत् ।

अपूर्व्यकरणगुणस्थानं मोदलागि सिद्धपरमेष्ठिमन्त्रम्यंतं क्षायिकसम्यक्त्वमकं :—

मि । सा । मि । अ । वे । प्र । अ । अ । अ । सु । उ । क्षी । स । ब्र । हि ।
१ । १ । १ । ३ । ३ । ३ । ३ । १ । १ । १ । २ । १ । १ । १ । १ ।

नो इन्द्रियावरणक्षयोपशममुत्तज्जनितबोधनमुं संज्ञेयं बुदक्कं अवनुञ्जदसंज्ञि एंबुदक्कुमितोदिस-
ज्ञानमनुञ्जदसंज्ञियं बुदक्कुमितु संज्ञियुमसंज्ञियुमे वेरदु प्रकारव जीवंगळोञ्ज संज्ञिजीवं मिष्यादृष्टि-

गुणस्थानं मोदलोडु क्षीणकपापगुणस्थानपम्यंतं पन्नेरदु गुणस्थानंगळोळक्कं । असंज्ञिजीवं
५ मिष्यादृष्टिगुणस्थानवोळोक्कं । सयोगिकेवलभट्टारकरुमयोगिकेवलभट्टारकरु नोइन्द्रियेन्द्रि-
ज्ञानरहितरपुदरिवं संज्ञिगळुमसंज्ञिगळुमस्तु :—

मि । सा । मि । अ । वे । प्र । अ । अ । अ । सु । उ । क्षी । शरीरोगोपांन-
२ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ ।

नामकमोदयजनितशरीरवचनचित्तनोरुमंवर्गंगाग्रहणमाहारमे बुदक्कं । विग्रहगतियोञ्ज समुत्पन्न-
केवलगुणस्थानवोळमयोगिकेवलगुणस्थानवोळं सिद्धपरमेष्ठिमन्त्रोळं शरीरोगोपांगनामकमोद-
मिल्लपुदरिवं “कारणाभावे काम्यंस्थाप्यभावः एवो न्यायविदभनाहारमरुकुमिताहाराणाहारपद-

१० मिष्यादृष्टिगुणस्थानवोळरदुमरुं । सासादनगुणस्थानवोळमसंयतसम्यग्दृष्टिगुणस्थानवोळं सयोगि-
केवलभट्टारकरुगुणस्थानवोळमाहाराणाहारमेरदुमरु मुञ्जिव मिधगुणस्थानं मोदलागि ओभत्तगुरु-

च कर्ममुनिवेदकसम्यग्दृष्टोनामेव केरलियुक्केवलद्वयोपाशोपात्ते सप्तरुतिनिरेवोपधावे भवति । तस्मिन्स-
गामान्येन एकं, विशेषेण मिष्यात्त्वसासादनमियोपशमवेदकस्याधिकवेदात् पोडा । तत्र मिष्यादृष्टी मिष्या-

सासादने सासादनरक्कं । मिधे मिधस्वं । असंयतादि अप्रमत्तान्तेषु उपपन्नवेदकक्षायिकानि अपूर्वकरणानि
१५ धान्तकपायान्तेषु उपपन्नधेयो वा औपसमिकक्षायिके क्षयकथेनावपूर्वकरणविशिष्टपर्यन्तमेकं क्षायिकमेव ।

नोइन्द्रियावरणक्षयोपशमः उत्तज्जनितबोधनं च संज्ञा सा अरय अस्तीति संज्ञी । इतरेन्द्रियज्ञानोळी ।
तत्र मिष्यादृष्ट्यादिक्षीणकपायान्तं संज्ञी । असंज्ञी मिष्यादृष्टावेव । सयोगायोपयोगीनोइन्द्रियेन्द्रियज्ञानाभावा-
वसंज्ञिभट्टारकेवो नास्ति ।

शरीरान्तोगाज्ञानामोदयजनितं शरीरवचनचित्तनोरुमंवर्गंगाग्रहणमाहारः । विग्रहगतो प्रवरलोडुगुण-

२० हो जाता है । क्षायिक सम्यक्त्व तो असंयत आदि चार गुणस्थानवर्ती मनुष्योंके असंय-
तसंयत या औपचारिक महाप्रती मानुषियोंके जो कर्मभूमिके जन्मा वेदक सम्यग्दृष्टि हो
है उनके ही केवली यतकेवलीके चरणोंके समीपमें सात प्रकृतियोंका पूर्ण क्षय होनेपर होता
है । वह सम्यक्त्व सामान्यसे एक है । विशेष मिष्यात्त्व, सासादन, मिध, उपशम, वेदक और

२५ क्षायिकके भेदसे छह भेदरूप है । मिष्यादृष्टिमें मिष्यात्त्व होता है । सासादनमें सामान्य
और मिधमें मिध होता है । असंयतसे अप्रमत्तपर्यन्त उपशम, वेदक और क्षायिक सम्मिलित
होते हैं । अपूर्वकरणसे उपशान्त कथाय पर्यन्त उपशमधेयीमें औपसमिक और क्षायिक होते
हैं । क्षयकथेनमें अपूर्वकरणसे छेहर तथा मिद्ध पर्यन्त क्षायिक हो होता है ।

नोइन्द्रियावरणके क्षयोपशम और उससे होनेवाले ज्ञानको संज्ञा कहते हैं । वह संज्ञी
हो यह संज्ञी है । जो मनके मिवाय अन्य इन्द्रियोंसे हो जानता है वह असंज्ञी है । निर-
१० दृष्टिसे छेहर औपसमिक पर्यन्त संज्ञी होता है । असंज्ञी मिष्यादृष्टि गुणस्थानमें हो होता
है । संज्ञी और असंज्ञी मनसे नहीं जानते इससे न यह संज्ञी कहे जाते हैं और न असंज्ञी ।

१. अ. इत्यादि नही है ।

ओघे चोदसठाणे सिद्धे वीसदिविहाणमालावा ।

वेदकसायविभिण्णे अणियट्ठीपंचभागे य ॥७०७॥

ओघे चतुदंशस्थाने सिद्धे विंशतिविधानमालापाः । वेदकपायविभिन्नेऽनिवृत्तिर्न
भागेषु च ॥

- ५ गुणस्थानदोळं चतुदंशमार्गणास्थानदोळं प्रसिद्धदोळं विंशतिविधंगळप्य गुणजीवेत्यादि-
गळो सामान्यं पर्याप्तमप्याप्तमेव मूखतेरदाळापंगळप्पुवु । वेदकपायंगळिदं भेदमनुळं अनि-
वृत्तिकरणगुणस्थानपंचभागेगळोळं पुयगाळापंगळप्पुवेकंदोळे अनिवृत्तिकरणपंचभागेगळोळं
सवेदावेदादि विशेषंगळं टप्पुवरिदं ।

अनंतरं गुणस्थानंगळोळं आळापमं पेळदपं :—

- १० ओघेमिच्छदुगेवि य अयदपमत्ते सजोगठाणम्मि ।

तिण्णेव य आलावा ससेसिवको हवे णियमा ॥७०८॥

ओघे मिथ्यादृष्टिकेपि च असंयते प्रमत्ते सयोगस्थाने । त्रय एवाळापाः शेषेष्वेको भवे
मियमात् ॥

- गुणस्थानंगळोळं मिथ्यादृष्टिसादानसम्यग्दृष्टिगुणस्थानद्वयोळं असंयतसम्यग्दृष्टिगु-
१५ स्थानदोळं प्रमत्तसंयतगुणस्थानदोळं सयोगकेवलभट्टारकगुणस्थानदोळं प्रत्येकं सामान्यं पर्याप्तं
पर्याप्तमेव मूख माळापंगळप्पुवु । शेषनवगुणस्थानंगळोळं पर्याप्ताळापमो वेपककुं :—
मि । सा । मि । अ । वे । प्र । अ । अ । अ । सू । उ । क्षी । स । अ ।
३ । ३ । १ । ३ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । ३ । १ ।

अनंतरमीयत्यंमने विंशदं माडिदपं :—

गुणस्थाने चतुर्दशमार्गणास्थाने च प्रसिद्धे विंशतिविधानां गुणजीवेत्यादीनां सामान्यपर्याप्तारवात्तस्य
आलापा भवन्ति । तथा वेदकपायविभिन्नेषु अनिवृत्तिकरणाञ्चभागेषु अपि पुनरुपपन्नवन्ति ॥७०७॥ ॥

- २० गुणस्थानेशाह—

गुणस्थानेषु मिथ्यादृष्टिसादानयोः असंयते प्रमत्ते सयोगे च प्रत्येकं त्रयोऽपि आलापा भवन्ति ।
शेषनवगुणस्थानेषु एकः पर्याप्तात्तर एव नियमेन ॥७०८॥ अमुमेवार्थं विनन्दयति—

- प्रसिद्ध गुणस्थान और चोदह मार्गणास्थानमें 'गुणजीवा' इत्यादि बीस पुरुषजाते
सामान्य, पर्याप्त, अपर्याप्त ये तीन आलाप होते हैं । तथा वेद और कपायसे भेदरूप
२५ अनिवृत्तिकरणके पाँच भागोंमें भी आलाप पृथक्-पृथक् होते हैं ॥७०७॥

गुणस्थानोंमें आलाप कहते हैं—

गुणस्थानोंमें-से मिथ्यादृष्टि, सासादन, असंयत, प्रमत्त और सयोगीमें-से प्रत्येक
तीनों ही आलाप होते हैं, शेष नौ गुणस्थानोंमें एक पर्याप्त आलाप ही नियमसे
है ॥७०८॥

सत्तण्हं पुढवीणं ओषेमिच्छे य तिरिण्णि आलावा ।
पढमाविरदेवि तहा सेसाणं पुण्णमालावो ॥७१२॥

सप्तानां पृथ्वीनामोषे सामान्ये मिथ्यादृष्टौ च त्रय आलापाः । प्रथमाविरतेऽपि तया शेषानां पूर्णालापः ॥

सामान्यविदं सप्तपृथ्विगणं साधारणमिथ्यादृष्टियोजं मूकमात्रापंगणपुत्रु । प्रथमपृथ्वि-
अविरतसम्यग्दृष्टियोजमते मूरात्रापंगणपुत्रुके बोडे प्रथमनरकमं बढापुप्यनप्प वेदकसम्यग्दृष्टिं
क्षायिकसम्यग्दृष्टियं पुगुगुमप्पुवरिदं शेषगं प्रथमपृथ्वि सासादनमिथगं द्वितीयवि पृथ्विगण
सासादनमिथासंयतगं थुं पय्यासात्रापमेयक्कुं । उळिवाव नरकंगळोजं सम्यग्दृष्टि पुगं बुदव ।

तिरियचउक्काणोषे मिच्छदुमे अविरदे य तिरिण्णेव ।

णवरि य जोणिणि अयदे पुण्णो सेसेवि पुण्णो दु ॥७१३॥

तिरिचं चतुर्णामोषे मिथ्यादृष्टिद्विके अविरते च त्रय एव । विशेषोऽस्ति योनिमत्तसंयते
पूर्णः शेषेपि पूर्णस्तु ॥

तिर्यग्गतियोजं पंचगुणस्थानगळोजं सामान्यतित्यं चरुगळं पंचेत्तिर्यग्गतियोजं चरुगळं पर्याप्त-
तिर्यग्गतियोजं योनिमत्तित्यं चरुगळं इंतु नालहुं तेरव तिर्यग्गतियोजं साधारणविदं मिथ्यादृष्टि-

गुणस्थानबोळं सासादनगुणस्थानबोळमसंयतसम्यग्दृष्टिगुणस्थानबोळं प्रत्येकं मूकमात्रापंगणपुत्रुवि-
विशेषमुंदावुदे बोडे योनिमत्तियसंयतगुणस्थानबोळं पय्यासात्रापमेयक्कुमेके बोडे बढतिर्यग्गतियोज-
रप्प सम्यग्दृष्टिगळं योनिमत्तियोजं पंडरुमाणि पुदरपुवरिदं शेषमिथवेशसंयतगुणस्थानबोळो
पय्यासात्रापमेयक्कुं :—

नरकगतौ सामान्येन सप्तपृथ्वीमिथ्यादृष्टौ त्रयः आलापाः स्युः । तया प्रथमपृथ्व्याविरतेऽपि सा
२० आलापाः स्युः । बढनरकायुदेदक्षायिकसम्यग्दृष्टपोस्तवोरत्तिबंधवात् शेषपृथ्व्याविरतानामेकः पर्याप्त
एव सम्यग्दृष्टेस्तत्रानुसृतेः ॥७१२॥

तिर्यग्गतौ पञ्चगुणस्थानेषु सामान्यपञ्चेन्द्रियपर्याप्तयोनिमत्तित्तरचं चतुर्णां साधारणेन मिथ्यादृष्टि-
सासादनसंयतेषु प्रत्येकं त्रय आलापा भवन्ति । तत्रायं विशेषः—योनिमत्तसंयते पर्याप्तालाप एव । बढगुण-
स्थानि सम्यग्दृष्टेः स्वीकृत्योरनुसृतेः । तु-पुनः शेषमिथवेशसंयतयोरपि पर्याप्तालाप एव ॥७१३॥

नरकगतित्ते सामान्यसे सातो पृथ्वीके मिथ्यादृष्टिमे वीनों आलाप होते हैं । तया
प्रथम पृथ्वीमें अविरतमें भी वीनों आलाप होते हैं क्योंकि जिन्होंने पहले नरकायुका वन
किया है वे वेदक सम्यग्दृष्टि और क्षायिक सम्यग्दृष्टि प्रथम नरकमें ही उत्पन्न होते हैं । तै
पृथिवियोंमें अविरतके एक पर्याप्त आलाप ही होता है क्योंकि सम्यग्दृष्टि नरकर जनमें जन
नहीं होता ॥७१२॥

तिर्यग्गतित्ते पांच गुणस्थानोंमें सामान्यतिर्यग्, पंचेन्द्रियतिर्यग्, पर्याप्ततिर्यग् और
योनिमत्ततिर्यग् इन चारोंके सामान्यसे मिथ्यादृष्टि, सासादन और असंयत गुणस्थानोंमें
प्रत्येकमें तीन आलाप होते हैं । किन्तु इतना विशेष है कि असंयतमें योनिमत्ततिर्यग्
पर्याप्त आलाप ही होता है; क्योंकि जिसने परभवकी आयुका वन्य किया है वह सम्यग्दृष्टि

पृथ्विकायिकबोळमष्कायिकबोळं तेजस्कायिकबोळं वायुकायिकबोळं नित्यनिगोदबोळंगळोळं चतुर्गतिनिगोदबोळंगळोळं इतर बावरसूक्ष्मभेदंगळोळं प्रत्येकचनस्पतिमोळं तद्विभेदमप्य ।

प्रतिष्ठितप्रत्येकबोळं अप्रतिष्ठितप्रत्येकबोळं ओषधोळु साधारणालापप्रयमकुं । प्रस जीवंगळ सामान्यबोळु गुणस्थानंगळपदिनाल्कषुबल्लि मिम्यादृष्टयाविगुणस्थानंगळोळु गुणस्थान-
५ बोळपेळ्ढेते आळाधंगळपुषु । विशेषमिल्ल । पृथ्विकायिकाविप्रसकायिकबोळपध्दतमाव लब्ध-
पध्दाम्रोळु लब्धप्रपध्दालापमोदेयकुं ।

अनंतरं योगमार्गणेपोळु आलापमं पेळ्ढपं :—

एकारसजोगाणं पुण्णमदाणं सपुण्ण आलाओ ।

मिस्सचउक्कस्स पुणो सगएक्क अपुण्ण आलाओ ॥७२३॥

१० एकादशयोगानां पूर्णगतानां स्वपूर्णांलापः । मिथश्चतुष्कस्य पुनः स्वकैः शोऽपूर्णः आलापः ॥

पर्याप्तिगे संद मनोवाग्योपंगळेंडु औदारिकवैक्रियिकाहारकंगळेंडु मूर्धमि तु पलोडु
योगंगळगे स्वस्वपूर्णांलापमोदेयकुमवेते बोडे सत्यासत्योभयानुभयमनः पर्याप्तालापमुं
सत्यासत्योभयानुभयभाषापध्दालापमुं औदारिकवैक्रियिकाहारकशरीरपर्याप्तालापमुं तंतम्
बोदेपदिगि पन्नोंडुबोळंगळोळु पन्नोंदे पर्याप्तालापमपुधेदुदर्थं । मिथश्चतुष्कयोगकै मते
१५ स्वस्वापर्याप्तालापमोदेयकुमौदारिकापर्याप्तवैक्रियिकापर्याप्तआहारकापर्याप्त काम्मकाय-
पर्याप्तमं बाळापचतुष्टयं यथासंख्यमार्गोदेवे पेळ्ढस्सडुबुवुवर्थं ॥

अनंतरं वेद मार्गणाद्विद्याहारमार्गणापर्यंतमाव पत्तुं मार्गणेगळोळांलापक्रमं तोरिपं ॥

वेदादोहारोत्ति य सगुणद्वाणाणमोष आलाओ ।

णवरि य संद्धित्योणं नत्थि डु आहारगाण दुगं ॥७२४॥

२० वेदाहारपर्यंतं च स्वगुणस्थानानामोष आळापः । नवमस्ति च पंडित्योणां नास्त्याहारक-
योद्विकं ॥

वेदमार्गणेगळोळु आहारमार्गणेपर्यंतमाव पत्तुं मार्गणेगळोळु तंतम्मार्गणेगळु
गुणस्थानंगळगे सामान्योदर्थं गुणस्थानंगळोळु पेळ्ढालापक्रममेयकुमावोडमोडु नवीनमुंढवापुवेदोडे
भावपंडहं द्रव्यपुरुषहं भावस्त्रीपहं द्रव्यपुरुषगळप्प वेदमार्गणेय सेवेदानिदित्तिकरणपर्यंतमाव

२५ पर्याप्तितगतानां चतुर्धनवचतुर्वीगौदारिकवैक्रियिकाहारकैकादशयोगानां स्वस्वपूर्णांलापो भवति यथा
सत्यमनोगोचस्य सत्यमनःपर्याप्तालापः । मिथश्चतुष्कस्य पुनः स्वस्वैकापर्याप्तालापो भवति । यथा
औदारिकमिथस्य औदारिकापर्याप्तालापः ॥७२३॥ अथ शेषमार्गणां आह—

वेदादोहारान्तरमार्गणां गुणस्थानगुणस्थानानामालापक्रमः सामान्यगुणस्थानवद्भवति किन्तु भाववद्-

पर्याप्त अवस्थामें होनेवाले चार मनोयोग, चार वचनयोग, औदारिक, वैक्रियिक
३० आहारक काययोग इन ग्यारह योगोंमें अपना-अपना पर्याप्त आलाप होता है । जैसे सत्य-
मनोयोगके सत्यमन पर्याप्त आलाप होता है । चार मिथशयोगोंमें अपना-अपना एक अपर्याप्त
आलाप होता है । जैसे औदारिकमिश्रके औदारिक अपर्याप्त आलाप होता है ॥७२३॥

शेष मार्गणाओंमें कहते हैं—

वेदसे लेकर आहारमार्गणा पर्यंत दस मार्गणाओंमें अपने-अपने गुणस्थानोंका आलाप-

१५ कम सामान्य गुणस्थानको तरह होता है । किन्तु भावसे नपुंसक द्रव्यसे पुरुष और भावसे

पन्नेरद्वं असंतिपयोद्वं गुणस्थानंगळोद्वं आहारमाग्नंगयोद्वं आहारव पविमूयमनाहारोद्वं
गुणस्थानंगलोद्वं सामान्यविद्वं गुणस्थानंगळोद्वं पेन्नुद्वं कमविद्वंमाळापंगळं पेन्नु कोळो ॥

गुणजीवा पञ्जची पाणा सण्णा गइंदिया काया ।

जोगा वेदकसाया पाणजमा दंसणा लेस्सा ॥७२५॥

भव्वा सम्मत्तावि य सण्णी आहारगा य उवजोगा ।

जोगा परुविदव्वा ओघादेसेसु समुदायं ॥७२६॥

गुणजीवाः पर्याप्तयः प्राणाः संज्ञा गतोद्विष्यानि कायाः । योग्याः वेदकसाया ज्ञानयना रं-
मानि लेदयाः ॥

भव्याः सम्पत्त्यानि च संज्ञितः आहारकाश्चोपयोगाः । योग्याः प्रकृपयितव्याः ओघादेसे

१० समुदायं ॥

परिनाल्लु गुणस्थानंगळं मूलपर्याप्तजीवसमासंगळं मूलापर्याप्तजीवसमासंगळं

गतिःपेद्विषयोसंबंधिपर्याप्तिगळादमपर्याप्तिगळारं । असंतिजीवसंबंधिगळं विरुलप्रयोजी

संधिगळमप पर्याप्तिगळमुमपर्याप्तिगळमुं । एकंद्रियसंबंधिपर्याप्तिगळं नाल्लुमपर्याप्ति

गळं गळं गतिःपेद्विषय पर्याप्तिजीवसंबंधिप्राणंगळं पत्तु । तदपर्याप्तजीवसंबंधिप्राणं

११ गळेद्वं असंतिपर्याप्तपंचेद्विषयजीवसंबंधिप्राणंगळोभत्तुं तदपर्याप्तप्राणंगळेद्वं चतुरिद्विष-

यानाजीवसंबंधिप्राणंगळेद्वं । तदपर्याप्तप्राणंगळारं पर्याप्तत्रौद्विषयजीवसंबंधिप्राणंगळेद्वं

३ । तदपर्याप्तप्राणंगळेद्वं पर्याप्तद्वौद्विषयजीवसंबंधिप्राणंगळारं । तदपर्याप्तप्राणंगळं नाल्लु ।

पर्याप्तद्वौद्विषयजीवसंबंधिप्राणंगळं नाल्लु । तदपर्याप्तजीवसंबंधिप्राणंगळं मूर्दं । पर्याप्तसंज्ञो-

द्विद्विभट्टारकसंबंधिप्राणंगळं नाल्लुमवागुवेदोद्वं वाक्कायायुक्छ्वासनिःश्वासांगळं कुमा । पूक

२० ॥१५५॥ अचिद्विषय एद्विषय, आहारस्य त्रयोदशसु अनाहारस्य पञ्चसु च गुणस्थानेषु सामान्यगुणस्थानेषु
अन्यथाय एतन्मयः ॥७२६॥

गुणस्थानानि चतुरिंश, मूलजीवसमासाः पर्याप्ताः सप्त । अपर्याप्ताः सप्त । संज्ञितः पर्याप्तः स

असंतिः सः सः । अचिद्विषयो विरुलप्रयोज्य च पर्याप्तः पञ्च अपर्याप्तः पञ्च । ऐक्यद्विषय पर्याप्तः स

अचिद्विषयः सः । प्राणाः संज्ञितो दश तदपर्याप्तस्य सप्त । असंतिः नव तदपर्याप्तस्य सप्त, चतुरिद्विषय

२१ सः तदपर्याप्तस्य सः, चतुरिद्विषय सः तदपर्याप्तस्य पञ्च, द्वौद्विषय सः तदपर्याप्तस्य सः, तदपर्याप्तस्य सः, तदपर्याप्तस्य सः । संज्ञोद्विषयः चतवारः वाक्कायायुक्छ्वासनिःश्वासांगळाः । सः

चारः, असंतिः सः, आहारकः तद्विषय और अनाहारकः पांच गुणस्थानोनि सामान्यगुण

स्थानोनि सः सः अनुसार आहार कर लेना चाहिए ॥७२५॥

गुणस्थान चतुरिंश, मूलजीवसमास चतुरिंश इत्येते सात पर्याप्त, सात अपर्याप्त, सप्त

१० ॥१५५॥ अचिद्विषयो दश त्रयोदशसु और अपर्याप्त अस्थानोनि सः अपर्याप्तोनि, सः सः

अचिद्विषयो विरुलप्रयोज्य पांच पर्याप्तोनि, पांच अपर्याप्तोनि । ऐक्यद्विषय चार पर्याप्तोनि,

चार अपर्याप्तोनि, प्राणा संज्ञोद्विषय, सः सः अपर्याप्तः सः, असंतिः सः, अचिद्विषय

चतवारः वाक्कायायुक्छ्वासनिःश्वासांगळाः । सः

११ ॥१५६॥ अचिद्विषय सः, चतुरिद्विषय सः, तदपर्याप्तस्य पञ्च, द्वौद्विषय सः, तदपर्याप्तस्य सः, तदपर्याप्तस्य सः । संज्ञोद्विषयः चतवारः वाक्कायायुक्छ्वासनिःश्वासांगळाः । सः

२० ॥१५७॥ अचिद्विषय सः, चतुरिद्विषय सः, तदपर्याप्तस्य पञ्च, द्वौद्विषय सः, तदपर्याप्तस्य सः, तदपर्याप्तस्य सः । संज्ञोद्विषयः चतवारः वाक्कायायुक्छ्वासनिःश्वासांगळाः । सः

ए१।वि१।ति१।च१।वं१।पु१।अ१।ते१।या१।य१।त्र१।पु१।अ१।
 ते१।या१।य१।वि१।स१।पु१।अ१।ते१।या१।य१।वि१।अ१।सं१।
 पु१।अ१।ते१।या१।य१।वि१।ति१।च१।प१।पु१।अ१।ते१।या१।
 व१।वि१।ति१।च१।अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।या१।य१।त्र१।पु१।
 अ१।ते१।या१।य१।वि१।स१।पु१।अ१।ते१।या१।य१।वि१।सं१।
 पु१।अ१।ते१।या१।य१।वि१।ति१।च१।वं१।पु१।अ१।ते१।या१।
 व१।वि१।ति१।च१।अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।या१।य१।नि१।
 च१।प्र१।वि१।अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।या१।य१।प्र१।वि१।
 ति१।च१।वं१।पु१।अ१।ते१।या१।य१।प्र१।वि१।ति१।च१।
 अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।या१।य१।प्र१।वि१।ति१।च१।

अ१।सं१।
 १८।१९॥ गुणकारसामान्यविदमो बु१। युति १९०। २। ४। ६। ८। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। गुणकाररयुति ३८०। ३१।

१५ अ१।ते१।वा१।व१।त्र१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।
 अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।
 अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।
 ते१।वा१।व१।वि१।अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।सं१।पु१।अ१।
 ते१।वा१।व१।वि१।ति१।च१।अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।
 अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।ति१।च१।अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।
 अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।ति१।च१।अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।
 अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।ति१।च१।अ१।सं१।पु१।अ१।ते१।वा१।व१।वि१।

सामान्य पर्याप्त-अपर्याप्तसे गुणा करनेपर समस्त जीवसमास स्थानके विकल्प होते हैं।
 एकसे लेकर छत्तीस तकके विकल्पोको एकसे गुणा करनेपर उतने ही रहते हैं १, २, ३, ४,
 ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९। इन सचका जोड़ १५०
 १. द्रु पर्याप्तगते भेदवु । २. पर्याप्तपर्याप्तभेददि द्विगुणंगलु ।
 द्रुपर्याप्तभेददिनिगुणंगलु । ३. द्रु पर्याप्तनिगुणंगलु ।

उ५। पय्यमिकसासावनगुणस्यानवतिगच्छे। गु१। सा सा। जो१। प। प६। प्रा॥
ग४। इ१। पं। का१। त्र। यो१०। म४। वा४। ओ१। का१। वे१।
सा३। कु। कु। मि। सं१। अ। व२। ले६। भ१। सं१। सा सा। सं१। आ॥
भा६

अपय्यमिकसासावनगुणस्यानवतिगच्छे। गु१। अ। प। ६। अ। प्रा०। अ सं४१।
५। मा। वे१। इ१। पं। का१। त्र। यो३। ओ१। मि। वे१। मि। का। वे३। क४। ता२।
मं। अ व२। ले२। क। शु। भ१। सं१। या सा। पं१। आ२। उ४॥
भा६

सम्यगिमम्यावृष्टिगुणस्यानवतिगच्छे। गु१। मिथ। जो१। प। प६। प्रा॥
सं४। ग४। इ१। पं। का१। त्र। यो१०। म४। वा४। ओ१। का१। वे१।
क४। ता३। मि म। मि थ। मि अ। सं१। अ। व३। ले६। भ१।
२६

१०। मिथवति। सं१। आ१ उ६॥

असंयतगुणस्यानवतिगच्छे। गु१। अ। सं। जो२। प। अ। प६। प्रा॥
सं४। ग४। इ१। पं। का१। त्र। यो१३। म४। व४। ओ२। वे२। का१।
क४। ता३। म। भू। अ। सं१। अ। व३। च। अ। अ॥ ले६। भ१। सं३।
भा६

भा। सं१। आ२। उ६॥

१५। असंयतगुणस्यानवतिपय्यमितासंयतसम्यग्वृष्टिगच्छे। गु१। अ सं। जो१। प।
प। प्रा०। सं४। ग४। इ१। पं। का१। त्र। यो१०। म४। व४। ओ१।
का१। वे३। क४। ता३। म। भू। अ। सं१। अ। व३। च। अ। अ॥ ले६।
भा६

सं३। उ। वे। भा। सं१। आ१ उ६॥

उ५। पय्यमिकसासावनगुणस्यानवतिगच्छे। गु१। सा सा। जो१। प। प६। प्रा॥
१०। म४। वा४। ओ१। का१। वे१। क४। ता३। कु। कु। मि। सं१। अ। व२। ले६। भ१। सं१। सा सा। सं१। आ॥
भा६

अपय्यमिकसासावनगुणस्यानवतिगच्छे। गु१। अ। प। ६। अ। प्रा०। अ सं४१।
५। मा। वे१। इ१। पं। का१। त्र। यो३। ओ१। मि। वे१। मि। का। वे३। क४। ता२।
मं। अ व२। ले२। क। शु। भ१। सं१। या सा। पं१। आ२। उ४॥
भा६

सम्यगिमम्यावृष्टिगुणस्यानवतिगच्छे। गु१। मिथ। जो१। प। प६। प्रा॥
सं४। ग४। इ१। पं। का१। त्र। यो१०। म४। वा४। ओ१। का१। वे१।
क४। ता३। मि म। मि थ। मि अ। सं१। अ। व३। ले६। भ१।
२६

१०। मिथवति। सं१। आ१ उ६॥

असंयतगुणस्यानवतिपय्यमितासंयतसम्यग्वृष्टिगच्छे। गु१। अ सं। जो१। प।
प। प्रा०। सं४। ग४। इ१। पं। का१। त्र। यो१०। म४। व४। ओ१।
का१। वे३। क४। ता३। म। भू। अ। सं१। अ। व३। च। अ। अ॥ ले६।
भा६

म। इ१। पं। का१। त्र। यो९। वे३। क४। ज्ञा४। सं२। सा। छे। व३। वा।
अ। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥

भा१

अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्तितप्रथमभागानिवृत्तिकरणगे। गु१। अनि। जो१। प६।
प्रा१०। सं२। मै। ग१। म। इ१। का१। यो९। वे३। क४। ज्ञा४। सं२। सा। छे।
५ व३। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥

भा१

अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्तितद्वितीयभागानिवृत्तिकरणगे। गु१। अनि। जि१। प६।
प्रा१०। सं१। प। ग१। म। इ१। का१। यो९। वे०। क४। ज्ञा४। म। थु। वा।
सं२। सा। छे। व३। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥

भा१

तृतीयभागानिवृत्तिकरणगे। गु१। जो१। प६। प्रा१०। सं१। प। ग१। म। इ१।
१० का१। यो९। वे०। क३। ज्ञा४। सं२। सा। छे। व३। ले६। भ१। सं२। उ।
क्षा। सं१। आ१। उ७॥

भा१

चतुर्थभागानिवृत्तिकरणगे। गु१। अनि। जो१। प६। प्रा१०। सं१। प। ग१। म।
म। इ१। का१। यो९। वे०। क२। ज्ञान४। सं२। सा। छे। व३। ले६। भ१।
सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥

भा१

१५ पंचमभागानिवृत्तिकरणगे। गु१। अनि। जो१। प६। प्रा१०। सं१। प। ग१। म।
इ१। प०। का१। त्र। यो९। वे०। क१। लो। ज्ञा४। सं२। सा। छे। व३। ले६।
भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥

सं२। म। इ१। पं। का१। त्र। यो९। वे३। क४। ज्ञा४। सं२। सा। छे। व३। वा।
ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥ अनिवृत्तिकरणप्रथमभागवर्तिना—गु१। अनिवृत्ति।
भा१

२० जो१। प६। प्रा१०। सं२। मै। प। ग१। म। इ१। का१। यो९। वे३। क४। ज्ञा४। सं२।
सा। छे। व३। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥ तद्वितीयभागवर्तिना—गु१। अनि।
भा१

जो१। प६। प्रा१०। सं१। प। ग१। म। इ१। का१। यो९। वे०। क४। ज्ञा४। म। थु। वा।
सं२। सा। छे। व३। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥ तृतीयभागवर्तिना—गु१।
भा१

अनि। जो१। प६। प्रा१०। सं१। प। ग१। म। इ१। का१। यो९। वे०। क३। ज्ञा४।
२५ सं२। सा। छे। व३। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥ चतुर्थभागवर्तिना—गु१। अनि।
भा१

जो१। प६। प्रा१०। सं१। प। ग१। म। इ१। का१। यो९। वे०। क२। ज्ञा४। सं२।
सा। छे। व३। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ७॥ पंचमभागवर्तिना—गु१। अनि। जो१।
भा१

प६। प्रा१०। सं१। प। ग१। म। इ१। पं। का१। त्र। यो९। वे०। क१। लो। ज्ञा४। सं२।

इं०। का०। यो०। वे०। क०। जा१। फे। सं०। उ१। के। ले०। भा०।
क्षा। सं०। आ१। अनाहार। उ२॥

अवेगवोळु गत्यनुवावोळु नारकगळगे सामान्याळापं पेळस्पडुवलि। गु४।
५ प। अ। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग१। नरकगति। इं१। का१। यो१।
वा४। वे२। का१। वे१। पं। क४। जा६। कु। कु। वि। म। भु। अ। सं१।
व३। च। अ। अ। ले३। भ२। सं६। मि। सा। मि। उ। वे। क्षा।
भा३
आ२। उ९॥

सामान्यपर्म्यस्तिनारकगं गु४। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। न।
१० का१। यो२। वे१। पं०। क४। जा६। कु। कु। वि। म। भु। अ। सं१। ज।
च। अ। अ। ले१। कु। भ२। सं६। मि। सा। मि। उ। वे। क्षा। सं२। उ९॥
भा३

सामान्यनारकापर्याप्तिकगे गु२। मि। अ। जी२। प६। प्रा७। सं४। ग।
इं१। का१। यो२। वे। नि। का॥ वे१। प०। क४। जा५। कु। कु। म।
सं१। अ। व३। ले२। क। भु। भ२। सं३। मि। वे। क्षा। सं१। आ२। उ८।
भा३

सामान्यनारकमिम्यावृष्टिगळगे गु१। मि। जी२। प। अ। प६। ६। प्रा१।
१५ सं४। ग१। न। इं१। का१। यो१। वे१। प०। क४। जा३। कु। कु। वि।
अ। व२। ले३। भ२। सं१। मि। सं१। आ२। उ९॥
भा३

प०। प्रा०। सं०। ग०। इं०। का०। यो०। वे०। क०। जा१। के। स०। द१। के।
भ०। स१। सा। सं०। आ१। अनाहार। उ२।

आदेशे गत्यनुवादे नारकाणां—गु४। जी२। प। अ। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग।
२० इं१। का१। यो१। प४। वा४। वे२। का१। वे१। पं। क४। जा६। कु। कु। वि। म। भु।
अ। व३। च। अ। अ। ले३। पर्याप्तिकपरि कृष्णलेस्या एकेव अपर्याप्तिकाले करोतलेस्या विप्रहृष्टौ गु
भा३

इति द्रव्यलेस्यावत। भ२। स६। मि। सा। मि। उ। वे। क्षा। सं१। आ२। उ९। तत्पर्याप्तानां
जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। न। इं१। का१। यो१। वे१। पं। क४। जा६। कु।
भु। अ। सं१। अ। व३। च। अ। अ। ले१। कु। भ२। स६। मि। सा। मि। उ। वे। क्षा। सं१। आ१।
भा३

२५ तत्पर्याप्तानां—गु२। मि। अ। जी१। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग१। न। इं१। का१।
वे। मि। क। वे१। पं। क४। जा५। कु। कु। म। भु। अ। सं१। अ। व३। ले२। क। भु। भ२। सं३। मि।
भा३

सं१। आ२। उ८। तन्मिम्यावृष्टेना—गु१। मि। जी२। प। अ। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग।
इं१। का१। यो१। वे१। पं। क४। जा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ले३। भ२। सं१। मि।
भा३

सामान्यनारकपर्याप्तसंयतं। गु१। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। न। ई१।
का१। यो१। वे१। पं०। क४। ज्ञा३। म। धु। अ। सं१। अ। द३। ले१। भ१। स३।
भा३
उ। वे। सा। स१। आ१। उ५६॥

सामान्यनारकापर्याप्तसंयतं। गुण१। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४।
५ ग१। न। ई१। का१। यो२। वे१। मि। का। वे१। पं०। क४। ज्ञा३। म। धु। अ।
सं१। अ। द३। ले२। क३। भ१। सं२। वे१। सा॥ सं१। आ२। उ६॥
भा१ कपो

धर्मेय सामान्यनारकर्मो। गु४। जी२। प। अ। प६। द६। प्रा१०। उ। सं४। ग१।
न। ई१। का१। यो१। म४। वा४। ये२। का१। ये१। पं०। क४। ज्ञा६। कु। कु।
वि। म। भु। अ। सं१। अ। द३। ले३। क३। भु। भ२। सं६। सं१। आ२। उ९॥
भा१

१० धर्मेय सामान्यनारकपर्याप्तकर्मो। गु४। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। न। ई१।
का१। यो१। म४। वा४। ये२। का१। ये१। पं०। क४। ज्ञा६। सं१। अ। द३।
ले१। क३। भ२। सं६। सं१। आ१। उ९॥
भा१ क

धर्मेय सामान्यनारकापर्याप्तकर्मो। गु२। मि। अ। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ।
१५ सं४। ग१। न। ई१। का१। यो२। वे१। मि। का। वे१। पं०। क४। ज्ञा५। कु। कु। म।
भु। अ। सं१। अ। द३। ले२। क३। भु। भ२। स३। मि। वे। सा। सं१। आ२। उ८॥
भा१ क

आ२। उ६। तत्पर्याप्तानां—गु१। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। न। ई१। का१। यो१।
वे१। पं०। क४। ज्ञा३। म। धु। अ। सं१। अ। द३। ले१। क३। भ१। स३। उ५। वे। सा। सं१।
भा३ अ

आ१। उ९। तत्पर्याप्तानां—गु१। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग१। न। ई१। का१।
२० यो१। वे१। मि। का। वे१। पं०। क४। ज्ञा३। म। धु। अ। सं१। अ। द३। ले२। क३। भु। भ१। स३।
भा३ अमभ

सा। सं१। आ२। उ९। पर्याप्तानां—गु४। जी२। प६। अ। प६। द६। प्रा१०। उ। सं४। ग१। न।
ई१। का१। यो१। म४। वा४। ये२। का१। ये१। पं०। क४। ज्ञा६। कु। कु। वि। म। भु। अ। सं१।
अ। द३। ले३। क३। भु। भ२। स६। सं१। आ२। उ९। तत्पर्याप्तानां—गु४। जी१। प६।
भा१ क

प्रा१०। सं४। ग१। न। ई१। का१। यो१। म४। वा४। ये२। का१। वे१। पं०। क४। ज्ञा५।
२५ सं१। अ। द३। ले१। क३। भ२। स६। सं१। आ१। उ९। तत्पर्याप्तानां—गु२। मि। अ। जी१।
भा१ क

अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग१। न। ई१। का१। यो२। वे१। मि। का। वे१। पं०। क४। ज्ञा५।
कु। कु। म। भु। अ। सं१। अ। द३। ले२। क३। भु। भ२। स३। मि। वे। सा। सं१। आ२। उ८।
भा१ क

द्वितीयापृथ्वीनारकसम्यग्मिष्यादुष्टिगन्धो । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । गति १ ।
इं १ । का १ । यो ९ । वे १ । क ४ । ज्ञा ३ ॥ सं १ । व २ । ले १ । भ १ । सं १ । मिष ।
सं १ । आ १ । उ ९ ॥

द्वितीयापृथ्वीनारकाऽसंयतसम्यग्दुष्टिगन्धो । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे १ । क ४ । ज्ञा ३ । म । धु । अ । सं १ । अ । व ३ । च । अ ।
अ । १ । भ १ । सं २ । उ । ये । सं १ । आ । १ । उ ६ । म । धु । अ । च । अ । अ ॥

तिष्यंचरु पंचप्रकारमप्परवरोळु सामान्यतिष्यंचरुगन्धो । गु ५ । जी १४ । प ६ । ६ । ५ ।
५ । ४ । ४ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । ६ । ५ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग १ ।
ति १ । इं ५ । का ६ । यो ११ । म ४ । व ४ । ओ २ । का १ । ये ३ । क ४ । ज्ञा ६ । म । धु । अ ।
कु । कु । वि । सं २ । अ । वे । व ३ । च । अ । अ । ले ६ । द्रव्यदोळु भावदोळु भ २ । सं ६ ।

भा ६
उ । वे । क्षा । मि । सा । मि । सं २ । आ २ । उ ९ । म । धु । अ । कु । कु । वि । च । अ । अ ॥

तिष्यंच सामान्यपर्याप्तकर्णो । गु ५ । जी ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ ।
६ । ५ । ४ । सं ४ । ग १ । ति । इं ५ । का ६ । यो ९ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ६ । सं २ । व ३ ।
ले ६ । भ २ । स ६ । सं २ । आ १ । उ ९ ॥

६
१५ तिष्यंचसामान्यापर्याप्तकर्णो । गु ३ । मि । सा । अ । जी ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा ७ । ७ ।
६ । ५ । ४ । ३ । सं ४ । ग १ । ति । इं ५ । का ६ । यो २ । मिथका । वे ३ । क ४ । ज्ञा ९ ।
म । धु । अ । कु । कु । सं १ । अ । व ३ । च । अ । अ । ले श क शु भ २ । सं ४ । मि । सा ।
भा ३ अशु

तत्सम्यग्मिष्यादुष्टा—गु १, जी १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, इं १, का १, यो ९, वे १, क ४, ज्ञा ३,
सं १, व २, ले १, भ १, सं १, मिथ, सं १, आ १, उ ९, तदसंयतानां गु १, जी १, प ६, प्रा १०,
भा १

२० सं ४, ग १, इं १, का १, यो ९, वे १, क ४, ज्ञा ३ म धु अ, सं १, अ, व ३, च अ अ । ले १ व ।
स २ उ वे, सं १ आ १ उ ६ म धु अ च अ अ ।
भा १

पञ्चविषयिष्यं सामान्यानां—गु ५ । जी १४ । प ६ ६ ५ ५ ४ ४ । प्रा १० ७ ९ ७ ८ ६ ७ ५ ।
४ ४ ३ । सं ४ । म १ ति । इं ५ । का ६ । यो ११ म ४ व ४ ओ २ का १ । वे ३ । का ४ । ज्ञा ६ ।
कु वि म धु अ । सं २ अ वे । व ३ च अ अ । ले ६ । भ २ । स ६ उ वे सा मि सा मि । सं २ ।
भा ६

२५ आ २ । उ ९ म धु अ कु कु वि च अ अ । तत्पर्याप्तानां—गु ५ । जी ७ । प ६ ५ ४ । प्रा १० ९ ८ ७ ६ ।
४ । सं ४ । म १ ति । इं ५ । का ६ । यो ९ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ६ । सं २ । व ३ । ६ । भ २ ।
भा ६
व ९ । सं २ । आ १ । उ ९ । तत्पर्याप्तानां—गु ३ मि सा अ । जी ७ । प ६ ५ ४ । प्रा ७ ७ ६ ५ ४ ।
सं ४ । ग १ ति । इं ५ । का ६ । यो २ मिथ का । वे ३ । क ४ । ज्ञा ५ कु कु म धु अ । सं १ । अ ।

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA
MŪRTIDEVĪ JAIN GRANTHAMĀLĀ
FOUNDED BY

LATE SAHU SHANTI PRASAD JAIN
IN MEMORY OF HIS LATE MOTHER SHRIMATI MURTIDEVI
AND
PROMOTED BY HIS BENEVOLENT WIFE
LATE SHRIMATI RAMA JAIN

**IN THIS GRANTHAMĀLĀ CRITICALLY EDITED JAINA ĀGAMIC, PHILOSOPHICAL,
PURĀṆIC, LITERARY, HISTORICAL AND OTHER ORIGINAL TEXTS
AVAILABLE IN PRAKRIT, SANSKRIT, APABHRĪṢA, HINDI,
KANNADA, TAMIL, ETC., ARE BEING PUBLISHED
IN THEIR RESPECTIVE LANGUAGES WITH THEIR
TRANSLATIONS IN MODERN LANGUAGES.**

ALSO
BEING PUBLISHED ARE
CATALOGUES OF JAINA-BHANḌARAS, INSCRIPTIONS, ART AND
ARCHITECTURE

क्षेत्र और कालको लेकर उन्नीस काण्डक	६४२	यथाश्रुतका स्वरूप	१८६
द्रव्य और अद्रव्य वृद्धिका प्रमाण	६४५	देशविरतका स्वरूप	१८७
देशावधिका उत्कृष्ट द्रव्यादि	६४६	देशविरतके ग्यारह भेद	१८७
परमावधिका उत्कृष्ट द्रव्य	६४८	असंयतका स्वरूप	१८८
सर्वावधिका विषय	६४९	इन्द्रियोंके विषय	१८८
उत्कृष्ट अवधिज्ञानका क्षेत्र	६५२	संयममार्गणामें जीवसंख्या	१८८
परमावधिका उत्कृष्ट क्षेत्र काल	६५३		
नरकरातिमें अवधिका विषयक्षेत्र	६५७	१४. दर्शनमार्गणा	६९१-६९५
अन्य गतियोंमें	६५८	दर्शनका स्वरूप	६९१
भवन्तिकमें	६५९	बसुदर्शनका स्वरूप	६९२
स्वर्गवासी देवोंमें	६६०	अबसुदर्शनका स्वरूप	६९२
कल्पवासी देवोंमें अवधिज्ञानका विषय द्रव्य		अवधिदर्शनका स्वरूप	६९२
लानेका क्रम	६६२	केवलदर्शनका स्वरूप	६९२
कल्पवासी देवोंके अवधिज्ञानके विषय-कालका प्रमाण	६६३	दर्शनमार्गणामें जीवसंख्या	६९३
मनःपर्यय ज्ञानका स्वरूप	६६४	१५. लेशयामार्गणा	६९६-७०५
मनःपर्ययके भेद	६६५	लेशयाका स्वरूप	६९६
विपुलमतिके भेद	६६६	लेशयामार्गणाके अधिकार	६९७
मनःपर्ययकी उत्पत्ति द्रव्यमगसे	६६७	लेशयाके छह भेद	६९८
द्रव्यमनसा स्वरूप	६६७	द्रव्य लेशयाका स्वरूप	६९८
मनःपर्यय ज्ञानके स्वाामी	६६८	नरकादि गतियोंमें द्रव्य लेशया	६९९
ऋजुमति और विपुलमतिमें अन्तर	६६८	परिणामाधिकार	७००
ऋजुमतिके जाननेका प्रकार	६६९	लेशयाओंके स्थान	७०१
विपुलमतिके जाननेका प्रकार	६७०	उन स्वाामीमें परिणमन	७०२
ऋजुमतिके विषयभूत अण्व्य और उत्कृष्ट द्रव्य	६७१	संक्रमणके दो भेद	७०४
विपुलमतिके विषयभूत अण्व्य द्रव्य	६७२	संक्रमणमें छह हानि-वृद्धियाँ	७०५
विपुलमतिवा उत्कृष्ट द्रव्य क्षेत्र	६७३	लेशयाओंका कार्य	७०७
ऋजुमति-विपुलमतिके काल	६७४	इष्टलेशयाका लक्षण	७०७
क्षेत्रज्ञानका स्वरूप	६७६	नीललेशयाके लक्षण	७०८
ज्ञानमार्गणामें क्षेत्र लेशया	६७७	कपोल लेशयाके लक्षण	७०९
१३. संयममार्गणा	६८१-६९०	चैत्रोलेशयाके लक्षण	७०९
संयमका स्वरूप	६८१	पद्मलेशयाके लक्षण	७१०
संयममात्रका कारण	६८१	पुष्पलेशयाके लक्षण	७१०
शामादिक संयमका स्वरूप	६८२	लेशयाओंके छव्वीस अंश	७११
छेत्रोत्तरपानताका स्वरूप	६८४	अपहर्ष कालमें आयुवर्ण्य	७१२
परिहार सिद्धि शिक्के	६८४	लेशयाओंके उत्कृष्ट आदि वर्तोंमें मरनेवालोंका जन्म	७१८
सुप्तमागपानका स्वरूप	६८५	नारदियों आदिमें लेशया	७१९

सायक श्रेणिमें जीवसंख्या	८६५	२१. ओघादेश प्ररूपणाधिकार	९०४-९३४
सयोमीजिनोकी संख्या	८६६	नरकादि गतियोंमें गुणस्थान	९०४
राव संयमियोंकी संख्या	८६९	मनोयोग-वचनयोगमें गुणस्थान	९०६
अयोमियोंकी संख्या	८७०	औदारिक-औदारिक मिश्रमें	९०६
चारों गतिके मिश्रदुष्टि, सासादन, मिश्र और		वैक्रियिक-वैक्रियिक मिश्रमें	९०७
असंयत सम्पदुष्टियोंकी संख्याके सायक		आहारक-आहारक मिश्रमें	९०८
पत्यके भागहारोंका कथन	८७०	कार्मणकाय योगमें	९०८
मनुष्यगतिमें सासादन आदि पाँच गुणस्थानों-		वेदमार्गनामें	९०९
में संख्या	८८१	क्यायमार्गनामें	९१०
आदिक सम्पदसंनका स्वरूप	८८३	ज्ञानमार्गनामें	९१०
आदिक सम्पदसंनकी विशेषताएँ	८८४	संयममार्गनामें	९११
वेदक सम्पदसंनका स्वरूप	८८५	दर्शनमार्गनामें	९१३
उत्तम सम्पदवक्ता स्वरूप	८८५	सेव्यमार्गनामें	९१३
पाँच लक्षियोंका स्वरूप	८८५	सम्पदवमार्गनामें	९१४
उत्तम सम्पदवक्ताको ग्रहण करनेके योग्य जीव	८८६	द्वितीयोपनाम सम्पदत्वमें	९१५
सासादन सम्पददुष्टिका स्वरूप	८८७	संज्ञीमार्गनामें	९१६
सम्पदमिद्वन्नादुष्टिका स्वरूप	८८७	आहारमार्गनामें	९१७
मिद्वन्नादुष्टिका स्वरूप	८८७	गुणस्थानोंमें जीवसमाप्त	९१८
सम्पदव मार्गनामें जीवगत्या	८८८	गति मार्गनामें जीवसमाप्त	९१८
१८. संज्ञिमार्गना	८९२-८९४	गुणस्थानोंमें वयसि और प्राण	९१९
संज्ञी-असंज्ञीका कथन	८९२	गुणस्थानोंमें संज्ञा	९१९
संज्ञी-असंज्ञी जीवोंकी संख्या	८९३	गुणस्थानोंमें मार्गना	९२१
१९. आहारमार्गना	८९५-८९९	गुणस्थानोंमें योग	९२५
आहारका कथन	८९५	गुणस्थानोंमें उपयोग	९३३
आहारक और आहारक	८९६	२२. आलापाधिकार	९३५-१०७२
सायक सम्पदवक्ता	८९६	गुणस्थानोंमें आचार	९३६
सम्पदवक्ता का कथन	८९६	कामान्य-वर्णन-व्यपसि तीन आलाप	९३७
आहार-अवहारका कथन	८९७	आचारके दो भेद	९३७
आहारको-अवहारको की संख्या	८९७	चोदू मार्गनाओंमें आचार	९३८
२०. उपयोगाधिकार	९००-९०३	वर्तमानमार्गनामें आचार	९३८
उपयोगका स्वरूप और भेद	९००	इन्द्रिय मार्गनामें आचार	९४२
आहार और अवहार उपयोग	९००	काममार्गनामें आचार	९४३
और उपयोग स्वरूप	९०१	योगमार्गनामें आचार	९४४
उपयोग के भेद	९०१	वेद मार्गनाओंमें आचार	९४४
		अवयवमार्गनामें विवेक	९४७

तिर्यंच सामान्य असंयत सम्यग्दृष्टिमें

सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टि पर्याप्त

बीस प्ररूपनामोंका कथन		१६४	बीस प्रकारका		१७१
"	"	असंयत पर्याप्त	"	"	अपर्याप्त
"	"	असंयत अपर्याप्त	"	"	सासादन
सामान्य तिर्यञ्च देश संयत		१६५	"	"	पर्याप्त
पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च		"	"	"	अपर्याप्त
"	"	पर्याप्तक	"	"	सम्यग्मिथ्यादृष्टि
"	"	अपर्याप्तक	"	"	असंयत
"	"	मिथ्यादृष्टि	"	"	असंयत पर्याप्त
"	"	मिथ्यादृष्टि पर्याप्त	१६६	"	असंयत अपर्याप्त
"	"	मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त	"	"	संयतासंयत
"	"	सासादन	"	"	प्रमत्त
"	"	सासादन पर्याप्त	"	"	प्रमत्त पर्याप्त
"	"	सासादन अपर्याप्त	"	"	प्रमत्त अपर्याप्त
"	"	मिथ्य	"	"	अप्रमत्त
"	"	असंयत	१६७	"	अपूर्वकरण
"	"	असंयत पर्याप्त	"	"	अनिदृष्टि प्रथम०
"	"	असंयत अपर्याप्त	"	"	" द्वितीय०
"	"	देशसंयत	"	"	" तृतीय०
"	"	योनिमती	१६८	"	" चतुर्थ०
"	"	योनिमती पर्याप्त	"	"	" पंचम
"	"	योनिमती अपर्याप्त	"	"	सूक्ष्मसाध्याय
"	"	" मिथ्यादृष्टि	"	"	उपशान्त कथाय
"	"	योनिमती मिथ्यादृष्टि	"	"	स्वीयकथाय
"	"	पर्याप्त	१६९	"	संयोगकेवली
"	"	योनिमती मिथ्यादृष्टि	"	"	अयोगकेवली
"	"	अपर्याप्त	"	"	मानुषी
"	"	योनिमती सासादन	"	"	मानुषी पर्याप्त
"	"	" " पर्याप्त	"	"	मानुषी अपर्याप्त
"	"	" " अपर्याप्त	"	"	मानुषी मिथ्यादृष्टि
"	"	" मिथ्य	१७०	"	मानुषी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि
"	"	असंयत	"	"	मानुषी अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि
"	"	देशसंयत	"	"	सासादन
"	"	सम्यग्पर्याप्तक	"	"	सासादन पर्याप्त
"	"	"	"	"	सासादन अपर्याप्त
"	"	"	"	"	सम्यग्मिथ्यादृष्टि
"	"	"	१७१	"	असंयत सम्यग्दृष्टि
"	"	"	"	"	देशसंयत

तिर्येक सामान्य अर्गवत्त सम्मन्वुष्टिने

सामान्य अनुपत्ति सिद्धान्तुष्टि तर्गत

बीम प्रकरणाप्रोक्त कथन ११४

बीम पञ्चगण

"	"	अर्गवत्त पर्याप्त	"	"	"	"	"	अर्गवत्त	"
१०	"	अर्गवत्त अपर्याप्त	"	"	"	"	"	सासादन	"
सामान्य तिर्येक देश संयत			"	११५	"	"	"	पर्याप्त	"
परोक्षिद्वय तिर्येक			"	"	"	"	"	अपर्याप्त	"
"	"	पर्याप्तक	"	"	"	"	"	सम्प्रतिष्ठापनादुष्टि	"
"	"	अपर्याप्तक	"	"	"	"	"	अर्गवत्त	"
"	"	मिथ्यादुष्टि	"	"	"	"	"	अर्गवत्त पर्याप्त	"
"	"	मिथ्यादुष्टि पर्याप्त	"	११६	"	"	"	अर्गवत्त अपर्याप्त	"
"	"	मिथ्यादुष्टि अपर्याप्त	"	"	"	"	"	संयतार्गवत्त	"
"	"	सासादन	"	"	"	"	"	प्रमत्त	"
"	"	सासादन पर्याप्त	"	"	"	"	"	प्रमत्त पर्याप्त	"
"	"	सासादन अपर्याप्त	"	"	"	"	"	प्रमत्त अपर्याप्त	"
"	"	मिथ्य	"	"	"	"	"	अन्यमत्त	"
"	"	असंयत	"	११७	"	"	"	अपूर्वकरण	"
"	"	असंयत पर्याप्त	"	"	"	"	"	अनिवृत्ति प्रथम०	"
"	"	असंयत अपर्याप्त	"	"	"	"	"	द्वितीय०	"
"	"	देशसंयत	"	"	"	"	"	तृतीय०	"
"	"	योनिमती	"	११८	"	"	"	चतुर्थ०	"
"	"	योनिमती पर्याप्त	"	"	"	"	"	पंचम	"
"	"	योनिमती अपर्याप्त	"	"	"	"	"	सूक्ष्मसाम्प्रदाय	"
"	"	" मिथ्यादुष्टि	"	"	"	"	"	उपशान्त कृपाय	"
"	"	योनिमती मिथ्यादुष्टि	"	"	"	"	"	क्षीणकृपाय	"
"	"	पर्याप्त	"	११९	"	"	"	शयोगकेवली	"
"	"	योनिमती मिथ्यादुष्टि	"	"	"	"	"	अयोगकेवली	"
"	"	अपर्याप्त	"	"	"	"	"	मानुषी	"
"	"	योनिमती सासादन	"	"	"	"	"	मानुषी पर्याप्त	"
"	"	" " पर्याप्त	"	"	"	"	"	मानुषी अपर्याप्त	"
"	"	" " अपर्याप्त	"	"	"	"	"	मानुषी मिथ्यादुष्टि	"
"	"	" मिथ्य	"	१२०	"	"	"	मानुषी पर्याप्त मिथ्यादुष्टि	"
"	"	" असंयत	"	"	"	"	"	मानुषी अपर्याप्त मिथ्यादुष्टि	"
"	"	" देशसंयत	"	"	"	"	"	सासादन	"
"	"	सर्वव्यपरीक्षक	"	"	"	"	"	सासादन पर्याप्त	"
सामान्य अनुपत्ति			"	"	"	"	"	सासादन अपर्याप्त	"
"	"	पर्याप्त	"	"	"	"	"	सम्प्रतिष्ठापनादुष्टि	"
"	"	अपर्याप्त	"	१२१	"	"	"	असंयत सम्मन्वुष्टि	"
"	"	मिथ्यादुष्टि	"	"	"	"	"	देशसंयत	"

पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि पर्याप्त	"	१९५	मनोयोगी मिथ्यादृष्टि	बीज प्रख्यापना १००४
" " अपर्याप्त	"	"	मनोयोगी सासादन	" "
असंज्ञि पंचेन्द्रिय	"	"	मनोयोगी मिथ्य	" १००५
असंज्ञि पंचेन्द्रिय पर्याप्त	"	"	मनोयोगी असंयत	" "
" अपर्याप्त	"	"	मनोयोगी देशसंयत	" "
सामान्य पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्त	"	१९६	मनोयोगी प्रसक्त	" "
संज्ञि पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्त	"	"	असत्य मनोयोगी	" १००६
असंज्ञि पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्त	"	"	वाग्योगी	" "
कामानुवाद	"	"	वाग्योगी मिथ्यादृष्टि	" "
पदकाय सामान्य पर्याप्त	"	१९७	काययोगी	" "
पदकाय सामान्य अपर्याप्त	"	"	" पर्याप्तक	" १००७
पुष्पीकाय	"	"	अपर्याप्तक	" "
पुष्पीकाय पर्याप्तक	"	"	मिथ्यादृष्टि	" "
पुष्पीकाय अपर्याप्तक	"	१९८	" पर्या०	" "
बाह्य पुष्पीकायिक	"	"	" अर्या०	" "
" " पर्याप्त	"	"	सासादन	" १००८
" " अपर्याप्त	"	"	" पर्याप्तक	" "
वनस्पतिकायिक	"	१९९	" अपर्याप्तक	" "
" " पर्याप्त	"	"	सम्बन्धिमिथ्यादृष्टि	" "
" " अपर्याप्त	"	"	असंयत सम्बन्धिमिथ्यादृष्टि	" "
प्रत्येक वनस्पति	"	"	पर्याप्त असंयत	" १००९
" पर्याप्तक	"	१०००	अपर्याप्त असंयत	" "
" अपर्याप्तक	"	"	देशविरत	" "
छापारण वनस्पति	"	"	प्रसक्तसंयत	" "
" पर्याप्तक	"	"	अप्रसक्तसंयत	" "
" अपर्याप्तक	"	१००१	सयोगकेवलि	" १०१०
छापारण बाह्य वनस्पति	"	"	औदारिक काययोगी	" "
" " पर्याप्तक	"	"	मिथ्यादृष्टि	" "
" " अपर्याप्तक	"	"	सासादन	" "
त्रसकाय	"	१००२	सम्बन्धिमिथ्यादृष्टि	" "
त्रस पर्याप्तक	"	"	असंयत सम्बन्धिमिथ्यादृष्टि	" १०११
त्रस अपर्याप्तक	"	"	देशत्रयी	" "
त्रस मिथ्यादृष्टि	"	१००३	औदारिक मिथ्यकाययोगी	" "
" " पर्याप्त	"	"	मिथ्यादृष्टि	" "
" " अपर्याप्त	"	"	सासादन	" "
अवाय	"	"	असंयत	" १०१२
त्रग लब्ध पर्याप्तक	"	"	सयोगकेवलि	" "
मनोयोगी	"	"	"	" "

કૃતિ કૃત્રુત્તમાનિ મિથ્યાદુષ્ટિ પર્યાપ્તક		અવધિદર્શનો		શીલ પ્રરુપના ૧૦૩૧	
શીલ પ્રરુપના ૧૦૨૧		" પર્યાપ્તક		" "	
" "	અપર્યાપ્તક	"	૧૦૩૦	"	અપર્યાપ્તક
" "	સાગાદન	"	"	"	કુળ્લેયયા
" "	પર્યાપ્તક	"	"	"	પર્યાપ્તક
" "	અપર્યાપ્તક	"	૧૦૩૧	"	અપર્યાપ્તક
વિભંગમાનિ		"	"	"	મિથ્યાદુષ્ટિ
"	મિથ્યાદુષ્ટિ	"	"	"	પર્યાપ્તક
"	સાગાદન	"	"	"	અપર્યાપ્તક
મતિપ્રુત્તમાનિ		"	"	"	સાગાદન
"	પર્યાપ્તક	"	૧૦૩૨	"	પર્યાપ્તક
"	અપર્યાપ્તક	"	"	"	અપર્યાપ્તક
"	અસંયત	"	"	"	મિથ
મતિપ્રુત્તમાનિ અસંયત અપર્યાપ્તક		"	૧૦૩૨	"	અસંયત સમ્યદુષ્ટિ
"	પર્યાપ્તક	"	"	"	પર્યાપ્તક
મતિપ્રુત્તમાનિ		"	૧૦૩૩	"	અપર્યાપ્તક
કેદરમાનિ		"	"	"	કપોતલેયયા
કેદરમાનુદા		"	"	"	પર્યાપ્તક
"	અસંયત	"	"	"	અપર્યાપ્તક
"	અસંયત	"	૧૦૩૪	"	મિથ્યાદુષ્ટિ
સામાનિક કેદર		"	"	"	પર્યાપ્તક
સામાનિક કેદર		"	"	"	અપર્યાપ્તક
અસંયત		"	"	"	સાગાદન
"	કેદર	"	૧૦૩૫	"	પર્યાપ્તક
"	અસંયત	"	"	"	અપર્યાપ્તક
અસંયત		"	"	"	સમ્યમિથ્યાદુષ્ટિ
"	કેદર	"	૧૦૩૬	"	અસંયત સમ્યદુષ્ટિ
"	અસંયત	"	"	"	પર્યાપ્તક
"	વિભંગદુષ્ટિ	"	"	"	અપર્યાપ્તક
અસંયત		"	"	"	કેદર
"	કેદર	"	૧૦૩૭	"	પર્યાપ્તક
"	અસંયત	"	"	"	અપર્યાપ્તક
અસંયત		"	"	"	મિથ્યાદુષ્ટિ
"	કેદર	"	"	"	પર્યાપ્તક
"	અસંયત	"	૧૦૩૮	"	અપર્યાપ્તક
અસંયત		"	"	"	સાગાદન
"	કેદર	"	"	"	પર્યાપ્તક
"	અસંયત	"	"	"	અપર્યાપ્તક

कृमिमत कृद्युतज्ञानि मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक

अवधिदर्शनी

वीथ प्ररूपणा १०३९

वीथ प्ररूपणा १०२९	पर्याप्तक		
अपर्याप्तक	अपर्याप्तक		
सासादन	वृज्जलेस्या		
पर्याप्तक	पर्याप्तक		
अपर्याप्तक	अपर्याप्तक		१०४०
विभंगज्ञानि	मिथ्यादृष्टि		
मिथ्यादृष्टि	पर्याप्तक		
सासादन	अपर्याप्तक		
मतिभ्रुतज्ञानि	सासादन		१०४१
पर्याप्तक	पर्याप्तक		
अपर्याप्तक	अपर्याप्तक		
असंयत	मिथ		
मतिभ्रुतज्ञानि असंयत अपर्याप्तक	असंयत सम्पद्दृष्टि		
पर्याप्तक	पर्याप्तक		१०४२
मनःपर्ययज्ञानि	अपर्याप्तक		
केवलज्ञानि	कपोतलेस्या		
संयमानुवाद	पर्याप्तक		१०४३
प्रमत्त संयत	अपर्याप्तक		
अप्रमत्त सं.	मिथ्यादृष्टि		
छायाधिक संयम	पर्याप्तक		
परिहारविगुडि	अपर्याप्तक		१०४४
मद्याख्यात संयम	सासादन		
असंयम	पर्याप्तक		
पर्याप्तक	अपर्याप्तक		
अपर्याप्तक	सम्पद्मिथ्यादृष्टि		
अशुद्धिर्दृष्टी	असंयत सम्पद्दृष्टि		१०४५
पर्याप्तक	पर्याप्तक		
अपर्याप्तक	अपर्याप्तक		
मिथ्यादृष्टि	तेजोलेस्या		
पर्याप्तक	पर्याप्तक		
अपर्याप्तक	अपर्याप्तक		१०४६
अशुद्धिर्दृष्टी	मिथ्यादृष्टि		
पर्याप्तक	पर्याप्तक		
अपर्याप्तक	अपर्याप्तक		
मिथ्यादृष्टि	सासादन		
पर्याप्तक	पर्याप्तक		१०४७
अपर्याप्तक	सासादन अपर्याप्त		

संज्ञी सासादन पर्याप्तक	वीथ प्ररूपणा	१०६३	आहारी	प्रमत्त	वीथ प्ररूपणा	१०६८
" " अपर्याप्तक	" "	" "	"	अप्रमत्त	" "	" "
" मिथ	" "	" "	"	अपूर्वकरण	" "	" "
" असंयत स०	" "	१०६४	"	अनिवृत्ति	" "	" "
" " पर्याप्तक	" "	" "	"	सूदमसाम्पराय	" "	" "
" " अपर्याप्तक	" "	" "	"	उपशान्तकपाय	" "	१०६९
असंज्ञी	" "	१०६४	"	क्षीणकपाय	" "	" "
" पर्याप्तक	" "	" "	"	सयोगरेवली	" "	" "
" अपर्याप्तक	" "	१०६५	अनाहारी	" "	" "	" "
आहारी	" "	" "	"	मिथ्यादृष्टि	" "	१०७०
" पर्याप्तक	" "	" "	"	सासादन	" "	" "
" अपर्याप्तक	" "	" "	"	असंयत	" "	" "
" मिथ्यादृष्टि	" "	१०६६	"	प्रमत्त	" "	" "
" " पर्याप्तक	" "	" "	"	सयोगरेवली	" "	" "
" " अपर्याप्तक	" "	" "	"	अयोगरेवली	" "	१०७१
" सासादन	" "	" "	"	चिद्वपरमेष्टी	" "	" "
" " पर्याप्तक	" "	" "	"	द्वितीयोपशम सम्भत्त्व	" "	१०७३
" " अपर्याप्तक	" "	१०६७	"	चिद्वपरमेष्टीके प्ररूपणार्थ	" "	" "
" मिथ	" "	" "	"	द्रव्यसमाप्ति	" "	१०७५
" असंयत	" "	" "	"	भायानुक्रमणी	" "	१०७७
" " पर्याप्तक	" "	" "	"	टीकागतपञ्चानुक्रमणी	" "	१०८८
" " अपर्याप्तक	" "	" "	"	विशिष्ट शब्द सूची	" "	१०९२
" देशसंयत	" "	१०६८	"		" "	

प्रत्यक्षं परोक्षमुभेदितुं द्विरारम्भः प्रमाणमाह । तत्प्राप्त्यापत्तिरूपमप्यन्यत् तद्विनिर्दिष्टं ।
पत्तिनिराकरणमिदं स्याद्वादमन्वयानुसंगतमुपमं तद्विनिर्दिष्टं मातृपत्तिरूपमप्यन्यत् ।
नोद्विगोचरत्पदुपलब्धे बोद्धेयुषावरणमप्यन्यत् हेतुमात्रतत्पत्तिरूपमप्यन्यत् ।

अनन्तरं ज्ञानभेदमप्येवम् ।

यंचैव हीति पाणा मदिगुदप्रोक्षमं च केवळं ।

५ सयउवगमिया चउगे केवळमागं हो तहं ॥२००॥

यंचैव भवति ज्ञानानि मतिः स्युतावयिमनःपर्वयव केवळं । यत्परोक्षमप्यन्यत् ।
केवळज्ञानं भवेत्प्राप्त्यर्थम् ॥

मतिश्रुतावयिमनःपर्वयव केवळं हेतु सत्यज्ञानं प्रमाणं प्रमाणं मातृपत्तिरूपमप्यन्यत् ।
सामान्यपक्षेयिदं संप्रहृष्टपद्व्यापिकनयमात्रमप्यन्यत् ज्ञानमप्येव केवळं केवळं प्रमाणं प्रमाणं ।
१० पक्षेयिदं पर्वयवपत्तिरूपमप्यन्यत् ज्ञानमप्येव केवळं केवळं प्रमाणं प्रमाणं ।
यद्यपि मतिःपर्वयव केवळं ज्ञानं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं ।
द्वयगत्युपलब्धे तद्विनिर्दिष्टं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं ।
ज्ञानमप्येव । क्षयश्चासाधुपक्षमप्यन्यत् क्षयपक्षमप्यन्यत् । क्षयपक्षमप्यन्यत् ।
क्षयपक्षमप्यन्यत् प्रयोजनमप्यन्यत् क्षयपक्षमप्यन्यत् । क्षयपक्षमप्यन्यत् । प्रयोजनमप्यन्यत् ।

१५ बुद्धि-कथयन्ति अहंदादयः । एतज्ज्ञानं प्रत्यक्षं परोक्षं चेति द्विरपि प्रमाणं भवति । तत्प्राप्त्यापत्तिरूपमप्यन्यत् ।
फललक्षणानि तद्विनिर्दिष्टं पत्तिनिराकरणं स्याद्वादमन्वयानुसंगतमुपमं तद्विनिर्दिष्टं मातृपत्तिरूपमप्यन्यत् ।
अत्राहेतुवादरूपे आगमे हेतुवाच्यताविवक्षितम् ॥२११॥ अथ ज्ञानभेदान्तरम्—

मतिश्रुतावयिमनःपर्वयव केवळमागं सत्यज्ञानानि यद्यपि भोतावयिमनः । यद्यपि सामान्यपक्षेयिदं ।
संप्रहृष्टपद्व्यापिकनयमात्रमप्यन्यत् ज्ञानमप्येव केवळं केवळं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं प्रमाणं ।
२० पक्षेयैवतुलानि इत्यर्थः । तेषु मतिश्रुतावयिमनःपर्वयवतुलानि यद्यपि ज्ञानानि सामान्यपक्षेयिदं ।
मतिज्ञानापावरणबीजान्तर्भावकर्मद्रव्याणां अनुभागस्य सर्वपानिन्त्यर्थं ज्ञानमप्यन्यत् । क्षय, प्रमाणमप्यन्यत् ।
प्रमाणं तदवस्थारूप उपपन्नम् । क्षयश्चासाधुपक्षमप्यन्यत् क्षयपक्षमप्यन्यत् । क्षयपक्षमप्यन्यत् ।
अथवा क्षयपक्षमप्यन्यत् प्रयोजनमप्यन्यत् क्षयपक्षमप्यन्यत् । क्षयपक्षमप्यन्यत् । क्षयपक्षमप्यन्यत् ।

प्रकारका प्रमाण होता है । प्रमाणका स्वरूप, संख्या, विषय, फल तथा तत्प्राप्त्यर्थी विवादा-
२५ का निराकरण करके स्याद्वादसम्मत प्रमाणका स्थापन विस्तारपूर्वक प्रमेयकमलगतानुष्ठानादि
तर्कशास्त्रके ग्रन्थोंमें देखना चाहिये । इस अहेतुवाद रूप आगम ग्रन्थमें हेतुवादका अधिकार
नहीं है ॥२११॥

आगे ज्ञानके भेद कहते हैं—

मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्वय और केवळ नामक सत्यज्ञान पाँच हो हैं, न कम हैं,

१० न अधिक हैं । यद्यपि सामान्यको अपेक्षा संप्रहृ रूप द्रव्याधिक नयके आश्रयसे ज्ञान एक ही
कहा है, तथापि विशेषको अपेक्षा पर्यायाधिक नयके आश्रयसे ज्ञान पाँच ही कहे हैं यह
उक्त कथनका अभिप्राय है । उनमें-से मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्वय नामक चार ज्ञान सायो-
सर्वधाती स्पर्धकोंके उदयका अभाव रूप क्षय और जो उदय अवस्थाको प्राप्त न होकर सत्ता-
१५ में स्थित हैं उनका वही हुआ सदवस्थारूप उपपन्न । क्षय और उपपन्नको क्षयोपपन्न कहते

तत्संनिधिर्चेद्विषयव्याप्तनोक्तैर्यत्कुम्भन्योनोक्तार्थं बुद्धिरिव इतरमत्यजानमुं श्रुताज्ञानमुमेवोपज्ञानद्वयमे-
केन्द्रियादिगच्छेत् पथ्यामापय्याप्तकरोक्तैरुक्तैः मिथ्यादृष्टिस्तासावनरोक्तं संभविसुमुमेदु पेक्षत्पट्ट-
दायुः । सत् स्फुटमाणि ।

अनन्तरं सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्यानवोक्तं ज्ञानस्वरूपं पेक्ष्यं ।

मिथ्सुदृष्टं संमिस्सं अण्णाणतिण्ण णाणतियमेव ।

संजमविसेससहिण्ण मणपज्जवणाणमुद्धिट्ठं ॥३०२॥

मिथोदये संमिथमज्ञानप्रयेण ज्ञानत्रयमेव । संयमविशेषसहिते मनःपर्ययज्ञानमुद्धिट्ठं ॥

मिथोदये सम्यग्मिथ्यात्वकर्मोदयमागुत्तिरल्ल अज्ञानत्रयदोषेण सम्यग्ज्ञानत्रयमे संमिथं

- संमिथमरुतमस्यविषयेचनत्वादिवं । सम्यग्मिथ्यामतिज्ञानमुं सम्यग्मिथ्याश्रुतज्ञानमुं सम्यग्मिथ्या-
१० ययिज्ञानमुमेव व्यपदेशमवर्तुं । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोक्तं यत्मानज्ञानत्रयं केवलं सम्यग्ज्ञानमुमल्लु ।
केवलं मिथ्याज्ञानमुमल्लु । मत्तं तत्पुर्वेवोद्भवयात्मकयद्वातमात्मनोक्तं तत्तं पुत्रयात्मकत्वादिवं ज्ञानमुं
संमिथमं विनु युक्तमप्युदाचार्यैरुदाहृतं पेक्षत्पट्टदुदु । मनःपर्ययज्ञानं मत्तं संयमविशेषसहितनोक्तं
प्रमत्तमं यथादिशीनरुपायपर्यतमस्य गुणस्यानसमरुदोक्तं तपोविशेषोपपृष्टितविशुद्धिपरिणाम-
मुद्धितोक्तं संभविसुमुमितरदेसासंयतादियोक्तं संभविसवैकं बोधे देशसंपत्तादियोक्तं तद्विधतपो-
११ विशेषान्मात्रमनुसरेत् ।

मिथ्याज्ञानं सत् संमिथमं मिथ्यात्वमिथ्य एव भवति, नाप्यस्मिन् बोधे इति अनेन इतरत् मत्प्रज्ञानं श्रुताज्ञानमिति
इय एवेन्द्रियादिषु पर्याप्तारमिषु सर्वेषु मिथ्यादृष्टिगानादनेषु संभवति इति कथितं भवति । द्वितीयः सत्सुशब्दः
अतिशयेन इतराचार्यैः स्फुटं ॥३०१॥ अथ सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्याने ज्ञानस्वरूपं निरूपयति—

मिथोदये-सम्यग्मिथ्यात्वकर्मोदये इति अज्ञानत्रयेण सत् सम्यग्ज्ञानत्रयमेव संमिथं भवति अत्राय-

- २० रितेवदन्वेन सम्यग्मिथ्यामतिज्ञानं सम्यग्मिथ्याश्रुतज्ञानं सम्यग्मिथ्याययिज्ञानमिति व्यपदेशमागमवति ।
सम्यग्मिथ्यादृष्टी अज्ञानं ज्ञानत्रयं न केवलं सम्यग्ज्ञानं, न केवलं मिथ्याज्ञानं किन्तु उभयात्मकयद्वातवत्
उभयात्मकयद्वातं मिथ्याज्ञानमसिथं सम्यग्ज्ञानं भवति इत्याचार्यैः कथितं जातव्यम् । मनःपर्ययज्ञानं तु संयम-
विशेषसहितेनैव प्रमत्तमं यथादिशीनरुपायपर्यतमेव सत्सुगुणस्यानेषु तपोविशेषोपपृष्टितविशुद्धिपरिणामविशिष्टेषु
किं जी अविज्ञानका विपरीत रूप विभंग नामक मिथ्याज्ञान है वह संक्षी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके

- २१ हो होता है, अन्य जीवके नहीं होता । इससे यह व्यक्त होता है कि अन्य मतिअज्ञान और
सुदृष्टज्ञान ये दोनों पंचेन्द्रिय आदि पर्याप्त और अपर्याप्त सब मिथ्यादृष्टि और सासादन
सुगुणस्यानवर्ती जीवोंके होते हैं ॥३०१॥

अथ सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्यानमे ज्ञानका स्वरूप कहते हैं—

मिथ अर्थान् सम्यग्मिथ्यात्व कर्मका उदय होनेपर तीन अज्ञानोंके साथ तीनों

- १० सम्यग्ज्ञान निष्ठे हुए होते हैं । अलग-अलग करना शक्य न होनेसे उन्हें सम्यग्मिथ्या मति-
दृष्टिमें वर्तमान मानें । ज्ञान न केवल सम्यग्ज्ञान होते हैं और न केवल मिथ्याज्ञान होते हैं
किन्तु जैसे कर्मके सम्यग्ज्ञान और मिथ्यात्व मिथ्या हुआ अज्ञान होता है वैसे ही मिथ्याज्ञान
और सम्यग्ज्ञान निष्ठा हुआ होता है यह आचार्यका कथन जानना । किन्तु मनःपर्ययज्ञान
११ विशेष संयममे सहित प्रमत्तमं यथा नामक छटे गुणस्यानसे छेड़कर क्षीयकपाय नामक बारहवें
सुगुणस्यानवर्तन माने गुणस्यानोर्ध्वे तद्विषयेम बुद्धिको ज्ञान विनुद्धिरूप परिणामोसे विशिष्ट

अज्ञानान्न प्रसंगमुत्तरिदमुपदेनक्रियमित्युच्यते चेत्तलानुमितपूहापोहविरूपरूपमप्य हिंसातृ-
स्तेषामप्यपरिग्रहकारणमप्यार्तरीद्रव्यानकारणमप्य शल्यदंढगारवसंज्ञाप्रगस्तपरिणामकारणमप्य
इन्द्रियमनोजनितविशेषोपग्रहणमप्य मिथ्याज्ञानमनु मत्यज्ञानमेदितु निश्चयमित्युच्यते ।

आमीयमासुरकत्वं मारहरामायणादि उच्यते ।

तुच्छा असाहणीया सुयअण्णाणेति णं वेति ॥३०४॥

आभीतमासुरक्षं भारतरामायणाद्युपदेशः । तुच्छा असाधनीयाः अज्ञानानुमितदीर्घवर्ति ।

तुच्छाः परमात्यंशुन्यत्वं असाधनीयाः सत्पुरुषवर्णनावरणयोग्यं मेकं दोषं परमात्यंशुन्यत्व-
विदं आभीतमासुरक्षमारतरामायणाद्युपदेशं कृतं सत्प्रत्ययं गुरुमवर ध्वणविदं पुट्टिदुदायुदो
ज्ञानमदितु अज्ञानमिति दत्ताचार्येण कृतं पेक्ष्यम् । आसमंतात् भीताः आभीताः चोरास्तच्छास्त्र-
गम्यान्भीताः । अतः प्राणास्तेषां रक्षा येन्यस्तेऽमुरक्षास्तत्त्ववरास्तेषां शास्त्रमासुरक्षं । कौरवपांडवौप-
पंचभर्तृवैरुमाप्यादृशांतपुष्ट्यतिरारादिचर्चाभ्यामुलमं भारतमेव बुद्धि । सीताहरणरामरावणीय-
जानिधानराराधनमुद्रम्यतिरारादिचर्चाभ्यामुलमं भारतमेव बुद्धि । आदिशब्दाद्यन्मिथ्यादर्शनदूषित-
मिथ्यादर्शनदूषितमर्थं यैरातयादिचर्चाभ्यामुलमं भारतमेव बुद्धि । आदिशब्दाद्यन्मिथ्यादर्शनदूषित-

- १० अथनष्टरिषादिभूतानां कर्मण्यविशेषादिषु गृह्यते । उपदेशपूर्वकत्वे अज्ञानानुमितप्रसंगात् । उपदेशक्रिया
विना यदीदृशदोषविशेषाद्विज्ञानमप्यदिगतागुणैर्ग्राह्यकारणं आर्तरीद्रव्यानकारणं शल्यदंढगारवसंज्ञा-
प्रगस्तपरिणामकारणं च इन्द्रियमनोजनितविशेषोपग्रहणमप्य मिथ्याज्ञानं तन्मत्यज्ञानमिति निश्चयं ॥३०३॥

तुच्छाः परमात्यंशुन्यः, असाधनीयाः अथ एव सत्पुरुषाणामनादरणीयाः परमात्यंशुन्यत्वात् आभीताः-
गुरुभावात्प्राणापानाद्युपदेशः । तन्मरुताः तेषां अनादुरूपं यज्ञानं तद्विदं अज्ञानानुमितं बुध्नपाचार्यः ।
आ गम्यान्भीता आभीता चोराः तच्छास्त्रगम्यानि । अतः प्राणाः तेषां रक्षा येन्यः ते अमुरक्षाः तत्त्ववराः
तेषां शास्त्रमासुरक्षं । कौरवपांडवौपपंचभर्तृवैरुमाप्यादृशांतपुष्ट्यतिरारादिचर्चाभ्यामुलमं भारतं, सीताहरण-
रामरावणीयजानिधानराराधनमुद्रम्यतिरारादिचर्चाभ्यामुलमं भारतं । आदिशब्दाद्यन्मिथ्यादर्शनदूषित-

- ११ हां पुट्टि मगरी दे बह कुमति ज्ञान है । उपदेशपूर्वक होनेपर उसे कुटुब ज्ञानका प्रसंग आता
है । अतः उपदेशके बिना जो इस प्रकारका उदापोह विचक्षण हिंसा, असत्य, चोरी,
विषदमंसवन और परिग्रहका कारण, आर्त तथा रीद्रव्यानका कारण, शल्य, दण्ड, गारव,
गंठा आदि अदम्य परिणामोका कारण, जो इन्द्रिय और मनसे उत्पन्न हुआ विशेष
महत्त्व मिथ्या-ज्ञान है वह कुमतिज्ञान है वह निश्चय करना चाहिए ॥३०३॥

तुच्छ अर्थात् परमार्थसे शून्य और इसी कारणसे सज्जनोके द्वारा अनादरणीय

- १० आभे, अनुग्रह, मारण रामायण आदिके उपदेश, उनको रचनाई, उनका मुनना तथा
इन्हें मुननेमें प्रयत्न हुआ ज्ञान उगे आचार्य अथवाज्ञान कहते हैं । आभीत चोरको कहते
हैं क्योंकि इनमें एव ओरसे भय मनाता है । उनके शास्त्रको भी आभीत शास्त्र कहते हैं ।
अथ अर्थात् ज्ञानको रक्षा जिनमें होना है वे अमुरक्ष अर्थात् कोतवाल आदि उनके शास्त्रको
अमुरक्ष करते हैं । और वज्रध्वजे मृद, पंचमती औषधीका वृक्षान्त, युद्धकी कथा आदिकी
११ अर्थात् भरा मरामयण मय है, मीमांसन, रामको उत्पत्ति, रामकी जाति, धानरों और
रामको मृदकी वदना कारणको देख रखा गयी रामायण है । आदि शब्दसे जो-जो
विषय-दर्शनमें दूषित मर्यादाद्वारा यथेष्ट कथाप्रकथ, सुबनकोश हिंसामय यज्ञादि

प्रत्ययबलात् सम्यग्दर्शनोत्पत्तिप्रतीतेर्विशिष्टस्यावधिज्ञानस्य भंगो विपर्ययो विभंगमेवितु निरक्ति-
सिद्धात्यविकारिदमे प्ररूपितत्वं विदं ।

अनन्तरं गायानवकादिवं स्वरूपोत्पत्तिकारणभेदविपर्ययगठनान्प्रपत्ति मतिज्ञानं पेच्छपं :—

अहिमुहणियमितबोधनमाभिनिबोधिकमनिन्द्रियेन्द्रियजं ।

५

अवगहईहावाया धारणगा होति पत्तेयं ॥३०६॥

अभिमुखनियमितबोधनमाभिनिबोधिकमनिन्द्रियेन्द्रियजं । अवग्रहेहावायधारणकाः भवन्ति
प्रत्येकं ॥

स्थूलवर्तमानयोर्म्यदेशवस्थितोऽर्थोऽभिमुखः । अत्येन्द्रियस्यापमेवातः इत्यवधारितो निय-

मितोऽभिमुखइवासी नियमितश्च अभिमुखनियमितस्तस्यार्थस्य बोधनं ज्ञानमाभिनिबोधिकमेवितु

- १० मतिज्ञानमेवुदत्तं । अभिनिबोध एवाभिनिबोधिकमेवितु स्वात्यिकठण् प्रत्ययविवं सिद्धमक्कुं ।
स्पर्शानादीन्द्रियगठने स्थूलादिगठणं स्पर्शादिस्वार्थगठोऽज्ञानजननशक्तिसंभयमप्युदरिवं मूर्ध्मात-
रितदूरात्स्पर्शगठणं परमाणुशंखचक्रवत्तिनरकस्वर्गपटलमेवादिगठोऽज्ञा इन्द्रियगठो ज्ञानजननशक्ति
संभवितव्येवुदत्तं ।

इतिरिवं मतिज्ञानवके स्वरूपं पेच्छपट्टुं, एतेषुवा मतिज्ञानमेवोडे अनिन्द्रियेन्द्रियजं मनमुं

- १५ भवत्तरकारणदर्शनस्मरणानुसंधानप्रत्ययबलात् सम्यग्दर्शनोत्पत्तिप्रतीतेः । विशिष्टस्य अवधिज्ञानस्य भङ्गः—
विपर्ययः विभङ्ग इति निरक्तिसिद्धार्थस्यैव अनेन प्ररूपितत्वात् ॥३०५॥ अथ नवभिर्गायानिः स्वरूपोत्पत्ति-
कारणभेदविपर्यान् आधित्य मतिज्ञानं प्ररूपयति—

स्थूलवर्तमानयोर्म्यदेशवस्थितोऽर्थः अभिमुखः, अत्येन्द्रियस्य अपमेवार्यः इत्यवधारितो नियमितः ।

अभिमुखइवासी नियमितश्च अभिमुखनियमितः । तस्यार्थस्य बोधनं ज्ञानं आभिनिबोधिकं मतिज्ञानमित्यर्थः ।

- २० अभिनिबोध एव आभिनिबोधिकमिति स्वाधिकेन ठण्प्रत्ययेन सिद्धं भवति । स्पर्शानादीन्द्रियाणां स्थूलादिष्वेव
स्पर्शादिषु स्वार्थेषु ज्ञानजननशक्तिसंभवात् । सूक्ष्मान्तरितदूरात्पे परमाणुशंखचक्रवत्तिमेवादिषु तेषां ज्ञानजनन-
शक्तिसंभवोऽत्यर्थः । अनेन मतिज्ञानस्य स्वरूपमुक्तं । कथंभूतं तत् ? अनिन्द्रियेन्द्रियजं—अनिन्द्रियं मनः,

कथोकि नारकियोकि विभंग ज्ञानके द्वारा वेदनाभिभव और उसके कारणोंके दर्शन स्मरण
आदि रूप ज्ञानके बलसे सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति होती है । 'वि' अर्थात् विशिष्ट अवधिज्ञानका

- २५ भंग अर्थात् विपर्यय विभंग होता है इस निरक्ति सिद्ध अर्थको ही यहाँ कहा है ॥३०५॥

अथ नौ गायानोंसे स्वरूप, उत्पत्ति, कारण, भेद और विपर्ययको लेकर मतिज्ञानका
वर्णन करते हैं—

स्थूल, वर्तमान और योग्यदेशमें स्थित अर्थको अभिमुख कहते हैं । इस इन्द्रियका
यही विपर्यय है इस अवधारणाको नियमित कहते हैं । अभिमुख और नियमितको अभिमुख-

- ३० नियमित कहते हैं । उस अर्थके बोधन अर्थात् ज्ञानको मतिज्ञान कहते हैं । अभिनिबोध ही
अभिनिबोधिक है इस प्रकार स्वार्थमें ठण् प्रत्यय करनेसे इसकी सिद्धि होती है । स्पर्शन
आदि इन्द्रियोंकी अपने स्थूल आदि स्पर्श आदि विपर्ययोंमें ही ज्ञानको उत्पन्न करनेकी शक्ति

१. म स्पर्शार्थः । २. म योतण । ३. म अथ स्वरूपोत्पत्तिकारणभेदविपर्यान् आधित्य गायानवकेन
मतिज्ञाननाह । ४. म स्थूलार्थरूपस्पर्शादि स्वार्थेषु । ५. म गुनरकस्वर्गपटलमे । ६. म पं, प्रारूपितम् ।

मतिज्ञानविषयं व्यञ्जनमर्थावयवमर्थं दु द्विविधमस्ति २ । अल्लि इन्द्रियगोचरं प्राप्तमप्य विषयं व्यञ्जनमेव बुद्धकुं । इन्द्रियगोचरदमप्राप्तमप्य विषयमर्थमेव बुद्धकुमा प्राप्ताप्राप्तार्थगोचरोऽत्र क्रमदिव यथासंख्यं । आ व्यञ्जनात्प्राप्तप्रहमेवंगोचरेण २ व्यापृतौ प्रवृत्तौ भवतः प्रवृत्तगोचरपुत्रु । इन्द्रियगोचरं प्राप्तार्थविशेषप्रहणं व्यञ्जनावग्रहमवकुं । मिन्द्रियगोचरदमप्राप्तार्थविशेषप्रहणमर्थविग्रहमवकुं दु-
५ पेन्द्रतेरं । व्यञ्जनव्यक्तं शब्दाविज्ञातमेवितु तत्त्वार्थविवरणगोचरो पेन्द्रस्पष्टद्वितु पेन्द्रस्पष्टोडितो व्याख्यानदोडने तु संगतमवकुं दोड पेन्द्रस्पष्टमुं ।

विगतमञ्जनमभिव्यक्तिव्यस्य तद्व्यञ्जनं । व्यञ्ज्यते मृषयते प्राप्यते इति व्यञ्जनमेवितंजगति व्यक्ति मृषयणेपु एदितु व्यक्तिमृषयणात्त्यगन्धे ग्रहणमप्युदरितं । शब्दाद्यर्थं धोप्रादीन्द्रियदिवं प्राप्तेमुमा-
१० होडमेनेवरमभिव्यक्तमलतन्नेवरमे व्यञ्जनमेव पेन्द्रस्पष्टदुदेकवारजलरुणसिक्तनूतनशरायवते मत्तम-
मप्यकुमकुमारणादिवं चक्षुर्मनस्सुगळप्राप्तमप्य विषयवोऽत्र प्रथमोद्विष्टव्यञ्जनावग्रहमितल । चक्षु-
र्मनस्सुगळ स्वविषयमप्यार्थमेव प्राप्य पोद्विष्ये अल्लिज्ञानमं पुट्टिसुमुमे य नैव्यापिकादिमतं स्याद्वाव-

मतिज्ञानविषयो व्यञ्जनं अर्थवचेति द्विविधः । तत्र इन्द्रियैः प्राप्ते विषयो व्यञ्जनं तीरप्राप्तः अर्थः ।
सयोः प्राप्ताप्राप्तयोर्दोषयोः क्रमशः यथासंख्यं तौ व्यञ्जनावग्रहमेवो व्यापृतौ प्रवृत्तौ भवतः । इन्द्रियैः
१५ प्राप्तार्थविशेषप्रहणं व्यञ्जनावग्रहः । तीरप्राप्तार्थविशेषप्रहणं अर्थविग्रह इत्यर्थः । व्यञ्जनं—अव्यक्तं शब्दादिप्राप्तं
इति सत्त्वार्थविवरणेपु प्रोक्तं कथमनेन व्याख्यानेन सह संगतमिति चेदुच्यते । विगतं—अञ्जनं—अभिव्यक्तिर्यस्य
तद्व्यञ्जनम् । व्यञ्ज्यते मृषयते प्राप्यते इति व्यञ्जनं अञ्जु गतिव्यक्तिमृषयणेविति व्यक्तिमृषयणात्त्यगोचरहान् ।
शब्दाद्यर्थः धोप्रादीन्द्रियेण प्राप्तेपि यावन्नाभिव्यक्तस्तावद् व्यञ्जनमिदमुच्यते एकवारजलरुणसिक्तनूतन-
शरायवत् । पुनरभिव्यक्तौ सत्योऽत्र एवार्थो भवति । यथा पुनः पुनर्जलरुणसिक्तमनूतनशरायवः अभिव्यक्तौको
२० भवति । अतः कारणात् चक्षुर्मनसोऽप्राप्ते विषये प्रथमो व्यञ्जनावग्रहो नास्ति । चक्षुर्मनसो स्वविषयमर्थं
प्राप्यैव तत्र ज्ञानं जनयतः, इति नैव्यापिकादीनां मतं स्याद्वावतकंन्येषु बहुधा निरकृतमित्यत्राहेतुवादे आगमादौ

मतिज्ञानका विषय दो प्रकारका है—व्यञ्जन और अर्थ । उनमें-से इन्द्रियोंके द्वारा प्राप्त विषयको व्यञ्जन और अप्राप्तको अर्थ कहते हैं । उन प्राप्त और अप्राप्त अर्थोंमें क्रमसे व्यञ्जनावग्रह और अर्थविग्रह प्रवृत्त होते हैं । इन्द्रियोंसे प्राप्त अर्थके विशेष ग्रहणको व्यञ्जनाव-
२५ ग्रह कहते हैं, और अप्राप्त अर्थके विशेष ग्रहणको अर्थविग्रह कहते हैं ।

टांका—तत्त्वार्थसूत्रकी टीकामें कहा है, शब्दादिसे होनेवाले अव्यक्त ग्रहणको व्यञ्जन कहते हैं । उसकी संगति इस व्याख्याके साथ कैसे सम्भव है ?

समाधान—‘अञ्जु’ घातुके तीन अर्थ हैं—गति, व्यक्ति और अग्रहण । यहाँ उनमें-से व्यक्ति और अग्रहण अर्थ लेकर व्यञ्जन शब्द बना है । ‘विगतं-अञ्जनं-अभिव्यक्तिर्यस्य’ जिसका

१० अञ्जन अर्थात् अभिव्यक्ति दूर हो गया है वह व्यञ्जन है । यह अर्थ तत्त्वार्थकी टीकामें लिया है । ‘व्यञ्ज्यते मृषयते प्राप्यते इति व्यञ्जनम्’ जो प्राप्त हो वह व्यञ्जन है यह यहाँ ग्रहण किया है । शब्द आदि रूप अर्थ धोत्र आदि इन्द्रियके द्वारा प्राप्त होनेपर भी जबतक व्यक्त नहीं होता तबतक उसे व्यञ्जन कहते हैं । जैसे एक बार जलबिन्दुसे सिक्त नया सकोरा । पुनः व्यक्त होनेपर उसे ही अर्थ कहते हैं । जैसे बार-बार जलबिन्दुओंसे सींचे जानेपर नया

११ १. म. प्राप्तमर्थावयवम् । २. म. नैवमिन्द्रियैरप्राप्तो विषयव्यञ्जः । ३. म. सार्थयोः । ४. म. एते प्रोक्तमनेन गतेन व्याख्यानेन अर्थ संगतम् ।

- पेच्छत्पटुदरिदमिन्द्रियात्पदसंबधानंतरं दर्शनं पटुदुग्धमुं दु केदो गायामुत्रदोऽनुक्तमुं पूर्वाचार्य-
वचनानुसारदिदं व्याख्यानिसत्पटुदु ग्राह्यमत्रकुं कैकोच्छत्पटुदुवे बुदत्वं । गृहीते अवग्रहविवमिनु
श्वेतमेदितु जातात्वंदोऽनु विशेषमप्य बलाकारूपकागलु पताकारूपकागलु यथावस्थितयस्तुविना-
कांक्षे बलाकया भवितव्यमेदितु भवितव्यताप्रत्ययरूपमप्य बलाकयोऽनु संज्ञायमानमोहे यंब
५ द्वितीयज्ञानमक्कुमयवा पताकारूपमप्य विषयमनयलंबिसि उत्पद्यमानमनया पताकया भवितव्यमेदितु
भवितव्यताप्रत्ययरूपं पताकयोऽनु संज्ञायमानाकांक्षे ईहेयंब द्वितीयज्ञानमक्कुमिनीद्विपांतरविषय-
गळोऽनु मनोविषयदोऽनुभवग्रहगृहीतदोऽनु यथावस्थितमप्य विशेषदाकांक्षारूपमोहे येदितु निश्चित-
व्यमक्कुमेकं दोऽनु मतिज्ञानावरणक्षयोपशमतारतम्यभेदविदमवग्रहेहाज्ञानंगळो भेदसंभयमुऽनु-
वरिदमी सम्प्रज्ञानप्रकरणदोऽनुबलाका वा पताका वा येदितु संज्ञायमक्कु बलाकयोऽनु पताकया
१० भवितव्यमेदितु विषययंबक्कुमो मिष्याज्ञानंगळानवतारमेदिरयत्पटुदु ।

ज्ञानं छप्सद्यानां' इति श्रोत्रेनेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तिभिरपि प्रोक्तत्वात्, इन्द्रियार्थसंबन्धानन्तरं दर्शनमुत्पद्यते
इत्येतस्मिन् गायामुत्रे अनुक्तमपि पूर्वाचार्यवचनानुसारेण व्याख्यानं ग्राह्यमित्यर्थः । गृहीते-अवग्रहेण इदं
श्वेतमिति ज्ञाते अर्थविशेषस्य बलाकारूपस्य पताकारूपस्य वा यथावस्थितवस्तुन आकाङ्क्षा बलाकया
भवितव्यमिति भवितव्यताप्रत्ययरूपं बलाकायामेव संज्ञायमानं ईहास्यं द्वितीयं ज्ञानं भवेत् । अथवा पताकारूपं
१५ विषयमालम्ब्य उत्पद्यमाना अनया पताकया भवितव्यमिति भवितव्यताप्रत्ययरूपया पताकायामेव संज्ञायमाना
आकाङ्क्षा ईहेति द्वितीयं ज्ञानं भवेत् । एवं इन्द्रियान्तरविषयेषु मनोविषये च अवग्रहगृहीते यथावस्थितरूप-
विशेषस्य आकाङ्क्षारूपा ईहेति निश्चेतव्यम् । मतिज्ञानावरणक्षयोपशमस्य तारतम्यभेदेन अवग्रहेहाज्ञानयोर्भेद-
संभवात् । अस्मिन् सम्प्रज्ञानप्रकरणे बलाका वा पताका इति संज्ञायस्य, बलाकया पताकया भवितव्यमिति
विषयस्य च मिष्याज्ञानस्यानवतारात् ॥१०८॥

- १० अनन्तर अर्थके आकारादिको लिये हुए जो सविकल्प ज्ञान होता है वह अवग्रह है । श्री
नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्तिनी भी कहा है कि छद्मस्थोंके दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है । यद्यपि
इस गायामुत्रमें यह नहीं कहा है कि इन्द्रिय और अर्थका सम्बन्ध होनेके अनन्तर दर्शन
उत्पन्न होता है । फिर भी पूर्वाचार्योंके वचनके अनुसार व्याख्यान करना चाहिए । 'गृहीते'
अर्थात् अवग्रहके द्वारा 'यह श्वेत है' ऐसा जाननेपर बलाकारूप या पताकारूप यथावस्थित
१५ अर्थको जाननेकी आकाङ्क्षा यह बलाका—बगुलोंकी पंक्ति होना चाहिए इस प्रकार बगुलोंकी
आलम्बन लेकर अर्थात् यदि अवग्रहसे जानी हुई श्वेत वस्तु पताका प्रतीत हो तो यह
वह दूसरा ईहा ज्ञान है । इस प्रकार अन्य इन्द्रियोंके विषयमें और मनके विषयमें अवग्रहसे
२० गृहीत वस्तुमें यथावस्थित विशेषकी आकाङ्क्षारूप ज्ञान ईहा है यह निश्चय करना चाहिए ।
मतिज्ञानावरणके क्षयोपशमकी होनाधिकताके भेदसे अवग्रह और ईहा ज्ञानमें भेद होता है ।
इस सम्प्रज्ञानके प्रकरणमें 'यह बलाका है या पताका' इस संज्ञायकी तथा बलाकामें यह
पताका होनी चाहिए, इस विपरीत मिष्याज्ञानको स्थान नहीं है ॥१०८॥

ओ० दानुमो० दु० वस्तुविन प्रवेशात् एकदेशोऽनविनाभाविष्यत्प्रत्यक्षमप्य वस्तुविन प्रहणमनि-
सृतज्ञानमेषुदयवा ओ० दु० वस्तुविन एकदेशं मेणु सकलं वस्तुवं मेणुगलं प्रितिको० इ० मतामप्य-
वस्तुविन गतिः ज्ञानमायुदो० बंधुयुमनिःसृतज्ञानमवधुमवधुयाहरणमं तोरित्वं ।

पुष्करगहणे काले इत्यिस्स य वदणगवयगहणे वा ।

५. यत्तयंतरचंदस्स य घेणुस्स य बोहणं च इवे ॥३१३॥

पुष्करप्रहणे काले हस्तिनश्च वदनगवयप्रहणे वा । यत्तयंतरचंदस्य च घेनोदग बोधनं च
भवेत् ॥

जलविदं पोरणे हृदयमानमप्य पुष्करव जलमग्नहस्तिकराप्रश्च प्रहणका कवोज्ञ, दर्शनकालदोक्त
तदविनाभावि जलमग्नहस्तिप्रहणं जलदोक्त हस्तिमग्ननिर्दुर्वेदितु प्रतीति वा इव एतं इतिविमो
१० साध्यादिनाभोवनियमनिश्चयमनुक्त साधनवर्त्तणि "साधनात्तात्पर्यमानमनुमानमे"दितु अनुमान-
प्रमाणं संगृहीतमवकुं । अथवा ओ० दानुमोर्वं युवतिय यदनप्रहणकाले यदनदर्शनकालदोक्ते यत्तयंतर-
चंदप्रहणं मुखसादृश्यविदं चंद्रस्मरणं चंद्रसदृशं मुखमे"दितु प्रत्यभिज्ञानं मेणुरण्यदोक्त गवयप्रहणकाले
गवयदर्शनकालदोक्ते घेनुविन बोधनं घेनुविन स्मरणं गोसदृशं गवयमे"दितु प्रत्यभिज्ञानं मेणु भवेत्
अवकुं । अनंतरगायोक्तमप्यनिःसृतज्ञानविक्रान्तिमुदाहरणं गज । वा शब्दं पश्चात्तरसूचकं मेणु एतोगज

१५ कस्यचिद्वस्तुनः, प्रवेशाद्-एकदेशाद् व्यक्तात् तदविनाभावितोऽप्यनश्य वस्तुनो प्रहणं अगिगुणज्ञानम् ।
अथवा एकस्य वस्तुनः एकदेशं वा सकलं वस्तु वा अवलम्ब्य गृहीत्वा पुनरप्यस्य वस्तुनो गतिः-ज्ञानं यन्,
तदप्यनिगृतज्ञानं भवति ॥३१२॥ तदुदाहरति-

पुष्करस्य जलाद्वह्निर्दुर्लभमानस्य जलमग्नहस्तिकरावस्य प्रहणकाले दर्शनकाले एव तदविनाभावितमग्न-
हस्तिप्रहणं जले हस्तो भग्नोऽप्रतीति प्रतीतिः । वा इव यथा अनेन अस्मात् साध्यादिनाभाविनियमनिरवयान्
२० साधनात् साध्यस्य ज्ञानमनुमानमिति अनुमानप्रमाणं संगृहीतं भवति । अथवा कस्याविष्य युवतेर्दशनप्रहणकाले
वस्त्वन्तरस्य चन्द्रस्य ग्रहणम् । मुखसादृश्याच्चन्द्रस्य स्मरणं चन्द्रसदृशं मुखमिति प्रत्यभिज्ञानं वा । अप्ये
गवयप्रहणकाले गवयदर्शनकाल एव घेनोवोधनं स्मरणं गोसदृशो गवय इति प्रत्यभिज्ञानं वा भवेत् । वा इव

किसी वस्तुके प्रकट हुए एकदेशको देखकर उसके अविनाभावी अप्रकट अंशको प्रहण
करना अनिसृत ज्ञान है । अथवा एक वस्तुके एकदेश या समस्त वस्तुको प्रहण करके अन्य
२५ वस्तुको जानना भी अनिसृत ज्ञान है ॥३१२॥

उमका उदाहरण देते हैं—

जलमें डूबे हुए हाथीकी जलसे बाहर दिखाई देनेवाली सूँड़को देखते ही उसके
अविनाभावी जलमग्न हस्तिका प्रहण अनिसृत ज्ञान है । इससे, जिसका साध्यके साथ
अविनाभाव नियम निश्चित है ऐसे साधनसे साध्यके ज्ञानको अनुमान कहते हैं इस अनुमान
३० प्रमाणका संभ्रम होता है । अथवा किसी युवतीके मुखको प्रहण करते समय अन्य वस्तु
चन्द्रमाका ग्रहण अथवा मुखकी समानतासे चन्द्रमाका स्मरण कि चन्द्रके समान मुख है
अथवा गवयको देखते ही गायका स्मरण या गौके समान गवय है यह प्रत्यभिज्ञान इससे
गृहीत होता है । 'वा' शब्द उदाहरणके प्रदर्शनमें प्रयुक्त हुआ है । जो बतलाता है कि अनन्तर

१. म "आविष्य प्रतीत्यनिरचयवर्त्तणिद साधना" ।

- मतिज्ञानं सामान्यापेक्षेयदमोऽनु १। अवग्रहेहावायधारणापेक्षेयत्वं नास्तु ४। इन्द्रिया-
निन्द्रियजनितात्पर्यवग्रहेहावायधारणापेक्षेयत्वं चतुष्टयप्रति २४। अत्यव्यंजनोभयाप्रहापेक्षेयत्वं जग-
विशतिगच्छम्पु २८। वितु नास्तु स्थानगच्छं त्रिःप्रतिकगच्छं माडि यथाक्रमं प्रथमस्थानचतुष्टयं
विषयसामान्यदिदेमोऽदरिदं गुणिसुबुदु। द्वितीयस्थानचतुष्टयं बह्वादिविषयगच्छं गुणिसुबुदु।
५ तृतीयस्थानचतुष्टयं बह्वादिद्वादशविषयगच्छं गुणिसुबुदितु गुणिसुतमिरलु मतिज्ञानोऽनु विषय-
सामान्यार्धविषयसर्वविषयापेक्षगच्छ स्थानगच्छम्पु

२८।१	२८।६	२८।१२
२४।१	२४।६	२४।१२
४।१	४।६	४।१२
१।१	१।६	१।१२

अनन्तरं श्रुतज्ञानप्ररूपणैवं प्रारंभमुयात् मोदलोक्तनेपरं तत्सामान्यलक्षणं पेश्यम् :—

अत्यादो अत्यन्तरमुवलंभं तं भणति सुदृष्टाणं ।

आभिणिगोहियपुञ्चं नियमेणिह सद्दजं पमुहं ॥३१५॥

- १० अर्थावर्थांतरमुपलभमानं तदभणति श्रुतज्ञानमाभिनिगोहिकपुञ्चं नियमेनेह शब्दजनं प्रमुलं ॥

मतिज्ञानं सामान्येन एकं १। अवग्रहेहावायधारणापेक्षया चत्वारि ४। इन्द्रियानिन्द्रियजनितात्पर्य-
वग्रहेहावायधारणापेक्षया चतुर्विंशतिः २४। अत्यव्यंजनोभयाप्रहापेक्षया अष्टविंशतिः २८। एतानि
चत्वारि स्थानानि त्रिःप्रतिकानि—

२८।१	२८।६	२८।१२
२४।१	२४।६	२४।१२
४।१	४।६	४।१२
१।१	१।६	१।१२

- कृत्वा यथाक्रमं प्रथमं स्थानचतुष्टयं विषयसामान्येनैकेन गुणयेत्। द्वितीयं स्थानचतुष्टयं बह्वादिविषयगच्छेन
गुणयेत्। तृतीयं स्थानचतुष्टयं बह्वादिद्वादशविषयगच्छेन गुणयेत्। एवं गुणिते सति मतिज्ञाने सामान्यविषयार्ध-
विषयसर्वविषयापेक्षया स्थानानि भवन्ति ॥३१४॥ अथ श्रुतज्ञानप्ररूपणा प्रारंभमाणं प्रथमस्तावत्तत्सामान्य-
लक्षणमाह—

- मतिज्ञान सामान्यसे एक है। अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणाकी अपेक्षा चार है।
इन्द्रिय और मनसे उत्पन्न अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणाकी अपेक्षा चौबीस हैं। अर्थात्—
२० ग्रह और व्यंजनावग्रहकी अपेक्षा अठारह हैं। इन चारों स्थानोंको तीन जगह स्थापित
करके यथाक्रम प्रथम चार स्थानोंको सामान्य विषय एकसे गुणा करना चाहिए। दूसरे
चार स्थानोंको बह्वादि छह विषयोंसे गुणा करना चाहिए। तीसरे चार स्थानोंको बह्वादि
द्वादश विषयोंसे गुणा करना चाहिए। इस तरह गुणा करनेपर मतिज्ञानके सामान्य
विषय, बह्वादि छह अर्धविषय और सर्व विषयकी अपेक्षा स्थान होते हैं। यथा—॥३१४॥

२८×१	२८×६	२८×१२
२४×१	२४×६	२४×१२
४×१	४×६	४×१२
१×१	१×६	१×१२

- २५ अथ श्रुतज्ञान प्ररूपणाको प्रारंभ करते हुए पहले श्रुतज्ञानका सामान्य लक्षण
कहते हैं—

१. मंदि गुं । २. बंणं प्ररूपयति ।

अर्थांतरज्ञानद प्रतिपादकमप्युद परमाणमदोऽहमश्नुमोऽनु प्रसारयि कथंचित् निरक्षित-
संभविष रुदिसब्ददोऽहमहत्सात्पर्यवृत्तिकदोऽहं कुशं लातीति कुशलः एति कुशलादिशब्दंगोऽहं
निपुणाद्यर्थंग रुदंगला रुदात्यंगोऽहं तत्कुशलशब्दनिर्दिष्टं येतं अरिपत्पद्ममल्लि जीयोऽस्ति
येति नुडियत्पद्मदितरल जीवोऽस्ति येति दोऽहं शब्दज्ञानं श्रोत्रेन्द्रियप्रभवमतिज्ञानमश्नुमा ज्ञानविदं
जीवोऽस्तिशब्दवाच्यरूपात्मास्तित्वदोऽहं वाच्यवाचकसंबन्धसंकेतसंकलनेमा पूर्व्यरूपाणि आपुरोऽनु
ज्ञानं पुदुगुमदक्षरात्मकधृतज्ञानमवकुमेके दोऽहं शब्दसमुत्पन्नतर्यावर्तं कार्योऽहं कारणोप-
चारमुद्बुद्धिरितं । वातशीतस्पर्शज्ञानविदं वातप्रकृतितो तत्स्पर्शनदोऽहमनोज्ञानमनश्चारात्मक-
लिङ्गज्ञानमप्य श्रुतज्ञानमवबुद्धकुमेके दोऽहं शब्दपूर्वकत्वाभायमप्युद्बुद्धिरितं ।

लोमाणमसंखमिदा अणकसुरपे हवति छट्टाणा ।

१०

वेरुवछट्टवग्गपमाणं रूऊणमकसुरगं ॥३१६॥

लोकानामसंख्यमितान्यनक्षरात्मके भवति पदस्यानानि । द्विरूपपट्टयार्गप्रमाणं रूपोनमक्षरांगं ।

प्रधानं भवति । श्रूयते—श्रोत्रेन्द्रियेण गृह्यते इति श्रुतः शब्दः, तस्मादुरात्मनमर्थज्ञानं श्रुतज्ञानमिति व्युत्पत्तिरिति
अक्षरात्मकप्राधान्याश्रयणात् । अथवा ध्रुवमिति रुदिसब्दोऽर्थं मतिज्ञानपूर्वकस्य अर्थान्तरज्ञानस्य प्रतिपादकः
परमाणम रुदः । यथाकर्षाग्निनिर्दिष्टसंभवः रुदिसब्दे अहत्त्वावृत्तिके कुशं लातीति कुशल इति कुशलादि-
शब्दे निपुणाद्यर्थेषु रुदेषु तन्निवृत्तिवत् । तत्र जीवोऽस्तीत्युक्ते ओषोऽस्तीति शब्दज्ञानं श्रोत्रेन्द्रियप्रभवं
मतिज्ञानं भवति । तेन ज्ञानेन जीवोऽस्तीति शब्दवाच्यरूपे आत्मास्तित्वे वाच्यवाचकसंबन्धसंकेतसंकलनपूर्वकं
यत् ज्ञानमुत्पद्यते तदक्षरात्मकं धृतज्ञानं भवति, अक्षरात्मकशब्दसमुत्पन्नत्वेन कार्यं कारणोपचारात् । वातशीत-
स्पर्शज्ञानेन वातप्रकृतिकस्य तत्स्पर्शं अमनोज्ञानमनश्चारात्मकं लिङ्गज्ञानं धृतज्ञानं भवति, शब्दपूर्वकत्वा-
भावात् ॥३१५॥ अथ धृतज्ञानस्य अक्षरात्मकभेदी प्रकल्पयति—

- २० अत अर्थान् शब्द है । उससे उत्पन्न अर्थज्ञान श्रुतज्ञान है । इस व्युत्पत्तिसे भी अक्षरात्मक
श्रुतज्ञानकी प्रधानता लक्षित होती है । अथवा 'श्रुत' यह रुदि शब्द है । परमाणमर्थं मतिज्ञान-
पूर्वक होनेवाले अन्य अर्थके ज्ञानको कहनेमें रुद है । फिर भी यथायोग्य निरूपित होती है ।
रुदि शब्द अपने अर्थको नहीं छोड़ते । जैसे कुशको जो लावा है वह कुशल है इस प्रकार कुशल
आदि शब्द चतुर आदि अर्थोंमें रुद हैं फिर भी उनकी व्युत्पत्ति उसी प्रकार की जाती है ।
१५ इसी प्रकार श्रुतके सम्बन्धमें जानना । 'जीव है' ऐसा कहनेपर यह जो शब्दका ज्ञान
होता है कि 'जीव है', यह श्रोत्रेन्द्रियसे उत्पन्न हुआ मतिज्ञान है । और ज्ञानके द्वारा 'जीव
है' इस शब्दके वाच्यरूप आत्माके अस्तित्वमें वाच्यवाचक सम्बन्धके संकेत ग्रहणपूर्वक
जो ज्ञान उत्पन्न होता है वह अक्षरात्मक श्रुतज्ञान है । क्योंकि अक्षरात्मक शब्दसे उत्पन्न
हुआ है इस प्रकार कार्यमें कारणका उपचार किया है । तथा वायुके शीत स्पर्शके ज्ञानसे
१० वात प्रकृतिकाले मनुष्यको जो उसके स्पर्शमें 'यह मेरे लिए अनुकूल नहीं है' ऐसा जो ज्ञान
होता है वह अनक्षरात्मक लिङ्गजन्य श्रुतज्ञान है क्योंकि वह शब्दपूर्वक नहीं हुआ है ॥३१५॥
अथ श्रुतज्ञानके अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक भेदोंको कहते हैं—

सूक्ष्मनिगोद अपञ्जत्तयस्स जादस्म पढमसमयन्मि ।

हावदि हु सच्चजहणं णिच्चुग्घाडं णिरावरणं ॥३२०॥

सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तकस्य जातस्य प्रथमसमये भवति एतलु सर्वजघन्यं नित्योद्घाटं निरावरणं ॥

- ५ सूक्ष्मनिगोदलब्धपर्याप्तक जननद प्रथमसमयदोऽत्र निरावरणं प्रच्छादनरहितमप्य नित्योद्घाटं सर्वदा प्रकाशमानमप्य सर्वजघन्यं सर्वनिकृष्टप्रतिक्रममप्य पर्यायमेव धृतज्ञानमक्तुं । एतलु । ई गायामूत्रं पूर्वार्चाप्यप्रसिद्धं स्वोक्तार्थसंप्रतिपत्तिप्रदर्शनात्यन्तागि उदाहरणार्थं धरेत्पट्टदुदु ।

सूक्ष्मनिगोद अपञ्जत्तगेषु सगसंमवेसु भमिऊण ।

- १० चरिमापुण्णतिवक्काणादिमवक्काड्डियेव हवे ॥३२१॥

सूक्ष्मनिगोदलब्धपर्याप्तगतेषु स्वसंभवेषु भ्रमित्वा । चरमापूर्णत्रियक्राणामाद्यवक्रित्य एव भवेत् ॥

- सूक्ष्मनिगोदलब्धपर्याप्तनोऽत्र तद स्वसंभवेषु द्वादशोत्तरपदसहस्रप्रमितंगणमप्य भवेषु भयंगळोऽत्र भ्रमित्वा भ्रमिति चरमापूर्णभवद त्रिवक्कविग्रहप्रतिपिदमुत्पन्नजीवन प्रथमभव प्रथमसमयदोऽहोऽहोऽहो भुपेऽहो सर्वजघन्यपर्यायमेव धृतज्ञानमक्तुं । मत्तल्लिये तज्जीवस्के स्पर्शनेन्द्रियप्रभवसर्वजघन्यमतिज्ञानमचक्षुर्दशानावरणक्षयोपशमसमुद्भूताचक्षुर्दशानमुमक्कुमेके बोऽहो ।

सूक्ष्मनिगोदलब्धपर्याप्तकस्य जात-जननं तस्य प्रथमसमये निरावरणं-प्रच्छादनरहितं नित्योद्घाटं अत्रैव सर्वदा प्रकाशमानं सर्वजघन्यं-उर्वनिकृष्टप्रतिकं पर्यायमेव धृतज्ञानं भवति । एतलु एतद्गायामूत्रं पूर्वार्चाप्यप्रसिद्धं-स्वोक्तार्थसंप्रतिपत्तिप्रदर्शनाय उदाहरणत्वेन लिखितम् ॥३२०॥

- २० सूक्ष्मनिगोदलब्धपर्याप्तकेषु स्वसंभवेषु द्वादशोत्तरपदसहस्रप्रमितेषु भवेषु भ्रमित्वा चरमापूर्णभवत् त्रिवक्कविग्रहप्रतिपिदमुत्पन्नजीवन प्रथमभव प्रथमसमयदोऽहोऽहोऽहो भुपेऽहो सर्वजघन्यपर्यायमेव धृतज्ञानं भवति तत्रैव तस्य जीवस्य स्पर्शनेन्द्रियप्रभवं सर्वजघन्यं मतिज्ञानं, अचक्षुर्दशानावरणक्षयोपशमसंभूतं अचक्षुर्दशानमपि

सूक्ष्मनिगोदिया लब्धपर्याप्तके जन्मके प्रथम समय पर्यायनामकं श्रुतज्ञानं होता है । यह निरावरण है इसीसे सर्वदा प्रकाशमान रहता है, सबसे जघन्य अर्थात् निकृष्ट शक्तिवाला होता है । यह गायामूत्र प्राचीन है यहाँ ग्रन्थकारने अपने कथनकी यथार्थता दिखलानेके

- २५ लिए उदाहरणके रूपमें लिखा है ॥३२०॥

सूक्ष्म निगोद लब्धपर्याप्तक जीव अपने सूक्ष्म निगोद लब्धपर्याप्तक सम्बन्धी छह हजार बारह महीनें भ्रमण करके अन्तिम लब्धपर्याप्तक भवमें तीन मोड़वाली विग्रहप्रतिपिदमुत्पन्न होकर प्रथम मोड़के समयमें स्थित होता है उसके ही सबसे जघन्य पर्याय श्रुतज्ञान होता है । उसी समय उसके स्पर्शनेन्द्रियजन्य सबसे जघन्य मतिज्ञान होता है और

- ३० अचक्षुर्दशानावरणके क्षयोपशमसे उत्पन्न अचक्षुर्दशान भी होता है । यहाँ ही सबसे जघन्य पर्याय श्रुतज्ञान होनेका कारण यह है कि बहुत श्रुतमहीनें भ्रमण करनेसे उत्पन्न हुए बहुत

उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५
उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५	उउ४	उउ४	उउ५

१० इस प्रकार पदस्थान वृद्धियोंका क्रम दिगन्ताया। मन्त्रमें दर्शित रचनाके अनुसार श्रोताजनोंको यिना व्यामोहके जानना चाहिए। इस यन्त्रका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—

पर्याय नामक ध्रुवज्ञानके भेदसे अनन्तभागवृद्धि युक्त पर्याय मसाम नामक ध्रुवज्ञानका प्रथम भेद होता है। इस प्रथम भेदसे अनन्तभागवृद्धि युक्त पर्याय मसामका दूसरा भेद होता है। इस प्रकार सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर एक बार असंख्यात भागवृद्धि होती है। ऊपर यन्त्रमें प्रथम पंक्तिके प्रथम कोठेमें दो बार उच्चार लिया है वह सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धिकी पहचान जानना। उसके आगे चारका अंक लिखा वह एक बार असंख्यात भाग वृद्धिकी पहचान जानना। इसके आगे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भागवृद्धि होनेपर दूसरी बार असंख्यात भाग वृद्धि होती है। इसी क्रमसे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यात भाग वृद्धि होती है। इसीसे यन्त्रमें प्रथम पंक्तिके दूसरे कोठेमें प्रथम कोठाकी तरह दो उच्चार और एक चारका अंक लिखा है जो दो बार सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग बारका सूचक है। अतः दूसरी बार लिखनेसे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग बार जानना। उससे आगे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर एक बार असंख्यात भाग वृद्धि होती है। अतः प्रथम पंक्तिके तीसरे कोठेमें दो उच्चार और एक पाँचका अंक लिखा है। आगे जैसे पहले अनन्त भाग वृद्धिकी लिये सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यात भाग वृद्धिके होनेपर पीछे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धिके होनेपर एक बार संख्यात भाग वृद्धि हुई वैसे ही इसी क्रमसे दूसरी संख्यात भाग वृद्धि हुई। इसी क्रमसे तीसरी हुई। इस यन्त्रमें प्रथम पंक्तिमें जैसे तीन कोठे किये थे वैसे ही सूर्यगुणके असंख्यातवें भागकी पहचान के लिए दूसरे तीन कोठे उसी प्रथम पंक्तिमें किये। यहाँसे आगे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धिके होनेपर एक बार असंख्यात भाग वृद्धि होती है। इस प्रकार यन्त्रमें दो उच्चार और चारका अंक लिये दो कोठे किये। इससे आगे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर एक बार संख्यात गुण वृद्धि होती है। सो उसकी पहचानके लिए प्रथम पंक्तिके नीचे कोठेमें दो उच्चार और छहका अंक लिखा। जैसे प्रथम पंक्तिका क्रम रहा उसी प्रकार आदिसे लेकर सब क्रम दूसरी बार होनेपर एक बार दूसरी संख्यातगुणवृद्धि होती है। इसी क्रमसे सूर्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण संख्यातगुणवृद्धि

पर्यायसमासश्च तृतीयज्ञानविकल्पमङ्गु सध्वजघन्यप्रथमविकल्पमङ्गु ज १६ १६ मिवरन्तैकभागमन-

ल्लिये समच्छेदं भाडि कूडित्तरलुमडु पर्यायसमासद्वितीयज्ञानविकल्पमङ्गु ज १६ १६ मिवरन्तैक-
१६ १६

भागमल्लिये समच्छेदं भाडि कूडित्तरलु पर्यायसमासतृतीयज्ञानविकल्पमङ्गु ज १६ १६ १६
१६ १६ १६

मिवरन्तैकभागमनल्लिये समच्छेदं भाडि कूडिदोडे पर्यायसमासचतुर्थज्ञानविकल्पमङ्गु

५ ज १६ १६ १६ १६ मिवरन्तैकभागमनल्लिये समच्छेदं भाडि कूडिदोडे पर्यायसमासपंचम-
१६ १६ १६ १६

श्च तृतीयज्ञानविकल्पमङ्गु ज १६ १६ १६ १६ १६ मिवरन्तैकभागमनल्लिये समच्छेदं भाडि कूडि-
१६ १६ १६ १६ १६

ज्ञानविकल्पेणु सध्वजघन्यप्रथमविकल्पः स्यान् ज १६ १६ अस्यानन्तैकभागे ज १६ १६ अस्मिन्नेव समच्छेदेन युते
१६ १६

रा पर्यायसमासद्वितीयज्ञानविकल्पः ज १६ १६ १६ अस्यानन्तैकभागे अस्मिन्नेव समच्छेदेन युते पर्यायसमास-
१६ १६

तृतीयज्ञानविकल्पः ज १६ १६ १६ १६ १६ अस्यानन्तैकभागे अस्मिन्नेव समच्छेदेन युते पर्यायसमास-
१६ १६ १६ १६ १६

१० चतुर्थज्ञानविकल्पः ज १६ १६ १६ १६ १६ अस्यानन्तैकभागे अस्मिन्नेव समच्छेदेन युते पर्यायसमास-
१६ १६ १६ १६ १६

पञ्चमज्ञानविकल्पः ज १६ १६ १६ १६ १६ १६ अस्यानन्तैकभागे अस्मिन्नेव समच्छेदेन
१६ १६ १६ १६ १६ १६

- आवे एते उक्त सीसरे भेदमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका चतुर्थ विकल्प आता है। यह चतुर्थ अनन्त भाग वृद्धि हुई। फिर इस चतुर्थ भेदमें अनन्तसे भाग देकर जो एक भाग आवे एते उक्त चतुर्थ विकल्पमें मिलानेपर पर्याय समासका पंचम विकल्प आता है। यह पाँचवी अनन्तभाग वृद्धि हुई। फिर इस पाँचवें भेदमें अनन्तसे भाग देनेपर जो भाग आता है उसे पाँचवें भेदमें मिलानेपर पर्याय समासका छठा विकल्प आता है। यह छठी अनन्त भाग वृद्धि हुई। इसी प्रकार मुख्यगुणके असंख्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर जो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसको एक बार असंख्यात लोक प्रमाण संख्यातसे भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसे उक्त भेदमें मिलानेपर एक बार असंख्यात भाग वृद्धिको लिये
- १० रूप पर्याय समास ज्ञानका भेद होता है। उसमें अनन्तसे भाग देनेपर जो परिमाण आवे उसे

गण्यविगततात्पर्यगणनविहर्षणशेठु सार्धत्रयप्रणमनिक्रममाह ज १५ मिहर्षणं तत्रागमा-

श्रिये गणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ परमार्थमार्गनिर्देशनाय नमः ॥ ज १५ १६ भारती १६ १५

भागमपलिये सामयिके वादि कृतानि विरक्त पदार्थमपि प्रोक्तानि विरक्तानि ज ११ ११ ११

१५ १५ १५
 गवदासीतभाषातल्लये रामचन्द्रं माहि कृतिशे गवदासीतभाषातल्लये

५ ज १५ १५ १५ १५ मरनतीतभागमननिके समकोट माडि कुडिरोहे वर्यापगनातातम-

अनुसन्धानमित्राणां कृपायाः १५ १५ १५ १५ १५ मरुतरीतिभाष्यमभिलेख समकालीन माहि कुड-

शासनिकारोगु धर्माजगदप्रमाणविकृतः दयात् ७ ११ अस्यानन्तीकभागे ४ ११ अस्मिन्नेव रागच्छेदेन पुं
११ ११ ११ ११

१। यथायथासाक्षात्तमिदमागच्छेत्तः ॥ ११ ॥ अस्यान्तेनैव भवेत्तु यथायथा ॥ १२ ॥

पुस्तिकासंख्या: १११ १११ १११ १११ १११ १११ अथवा अन्य विभागे अस्मिन्नेव समष्टौ देन यो गर्वायामातः

१०. अगुर्गतामधिकृतः ज ११ । ११ । ११ । ११ । अस्यान्योक्तभावे अदिमन्त्रेय तन्मन्त्रेण गतो गगुर्गतामता-

पञ्चमस्तोत्राधिकारः । अ ११ । ११ । ११ । ११ । ११ । अस्यानन्तरभावे अस्मिन्नेव सामध्येन

आये बरो बस तीसरे भेदमें मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका चतुर्थ विकल्प आता है। यह चतुर्थ अन्तर्गत भाग वृद्धि हुई। फिर इस चतुर्थ भेदमें अनन्तसे भाग लेकर जो एक भाग पौषणी अन्तर्गत भाग वृद्धि हुई। फिर इस पौषणी भेदमें अनन्तसे भाग देनेपर जो भाग आता भाग वृद्धि हुई। इसी प्रकार सूत्र्यनुसारे असंख्यावर्षे भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर जो पौषणी भेद हुआ उसको एक बार असंख्यावर्षे भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर जो पौषणी भेदमें मिलानेपर एक बार असंख्यावर्षे भाग वृद्धि को लिये है। इसमें अनन्तसे भाग देनेपर जो परिमाण आये उसे

पर्यायसमासधुतज्ञानविकल्पगञ्जोऽसर्वज्ञध्वन्यप्रथमविकल्पमवकु ज १६ मिवरन्तैरुभागमन-
१६

ल्लिये समच्छेदं माडि कूडुतिरलुमडु पर्यायसमासद्वितीयज्ञानविकल्पमवकु ज १६ १६ मदरन्तैरु-
१६ १६

भागमल्लिये समच्छेदं माडि कूडुत्तिरलु पर्यायसमासतृतीयज्ञानविकल्पमवकु ज १६ १६ १६
१६ १६ १६

मदरन्तैरुभागमल्लिये समच्छेदं माडि कूडुदोडे पर्यायसमासचतुर्थज्ञानविकल्पमवकु

५ ज १६ १६ १६ १६ मदरन्तैरुभागमल्लिये समच्छेदं माडि कूडुदोडे पर्यायसमासपंचम-
१६ १६ १६ १६

धुतज्ञानविकल्पमवकु ज १६ १६ १६ १६ १६ मदरन्तैरुभागमल्लिये समच्छेदं माडि कूडु-
१६ १६ १६ १६ १६

ज्ञानविश्लेषेण गर्भप्रपञ्चप्रथमविकल्पाः स्यान् ज १६ अस्यानन्तरुभागे ज १६ अस्मिन्नेव समच्छेदेन युते
१६ १६

॥ पर्यायसमासद्वितीयज्ञानविकल्पाः ज १६ १६ अस्यानन्तरुभागे अस्मिन्नेव समच्छेदेन युते पर्यायसमास-
१६ १६

तृतीयज्ञानविकल्पाः ज १६ १६ १६ अस्यानन्तरुभागे अस्मिन्नेव समच्छेदेन युते पर्यायसमास-
१६ १६ १६ १६

१० चतुर्थज्ञानविकल्पाः ज १६ १६ १६ १६ अस्यानन्तरुभागे अस्मिन्नेव समच्छेदेन युते पर्यायसमास-
१६ १६ १६ १६ १६

पञ्चमधुतज्ञानविकल्पाः ज १६ १६ १६ १६ १६ अस्यानन्तरुभागे अस्मिन्नेव समच्छेदेन
१६ १६ १६ १६ १६

आये षष्ठे षष्ठे भागे मिलानेपर पर्याय समास ज्ञानका चतुर्थ विकल्प आता है। यह
चतुर्थ अनन्त भाग वृद्धि हुई। फिर इस चतुर्थ भेदमें अनन्तसे भाग देकर जो एक भाग

- १५ आये षष्ठे षष्ठे चतुर्थ विकल्पमें मिलानेपर पर्याय समासका पंचम विकल्प आता है। यह
पाँचवीं अनन्तभाग वृद्धि हुई। फिर इस पाँचवें भेदमें अनन्तसे भाग देनेपर जो भाग आता
है षष्ठे पाँचवें भेदमें मिलानेपर पर्याय समासका छठा विकल्प आता है। यह छठी अनन्त
भाग वृद्धि हुई। इसी प्रकार सूर्यगुणके अमरस्यातवें भाग प्रमाण अनन्त भाग वृद्धि होनेपर
जो पर्याय समास ज्ञानका भेद हुआ उसको एक बार असंख्यात लोक प्रमाण संख्यातसे भाग
देनेपर जो परिमाण आये उसमें षष्ठे भेदमें मिलानेपर एक बार अमरस्यात भाग वृद्धिको लिये
१० हुए पर्याय समास ज्ञानका भेद होना है। उसमें अनन्तसे भाग देनेपर जो परिमाण आये उसे

मोदलो' दु तद्वृद्धिपथ्यंत भेदमुत्पन्नविवरमवर विन्यासं तोरल्पहृणुमदे'ते' दोहे पथ्यायसमास-
 ज्ञानप्रथमविकल्पदोहो'द्वि' वृद्धिं तैगदु जघन्यद मेगे स्यापिति अवर केळगे एकसारानंतैकभाग-
 वृद्धिं स्यापिमुपुदंतु स्यापिमुत्तरलु तद्वृद्धिगे प्रक्षेपकमेव पेशरकु। मंते द्वितीयविकल्प-
 दोहो'द्वि' जघन्यम मेगे स्यापिति तदयस्तनभागदोहू तद्वृद्धिप्रक्षेपकंगळेरडुमो'दु प्रक्षेपकप्रक्षेपक-
 १ मुगपुपुपथं प्रभादिदं केळगे केळगिरिसुपुदु। तृतीयविकल्पदोहं जघन्यम मेगे स्यापिति तद्वृद्धि-
 गळप्य मूरं प्रक्षेपकंगळं मूरं प्रक्षेपकप्रक्षेपकंगळो'दु पिशुलिपुमं ययाक्रमदिदं तज्जघन्यद केळगे केळगे
 स्यापिमुपुदु। चतुर्थविकल्पदोहूमंते जघन्यम मेगे स्यापिति तदयस्तनभागदोहू तद्वृद्धिगळप्य
 मात्तुं प्रक्षेपकंगळं षट्प्रक्षेपकप्रक्षेपकंगळं चतुःपिशुलिगळुमनो'दु पिशुलिपिशुलिपुमं ययाक्रमदिदं
 केळगे केळगे स्यापिमुपुदु।

- १० पंचमविकल्पदोहूमंते जघन्यम मेगे स्यापिति तदयस्तनभागदोहू तद्वृद्धिगळप्य प्रक्षेपकंग-
 लहृणुमं प्रक्षेपकप्रक्षेपकंगळ पशुं। पिशुलिगळ पशुं पिशुलिपिशुलिगळडुमनो'दु चूणिपुमं ययाक्रम-
 दिदं केळगे केळगे स्यापिमुपुदु। षट्ठविकल्पदोहूमंते जघन्यम मेगे स्यापिति तदयस्तनभागदोहू

११ तद्वृद्धिनां तज्जघन्यमादि वृत्ता तद्वृद्धिपथ्यंत भेदे सति तद्विग्यासो दश्यते। उचया-
 प्रभावविशेषे निचुपुर्वाङ् पुष्यश्रव जघन्यमपरि संस्थाप्य संस्थाप्यः एकवारानन्तैकभागवृद्धि स्यापयेत्, तद्वृद्धेः
 १२ प्रक्षेपक इति नाम। तथा द्वितीयविकल्पे जघन्यमपरि संस्थाप्य तदयस्तनभागे तद्वृद्धेर्द्वौ प्रक्षेपकौ एकं प्रक्षेपक-
 प्रक्षेपकं च जघोपो व्यस्येत्। तृतीयविकल्पे जघन्यमपरि संस्थाप्य तद्वृद्धेस्त्रीन् प्रक्षेपकान् भोन् प्रक्षेपक-
 प्रक्षेपकान् एकं विभक्तिं च जघोपो व्यस्येत्। चतुर्थविकल्पे तज्जघन्यमपरि व्यस्य तदयस्तनभागे तद्वृद्धेश्चतुः-
 प्रक्षेपकान् षट् प्रक्षेपकप्रक्षेपकान् चतुः पिशुलीन् एकं पिशुलिपिशुलिं च जघोपो व्यस्येत्। पञ्चमविकल्पे

- आगे यहाँ अनन्त भाग वृद्धि रूप सूर्यगुलके असंख्यातवै भाग प्रमाण स्थान कहे हैं
 २० आका जघन्य स्थानसे लेकर षट्ठ स्थान पर्यन्त स्थापनका विधान कहते हैं। सो प्रथम ही
 संज्ञाभोहो कहते हैं—

विश्रुति मूल स्थानको विश्रुति भागहारका भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उसे
 प्रक्षेपक कहते हैं। वही प्रमाणको वही भागहारसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उसे प्रक्षेपक-
 प्रक्षेपक कहते हैं। वही भी विश्रुति भागहारसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उसे पिशुलि
 ११ कहते हैं। वही भी विश्रुति भागहारसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उसे पिशुलि-पिशुलि
 कहते हैं। वही भी विश्रुति भागहारसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उसे चूणि कहते हैं।
 वही भी विश्रुति भागहारका भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उसे चूणि-चूणि कहते हैं। इसी
 प्रकार पूर्व प्रमाणमें विश्रुति भागहारका भाग देनेपर द्वितीय आदि चूणि-चूणि कही
 जाती है। अगु—

- १० गो पथ्याय समाम ज्ञानके प्रथम भेदमें ऊपर जघन्यको स्थापित करके उसके
 नीचे एक बार अनन्त भाग वृद्धिकी स्थापना करना चाहिए। उस वृद्धिका नाम प्रक्षेपक है।
 तथा दूसरे विकल्पमें जघन्यको ऊपर स्थापित करके उसके नीचे-नीचे उसकी वृद्धिके दो प्रक्षेपक
 और एक प्रक्षेपक-प्रक्षेपक स्थापित करें। तीसरे विकल्पमें जघन्यको ऊपर स्थापित करके
 वही वृद्धिके तीन प्रक्षेपक, तीन प्रक्षेपक-प्रक्षेपक और एक पिशुली नीचे-नीचे स्थापित करें।
 ११ चतुर्थ विकल्पमें जघन्यको ऊपर स्थापित करके उसके नीचे-नीचे उसकी वृद्धिके चार प्रक्षेपक,

वैकर्षं ध्रु तज्जघन्यमं भौ स्यापिति तदधस्तनभागदोऽत्र यथाक्रमविषं प्रक्षेपकंगत्तु गच्छेमात्रंगत्तु-
 प्युवेदु सूर्यगुलासंख्यातभागमात्रंगत्तु स्यापितिदवर केन्द्रगे प्रक्षेपकप्रक्षेपकंगत्तु रूपोनगच्छेय
 एकवारसंकलनघनमात्रंगत्तुप्युवेदु रूपोनसूर्यगुलासंख्यातभागगच्छेय एकवारसंकलनघनप्रमितंगत्तु
 स्यापिसुबुदवर केन्द्रगे पिगुलिगत्तु द्विरूपोनगच्छेय द्विकवारसंकलनघनमात्रंगत्तुप्युवेदु द्विरूपोन-
 सूर्यगुलासंख्यातभागगच्छेय द्विकवारसंकलनघनमात्रंगत्तु स्यापिसुबुदवर केन्द्रगे पिगुलि पिगुलिगत्तु
 त्रिरूपोनगच्छेय त्रिवारसंकलनघनप्रमितंगत्तुप्युवेदु त्रिरूपोनसूर्यगुलासंख्यात भागगच्छेय त्रिवार-

धरमानन्तभागद्विगुलतस्थानविकल्पे पृथक्कृततज्जघन्यमुत्तरि न्यस्येत् । तदधस्तनभागे यथाक्रमं प्रक्षेपान्
 सूर्यगुलासंख्येयभागमात्रान् न्यस्येत् । तदधः प्रक्षेपप्रक्षेपकान् रूपोनगच्छेय एकवारसंकलनघनमात्राः सन्ति
 रूपोनसूर्यगुलासंख्येयभागगच्छेय एकवारसंकलनघनमात्रान् न्यस्येत् । तदधः पिगुलयः द्विरूपोनगच्छेय
 द्विकवारसंकलनघनमात्राः सन्तीति द्विरूपोनसूर्यगुलासंख्येयभागगच्छेय द्विकवारसंकलनघनमात्रान् न्यस्येत् ।

- स्थापित करना, उसके नीचे प्रक्षेपक-प्रक्षेपकोको, यतः वे एक कम गच्छके एक बार संकलन
 घन मात्र होते हैं अतः एक कम सूर्यगुलके असंख्यात भाग गच्छके एक बार संकलन घन
 मात्र स्थापित करना । उनके नीचे पिगुली, जो दो हीन गच्छके दो बार संकलन घन मात्र
 होती हैं, इसलिए दो हीन सूर्यगुलके असंख्यातवें भाग गच्छके दो बार संकलन घन मात्र
 स्थापित करना । उनके नीचे पिगुली-पिगुली तीन हीन गच्छके तीन बार संकलन घन मात्र
 होती हैं इसलिए तीन हीन सूर्यगुलके असंख्यातवें भाग गच्छके तीन बार संकलन घन मात्र
 स्थापित करना । उनके नीचे पूर्णि चार हीन गच्छके चार बार संकलन घन मात्र होती
 हैं इसलिए चार हीन सूर्यगुलके असंख्यातवें भाग गच्छके चार बार संकलन घन मात्र
 स्थापित करना । उनके नीचे पूर्णि-पूर्णि पाँच हीन गच्छके पाँच बार संकलन घन मात्र होती
 हैं इसलिए पाँच हीन सूर्यगुलके असंख्यातवें भाग गच्छके पाँच बार संकलन घन मात्र
 स्थापित करना । इसी प्रकार उसके नीचे-नीचे चूर्णि-चूर्णि छह हीन आदि गच्छके छह बार
 आदि संकलन घन मात्र होती हैं इसलिए छह हीन सूर्यगुलके असंख्यातवें भाग आदि
 गच्छके छह हीन सूर्यगुलके असंख्यात भागादि बार संकलन घन मात्र नीचे-नीचे स्थापित
 करना । ऐसा करते-करते सबसे नीचेकी द्विचरम चूर्णि-चूर्णि दो हीन गच्छसे हीन गच्छकी
 दो हीन गच्छवार संकलित घन प्रमाण होती हैं इसलिए दो हीन सूर्यगुलके असंख्यातवें
 भागसे हीन सूर्यगुलके असंख्यातवें भाग गच्छके दो हीन सूर्यगुलके असंख्यात भाग बार
 संकलन घन मात्र स्थापित करना । उनके नीचे एक हीन गच्छसे हीन गच्छके एक हीन गच्छ
 मात्र बार संकलन घन मात्र उसकी अन्तिम चूर्णि-चूर्णि हैं इसलिए एक हीन सूर्यगुलके
 असंख्यातवें भागसे हीन सूर्यगुलके असंख्यातवें भाग गच्छके एक हीन सूर्यगुलके असंख्यात
 भाग मात्र बार संकलित घन प्रमाण स्थापित करना । परमार्थसे अन्तिम चूर्णि-चूर्णिका संक-
 लित घन ही पटित नही होता क्योंकि द्वितीय आदि स्थानका अभाव है ।

विशेषार्थ—अंक संदृष्टिसे उक्त कथन इस प्रकार जानना । जघन्य पर्याय ज्ञानका

प्रमाण ६५५३६ । विवक्षित भागहार अनन्तका प्रमाण चार । पूर्वोक्त क्रमसे चारका भाग

देनेपर प्रक्षेपकका प्रमाण ६६३८४ । प्रक्षेपक-प्रक्षेपकका प्रमाण ४०९६ । पिगुलीका प्रमाण
 १०२४ । पिगुली-पिगुलीका प्रमाण २५६ । चूर्णि प्रमाण ६४ । चूर्णि-चूर्णि प्रमाण १६ । इसी

[illegible]

संकलनवारंगळ प्रमाणमवकुमल्लि कोष्ठधनस्यानयने विवक्षित ४ चतुर्वारसंकलनधनमंतप्ललि । प्रभवः आवि ये तुंठवकुमे दोडे इष्टो नितो ध्वं पदसंख्या स्यात् । तन्न विवक्षितमंकलनवारप्रमाणमं नालकं कळेंदुळिद्वयं पदप्रमाणमे तुंठेतुदु प्रभवमवकुमे दिल्लि ऊर्ध्वगच्छमु मूरप्पुवयरोळु नालकं कळेंदुळिद्व द्विरुपुगळु प्रभवमे बुदतयं ।

१ ततो रूपाधिक क्रमेण तदादिभूतप्रभवभूत द्विरूपं मोदलो ३ मुंदे रूपाधिकक्रमविं गुणकारा भवंत्पुण्यगच्छपय्यंतं अनुलोमक्रमदि गुणकारंगळपु ऊर्ध्वगच्छप्रमाणोक्ते नैयरमुत्पत्तिपरकु-मन्नेवरं ज २।३।४।५।६ ई गुणकारंगळो केळगे एकरूपादि रूपोत्तरहाराः भवन्ति ए-१६।५

रूपादिहपोत्तरमप्य भागहारंगळु विलोमक्रमदिवमप्युवु । प्रभवपय्यंतं मेलन गुणकारभूतप्रभवांरु-माद्यंकमवसानमेनेवरमन्नेवरं ज ३।४।५।६ केळगे अपयत्तितलधं चतुर्वारसंकलन-१६।५।४।३।२।१

१० पनमयकु ज ६ इतनंतभागवृद्धियुक्तवरमज्ञानविकल्पद तिर्य्यगपदे १६ १६ १६ १६ १६

तिर्य्यगचछदोळु सूच्यंगुलासंख्यातभागमाग्रगच्छदोळु २ रूपोने २ एकरूपोनमादोडे तत्

भवन्ति उद्वगच्छोति ऊर्ध्वगच्छाद्भोत्पत्तिपर्यन्तं-ज २ ३ ४ ५ ६ तेषां गुणकाराणां अयः हारा भागहाराः १६ ५

इगिरूपमादि एकरूपादयः उच्यन्ते-रूपोत्तरा ह्येति भवन्ति विलोमक्रमेण रूपाधिकेष्टवारस्यानेषु पमवोति प्रभवानुपर्यन्तं ज २ ३ ४ ५ ६ अपवतिते लब्धं चतुर्वारसंकलनधनं भवति— १६ १६ १६ १६ १६ ५ ४ ३ २ १

१५ ज ६ एवमनन्तभागवृद्धियुक्तवरमविकल्पे तिर्य्यगदं मूर्ध्वङ्गुलासंख्यातभागमात्रे २ १६ १६ १६ १६ १६

इस संकलित धनको अपने अभिप्रायके अनुसार लानेके लिए केशववर्णनि दो गाथाएँ कही हैं । उनका अर्थ उदाहरण पूर्वक कहते हैं-अनन्त भाग वृद्धि युक्त स्थानोंमें जो विवक्षित स्थान है यह तिर्य्यक पद है । जैसे छठा स्थान तिर्य्यकपद है । उसमें एक घटानेपर उसके नीचे पाँच संकलन बार होते हैं । प्रशेषकके नीचे कोठोंमें-से प्रत्येकमें क्रमसे एक बार, दो बार आदि

२० सम्भव संकलनोंकी संख्या होती है । यहाँ इष्ट चार बार संकलन धन गत कोठेके धनको लानेके लिए इष्ट संकलन बारके प्रमाण ४ को ऊर्ध्वपद ६ में कम करनेपर ६-४=२ आदि होता है । इस आदि दोसे लगाकर एक-एक अधिकके क्रमसे ऊर्ध्व गच्छ छह पर्यन्त गुणकार होते हैं यथा २, ३, ४, ५, ६ । इन गुणकारोंके नीचे भागहार एक रूप आदि एक अधिक पदते हुए उठते क्रमसे होते हैं । सो यहाँ चार बार संकलनके कोठेमें चूणि है । जघन्यमें पाँच बार अनन्तका भाग देनेसे जो प्रमाण आता है उतना चूणि का प्रमाण है । इस प्रमाणके गुणकार क्रमसे दो, तीन, चार, पाँच, छह हैं और पाँच, चार, तीन, दो एक भागहार हैं । गुणकारमें पूर्णके प्रमाणको गुणा करके भागहारोंका भाग देनेपर यथायोग्य अपवर्तन करने पर छह गुणि पूर्ण मात्र प्रमाण आता है । इसका आशय यह है जो १६, १६, १६, १६, १६ यह पूर्णका प्रमाण है । 'ज' अर्थात् जघन्य पर्याय स्थानमें १६ अर्थात् अनन्तका पाँच बार

१० १. मं गार केनेर ।

भागमात्रंगळ संदु द्वितीयपट्टस्थानरूपादिभूतमप्यष्टाक्रमोऽनु पुट्टदुर्गमन्नेर मन्नेरोगमो कृगपरि-
पत्पट्टगं ।

आदिमछट्टाणम्मि य पंच य वड्ढी हवन्ति सेसेसु ।

छव्वड्ढीओ हवन्ति हे सरिसा सव्वत्थ पदमंसा ॥३२७॥

आदिमपट्टस्थाने च पंच वड्ढयो भवन्ति सेसेषु । पट्टवड्ढयो भवन्ति सत्तु सट्ठो सत्तन्न पर-
संख्या ॥

इत्थि संभविमुवंतप्पसंख्यातलोकमात्रपट्टस्थानंगळोऽनु आदिमपट्टस्थाने आरी भग्मादिमं
पण्णां स्थानानां समाहारः पट्टस्थानं आदिम पट्टस्थानमादिमपट्टस्थानं तस्मिन् मोरल पट्टस्थानरूपं
पंच वड्ढयो भवन्ति पंचवृद्धिगळेऽप्युपेके बोधे चरमाष्टांरुसंज्ञेयनुञ्जन्तगुणवृद्धिपुक्तस्थानरूपे द्वितीय
पट्टस्थानवकाचित्व प्रतिपादनादिदं सेसेषु सेषे द्वितीयादिचरमात्रस्थानमात्र पट्टस्थानंगळोऽस्त्वमष्टां-
दिपात्र पट्टवृद्धिगळेषुयुक्तागुत्तिरल्ल सट्ठो सव्वेत्थ पदसंख्या ई पट्टस्थानंगळोऽनु संभविगुण स्थान-
विकल्पंगळ संख्यासाहस्रनिपमकके निमित्तमप्य भूष्यंगुलासंख्यातभागरूपस्थितस्वरूपमुज्ज्वरिदं ।
समस्तपट्टस्थानंगळ स्थानविकल्पंगळ संख्येसमानमेयुक्कुमंताबोधे मोरल पट्टस्थानवोऽनु पंचवृद्धि-
पुक्तस्थानंगळेषुदरितष्टाक्रमे तु पट्टिमिसुगुमे बोधुत्तरमूर्त्रबोधु वेत्थवः —

संख्यातभागवृद्धियुक्तस्थानास्यपि प्रत्येकं बाण्डकगण्डकप्रमिताति नीत्वा पुनरनन्तभागवृद्धियुक्तस्थान-
स्थानानि प्रत्येकं काण्डकप्रमितानि नीत्वा पुनरनन्तभागवृद्धियुक्तस्थानास्येव भूष्यंगुलासंख्यानभागमात्राणि
नीत्वा द्वितीयपट्टस्थानस्य आदिभूतमष्टाकुलं भवति इत्येवं सर्वत्र पट्टस्थानवित्तवृद्धिक्रमो ज्ञातव्यः ॥३२९॥

अत्र संभवत्यु अस्तंख्यातलोकमात्रेषु पट्टस्थानेषु मध्ये आदिमे प्रथमे पट्टस्थाने पञ्च वड्ढयो भवन्ति,
चरमस्य अष्टाकुलसंख्य अनन्तगुणवृद्धियुक्तस्य द्वितीयपट्टस्थानस्यादिवप्रतिपादनान् । सेषेषु द्वितीयादिचरमात्र-
स्थानेषु पट्टस्थानेषु सर्वा अष्टाकुलसंख्या पट्टवड्ढयो भवन्ति । तथापि सट्ठो सर्वत्र पदसंख्या एतेषु पट्टस्थानेषु
संभवति—स्थानविकल्पसंख्या सट्ठो समानं सादृश्यनिपमनिमित्तस्य भूष्यंगुलासंख्यानभागस्य अवस्थित-
स्वरूपत्वात् । तथा एति प्रथमपट्टस्थाने पञ्चवृद्धियुक्तस्थानानि संभवन्ति ॥३३०॥ अष्टाकुलः कथं न पटते इति
चेद्रेनुमाह—

हीनेपर पुनः अनन्त भाग वृद्धि युक्त स्थान भूष्यंगुलके असंख्यातवै भाग मात्र हीनेपर द्वितीय
पट्टस्थानका आदिमूत्र अष्टांक होता है । इस प्रकार सर्वत्र पट्टस्थानपतित वृद्धि क्रम
जानना ॥३२६॥

उपन्य पर्याय ज्ञानके ऊपर असंख्यात लोक मात्र पट्टस्थान होते हैं जो पर्याय समाप्त
श्रुतज्ञानके विकल्प हैं । उनमें-से प्रथम पट्टस्थानमें पाँच ही वृद्धियाँ होती हैं क्योंकि अनन्त
गुण वृद्धिसे युक्त जो अष्टांक संज्ञावाला अन्तिम स्थान है उसे दूसरे पट्टस्थानका आदि स्थान
कहा है । सेष दूसरेसे लेकर अन्तिम पर्यन्त सब पट्टस्थानोंमें अष्टांक आदि छहों वृद्धियाँ
होती हैं । ऐसा हीनेसे इन पट्टस्थानोंमें स्थानके विकल्पोंकी संख्या समान ही है क्योंकि
सर्वत्र भूष्यंगुलका असंख्यातवै भाग तदवस्थ है उसमें हीनाधिकता नहीं है । इस तरह प्रथम
पट्टस्थानमें पाँच वृद्धि युक्त स्थान ही होते हैं ॥३२७॥

मुच्यते तत्त्रिचतुष्टयं भुवि च संख्यातमात्रस्यानंगं त्रिचतुष्टयं भाग-
स्थानं गच्छत्तुं विरलल्लिख्य प्रशेषकं प्रशेषकप्रशेषकमेवैरु वृद्धिगच्छं जघन्यदोष्यकल्पदुत्तरलु
लक्ष्यप्रसारं द्विगुणमवमुदते दोषे प्रशेषकप्रशेषकद रूपोनगच्छदेकवारसंकलनघनप्रमितद

ज १५।३।१५।३ ऋणमं वेरिरिति ज १।३ अपवर्तितवनमिदु ज १ इवरोओवु रूपं
१५।१५।४।२।४।१ १५ ३२ ज १३ इदं प्रशेषकवृद्धियोऽनु ज ३ कूडिदोडे
५ तेनेतु घनमं वेरिरिति ज १ शेषापवर्तितयनं ज १ इदं प्रशेषकवृद्धियोऽनु ज ३ कूडिदोडे
३२ ज १३

संख्यातमात्रस्यानंगं त्रिचतुष्टयं भागस्थानानि नीत्वा तत्र प्रशेषकः प्रशेषकप्रशेषकमेवैरु वृद्धिद्वये जघन्यस्योनरि
युते लक्ष्यप्रसारं द्विगुणं भवति । तद्यथा—

प्रशेषकप्रशेषकस्य रूपोनगच्छन्त्य एकवारसंकलनघनप्रमितस्य ज १५।३।१५।३ ऋणं पुषक्कृत्य
ज १ ३ शेषमववर्त्य ज १ एकलं पुषक्कृत्य ज १ शेषे ज ८ अपवर्त्य ज १ प्रशेषकवृद्धो ज ३
१५ ३२ ३२ १५ १५ ४ २ ४ १ ३२ ३२ ४

- १० संख्यातमात्र स्थानोंकां चारसे भाग देकर उनमेंसे तीन भाग प्रमाण स्थानोंके होनेपर प्रशे-
पक और प्रशेषक-प्रशेषक इन दोनों वृद्धियोंको साधिक जघन्य ज्ञानमें जोड़नेपर लक्ष्यप्रसार
ज्ञान साधिक हुआ होता है । कैसे, सो कहते हैं—पूर्व वृद्धि होनेपर जो साधिक जघन्य ज्ञान
हुआ उसमें दो बार उत्कृष्ट संख्यातसे भाग देनेपर प्रशेषक-प्रशेषक होता है । सो एक हीन
गच्छका गच्छन घन मान प्रशेषक-प्रशेषककी वृद्धि यहाँ करनी है । पूर्वोक्त करण सूत्रके
अनुसार उस प्रशेषक-प्रशेषकको एक हीन उत्कृष्ट संख्यातके तीन चौथाई भागसे और उत्कृष्ट
संख्यातके तीन चौथाई भागमें गुणा करना और दो और एकसे भाग देना । ऐसा करनेपर
साधिक जघन्यका एक हीन तीन गुणा उत्कृष्ट संख्यात और तीन गुणा उत्कृष्ट संख्यात तो
गुणकार हुआ तथा दो बार उत्कृष्ट संख्यात और चार दो, चार एक भागहार हुआ । एक
हीन मन्वर्षी ऋणरिति साधिक जघन्यको तीनका गुणकार और उत्कृष्ट संख्यात तथा
१० बत्तीसको भागहार करनेपर होती है । उसको अलग रखकर शेषका अपवर्तन करनेपर
साधिक जघन्यको नौसे गुणा और बत्तीससे भाग प्रमाण हुआ । साधिक जघन्यका विह
ज देगा है सो ज ३१ हुआ ।
वितरण—यहाँ दो बार उत्कृष्ट संख्यातका गुणकार और भागहारका अपवर्तन
दिया । गुणकार तीन-तीनको परस्परमें गुणा करनेसे नौका गुणकार हुआ और चार, दो,
२५ चार एक भागहारको परस्परमें गुणा करनेसे बत्तीस भागहार हुआ । ऐसे ही अन्यत्र भी
जानना । अतः ।
इस ज ३१ में एक गुणकार साधिक जघन्यका बत्तीसवां भाग है ज ३२ । इसको
अलग रखकर शेष साधिक जघन्यको आठका गुणकार और बत्तीसका भागहार रहा । इसका
अपवर्तन करनेपर साधिक जघन्यका चौथा भाग रहा ज ३१ । प्रशेषक गच्छ प्रमाण है सो
१० साधिक जघन्यको एक बार उत्कृष्ट संख्यातका भाग देनेपर प्रशेषक होता है उसको उत्कृष्ट

ज १।४९ बेरिरसि अपवर्तितसिबोडिनितकुं ज ३४३ इवरोळु पविमूह रूपगळं तेगेदिरि-
१५।१००० ६०००

मुवुवु ज १३ शेषमिदु ज ३३० अपवर्तितमिदु ज ११ हल्लि घन ज १३ मिदरोळु
६००० ६००० २०।१० ६०००

प्रथमद्वितीयऋणगळु संख्यातगुणहीनंगळें दु किचिदून माडि ज १३= मतं प्रसेपकप्रसेपक
६०००

ज १५।७।७ ऋणमिनितकुं ज १।७ मिदं बेरिरसि ज १५।७।७ अपवर्तितमिदु
१५।२।१०।१० १५।२०० १५।२००

५ ज ४९ इवरोळु मुनिन पिमुलिघनमनेकावसरूपं कूडुत्तिरलुभयघनमिदु ज ६० अपवर्तितमिदु
२०।१० २००

शेषनमस्य ज १५ ७।४९ अत्रस्थमूनं ज १ ४९ पुषकसंस्थाप्य शेषमपवर्त्य ज ३४३।
१५ १० ६०० १५ ६००० ६०००

इदमनोत्पत्त्यागननीय पुषकसंस्थाप्य ज १३। शेषं ज ३३०। अपवर्त्यं ज ११ एकन संस्थाप्य
६००० ६००० २० १०

आर आर् पुषकसंस्थाप्य ज १३ प्रथमद्वितीयऋण संख्यातगुणहीनमिति किचिदून कृत्वा ज १३-१ एकन
६००० ६०००

संख्यात पुनः प्रथमद्वितीयऋणे ज १५ ७।७।७ ऋणं ज १ ७। पुषक संस्थाप्य शेषं ज १५ ७ ७।
१५ २ १०।१०। १५ २०० १५ २००

- १० एक हीन गच्छका एक बार संकलन घन मात्र है सो साधिक जघन्यको दो बार उच्छट संख्यातसे भाग देनेपर प्रथोत्क-प्रथोत्क होता है। उसका पूर्ण सूत्रानुसार एक हीन सात गुणा उच्छट संख्यातका तथा सात गुणा उच्छट संख्यातका गुणकार और दस, दो तथा दस एक भागहार हुआ। मिश्रित दो हीन गच्छका दो बार संकलित घन मात्र होती है। सो साधिक जघन्यको तीन बार उच्छट संख्यातका भाग देनेसे मिश्रली होती है। उसको पूर्ण सूत्रानुसार
- ११ दो हीन और मात्रमे मुनिन उच्छट संख्यात और एक हीन तथा सातसे गुणित उच्छट संख्यात व सात मुनिन उच्छट संख्यात गुणकार तथा दस, तीन, दस दो, दस एक भागहार होने हैं। इनमें मिश्रलीके गुणकारमें दो कम किये थे उस सम्यन्धी प्रथम ऋणका प्रमाण साधिक जघन्यको दोका और एक हीन तथा सातसे गुणित उच्छट संख्यातका तथा सात गुणा उच्छट संख्यातका गुणकार तथा दो बार उच्छट संख्यातका और छहका और तीन
- १२ बार दसका भागहार करनेपर होता है। उसको अलग स्थापित करके शेषका अपवर्तन करने-
द्वारा और उच्छट संख्यात छह हजारका भागहार होता है यहाँ गुणकारमें एक हीन है।

अनंतरं गायत्र्यपवित्रं शास्त्रकारनक्षरसमाप्तं पेन्द्रपं :—

एयमक्षरादु उवर्ति एगोणक्षरेण वद्धंतो ।

संखेज्जे खलु उद्धे पदणामं होदि सुदणामं ॥३३५॥

एकाक्षरादुपरि चैरेरेनाक्षरेण वर्धमानाः । संखेये खलु वृद्धे पदनाम भवति श्रुतज्ञानं ॥

- ५ एकाक्षरजनितात्यंतज्ञानदमेले तु भवे पूर्वोक्तक्रमवि पदस्थानवृद्धिरहितमपि एकैकाक्षरविद्व
वर्धमानमागुत्तिरलु द्विपक्षरअक्षरादिरूपोनेरूपदाक्षरमात्रपर्यंतसमुदायश्रवणजनिताक्षरसमाप्तज्ञान-
विरूपेणगळ संखेयेणगळ द्विरूपोनेरूपदाक्षरप्रमितंगळ सलुतं विरलु तदनंतरमुत्कृष्टाक्षरसमाप्तविरूपे
मेले एकाक्षरवृद्धिमागुत्तिरलु पदनाममनुज्ज श्रुतज्ञानमवक्तुं ।

मोलममयचउतीसा कोडी तियसीदिलक्खयं चैव ।

- १० मत्तमहस्सद्वसया अट्टामीदी य पदवण्णा ॥३३६॥

योद्धानाशतपुत्रिगणकोटपाश्र्वशीतिलभाणि चैव । समसहस्राष्टशताष्टाशीतिश्च पदवर्णाः ॥

इति च अर्धपरं प्रमाणपदं मध्यमपदमेव पदं त्रिविधमवक्तुं । अल्लिये निरक्षरसमूहविद्व-

विशिक्षार्थमपिपत्यदुग्धमवर्धयमवक्तुं । गां वंकेन शालिम्यो निशारय । स्वमग्निमानय ।

इत्यादिगळ । अष्टाक्षरादिसंखेयिदं निष्पन्नमप्यक्षरसमूहं प्रमाणपदमेव बुधवक्तुं । नमः धीवर्धमानाय ।

- १५ एविनु मोरसादुवु । योद्धानाशतपुत्रिगणकोटपाश्र्वशीतिलभाणि । समसहस्राष्टशताष्टाशीतिश्च
पदवर्णाः एंती गायोक्तक्रमानेरूपदा पुनपदनाक्षरंगळं समूहं मध्यमपदमेव बुधवक्तुं १६३४८३०७८८८

॥३३४॥ अथ गायत्र्येन शास्त्रकारः अक्षरमाप्तं कथयति—

एकाक्षरजनितात्यंतज्ञानशेपरि तु-तुलः पूर्वोक्तपदस्थानवृद्धिकवरहिततया एकैकाक्षरेणैव वर्धमानाः
द्विपक्षरअक्षरादिरूपोनेरूपदाक्षरमात्रपर्यंतसमुदायश्रवणजनिताक्षरसमाप्तज्ञानविरूपेणः संखेयाः द्विरूपोनेरु-

- १० एयमक्षरादु उवर्ति एगोणक्षरेण वद्धंतो मया पदनाम श्रुतज्ञानं भवति ॥३३५॥

अथ अर्धपरं प्रमाणपदं मध्यमपदं चैति वर विविधम् । तत्र गायत्र्याश्रयाद्देन विशिक्षार्थो जायते
संखेयं । वंकेन शालिम्यो वा निशारय, स्वमग्निमानय इत्यादयः । अष्टाक्षरादिसंखेयया निष्पन्नोऽक्षरसमूहः

प्रमाणपदं 'नम धीवर्धमानाय' इत्यादि । योद्धानाशतपुत्रिगणकोटपाश्र्वशीतिलभाणि समसहस्राणि अष्टशतानि

अथ शास्त्रकार दो गायत्रीमें अक्षर ममामको कहते हैं—

- ११ एक एक अक्षर बढ़ने हुए दो अक्षर तीन अक्षर आदि रूप एक होन पदके अक्षर पर्यंत अक्षर
समूहके मुखेयो एयम अक्षर ममाम ज्ञानके विरूप संख्यात हैं अर्थात् दो होन पदके अक्षर
प्रमाण हैं । वंके अन्तर अष्टाष्ट अक्षर ममामके विरूपके ऊपर एक अक्षर बढ़नेपर
पदनामक अज्ञान होता है ॥३३५॥

- १० पदके तीन भेद हैं—अर्धपद, प्रमाणपद, मध्यमपद । जिनके अक्षरोंके समूहसे त्रिवि-
ध अर्धका ज्ञान होता है वह अर्धपद है । जैसे वृद्धेमे गायको भगाओ । आग लाओ,
इत्यादि । अष्ट अक्षर अक्षरोंकी संख्यामे बने अक्षर समूहको प्रमाण पद कहते हैं । जैसे
'नम धीवर्धमानाय' । 'दि' । 'मी' 'चौ' 'ते' 'करो' 'दु' 'तेरा' 'मी' 'लाग' 'सात' 'हजार' 'आठ-
'ती' 'प्रमाण' 'अक्षरों' 'के' ।
प्रमाण एक पदके अपुनरुक्त अक्षरों-

समाप्तज्ञानोत्कृष्टविकल्पद मेले एकाक्षरमे वृद्धमागुत्तिरलु संघातश्रुतज्ञानमयकुं- प १००० १ मिदुं
चतुर्गतिगोत्रोद्भु गतिस्वरूपनिरूपकमध्यमपदसमुदायरूपसंघातश्रवणजनितात्यज्ञानमयकुं ।

अनंतरं प्रतिपत्तिकथं तज्ज्ञानस्वरूपं येद्वयं :-

एककदरगदिणिरूपयसंघादसुदादु उवरि पुत्रं वा ।

वण्णे संसेज्जे संघादे उद्धम्मि पडिवत्ती ॥३३८॥

एकतमगतिनिरूपकसंघातश्रुतादुपरि पूर्व्वं वत् । यणं संसेये संघाते वृद्धे प्रतिपत्तिः ॥

- पूर्व्वोक्तप्रमाणमप्य एकतमगतिनिरूपकसंघातश्रुतमेले पूर्व्वपरिपाटिपदमेकैकवर्णवृद्धि-
सहपरिमितमप्येतेरुपवृद्धिक्रमदिवं संघातसहस्रपदमात्रसंघातगळ संघातसहस्रप्रमितगळ हपोन-
संघातसमाप्तज्ञानविकल्पांगळ सलुत्तं विरलु तच्चरमसंघातोत्कृष्टविकल्पद प १०००१ । १००० १-१
१० वृद्धिमेले एकाक्षरवृद्धिमेलेपागुत्तिरलु प्रतिपत्तिकर्मं च श्रुतज्ञानमयकुं १६ = १०००१ । १०००१ ।
इदुपुं नारकादिचतुर्गतिस्वरूपसंघातप्रत्यक्षरूपप्रतिपत्तिरूपसंघातश्रवणजनितात्यज्ञानमेदितु
निरूपकपदुपुं ।

अनंतरमनुयोगश्रुतज्ञानं येद्वयपद-

- १५ ११ = १००१ १ तत्पदगुणो गतीनां मध्ये एकतमगतिस्वरूपनिरूपकमध्यमपदसमुदायरूपसंघातश्रवणजनितात्य-
ज्ञान ॥३३७॥ अथ प्रतिपत्तिश्च श्रुतज्ञानमयं निरूपयति-

- पूर्व्वोक्तप्रमाणमप्य एकतमगतिनिरूपकसंघातश्रुतमेले पूर्व्वपरिपाटिपदमेकैकवर्णवृद्धिसहपरिमित-
पदवृद्धिमेले संघातसहस्रपदमात्रसंघातगळ संघातसहस्रप्रमितगळ हपोने संघातसमाप्तज्ञानविकल्पेपु गतेपु तच्चरमस्य
संघातसमाप्तज्ञानविकल्पसंघातगळ ११ = १००० १ । १००० १-१ एतदुपरि एकस्मिन्नधारे वृद्धे सति प्रति-
२० पत्तिर्मे नाम श्रुतज्ञान भवति १६ = १००० १ । १००० १ । तच्च नारकादिचतुर्गतिस्वरूपसंघातप्रत्यक्षरूप-
प्रतिपत्तिरूपसंघातश्रवणजनितात्यज्ञानमेदितु निरूपकम् ॥३३८॥ अवानुयोगश्रुतज्ञानं प्ररूपयति-

- १६ १६ ॥ इस प्रकार मत्त्येक एक पदके अक्षर मात्र विकल्पोंके बीचनेपर पदज्ञानके चतुर्गुने-पंचगुने
होते-होते संघात हजार गुनित्र पदमात्र पदसमाप्त ज्ञानके विकल्पोंमें एक अक्षर पटानेपर
जो प्रमाण रहे वनमे पदसमाप्त ज्ञानके विकल्प होते हैं । अन्तिम पदसमाप्त ज्ञानके चतुष्ट
१५ विकल्पके ऊपर एक अक्षर बढ़ानेपर संघात श्रुतज्ञान होता है । सो चार गतियोंमें-से किसी
एक गतिके स्वरूपका कथन करनेवाले मध्यमपदके समुदायरूप संघात श्रुतज्ञानके मुननेसे जो
अर्थज्ञान होगा दे वह संघात श्रुतज्ञान है ॥३३७॥

अथ प्रतिपत्ति श्रुतज्ञानका स्वरूप कहते हैं-

- १० १० ॥ पूर्व्वोक्त प्रमाण द्विती एक गतिके निरूपक संघात श्रुतके ऊपर पूर्व्वोक्त प्रकारसे एक-
एक अक्षरकी वृद्धिपूर्व्वक एक-एक पदकी वृद्धिके क्रमसे संघात हजार पदप्रमाण संघात
हजार संघातमें होते हैं । उनमें एक अक्षर कम करनेपर संघात श्रुतज्ञानके विकल्प होते हैं ।
इसके अन्तिम संघात समाप्त के उत्कृष्ट विकल्पके ऊपर एक अक्षर बढ़ानेपर प्रतिपत्ति नामक
अर्थज्ञान होता है । नारक आदि चार गतियोंके स्वरूपका विचारसे कथन करनेवाले
प्रतिपत्ति नामक मध्यके मुननेसे होनेवाला अर्थज्ञान प्रतिपत्ति श्रुतज्ञान होता है ॥३३८॥

- ११ ११ ॥ अथ श्रुतज्ञानको कहते हैं-

अहियारो पाहुडयं एयडो पाहुडस्स अहियारो ।

पाहुडपाहुडणामं होदिचि जिणेहि णिदिदुत्तं ॥३४१॥

अधिकारः प्राभूतकमेकात्म्यः प्राभूतस्याधिकारः प्राभूतकप्राभूतकनामा भवतीति
जिनेन्निदिष्टं ॥

वस्तुष्वेव धृतज्ञानद अधिकारः प्राभूतकमेकैकत्वेकात्म्येणऽतः । प्राभूतद अधिकारम प्राभूतक
प्राभूतकमेव बुद्धि अदुकारणदिदमेकात्म्यपण्याशब्दमेदितु जिनेन्द्रमद्वारकरिदं पेक्षत्पटुदु । स्वर्षचि-
विरचित मत्तं बुद्धयं ।

द्विकारप्राभूतानंतरं प्राभूतकस्वरूपम पेक्षदपहः—

दुगवारपाहुडादो उवारिं वण्णे कमेण चउवीसे ।

दुगवारपाहुडे संउदहे खलु होदि पाहुडयं ॥३४२॥

द्विकारप्राभूतकानुपरि यमं क्रमेण चतुर्विधमती । द्विकारप्राभूते संबुद्धे खलु भवति
प्राभूतकं ॥

द्विकारप्राभूतकरिदं मेले तदुपरि पूर्वोक्तक्रमदिदं प्रत्येकमेकैकवर्णबुद्धिसहचरितपदादि-
बुद्धिर्गोचरे चतुर्विधमतिप्राभूतकप्राभूतकं यद् बुद्ध्यङ्गाणुतिरलु रूपोपतावगमायङ्गु प्राभूतकप्राभूतक-
सामान्यज्ञानविकल्पङ्गु तदुत्तं विरलु तत्त्वरमोदकृष्ट विकल्पद मेले एकाक्षरबुद्धिपाणुतिरलु
प्राभूतकमेव धृतज्ञानमकतः ।

अनंतरं वस्तुष्वेव धृतज्ञानस्वरूपम पेक्षदपहं—

वस्तुनामधृतज्ञानस्य अधिकारः प्राभूतकं वेति द्वौ एकावौ । प्राभूतकस्य अधिकारोऽपि प्राभूतक-
प्राभूतकनामा भवति ततः कारणात् एकार्थः पर्वोपपन्नः इति जिनेः—प्रद्विद्वारकैः निदिष्टं न स्वर्षचिविरचित-
मित्यर्थः ॥३४१॥ द्विकारप्राभूतकानुपरि प्राभूतकस्वरूपं शक्यमिति—

द्विकारप्राभूतकानुपरि तयोपरि पूर्वोक्तक्रमेण प्रत्येकमेकैकवर्णबुद्धिसहचरितपदादिबुद्धिभिः चतुर्विधमति-
प्राभूतकप्राभूतकं बुद्धेः कर्तव्यज्ञानात्तु प्राभूतकप्राभूतकज्ञानविकल्पेन गतेषु तत्त्वरमममावोदकृष्टविकल्पस्य
स्वरि एकाक्षरबुद्धौ स्यात् प्राभूतकं नाम धृतज्ञानं भवति ॥३४२॥ अथ वस्तुनामधृतज्ञानस्वरूपमाह—

समाम शानके विदुत्तं होते है । उमके अन्तिम अनुयोग समामके उत्कृष्ट विकल्पके ऊपर
एक अक्षरके बदनेपर प्राभूतक-प्राभूतक नामक धृतज्ञान होता है ॥३४०॥

वस्तु नामक धृतज्ञानका अधिकार कहो या प्राभूतक कहा, दोनोंका एक ही अर्थ है ।
प्राभूतकका अधिकार भी प्राभूतक-प्राभूतक नामक होना है । ऐसा अर्थान्त देखने कहा है ।
स्वर्षचि विरचित नहीं है ॥३४१॥

अथ प्राभूतकका स्वरूप कहते हैं—

प्राभूतक-प्राभूतकमे व्यगे उमके ऊपर पूर्वोक्त प्रकारसे प्रत्येक एक-एक अक्षरकी
बुद्धि के समे पद आदिकी बुद्धिके होते-होते चौथोम प्राभूतक प्राभूतकोकी बुद्धिमें
एक अक्षर बदनेपर प्राभूतक-प्राभूतक समामके भेद होते हैं । उसके अन्तिम भेदमें
एक अक्षर बदनेपर प्राभूतक धृतज्ञान होता है । उमके ऊपर पूर्वोक्त क्रमसे एक-एक
अक्षरकी बुद्धि के समे वीम प्राभूतक नामक अधिकारोंके बदनेपर प्राभूतक नामक धृतज्ञान
होता है । उमके एक अक्षर कम करनेपर करने मात्र प्राभूतक समाम शानके विकल्प
होते हैं उमके अन्तिम प्राभूतक समामके उत्कृष्ट विकल्पके ऊपर एक अक्षर बदनेपर

वस्यार्था एकदेशेन संत्यस्मिन्निति वस्तुपूर्वाधिकारः । पूरयति श्रुतात्मानं संविभर्त्तौति पूर । सं
संगृह्य पर्यायादीनि पूर्वपर्यन्तानि स्वीकृत्य अस्यति शिष्यन्ते विकल्पन्ते इति सामानाः । पर्याय-
ज्ञानवत्तनुत्तरविकल्पंगत्तु पर्यायसमासंगत्तु । अक्षरज्ञानवत्तनुत्तरविकल्पंगत्तु अक्षरसमासंगत्तु इतु
मुदेल्लेडेयोऽं पदसमासाविगत्तु योग्यंगत्तुप्यव ।

- ५ इल्लि पूर्वंगत्तु १४ वस्तुगत्तु १९५ प्राभुनकंगत्तु ३९०० द्विकवारप्राभुनकंगत्तु ९३६००
अनुयोगंगत्तु ३७४४०० प्रतिपत्तिकसंघातपदंगत्तु संख्यातसहस्रगुणितक्रमंगत्तु । एकपदाक्षरंगत्तु
१६३४८३०७८८८ समस्ताक्षरंगत्तु रूपोनेकद्विप्रमितंगत्तु १८४४६७४४०७३७०९५११६१५ ईश्वर-
गत्तुनेकपदाक्षरंगत्तु प्रमाणिसुतं विरुलु द्वादशांगपदप्रमाणमशुभेदु सत्यम वेव्यं :-

चारुत्तरसयकोडी तेसोदी तह य होंति लक्षणां ।

- १० अट्टावण्णसहस्सा पंचेव पदाणि अंगाणं ॥३५०॥

द्वादशोत्तरं शतं कोट्यष्टश्रयसीतिस्तथा च भवति सप्तशानामष्टपंचाशान् सहस्राणि पंचैव
पदायंगानां ॥

- मूलं परिपूर्णं प्राभूतं वस्तुनोऽधिकारः, प्राभूतमिति संज्ञा वस्यास्तीति प्राभूतकं, प्राभूतकस्याधिकारः प्राभूतक-
प्राभूतकम् । वस्तुनि पूर्वमहर्णवस्य अर्थाः एकदेशेन सन्त्यस्मिन्निति वस्तु । पूर्वाधिकारः पूरयति श्रुतात्मानं
१५ संविभर्त्तौति पूर्वम् । सं-संगृह्य पर्यायादीनि पूर्वपर्यन्तानि स्वीकृत्य अस्यन्ते शिष्यन्ते विकल्पन्ते इति सामानाः ।
पर्यायज्ञानादुत्तरविकल्पाः पर्यायसमासाः । अक्षरज्ञानादुत्तरविकल्पा अक्षरसमासाः । एवमप्रेऽपि सर्वत्र
पदसमासादयो योग्याः । अत्र पूर्वाणि १४, वस्तुनि १९५, प्राभूतानि ३९००, द्विकवारप्राभूतानि ९३६००,
अनुयोगाः ३७४४००, प्रतिपत्तिकसंघातपदानि संख्यातसहस्रगुणितक्रमानि एकपदाक्षराणि १६३४८३०७८८८,
समस्ताक्षराणि रूपोनेकद्विप्रमितानि १८४४६७४४०७३७०९५११६१५ । एतेष्वक्षरेषु एकपदाक्षरैः प्रमाणितेषु
२० यत्तुल्यं तद्द्वादशाङ्गपदप्रमाणं शेषमङ्गवाह्यक्षराणि ॥३४८-३४९॥ तत्र प्रथमं तत्पदप्रमाणमाह—

- सत्यगन्धी अर्थासि जो 'प्राभूत' परिपूर्ण है वह प्राभूत है । और प्राभूत संज्ञा होनेसे प्राभूतक
है । प्राभूतकके अधिकारको प्राभूतक-प्राभूतक कहते हैं । जिसमें पूर्व नामक महासमुद्रके अर्थ
१५ 'वसन्ति' एक देशसे रहते हैं वह वस्तु है । यह पूर्वोका अधिकार है । श्रुतके अर्थाका 'पू-
रयति' पोषण करता है वह पूर्व है । सं अर्थात् पर्यायसे लेकर पूर्व पर्यन्त भेदोंको 'अस्यन्ते'
अक्षरसमास है वह समास है । पर्याय ज्ञानसे उत्तर भेद पर्याय समास हैं, अक्षर ज्ञानसे उत्तर
२५ भेद अक्षर समास हैं इसी प्रकार आगे भी पदसमास आदिकी योजना कर लेना । पूर्व चौदह
हैं । यस्तु एक सौ पंचानवे हैं । प्राभूतक उनतालीस सौ हैं । प्राभूतक-प्राभूतक तिरानवे हजार
उत्तरोत्तर क्रमसे संख्यात हजार गुणित हैं । प्रतिपत्तिक, संघात और पद
३० तैरासी लाख सात हजार आठ सौ अठासी हैं । समस्त अक्षर एक कम एकद्वी प्रमाण
आया यह द्वादशांगके पदोंका प्रमाण है और शेष बचा वह अंगवाहक अक्षरोंका प्रमाण
है ॥३४८-३४९॥

पहले द्वादशांगके पदोंकी संख्या कहते हैं—

ओ अहो व्यंजनानि अर्धमात्रांगण्य व्यंजनगण्यपरिचयशालप्रमितंगण्यपु ३३ स्वराः स्वरंगण्येक
द्वित्रिमात्रांगण्य सप्तविंशतिः सप्तविंशतिप्रमितंगण्य २७ योगवाहः योगवाहंगण्य चत्वारश्च नाल्कु ४
अप्युतु इतु मूलवर्णगण्यचतुःषष्टिप्रमितंगण्यपु ६ ओ अहो भव्या नीनरिषे इतिनादिनिपनपरमागम -
दोऽप्रसिद्धंगण्य प्रकाशदिदमे पेठलपट्टपु ।

व्यज्यते स्फुटीक्रियतेऽर्थो यैस्तानि व्यंजनानि । स्वरन्त्यत्यं कथयन्तीति स्वरः । योगमन्या-
क्षरसंयोगं पठन्तीति योगवाहः । मूलानि संयुक्तोत्तरवर्णोत्पत्तिकारणभूता वर्णा मूलवर्णाः एदितु
समासात्पर्वलक्षितमसंयुक्तमागमि चतुःषष्टिवर्णगण्य ग्राह्यंगण्यपु । ई वर्णार्क संस्कृतदोऽदीर्घा-
भायमादोऽमनुरनदोऽं देशांतरभायगण्योऽं सद्भावमवकुं । ए ऐ ओ औ एबी नात्कवर्कं संस्कृत-
दोऽहस्याभायमादोऽं प्राकृतदोऽं देशांतरभायगण्योऽं सद्भावमवकुं ।

चउमट्टिपदं विरलिय दुगं च दाऊण संगुणं किञ्चा ।

रूऊणं च कए पुण सुदणाणस्सकखरा हँति ॥३५३॥

पुनःषष्टिपदं विरलियत्या टिकं च दत्ता संगुणं कृत्या । रूपोनं च कृते पुनः श्रुतज्ञानस्या-
क्षराणि भवति ॥

ओ-प्रहो भव्य । व्यंजनानि अर्धमात्राणि क् ए ग् घ् ङ् । च् छ् ज् झ् ञ् । द् ट् ड् ढ् ण् ।

१५ ए ए ५ ए ५ । ए ए ५ भू ५ । ए ए ५ ए ५ ए ५ ह । इत्येतानि प्रयत्नितान् ३३ । स्वराः एकद्वित्रि-
मात्राः । अ इ उ ऋ ए ए ओ औ इत्येते मत्र, प्रत्येकं ह्रस्वदीर्घप्लुतमेतद्विभिर्गुणितः अ आ आ ३, इ ई
ई ३, उ ऊ ऊ ३, ऋ ऋ ऋ ३, ए ए ए ३, ऐ ऐ ऐ ३, ओ १ ओ २ ओ ३,
औ १ औ २ औ ३ इत्येते सप्तविंशति २७ । योगवाहः अं अः ५क ५प इत्येते चत्वारः ४, एवं
मितित्वा मूलवर्णचतुषष्टि ६४ । ययानादिनिपने परमागमे प्रसिद्धास्तवैवात्र भविताः संज्ञानीहि । व्यज्यते
२० स्फुटीक्रियते अर्थो यैस्तानि व्यंजनानि । स्वरन्ति-अर्थं कथयन्तीति स्वरः । योग-अन्याभारसंयोगं वहन्तीति
योगवाहः । मूलानि संयुक्तोत्तरवर्णोत्पत्तिकारणानि वर्णा मूलवर्णाः इति समासात्पर्वलेन असंयुक्ता एव
चतुषष्टिर्गुणितं लभ्यन्ते । दत्तगः मरुते दीर्घो नास्ति तथापि अनुकरणे देशान्तरभाषाया चास्ति । ए ऐ ओ
औ इति चत्वारोऽपि मरुते ह्रस्वा न गन्ति तथापि प्राकृते देशान्तरभाषाया च सन्ति ॥३५२॥

‘ओ’ अर्थात् हे भव्य । अर्धमात्रा जिनमे होता है ऐसे सब व्यंजन तैसीस हैं—

१५ क् ए ग् घ् ङ् । च् छ् ज् झ् ञ् । द् ट् ड् ढ् ण् । त् थ् द् ध् न् । प् फ् ब् भ् म् । ए
ए ५ ए ५ ह् । ए-दीर्घानां मात्रावाले स्वर सत्ताईस होते हैं—अ, इ उ ऋ ए ऐ ओ
औ ये नौ । प्रत्येकको ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीनसे गुणा करनेपर सत्ताईस होते हैं । अ आ
आ ३ । इ ई ई ३ । उ ऊ ऊ ३ । ऋ ऋ ऋ ३ । ए ए ए ३ । ऐ ऐ ऐ ३ । ओ १ ओ २ ओ ३ । औ १ औ २ औ ३ । अं अः ५ क ५ प ये चार योगवाह । इस
२० प्रकार सब मिश्रकर मूल अक्षर चौंसठ हैं । जैसा अनादिनिपने परमागममें प्रसिद्ध है
यैसा ही यहाँ कहे हैं ।

‘व्यज्यते’ जिनके द्वारा अर्थ प्रकट किया जाता है वे व्यंजन हैं । ‘स्वरन्ति’ जो अर्थको
बढ़ने दे वे स्वर हैं । योग अर्थात् अन्य अक्षरोंके संयोगको जो ‘वहन्ति’ वहन करते हैं वे
योगवाह हैं । ‘मूल’ अर्थात् संयुक्त अक्षर वर्णोंकी उत्पत्तिके कारण वर्ण मूल वर्ण हैं । इस
२५ समासके अर्थके कारण असंयुक्त अक्षर ही चौंसठ हैं यह ज्ञात होता है । लृ वर्ण संस्कृत भाषा-
में दीर्घ नहीं है, तथापि देशान्तरकी भाषामें है । ए ऐ ओ औ ये चारों संस्कृतमें ह्रस्व नहीं
हैं । तथापि मरुत और देशमागमें हैं ॥३५२॥

इवेकद्वित्रिसंयोगादिचतुःषष्टिसंयोगपर्यन्तमप्य संयोगाक्षरसंजनिताक्षरंगत्वं संख्येयप्युदात्तं ना
एकद्वित्रिसंयोगाक्षरंगत्विन्युत्पत्तिक्रमं तोरल्पद्विगुणदेवं तं दोहे व्यंजनंगत्वं नयस्त्रिंशत्प्रमितंगत्वं । स्वरंगत्वं
सप्तविंशतिप्रमितंगत्वं । योगबहंगत्वं चतुःप्रमितंगत्विन्युत्पत्तिं मूलवर्णंगत्वं चतुःषष्टिप्रमितंगत्विन्यं क्रमविद-
मख्यत्तनाल्केडेयोऽत्र वेरे वेरे तिर्य्यगुपादिदं स्यापिसि प्रत्येकं द्विसंयोगादिगत्वं मान्युदेवं तं दोहे कवर्ण-
दोऽत्र प्रत्येकभंगमो देयकुं १ । द्विसंयोगमुक्तं खवर्णदोऽत्र प्रत्येकभंगद्वि १ । द्विसंयोगभंग १ । अंतु
२ । गवर्णदोऽत्र प्र १ । द्वि २ त्रि ३ । अंतु ४ । घवर्णदोऽत्र प्र १ । द्वि २ त्रि ३ च १ अंतु ८ । ङ
वर्णदोऽत्र प्र १ द्वि ४ त्रि ६ च ४ पं १ अंतु १६ । च वर्णदोऽत्र प्र १ द्वि ५ त्रि १० च १० पं ५
प १ अंतु ३२ । छवर्णदोऽत्र प्र १ द्वि ६ त्रि १५ च २० पं १५ प ६ सप्त १ अंतु ६४ । जवर्णदोऽत्र
प्र १ द्वि ७ त्रि २१ च ३५ पं ३५ प २१ सप्त ७ अष्ट १ अंतु १२८ । झवर्णदोऽत्र प्र १ द्वि ८ त्रि २८

रूपोने हृते सति धृतज्ञानस्य द्वादशाङ्गप्रकीर्णकरूपधृतस्कन्धस्य द्वाध्रुतस्य अपुनरुक्तप्रमाणं भवन्ति ।
वाक्यार्थप्रतीत्यर्थं गृहीतानां पुनरुक्तप्रमाणं संख्यानिर्णयमाभावात् ॥३५३॥ तदपुनरुक्तप्रमाणं कियचित्
वेदाह—

एकाष्टचतुश्चतुःषष्टिसकं चतुश्चतुःशून्यसप्तत्रिंशत्सप्तशून्यं नवपञ्चपञ्च एकं षट्कैकरव पञ्चकं च
इत्येकाङ्कादिपञ्चाङ्कावसानविसातिसंख्यानात्मकद्विरूपवर्गधारातोत्पन्नरूपोनेपष्टवर्गप्रमाणाक्षराणि भवन्ति—
१८४५६७४४०७३७०९५५१६१५ । एतानि अक्षराणि एकद्वित्रिसंयोगादीनि चतुःषष्टिसंयोगपर्यन्तानि सन्ति
तेषामुत्पत्तिक्रमो दधयते सप्तधा—उक्तमूलवर्णचतुःषष्टि तिर्य्यगुपादिसंख्या लिखित्वा तत्र कवर्णं प्रत्येकमङ्गे एकः १ ।
द्विसंयोगो नास्ति । खवर्णं प्रत्येकमङ्गः १ द्विसंयोगमङ्गः १ एवं २ । गवर्णं प्र १ द्वि २ त्रि १ एवं ४ ।
घवर्णं प्र १ द्वि ३ त्रि ३ च १ एवं ८ । ङवर्णं प्र १ द्वि ४ त्रि ६ च ४ पं १ एवं १६ । चवर्णं प्र १ द्वि ५
त्रि १० च १० पं ५ प १ एवं ३२ । छवर्णं प्र १ द्वि ६ त्रि १५ च २० पं १५ प ६ सप्त १ एवं ६४ ।
जवर्णं प्र १ द्वि ७ त्रि २१ च ३५ पं ३५ प २१ सप्त ७ अष्ट १ एवं १२८ । झवर्णं प्र १ द्वि ८ त्रि २८

दोका अंक देकर परस्परमें गुणा करनेपर जो लब्ध प्राप्त हो उसमें एक कम करनेपर द्वादशांग
और प्रकीर्णक धृतस्कन्ध रूप द्वय श्रुतके अपुनरुक्त अक्षर होते हैं । वाक्यके अर्थका ज्ञान
करानेके लिए गृहीत पुनरुक्त अक्षरोंकी संख्याका कोई नियम नहीं है ॥३५३॥

एक आठ चार चार छह सात चार चार शून्य सात तीन सात शून्य नौ पाँच पाँच
एक छह एक पाँच १८४५६७४४०७३७०९५५१६१५ इस प्रकार एक अंकसे लेकर पाँच अंक
पर्यन्त बीस स्थानरूप अपुनरुक्त अक्षर होते हैं । सो द्विरूप वर्गधारामें उत्पन्न एक हीन छठे
वर्ग प्रमाण हैं । ये अक्षर एक संयोगी दो संयोगी तीन संयोगी आदि चौंसठ संयोग पर्यन्त
होते हैं । इनकी दृष्टान्तिका क्रम दिखलाते हैं—

उक्त मूल वर्ण चौंसठ एक पंक्तिमें लिखें । उनमें-से कवर्णमें प्रत्येक भंग एक है ।
द्विसंयोगी आदि नहीं है । खवर्णमें प्रत्येक भंग एक द्विसंयोगी भंग एक है । इस प्रकार दो भंग
हैं । गवर्णमें प्रत्येक एक, दो संयोगी दो, तीन संयोगी एक, इस तरह चार भंग हैं । घवर्णमें
प्रत्येक एक, दो संयोगी तीन, तीन संयोगी तीन, चार संयोगी एक, इस तरह आठ भंग हैं ।
ङवर्णमें प्रत्येक एक, दो संयोगी चार, तीन संयोगी छह, चार संयोगी चार, पाँच संयोगी एक,
इस तरह सोलह भंग हैं । चवर्णमें प्रत्येक एक, दो संयोगी पाँच, त्रिसंयोगी दस, चार
संयोगी दस, पाँच संयोगी पाँच, छह संयोगी एक, इस तरह बीस भंग हैं । छवर्णमें प्रत्येक
एक, दो संयोगी छह, तीन संयोगी पन्द्रह, चार संयोगी बीस, पाँच संयोगी पन्द्रह, छह संयोगी
छह, सात संयोगी एक, इस तरह चौंसठ भंग हैं । जवर्णमें प्रत्येक एक दो, संयोगी सात, तीन

प्रमा त्रिसंयोगचतुःसंयोगपंचसंयोगादिस्वसंभवसंयोगंगळ प्रमाणं रूपाधिकवारहीनपदसंकलितं भवति । ह्वाधिकैकद्वित्रिवारदिस्वसंभवसंकलनसंख्या १ १ १ १ १ १ १ १ विहीनविवक्षित-
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

पदं :—१०१—२।१०१—३।१०१—४।१०१—५।१०१—६।१०१—७।१०१—८।१०१—९।
१० पदंगळ तत्तद्वारसंकलितं यावत्तावद्भवति । त्रियोगंगळ ह्वाधिकैकवारसंकलनसंख्याहीनपद-
देववारसंकलितमङ्कु १०—२।१०१ अपर्यत्तितमिदु । ३६ । चतुःसंयोगंगळ त्रिरूपोनपदद्विकवार-
२ १

संकलितमङ्कु ७।८।९ अपर्यत्तितमिदु । ८४ । पंचसंयोगंगळ चतुरूपोनपदत्रिवारसंकलितमङ्कु
३।२।१

६।७।८।९ अपर्यत्तितमिदु । १२६ । षट्संयोगंगळ षडरूपोनपदचतुर्वारसंकलितमङ्कु
४।३।२।१

५।६।७।८।९ अपर्यत्तितमिदु—१२६ । सप्तसंयोगंगळ षडरूपोनपदपंचवारसंकलितमङ्कु
५।४।३।२।१

विशिष्टादस्य यावत्तावद्भवति । यथा दशमे अक्षरे त्रिसंयोगाः द्विरूपोनपदस्य एकवारसंकलनमात्राः—
१०—२ । १०—१ अक्षरविज्ञाः १९ चतुःसंयोगाः त्रिरूपोनपदस्य द्विकवारसंकलनमात्राः—
३ १ १

७।८।९ अक्षरविज्ञाः ८४ । पञ्चसंयोगाः चतुरूपोनपदस्य त्रिकवारसंकलनमात्राः ६।७।८।९
१।२।१ ४।३।२।१

अक्षरविज्ञाः १२६ । षट्संयोगाः षडरूपोनपदस्य चतुर्वारसंकलनमात्राः ५।६।७।८।९ अपर्यत्तितः
५।४।३।२।१

आदिका प्रमाण यथाक्रम एक अधिक वार हीन गच्छका संकलन धन मात्र है । जितनी वार
संज्ञाएँ हो उतने वारोंकी संख्यामें एक अधिक करके और उसे विवक्षित गच्छमें घटानेपर
जो शेष प्रमाण रहे उतनेका संकलन करना चाहिये । जैसे दसवें अवर्णमें त्रिसंयोगी भंग
लानेके लिए एक वार संकलनका प्रमाण एक होनेसे उसमें एक अधिक करनेपर दो हुए । इस
दोको गच्छ हममेंसे घटानेपर शेष आठ रहे । इस आठका एक वार संकलन धन मात्र
त्रिसंयोगी भंग होते हैं । संकलन धन लानेके लिए कहे गये करणसूत्रके अनुसार विवक्षित
हममें अवर्णमें प्रत्येक भंग एक, द्विसंयोगी एक कम गच्छ प्रमाण नौ, त्रिसंयोगी भंग दो
हीन गच्छ प्रमाण आठका एक वार संकलन धन मात्र हैं । सो संकलन धन लानेके सूत्रके
अनुसार आठ और नौको दो और एकसे भाग देकर अपवर्तन करनेपर छत्तीस होते हैं ।
अर्थात् आठ और नौको परस्परमें गुणा करनेपर वृत्तर हुए । और दो-एकको परस्परमें गुणा
करनेपर दो हुए । दोसे वहनगमें भाग देनेपर छत्तीस रहते हैं । इसी तरह चतुःसंयोगी भंग
होन हीन गच्छका दो वार संकलन धन मात्र हैं । सो मात्र, आठ, नौको तीन, दो, एकका
भाग देनेपर ७।८।९। अवर्तन करनेपर चौरासी होते हैं । पंचसंयोगी भंग
३।२।१।

गच्छका तीन वार संकलन धन मात्र हैं । सो छह, मात्र, आठ, नौको चार, तीन, दो, एकसे
भाग देकर ६।७।८।९। अवर्तन करनेपर एक सौ छत्तीस होते हैं । षट्संयोगी भंग
५।४।३।२।१।

संकलनसारसंख्याहीनपदंगु ६४-२।-६४-३।-६४-४। ६४-५। ००००। ६-४-६३ तत्तद्धार-
संकलितं यावत्तावद्भवति एतदु त्रिसंयोगंगु रूपाधिकेकवारसंकलनसंख्याहीनपद एकवार-
संकलितमङ्गु ६४-२। ६४-१ अपवर्तितमिदु १९५३ चतुःसंयोगंगु त्रिरूपोनपदत्रिकवार-

२ १

संकलितमङ्गु ६१। ६२। ६३ अपवर्तितमिदु ३९७११ पंचसंयोगंगु चतुरूपोनपदचतुर्वारसंकलित-

३ २ १

५ मङ्गु ६०। ६१। ६२ अपवर्तितमिदु ५९५६६५ षट्संयोगंगु पंचरूपोनपदचतुर्वारसंकलित-

४। ३। २

मङ्गु ५९। ६०। ६१। ६२। ६३ अपवर्तितमिदु ७०२८८४७ सप्तसंयोगंगु षड् रूपोनपदपंच-

५ ४ ३ २ १

वारसंकलितमङ्गु ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३ अपवर्तितमिदु गुणितमिदु ६७९४५५२१

६ ५ ४ ३ २ १

अष्टसंयोगंगु सप्तरूपोनपद षड्वारसंकलितमङ्गु ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३

७ ६ ५ ४ ३ २ १

अपवर्तितगुणितमिदु ५५३२७०६७१ नवसंयोगंगु अष्टरूपोनपदसप्तवारसंकलितमङ्गु अपवर्तित-

१० ६४-२। ६४-१ अपवर्तितगुणित १९५३। चतुःसंयोगाः त्रिरूपोनपदस्य द्विकवारसंकलनमात्राः

२ १ १

११। १२। १३। अष्टसंयोगाः ५९५६६५। षट्संयोगाः पञ्चरूपोनपदस्य चतुर्वारसंकलनमात्राः

३ २ १ १ १

५९। ६०। ६१। ६२। ६३ अपवर्तितमात्राः ७०२८८४७। सप्तसंयोगाः षड् रूपोनपदस्य षड्वारसंकलन-

५ ४ ३ २ १ १

मात्राः। अष्टसंयोगाः ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६७९४५५२१। अष्टसंयोगाः सप्तरूपोन-

६ ५ ४ ३ २ १ १

वर्तित षड्वारसंकलनमात्राः। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। अपवर्तितमात्राः ५५३२७०६७१।

७ ६ ५ ४ ३ २ १ १

१५ स्थानोर्मै जानना। अन्तर्ध्वं शीसठवै स्थानमै प्रत्येक भंग एक, द्विसंयोगी भंग एक हीन गण्ड
मात्र त्रिमट, त्रिसंयोगी भंग दो हीन गण्डका एक बार संकलन घन मात्र। सो बासठ
धीर त्रिमटको दो और एकका भाग देनेपर जन्नीस सी तिरपन होते हैं। तथा चतुःसंयोगी
भंग तीन हीन गण्डका दो बार संकलन घन मात्र। सो इकसठ, बासठ, त्रिसठको तीन, दो,
एकका भाग देनेपर जन्नीस हज़ार सान सी ग्यारह भंग होते हैं। पंच संयोगी भंग चार

२० हीन गण्डका तीन बार संकलन घन मात्र। सो माठ, इकसठ, बासठ, त्रिसठको चार, तीन,
दो, एकका भाग देनेपर पाँच लाख पंचचानवे हज़ार छह सी पैंसठ होते हैं। छह संयोगी
भंग पाँच हीन गण्डका चार बार संकलन घन मात्र। सो जन्नीसठ, साठ, इकसठ, बासठ,
त्रिमटको पाँच, चार, तीन, दो, एकका भाग देनेपर सत्तर लाख अठाईस हज़ार आठ सी
ग्यारह भंग होते हैं। सप्त संयोगी भंग छह हीन गण्डका पाँच बार संकलन मात्र। सो

२५ अष्टावन, जन्नीसठ, माठ, इकसठ, बासठ, त्रिमटको छह, पाँच, चार, तीन, दो, एकका भाग
देनेपर छह करोड़ जन्नीसठ लाख पैंनाईस हज़ार पाँच सी इक्कीस होते हैं। आठ संयोगी

१ = [५८.८५.०१]।

द्वयभूतमनधिकरितिको ढे निरक्तियुं प्रतिपाद्यात्यं पदसंख्याविशेषगन्तुमे वि
 पूर्वगच्छोत्तु प्ररूपणे मादल्पदुगुमेके बोडे भावभूतवोत्तु निरक्त्याद्यसंभयमप्युदरिदं । इ
 गच्छ मोदलोच्छाचारां येल्लपट्टदुदेके बोडे मोक्षहेतुगच्छ संवरनिर्जराकारणपंचा
 चारित्र्यप्रतिपादकत्वदिदं । मुमुक्षुगच्छिनादरितल्पदुय मोक्षांगमप्य परमागमशास्त्रप्र
 १ यत्कथयत्यं युक्तिसिद्धमेदितु ।

चतुर्नानिस्तमद्विसंपन्नरूप्य गणधरदेवदगच्छिदं तीर्थंकरमुत्तरोजसंभू
 रमरदिव्यप्यनिययणाधारितसमस्तशब्दात्यं गच्छिदं शिष्यप्रतिशिष्यानुग्रहात्यं मागि
 भूतस्त्वपद्मादशांगगच्छोत्तमे मोदलोच्छाचारां विरचितस्तपट्टदुत्तु । आचरन्ति समंततो
 मोक्षमार्गं माराधयत्यस्मिन्नेनेति वा आचारस्तस्मिन् आचारांगे इतत्पाचारांगदोत्तु—

जदं चरे जदं चिट्ठे जदं आसे जदं सये ।
 जदं भुजेज्ज भासेज्ज एवं पावं ण बज्जइ ॥
 कथं चरेत् कथमासीत् कथं शयीत् कथं भाषेत् कथं भुंजीत् कथं पावं न वप्यते ।
 गणधरप्रदानुसारदिदं यत् चरेत् यत् तिष्ठेत् यत् मासीत् यत् शयीत् । यत् भाषेत् यत्

द्वयभूतमधिकार्य निरन्त्रतिपाद्याप्यपदसंख्याविशेषाणा तत्तदङ्गपूर्वेषु प्ररूपणा क्रियते भा
 निरलपाद्यांगमभात् । अत्र द्वादशाङ्गेषु अथमाचाराङ्गं कथितम् । कुतः ? मोक्षहेतुभूतसंवरनिर्जराकारण
 चारादिगच्छाचारिकप्रतिपादकत्वेन मुमुक्षुभिराश्रित्यमाणस्य मोक्षाङ्गभूतस्य परमागमशास्त्रस्य प्रथमतो वक्तव्यत
 मुनिगिरिवान् । चतुर्नानिस्तमद्विसंपन्नगणधरदेवः तीर्थंकरमुत्तरोजसंभूतसर्वभाषात्मकदिव्यध्वनिभ्रवण
 धारितगमरूपस्यार्थं शिष्यप्रतिशिष्यानुग्रहार्थं विरचितभूतस्तपट्टदुदशाङ्गाना मध्ये प्रथममाचाराङ्गं विरचित
 आचरन्ति गणधरवोत्तुनिष्ठेति मोक्षमार्गं माराधयन्ति अस्मिन्नेनेति वा आचारः तस्मिन् आचाराङ्गे—

जदं चरे जदं चिट्ठे जदं आसे जदं सये ।
 जदं भुजेज्ज भासेज्ज एवं पावं ण बज्जइ ॥१॥
 कथं चरेत् ? कथं तिष्ठेत् ? कथमासीत् ? कथं शयीत् ? कथं भाषेत् ? कथं भुंजीत् ? कथं पावं न वप्यते ? इति गणधरप्रदानुसारेण यत् चरेत् । यत् तिष्ठेत् । यत् मासीत् । यत् शयीत् । यत् भाषेत् । यत्

द्वयभूतको अधिकृत करके उस-उस अंग और पूर्वोक्त निरक्ति, प्रतिपादित अर्थ और
 पदोक्त संख्याका कथन करते हैं क्योंकि भावग्रन्थमें निरक्ति आदि सम्भव नहीं हैं । द्वादशांग-
 में पहला आचारांग कहा है क्योंकि मोक्षके हेतु संवर निर्जराके कारण पंचाचार आदि
 मन्त्र चारित्रका प्रतिपादक होनेसे मुमुक्षुओंके द्वारा आदरणीय तथा मोक्षके अंगभूत आचार-
 का परमागम शास्त्रमें प्रथम वक्ष्य होना युक्तिसिद्ध है । चार ज्ञान और सात श्रद्धियोंसे
 गणधर गणधरदेवने तीर्थंकरके मूलकमलसे पलन्न सर्वभाषामयी दिव्यध्वनिको सुनकर
 गमन शब्दार्थको अवधारण करके शिष्य-प्रशिष्योंके अनुग्रहके लिए निरचित द्वादशांग भूत
 १० शब्दोंमें प्रथम आचारांगको रचना की । जिसमें या जिसके द्वारा 'आचरन्ति' अच्छी रीतिसे
 आचरन करते हैं, मोक्ष मार्गको रचना की । जिसमें या जिसके द्वारा 'आचरन्ति' अच्छी रीतिसे
 चलना, कैसे सोचें होना, कैसे बैठना, कैसे सोना, कैसे खोलना, कैसे भोजन करना कि पापका
 दण्ड न हो । इस गणधरके प्रनके अनुसार सावधानतापूर्वक सेटिप् सावधानता पूर्वक सेटिप्

पुद्गलः विशेषार्पणया अणुस्कंधभेदाद्विद्वितयः इत्यादि पुद्गलादीनां च एकाद्येकोत्तरस्थानानि वर्ण्यन्ते इति स्थानं नाम तृतीयमंगं ।

- समुत्संग्रेहेण सादृश्यसामान्येन अवैयन्ते ज्ञायन्ते जीवाद्विपदात्त्याः द्रव्यक्षेत्रकालभाषानाश्रित्य तस्मिन्निति समवायांगं । तत्र द्रव्याश्रयेण धर्मास्तिकायेनाधर्मास्तिकायः सदृशः, संसारिजीवेन संसारिजीवः सदृशः, मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सदृशः इत्यादिद्रव्यसमवायः । क्षेत्राश्रयेण सीमन्तनरक मनुष्यक्षेत्र ऋत्विक्सिद्धक्षेत्राणि प्रदेक्षतः सदृशानि । अवय्विस्थाननरकजम्बूद्वीपसर्वांसिद्धि-विमानमेतानि सदृशानोत्पादि क्षेत्रसमवायः । एकसमयः एकसमयेन सदृशः । आवलिआवल्या सदृशी । प्रथमपृथ्वीनारकभावनव्यन्तराणां जघन्यायुषि सदृशानि । सप्तमपृथ्वीनारक सख्यात्यसिद्धि-देवानामुत्कृष्टायुषी सदृशी । इत्यादि कालसमवायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सदृशमित्यादिर्भावः ।
- १० समवायः । इति समवायाख्यं चतुर्थमंगं । विशेषैर्बहुप्रकारैराख्या किमस्ति जीवः किं नास्ति जीवो किमेको जीवः किमेनेको जीवः किं नित्यो जीवः किमनित्यो जीवः किमवच्छद्यो जीवः किं वक्ष्यो जीव इत्यादीनि (६००००) पट्टिसहस्रसंख्यानि भगवद्दर्शितोत्तरसंनिधौ गणपरवेद्यप्रदानं ।

- द्वित्रिचतुःपञ्चैन्द्रियभेदाद् दसस्थानकः इत्यादीनि जीवस्य, सामान्यार्पणादेकः पुद्गलः विशेषार्पणया अणुस्कंधभेदाद् द्वितयः, इत्यादि पुद्गलादीनां च एकाद्येकोत्तरस्थानानि वर्ण्यन्ते इति स्थानं नाम तृतीयमङ्गम् ।
- १५ स-संग्रेहेण सादृश्यसामान्येन अवैयन्ते ज्ञायन्ते जीवाद्विपदायां द्रव्यक्षेत्रकालभाषानाश्रित्य अस्मिन्निति समवायाङ्गम् । तत्र द्रव्याश्रयेण धर्मास्तिकायेन अधर्मास्तिकायः सदृशः । संसारिजीवेन संसारिजीवः सदृशः । मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सदृशः इत्यादिद्रव्यसमवायः । क्षेत्राश्रयेण सीमन्तनरक-मनुष्यक्षेत्र-ऋत्विक्क्षेत्र-क्षेत्राणि प्रदेक्षतः सदृशानि । अवय्विस्थाननरक-जम्बूद्वीप-सर्वांसिद्धि-विमानानि सदृशानि इत्यादि क्षेत्र-समवायः । एकसमयः एकसमयेन सदृशः, आवलिः आवल्या सदृशी, प्रथमपृथ्वीनारकभावनव्यन्तराणां
- २० जघन्यायुषि सदृशानि । सप्तमपृथ्वीनारकसर्वांसिद्धिदेवानां उत्कृष्टायुषी सदृशे इत्यादिः कालसमवायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सदृशमित्यादिर्भावसमवायः इति समवायाख्यं चतुर्थमङ्गम् । विशेषैः बहुप्रकारैराख्या किमस्ति जीवः ? किं नास्ति जीवः ? किमेको जीवः ? किमेनेको जीवः ? किं नित्यो जीवः ? किमनित्यो जीवः ? किं वक्ष्यो जीवः ? किमवच्छद्यो जीव इत्यादीनि पट्टिसहस्रसंख्यानि भगवद्दर्शितोत्तरसंनिधौ

- ये नौ पदार्थ उक्तके विषय होनेसे नौ अर्थरूप है, पृथिवी अप् तेज वायु प्रत्येक साधारण
- २५ दोइन्द्रिय श्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचैन्द्रियके भेदसे दस स्थानवाला है, इत्यादि जीवका और सामान्यसे पुद्गल एक है, विशेषकी अपेक्षा अणु और स्कन्धके भेदसे दो प्रकार है, इत्यादि पुद्गल आदिके एकादि एक-एक अधिक स्थानोंका वर्णन रहता है । इस प्रकार स्थान नामक तीसरा अंग है । 'स' अर्थात् सादृश्य सामान्यरूप संग्रहणसे 'अवैयन्ते' द्रव्य क्षेत्र काल भावको लेकर जीवादि पदार्थ जिसमें जाने जाते हैं वह समवायांग है । उसमें द्रव्यकी
- ३० अपेक्षा धर्मास्तिकायसे अधर्मास्तिकाय समान है, संसारी जीवसे संसारी जीव समान है, मुक्त जीवसे मुक्त जीव समान है, इत्यादि द्रव्यसमवाय है । क्षेत्रकी अपेक्षा सीमन्त नरक, मनुष्यलोक, शत्रु नामक इन्द्रक विमान, सिद्धक्षेत्र प्रदेक्षसे समान है, सातवें नरकका अवय्वि-स्थान नानक इन्द्रकविद्या, जम्बूद्वीप, सर्वांसिद्धि विमान समान है इत्यादि क्षेत्रसमवाय है । एक समय एक समयके समान है, आवली आवलीके समान है, प्रथम पृथिवीके नारकी, भवनयासी और व्यन्तरोंकी जघन्य आयु समान है, सातवें नरकके नारकी और सर्वांसिद्धि-देवोंकी उत्कृष्ट आयु समान है, इत्यादि कालसमवाय है । केवलज्ञान केवलदर्शनेके समान है इत्यादि भावसमवाय है । इत्यादि समवायोंका कथन समवाय नामके चतुर्थ

पुनरुक्तः विशेषतस्तन्मया अनुसूच्यभेदाद्विधेयः इत्यादि पुरुषादादीनां च एकाद्येकोत्तरस्यानानि
 वचनानि इति ह्यनन्तं नाम ततोऽप्यमर्गः ।

अथान्वयेण साधुसमासायेन अयेयते जायते जीवादिपञ्चार्थाः द्व्यक्षेत्रकालभासानाश्रित्य
 तद्विनिर्जितं समस्तयोगः । तत्र द्व्यक्षेत्राभ्येण धर्मास्ति क्वायेनाधर्मास्तिकायः सद्गुणः, संसारजीवेन
 योगविनिर्जितः सद्गुणः, मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सद्गुणः इत्यादिद्व्यक्षेत्रसमायायः । क्षेत्राभ्येण सीमंतनरक
 समस्तयोगे धर्मिहमिदुसंप्रतिगि प्रदेसतः सद्गुणानि । अवधिस्थाननरकजन्मद्वीपसार्थात्यंतसिद्धि-
 तिस्रक्षेत्रात् सद्गुणानि जायते क्षेत्रसमायायः । एकसमयः एकसमयेन सद्गुणः । आपलिरास्यत्या
 गत्योः । इत्यस्युपयोगेनरकमत्तनम्यंराणां अधन्यापुंषि सद्गुणानि । सप्तमपुष्प्योनारक सार्थात्यसिद्धि-
 क्षेत्रात् सद्गुणानि जायते । इत्यादि काउसमायायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सद्गुणमित्यादिर्भाष-
 यन्तः । इति समस्तज्ञानं सद्गुणसंगं । विशेष्यं ह्युपकारेण स्यात् किमस्ति जीवः किं नास्ति
 जीवः किमेव जीवः किमस्ति जीवः किं नास्ति जीवः किमस्ति जीवः किमस्ति जीवः किं नास्ति
 जीवः किमेव जीवः इत्यादीनि (१००००) पठितव्यं संप्रतिगि भगवत्संतीत्यंकरसन्निधौ गणपदेन प्रजन-

[illegible]

१. के दो शब्दों इमके विषय होनेमें नौ अर्थका है, पृथिवी अर् तोत्र वायु प्रत्येक साधारण
 २. पदार्थ के पदार्थ के अर्थ और पदार्थ के भेदसे दस स्थानवाला है, इत्यादि जीवका
 ३. और अर्थान्वये पदार्थ एक है, विवेककी प्रवेसा अगु और स्थानके भेदसे दो प्रकार है,
 ४. इत्यादि पदार्थ के पदार्थ एक-एक अर्थिक स्थानोंका वर्णन रहता है। इस प्रकार स्थान
 ५. नामक दो प्रकार धर्म है। 'मैं' अर्थान्वय मादृश्य सामान्यका संश्लेषणमें 'अवेयन्ते' इत्य शेष
 ६. शब्दों के अर्थ अर्थिक पदार्थ विषयमें जाने जाने हैं वह समवायाग है। इसमें द्रव्यकी
 ७. अवेयान्ता अर्थान्वये अर्थान्वयिक स्थान समान है, संसारो जीवमें संसारो जीव समान है,
 ८. अर्थान्वयों अर्थान्वय समान है, इत्यादि अर्थान्वयका है। शेषको अवेयान्ता शीघ्रतः नरक,
 ९. अर्थान्वय, अर्थान्वय इत्यादि विषय, विद्वत्प्रेत प्रवेगमें समान है, मानव नरकका अर्थान्वय
 १०. अर्थान्वय नरक इत्यादि अर्थान्वय, अर्थान्वय, अर्थान्वय विषय समान है इत्यादि शेषान्वयका
 ११. है। यह अर्थान्वय अर्थान्वय समान है, अर्थान्वय अर्थान्वय समान है, अर्थान्वय पृथिवीके नरककी
 १२. नरकका अर्थान्वय अर्थान्वय अर्थान्वय अर्थान्वय समान है, मानव नरकके नरककी और अर्थान्वय
 १३. अर्थान्वय अर्थान्वय अर्थान्वय अर्थान्वय समान है, इत्यादि अर्थान्वयका अर्थान्वय अर्थान्वय अर्थान्वय अर्थान्वय

पुद्गलः विशेषार्पणया अणुस्कन्धभेदाद्वितीयः इत्यादि पुद्गलादीनां च एकाद्येकोत्तरस्थानानि यज्यन्ते इति स्थानं नाम तृतीयमंगं ।

- समुत्प्रेक्षेण सादृश्यसामान्येन अवेयन्ते ज्ञायन्ते जीवादिपदार्थाः द्रव्यक्षेत्रकालभावानाश्रित्य तस्मिन्निति समवायांगं । तत्र द्रव्याश्रयेण धर्मास्तिकायेनाधर्मास्तिकायः सदृशः, संसारिजीवेन संसारिजीवः सदृशः, मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सदृशः इत्यादिद्रव्यसमवायः । क्षेत्राश्रयेण सीमन्तनरक मनुष्यक्षेत्र श्रुत्विकसिद्धक्षेत्राणि प्रदेशतः सदृशानि । अवधिसंस्थाननरकजम्बूद्वीपसर्वार्थसिद्धि-विमानमेतानि सदृशानतीत्यादि क्षेत्रसमवायः । एकसमयः एकसमयेन सदृशः । आवलीरावल्या सहशी । प्रथमपृथ्वीनारकभावनव्यंतराणां जघन्यायुषि सहृशानि । सप्तमपृथ्वीनारक सर्वार्थसिद्धि-देवानामुत्कृष्टायुषी सहशी । इत्यादि कालसमवायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सहृशमित्यादिर्भाव-समवायः । इति समवायाख्यं चतुर्थमंगं । विशेषैर्बहुप्रकारेण स्यात् किमस्ति जीवः किं नास्ति जीवो किमेको जीवः किमनेको जीवः किं नित्यो जीवः किमनित्यो जीवः किमवतक्यो जीवः किं वतक्यो जीव इत्यादीनि (६००००) पष्टिसहस्रसंख्यानि भगवदहंतीत्यंकरसन्निधौ गणधरवेषप्रश्न-

- द्वित्रिचतुःपञ्चैन्द्रियभेदाद् दशस्थानकः इत्यादीनि जीवस्य, सामान्यार्पणादेकः पुद्गलः विशेषार्पणया अणुस्कन्धभेदाद् द्वितीयः, इत्यादि पुद्गलादीनां च एकाद्येकोत्तरस्थानानि वज्यन्ते इति स्थानं नाम तृतीयमङ्गम् ।
- १५ स-संप्रेक्षेण सादृश्यसामान्येन अवेयन्ते ज्ञायन्ते जीवादिपदार्थाः द्रव्यक्षेत्रकालभावानाश्रित्य तस्मिन्निति समवायाङ्गम् । तत्र द्रव्याश्रयेण धर्मास्तिकायेन अधर्मास्तिकायः सदृशः । संसारिजीवेन संसारिजीवः सदृशः । मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सदृशः इत्यादिद्रव्यसमवायः । क्षेत्राश्रयेण सीमन्तनरक-मनुष्यक्षेत्र-श्रुत्विक-सिद्ध-क्षेत्राणि प्रदेशतः सदृशानि । अवधिसंस्थान-नरक-जम्बूद्वीप-सर्वार्थसिद्धिविमानानि सदृशानि इत्यादि क्षेत्र-समवायः । एकसमयः एकसमयेन सदृशः, आवलीः आवल्या सदृशी, प्रथमपृथ्वीनारकभावनव्यन्तराणां जघन्यायुषि सदृशानि । सप्तमपृथ्वीनारकसर्वार्थसिद्धिदेवानां उत्कृष्टायुषी सदृशी इत्यादिः कालसमवायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सदृशमित्यादिर्भावसमवायः इति समवायाख्यं चतुर्थमङ्गम् । विशेषैः बहुप्रकारेण स्यात् किमस्ति जीवः ? किं नास्ति जीवः ? किमेको जीवः ? किमनेको जीवः ? किं नित्यो जीवः ? किमनित्यो जीवः ? किं वतक्यो जीवः ? किमवतक्यो जीव इत्यादीनि पष्टिसहस्रसंख्यानि भगवदहंतीत्यंकरसन्निधौ

- ये नो पदार्थे उसके विषय होनेसे नो अर्थरूप है, पृथिवी अप् तेज वायु प्रत्येक साधारण
- २५ दोइन्द्रिय प्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियके भेदसे दस स्थानवाला है, इत्यादि जीवका और सामान्यसे पुद्गल एक है, विशेषकी अपेक्षा अणु और स्कन्धके भेदसे दो प्रकार है, इत्यादि पुद्गल आदिके एकादि एक-थक अधिक स्थानोंका वर्णन रहता है । इस प्रकार स्थान नामक तीसरा अंग है । 'स' अर्थात् सादृश्य सामान्यरूप संप्रज्ञयसे 'अवेयन्ते' द्रव्य क्षेत्र काल भावको छेहर जीवादि पदार्थ जिसमें जाने जाते हैं वह समवायांग है । उसमें द्रव्यकी
- १० अपेक्षा धर्मास्तिकायसे अधर्मास्तिकाय समान है, संसारी जीवसे संसारी जीव समान है, मुक्त जीवसे मुक्त जीव समान है, इत्यादि द्रव्यसमवाय है । क्षेत्रकी अपेक्षा सीमन्त नरक, मनुष्यलोक, शत्रु नामक इन्द्रक विमान, सिद्धक्षेत्र प्रदेशसे समान है, सातवें नरकका अवधि-स्थान नामक इन्द्रकविला, जम्बूद्वीप, सर्वार्थसिद्धि विमान समान है इत्यादि क्षेत्रसमवाय है । एक समय एक समयके समान है, आवली आवलीके समान है, प्रथम पृथिवीके नारकी, भवनवासी और गन्धर्वोंकी जघन्य आयु समान है, सातवें नरकके नारकी और सर्वार्थ-सिद्धिके देवोंकी उत्कृष्ट आयु समान है, इत्यादि कालसमवाय है । केवलज्ञान केवलदर्शनके समान है इत्यादि भावसमवाय है । इत्यादि समवायोंका कथन समवाय नामके चतुर्थ

पुद्गलः विशेषार्पणया अणुस्फंभेदाद्द्वितयः इत्यादि पुद्गलादीनां च एकाद्येकोत्तरस्यानानि यज्यन्ते इति स्थानं नाम तृतीयमंगं ।

समुत्संग्रहेण सादृश्यसामान्येन अव्ययं ज्ञायते जीवाद्विपदात्त्याः द्रव्यक्षेत्रकालभावानाश्रित्य तस्मिन्निति समवायांगं । तत्र द्रव्याश्रयेण धर्मास्तिकायेनाधर्मास्तिकायः सदृशः, संसारिजीवेन संसारिजीवः सदृशः, मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सदृशः इत्यादिद्रव्यसमवायः । क्षेत्राश्रयेण सीमन्तरक मनुष्यक्षेत्र श्रुतिवृत्तक्षेत्राणि प्रदेष्टाः सदृशानि । अवयवस्थाननरकजंबूद्वीपसर्वाथसिद्धि-विमानमेतानि सदृशानोत्पादि क्षेत्रसमवायः । एकसमयः एकसमयेन सदृशः । आवलिआवल्या सहशी । प्रथमपृथ्वीनारकभावनव्यंतराणां जघन्यामुषि सहशानि । सप्तमपृथ्वीनारक सर्वाथसिद्धि-देवानामुत्पत्त्यापुषी सहशी । इत्यादि कालसमवायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सहशमित्यादिर्भाव-समवायः । इति समवायाख्यं चतुर्थमंगं । विशेषैर्बहुप्रकारैराख्या किमस्ति जीवः किं नास्ति जीवो किमेको जीवः किमेको जीवः किं नित्यो जीवः किमनित्यो जीवः किमव्यक्तव्यो जीवः किं यक्तव्यो जीव इत्यादीनि (६००००) पट्टिसहस्रसंख्यानि भगवदहंसीत्यंकरसन्निधौ गणधरदेवप्रदत्त-

- दिश्विचतुःपञ्चैन्द्रियभेदाद् दत्तास्थानकः इत्यादीनि जीवस्य, सामान्यार्पणादेकः पुद्गलः विशेषार्पणया अणुस्फंभेदाद् द्वितयः, इत्यादि पुद्गलादीनां च एकाद्येकोत्तरस्यानानि यज्यन्ते इति स्थानं नाम तृतीयमंगम् ।
- १५ संग्रहेण सादृश्यसामान्येन अव्ययं ज्ञायते जीवाद्विपदात्त्याः द्रव्यक्षेत्रकालभावानाश्रित्य तस्मिन्निति समवायांगम् । तत्र द्रव्याश्रयेण धर्मास्तिकायेन अधर्मास्तिकायः सदृशः । संसारिजीवेन संसारिजीवः सदृशः । मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सदृशः इत्यादिद्रव्यसमवायः । क्षेत्राश्रयेण सीमन्तरक-मनुष्यक्षेत्र-श्रुतिवृत्त-क्षेत्राणि प्रदेष्टाः सदृशानि । अवयवस्थान-नरक-जम्बूद्वीप-सर्वाथसिद्धि-विमानानि सदृशानि इत्यादि क्षेत्र-समवायः । एकसमयः एकसमयेन सदृशः, आवलिः आवल्या सदृशी, प्रथमपृथ्वीनारकभावनव्यन्तराणां
- २० जघन्यामुषि सदृशानि । सप्तमपृथ्वीनारकसर्वाथसिद्धिदेवानां उत्पत्त्यापुषि सदृशे इत्यादिः कालसमवायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सदृशमित्यादिर्भावसमवायः इति समवायाख्यं चतुर्थमंगम् । विशेषैः बहुप्रकारैराख्यातं किमस्ति जीवः ? किं नास्ति जीवः ? किमेको जीवः ? किमेको जीवः ? किं नित्यो जीवः ? किमनित्यो जीवः ? किं व्यक्तव्यो जीवः ? किमव्यक्तव्यो जीव इत्यादीनि पट्टिसहस्रसंख्यानि भगवदहंसीत्यंकरसन्निधौ

- ये नौ पदार्थं वसके विषयं होनेसे नौ अर्थरूप है, पृथिवी अप् तेज वायु प्रत्येक साधारण
- २५ दोइन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचैन्द्रियके भेदसे दस स्थानवाला है, इत्यादि जीवका और सामान्यसे पुद्गल एक है, विशेषकी अपेक्षा अणु और स्कन्धके भेदसे दो प्रकार है, इत्यादि पुद्गल आदिके एकादि एक-एक अधिक स्थानोंका वर्णन रहता है । इस प्रकार स्थान नामक तीसरा अंग है । 'स' धर्मात् सादृश्य सामान्यरूप संग्रहणसे 'अव्ययं' द्रव्य क्षेत्र काष्ठ भावकी छेदर जीवादि पदार्थ जिममें जाने जाते हैं वह समवायांग है । उसमें द्रव्यकी
- ३० अपेक्षा धर्मास्तिकायसे अधर्मास्तिकाय समान है, संसारी जीवसे संसारी जीव समान है, मुक्त जीवसे मुक्त जीव समान है, इत्यादि द्रव्यसमवाय है । क्षेत्रकी अपेक्षा सीमन्त नरक, मनुष्यक्षेत्र, शत्रु नामक इन्द्रक विमान, सिद्धक्षेत्र प्रदेष्टासे समान है, सातवें नरकका अवयव-स्थान नामक इन्द्रकविला, जम्बूद्वीप, सर्वाथसिद्धि विमान समान है इत्यादि क्षेत्रसमवाय है । एक समय एक समयके समान है, आवली आवलीके समान है, प्रथम पृथिवीके नारकी, भवनवामां और स्थानरौकी जघन्य आयु समान है, सातवें नरकके नारकी और सर्वाथ-निष्ठिके देवीकी उष्ट्र आयु समान है, इत्यादि काष्ठसमवाय है । केवलज्ञान केवलदर्शनके गन्तव्य है इत्यादि भावसमवाय है । इत्यादि समवायांका कथन समवाय नामके चतुर्थ

पुद्गलः विशेषार्पणया अणुस्कंधभेदाद्द्वितयः इत्यादि पुद्गलादीनां च एकाग्रकोत्तरस्थानानि वर्णयन्त इति स्थानं नाम तृतीयमंगं ।

समसंग्रहेण सादृश्यसामान्येन अवेयन्ते ज्ञायन्ते जीवादिवदार्थाः द्रव्यक्षेत्रकालभाषानाश्रित्य तस्मिन्निति समवायांगं । तत्र द्रव्याश्रयेण धर्मास्तिकायेनाधर्मास्तिकायः सदृशः, संसारिजीवेन संसारिजीवः सदृशः, मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सदृशः इत्यादिद्रव्यसमवायः । क्षेत्राश्रयेण सीमन्तनरक मनुष्यक्षेत्र आत्त्विकसिद्धिक्षेत्राणि प्रवेशतः सदृशानि । अवधिस्थाननरकजंबूद्वीपसप्तर्षिसिद्धि-विमानमेतानि सदृशानोत्पादि क्षेत्रसमवायः । एकसमयः एकसमयेन सदृशः । आवलिआवल्या सदृशी । प्रथमपृथ्वीनारकभावनव्यन्तराणां जघन्यायुषि सदृशानि । सप्तमपृथ्वीनारक सप्तर्षिसिद्धि-देवानामुत्कृष्टायुषी सदृशी । इत्यादि कालसमवायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सदृशमित्यादिभार्य-समवायः । इति समवायाख्यं चतुर्थमंगं । विशेषैर्बहुप्रकारैराख्या किमस्ति जीवः किं नास्ति जीवो किनेको जीवः किमनेको जीवः किं नित्यो जीवः किमनित्यो जीवः किमवतस्थो जीवः किं वतस्थो जीव इत्यादीनि (६००००) पट्टिसहस्रसंख्यानि भगवद्दृष्टीर्त्यंकरसन्निधौ गणपरवेयप्रदान-

- द्वित्रिचतुःपञ्चैन्द्रियभेदाद् दशस्थानकः इत्यादीनि जीवस्य, सामान्यार्पणादिकः पुद्गलः विशेषार्पणया अणुस्कंधभेदाद् द्वितयः, इत्यादि पुद्गलादीनां च एकाग्रकोत्तरस्थानानि वर्णयन्ते इति स्थानं नाम तृतीयमङ्गम् ।
- १५ स-संग्रहेण सादृश्यसामान्येन अवेयन्ते ज्ञायन्ते जीवादिवदार्थाः द्रव्यक्षेत्रकालभाषानाश्रित्य तस्मिन्निति समवायाङ्गम् । तत्र द्रव्याश्रयेण धर्मास्तिकायेन अधर्मास्तिकायः सदृशः । संसारिजीवेन संसारिजीवः सदृशः । मुक्तजीवेन मुक्तजीवः सदृशः इत्यादिद्रव्यसमवायः । क्षेत्राश्रयेण सीमन्तनरक-मनुष्यक्षेत्र-आत्त्विकक्षेत्र-सिद्धिक्षेत्राणि प्रवेशतः सदृशानि । अवधिस्थान-नरक-जम्बूद्वीप-सप्तर्षिसिद्धिविमानानि सदृशानि इत्यादि क्षेत्र-समवायः । एकसमयः एकसमयेन सदृशः, आवलिः आवल्या सदृशी, प्रथमपृथ्वीनारकभावनव्यन्तराणां जघन्यायुषि सदृशानि । सप्तमपृथ्वीनारकसप्तर्षिसिद्धिदेवानां उत्कृष्टायुषी सदृशे इत्यादिः कालसमवायः । केवलज्ञानं केवलदर्शनेन सदृशमित्यादिभार्यसमवायः इति समवायाख्यं चतुर्थमङ्गम् । विशेषैः बहुप्रकारैराख्या किमस्ति जीवः ? किं नास्ति जीवः ? किनेको जीवः ? किमनेको जीवः ? किं नित्यो जीवः ? किमनित्यो जीवः ? किं वतस्थो जीवः ? किमवतस्थो जीव इत्यादीनि पट्टिसहस्रसंख्यानि भगवद्दृष्टीर्त्यंकरसन्निधौ

- ये नौ पदार्थं उसके विषय होनेसे नौ अर्थरूप है, पृथिवी अप् तेज वायु प्रत्येक साधारण
- २५ दोइन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचैन्द्रियके भेदसे दस स्थानवाला है, इत्यादि जीवका और सामान्यसे पुद्गल एक है, विशेषकी अपेक्षा अणु और स्कन्धके भेदसे दो प्रकार है, इत्यादि पुद्गल आदिके एकादि एक-एक अधिक स्थानोंका वर्णन रहता है । इस प्रकार स्थान नामक तीसरा अंग है । 'स' अर्थात् सादृश्य सामान्यरूप संग्रहणसे 'अवेयन्ते' द्रव्य क्षेत्र काल भावको लेकर जीवादि पदार्थ जिसमें जाने जाते हैं वह समवायांग है । उसमें द्रव्यकी
- ३० अपेक्षा धर्मास्तिकायसे अधर्मास्तिकाय समान है, संसारी जीवसे संसारी जीव समान है, मुक्त जीवसे मुक्त जीव समान है, इत्यादि द्रव्यसमवाय है । क्षेत्रकी अपेक्षा सीमन्त नरक, मनुष्यलोक, शत्रु नामक इन्द्रक विमान, सिद्धक्षेत्र प्रदेशसे समान है, सातवें नरकका अधधि-स्थान नामक इन्द्रकविला, जम्बूद्वीप, सप्तर्षिसिद्धि विमान समान है इत्यादि क्षेत्रसमवाय है । एक समय एक समयके समान है, आवली आवलीके समान है, प्रथम पृथिवीके नारकी, भवनवासी और व्यन्तरोंकी जघन्य आयु समान है, सातवें नरकके नारकी और सप्तर्षि-सिद्धिके देवोंकी पट्ट पट्ट आयु समान है, इत्यादि कालसमवाय है । केवलज्ञान केवलदर्शनेके समान है इत्यादि भावसमवाय है । इत्यादि समवायोंका कथन समवाय नामके चतुर्थ

अल्लिदं वट्टिकं उपासते आहारादिदानेनित्यमहादिपूजाविधानैश्च संघमाराधयंतोत्थुपा-
सकाः । ते अधीयन्ते पठन्ते दर्शनिकव्रतिकृतसामायिकप्रोपधोपवाससंचितविरतरात्रिभक्तव्रत-
ग्रहचार्पारम्भपरिग्रहनिवृत्ताऽनुमतोद्दिष्टविरतभेदेकादशानिलयसंबन्धिव्रतगुणशीलाचारक्रियामन्त्रादि-
विस्तरैर्वर्ण्यन्तेऽस्मिन्निति उपासकाध्ययनं नाम सप्तममंगं ।

प्रतितीर्थं दशदशमुनीश्वरास्तोत्रं चतुर्विधोपसर्गं सोढ्वा इन्द्रादिभिर्विरचितं पूजादि,
प्रातिहार्यसंभावनां लब्ध्वा कर्मक्षयानन्तरं संसारस्यान्तमवसानं कृतवन्तोऽन्तःकृतः । श्रीवर्धमानतीर्थं
नमि मत्तंग सोमिल रामपुत्र सुदर्शन यमलीकजलिककिष्कंबिल पालंबष्टपुत्रा इति दश । एवं
पुण्यभावितीर्थेऽपि दश दशांतकृतो वर्ण्यन्ते यस्मिन्तदन्तःकृतदशं नामाष्टममंगं । तथा उपपादः प्रयोजन-
मेपां ते इमे औपपादिकाः अनुत्तरेषु विजयवैजयंतजयन्तापराजितसर्वात्यंसिद्धिषास्वेषु औपपादिकाः
अनुत्तरीपपादिकाः । प्रतितीर्थं दश दश मुनयः दारुणान्महोपसर्गान्सोढ्वा लब्धप्रातिहार्याः समाधिबिधिना
त्यक्तप्राणा ये विजयाद्यनुत्तरविमानेषूपपन्नास्ते वर्ण्यन्ते यस्मिन् तदनुत्तरीपपादिकदशं
नाम नवममंगं । तत्र श्रीवर्धमानतीर्थं श्वजुवास घन्य सुनक्षत्र कात्तिकेय नंद नंदन शालिभद्र

अतः परं उपासते आहारादिदानेनित्यमहादिपूजाविधानैश्च संघमाराधयन्तीति उपासकाः ते अधीयन्ते
पठन्ते दर्शनिकव्रतिकृतसामायिकप्रोपधोपवाससंचितविरतरात्रिभक्तव्रतग्रहचार्पारम्भपरिग्रहनिवृत्ताऽनुमतोद्दिष्ट-
विरतभेदेकादशानिलयसंबन्धिव्रतगुणशीलाचारक्रियामन्त्रादिविस्तरैर्वर्ण्यन्ते अस्मिन्निति उपासकाध्ययनं नाम
सप्तममङ्गम् । प्रति तीर्थं दश दश मुनीश्वराः शीत्रं चतुर्विधोपसर्गं सोढ्वा इन्द्रादिभिर्विरचितं पूजादिप्राति-
हार्यसंभावनां लब्ध्वा कर्मक्षयानन्तरं संसारस्यान्तं अवसानं कृतवन्तोऽन्तःकृतः । श्रीवर्धमानतीर्थं नमि-मत्तङ्ग-
सोमिल-रामपुत्र-सुदर्शन-यमलीक-जलिक-किष्कम्बिल-पालंबष्ट-पुत्रा इति दश । एवं पुण्यभावितीर्थेऽपि
दश दशान्कृतो वर्ण्यन्ते यस्मिन्तदन्तःकृतदशनामाष्टममङ्गम् । तथा उपपादः प्रयोजनमेपां ते इमे औपपादिकाः ।
अनुत्तरेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितसर्वात्यंसिद्धिषास्वेषु औपपादिकाः अनुत्तरीपपादिकाः । प्रति तीर्थं दश
दश मुनयो दारुणान् महोपसर्गान्सोढ्वा लब्धप्रातिहार्याः समाधिबिधिना त्यक्तप्राणा ये विजयाद्यनुत्तर-
विमानेषूपपन्नाः ते वर्ण्यन्ते यस्मिन्तदनुत्तरीपपादिकदशं नाम नवममङ्गम् । तत्र श्रीवर्धमानतीर्थं श्वजुवास

‘उपासते’ जो आहार आदि दानके द्वारा और नित्यमह आदि पूजाविधानके द्वारा
संघकी आराधना करते हैं वे उपासक हैं । वे उपामक दर्शनिक, व्रतिक, सामयिक, प्रोपधो-
पवास, संचितविरत, रात्रिभक्तव्रत, ग्रहचर्य, आरम्भविरत, परिग्रहविरत, अनुमतविरत,
उद्दिष्टविरत इन गृहस्थोंके ग्यारह भेदोंसे सम्यक् व्रत, गुण, शील, आचार, क्रिया, मन्त्र आदि
विस्तारसे जिनमें ‘अधीयन्ते’ पढ़े जाते हैं वह उपासकाध्ययन नामक सातवाँ अंग है ।
प्रत्येक तीर्थमें दस-दस मुनीश्वर वीत्र चार प्रकारके उपसर्गको सहकर इन्द्रादिके द्वारा रचित
पूजादि प्रतिहार्योंको सम्भावनाको प्राप्त करके कर्मोंके धायके अनन्तर संसारका अन्त करते
हुए । इसलिये उन्हें ‘अन्तकृत’ कहते हैं । श्री वर्धमान तीर्थकरके तीर्थमें नमि, मत्तंग, सोमिल,
रामपुत्र, सुदर्शन, यमलीक, जलिक, किष्कंबिल, पालम्बु, अष्टपुत्र ये दस अन्तकृत हुए । इसी
प्रकार अप्रमदवैद्य आदिके भी तीर्थमें हुए । जिसमें दस-दस अन्तकृतोंका वर्णन हो वह अंग
अन्तकृत नामक है । उपपाद जिनका प्रयोजन है वे औपपादिक हैं । विजय, वैजयन्त,
जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि नामक अनुत्तरोंमें उपपाद जन्म लेनेवाले अनुत्तरी-
पपादिक होते हैं । प्रत्येक तीर्थमें दस-दस मुनि दारुण महान् उपसर्गोंको सहकर प्रातिहार्य
प्राप्त करके समाधिपूर्वक प्राणोंको त्यागकर विजयादि अनुत्तरीयोंमें उत्पन्न हुए । उनका
जिनमें वर्णन हो वह अनुत्तरीपपादिकदश नामक नौवाँ अंग है । उनमेंसे श्रीवर्धमान

चतुर्विंशतितोत्यंकरद्वादश चक्रवर्तिगच्छ नयबलदेव नयबामुदेव नयप्रतिनामुदेवगच्छ
शलाकापुस्त्यपुराणगच्छं वर्णिमुपु । मुंद्दे पूर्यं चतुर्दशविं विस्तारविं वेत्तुलपट्टुडु ।
चूलिकेयुमप्यु प्रकारमप्युमवे तं बोधे जलगता स्थलगता मायागता आकाशगता

- ५ एदितिवरोज्ज जलगताचूलिके जलस्तम्भन जलगमनान्निस्तम्भान्निभगान्गान्यासनाग्निप्र
कारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादिगच्छं वर्णिमुपु । स्थलगता चूलिकेयं बुडु मेदुलसोलभूम्या
प्रवेशन शोघ्रगमनादिकारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादिगच्छं वर्णिमुपु । मायागता चूलिकेयं बुडु
रूपेद्रजालविक्रियाकारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादिगच्छं वर्णिमुपु । रूपगताचूलिकेयं बुडु सिंहका
हवनर तरहरिणशमवृषभम्याप्रादिरूपरावर्तनकारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादिगच्छं चित्रकाष्ठ
खननादिलक्षणधातुवादरसवाद्यवादादिगच्छं वर्णिमुपु ।

- १० आकाशगताचूलिकेयं बुडु आकाशगमनकारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादिगच्छं वर्णिमुपु ।
पेरेरे पेळद चन्द्रप्रज्ञाप्यादिगच्छोक्तं क्रमशः यथाक्रममिदं पदप्रमाणमनन्तरमेव वक्ष्यमाणं
जानीहि एदितु संवोपनमप्याहाव्यं ।

- चक्रवर्तिनयबलदेवनयबामुदेवनयप्रतिनामुदेवरूपविपष्टितान्तागुदयपुराणानि वर्णयन्ति । पूर्व चतुर्दशविं विस्तर
अत्रे वक्ष्यति । चूलिकापि पञ्चविधा जलगता स्थलगता मायागता आकाशगता गगता चेति । तत्र जलग
१५ चूलिका जलस्तम्भनजलगमनान्निस्तम्भान्निभगान्गान्यासनाग्निप्रवेशनादिकारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादीन् वर्णयन्ति । स्थलगता चूलिका मेदुलसोलभूम्यादिषु प्रवेशनशोघ्रगमनादिज्ञारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादीन् वर्णयन्ति । मायागता चूलिका रूपेन्द्रजालविक्रियाकारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादीन् वर्णयन्ति । रूपगता चूलिका सिंहाकारिगुरगवहनरतरहरिणशमवृषभम्याप्रादिरूपरावर्तनकारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादीन् चित्रकाष्ठेप्योलान
नादिलक्षणधातुवादरसवाद्यवादादीन् वर्णयन्ति । आकाशगता चूलिका आकाशगमनकारणमन्त्रतत्रतपश्चरणादीन् वर्णयन्ति । प्रागुक्तवन्त्रप्रज्ञाप्यादिषु क्रमशो यथाक्रमं पदप्रमाणं अनन्तरमेव वक्ष्यमाणं जानीहि
२० तपश्चरणादीन् वर्णयन्ति । इति तंविषयमप्याहव्यं ॥३६१-३६२॥

- प्रथम अर्थात् मिथ्यादृष्टि, अग्रती या अव्युत्पन्न व्यक्ति के लिए जो अनुयोग रचा गया वह
प्रथमानुयोग है । यह चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलदेव, नौ बामुदेव, नौ प्रति-
२५ बामुदेव, इन तिरसठ शलाका प्राचीन पुरुषोंका वर्णन करता है । चौदह प्रकारके पूर्वोक्ति
सम्बन्धमें आगे विस्तारसे कहेंगे । चूलिका भी पाँच प्रकार की है—जलगता, स्थलगता,
मायागता, आकाशगता और रूपगता । जलगता चूलिका जलका स्तम्भन, जलमें गमन,
अग्निका स्तम्भन, अग्निका भक्षण, अग्निपर बैठना, अग्निमें प्रवेश आदिके कारण मन्त्र, तन्त्र,
तपश्चरण आदिका वर्णन करती है । स्थलगता चूलिका मेरु, कुलाचल, भूमि आदिमें प्रवेश
करने तथा शीघ्र गमन आदिके कारण मन्त्र, तन्त्र, तपश्चरण आदिका वर्णन करती है ।
३० मायागता चूलिका मायावी रूप, इन्द्रजाल (जादूगरी) विक्रियाके कारण मन्त्र, तन्त्र, तपश्चरण
आदिका वर्णन करती है । रूपगता चूलिका सिंह, हाथी, घोड़ा, मृग, खरगोश, बैल, व्याघ्र
आदिके रूप बदलनेमें कारण मन्त्र, तन्त्र, तपश्चरण आदिका वर्णन करती है । आकाशगता
आदिका लक्षण व धातुवाद, रसवाद, रसान आदि वादोंका कथन करती है । आकाशगता
३५ चन्द्रप्रज्ञा आदिमें क्रमसे पदोंका प्रमाण आगे कहते हैं ॥३६१-३६२॥

२०९८९२०० रूपगतंगत् २०९८९२००। याजकनामेनाननं एककोटपेकाशीतिश्रंगत् मनुसहस्र-
पदंगत् चंद्रप्रज्ञाप्यादि पंचप्रकारमनुक्तं परिकर्ममुत्तियोज्यु १८१०५००० कानवधिवाचनाननं
दशकोटपेकोनपंचाशत्लक्षपट्त्वारिंशत्सहस्रपदंगत् पुनः मत्ते जलगतादि पंचप्रकारभूतगुलिका-
योगनिदु १०४९४६०००।

पण्टदाल पणतीस तीस पण्णास पण्ण तेरसदं ।

णउदी दुदाल पुब्बे पणवण्णा तेरससयादं ॥३६५॥

छस्सयपण्णासादं चउसयपण्णास छसयपण्णवीसा ।

विहि लक्खेहि दु गुणिपा पंचम रूऊण छज्जुदा छट्ठं ॥३६६॥

पंचाशदष्टत्वारिंशत्तं चंद्राश्रितं त्रिशतं पंचाशत् पंचाशत् त्रयोदशशतं नवतिर्द्वाविंशत्वारिंशत्
पूर्व्वे पंच पंचाशत् त्रयोदशशतानि । पट्छतपंचाशदचतुःशतपंचाशत् पट्छतपंचविंशतिर्द्वाभ्यां
लक्षाभ्यां गुणितास्तु पंचमरूपोऽपि पट्छताः पट्ठि ।

५०। ४८। ३५। ३०। ५०। ५०। १३००। ९०। ४२। ५५। १३००।—६५०।

४५०। ६२५।

पूर्व्वे उत्पादादि पूर्व्वबोद्धुं चतुर्दशविधबोद्धुं यथाक्रमदिदमी संरूपे वेत्तुलपट्ठु । यस्तुविन
द्रव्यद उत्पादव्ययधौव्यादि अनेकधर्मपूरकमुत्पादपूर्व्वमप्यकु—मनु जीवादिद्रव्यंगत् नानानय-
विषयक्रम योगपद्यसंभावितोत्पादव्ययधौव्यंगत् त्रिकालगोचरंगत् । नवधर्मंगत्पुण्यु । तत्परिणत
द्रव्यमुं नवविधमवकुं । उत्पन्नमुत्पद्यमानमुत्पत्त्यमानं नष्टं नश्यत् नश्यत् स्थितं तिष्ठत् स्थास्यदिति
इतु नवप्रकारंगत्पुण्युत्पत्त्यादिगत् प्रत्येकं नवविधत्वसंभवदत्तानिदमेकाशीतिविकल्पधर्म-

चन्द्रप्रज्ञाप्यादिपञ्चविधपरिकर्ममुत्तौ याजकनामेनाननं—एककोटपेकाशीतिश्रंगत् मनुसहस्राणि पदानि १८१०५०००।
जलगतादिपञ्चविधगुलिकायोगः पुनः कानवधिवाचनाननं—दशकोटपेकोनपञ्चाशत्लक्षपट्त्वारिंशत्सहस्राणि
पदानि १०४९४६००० ॥३६३—३९४॥

उत्पादादिचतुर्दशपूर्व्वेषु यथाक्रमं पदसंस्थोच्यते—वस्तुनो—द्रव्यस्य उत्पादव्ययधौव्याद्यनेकधर्मपूरक-
मुत्पादपूर्व्वं तस्य जीवादिद्रव्याणां नानानयविषयक्रमयोगपद्यसंभावितोत्पादव्ययधौव्याणि त्रिकालगोचराणि
नवधर्मा भवन्ति । तत्परिणतं द्रव्यमपि नवविधं । उत्पन्नं उत्पद्यमानं उत्पत्त्यमानं । नष्टं नश्यत् नश्यत् ।
स्थितं तिष्ठत् स्थास्यदिति नवप्रकारा भवन्ति । उत्पन्नादीनां प्रत्येकं नवविधत्वसंभवादेकाशीतिविकल्पधर्मपरि-

प्रत्येकं चूलिकामें 'रनधजधरानन' दो कोटि नौ लाख नवासी हजार दो सौ पद हैं २०९८९-
२००। चन्द्रप्रज्ञप्ति आदि पाँच परिकर्मोंमें मिलाकर 'याजकनामेनानन' एक कोटि इक्यासी
लाख पाँच हजार पद हैं १८१०५०००। जलगता आदि पाँचों चूलिकाओंके पदोंका जोड़
'कानवधिवाचनान' दस कोटि उनचास लाख छियालीस हजार १०४९४६०००
है ॥३६३-३६४॥

उत्पाद आदि चौदह पूर्व्वोंमें क्रमसे पद संख्या कहते हैं—द्रव्यके उत्पाद-व्यय आदि
अनेक धर्मोंका पूरक उत्पादपूर्व्व है। जीवादि द्रव्योंके नाना नय विषयक क्रम और युगपत्
होनेवाले तीन कालके उत्पाद-व्यय-धौव्यरूप नौ धर्म होते हैं अतः उन धर्मरूप परिणत
द्रव्य भी नौ प्रकारका है—उत्पन्न, उत्पद्यमान, उत्पत्त्यमान, जो नष्ट हो चुका, हो
रहा है, होगा, स्थिर हुआ, हो रहा है, होगा ये नौ प्रकार हैं। उत्पाद आदि प्रत्येकके नौ

द्विसंयोगप्रिसंयोगजंगल त्रिभ्येकसंख्यागल ७ भेलेनंत सप्तभंगियं प्रश्नवशदिवमोदे वस्तुविनोदविरो-
पदिद संभवपुदं मानानयमुख्यगोणभावादिदं प्ररूपिसुगुमितिल । द्विलक्षणितप्रित्यदंगल पत्रिलक्ष
पर्वगलपुयेंबुदतयं ६०००००० ॥ ।

ज्ञानानां प्रवादः प्ररूपणमस्मिन्निति ज्ञानप्रवादः । पंचमं पूर्वमिदु । मतिप्रतावधिमनः

- ५ पय्यं केवलमेदु पंच सम्यग्ज्ञानंगल । कुमतिकुश्रुतविभंगमेय त्र्यज्ञानंगलिवरं स्वरूप
संख्याविषयकजंगलनाभ्रिसिपवकं प्रामाण्याप्रामाण्यविभागमुमं वर्णिसुगुमितिल द्विलक्षणित
पंचाशत्पदंगल रूपोत्कोटिरगलपुयेंकंदोदे पंचमरूजणमेबुदरिदं पंचमपूव्यंदोदु द्विलक्षणित
पंचाशत्पदलक्ष्यदोदोदु कोटियोदोदु गंधुगुमेदु पेदुदुदरिदं ५ = ५ = ९९९९९९९ । सत्यस्य
प्रवादः प्ररूपणमस्मिन्निति सत्यप्रवादः पष्टपूर्वमिदु बागुमितिमुमं वाक्संस्कारकारणंगल
१० वाक्प्रयोगमुमं द्वादशभाष्येगलं वक्तुभेदगलं बहुविधमृषाभिधानमुमं दशविधसत्यमुमं प्ररूपिसुगु

- वाक्कल्पं च स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावान् युगपत् स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावद्वयं च संयुक्तमाश्रित्य । स्यादस्ति
वाक्कल्पं च परद्रव्यक्षेत्रकालभावान् युगपत्स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावद्वयं च संयुक्तमाश्रित्य । स्यादस्ति च नास्ति
वाक्कल्पं च क्रमेण स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावद्वयं युगपत्स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभावद्वयं च संयुक्तमाश्रित्य । इत्ये
वानेननित्यानित्यापनन्तधर्माणां विधिनियेषावकल्पमज्ञानां प्रत्येकद्विसंयोगत्रिसंयोगज्ञानां त्रिभ्येकसंख्यानां मेल
१५ तसमंज्ञो प्रश्नवशादेकस्मिन्नेव वस्तुनि अविरोधेन संभवतो नानानयमुख्यगोणभावेन प्ररूपयति । तः
द्विलक्षणितप्रित्यदंगल पत्रिलक्षानि इत्यर्थः । ६०००००० । ज्ञानानां प्रवादः प्ररूपणमस्मिन्निति ज्ञानप्रवा
पञ्चम पूर्व, तच्च मतिप्रतावधिमनःपय्यंकेवलानि पञ्च सम्यग्ज्ञानानि, कुमतिकुश्रुतविभङ्गास्त्वानि शीघ्र
ज्ञानानि स्वरूपगंख्याविषयफलानि आश्रित्य तेषां प्रामाण्याप्रामाण्यविभागं च वर्णयति । तत्र द्विलक्षणित
पञ्चाशत्प्रदानि किन्तु पञ्चमरूजणमिति कथनादेकरूपोत्ता कोटिरित्यर्थः ९९९९९९९९ । सत्यस्य प्रवाद
२० प्ररूपणमस्मिन्निति सत्यप्रवादं पष्टं पूर्व, तच्च बागुतिः वाक्संस्कारकारणानि वाक्प्रयोगं द्वादश भाषा

- भाषकी अपेक्षा स्यात् अस्ति नास्ति हे । एक साथ स्वपर द्रव्यक्षेत्रकाल भाषकी अपेक्षा
अवच्छेद्य हे क्योंकि एक साथ दोनों धर्मोंका कहना शक्य नहीं है । स्वद्रव्यक्षेत्रकाल भा
तथा युगपत् स्वपरद्रव्यक्षेत्रकाल भाषकी अपेक्षा स्यादस्ति अवच्छेद्य हे । परद्रव्यक्षेत्रकालभा
और युगपत् स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभाषकी अपेक्षा स्यात् नास्ति अवच्छेद्य हे । तथा क्रम
२५ स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभाष और युगपत् स्वपरद्रव्यक्षेत्रकालभाषकी अपेक्षा स्यात् अस्तिनास्ति
अवच्छेद्य है । इस प्रकार एक अनेक, नित्य अनित्य आदि अनन्त धर्मोंके विधि निषेध औ
अवच्छेद्य भंगोंके प्रत्येक, दो संयोगी, तीन संयोगी तीन, तीन और एक भंगोंकी संख्याक
मिलानेसे सप्तभंगी होती है । वह प्रश्नके अनुसार एक वस्तुमें किसी विरोधके बिना नान
गयीही मुख्यता और गौणतासे कथन करती है । उसमें दो लाखसे गुणित तीस अर्थात् सा
३० लाख पद है । ज्ञानका जिसमें प्रवाद अर्थात् प्ररूपण हो वह ज्ञानप्रवाद नामक पंचम पूर्व है
वह मति, भुन, अवधि, मनःपय्य और केवल इन पाँच सम्यग्ज्ञानोंका तथा कुमति, कुश्रुत
कुश्रुतवि इन तीन अज्ञानोंका स्वरूप, संख्या, विषय और फलको लेकर कथन करता है
३५ है । सत्यका प्रवाद अर्थात् कथन जिसमें दो वह सत्यप्रवाद पूर्व है । वह वचन गुप्ति, वचन
के मांछारके कारण, वचन प्रयोग, वाह भाषा, वक्ताके भेद, अनेक प्रकारका असत्य भाष

- चतुर्विंशतिशतयाष्टमहाप्रातिहार्यपरमोदारिकदिव्यदेहसमवसरणसमाधर्मोपदेशनादित्यंकरत्न-
महिमेय स्तुतिषु चतुर्विंशतिस्तवनमेबुद्धु । तत्प्रतिपादकशास्त्रमु चतुर्विंशतिस्तवनमेबु
पेत्तल्पदुद्धु । ततः परं एकतीर्थकरालवनचैत्यचैत्यालयादिस्तुतिषु बन्दनेयं बुद्धु तत्प्रतिपादकशास्त्रमु
धरनेये बुद्धु पेत्तल्पदुद्धु । प्रतिक्रम्यते प्रमादकृतदेवसिकादिदोषो निराक्रियते इनेनेति प्रतिक्रमणं ।
५ देवसिक रात्रिक पाक्षिक चातुर्मासिक सांवत्सरिकेभ्योपयिकोत्तमात्यंभेदवि सप्तविचमकुं ।
भरतादिभेदं दुःपमादिकालं पदसंहननसमन्वितस्थिरास्थिरादिपुरुषभेदगुणमनाश्रयिषि तत्प्रति-
पादकमप्य शास्त्रं प्रतिक्रमणमेबुद्धकुं । विनयः प्रयोजनमस्येति वैनयिकमेबु ज्ञानदर्शनचारित्र-
तपउपचारविषयमप्य पंचविधविनयविधानं मेबुद्धु ।
- कृतेः क्रियायाः कर्मं विधानमस्मिन् वर्ण्यते इति कृतिकर्म । ई कृतिकर्मंशास्त्रमर्हतिष्ठा-
१० चाप्यंचतुर्भुतसायुगज्जमोदलाइ नयदेवताबंदनानिमित्तमं आत्मायोनता प्रादक्षिण्य त्रिवारश्रयवति
चतुःशिरोहादशावर्गविलक्षणनित्यनेमित्तिक्रियाविधानं वर्णयिषुं । विशिष्टाः कालाः विकालाः
तेषु भयानि वैकालिकानि । दशवैकालिकानि यजन्तेस्मिन्निति दशवैकालिकं । ई दशवैकालिक-

- मासपरानात्रभमावनाश्रित्य पञ्चमहाकल्याणचतुर्विंशतिशतयाष्टमहाप्रातिहार्यपरमोदारिकदिव्यदेहसमवसरण-
समाधर्मोपदेशनादितीर्थकरत्नमहिमस्तुतिः चतुर्विंशतिस्तवः तस्य प्रतिपादकं शास्त्रं वा चतुर्विंशतिस्तव इत्युच्यते ।
१५ तस्मात्परं एकतीर्थकरालवन चैत्यचैत्यालयादिस्तुतिः बन्दना तत्प्रतिपादकं शास्त्रं वा बन्दना इत्युच्यते ।
प्रतिक्रम्यते प्रमादकृतदेवसिकादिदोषो निराक्रियते इनेनेति प्रतिक्रमणं तच्च दैवसिकरात्रिकपाक्षिकातुर्मासिक-
पाक्षिकरात्रिकपाक्षिकमेदालासविष, भरतादिभेदं दुःपमादिकालं पदसंहननसमन्वितस्थिरास्थिरादिपुरुष-
भेदश्च आश्रित्य तत्प्रतिपादकं शास्त्रमपि प्रतिक्रमणम् । विनयः प्रयोजनमस्येति वैनयिकं तच्च ज्ञानदर्शनचारित्र-
तपउपचारविषयं पञ्चविधविनयविधानं कथयति । कृतेः क्रियायाः कर्मं विधानं अस्मिन् वर्ण्यते इति कृतिकर्म ।
१० तच्च महिगडावाचनमुपमाव्यदिनवदेवताबन्दनानिमित्तमात्मायोनताप्रादक्षिण्यत्रिवारश्रयवतिचतुःशिरो-
हादशावर्गविलक्षणनित्यनेमित्तिक्रियाविधानं च वर्णयति । विशिष्टाः काला विकालास्तेषु भयानि वैकालिकानि

- यिक शास्त्रं वर्णयति उसका ज्ञाता, अथवा सामायिक पर्यायरूप परिणत व्यक्ति मायसामा-
यिक है । उस-उम काष्ठ सन्दर्भो चौबीस तीर्थकरोंके नाम, स्थापना, द्रव्य और भावको लेकर
१५ बरारन गमा, धर्मोपदेशना आदिके द्वारा, तीर्थकरकी महिमाका स्तवन चतुर्विंशतिस्तव है ।
अपरा उमका कथन करनेवाला शास्त्र चतुर्विंशतिस्तव कहा जाता है । उसके पश्चात् एक
तीर्थकरको लेकर चैत्य-चैत्याल्य आदिकी स्तुति बन्दना है । अथवा उसका प्रतिपादक
शास्त्र बन्दना कहलाता है । जिसके द्वारा 'प्रतिक्रम्यते' अर्थात् प्रमादसे किये हुए दैवसिक
आदि दोषोंका निरोधन किया जाता है वह प्रतिक्रमण है । वह दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक,
१० चातुर्मासिक, मासिक, पंचमासिक और पारमायिकके भेदसे सात प्रकारका है । भव
प्रतिक्रमणका कथन करनेवाला शास्त्र भी प्रतिक्रमण है । विनय जिसका प्रयोजन है वह
कथन करता है । जिसमें कृति अर्थात् क्रियाकर्मका विधान कहा जाता है वह क्रियाकर्म
१५ विनय अर्थात्, मित्र-आचार्य, बृद्धभूत (इराव्याय), मायु आदि नौ देवताओंकी बन्दनाके
विनय अर्थात् गीता (अने अधीन होना), तीन बार प्रदक्षिणा, तीन बार नमस्कार, बार

रासम्प्रत्ययसंयमादिविधानमं तत्तदुपपादस्यानवैभवविशेषमुमं वर्णितम् ।

महामुंडरीकमेव शास्त्रं महर्द्धिकरूपेद्रप्रतीद्रादिगळोळुत्पतिकारण तपोविशेषाद्याचारमं वर्णितम् ।

निषेधनं प्रमाददोषनिराकरणं निषिद्धिः संज्ञेयोळु कप्रत्ययमागुत्तरिलु निषिद्धिका । एवंतु

५ प्रापदिचत्ताशास्त्रमेवदत्तंभनु प्रमाददोषविशुध्यत्यं बहुप्रकारमप्य प्रापदिचत्तमं वर्णितुम् । निशेठिका
ता एवंतु क्यचित्पाठं कागल्पदुम् ।

इंनु धनुर्दंगविषमप्य अंगवाह्यश्रुतं परिभाषितल्पदुवु । अनंतरं शास्त्रकारं श्रुतज्ञानम-
हात्म्यमे वेळय्यं ।

मुदकेवलं च णाणं दोण्णिवि सरिसाणि होंति बोहादो ।

मुदणाणं तु परोक्खं पच्चक्खं केवलं णाणं ॥३६९॥

श्रुतं केवलं च ज्ञानं द्वे अपि सदुशे भवतो बोधात् । श्रुतज्ञानं तु परोक्षं प्रत्यक्षं केवलं
ज्ञानम् ।

श्रुतज्ञानमुं केवजज्ञानमुमेवेरुदं ज्ञानंगळु योधात् अरिदिनिदं समस्तवस्तुद्रव्यगुणपर्यायपरि-
ज्ञानादिहं समानंगळेपपु । सु मत्ते इडु विशेषमुदंतेदोडे परमोत्कर्षपर्यंतप्राप्तमाहुवावोडं
१५ श्रुतकेवजज्ञानं सकलपदार्थगळोळु परोक्षं अविज्ञानमस्पष्टममूर्त्तंगळोळुमर्त्यपर्यायंगळोळुमुच्छिद
श्रुतमांगळोळु विज्ञानादिवदं प्रवृत्त्यभायमपुदरिदं । मूर्त्तंगळोळु व्यंजनपर्यायंगळुप्य स्पृलांशंगळुप्य
स्वविपर्ययंगळोळु अवधिज्ञानादिवतो साक्षात्करणाभावविदंमुं सकलावरणबोध्यतिराय निरयशेषशपो-

रूप्य महर्द्धेपु इत्यनोशादिपु उत्पत्तिकारणतोविशेषाद्याचारमं वर्णयति । निषेधनं प्रमाददोषनिराकरणं
निषिद्धिः संज्ञाया कप्रत्यये निषिद्धिका प्रापदिचत्ताशास्त्रमित्यर्थः, तच्च प्रमाददोषविनुद्धयं बहुप्रकारं प्रापदिचत्तं
१० वर्णयति । निमीशिका इति क्यचित्पाठो दृश्यते । एवं धनुर्दंगविष अज्ञावाह्ययुतं परिभाषनीयम् ॥३६७-३६८॥
अथ शास्त्रकारं श्रुतज्ञानमाहात्म्यं वर्णयति—

श्रुतज्ञानं केवजज्ञानं केवि द्वे ज्ञाने बोधात् समस्तवस्तुद्रव्यगुणपर्यायपरिज्ञानान् सदुशे समाने भवतः
मुदुतः अरिदोषः । अ कः ? परमोत्कर्षपर्यंतं प्राप्तमपि अतः केवजज्ञानं सकलपदार्थेषु परोक्षं अविज्ञानं अस्पष्टं
अमुंनु अर्थपरंशेषु अन्वेषे मूषमाणेषु विमर्शेषु विमर्शत्वेन प्रवृत्त्यभवात् । मूर्त्तव्यपि व्यञ्जनपर्यायेषु स्पृलांशेषु

२५ पुनर्दोष शास्त्रको महापुनर्दोषक कहते हैं । हममें महर्धिक इन्द्र-प्रतीन्द्र आदिमें उत्पत्तिके
कारण तपोविशेष आदि आचरणका कथन होता है । निषेधन अर्थात् प्रमादसे लगे दोषोंका
निराकरण निषिद्धि है । संज्ञामें 'क' प्रत्यय करनेपर निषिद्धिका होता है, उसका अर्थ है
प्रापदिचत्ता शास्त्र । हममें प्रमादसे लगे दोषोंको विनुद्धिके लिए बहुत प्रकारके प्रापदिचत्तोंका
वर्णन है । कहीर 'निमीशिका' पाठ भी देखा जाता है । इस प्रकार चौदह प्रकारका अंग-
१० वात धनु ज्ञानना ॥३६७-३६८॥

अथ शास्त्रकार श्रुतज्ञानके माहात्म्यको कहते हैं—

अज्ञान और केवजज्ञान ये दोनों ज्ञान ममत्ता वस्तुओंके द्रव्य-गुण-पर्यायोंको जानने-

के अर्थसे समान है । किन्तु इतना विज्ञान है कि परम उत्कर्ष पर्यन्तको प्राप्त भी श्रुतज्ञान

१५ अज्ञाने स्पष्ट अर्थ हमको दृष्टि नहीं होती । मूर्त्त भी व्यञ्जन पर्यायोंको अपने विपर्याये

विहितमुक्तं भवगुणप्रत्ययविहितं भवप्रत्ययत्वविदं गुणप्रत्ययत्वविदं पेक्षत्पट्टद्वं तद्विवमवधिज्ञान-
मिति । अंतर्पिदनवधिज्ञानमेदितुं युवन्ति अहंदादिगुणं पेक्ष्वर । सीमाविषयमनुज्ञवधिज्ञानं
भवप्रत्ययमेदुं गुणप्रत्ययमेदितुं द्विविधमवकुर्मं बुदुतात्पय्यं ।

भवपञ्चइगो सुरणिगयाणं तित्थेवि सन्वअंगुत्थो ।

५ गुणपञ्चइगो नरतिरियाणं संखादिचिण्हमन्नो ॥३७१॥

भवप्रत्ययकं सुरनारकाणां तीर्थेपि सव्यांगोत्थं । गुणप्रत्ययकं नरतिरिखां संखादि-
चिह्नभवं ॥

१० भवप्रत्ययावधिज्ञानं वेवकळोळं नारकरोळं चरमभवतोत्थं करोळं संभयिसुगुमदुयुमवरोळं
सव्यांगोत्थमयकुं । सव्यात्मप्रदेशस्यावधिज्ञानावरणवीर्यान्तरायद्वयक्षयोपशमोत्पन्नं बुदर्थं । गुण-
प्रत्ययावधिज्ञानं पर्याप्तमनुष्यगं संतिगंचेंद्रियपर्याप्तमित्यर्थं च गं संभयिसुगुमदुयुमवरोळं संखादि-
चिह्नभवं नाभिप्रदेशविदं भेगणं संखपपायचस्वस्तिकसप्तपलशादिसुभचिह्नलक्षितात्मप्रदेशस्या-
वधिज्ञानावरणवीर्यान्तरायकर्मद्वयक्षयोपशमोत्थमे बुदर्थं । भवप्रत्ययावधिज्ञानदोषं दर्शनयिसुदृष्टा-
दिगुणसद्भावमादोषमवनपेक्षितवे भवप्रत्ययत्वमरित्यल्पदुगुं । गुणप्रत्ययावधिज्ञानदोषं तिर्यग्-
मनुष्यभवसद्भावमादोषमवनपेक्षितवे गुणप्रत्ययत्वमरित्यल्पदुगुं ।

१५ विधं भवगुणप्रत्ययविहितं—भवः नरकादिपर्यायः, गुणः सम्यग्दर्शनविशुद्ध्यादिः भवगुणौ प्रत्ययो कारणे ताभ्यां
विहितमुक्तं भवगुणप्रत्ययविहितं भवप्रत्ययत्वेन गुणप्रत्ययत्वेन अवधिज्ञानं द्विविधं कथितमित्यर्थः ॥३७०॥

२० तत्र भवप्रत्ययावधिज्ञानं सुराणां नारकाणां चरमभवतोत्थं करणां च संभवति । तच्च तेषां सव्यांगोत्थं
भवति । नाभिप्रदेशस्यावधिज्ञानावरणवीर्यान्तरायकर्मद्वयक्षयोपशमोत्थं भवतोत्थं । गुणप्रत्ययं अवधिज्ञानं
मरणां पर्याप्तमनुष्यगं निरुद्धं च संतिगपञ्चेंद्रियपर्याप्तितरिखां संभवति । तच्च तेषां संखादिचिह्नभवं
भवति, नाभिप्रदेशादिसुदृष्टादिगुणसद्भावमादोषमवनपेक्षितवे भवप्रत्ययत्वमरित्यल्पदुगुं । गुणप्रत्ययावधिज्ञानं
दोषं दर्शनयिसुदृष्टादिगुणसद्भावमादोषमवनपेक्षितवे भवप्रत्ययत्वमरित्यल्पदुगुं । गुणप्रत्ययावधिज्ञानं
दोषं तिर्यग्मनुष्यभवसद्भावमादोषमवनपेक्षितवे गुणप्रत्ययत्वमरित्यल्पदुगुं ॥३७१॥

अपरिमित है येसा इमका नही है । परमागममें जो तीसरा सीमा विषयक ज्ञान कहा है उसे
अहंत्व आदि अवधिज्ञान कहते हैं । भव अर्थात् नरकादि पर्याय और गुण अर्थात्
२५ सम्यग्दर्शन यिसुद्धि आदि । भव और गुण जिनके कारण हैं वे भवप्रत्यय और गुणप्रत्यय
नामक अवधिज्ञान हैं । इस तरह अवधिज्ञानके दो भेद हैं ॥३७०॥

उनमेंसे भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवों, नारकियों और चरमशरीरी तीर्थकरोंके होता
है । तथा यह ममत्त आत्माके प्रदेशोंमें वर्तमान अवधिज्ञानावरण और वीर्यान्तराय नामक
दो कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होता है इसलिए इसे सर्वांगसे उत्पन्न कहा जाता है । गुण-
३० प्रत्यय अवधिज्ञान पर्याप्त मनुष्योंके और संजी पंचेंद्रिय पर्याप्त तिर्यचोंके होता है । और वह
उनके शरीर आदि चिह्नोंसे उत्पन्न होता है । अर्थात् नाभिसे ऊपर शंख, पद्म, चक्र, स्वस्तिक,
मण्ड, कलश आदि गुण चिह्नोंसे युक्त आत्मप्रदेशोंमें स्थित अवधिज्ञानावरण और वीर्यान्त-
राय कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होता है । भवप्रत्यय अवधिज्ञानमें भी सम्यग्दर्शन, यिसुद्धि
आदि गुण रहते हैं फिर भी उसकी उत्पत्तिमें उन गुणोंकी अपेक्षा नहीं होती, मात्र भवधारण
३५ करनेमें ही अवधिज्ञान होता है इसीलिए उसे भवप्रत्यय कहते हैं । गुणप्रत्यय अवधिज्ञानमें
पर्याप्त मनुष्य और तिर्यचका भव रहता है फिर भी अवधिज्ञानकी उत्पत्तिमें उसकी अपेक्षा

ननुगामियं बुदवकुमावुदोडु भवांतरमं वञ्जिसल्लुदल्लु तां पुट्टिद भववोळे केडुगुं । दोत्रांतरमं वञ्जिसल्लो मेणमाणे अबु भवाननुगामियं बुदवकुमावुदोडु क्षेत्रांतरमं भवांतरमुमं वञ्जिसल्लुदल्लु । स्योत्पन्नक्षेत्रभवंगळोळे केडुगुमदुभवाननुगामियं बुदवकुमावुदोडु हानियं वृद्धियं हल्लोदे सूर्य-
मंडलवतेकप्रकारमागिर्हत्तवकुंमदु अवस्थितावधियं बुदवकुमावुदोडु ओम्मे पेच्चुगुमोम्मे
५ कुंडुगुमोम्मे यवस्थितमागिक्कुमदनवस्थितावधियानमं बुदवकुं । मावुदोडु शुक्लपक्षर चंद्रमंडलवते
स्योत्कृष्टपर्यंतं पेच्चुगुमदु यद्धमानदेशावधियं बुदवकुं । आवुदोडु कृष्णपक्षर चंद्रमंडलवते स्वक्ष-
पपर्यंतं कुंडुगुमदु होयमानदेशावधियं बुदवकुंमते सामान्यदिग्मवधियानं देशावधियं कुं वरुणे परमाव-
धियं कुं सर्वावधियुर्मेदितु त्रिधा त्रिप्रकारमवकुमिनितु गुणप्रत्ययमप्य देशावधिये द्दप्रकारमकुं
परमावधिसर्वावधिगळल्लंतबुदवकुं ।

१० भवपञ्चङ्गो ओहो देसोही होदि परमसच्चोही ।

गुणपञ्चङ्गो गियमा देसोही चि य गुणे होदि ॥३७३॥

भवप्रत्ययावधिदशावधिरुर्भवति परमसर्वावधिः । गुणप्रत्ययो नियमाद् भवतः देशावधिरपि च गुणे भवति ॥

आवुदोडु पूर्वोक्तभप्रत्ययावधियदुनियमावश्यभावात् देशावधियेवपक् । देवनारक-
१५ गळं गृहस्थतीर्त्यकरं गेयं परमावधियं सर्वावधियं संभविसत्पुर्वारिदं, परमावधियं सर्वावधियं
नियमाविवं गुणप्रत्ययं लेयपुवेके होडे संयमलक्षगुणभजदोळा येरडवकाभावमत्पुर्वारिदं देशावधिः-

तद्वाननुगामि । यत् क्षेत्रान्तरं भवांतरं च मानुगच्छति स्योत्पन्नक्षेत्रभवयोरेव वितरयति तत् क्षेत्रमवानु-
गामि । यद्वानिवृद्धिभ्यां विना सूर्यमण्डलवत् एकप्रकारमेव तिष्ठति तदवस्थितम् । यत् कदाचिद्वर्षे कदाचिदीयते

२० यत् कृष्णपक्षचन्द्रमण्डलवत् स्वक्षपपर्यंतं होयते तद्विद्यमानं देशावधियानं भवति । तथा सामान्येन अवधियानं
देशावधिः परमावधिः सर्वावधिरव इति त्रिधा त्रिप्रकारं भवति । एवं गुणप्रत्ययो देशावधिः दोडा न
परमावधिसर्वावधि इत्यर्थः ॥३७२॥

यः पूर्वोक्तो भवप्रत्ययोऽवधिः स नियमात्—अवश्यभावात् देशावधिरव भवति देवनारकयोर्गृहस्थ-
दीर्घहरस्य च परमावधिसर्वावधिरुर्भवान् । परमावधिः सर्वावधिरव इति नियमेन गुणप्रत्ययावैव भवतः

२५ भवान्तरमं जाये या न जाये, वह क्षेत्राननुगामी है । जो अन्य भवमें साथ नहीं जाता अपने
उत्पत्तिभवेमें ही छूट जाता, अन्य क्षेत्रमें जाये या न जाये, वह भवाननुगामी है । जो न
अन्य क्षेत्रमें साथ जाता है और न अन्य भवमें साथ जाता है अपने उत्पत्तिक्षेत्र और भवमें
ही छूट जाता है वह क्षेत्र भवाननुगामी है । जो हानि-वृद्धिके विना सूर्यमण्डलकी तरह एक
रूप हो रहता है वह अवस्थित है । जो कभी बढ़ता है, कभी घटता है, कभी तदवस्थ रहता
३० है वह अनवस्थित है । जो शुक्लपक्षके चन्द्रमण्डलकी तरह अपने उत्कृष्टपर्यंत बढ़ता है वह
वर्धमान है । जो कृष्णपक्षके चन्द्रमण्डलकी तरह अपने क्षयपर्यंत घटता है वह होयमान है ।
तथा सामान्यसे अवधियान देशावधि, परमावधि, सर्वावधिके भेदसे तीन प्रकार है । इस
प्रकार गुणप्रत्यय देशावधि छह प्रकारका है परमावधि सर्वावधि नहीं ॥३७३॥

पूर्वोक्त भवप्रत्यय अवधि नियमसे देशावधि ही होता है, क्योंकि देव, नारकी और

३५ पुराण अवस्थामें दीर्घहरके परमावधि सर्वावधि नहीं होते । परमावधि और सर्वावधि

इतितु क्षेत्रदोहं पूर्वोक्तजघन्यद्रव्यंग्रन्थितोऽयमितुं जघन्यदेशावधिज्ञानमरिगुमल्लिप्तं पोरणि-
द्वन्द्वनरिपद्वितु क्षेत्रसीमे पेटल्पद्वितु ।

अवरोहिखेत्तदीहं विस्तारुस्तेहयं न जाणामो ।

अण्णं-पुण समकरणे अवरोगाहणपमाणं तु ॥३७९॥

१ अवरावधिक्षेत्रद्वेष्ट्यं विस्तारोत्सेयकं न जानोमः । अन्यत्पुनः समकरणे अयरावगाहन-
प्रमाणं तु ।

जघन्यावधिविषयक्षेत्रदैर्घ्यविस्तारोत्सेयप्रमाणं नामरिपेतु ईगज्वरपदेशाभायमपुर्दारिदं ।
तु मत्ते परमगुरुपदेशपरंपरायात् मतोऽदुदु समकरणेन भुजकोटियेदिगज्ज्ये होनाधिकभागमिल्ले
समीकरणमागुतिरलु पुट्टिद्वि-क्षेत्रफलं जघन्यावगाहनप्रमाणं घनांगुलासंख्यातेरुभागमात्रमनु-
१० विवने बल्लेधु ।

अवरोगाहणमाणं उस्तेहंगुलअसंखमागस्त ।

सइस्स य घणपदरं होदि हु तवखेत्तसमकरणे ॥३८०॥

अवरावगाहनमानमुत्सेपांगुलासंख्यातभागस्य । सूचयाश्च घनप्रतरं भवति खलु तत् क्षेत्र-
समकरणे ।

११ अंतारोडा सूक्ष्मनिगोद लब्ध्यपर्याप्तकन जघन्यावगाहनमेंतुदोदितु प्रश्नमागुतिरलुत्तरबचन-
मिदु तज्जघन्यावगाहनमनियतसंस्थानमनुकुमादोडं क्षेत्रलंघनविधानदिवं भुजकोटि वैदिगज्ज्ये सम-
करणमागुतिरलुत्सेपांगुलमं परिभाषानिष्पन्नव्यवहारसूच्यंगुलमनायुदानुमोद संख्यातदिवं संक्षिति-

ज्ञानविषयभूतक्षेत्रप्रमाणं भवति ६।८।२२ । एतावति क्षेत्रे पूर्वोक्तजघन्यद्रव्याणि यावन्ति संति तावन्ति

११।८।१।८।२२।११

जघन्यदेशावधिसानं जानाति न तद्वहिःस्थितानीति क्षेत्रसीमा कथित ॥३७८॥

२० जघन्यावधिविषयक्षेत्रस्य ईर्ष्यविस्तारोत्सेयप्रमाणं न जानोमः । इदानीं तदुपदेशाभावात् । तु पुन-
परमगुरुपदेशपरंपरायात् जघन्यावगाहनप्रमाणं समकरणे-समीकरणे कृते सति घनांगुलासंख्यातेरुभागमात्र-
भवति इत्यन्यत्पुनर्जानीमः ॥३७९॥

तद्वि तानुदमनिगोदलब्ध्यपर्याप्तकस्य जघन्यावगाहनं कोदुग् अस्ति ? इति चेत्, तदवगाहनं अनियत-
संस्थानमस्ति तथापि क्षेत्रलंघनविधानेन भुजकोटिवैवाना समकरणे सति उत्सेपांगुलपरिभाषानिष्पन्नव्यवहार-

१५ क्षेत्रमें पूर्वोक्त प्रमाणवाले जितने जघन्य द्रव्य होते हैं उन सबको जघन्य देशावधिज्ञान-
जानता है । उस क्षेत्रसे याहर स्थितको नहीं जानता । इस प्रकार जघन्य देशावधिज्ञानके
क्षेत्रकी सीमा कही ॥३७८॥

इम जघन्य देशावधि ज्ञानके विषयभूत क्षेत्रकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई नहीं जानते,

१० क्योंकि इम कालमें उसका उपदेश नहीं प्राप्य है । किन्तु परम गुरुके उपदेशकी परम्परासे
ज्ञाना जानते हैं कि जघन्य अवगाहनाके प्रमाणका समीकरण करनेपर क्षेत्रफल घनांगुलके
असंख्यातयें भाग मात्र होता ॥३७९॥

प्रश्न होता है कि वह सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना कैसी है ?
इसका उत्तर यह है कि उस जघन्य अवगाहनाका आकार नियत नहीं है । फिर भी क्षेत्र

नप्रमाणं जघन्यदेशावधिसेत्रमनु कारणादिवं व्यवहारांगुलमनाद्यवितिथे वेत्तुल्यदुर्बु । तज्जघन्याव-
गाहनमुं परमाणमवोळ् देहग्रेहापाननगराविप्रमाणमुत्तेषांगुलविबमे येवितु नियमितमणुवोरिवं
व्यवहारांगुलाधितमे यषकुं । मेले यावुवोदेडेयोळंगुलमावक्रिया एकभागमसरोजमिदयादिगाया
सूत्रोक्तकांडकाण्डोळ् अंगुलग्रहणमल्लि प्रमाणांगुलमे शाह्यमवकुमुतरोत्तर निर्दिश्यमानहस्तगच्छति-
५ योजनभरताविशेत्रमज्जो प्रमाणांगुलाधितवविदं ।

अवरोहिखेत्तमज्जो अवरोही अवरोहव्यमवगमइ ।
तद्व्यस्सवगाहो उत्सेहासंखणपदरो ॥३८२॥

अवरावधितेप्रमये अवरावधिरवरद्वयमवगच्छति । तद्व्यस्यावगाहः उत्तोपासंग्य-

घनप्रतरः ।

१० जघन्यावधिसेत्रमज्यदोळिइतिहं पूर्वोक्तजघन्यद्वयमं जघन्यदेशावधिज्ञानमरिगुं । तत्
क्षेत्रमध्यदोळिइतिहं असंख्यातंगुलनोदारिकशरीरसंचयलोकमत्तकभागप्रमितलंडंगुलननिनुमनरिगु-
मं युद्धयं । तज्जघन्यपुदगलस्कंधमेले एकद्वयाविप्रदेशोत्तरपुदगलस्कंधांगुलनरिगुमं युवनिस्सि-
पेळत्येडेके बोडे सूक्ष्मविषयज्ञानरक्के सूक्ष्मावबोधनोळ् सुघटत्वमणुवोरिवं । द्रव्यावगाहोत्तरे जघन्या-
वधिविषयसेत्रमं नोडलसंख्येयगुणहीनमवकुमावोडं उत्सेषघनांगुलासंख्यातभागमात्रमकुं । मवर

१५ सूक्ष्मनिगोदलव्यपयांतकजघन्यावगाहनप्रमाणं जघन्यदेशावधिसेत्रं ततः कारणान्, देहग्रेहापाननगरादिप्रमाणं
उत्सेषाङ्गुलेनैवेति परमाणमे नियमितत्वात् व्यवहाराङ्गुलमेवाधितं भवति । उपरि यत्र "अङ्गुलमावक्रियाए
भागमसंखेज्जो वि संखेज्जो, इत्यादिगायामूत्रोक्तकाण्डके पु अङ्गुलग्रहणं तत्र प्रमाणाङ्गुलमेव ग्राह्यं, उत्तरोत्तर-
निर्दिश्यमानहस्तगच्छति योजनभरताविशेत्राणां प्रमाणाङ्गुलाधितत्वात् ॥३८१॥
जघन्यावधिसेत्रमध्ये स्थितं पूर्वोक्तं जघन्यद्वयं जघन्यदेशावधिज्ञानं जानाति तत्रोन्नतमध्यस्थिजानि

२० औदारिकशरीरसंचयस्य लोकविभक्तकभागप्रमितेसंखण्डानि असंख्यातानि जानातीत्यर्थः । तज्जघन्यपुदगलस्कंध-
स्थोपरि एवद्वयाविप्रदेशोत्तरपुदगलस्कंधान् न जानातीति न बाध्यं, सूक्ष्मविषयज्ञानस्य स्थूलावबोध-
मुपटत्वाद् । द्रव्यावगाहोत्तरे तु जघन्यावधिविषयसेत्रादसंख्यातगुणहीनं भवति, तयाम्पुल्लेखयनाङ्गुलासंख्यात-

या आत्मांगुलकी अपेक्षा नही, क्योंकि सूक्ष्म निगोद लव्यपयांतककी जघन्य अवगाहन
प्रमाण जघन्य देशावधिका क्षेत्र है । और परमाणममें यह नियम कहा है कि शरीर, य
२५ ग्राम, नगर आदिका प्रमाण उत्तेषांगुलसे ही मापा जाता है । इसलिये व्यवहार अंगुलका
आश्रय लिया है । आगे 'अंगुलमालियाए' आदि गायामूत्रोमें कहे गये काण्डकोमें अंगुल
प्रमाण प्रमाणांगुलसे लिया है । उससे आगे भी जो हस्त, गच्छति, योजन भरत आदि प्रम
क्षेत्र कहा है यह सब प्रमाणांगुलसे ही लिया है ॥३८१॥

जघन्य अवधिज्ञानके क्षेत्रके मध्यमें स्थित पूर्वोक्त जघन्य द्रव्यको जघन्य देशाव-
१० ज्ञान जानता है । अर्थात् उस क्षेत्रके मध्यमें स्थित औदारिक शरीरके संचयको लोकसे भाग दे-
एक भाग प्रमाण जो असंख्यात राण्ड स्थित है इनको जानता है । उस जघन्य पु-
रक्षन्त्यसे ऊपर एक-दो आदि अधिक प्रदेशवाले स्कन्धोंको वह नहीं जानता ऐसा नहीं
क्योंकि जो ज्ञान सूक्ष्मको जानता है वह स्थूलको जाननेमें समर्थ होता है । द-
व्यवगाहनाका प्रमाण जघन्य अवधिके विषयमूत क्षेत्रके प्रमाणसे असंख्यात गुण

नप्रमाणं जघन्यदेशावधिसेत्रमनु कारणविदं व्यवहारांगुलमनाश्रयित्ये पेक्षत्पट्टदुः। तज्जघन्याप-
गाहनमुं परमाणमदोऽहं देहपेहप्राप्तनगरादिप्रमाणमुत्तेषांगुलं विवमे येदितु नियमितमप्युर्वरिं
व्यवहारांगुलाश्रितमे यक्षुं । मेले यावदोदेहयोऽंगुलमावच्छ्रिया एकभागमासंतेज्जमित्यादिगाया
सूत्रोक्तकांडकंगळोऽंगुलप्रहणमल्लि प्रमाणांगुलमे प्राह्यमश्नुमुत्तरोत्तर निदिश्यमानहस्तागम्युति-
योजनभरतादिकेयंगळो प्रमाणांगुलाश्रितत्वविदं ।

अवरोहिखेत्तमज्जे अवरोही अवरदन्वमवगमद ।

तद्व्यवसवगाहो उस्सेहासंखणपदरो ॥३८२॥

अवरायधिसेत्रमप्ये अवरायधिरवरद्व्यमवगच्छति । तद्वद्व्यवसवगाहः उत्तोपासंख्य-
घनप्रतरः ।

१० जघन्यावधिसेत्रमध्यदोऽहं विदं पूर्वोक्तजघन्यद्वयमं जघन्यदेशावधिज्ञानमरिगुं । तद्व-
क्षेत्रमध्यदोऽहं विदं असंख्यासंगळनोदारिकशरीरसंचयलोकमत्तैकभागप्रमितलंडंगळनितुमनरिगु-
मं युवत्स्यं । तज्जघन्यपुद्गलस्कंध मेले एकद्वयादिप्रदेशोत्तरपुद्गलस्कंधंगळनरिगुमं युवदितिल्लि
पेक्षत्पट्टेके दोहे सूक्ष्मविषयज्ञानके हूलावयोधनदोऽहं सुषट्त्वमप्युदरिदं । द्रव्यावगाहक्षेत्रं जघन्या-
यधिविषयसेत्रमं नोडलसंख्येयगुणहीनमवकुमादोऽहं उस्सेयघनांगुलासंख्यातभागमात्रमवकुं । मवर

१५ सूक्ष्मनिगोदलव्यपरीतकजघन्यावगाहनप्रमाणं जघन्यदेशावधिसेत्रं ततः कारणात्, देहपेहप्राप्तनगरादिप्रमाणं
उत्तेषाङ्गुलैर्नैवति परमाणमे नियमितत्वात् व्यवहाराङ्गुलमेवाश्रितं भवति । उपरि यत्र “अङ्गुलमावलिमाए
भागमासंतेज्जमे दो वि संसेज्जो, इत्यादिवाचामुत्रोक्तकाण्डकेपु अङ्गुलप्रहणं तत्र प्रमाणाङ्गुलमेव प्राह्यं, उत्तरोत्तर-
निदिश्यमानहस्तागम्युतियोजनभरतादिकेयानां प्रमाणाङ्गुलाश्रितत्वात् ॥३८१॥

जघन्यावधिसेत्रमध्ये स्थितं पूर्वोक्तं जघन्यद्वयं जघन्यदेशावधिज्ञानं जानाति तत्क्षेत्रमध्यस्त्विति
२० औदारिकशरीरसंचयस्य लोकविभक्तैकभागप्रमितलंडंगळनितुमनरिगुमं असंख्यातानि जानातीत्यर्थः । तज्जघन्यपुद्गलस्कन्ध-
स्योपरि एकाद्वयादिप्रदेशोत्तरपुद्गलस्कन्धान् न जानातीति न वाच्यं, सूक्ष्मविषयज्ञानस्य स्थूलावबोधने
मुपट्टत्वात् । द्रव्यावगाहक्षेत्रं तु जघन्यावधिविषयक्षेत्रादसंख्यातगुणहीनं भवति, तथाप्युत्तेषयनाङ्गुलासंख्यात-

या आरमांगुलकी अपेक्षा नहीं, क्योंकि सूक्ष्म निगोद लक्ष्यपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना
प्रमाण जघन्य देशावधिका क्षेत्र है । और परमाणममें यह नियम कहा है कि शरीर, घर,
ग्राम, नगर आदिका प्रमाण उत्तेषांगुलसे ही मापा जाता है । इसलिये व्यवहार अंगुलका ही
आश्रय लिया है । आगे ‘अंगुलमालियाए’ आदि गाथासूत्रमें कहे गये काण्डकोमें अंगुलका
प्रमाण प्रमाणांगुलसे लिया है । उससे आगे भी जो हस्त, गम्युति, योजन भरत आदि प्रमाण
क्षेत्र कहा है यह सब प्रमाणांगुलसे ही लिया है ॥३८१॥

जघन्य अवधिज्ञानके क्षेत्रके मध्यमें स्थित पूर्वोक्त जघन्य द्वयको जघन्य देशावधि-
१० ज्ञान जानता है । अर्थात् उस क्षेत्रके मध्यमें औदारिक शरीरके संचयको लोकसे भाग देनेपर
एक भाग प्रमाण जो असंख्यात राण्ड स्थित है उनको जानता है । उस जघन्य पुद्गल
स्कन्धसे ऊपर एक-दो आदि अधिक प्रदेशवाले स्कन्धोंको वह नहीं जानता ऐसा नहीं है ।
क्योंकि जो ज्ञान सूक्ष्मको जानता है वह स्थूलको जाननेमें समर्थ होता है । द्रव्यकी
अवगाहनाका प्रमाण जघन्य अवधिके विषयभूत क्षेत्रके प्रमाणसे असंख्यात गुणाहीन

अवरद्वादुवरिमद्ववियप्पाय होदि ध्रुवहारो ।

सिद्धान्तिमभागो अमन्वसिद्धादन्तगुणो ॥३८४॥

अवरद्व्यादुपरितनद्रव्यविकल्पाय भवति ध्रुवहारः । सिद्धान्तैकभागोऽभग्यसिद्धान्तः-

गुणः ॥

जघन्यदेशावधिज्ञानविषयद्रव्यविदं मेलनन्तरदेशावधिज्ञानविकल्पविषयद्रव्यविरूपं तर-
त्वेति सिद्धान्तैकभागमुमभग्यसिद्धान्तगुणमुमप्य ध्रुवभागहारमरियत्पदं ॥

ध्रुवहारकम्मवग्गणगुणगारं कम्मवग्गणं गुणिदे ।

समयपवदप्रमाणं जाणिज्जो ओहि विसयम्मि ॥३८५॥

ध्रुवहारकाम्मणवर्गणागुणकारं काम्मणवर्गणां गुणिते । समयप्रवदप्रमाणं ज्ञातव्यमधि-

१० विषये ॥

काम्मणवर्गणाया गुणकाराः काम्मणवर्गणागुणकाराः ध्रुवहाराद्वेते काम्मणवर्गणा-
गुणकाराश्च ध्रुवहारकाम्मणवर्गणागुणकारास्तान् । काम्मणवर्गणां च गुणितेऽयमिदं विषये समय-
प्रवदप्रमाणं भवतीति ज्ञातव्यं । गुण्यरूपविनिर्द्दं काम्मणवर्गणगे गुणकाररूपविनिर्द्दं ध्रुवहारं च
काम्मणवर्गणेषु गुणिसुत्तिरलु अवधिविषयसमयप्रवदप्रमाणमवकुमे दु ज्ञातव्यमवकुं ।

१५

जघन्यदेशावधि विषयद्रव्यान् उपरितनद्वितीयावधिविज्ञानविकल्पविषयद्रव्याणि आनेतु सिद्धान्तैकभागः,
अभग्यसिद्ध्योऽनन्तगुणः ध्रुवभागहारः स्यात् ॥३८६॥

द्वितीयोद्देशावधिविकल्पमात्रध्रुवहाराद् गायुत्पन्नैव काम्मणवर्गणागुणकारेण द्विरुपाधिकरमावधि-
ज्ञातविकल्पमात्रध्रुवहारसंलग्नसमुत्पन्नकाम्मणवर्गणा गुणिता सती अवधिविषये समयप्रवदमानप्रमाणं स्यादिति

जघन्य देशावधि ज्ञानके विषयभूत द्रव्यसे ऊपर द्वितीय आदि अवधिज्ञानके भेदोंके
२० विषयभूत द्रव्योंको छानेके लिए सिद्ध राशिका अनन्तवर्ग भाग और अभग्य राशिसे अनन्त-
गुणा ध्रुवभागहार होता है ॥

विशेषार्थ—पूर्वपूर्व द्रव्यमें जिस भागहारका भाग देनेसे आगेके भेदके विषयभूत
द्रव्यका प्रमाण आता है वह ध्रुव भागहार है । जैसे जघन्य देशावधिज्ञानके विषयभूत द्रव्यमें
भाग देनेसे जो प्रमाण आता है वह उसके दूसरे भेदके विषयभूत द्रव्यका प्रमाण होता
२५ है ॥३८४॥

देशावधिज्ञानके विकल्पोंमें दो घटानेपर जितना प्रमाण रहे उतनी जगह ध्रुवहारोंको
स्थापित करके परस्परमें गुणा करनेपर जितना प्रमाण होता है उतना काम्मणवर्गणाका
गुणकार होता है । और परमावधिज्ञानके विकल्पोंमें दो अधिक करनेपर जितना प्रमाण हो
उतनी जगह ध्रुवहारोंको स्थापित करके परस्परमें गुणा करनेपर जितना प्रमाण हो वह
१० काम्मणवर्गणा होता है । काम्मणवर्गणाके गुणकारसे काम्मणवर्गणाको गुणा करनेपर जो प्रमाण
हो वह अवधिज्ञानका विषय समयप्रवद जानना । अर्थात् जो जघन्य देशावधिका विषय-

१. ध्रुवहारसे संदृष्टि ग्राह्यं तत्प्रमाणं मूढं वेदव्यङ्ग्यमोय वेदव्यङ्ग्यं होके देशावधि चरमद्रव्याविकल्पं च
विदुः निचरमदोऽपि प्रथमविद्वत्प्रत्ययं तदपेक्षोत्तरकमदिनिर्दिष्टिदुः बंदु प्रथमविकल्पदोः
तावन्मात्रध्रुवहारं च काम्मणवर्गणं गुणितेति स्वयंप्रमाणसमानं प्रथमद्रव्यं बुद्धत्वं ॥

जघन्यमनोद्वय्यवर्गणाप्रमाणमनंत मदर । ज । अनंतैरुभागादिनधिरुमुत्कृष्टमनो-

द्रव्यवर्गणाप्रमाणमवकु ज स मितु मुपेन्द्र क्रमादिदमावियन्ते सुद्वे इत्यादिविधानादिवं तरत्पदु
स

मनोद्वय्यवर्गणाविरुत्पंगळ ज १ अनंतैरुभागादोदने ज १ अवधिविषयद्रव्यविरुत्पंगळोऽपुगु
स स

ध्रुवहारप्रमाणं समानमेतु निश्चयितुमुदु ॥ अथवा :-

ध्रुवहारस्त पमाणं सिद्धान्तमिमपमाणमेतं पि ।

समपपमद्वणिमितं कम्मणवगणगुणादो दु ॥३८८॥

ध्रुवहारस्य प्रमाणं सिद्धान्तैरुभागाप्रमाणमात्रमपि । समयप्रवदनिमित्तं कार्मणवर्गणा-
गुणात् ॥

होदि अणंतिममागो तग्गुणमारोवि देसओहिस्स ।

दोऊणदव्वभेदपमाणं ध्रुवहारसंवग्गो ॥३८९॥

भरत्यनंतैरुभागास्तद्वगुणकारोपि देशावधेरुद्रूपोन्मद्वय्यभेदप्रमाणध्रुवहारसंवर्गः ॥

ध्रुवहारप्रमाणं सिद्धान्तैरुभागाप्रमाणमात्रमादोऽमवधिविषयसमपप्रवदनिश्चयनिमित्तं
कार्मणवर्गणागुणकारमं नोदु सु मते अनंतैरुभागाप्रमाणमा कार्मणवर्गणागुणकारमु देशावधि-
भानद्विषोन्मद्वय्यविरुत्पंगळमितिध्रुवहारंगळ संवर्गमवकुमा देशावधिज्ञानद्रव्यविरुत्पंगळेनितेदोऽ
१५ पेल्लपदुगु ।

देशावधिद्रव्यविरुत्परघनेषोऽत्रिचरमदेशावधिद्रव्यविरुत्पदोऽपुगुगुण्यरूपकार्मणवर्गणागो

मनोद्वयवर्गणावपन्यं अनन्तो भवति । तदनन्तैरुभागादिपिमुत्कृष्टं भवति इत्येवमुक्तरीत्या मनोद्वय-

ज

वर्गणाविश्रान्तामनन्तैरुभागाः स स अवधिविषयद्रव्यविरुत्पंगु ध्रुवहारप्रमाणं जातव्यम् । अथवा—

ध्रुवहारप्रमाणं सिद्धान्तैरुभागाप्रमाणमपि अवधिविषयसमपप्रवदप्रमाणमानेनं उक्तस्य कार्मणवर्गणा-

२० ध्रुवहारस्य अनन्तैरुभागाप्रमाणं स्यात् । न च ध्रुवहारोऽपि क्रियान् । देशावधिज्ञानस्य द्विषोन्मद्वय्यभेदमात्र-

मनोवर्गणाका जघन्य भेद अनन्त प्रमाण है । अर्थात् अनन्त परमाणुओंके रक्तम-
रूप जघन्य मनोवर्गणा है । सममें अनन्तका भाग देनेसे जो प्रमाण आवे उसे उस जघन्य
भेदमें जोड़नेपर पूर्णके उत्कृष्ट भेदका प्रमाण होता है । इस प्रकार मनोद्वय वर्गणाके
विकल्पोके अनन्तवें भाग अवधिज्ञानके विषयमूत द्रव्योंके विकल्पोमें ध्रुवहारका प्रमाण
१५ है ॥३८७॥

एतपि ध्रुवहारका प्रमाण सिद्ध राशिके अनन्तवें भाग है किन्तु अवधिज्ञानके
विषयमूत समयप्रवदका प्रमाण सनेके छिप पदके कहे कार्मणवर्गणाके गुणकारका अनन्तवर्ग
भाग है । और वह गुणकार देशावधिज्ञानके द्रव्यकी अपेक्षा भेदोंमें दो घटाकर जो प्रमाण
देने रहे उसी जगद् ध्रुवहारोंकी रणकर परस्परमें गुणा करनेसे जो प्रमाण हो वना है ।
१० इतना प्रमाण देगे कहा, सो करते हैं—देशावधिज्ञानके विषयमूत द्रव्यकी रचनामें उत्कृष्ट

संचयलोकविभवतैलंडप्रमाणमेवकुमे'दु निश्चयिषुवु ता ० १२—१६ त इन्नु देशावधियय-

सर्वद्वयविकल्पंगलेनिते'दोडे पेळ्वपं :—

अंगुल असंसृगुणिदा खेत्तवियप्पा य दन्वमेदा हु ।

खेत्तवियप्पा अवरुक्कस्सविसेसं हवे एत्थ ॥३९०॥

५ अंगुलासंख्यातगुणिताः क्षेत्रविकल्पाश्च द्रव्यभेदाः सलु । क्षेत्रविकल्पा अयरोत्कृष्टविशेषो भवेदत्र ।

सूच्यंगुलासंख्यातैकभागगुणितक्षेत्रविकल्पंगुल देशावधिज्ञानविषयसर्वद्रव्यभेदंगळप्पुवु ।
सलु स्फुटमाणि । अंतादोडा क्षेत्रविकल्पंगळतामनिते'दोडे अत्र इल्लि अवधिविययवोळु क्षेत्रविकल्पाः
क्षेत्रविकल्पंगळु अयरोत्कृष्टविशेषो भवेत् । जघन्यदेशावधिज्ञानविषय मूळमनिगोवलाध्ययम्यामरु-
१० जघन्यावगाहप्रमितजघन्यक्षेत्रमनिव ६।८।२२ नपवसिततमं धनांगुलासंख्या-

प १९।८९।८।२२।७९

तैकभागमात्रम ६ नुरकृष्टदेशावधिज्ञानविषयक्षेत्रंलोकप्रमित ॥ मयरोळुरुळेदुळिदुपेनितोळ्वनि-

संयप्पुवु ॥ ६ इयं सूच्यंगुलासंख्यातविदं गुणितिलक्ष्यराशिषोळेकरूपं कूडुत्तिरलु देशावधिद्रव्य-

विकल्पं गळप्पुवु ॥ - ६।२ एक'दोडे देशावधि जघन्यद्रव्य विकल्पं मोवल्गो'दु ध्रुवहारभत्ते-

स्यात् ।—ग ० १२—१६ त ३।८ ॥३८९॥ देशावधिद्रव्यविकल्पान् प्रमाणयति—

१५ सूच्यंगुलासंख्यातैकभागगुणितदेशावधिविषयसर्वक्षेत्रविकल्पाः सलु तद्विषयद्रव्यविकल्पा भवन्ति, ते च
क्षेत्रविकल्पाः अत्र देशावधिविषये अयरे अवध्यक्षेत्रे ६ तद्विषयौत्कृष्टभेदे ॥ विशोधिने सेपमाना भवन्ति—१

विषयभूत द्रव्यका प्रमाण हे जो लोकसे भाजित नोकर्म औदारिक शरीरका संचय प्रमाण हे ।
यिज्ञेपार्थ—यहाँ उत्कृष्ट भेदसे लेकर जघन्य भेद पर्यन्त रचना कही है इससे इस
प्रकार गुणकारका प्रमाण कहा है । यदि जघन्यसे लेकर उत्कृष्ट भेदपर्यन्त रचनाकी जावे
२० तो प्रमसे ध्रुवहारका भाग देते जाइए । अन्तिम भेदमें कार्मणवर्गणाको एक धार ध्रुवहारसे
भाग देनेपर द्रव्यका प्रमाण आ जाता है ॥३८८-३८९॥

अथ देशावधिके द्रव्यकी अपेक्षा विकल्प कहते हैं—

देशावधिके विषयभूत क्षेत्रकी अपेक्षा जितने विकल्प हैं उनको सूच्यंगुलके
असंख्यातपे भागसे गुणा करनेपर देशावधिके विषयभूत द्रव्यकी अपेक्षा भेद होते हैं ।

- द्रव्यविकल्पंगळत्तु द्विरूपहीनद्रव्यविकल्पमात्रध्रुवहारसंवर्गमे वर्गणागुणकारमे भवति येन
 मावे देवके प्रसंगपरकुमुंतुमल्लदेषं रूपयुतमल्लद क्षेत्रविकल्पम् । ४ । कांडरुखं गुणिति सत्परोक्षे-
 रूपं कूडिदोडे । ४ । २ । अतु देशावधिद्रव्यविकल्पप्रमाणमल्लु । द्विरूपोनद्रव्यविकल्पमात्र ध्रुवहार-
 संवर्गमे वर्गणागुणकारमे भवति एतुमादारको प्रसंगमात्रं मनुत्रिरवमनुमल्लु बुष्टिरोपमुमाण-
 ५ विरोधमुमपुदरिदं रूपयुतमल्लद क्षेत्रविकल्पम् कांडरुखं गुणिति सत्परोक्षो बु रूपं कूडिदोडे
 देशावधिद्रव्यविकल्पमो भस्तेपयुविदुनिर्वाधवोपविषयमभुं । अंतारोडा जघन्योऽक्तुदेशावधितान-
 विषयजघन्योऽक्तुक्षेत्रविकल्पंगळायुयं दोडे येन्द्रयं ।

अंगुलअसंखमाणं अवरं उक्कस्मयं हवे लोगो ।

इदि वर्गणागुणगारो असंख ध्रुवहारसंवर्गो ॥३०१॥

- १० अंगुलासंख्यातभागोऽवरः उत्कृष्टो भवेत्लोकः । इति वर्गणागुणकारोऽसंखध्रुवहारसंवर्गः ।
 अंगुलासंख्यातभागः भुवेन्द्र घनांगुलासंख्यातैरुभागमप्य लक्ष्यपर्याप्तकजघन्यावगाहप्रमाणमे
 अवरः जघन्यक्षेत्रविकल्पप्रमाणमवकुमुत्कृष्टो भवेत्लोकः । उत्कृष्टक्षेत्रविकल्पं संपूर्णलोकप्रमाण-
 मवकु- । मितु वर्गणागुणकारमसंख ध्रुवहारसंवर्गप्रमितमभुं । द्विरूपोनदेशावधितानविषयसर्व-
 द्रव्यविकल्प प्रमित ध्रुवहारसंवर्गजनितलक्ष्यप्रमितं वर्गणागुणकारप्रमाणमे बुदरयं ।

- १५ वर्धते अनेन क्रमेण लोकमात्रक्षेत्रोत्पत्तिपर्यन्तं गमनिकासद्भावात् अवशिष्टप्रथमद्रव्यविकल्पप्रथम पञ्चादि-
 क्षेपात् ॥३१०॥ ते जघन्योत्कृष्टक्षेत्रे संख्याति—

अवरं जघन्यदेशावधिविषयमेवं मूलमनिगोदलक्ष्यपर्याप्तकजघन्यावगाहप्रमाणमिदं-

६ । ८ । २२

० १-

५ १९ । ८ । ९ । ८ । २२ । ३ । ९

० ० ०

अपवर्तितं पनाङ्गुलासंख्यातभागमात्रं भवति ६ उत्कृष्टं लोकः जघन्योत्पत्तिपतो भवति इत्येवं द्विरूपोनदेशावधि-

५

०

- २० सर्वद्रव्यविकल्पमात्रासंख्यध्रुवहारसंवर्ग एव कार्यवर्गणागुणकारः स्यात् ॥३११॥ अथ क्रमप्राप्तं वर्गणा-
 प्रमाणमाह—

भाग द्रव्यके विकल्प होने तक क्षेत्र एक प्रदेश अधिक उतना ही रहता है । उसके पश्चात्
 क्षेत्रमें पुनः एक प्रदेश बढ़ता है । इस तरह प्रत्येक सूच्यंगुलके असंख्यातवर्गे भाग द्रव्यके
 विकल्प होनेपर क्षेत्रमें एक-एक प्रदेशकी वृद्धि उत्कृष्ट क्षेत्र लोक पर्यन्त प्राप्त होने तक होती
 २५ है । इसीसे क्षेत्रकी अपेक्षा विकल्पोंकी सूच्यंगुलके असंख्यातवर्गे भागसे गुणा करनेपर द्रव्यकी
 अपेक्षा विकल्प फदे हैं । इनमें पहला द्रव्यका भेद पीछेसे मिलाया वह अवशेष था अतः
 एकको मिलाना कहा ॥३१०॥

अप देशावधिके घन जघन्य और उत्कृष्ट क्षेत्रोंको कहते हैं—

जघन्य देशावधिका विषयभूत क्षेत्र सूक्ष्म निगोद लक्ष्यपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना

- १० प्रमाण घनांगुलका असंख्यातवर्गे भाग मात्र होवा है । उत्कृष्ट क्षेत्र जगत् भेजिका घनरूप
 लोक-प्रमाण है । इस प्रकार देशावधिके समस्त द्रव्यकी अपेक्षा विकल्पोंमें दो कम करके

यगाहमितु ६।८।८

$$\begin{array}{c} ० \\ ५ \quad ६ \quad ८ \quad ८ \quad १९ \\ \equiv \quad ० \end{array}$$

आसी अंते गुप्ते इत्यादि गुणानिप्रापयित्री तत्त्वगुणानिप्राप-

गाहविकल्पगच्छितित्युक्तु ६ ० ई तेजसायिक सार्धवगाहनायिकत्परातिविं गुणिमुत्तरलातु-

$$\begin{array}{c} ० \\ ५ \end{array}$$

दो' दु लक्ष्यं तल्लक्ष्यमात्रं परमावधितानयिकत्परातिविं ६ ० ई परमावधितानयिकत्परातिविं

$$\begin{array}{c} ० \\ ५ \end{array}$$

द्विरूपयुक्तं माडि विरलितं प्रविष्टं ध्रुवहारमनितु यगिनासंभर्गं मानुत्तरलु आगुरो' दु लक्ष्यमनु
 ५ काम्मेनयगमंजारादियवकुं । व । इदि इनु ध्रुवहारप्रमाणं यगमंजागुणकारप्रमाणं यगमंजाप्रमाणं
 व्यक्तमाणि भूयं राशिगच्छं पेक्षत्पदद्वयं नोन जानोहि अरिये' बु निप्यसंभोपन माडस्पददु ।

देसां हि अवरद्वयं ध्रुवहारेणवहिदे हवे विदियं ।

तदियादिविषयेषु वि असंखवागेति एम कमो ॥३०४॥

देशावधेरवरद्वयं ध्रुवहारेणपद्वते भवेद्वितीयं । तृतीयादिविकल्पेष्वपि असांख्यवारपद्वत-
 १० मेय क्रमः ॥

देशावधितानयिपयजघन्यद्रव्यमं स ० १२।१६ ल ध्रुवभागहारदिवं भागितिवेरु-

$$\equiv$$

भागं देशावधितानयिपयद्वितीयद्रव्यविकल्पमवकुं स ० ० १२।१६ ल तृतीयादिविकल्पगच्छोन्मो

$$\equiv$$

उत्पुल्ले ६।८।८

$$\begin{array}{c} ० \\ ५ \quad ६ \quad ८ \quad ८ \quad १९ \\ \equiv \quad ० \end{array}$$

विसोम्य शेषव्यवर्त्य ६।० एकरूपे निधिते एवावन्तः ६।०। इत्येव

$$\begin{array}{c} ० \\ ५ \end{array}$$

ध्रुवहारप्रमाणं यगमंजागुणकारप्रमाणं यगमंजाप्रमाणं व जानोहि ॥३०३॥

१५ यत्प्रागुक्तं देशावधितानयिपयजघन्यद्रव्यं-स ० १२-१६ ल । ध्रुवहारेण एतेन भक्तं द्वितीयदेशावधि-

$$\equiv$$

को अग्निफायिकः उत्पुल्ले अवगाहनाके प्रमाणमं-से घटाकर जो शेष बचे उसमें एक जोड़ने-
 पर अग्निफायिकी अवगाहनाके भेद होते हैं । इस प्रकार ध्रुवहारका प्रमाण, यगमंजाके
 गुणकारका प्रमाण और यगमंजाका प्रमाण जानना ॥३०३॥

जो देशावधितानका विषय जघन्य द्रव्य पद्वले कहा था, उसकी ध्रुवहारसे एक बार
 २० भाग देनेपर देशावधिके दूसरे भेदका विषयभूत द्रव्य होता है । इसी प्रकार ध्रुवहारका

अथ यत्तु ब्रह्मणा मत्तोत्पत्तिं ध्रुवहारिं भागिमुत्त पौगु केनं विगोपय-
 मन्तुं नृणां मत्तोत्पत्तिं ध्रुवहारिं भागिमुत्त पौगु केनं विगोपय-
 मन्तुं नृणां मत्तोत्पत्तिं ध्रुवहारिं भागिमुत्त पौगु केनं विगोपय-

तद्विषयं विमलजने हनन्निदमात्रद्विभिः वगणयं ।

सर्वमे कुरुतुमिगितमगमिगितमभजिं तु ॥३९८॥

॥ अथ शिवस्य शक्तिरूपं ॥ शिवस्य शक्तिरूपं त्रैलोक्यं ॥ शिवस्य शक्तिरूपं त्रैलोक्यं ॥

[illegible][illegible]

॥ ३०० ॥

॥ १ ॥ अथ भगवत्पूजायाः विधिः ।

१५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

॥ १ ॥ अथ शिवस्य चतुर्भुजाय नमः ।

११११ ३०११ १०५ मयद्वयं मास ॥४००॥

४४. ५. निष्पत्तिः साक्षात्कृतम् । अनेन समर्थेन कर्तुम् । देशावधिपरः तत्र समर्थेन

- डकारोऽने जघन्यकालमिदु ८ तत्कांडकोट्टकालमिदु ८ आदिपनंतदोऽकृते दोडे शेषं तत्कांडक-
 दोऽ जघन्यकालद मेले पेच्चिद समयंगळ प्रमाणमप्युदु ८०१ ई कालविशेषदिवं क्षेत्रविशेषमं
 भागिमुदुदेके दोडे जघन्यकालद मेले इतिनु समयंगळ पेच्चिदागळो जघन्यशेनद मेलेतिनु प्रदेशंगळ
 पेच्चिद योऽ दु समयं पेच्चिदागळेतिनु प्रदेशंगळ पेच्चंगुमेदितु त्रैराशिकं माडि प्र काल ८०१
 १० फलप्रदेश ६०७ इच्छाकालसमय १ लक्ष्यशेनप्रदेशंगळ ६ इत्यावलिभक्तघनांगुलप्रमितशेन
 ७०
 यिरुत्पंगळ ध्रुवहृदिदं नडेदु नडेदोदोऽ समयवृद्धिमागुत्तं पोगि प्रयमकांडकचरमयिरुत्पदोऽ
 जघन्यकालद मेले पेच्चिद समयंगळनितप्युदु ८०७ इवं तज्जघन्यकालदोऽ कूड्यागळ
 ७०
 समष्टेवं माडि ८७ आवळिपावळियं तोरि संख्यातरुपुगळं कूडिदोडिदु ८० अत्रत्यासंख्यात-
 ०७
 १० भाग्यभागहारंगळं सतिगडिद शेषं संख्यातभक्तावलप्रमितमङ्कु ८ मत्तमोऽ समयवृद्धि-
 मादागळ क्षेत्रदोऽ आवलिभक्तघनांगुलप्रमितप्रदेशंगळ क्षेत्रदोऽ पेच्चुत्तं विरलापळितिनु समयंगळ
 पेच्चिदल्लिगेतिनु प्रदेशंगळ क्षेत्रदोऽ पेच्चुत्तं वेदितु त्रैराशिकं माडि प्र = का स १। फ। = प्रदेश
 ६ इ = का स ८०-७ लक्ष्यक्षेत्रप्रदेशंगळ ६०-७ इवं जघन्यशेनदोऽ कूड्यागळ संख्यातरुपु-
 ८
 गडिदं समष्टेवं माडि ६७ घनांगुलके घनांगुलमं तोरि संख्यातरुपुगळं कूडिदोडिदु ६० अत्र-
 ०७
 १५ त्यासंख्यातभाग्यभागहारंगळनयवर्तितसिद शेषं संख्यातभक्तघनांगुलप्रमितं चरमक्षेत्रविरुत्प-
 मङ्कु ६
 ७

इनु ध्रुवहृदि विषयोयि सभवंकांडकदोऽं परिपाटिकमवरिपत्पङ्गुमिन्नु ध्रुववृद्धि-
 विषयोयि तत्रयमकांडकदोऽ अतरेवं संख्यं भागं असंख्यकारं तु घनांगुलासंख्यातेरुभागमात्रशेन
 प्रदेशंगळ जघन्यशेनद मेले पेच्चिदागळो दोऽ दु समयं जघन्यकालद मेले पेच्चंगुमंते घनांगुलासंख्या-
 तैरुभागमात्रक्षेत्रप्रदेशंगळ पेच्चिदागळो दु समयं केटगण कालदमेले पेच्चंगुमितिनु ध्रुवाग्रवृद्धि-
 गळ क्षेत्रदोऽ तदोऽगमसंख्याकारंगळगुत्तं विरल कालदोऽ मुपेच्छिदितिनु समयंगळ ८०-७
 ७०

अत्रत्यासंख्यातभाग्यभागहारंगळनयवर्तितसिद शेषं संख्यातभक्तघनांगुलप्रमितं चरमक्षेत्रविरुत्प-
 मङ्कु ६
 ७

इतः तज्जघन्यकालदोऽ अत्रत्यासंख्यातभाग्यभागहारंगळनयवर्तितसिद शेषं संख्यातभक्तघनांगुलप्रमितं चरमक्षेत्रविरुत्प-
 मङ्कु ६
 ७

- ११ एतन्मङ्क प्रदेशं यदने यदने घनांगुलके अमंख्यातये भाग प्रदेशं यदनेपर जघन्य देशायधिके
 विरुत्पत्त काठमे एक समयको वृद्धि होवी है । इस प्रकार दोत्रमे इतनी वृद्धि होनेपर कालमे
 एक समयको वृद्धि भाग भी होवी है इसमे ध्रुववृद्धि कहते हैं । और पूर्वोक्त प्रकारसे ही कभी

प्रयमादिकांडकमं पेरुदपेने बुदाचार्यन प्रतिजेयसं ।

अंगुलमावलियाए भागमसंसेज्जदो वि संसेज्जा ।

अंगुलमावलियंतो आवलियं चांगुलपुधचं ॥४०४॥

५ अंगुलमावल्योर्भागोऽसंख्येयतोपि संख्येयः । अंगुलमावल्यंतः भावजिकं चांगुलपुयसदं ॥
प्रयमकांडकदोऽङ्गुल जघन्यक्षेत्र कालगङ्गा घनांगुलावलिगङ्गा असंख्यातैरुभागमानदिवं मेले
संख्येयो भागः क्षेत्रमुं कालमुं ययासंख्येयमागि घनांगुलसंख्येयभागमुमायक्ति संख्येयभागमुमरकु ६८

द्वितीयकांडकदोऽङ्गुल क्षेत्रं घनांगुलमङ्गुल कालमावल्यंतमेयङ्गुल । किंवदूनायक्ति ये बुदयं । ६।८-१
तृतीयकांडकदोऽङ्गुल भावलिरेंगुलपुयसत्वं घनांगुलपुयसत्यमुमावलियमङ्गुल । पुयसत्वं । ६८।

आवलियपुधचं पुण हत्यं सह गाउयं गृहचं तु ।

जोयणभिण्णमुहुचं दिवसंतो पण्णवीसं तु ॥४०५॥

आवलियपुयसत्वं पुनहंस्तस्तथा गम्यतिमुहुहंतस्तु । योजनं भिन्नमुहुतः दिवसातः पंच-
विंशतिस्तु ॥

चतुर्थकांडकदोऽङ्गुल पुयसत्वावलियपुमेरुहस्तमुमङ्गुल । हस्त १।८।५ । पंचमकांडकदोऽङ्गुल तथा
गम्यतिमुहुहंतस्तः एककोशमुमंतमुहुहंतमुमङ्गुल । को १ । का २१-१ । पष्ठकांडकदोऽङ्गुल योजनं भिन्न-
१५ मुहुतः एकयोजनमुं भिन्नमुहुहंतमुमङ्गुल । यो १ । का = भिन्नमु १ ॥ सप्तमकांडकदोऽङ्गुल दिवसातः
पंचविंशतिस्तु किंवदूनादिवसमुं पंचविंशतियोजनं गङ्गां मरकुं । यो २५ का = वि १ ।

विंशतिकाण्डकानि वरये इत्याचार्यप्रतिज्ञा ॥४०३॥

प्रयमकाण्डके क्षेत्रकालो जघन्यो घनाङ्गुलावत्योरसंख्यातैरुभागी ६।८ उत्कृष्टो तयोः संख्येयभागी

१।८ द्वितीयकाण्डके क्षेत्रं घनाङ्गुलम् । कालः भावस्यन्तः-किंवदूनावलिरेत्यर्थः ६।८-१ । तृतीयकाण्डके

१।९

२० क्षेत्रं घनाङ्गुलपुयसत्वं कालः भावलिपुयसत्वं पु ६।८ ॥४०४॥
चतुर्थकाण्डके कालः भावलिपुयसत्वं । क्षेत्रं एकहस्तः । ह १।८५ । पञ्चमकाण्डके क्षेत्रं एककोशः ।

कालः अन्तर्मुहुतः । को १ । का २१ । पष्ठकाण्डके क्षेत्रमेकयोजनं, कालः द्वियोजनं । यो १ का भिन्न
मु १-१ । सप्तमकाण्डके कालः किंवदूनादिवसः क्षेत्रं पञ्चविंशतियोजनानि यो २५ का दि १-॥४०५॥

के अन्तिम भेदं कालका प्रमाण होता है । आगे क्षेत्र और कालको लेकर चन्नीस काण्डक
२५ कहेंगे पेसी प्रतिज्ञा आचार्यने की है ॥४०३॥

प्रयम काण्डकमें जघन्य क्षेत्र घनांगुलके असंख्यातवर्गे भाग और जघन्य काल आवलीका
असंख्यातवर्ग भाग है । उत्कृष्ट क्षेत्र घनांगुलका संख्यातवर्ग भाग और उत्कृष्ट काल आवलीका
संख्यातवर्ग भाग है । द्वितीयकाण्डकमें क्षेत्र घनांगुल प्रमाण और काल कुछ कम आवली है ।
तीसरे काण्डकमें क्षेत्र घनांगुल प्रत्यक्ष प्रमाण है और काल आवली प्रत्यक्ष प्रमाण है ॥४०४॥
३० चतुर्थ काण्डकमें काल आवली प्रत्यक्ष और क्षेत्र एकहाथ प्रमाण है । पौंचवें काण्डक-
में क्षेत्र एक कोश प्रमाण काल अन्तर्मुहुत है । छठे काण्डकमें क्षेत्र एक योजन और काल भिन्न
मुहुत है । सप्तम काण्डकमें काल कुछ कम एक दिन और क्षेत्र पचीस योजन है ॥४०५॥

साधिसुबुद्धि । अध्रुववृद्धिरपि पुनरविष्टमिष्टकांडके अध्रुववृद्धिं तन्न विप्रशितकांडादौ
विद्वद्भागि ।

अंगुल असंख्यभागं संखं वा अंगुलं च तस्मैव ।

संख्यमसंखं एवं संक्षेपद्वयम् अध्रुवगो ॥४०९॥

- ५ अंगुलासंख्यातभागं संख्यं वा अंगुलं च तस्मैव । संख्यमसंख्यं एवं श्रेणीप्रतरस्या ध्रुवके ॥
अध्रुववृद्धिविप्रशितमादौ तत्कांडः क्षेत्रकालं गच्छति तस्मात्तस्मात् घनांगुलासंख्यातभाग-
मात्रम् ६ मेघ घनांगुल संख्यातभागमात्रम् ६ मेघ घनांगुलमात्रम् ६ संख्यातघनांगुलमात्रम्
६१ । असंख्यातघनांगुलमात्रम् ६० । एवं इत्तु श्रेणिं प्रतररकमरिष्यत्तुमदेतदौ श्रेण्य-
संख्येयभागमात्रम् श्रेण्य संख्येयभागमात्रम् श्रेणिमात्रम्, संख्यातश्रेणिमात्रम् ॥—१॥ असंख्यात
१० श्रेणिमात्रम् ॥—१॥ असंख्येयभागप्रतरमात्रम् ॥ प्रतरसंख्येयभागमात्रम् १ प्रतरमात्रम् = संख्यात-
प्रतरमात्रम् = १ संख्यातप्रतरमात्रम् = ० प्रदेशगच्छ पंच पंचकालादौ केके समयं पंचगुणं ध्रु-
ववृद्धिक्रमं ।

कर्मव्यवगणं ध्रुवहारेणिवारमाजिदे दचं ।

उपकस्सं खेत्तं पुण लोगो संपुण्णो होदि ॥४१०॥

- १५ कर्मव्यवगणं ध्रुवहारेणिवारमाजिदे द्रव्यमुत्कृष्टं क्षेत्रं पुनर्लोकः संपूर्णो भवति ॥
अत्र च उपन्यस्यते ८ समष्टेन ६ । १ । मिलिते प्रथमकाण्डकचरमे घनांगुलसंख्येयभागो भवति ६ एवं
सर्वकाण्डकेषु ध्रुववृद्धि साधयेत् । अध्रुववृद्धिरपि विप्रशितकाण्डकेन तत्तत्क्षेत्रकालाविरोधेन वक्तव्या ॥४०८॥
तथा—

घनांगुलासंख्यातभागमात्राः ६ वा घनांगुलसंख्येयभागमात्राः ६ वा घनांगुलमात्राः ६ वा

- २० संख्यातघनांगुलमात्राः ६ १ वा असंख्यातघनांगुलमात्रा ६ ० एवं श्रेणीप्रतरीति, तथाहि—श्रेण्यसंख्येय-
भागमात्राः ॥ वा श्रेण्यसंख्येयभागमात्राः १ वा श्रेणिमात्राः—वाः संख्यातश्रेणिमात्राः—१ वा असंख्यात-
श्रेणिमात्राः—० वा प्रतरसंख्येयभागमात्रा = १ वा प्रतरसंख्येयभागमात्राः = वा संख्यातप्रतरमात्रा = १ ॥
असंख्यानप्रतरमात्राः = ० प्रदेशा वधित्वा वधित्वा काले एकैकमयो वर्धते इत्यध्रुववृद्धिक्रमः ॥४०९॥

- २५ भागप्रमाण उत्कृष्टक्षेत्र प्रथमकाण्डकका होता है । इसी प्रकार सब काण्डकोमें ध्रुववृद्धिका
प्रमाण लाना चाहिए । अध्रुववृद्धि भी विप्रशित काण्डकमें उस-उस क्षेत्रकालका विरोध न
करते हुए लाना चाहिए ॥४०८॥
वही कहते हैं—

- घनांगुलके असंख्यातवें भागमात्र अथवा घनांगुलके संख्यातवें भागमात्र, अथवा
घनांगुलमात्र, अथवा संख्यात घनांगुलमात्र, अथवा असंख्यात घनांगुलमात्र, अथवा श्रेणीके
असंख्यातवें भागमात्र, अथवा श्रेणीके संख्यातवें भागमात्र, अथवा श्रेणिप्रमाण, अथवा
१० संख्यात श्रेणिमात्र, अथवा असंख्यात श्रेणिमात्र, अथवा प्रतरके असंख्यातवें भाग, अथवा
प्रतरके संख्यातवें भाग अथवा प्रतरमात्र अथवा संख्यात प्रतरमात्र अथवा असंख्यात प्रतरमात्र
प्रदेश यदा-तदाकर कालमें एक-एक समय बढ़ता है । इस प्रकार अध्रुववृद्धिका क्रम है ॥४०९॥

अनंतरं परमायुधिज्ञान प्रहृषणम् येन्द्रपं :-

देसावहिवरदब्बं घुवहारेणवदिदे हवे णियमा ।

परमावहिस्स अवरं दब्बपमाणं तु जिणदिट्ठं ॥४१३॥

परमावहिस्त अवरं दव्यपमाणं तु जिगादद्ध ॥४१२॥
देशावधिरद्वयं ध्रुवहारेणपहृते भवेन्नियमात् । परमावधेरवरदव्यप्रमाणं तु जिनविश्वं ॥

सर्वोत्कृष्टदेशावधिज्ञानविषयोत्कृष्टद्रव्यं पुष्पोक्तं ध्रुवहारैक्यार भक्तकाम्मणवगणा-
प्रमाणं य ध्रुवहारदिवं भागिसुत्तिरलु व तु मत्ते परमावधि विषयद्रव्यप्रमाणं नियमवि-

मन्त्रमुनेर्दु जिनराजिदं पैरुत्पदुदु । इन्ना परमायधियुत्तुद्वयप्रमाणं पैरुत्तपं :-

परमावहिस्स मेदा सग ओगाहणवियप्पहदतेऊ ।

॥३१॥

चरिमे हारप्रमाणं जेद्वस्स य होदि दच्च तु ॥४१॥
परमायथेभेदाः स्वकायगाहनविकल्पहृततेजसः । चरमे हारप्रमाणं ज्येष्ठस्य भवेत् इयं तु ॥

परमायधेर्भेदाः स्वाययागहनविकल्पहततेजसः । चरम हासप्रमाणं ज्येष्ठव्यसंभवे ।
परमायधिज्ञानविकल्पगच्छेन्नितम्बुवे' दोष्टे स्वाययागहनविकल्पगच्छे' गुणिसत्त्वपटु तेजःस्वायिक-

जीवांगुल संरूपे मायतावत्प्रमाणंगुलपुष्पं $\approx \frac{a}{\sqrt{2}} \frac{a}{\sqrt{2}}$ ई परमावधितानतश्च विकल्पंगुलौ सव्यौ-

हृत्वरमविरहस्योक्तुं तु मत्ते हृद्यमहृष्टपरमावधिगे ध्रुवहारप्रमाणमेवक्तुं ॥ ९ ॥

सत्त्वायहिस्त एको परमाणू होदि णिव्वियप्पो सो ।

गंगामहाण्डस्त पवाहोव्य ध्रुवो हवे हारो ॥४१५॥

गंगामहानदस्स पवाहोच्च ध्रुवो हवे हारो ॥४१५॥
 सार्वाधरेकः परमाणुः भवेन्नित्यकल्पः । सः गंगामहानद्याः प्रवाहवत् ध्रुवो भवेद्द्वारः ॥

देवाद्यप्येवमिदं वक्तुं शक्यं । इत्युक्तं तदा च परमावधि विषयमप्यत्र निमित्तम् ।

संनि विनैक ॥४१३॥ इरानी परमावधेयवृष्टप्रमाणमाह—

सन् १९१३॥ इदानीं परमावधेयवृत्त्यभ्युपगममाह—

परमावधिमानविष्णोः स्वभावमाहृदयविष्णुनिवृत्तव्यवहारिकजीवमस्य भवति ३०१। ३। ३५

२०. नूनं सर्वोत्तममिदमेतन् नूनः इत्यप्रवृत्तास्त्रमागमे ९ मनेत् ॥४१४॥

अब परमाण्विज्ञानका क्यान करते हैं—

अथ परमावधिज्ञानका कथन करते हैं—
 देसावधि के कृष्ट द्रव्यको प्रवृत्त भाग देनेपर परमावधिके विषयभूत अपर
 द्रव्यका प्रमाण होता है ऐसा त्रिनदयेन कहा है ॥५१३॥

अब परमावधिके अकृष्ट द्रव्यका प्रमाण कहते हैं—

अथ परमावधिक संकष्ट द्रव्यको प्रमाण कहते हैं—
 तेजसाधिक जीवोंको अवगाहनाके भेदोंमें तेजसाधिक जीवोंको संख्याको गुण
 २५ बरनेतर जो प्रमाण आता है वनने परमावधिज्ञानके भेद हैं। वनमेंसे सभने संकष्ट
 अतिरिक्त भेदके विषयभूत द्रव्य प्रवृत्तार प्रमाण ही होता है। अर्थात् प्रवृत्तारका जितने
 परिमाण है वनने परमानुर्बोध समुद्रस्वर मूलम स्थान्यको जानता है ॥११॥

आवलिअसंख्यमाणा इच्छिदगच्छधनमाणमेताओ ।

देसावहिस्स खेत्ते काले वि य होति संवग्गे १,४१७ ।

आवत्यसंख्यमाणा ईप्सितगच्छधनमानमात्राः । देशावधेः क्षेत्रे कालेऽपि च भवति संवग्गे ॥

परमावधिज्ञानविषयगच्छप्य क्षेत्रकालगच्छ तन्तम्म जघन्य मोदल्गोइ असंख्यातगुणित-

५ क्रमदिदं परमावधिज्ञानसत्त्वोत्कृष्टपथ्यतमविच्छिन्नरूपविदं नडेयवंतु नडेय क्षेत्रकालविरूपणला-
घेदेयोऽच्छ विवक्षितगच्छपुवलि देशावधिज्ञानविषयोत्कृष्टक्षेत्रकालमात्रगुण्यगच्छ आवत्यसंख्यात-
भागगुणकारंगच्छ तद्विवक्षितगच्छधनमानमात्रंगच्छ संवर्गगच्छागुत्तिरलु तावन्मात्राज्ज्ञातगुणित-
क्रमंगच्छ दरिपलपडुपदेते दोहे परमावधिज्ञानप्रथमविरूपदोऽच्छ आवत्यसंख्यातभागगुणकारंगच्छ
तद्वगच्छमोददर संकलितधनमात्रंगच्छ १२ अपुवे बल्लियोदोदे गुणकारमच्छ ८५-१८

२१

१० मते विवक्षितद्वितीयविरूपदोऽच्छ तद्वगच्छसंकलनधनमानमात्रंगच्छपुव २३ मूल मूल गुणकार-
२१ ।

गच्छपुव ८८८८ । ५-१८८८ अंते विवक्षिततृतीयविरूपदोऽच्छ तद्वगच्छसंकलनधनमानमात्रंगच्छ-
८८८ ८८८

पुव ३१४ धेदारारपुव ८८८८८८ । ५-१८८८८८ मी प्रकारविदं विवक्षितचतुर्थविरूप-
२११ ८८८८८८ ८८८८८८

दोऽच्छ तद्वगच्छसंकलनधनमानमात्रंगच्छपुव ४१५ धेदु पसं पसं गुणकारंगच्छपुव
२११

८११०५-१८११० मिते पंचमविरूपदोऽच्छ तद्वगच्छसंकलनधनमात्रंगच्छपु २६ धेदु
८ ८

११ परमावधेर्विवक्षितक्षेत्रविरूपे विवक्षितकालविरूपे च उच्छिन्नरूपस्य यावत्संकलितधनं तावत्प्रमाणमाणा
आवत्यसंख्यमाणाः परस्परं संवर्गे देशावधेरुत्कृष्टक्षेत्रे उत्कृष्टकालेऽपि च गुणकारा भवन्ति । ततस्ते गुणकाराः
प्रथमविरूपे एकः । द्वितीयविरूपे त्रयः । तृतीयविरूपे पद । चतुर्थविरूपे दश । पञ्चमविरूपे पञ्चदश एवं

परमावधिके विवक्षित क्षेत्र और विवक्षित कालके भेदमें उस भेदका जितना संक-
लित धन हो, उतने प्रमाण आवलीके असंख्यातवर्गे भागोंको परस्परमें गुणा करनेपर जो
२० प्रमाण आवे उतना देशावधिके उत्कृष्ट क्षेत्र और उत्कृष्ट कालमें गुणकार होते हैं । वे गुणकार
प्रथम भेदमें एक, दूसरे भेदमें तीन, तीसरे भेदमें छह, चतुर्थ भेदमें दस, पंचम भेदमें पन्द्रह
इस प्रकार अन्तिम भेद पर्यन्त जानना ।

विशेषार्थ—जिस नम्बरके भेदकी विवक्षा हो, एकसे लगाकर उस भेद पर्यन्तके एक-
एक अधिक अंकोंको जोड़नेसे जो प्रमाण आवे उतना ही उसका संकलित धन होता है । जैसे
२५ प्रथम भेदमें एक ही अंक है अतः उसका संकलित धन एक जानना । दूसरे भेदमें एक और
दोको जोड़नेपर संकलित धन तीन होता है । तीसरे भेदमें एक, दो तीनको जोड़नेसे संक-
लित धन छह होता है । चौथे भेदमें उसमें चार जोड़नेसे संकलित धन दस होता है ।
पाँचवें भेदमें पाँचका अंक और जोड़नेसे संकलित धन पन्द्रह होता है । सो पन्द्रह जगह
आवलीके असंख्यातवर्गे भागोंको रगकर परस्परमें गुणा करनेसे जो परिमाण हो वही पाँचवें
१० भेदका गुणकार होता है । इस गुणकारसे उत्कृष्ट देशावधिके क्षेत्र लोकको गुणा करनेपर जो

माय ६। एतावन्मात्र गुणकारंगळपुवु ६४। ६४। ६४। ६४। ६४। ६४ मिलि ईस्ति-

राशिच्छेवं विवक्षितराशिपु वेसद छप्पणनर छेदराशिये दु ८। इवु वेयच्छेदः वेयमायत्यं-
ख्यातनसंदृष्टि ६४ इवरद्वच्छेदंगळनितपुवो बोडे भग्जस्तद्वच्छेद भाग्यवद्वच्छेदंगळार ६।

५ हारद्वच्छेदणाहि परिहीणा हारद्वच्छेदंगळवं परिहीनंगळारोडे ६। २। नात्कु। लद्वस्तद्वच्छेद
तल्लब्धराशिपुद्वच्छेदशलाकंगळपुवुवर्दिदमो वेयराशिपुद्वच्छेदंगळवं भागंगो नृतिरलु १ ८

लब्धं यावन्मात्रं २ तावन्मात्रदेयराशीणवभासे वेयराशिगळग्योन्याभ्यासमागुतिरलु ६४। ६४

तन्न विवक्षितराशिपु वेसद छप्पणं पुटदुगुमित। पत्य। सूच्यंगुल। जगच्छेदगिलोकंगळोप्ति-
राशिगळारोडं तत्तद्वच्छेदंगळना वेयमप्यायत्यसंरयातवद्वच्छेदंगळवं भागिति

पत्यच्छेद सूच्यंगुलच्छेद जगच्छेदोच्छेद लोकाच्छेद तल्लब्धमात्रमायत्यसंख्यातंगलं
छे छे छे वि वि छे छे ९
१६-४ १६-४ १६-छे छे ३ १। ६-४

१० गुणिसुतिरलु तत्तत्पत्यसूच्यंगुल जगच्छेदगिलोकंगळं पुटदुगुमं वरिवुदु।

दिष्णच्छेदेणवहिदलोगच्छेदेण पदधने भजिदे।

लद्वमिदलोगगुणणं परमावहिचरमगुणगारो ॥४२१॥

वेयच्छेदनापहत लोकच्छेदेन पदधने भक्ते। लब्धमितलोकगुणणं परमावधिचरमगुणकारः।
वेयच्छेदंगळवं भागिसत्पट्ट लोकच्छेदंगळवं ८ पदधने मुन्नं विवक्षित तृतीयपर

१५ धनमं ३।४ भजिदे भागिसुतिरलु ३।४ यल्लब्धं तल्लब्धमपवर्तितं मूह ३। तावन्मात्र
२।१ २।१ ८ ६-२

दीर्घवर्तेपु—	पत्यच्छेद	सूच्यंगुलच्छेद	जगच्छेदोच्छेद	लोकाच्छेद	तत्र यल्लब्धं तत्तन्मात्र-
	छे	छे छे	वि छे छे ३	वि छे छे ९	
	१६-४	१६-४	१६-४	१६-४	

वत्यसंख्याभागानामप्यासे वृते ते पत्यादीप्तिराशयः उत्पद्यन्ते ॥४२०॥

वेयच्छेदमल्लोकाच्छेदः ८ पदधने विवक्षिततृतीयपरस्य घने ३।४ भक्ते ३।४
६-२ २।१ २।१ ८ ६-२

२५६ उत्पन्न होती है। इसी प्रकार पत्य प्रमाण या सूच्यंगुल प्रमाण या जगतश्रेणी प्रमाण
असंख्यावर्षे भागके अर्धच्छेदोंसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उसका एक-एकके रूपमें
विरलन करके प्रत्येकके ऊपर आवलीका असंख्यावर्षों भाग रखकर परस्परमें गुणा करनेपर
इच्छित राशि पत्य आदि उत्पन्न होती है ॥४२०॥
वेयराशिके अर्धच्छेदोंका भाग लोकराशिके अर्धच्छेदोंमें देनेपर जो प्रमाण आवे

अनंतरं तिर्यग्मनुष्यगतिगच्छोऽवधि विषयशेऽत्रं पेक्ष्यम् ।

तिरिए अवरं ओघो तेजालवे (तेजोयंते) होदि उक्तासः ।

मणुए ओघं देवे जहाकमं गुणुह बोच्छामि ॥४२५॥

तिर्यग्मनुष्यवरमोघः तेजोऽवलंवे च भवत्युत्कृष्टं । मनुजे ओघः देवे यथाक्रमं श्रुणु
५ वक्ष्यामि ॥

तिर्यग्गतिय तिर्यग्चरोऽज्ञ देशावधिज्ञान जघन्यमश्नुः । मेले तेजः शरीरपर्यन्तं सामान्योक्त
द्रव्यक्षेत्रकालभावगच्छुत्कृष्टविदमल्लिपर्यन्तं विषयमप्नुयु ।

मनुजरोऽज्ञ देशावधिजघन्यं मोदलोऽहु सध्याविधिज्ञानपर्यन्तं सामान्योक्तसर्व्यमुमप्नुयु ।
देवगतिपोऽज्ञ वेद्यककल्ये यथाक्रमविदं पेक्ष्यं केऽहः —

१० पणुवीसजोयणाइ दिवसंतं च म कुमारमोम्माणं ।

संखेज्जगुणं खेचं बहुगं कालं तु जोइसिमे ॥४२६॥

पंचविंशतिर्योजनानि दिवसस्यांतश्च कुमारभौमानां । संखेयगुणं क्षेत्रं बहुकःकालस्तु
ज्योतिष्के ॥

१५ भावनरोऽज्ञ पर्यंतरोऽज्ञ जघन्यविदमिप्पत्तंहु योजनंगच्छुमोऽहु दिनदोऽज्ञे विषयमश्नुः ।
ज्योतिष्करोऽज्ञ भवनवासिध्वंतररगच्छ जघन्यविषयसंज्ञं नोडलु संख्यातगुणितं क्षेत्रमश्नुः बहु
कालमवकुः ।

नरके योजनं संपूर्णं भवति ॥४२४॥ अथ तिर्यग्मनुष्यगत्याह—

तिर्यग्जोदे देशावधिज्ञानं जघन्यादारम्य उत्कृष्टतः तेजःशरीरविषयविकल्पपर्यन्तमेव सामान्योक्तसर्व
व्यादिविषयं भवति । मनुजे देशावधिजघन्यादारम्य सर्वावधिज्ञानपर्यन्तं सामान्योक्तं सर्वं भवति ॥४२५॥

२० देवगती यथाक्रमं वक्ष्यामि श्रुणुत—

भावनग्यन्तरयोजनग्येन पञ्चविंशतिर्योजनानि किंचिदूनदिवसाश्च विषयो भवति । ज्योतिष्के क्षेत्रं तपः
संख्यातगुणं, कालस्तु बहुकः ॥४२६॥

पृथिवीमें आधा-आधा कोस बदता जाता है । इस तरह प्रथम नरकमें सम्पूर्ण योजन
क्षेत्र होता है ॥४२४॥

२५ अथ तिर्यग्गति और मनुष्यगतिमें कहते हैं—

तिर्यग्पञ्चजीयमें देशावधिज्ञान जघन्यसे लेकर उत्कृष्टसे तेजसशरीर जिस भेदका विषय
है उस भेद पर्यन्त होता है । सामान्य अवधिज्ञानके वर्णनमें यहाँ तक द्रव्यादि विषय जो
कहे हैं वे सय होते हैं । मनुष्यमें देशावधिके जघन्यसे लेकर सर्वावधिज्ञान पर्यन्त जो
सामान्य कथन किया है वह सय होता है । आगे यथाक्रम देवगति में कहेंगा । उसे
३० सुनो ॥४२५॥

अथ देवगतिमें कहते हैं—

भवनवासी और ग्यन्तरोंमें अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्र जघन्यसे पचीस योजन
है और काल कुछ कम एक दिन है । तथा ज्योतिषी देवोंमें क्षेत्र तो इससे संख्यातगुणा है
और काल बहुत है ॥४२६॥

जघन्य	जघन्य	उ	उ
भवनव्यंतर	जोमिति	अगुर	म ९। ४०। जो
यो २१	२५१	को ०	१०००। ०
वि १	बहुकाल	य ०	य ०
			१

सक्कीसाणा पढमं विदियं तु सणक्कुमारमाहिंदा ।
तदियं तु बम्ह लांतव सुक्कसहस्सारया तुरियं ॥४३०॥

५ तुप्या ॥ शक्रेशानो प्रथमां द्वितीयां तु सनत्कुमारमाहेन्द्रो । तृतीयां तु ब्रह्मलांतयो शुकसाहस्यारजो
सौधर्मेशानकल्पजगत् प्रथमपृथ्वीपर्यन्तं काण्वर । सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पसंभूतव तु मते
द्वितीयपृथ्वीपर्यन्तं काण्वर । ब्रह्मलांतयकल्पजगत् तृतीयपृथ्वीपर्यन्तं काण्वर । शुकसाहस्यारजो
चतुर्थपृथ्वीपर्यन्तं काण्वर ।

१० आणदपाणदवाती आरण तह अञ्चुदा य पस्संति ।
पंचमस्तिदिपेरंतं छट्ठिं भवेज्जगा देवा ॥४३१॥

आनतप्राणतवासिनः आरणास्तयाऽन्युताश्च पर्यन्ति पंचमशितिपर्यन्तं पट्ठिं प्रैवेयका देवाः ॥
आनतप्राणतवासिगण्ड आरणाभ्युतकल्पजगमते पंचमशितिपर्यन्तं काण्वर । नवप्रैवेयकवह
मिन्द्र पष्ठपृथ्वीपर्यन्तं काण्वर ।

१५ सज्वं च लोयनालिं पस्संति अणुचरेसु जे देवा ।
सक्खेत्ते य सक्कमे रुवगदमणंतभागं च ॥४३२॥

तथा च लोकनाडी पर्यन्त्यनुत्तरेषु ये देवाः । त्वक्षेत्रे त्वकर्मणि रूपगतमनंतभागं च ॥

स्वकीयावस्थितस्यानाहुर्नर शुरगिरिशित्तरपर्यन्तं अवधिदर्शनेन पश्यन्ति ॥४३३॥
सौधर्मेशानजाः प्रथमपृथ्वीपर्यन्तं पश्यन्ति । सनत्कुमारमाहेन्द्रजाः पुनर्द्वितीयपृथ्वीपर्यन्तं पश्यन्ति ।
ब्रह्मलान्तवज्रास्तृतीयपृथ्वीपर्यन्तं पश्यन्ति । शुकसाहस्यारजाः चतुर्थपृथ्वीपर्यन्तं पश्यन्ति ॥४३४॥

२० आनतप्राणतवासिनः तथा आरणाभ्युतवासिनश्च पञ्चमपृथ्वीपर्यन्तं पश्यन्ति, नवप्रैवेयका देवाः
पष्ठपृथ्वीपर्यन्तं पश्यन्ति ॥४३५॥

शित्तरपर्यन्तं अधिदर्शनके द्वारा देखते हैं ॥४३६॥

सौधर्म और पेशान स्वर्गके देव अधिज्ञानके द्वारा प्रथम नरक पृथ्वीपर्यन्त देखते
हैं । सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गके देव दूसरी पृथ्वीपर्यन्त देखते हैं । ब्रह्म ब्रह्मोत्तर और
लान्तव-आपिष्ठ स्वर्गके देव तीसरी पृथ्वीपर्यन्त देखते हैं । शुक-महाशुक और शता-
सहस्रार स्वर्गके देव चतुर्थ पृथ्वीपर्यन्त देखते हैं ॥४३७॥
आनत-प्राणत तथा आरण-अन्युत स्वर्गके वासी देव पाँचवी पृथ्वीपर्यन्त देखते हैं
तथा नौ प्रैवेयको देव छठी पृथ्वीपर्यन्त देखते हैं ॥४३८॥

स्वविषयभेदगोचरं ओं बु प्रदेष्टुं तैगबोम्मे ध्रुवहारदिवं भागिमुत्तु । स्वस्वावधिपियपक्षेत्र-
प्रदेशप्रमाणं परिसमाप्तिपक्षुमेन्नेवरमन्नेयरं ध्रुवहारदिवं द्वय्यमं भागिमुत्तु भागिमुत्तिरलु तत्र-
तन वरमरं तं तत्रतनायधितानविषयद्वयप्रमाणमवहुं । स्वस्वावधिपियक्षेत्रप्रदेशप्रचयप्रमितं ध्रुवहा-
रं गतिरं स्वस्वावधितानावरणद्वय्यं विषयोपचयमं भागिमुत्तिरलु स्वस्वावधितानविषयद्वय्यमवहु-
मेपुत्तु तात्पर्यार्थं ।

गोहम्मोसाणाणमसंखेज्जा ओ हु वस्सकोडीओ ।

उपरिमकप्पचउक्के पन्तासंखेज्जप्रागो दु ॥४३५॥

सौधर्मज्ञानानां असंख्येया तलु वयं कोट्यः । उपरितनकल्पचतुष्टये पद्यासंख्यातभागस्तु ।

ततो लातवकप्पप्पहुडी सच्चट्टसिद्धिपेरंतं ।

किंचूणपन्तमेधं कालप्रमाणं जहाजोगं ॥४३६॥

ततो लातवकल्पप्रभृति सख्यांति सिद्धिपर्वतं । किंचिदूनपत्त्यप्रमाणं कालप्रमाणं यथायोग्यं ।

सौधर्मज्ञानकल्पग्रन्थविधितानविषयकालमसंख्यात वयं कोटिगण्युत्तु । वयं को ३ । तलु
स्फुटभाषि । तु मत्ते उपरितनकल्पचतुष्टये सनत्कुमार-माहेह-महा-महोत्तर-कल्पचतुष्टयवासिदेव-
ककळेणे कालं यथायोग्यमप्यस्यासंख्यातभागमात्रमवहु ५ मेगे लातवकल्पं मोदल्लो हु सख्यांति-

तिद्धिपर्वतं कल्पग्रन्थं कथातोतवगं कालं यथायोग्यमप्य किंचिदूनपत्त्यप्रमाणमवहुं ।

दीने एकप्रदेसनधीव इवमेकवारं ध्रुवहारेण भवेत् यावत्स्वस्वावधिभेदप्रदेशप्रमाणं परिसमाप्यते तारत् ।
तत्रतनवरमरं तत्रतनायधितानविषयद्वयप्रमाणं नवति । स्वस्वावधिपियक्षेत्रप्रदेशप्रचयप्रमितं ध्रुवहारमवहुं
विशिरसोपचयस्वस्वावधितानावरणद्वय्यं स्वस्वावधिपियक्षेत्रप्रदेशप्रचयप्रमितं ॥४३३-४३४॥

सौधर्मज्ञानानामवधिपियक्षेत्रः वयं स्यात्वरं कोट्यः तलु वयं को ३ । तु-पूना, उपरितनकल्पचतुष्टय-

और प्रदेशोंमें एक कम कर दें । इस तरह वषट्क भाग दें जयवक सव प्रदेश समाप्त हों । २०

अन्तिम भाग देनेपर जो सूक्ष्म पुद्गलरूपध रोप रहे तबने प्रमाण पुद्गलरूपधको
सौधर्म ज्ञान स्वर्गका देव जानना है । इसी प्रकार सानत्कुमार माहेन्द्र स्वर्गके देवोंके घन-
रूप चार राजू प्रमाण क्षेत्रके प्रदेशोंका जितना प्रमाण है तबनी चार उनके अवधितानावरण

द्रव्यमें ध्रुवहारका भाग देते-देते जो प्रमाण रहे तबने परमाणुओंके रूपधको वनका अवधि-
ज्ञान जानना है । ब्रह्म-महोत्तर स्वर्गके देवोंके साढ़े पाँच राजू, छान्तव-कापिष्ठवालोंके छह
राजू, मुरु-महाशुकवालोंके साढ़े सात राजू, सनार-सहस्रारवालोंके आठ राजू, आनत-

प्रागववालोंके साढ़े नौ राजू, आरण-अच्युतवालोंके दस राजू, प्रवेयकवालोंके ग्यारह राजू,
अनदिशवालोंके छठ अधिक वेरह राजू, अन्तर विमानवालोंके कुछ कम चौदह राज क्षेत्र-

पेठलपट्टदुडु । नरलोके तदुत्पत्तिप्रवृत्तिगच्छेदं मनुष्यक्षेत्रदोष्येयम् । मनुष्यक्षेत्रविषं पोरगे मनःपर्य-
यज्ञानवकुत्पत्तियं प्रवृत्तिमुमिल्लं बुवत्तं ।

परकीयमनसि व्यवस्थितोऽर्थः मन इत्युच्यते । मनः पर्येति गच्छति जानातीति मनः
पर्ययः एवितु परमनोगतार्थग्राहकं मनःपर्ययज्ञानमवकुमा परमनोगतार्थं चित्तितमचित्तितमद्वै-
चित्तितम दितनेरुभेदमप्युदवं मनुष्यक्षेत्रदोष्येयं मनःपर्ययज्ञानमरिगुमे बुवं तात्पर्यं ।

मणपञ्चवं च दुविहं उजुविउलमदिति उजुमदी तिविहा ।

उजु मणवयणे काये गदत्यविसयचि णियमेण ॥४३९॥

मनः पर्ययश्च द्विविधः श्रुजुविपुलमती इति । श्रुजुमतिस्त्रिविधः श्रुजु मनोवचने काये
गतात्वंविषय इति नियमेन ।

सामान्यविषं मनःपर्ययज्ञानमोडु अवं भेदिसिद्धोड श्रुजुमतिमनःपर्ययमेडु विपुलमति- १०
मनःपर्ययमदितु मनःपर्ययज्ञानं द्विविधमवकु- । मल्लि श्रुजु श्रुजुकायवाचनमनःकृतार्थस्य
परकीयमनोगतस्य विज्ञानान्निर्व्वर्त्तता निष्पन्ना मतिर्यस्य सः श्रुजुमतिः ॥ चासी मनः-
पर्ययश्च श्रुजुमतिमनःपर्ययः । विपुला कायवाग्मनःकृतार्थस्य परकीयमनोगतस्य विज्ञाना
निर्व्वर्त्तताऽनिर्व्वर्त्तता कुटिला च मतिर्यस्य सः विपुलमतिः । स चासी मनःपर्ययश्च
विपुलमतिमनःपर्ययः । एवितु निरुक्तिसिद्धं गच्छन्वुबल्लि श्रुजुश्च विपुला च श्रुजु १५
विपुले । ते मती ययोस्ती श्रुजुविपुलमती । श्रुजुमनोगतार्थविषयमनःपर्ययमेडु श्रुजुवचन-
गतात्वंविषयमनःपर्ययमेडु श्रुजुकायगतात्वंविषयमनःपर्ययमुमेडु श्रुजुमतिमनःपर्ययं नियम-

मनुष्यक्षेत्र एव न तद्विहः । परकीयमनसि व्यवस्थितोऽर्थः मनः तत् पर्येति गच्छति जानातीति मनः-
पर्ययः ॥४३९८॥

स मनःपर्ययः सामान्येनकोपि भेदविवक्षया श्रुजुमतिमनःपर्ययः विपुलमतिमनःपर्ययश्चेति द्विविधः ।
तत्र श्रुजु-श्रुजुकायवाग्मनःकृतार्थस्य—परकीयमनोगतस्य विज्ञानान्निर्व्वर्त्तता-निष्पन्ना मतिर्यस्य स श्रुजुमतिः स २०
चासी मनःपर्ययश्च श्रुजुमतिमनःपर्ययः । विपुला कायवाग्मनःकृतार्थस्य—परकीयमनोगतस्य विज्ञानान्निर्व्वर्त्तता
निर्व्वर्त्तता कुटिला च मतिर्यस्य स विपुलमतिः स चासी मनःपर्ययश्च विपुलमतिमनःपर्ययः । अथवा श्रुजुवच
विपुला च श्रुजुविपुले ते मती ययोस्ती श्रुजुविपुलमती तौ च तौ मनःपर्ययो च श्रुजुविपुलमतिमनःपर्ययो ।
तत्र श्रुजुमतिमनःपर्ययः श्रुजुमनोगतार्थविषयः, श्रुजुवचनगतात्वंविषयः, श्रुजुकायवतार्थविषयश्चेति नियमेन

का जो अर्थ दूसरेके मनमें स्थित है, उसको जो ज्ञान जानता है वह मनःपर्यय कहत जात २५
है । दूसरेके मनमें स्थित अर्थ मन हुआ, उसे जो जानता है वह मनःपर्यय है । इस ज्ञानकी
वृत्ति और प्रवृत्ति मनुष्यक्षेत्रमें ही होती है, उसके बाहर नहीं ॥४३९८॥

वह मनःपर्यय सामान्यसे एक होनेपर भी भेदविश्लेषसे श्रुजुमतिमनःपर्यय विपुल-
मतिमनःपर्यय इस तरह दो प्रकार है । सरल काय, वचन और मनके द्वारा किया गया जो
अर्थ दूसरेके मनमें स्थित है उसको जाननेसे निष्पन्न हुई मति जिसकी है वह श्रुजुमति है ३०
और श्रुजुमति और मनःपर्यय श्रुजुमतिमनःपर्यय है । तथा सरल अथवा कुटिल काय-
वचन-मनके द्वारा किया गया जो अर्थ दूसरेके मनमें स्थित है उसको जाननेसे निष्पन्न या
अनिष्पन्न मति जिसकी है वह विपुलमति है । विपुलमति और मनःपर्यय विपुलमति मनः-
पर्यय है । अथवा श्रुजु और विपुला मति जिनकी है वे श्रुजुमति, विपुलमति मनःपर्यय
हैं । श्रुजुमतिमनःपर्यय नियमसे तीन प्रकारका है—सरल मनके द्वारा चिन्तित मनोगत ३५

पेक्ष्यदृष्टुं । नरलोके तदुत्पत्तिप्रवृत्तिपरिहृं मनुष्यश्रेयश्रेयः । मनुष्यश्रेयविं वोरणे मनःपर्य-
यज्ञानरुत्पत्तियुं प्रवृत्तिमुत्पत्तिं युवतः ।

परकोयमनसि ध्यवस्थितोऽर्थः मन इत्युच्यते । मनः पर्येति गच्छति जानातीति मनः
पर्ययः एवितु परमनोगतात्पर्यं प्राहूँ मनःपर्ययज्ञानमरकुमा परमनोगतात्पर्यं चितितमचितितमर्त-
चितितम रितनेरुभेदमप्युपदं मनुष्यश्रेयश्रेयः मनःपर्ययज्ञानमरिगुमेनुं तात्पर्यं ।

मणपञ्चयं च दुविहं उजुविउलमदिचि उनुमदी तिविहा ।

उजु मणपयणे काये गदह्यविसयचि णियमेण ॥४३९॥

मनः पर्ययश्च द्विविधः श्रुजुविपुलमती इति । श्रुजुमतिरिविधः श्रुजु मनोयधने काये
गतात्पर्यवियय इति नियमेन ।

सामान्यविहं मनःपर्ययज्ञानमोनुं अवं भेदिविहोड श्रुजुमतिमनःपर्ययमेनुं विपुलमति- १०
मनःपर्ययमदितु मनःपर्ययज्ञानं द्विविधमकु- । मत्सि श्रुजु श्रुजुकायशरामनरुतात्पर्यस्य
परकोयमनोगतस्य विज्ञानान्निध्यासिता निष्पन्ना मतिपर्ययस्य सः श्रुजुमतिः स चासी मनः-
पर्ययश्च श्रुजुमतिमनःपर्ययः । विपुला कायवाग्मनरुतात्पर्यस्य परकोयमनोगतस्य विज्ञाना
निर्गुसिताग्निर्यसिता कुटिला च मतिपर्ययस्य सः विपुलमतिः । ॥ चासी मनःपर्ययश्च
विपुलमतिमनःपर्ययः । एवितु निरुक्तिसिंहगच्छपुवत्सि श्रुजुश्च विपुला च श्रुजु १५
विपुले । ते मती ययोस्ती श्रुजुविपुलमती । श्रुजुमनोगतात्पर्यविययमनःपर्ययमेनुं श्रुजुवचन-
गतात्पर्यविययमनःपर्ययमेनुं श्रुजुकायगतात्पर्यविययमनःपर्ययमेनुं श्रुजुमतिमनःपर्ययं नियम-

मनुष्यश्रेय एव न उद्विहः । परकीयमनसि ध्यावस्थितोऽर्थः मनः ता पर्येति गच्छति जानातीति मनः-
पर्ययः ॥४३८॥

स मनःपर्ययः सामान्यैर्नकोऽपि भेदविहताया श्रुजुमतिमनःपर्ययः विपुलमतिमनःपर्ययश्चेति द्विविधः ।
एव श्रुजु-श्रुजुकायवाग्मनःरुतात्पर्यस्य परकोयमनोगतस्य विज्ञानान्निध्यासिता निष्पन्ना मतिपर्ययस्य स श्रुजुमतिः स २०
चासी मनःपर्ययश्च श्रुजुमतिमनःपर्ययः । विपुला कायवाग्मनरुतात्पर्यस्य परकोयमनोगतस्य विज्ञानान्निध्यासिता
निर्गुसिताग्निर्यसिता कुटिला च मतिपर्ययस्य स विपुलमतिः स चासी मनःपर्ययश्च विपुलमतिमनःपर्ययः । अथवा श्रुजुश्च
विपुला च श्रुजुविपुले ते मती ययोस्ती श्रुजुविपुलमती एव च ती मनःपर्ययश्च श्रुजुविपुलमतिमनःपर्ययः ।
एव श्रुजुमतिमनःपर्ययः श्रुजुमनोगतात्पर्यविययः, श्रुजुवचनगतात्पर्यविययः, श्रुजुकायगतात्पर्यविययश्चेति नियमेन

का जो अर्थ दूसरेके मनमें स्थित है, उसको जो ज्ञान जानता है वह मनःपर्यय कहा जाता २५
है । दूसरेके मनमें स्थित अर्थ नन हुआ, उसे जो जानता है वह मनःपर्यय है । इस ज्ञानकी
वृत्ति और प्रवृत्ति मनुष्यश्रेयमें ही होती है, उसके बाहर नहीं ॥४३८॥

वह मनःपर्यय सामान्यसे एक होनेपर भी भेदविहतासे श्रुजुमतिमनःपर्यय विपुल-
मतिमनःपर्यय इस तरह दो प्रकार है । सरल काय, वचन और मनके द्वारा किया गया जो
अर्थ दूसरेके मनमें स्थित है उसको जाननेसे निष्पन्न हुई मति जिसकी है वह श्रुजुमति है ३०
और श्रुजुमति और मनःपर्यय श्रुजुमतिमनःपर्यय है । तथा सरल अथवा कुटिल काय-
वचन-मनके द्वारा किया गया जो अर्थ दूसरेके मनमें स्थित है उसको जाननेसे निष्पन्न या
अनिष्पन्न मति जिसकी है वह विपुलमति है । विपुलमति और मनःपर्यय विपुलमति मनः-
पर्यय है । अथवा श्रुजु और विपुला मति जिनकी है वे श्रुजुमति, विपुलमति मनःपर्यय
हैं । श्रुजुमतिमनःपर्यय नियमसे तीन प्रकारका है—सरल मनके द्वारा चिन्तित मनोगत ३५

दोहं घेसगोळदिहोडि विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानमरिगुमे वितितिलियं शब्दगतात्तरं गच्छुमत्यंगतात्तरं गच्छु-
मेदितु द्विमकारांगळपुत्रु ।

तियकालविसयरूवि चिंतितं बद्धमाणजीवेण ।

उजुमदिणाणं जाणदि भूदभविस्सं च विउलमदी ॥४४१॥

त्रिकालविषयपरिणं चित्त्यमानं वर्तमानजीवेन । शृजुमतिज्ञानं जानाति भूतभविष्यंतौ च ५
विपुलमतिः ।

त्रिकालविषयपुद्गलद्रव्यं वर्तमानजीवेन चित्तिसत्पटुतिवर्तुं शृजुमतिमनःपर्ययज्ञान-
मरिगुं । भूतभविष्यवर्तमानकालविषयंगच्छप्य चित्तितमं चिन्तयिष्यमाणं चित्त्यमानं विपुलमतिः
मनःपर्ययज्ञानमरिगुं ॥

सब्बंगअंगसंभवचिण्हादुप्पज्जदे जहा ओही ।

मणपज्जवं च दब्बमणादो उप्पज्जदे णियमा ॥४४२॥

सर्वांगान्तंभवचिह्नादुत्पद्यते यथावधिः । मनःपर्ययश्च द्रव्यमनसः उत्पद्यते नियमात् ॥

सर्वांगबोळमंगसंभवदांखाविशुभचिह्णं गळोळं यथा येंसोगळवधिज्ञानं पुट्टुगुमंतं मनःपर्य-
यज्ञानं द्रव्यमनसिदं पुट्टुगुं नियमदिदं । नियमज्ञानं द्रव्यमनबोळल्लवे मत्तल्लियुमंगप्रवेद्यबोळु
मनःपर्ययं पुट्टुवैद्यवारणात्पमक्कुं ॥

हिदि होदि हु दब्बमणं वियसिय अट्टच्छदारविंदं वा ।

अंगोवंगुदयादो मणवगणखंदो णियमा ॥४४३॥

हृदि भवति क्षलु द्रव्यमनो विकसिताष्टच्छदारबिन्दवत् । अंगोपांगोदयात् मनोवर्णा-
स्कन्धतो नियमात् ॥

त्रिकालविषयपदार्थान् चित्तितवान् वा उक्तान् वा कृतवान् विस्मृत्य कालान्तरेण स्मर्तुमशक्तः भाग्य २०
पुच्छति वा तूष्णीं तिष्ठति तथा विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानं जानाति ॥४४०॥

त्रिकालविषयपुद्गलद्रव्यं वर्तमानजीवेन चित्त्यमानं शृजुमतिमनःपर्ययज्ञानं जानाति । भूतभविष्यवर्त-
मानकालविषयं चिन्तितं चिन्तयिष्यमाणं चित्त्यमानं च विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानं जानाति ॥४४१॥

सर्वाङ्गे अङ्गसंभवचिह्नादिशुभचिह्ने च यथा अवधिज्ञानमुत्पद्यते तथा मनःपर्ययज्ञानं द्रव्यमनसि
एवोत्पद्यते नियमैर्नाम्यत्राङ्गप्रवेष्टेपु ॥४४२॥

कायसे किये गये त्रिकालवर्ती पदार्थोंको विचार किया कहा या शरीरसे किया । पीछे भूल
गया और समय धीतनेपर स्मरण नहीं कर सका । आकर पूछता है या चुप बैठता है तब
विपुलमति मनः पर्ययज्ञानी जानता है ॥४४०॥

त्रिकालवर्ती पुद्गल द्रव्य वर्तमान जीवके द्वारा चिन्तनवन किया गया हो तो उसे
शृजुमति मनःपर्ययज्ञान जानता है । और त्रिकालवर्ती पुद्गलद्रव्य भूतकालमें चिन्तन ३०
किया गया हो, भविष्यत् कालमें चिन्तन किया जानेवाला हो या वर्तमानमें चिन्तन
किया जाता हो तो उसे विपुलमतिमनःपर्ययज्ञान जानता है ॥४४१॥

जैसे भवप्रत्यय अवधिज्ञान सर्वांगसे उत्पन्न होता है और गुणप्रत्यय अवधिज्ञान
शरीरमें प्रकट हुए शब्द आदि शुभ चिह्नोंसे उत्पन्न होता है वैसे ही मनःपर्ययज्ञान द्रव्यमनसे
ही उत्पन्न होता है ऐसा नियम है, शरीरके अन्य प्रवेष्टोंमें उत्पन्न नहीं होता ॥४४२॥ ३५

स्पर्शनारोहिवर्गममं नोद्विष्यमुमं मनोवचनकपययोगमूर्तेरिव तन्न परंर संबंधिगजमन-
पेक्षितये श्रुजुमतिमनःपर्वयज्ञानं संननिमुगुं । तु मत्ते इन्द्रियनोद्विष्ययोगादिगजं स्वपरसंबंधि-
गजमनोक्षितये विपुलमतिमनःपर्वयज्ञानं धधुरिद्विष्यभोगजं तु रसादिगजं परिहृरिति रूपमोदने
परिच्छेदिसुगुमते मनःपर्वयज्ञानमं भवविषयाद्योयानंतपम्यार्यगजं परिहृरिति आयुवोदु कारण-
दिवं भयसंतिताद्विद्विष्यजनपम्यार्यगजं, परिच्छेदिसुगुमनु, कारणदिवंमिद्वयधितानवते नियमादिवं
संननिमुगुं ।

पडिवादी पुण पदमा अपडिवादी दु होदि चिदिपा दु ।

गुदो पदमो वोहो गुदतरो चिदिपयोहो दु ॥४४७॥

प्रतिपातो पुनः प्रपमोप्रतिपातो यलु भवति द्वितीयः । गुदः प्रपमो बोपः गुदतरो द्वितीय-
बोपस्तु ॥

प्रथमः मोदल श्रुजुमतिमनःपम्यार्यं प्रतिपातो प्रतिपातिपरहुं । प्रतिपतनं प्रतिपातः
उपमातकपायमे चारिप्रमोहोद्वेकदिवं प्रच्युतधंदमदिपरये प्रतिपातमवहुं । शोणकपायमे प्रतिपात-
कारणाभावदिवं अप्रतिपातमवहुं । तदपेक्षोदिवं प्रतिपातोप्रयासतोति प्रतिपातो । पुनः मत्ते
द्वितीयः विपुलमतिमनःपम्यार्यं अप्रतिपातो यलु प्रतिपातरहितमवहुं । न प्रतिपातो अप्रतिपातो ।
गुदः प्रपमो बोपः मोदल श्रुजुमतिमनःपम्यार्यं विगुदबोपमवहुं । प्रतिपशकम्यार्ययोपायममंदागुतिरलु
आरमन प्रसावमं विगुदिये बुदु । तदस्यासतोति विगुदः गुदतरो द्वितीयबोपस्तु । तु मत्ते अतिशय-
दिवं विगुदमवहुं विपुलमतिमनःपम्यार्यं ।

परमणसिद्विषयमद्वं इहामदिना उजुद्वियं लद्विष ।

पच्छा पच्छकखेण य उजुमदिना जाणदे णियमा ॥४४८॥

परमनसि स्थितमर्यं इहामाया श्रुजुसिपते लम्या । पदचातप्रत्यक्षेण च श्रुजुमतिना
जानीते नियमाव् ॥

श्रुजुमतिमनःपम्यार्यः स्पर्शनारोहिवर्गममं नोद्विष्यमं मनोवचनकपययोगादिवं स्वपरसंबंधिगजमनोक्षितये
विपुलमतिमनःपम्यार्यस्तु नपदिज्ञानमिव साननोक्षैवोत्पद्यते नियमेन ॥४४९॥

प्रथमः श्रुजुमतिमनःपम्यार्यः प्रतिपातो भवति । धीणकपायस्याप्यप्रतिपातेरपि, उपमानकपायस्य
चारित्र्यमोहोद्वेकात्तमवाव् । पुनः द्वितीयो विपुलमतिमनःपम्यार्यः अप्रतिपातो यलु । श्रुजुमतिमनःपम्यार्यो
विगुदः, प्रतिपशकम्यार्ययोपमं यति आरमप्रसादरूपविगुदः सभवाव् । तु पुनः विपुलमतिमनःपम्यार्यः अतिशयेन
विगुदो भवति ॥४५०॥

श्रुजुमतिमनःपम्यार्यं अपने और अन्य जीवोंकी स्पर्शन आवि इन्द्रियों, मन, और मन-
वचन-काय योगोंकी अपेक्षासे ही उत्पन्न होता है । और विपुलमतिमनःपम्यार्य अवधिज्ञानकी
वरह उनकी अपेक्षासे बिना ही उत्पन्न होता है ॥४४६॥

प्रथम श्रुजुमति मनःपम्यार्य प्रतिपातो होता है । जो श्रुजुमति मनःपम्यार्यज्ञानी क्षपक-
श्रेणीपर आरोहण करके क्षीणकपाय हो जाता है यद्यपि वह वहाँसे गिरता नहीं है किन्तु जो
क्षपम श्रेणीपर आरोहण करके उपज्ञान्त कपाय नामक ग्यारहवें गुणस्थानचर्चा होता है,
चारित्र्यमोहका चक्रे हानिसे उसका प्रतिपात होता है । किन्तु दूसरा विपुलमतिमनःपम्यार्य
अप्रतिपातो है । श्रुजुमति मनःपम्यार्य विगुद है क्योंकि प्रतिपक्षी कर्मका क्षयोपशम होनेपर

अवरं दन्वमुरालियसरीरणिज्जिण्णसमयप्रबद्धं तु ।

चञ्चिदुदियणिज्जिण्णं उक्कस्सं उजुमदिस्स हवे ॥४५१॥

अवरं द्रव्यमौदारिकशरीरनिर्जीर्णसमयप्रबद्धस्तु । चञ्चुरिद्वयनिर्जीर्णमुत्कृष्टं श्रु-
मते भवेत् ।

श्रुमतिमनःपर्ययज्ञानशक्ते विषयमप्य जघन्यद्रव्यमौदारिकशरीरनिर्जीर्णसमयप्रबद्ध ५

मक्कुं । स ० १६ ख । तु मते । उत्कृष्टं द्रव्यं चञ्चुरिद्वयनिर्जीर्णद्रव्यमक्कुं । अवर
प्रमाणमेनिते बोधे प्रैराशिकविषे सपितत्पङ्गुं ।

आ प्रैराशिकविधानमेनितेबोधे संख्यातयनागुलप्रमितमौदारिकशरीरायगाहनप्रवेशगच्छो-
त्समेत्तलानुं सविस्ससोपचयोदारिकशरीरसमयप्रबद्धगच्छोत्समेत्तलानुं सविस्ससोपचयोदारिक-
शरीरसमयप्रबद्धगच्छेपिमुपागच्छु चञ्चुरिद्वयाम्यन्तरनिःसृतिप्रवेशप्रचयमनितरोळिमितु द्रव्यगच्छेपिमु- १०

गुमेदितु प्रैराशिकम माडि प्र ६ । १ । फ स ० १६ ख ६ ६ प आद्यंतगहर्षं प्रैराशिकं

५ १ १ ० ५

० ०

मध्यम नाम फलं भवेत् एतु बंध लप्यं चञ्चुरिद्वयनिर्जीर्णद्रव्यमितु श्रुमतिमनःपर्ययक्कुरकृष्ट-

द्रव्यमक्कुं स ० १६ ख ६ ६ प

६ । १ ५ १ १ ५

तत्र श्रुमतिमनःपर्ययः जघन्यद्रव्यं औदारिकशरीरनिर्जीर्णसमयप्रबद्धं जानाति स ० १६ ख । तु-युगः,
उत्कृष्टद्रव्यं चञ्चुरिद्वयनिर्जीर्णमात्रं जानाति । दारिकम् ? औदारिकशरीरायगाहने संख्यातयनागुले सविस्ससोप-
चयोदारिकशरीरसमयप्रबद्धो गच्छति तदा चञ्चुरिद्वयाम्यन्तरनिःसृतिप्रवेशप्रचये कियदिति प्रैराशिकेन १५

प्र ६ । १ । फ स ० १६ ख । ६ ६ प लप्यमात्रं भवति-स ० १६ ख । ६ । ५ । ४५१॥

५ १ १ ५

० ०

६ १ ५ १ १ ५

० ०

श्रुमतिमनःपर्यय औदारिक शरीरके निर्जीर्ण समय प्रबद्धरूप जघन्य द्रव्यको
जानवा हे और उत्कृष्टद्रव्यके रूपमें पक्ष इन्द्रियके निर्जीर्णद्रव्यको जानवा है । वह कितना है
सो कहते हैं—औदारिक शरीरकी अवगाहना संख्यात यनागुल है । उसके विस्ससोपचय
सहित औदारिक शरीरके समय प्रबद्ध परमाणुओंकी निर्जरा होती है । तब पक्ष इन्द्रियकी
अध्यन्तर निर्वृत्तिके प्रदेश प्रचयमें कितनी निर्जरा हुई, ऐसा प्रैराशिक करनेपर जितना १०
परिमाण आवे उतने परमाणुओंके स्कन्धको श्रुमति उत्कृष्ट रूपसे जानवा है ॥४५१॥

अवरं दन्वमुरालिपसरीरणिज्जिण्णसमयवद्धं तु ।

चन्निखुदिपणिज्जिण्णं उक्कस्सं उजुमदिस्स हवे ॥४५१॥

अवरं द्रव्यमौदारिकशरीरनिर्जोर्णसमयप्रबद्धस्तु । चक्षुरिन्द्रियनिर्जोर्णमुत्कृष्टं श्रु-
मते भवेत् ।

श्रुजुमतिमनःपर्ययज्ञानकके विषयमप्य जघन्यद्रव्यमौदारिकशरीरनिर्जोर्णसमयप्रबद्ध ५

मरुत्तुं । स ० १६ ख । तु मते । उत्कृष्टं द्रव्यं चक्षुरिन्द्रियनिर्जोर्णद्रव्यमरुत्तुं । अवर
प्रमाणमेनिते बोधे त्रैराशिकृतिवं सपिप्तत्पङ्गुं ।

आ त्रैराशिकविधानमेनितेबोधे संख्यातधर्मागुलप्रमितमौदारिकशरीरावगाहनप्रदेशगोळे-
स्त्वमेतलानुं सविप्रसोपचयीदारिकशरीरसमयप्रबद्धगोळेस्त्वमेतलानुं सविप्रसोपचयीदारिक-
शरीरसमयप्रबद्धगोळेषुवागङ्गु चक्षुरिन्द्रियाम्बन्तरनिर्जोर्णप्रदेशप्रचयमनितरौळिनिनु द्रव्यगोळेपिमु- १०

गुमेदितु त्रैराशिकमं माडि प्र ६ । १ । क स ० १६ ख ३६ ५ आद्यंतगटसं त्रैराशिकं

५ १ १ ३ ५

० ०

मध्यम नाम कलं भवेत् एतु यं लभ्यं चक्षुरिन्द्रियनिर्जोर्णद्रव्यमिदु श्रुजुमतिमनःपर्ययक्कुरकृष्ट-

द्रव्यमरुत्तुं स ० १६ ख ६५

६ । १ ५ १ १ ५

तत्र श्रुजुमतिमनःपर्ययः जघन्यद्रव्यं औदारिकशरीरनिर्जोर्णसमयप्रबद्धं जानाति स ० १६ ख । तु-पुनः,
उत्कृष्टद्रव्यं चक्षुरिन्द्रियनिर्जोर्णमनं जानाति । तद्विषयः ? औदारिकशरीरावगाहने संख्यातधर्मागुले सविप्रसोप-
चयीदारिकशरीरसमयप्रबद्धो गलति तदा चक्षुरिन्द्रियाम्बन्तरनिर्जोर्णप्रदेशप्रचये कियदिति त्रैराशिकेन १५

प्र ६ । १ । क स ० १६ ख । ३६ ५ लभ्यमानं भवति-स ० १६ ख । ६ । ५ ॥४५१॥

०

०

५ १ १ ५

० ०

५ १ ५ १ १ ५

०

०

श्रुजुमति मनःपर्यय औदारिक शरीरके निर्जोर्ण समय प्रबद्धरूप जघन्य द्रव्यको
जानता है और उत्कृष्टद्रव्यके रूपमें चक्षु इन्द्रियके निर्जोर्णद्रव्यको जानता है । यह कितना है
सो कहते हैं—औदारिक शरीरकी अवगाहना संख्यात धर्मागुल है । उसके विष्वसोपचय
सहित औदारिक शरीरके समय प्रबद्ध परमाणुओंकी निर्जरा होती है । तब चक्षु इन्द्रियकी
अभ्यन्तर निर्धुनिके प्रदेश प्रचयमें कितनी निर्जरा हुई, ऐसा त्रैराशिक करनेपर जितना २०
परिमाण आवे उतने परमाणुओंके स्कन्धको श्रुजुमति उत्कृष्ट रूपसे जानता है ॥४५१॥

अवरं दन्वमुरालियसरीरणिज्जिण्णसमयवद्धं तु ।

चक्खिउदियणिज्जिण्णं उक्कस्सं उजुमदिस्स हवे ॥४५१॥

अवरं द्रव्यमौदारिकशरीरनिर्जीर्णसमयप्रवद्धस्तु । चक्षुरिन्द्रियनिर्जीर्णमुत्कृष्टं श्रु-
मते भवेत् ।

श्रुजुमतिमनःपर्ययज्ञानवक्त्रे विषयमप्य जघन्यद्रव्यमौदारिकशरीरनिर्जीर्णसमयप्रवद्ध ५

मवहुं । स ० १६ ख । तु मत्ते । उत्कृष्टं द्रव्यं चक्षुरिन्द्रियनिर्जीर्णद्रव्यमवहुं । अवर
प्रमाणमेतिते दोषे त्रैराशिकविदे साधितत्पङ्क्तुं ।

या त्रैराशिकविधानमेतिते दोषे संख्यातपनागुलप्रमितमौदारिकशरीरावगाहनप्रवेशगच्छो-
ल्लमेतलानुं सविस्त्रसोपचयोदारिकशरीरसमयप्रवद्धगच्छोल्लमेतलानुं सविस्त्रसोपचयोदारिक-
शरीरसमयप्रवद्धगच्छेपिसुवागच्छु चक्षुरिन्द्रियाम्यन्तरनिर्वृत्तिप्रवेशप्रचयमिति तरोळिनिनु द्रव्यगच्छेपिसु- १०

गुमेदितु त्रैराशिकं मादि प्र ६ । १ । फ स ० १६ ख ६६ प आद्यतगहशं त्रैराशिकं

प १ १ ३ प
० ०

मध्यम नाम फलं भवेत् एतु बंद लयं चक्षुरिन्द्रियनिर्जीर्णद्रव्यमिति श्रुजुमतिमनःपर्ययवक्त्रुत्कृष्ट-

द्रव्यमवहुं स ० १६ ख ६६ प

६ । १ प १ १ प

तत्र श्रुजुमतिमनःपर्ययः जघन्यद्रव्यं औदारिकशरीरनिर्जीर्णसमयप्रवद्धं जानाति स ० १६ ख । तु-पुनः,
उत्कृष्टद्रव्यं चक्षुरिन्द्रियनिर्जीर्णमात्रं जानाति । तत्किम् ? औदारिकशरीरावगाहने संख्यातपनागुले सविस्त्रसोप-
चयोदारिकशरीरसमयप्रवद्धो गच्छति तदा चक्षुरिन्द्रियाम्यन्तरनिर्वृत्तिप्रवेशप्रचये कियदिति त्रैराशिकेन १५

प्र ६ । १ । फ स ० १६ ख । ६६ प लयमानं भवति-स ० १६ ख । ६ । प ॥४५१॥

० ०
प १ १ प
० ०
६ १ प १ १ प
० ०

श्रुजुमति मनःपर्यय औदारिक शरीरके निर्जीर्ण समय प्रवद्धरूप जघन्य द्रव्यको
जानता हे धीर उत्कृष्टद्रव्यके रूपमें चक्षु इन्द्रियके निर्जीर्णद्रव्यको जानता है । वह कितना है
सो कहते हैं—औदारिक शरीरकी अवगाहना संख्यात पनागुल है । उसके विस्त्रसोपचय
सहित औदारिक शरीरके समय प्रवद्ध परमाणुओंकी निर्जरा होती है । जब चक्षु इन्द्रियकी
अभ्यन्तर निर्वृत्तिके प्रदेश प्रचयमें कितनी निर्जरा हुई, ऐसा त्रैराशिक करनेपर जितना २०
परिमाण आवे उतने परमाणुओंके स्कन्धको श्रुजुमति उत्कृष्ट रूपसे जानता है ॥४५१॥

अवरं द्रव्यमुरालियसरीरणिज्जिण्णसमयवद्धं तु ।

चत्थिखदियणिज्जिण्णं उक्कस्सं उज्जुमदिसस हवे ॥४५१॥

अवरं द्रव्यमौदारिकशरीरनिर्जोणसमयप्रबद्धस्तु । चक्षुरिन्द्रियनिर्जोणमुत्कृष्टं श्रु-
मते भवेत् ।

श्रुजुमतिमनःपर्ययज्ञानवक्त्रे विषयमप्य जघन्यद्रव्यमौदारिकशरीरनिर्जोणसमयप्रबद्ध ५

मवक्तुं । स ० १६ ख । तु मत्ते । उत्कृष्टं द्रव्यं चक्षुरिन्द्रियनिर्जोणद्रव्यमवक्तुं । अवर
प्रमाणमेतिते बोधे त्रैराशिकविषं साधितस्त्वङ्गुं ।

आ त्रैराशिकविषयानमेतितेबोधे संख्यातघनांगुलप्रमितमौदारिकशरीरावगाहनप्रदेशगळोळे
स्लमेत्तलानुं सविस्त्रसोपचयीदारिकशरीरसमयप्रयद्गळोळेस्लमेत्तलानुं सविस्त्रसोपचयीदारिक-
शरीरसमयप्रबद्धंगळेपिमुयागळु चक्षुरिन्द्रियाम्यन्तरनिर्वृत्तिप्रदेशप्रचयमितितरोळिनितु द्रव्यंगळेपिमु- १०

गुनेदितु त्रैराशिकमं मादि प्र ६११ । फ स ० १६ ख ६६ प आद्यंतगहर्षं त्रैराशिकं

प १ १ ० प
० ०

मध्यम नाम फलं भवेत् एतु यं द लभ्यं चक्षुरिन्द्रियनिर्जोणद्रव्यमितु श्रुजुमतिमनःपर्ययवक्त्रुत्कृष्ट-

द्रव्यमवक्तुं स ० १६ ख ६६ प

०
६११११११

तत्र श्रुजुमतिमनःपर्ययः जघन्यद्रव्यं औदारिकशरीरनिर्जोणसमयप्रबद्धं जानाति स ० १६ ख । तु-मुनः,
उत्कृष्टद्रव्यं चक्षुरिन्द्रियनिर्जोणमात्रं जानाति । तस्मिन् ? औदारिकशरीरावगाहने संख्यातघनाङ्गुले सविस्त्रसोप-
चयीदारिकशरीरसमयप्रबद्धो गळति तदा चक्षुरिन्द्रियाम्यन्तरनिर्वृत्तिप्रदेशप्रचये कियदिति त्रैराशिकेन १५

प्र ६१ । फ स ० १६ ख । ६६ प लभ्यमानं भवति-स ० १६ ख । ६१ प ॥४५१॥

० ०
प १ १ प
० ०
६ १ प १ १ प
० ०

श्रुजुमति मनःपर्यय औदारिक शरीरके निर्जोण समय प्रबद्धरूप जघन्य द्रव्यको
जानता है और उत्कृष्टद्रव्यके रूपमें चक्षु इन्द्रियके निर्जोणद्रव्यको जानता है । वह कितना है
सो कहते हैं—औदारिक शरीरकी अवगाहना संख्यात घनाङ्गुल है । उसके विस्त्रसोपचय
सहित औदारिक शरीरके समय प्रबद्ध परमाणुओंकी निर्जरा होती है । तब चक्षु इन्द्रियकी
अभ्यन्तर निर्वृत्तिके प्रदेश प्रचयमें कितनी निर्जरा हुई, ऐसा त्रैराशिक करनेपर जितना २०
परिमाण आवे उसने परमाणुओंके स्कन्धको श्रुजुमति उत्कृष्ट रूपसे जानता है ॥४५१॥

तच्चिदियं कल्पाणमसंखेज्जाणं च समयसंखसमं ।

ध्रुवहारेणवहरिदे होदि हु उक्कस्सयं दव्वं ॥४५४॥

तद्वितोयं कल्पाणमसंख्यातानां च समयसंख्यासमं ध्रुवहारेणापहृते भवति खलूत्कृष्टं द्रव्यं ।

तं द्वितोयं विपुलमनःपर्ययज्ञानविषयद्वितोयद्रव्यविकल्पमं असंख्यातकल्पमं च समयसंखेज्जाणं विपुलमतिमनःपर्यय- ५
ज्ञानविषयतःत्रैलोक्यद्रव्यविकल्पमश्नुं खलु स्फुटमाणि स ३ ख ख
९ क ३ ९९९

गाउयपुधचमवरं उक्कस्सं होदि जौयणपुधचं ।

विउलमदिस्स य अवरं तस्स पुधचं वरं खु णरलोयं ॥४५५॥

गम्युतिपुषस्त्वमवरमुत्कृष्टं भवति योजनपुषस्त्वं । विपुलमतेरवरं तस्य पुषस्त्वं खलु १०
नरलोकः ॥

अजुमतिमनःपर्ययज्ञानविषयजघन्यक्षेत्रं गम्युतिपुषस्त्वमेरदुमुव क्रोशंगळप्पुत्तु । क्रो २ ।
३ । मवत्तुकृष्टक्षेत्रं योजनपुषस्त्वसमाष्टयोजनप्रमाणमवक्तुं । यो ७ । ८ । विपुलमतिमनःपर्ययज्ञान
विषयजघन्यक्षेत्रं तस्य पुषस्त्वमा योजनंगळ पुषस्त्वमष्टयोजननवयोजनप्रमाणमवक्तुं । ८ । ९ ।
तदुत्कृष्टज्ञानविषयोत्कृष्टक्षेत्रं खलु स्फुटमाणि । नरलोकः मनुष्यलोकमेतितनिशु प्रमाणमवक्तुं ।

णरलोएचि य वपणं विक्खंमणिपामयं ण वट्टस्स ।

जम्हा तग्गणपदरं मणपज्जवसेत्तमुद्दिट्ठं ॥४५६॥

नरलोक इति वचनं विष्कंभनियामकं न वृत्तस्य । यस्मात्तद्वपनप्रतरं मनःपर्यायक्षेत्रमुद्दिष्टं ॥

विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानविषयतत्त्वत्रैलोक्यक्षेत्रप्रमाणबोद्धुं नरलोक इति वचनं नरलोकनेधी
शब्दं तन्मनुष्यक्षेत्रवृत्तिविष्कंभनियामकमस्तेके बोद्धुं यस्मात् आवुबोद्धुं कारणविदं तद्वपनप्रतरमा

तस्मिन् विपुलमतिविषयद्वितोयद्रव्ये असंख्यातकल्पसमयसंख्यैर्द्रुवहारैर्भवते विपुलमतिविषयं सर्वोत्कृष्ट- २०

द्रव्यं भवति— स ३ ३ ३ ख ख ॥४५४॥

९ । क ३ ९९९

अजुमतिविषयजघन्यक्षेत्रं गम्युतिपुषस्त्वं द्वित्रिकोशाः २ । ३ । उत्कृष्टं योजनपुषस्त्वं तत्तादृशयोज-
नानि ७ । ८ । विपुलमतिविषयजघन्यक्षेत्रं योजनपुषस्त्वं अष्टनवयोजनानि । ८ । ९ । उत्कृष्टं स्फुटं
नरलोकः ॥४५५॥

यद्विपुलमतिविषयोत्कृष्टक्षेत्ररूपेण नरलोक इति वचनमुत्तरं तत् तद्वृत्तिविष्कंभस्य नियामकं निश्चायकं २५

विपुलमतिके विषयभूत उक्त दूसरे द्रव्यमे असंख्यात कल्पकालके समयोक्ती संख्या
जितनी है एतनी बार ध्रुवहारसे भाग देनेपर विपुलमतिके विषयभूत सर्व उत्कृष्टद्रव्य
आता है ॥४५४॥

अजुमतिविका विषयभूत जघन्य क्षेत्र गम्युति प्रथक्त्व अर्थात् दो-तीन कोस है । और
उत्कृष्ट क्षेत्र योजन प्रथक्त्व अर्थात् साठ-आठ योजन है । विपुलमतिविका विषयभूत जघन्य ३०
क्षेत्र योजन प्रथक्त्व अर्थात् आठ-नौ योजन है और उत्कृष्टक्षेत्र मनुष्यलोक है ॥४५५॥

विपुलमतिविका विषय उत्कृष्टक्षेत्रका कथन करते हुए जो मनुष्यलोक कहा है वह

तन्त्रिदियं कप्पाणमसंखेज्जाणं च समयसंखसमं ।

ध्रुवहारेणवहरिदे होदि हु उक्कस्सयं दब्बं ॥४५४॥

तद्वितीयं कल्पानानसंख्यातानां च समयसंख्यासमं ध्रुवहारेणापहृते भवति खलूत्कृष्टं द्रव्यं ।

तं द्वितीयं विपुलमनःपर्ययज्ञानविषयद्वितीयद्रव्यविकल्पमं अतस्स्यात्कल्पंगळ समयंगळ संख्यासमानप्रवृत्तारंगार्द्धं भागितुतं विरलु याउत्प्रमाणं लब्धं तावत्प्रमाणं विपुलमतिमनःपर्यय- १
ज्ञानविषयताःवेत्तिहृष्टद्रव्यविकल्पमश्नुं खलु स्फुटमाणि स ७ ख ख
९ क ७ ९९९

गाउपपुधत्तमवरं उक्कस्सं होदि ज्ञेयणपुधत्तं ।

विउलमदिस्स य अवरं तस्स पुधत्तं वरं खु णरलोयं ॥४५५॥

गम्युतिपुषस्त्वमवरमुत्कृष्टं भवति योजनपुषस्त्वं । विपुलमतेरवरं तस्य पुषश्च खलु १०
नरलोकः ॥

श्रुजुमतिमनःपर्ययज्ञानविषयजपन्यक्षेत्रं गम्युतिपुषस्त्वमेरदुभूत क्रोशंगळपुत्रु । क्रो २ ।
३ । मरुत्कृष्टक्षेत्रं योजनपुषस्त्वसमाष्टयोजनप्रमाणमवकं । यो ७ । ८ । विपुलमतिमनःपर्ययज्ञान
विषयजपन्यक्षेत्रं तस्य पुषस्त्वमा योजनंगळ पुषस्त्वमष्टयोजननवयोजनप्रमाणमवकं । ८ । ९ ।
तत्तुत्कृष्टज्ञानविषयोत्कृष्टक्षेत्रं खलु स्फुटमाणि । नरलोकः मनुष्यलोकमेतितानि प्रमाणमवकं ।

णरलोएत्ति य वयणं विखसंमणियामयं ण वडुस्स ।

जम्हा तग्घणपदरं मणपज्जवखेत्तमुदिदं ॥४५६॥

नरलोक इति वचनं विष्कंभनियामकं न वृत्तस्य । यस्मात्तद्वचनप्रतरं मनःपर्यायक्षेत्रमुद्दिष्टं ॥

विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानविषयसंख्योत्कृष्टक्षेत्रप्रमाणवोळु नरलोक इति वचनं नरलोकमेवो
शब्दं तन्मनुष्यक्षेत्रवृत्तविष्कंभनियामकमल्लोकेवोडे यस्मात् आनुबोउ कारणविषे तद्वचनप्रतरमा

तस्मिन् विपुलमतिविषयद्वितीयद्रव्ये अतस्स्यात्कल्पसमयसंख्यैर्ध्रुवहारैर्भवते विपुलमतिविषयं सर्वोत्कृष्ट- २०

द्रव्यं भवति— स ७ ७ ७ ख ख ॥४५४॥

९ । क ७ ९९९

श्रुजुमतिविषयजपन्यक्षेत्रं गम्युतिपुषस्त्वं द्वित्रिक्रोधाः २ । ३ । उत्कृष्टं योजनपुषस्त्वं सताष्टयोज-
नानि ७ । ८ । । विपुलमतिविषयजपन्यक्षेत्रं योजनपुषस्त्वं अष्टमवयोजनानि ८ । ८ । ९ । उत्कृष्टं स्फुटं
नरलोकः ॥४५५॥

यद्विपुलमतिविषयोत्कृष्टक्षेत्ररूपे नरलोक इति वचनमुक्तं तत् तद्वृत्तविक्रमस्य नियामकं निरवायकं २५

विपुलमतिके विषयभूत उत्तरे द्रव्यमे अतस्स्यात् कल्पकालके समयोक्ती संख्या
जितनी है पत्रनी वार ध्रुवहारसे भाग देनेपर विपुलमतिके विषयभूत सर्व उत्कृष्टद्रव्य
आता है ॥४५४॥

श्रुजुमतिविषयभूत जपन्य क्षेत्र गम्युति पुषस्त्व अर्थात् दो-तीन कोस है । और
उत्कृष्ट क्षेत्र योजन द्रव्यत्व अर्थात् साव-आठ योजन है । विपुलमतिविषयभूत जपन्य ३०
क्षेत्र योजन द्रव्यत्व अर्थात् आठ-नी योजन है और उत्कृष्टक्षेत्र मनुष्यलोक है ॥४५५॥

विपुलमतिविषय उत्कृष्टक्षेत्रका कथन करते हुए जो मनुष्यलोक कहा है वह

तन्विदियं कष्पाणमसंखेज्जाणं च समयसंखसमं ।

ध्रुवहारेणवहरिदे होदि हु उक्कस्सयं दब्बं ॥४५४॥

तद्वितीयं कल्पानानसंख्यातानां च समयसंख्यासमं ध्रुवहारेणापहृते भवति तल्लुक्कट्टं दब्बं ।

तं द्वितीयं विपुलमनःपर्व्ययज्ञानविषयद्वितीयद्वयविकल्पमं असंख्यातकल्पंगळ समयंगळ संख्यासमानध्रुवहारंताद्विदं भागिमुत्तं विरलु पायत्प्रमाणं लब्धं तावत्प्रमाणं विपुलमतिमनःपर्व्यय- ५
ज्ञानविषयतश्चोत्कृष्टद्वयविकल्पमश्नुं तल्लु स्फुटमाणि त ७ प स
९ क ७ ९९९

गाउयपुधत्तमवरं उक्कस्सं होदि जोयणपुधत्तं ।

विउलमदिस्स य अवरं तस्स पुधत्तं वरं सु णरलोयं ॥४५५॥

गम्भीरतिपुयस्त्वमवरमुत्कृष्टं भवति योजनपुयस्त्वं । विपुलमतेरवरं तस्य पुयस्त्वं तल्लु १०
नरलोकः ॥

अनुमतिमनःपर्व्ययज्ञानविषयजघन्यक्षेत्रं गम्भीरतिपुयस्त्वमेरदुभुव क्रोदंगळपुत्तु । क्रो २ ।
३ । मवत्कृष्टक्षेत्रं योजनपुयस्त्वसप्ताष्टयोजनप्रमाणमवश्नुं । यो ७ । ८ । विपुलमतिमनःपर्व्ययज्ञान
विषयजघन्यक्षेत्रं तस्य पुयस्त्वमा योजनंगळ पुयस्त्वमष्टयोजननवयोजनप्रमाणमवश्नुं । ८ । ९ ।
तदुत्कृष्टज्ञानविषयोत्कृष्टक्षेत्रं तल्लु स्फुटमाणि । नरलोकः मनुष्यलोकमनितानिनु प्रमाणमवश्नुं ।

णरलोयत्ति य वयणं विक्खंमणिपामयं ण वट्टस्स । १५

अम्हा तग्गणपदरं मणपज्जवखेत्तमुद्दिट्ठं ॥४५६॥

नरलोक इति वचनं विष्कंभनियामकं न वृत्तस्य । यस्मात्तद्वचनप्रतरं मनःपर्व्यापक्षेत्रमुद्दिष्टं ॥
विपुलमतिमनःपर्व्ययज्ञानविषयसर्वोत्कृष्टक्षेत्रप्रमाणदोळु नरलोक इति वचनं नरलोकमं यो
शब्दं तन्मनुष्यक्षेत्रवृत्तविष्कंभनियामकमल्लेकं दोळे यस्मात् आयुदोळु कारणदिवं तद्वचनप्रतरमा

तस्मिन् विपुलमतिविषयद्वितीयद्वये असंख्यातकल्पसमयसंख्यं ध्रुवहारंभक्ते विपुलमतिविषयं सर्वोत्कृष्ट- २०

दब्बं भवति— त ७ ७ ७ प स ॥४५५॥

९ । क ७ ९९९

अनुमतिविषयजघन्यक्षेत्रं गम्भीरतिपुयस्त्वं द्वित्रिक्रोमाः २ । ३ । उत्कृष्टं योजनपुयस्त्वं सप्ताष्टयोज-
नानि ७ । ८ । विपुलमतिविषयजघन्यक्षेत्रं योजनपुयस्त्वं अष्टमयोजनानि ७ । ८ । ९ । उत्कृष्टं स्फुटं
नरलोकः ॥४५५॥

यद्विपुलमतिविषयोत्कृष्टक्षेत्ररूपे नरलोक इति वचनमुक्तं तत् तद्वचनविष्कंभस्य नियामकं निरवयकं २५

विपुलमतिके विषयभूत उच दूसरे द्रव्यमे असंख्यात कल्पकालके समयोकी संख्या
जितनी है तवनी चार ध्रुवहारसे भाग देनेपर विपुलमतिके विषयभूत सर्व उत्कृष्टद्रव्य
आता है ॥४५४॥

अनुमतिविका विषयभूत जघन्य क्षेत्र गम्भीरति पुयस्त्व अर्थात् दो-वीन कोस है । और
उत्कृष्ट क्षेत्र योजन पुयस्त्व अर्थात् साठ-आठ योजन है । विपुलमतिविका विषयभूत जघन्य ३०
क्षेत्र योजन पुयस्त्व अर्थात् आठ-नौ योजन है और उत्कृष्टक्षेत्र मनुष्यलोक है ॥४५५॥

विपुलमतिविका विषय उत्कृष्टयोजका कथन करते हुए जो मनुष्यलोक कहा है वह

तन्निर्दिष्टं कृष्णान्नसंखेज्जाणं च समयसंखसमं ।

ध्रुवहारेणवहरिदे होदि हु उक्कस्सयं दब्बं ॥४५४॥

तद्वितोयं कल्पानानसंख्यातानां च समयसंख्यासमं ध्रुवहारेणापहृते भवति खलुःकृष्टं द्रव्यं ।

तं द्वितोयं विपुलमनःपर्ययज्ञानविषयद्वितोयद्रव्यविकल्पमं अस्तरपातकल्पंगळ समयंगळ संख्यासमानध्रुवहारेणवहरिदे भागिनुत्ते विरलु मायत्प्रमाणं सव्यं तावत्प्रमाणं विपुलमतिमनःपर्यय- ५
ज्ञानत्रिययत्तेऽर्वाकृष्टद्रव्यविकल्पमवकुं खलु स्फुटमाणि स ० ख ख
९ क ० ९९९

गाउयपुधत्तमवरं उक्कस्सं होदि जौयणपुधत्तं ।

विउलमदिस्स य अवरं तस्स पुधत्तं वरं तु नरलोयं ॥४५५॥

गव्यूतिपुयस्त्वमवरमुत्कृष्टं भवति योजनपुयस्त्वं । विपुलमतेरवरं तस्य पुयःवं खलु १०
नरलोकः ॥

अजुमतिमनःपर्ययज्ञानविषयजघन्यक्षेत्रं गव्यूतिपुयस्त्वमेरदुमुव क्रोदांगळप्पुत्तु । क्रो २ ।
३ । मवत्कृष्टक्षेत्रं योजनपुयस्त्वसप्तप्राष्टयोजनप्रमाणमवकुं । यो ७ । ८ । विपुलमतिमनःपर्ययज्ञान
विषयजघन्यक्षेत्रं तस्य पुयःस्यमा योजनंगळ पुयःस्यमष्टयोजननवयोजनप्रमाणमवकुं । ८ । ९ ।
तदुत्कृष्टज्ञानविषयोत्कृष्टक्षेत्रं खलु स्फुटमाणि । नरलोकः मनुष्यलोकमनितनिनु प्रमाणमवकुं ।

नरलोएत्ति य वयणं विक्खंमणियामयं ण वट्टस्स ।

अम्हा तग्गणपदरं मणपज्जवखेत्तमुद्दिट्ठं ॥४५६॥

नरलोक इति वचनं विष्कंभनियामकं न वृत्तस्य । यस्मात्तद्वचनप्रवरं मनःपर्यायक्षेत्रमुद्दिष्टं ॥
विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानविषयसर्वोत्कृष्टक्षेत्रप्रमाणबोद्धे नरलोक इति वचनं नरलोकमैवो
द्भावं तन्मनुष्यक्षेत्रयुक्तविष्कंभनियामकमस्तेके बोद्धे यस्मात् आपुबोद्धे कारणविदे तद्वचनप्रतरमा

तस्मिन् विपुलमतिविषयद्वितोयद्रव्ये अस्त्रपातकल्पसमयसंख्यध्रुवहारैर्नक्ते विपुलमतिविषयं सर्वोत्कृष्ट- २०

द्रव्यं भवति— स ० ० ० ख ख ॥४५४॥

९ । क ० ९९९

अजुमतिविषयजघन्यक्षेत्रं गव्यूतिपुयस्त्वं द्वित्रिकोटाः २ । ३ । उत्कृष्टं योजनपुयस्त्वं सप्ताष्टयोज-
नानि ७ । ८ । ९ । विपुलमतिविषयजघन्यक्षेत्रं योजनपुयस्त्वं अष्टनवयोजनानि ८ । ९ । १० । उत्कृष्टं स्फुटं
नरलोकः ॥४५५॥

यद्विपुलमतिविषयोत्कृष्टक्षेत्ररूपेण नरलोक इति वचनमुत्तरं तत् तद्वर्तविष्कम्भस्य नियामकं निरवायकं २५

विपुलमतिके विषयभूत उत दूसरे द्रव्यमै अस्त्रपात कल्पकालके समयोकी संख्या
जितनी है उसनी वार ध्रुवहारसे भाग देनेपर विपुलमतिके विषयभूत सर्व उत्कृष्टद्रव्य
आवा है ॥४५४॥

अजुमतिविका विषयभूत जघन्य क्षेत्र गव्यूति पुयस्त्व अर्थात् दो-तीन कोस है । और
उत्कृष्ट क्षेत्र योजन पुयस्त्व अर्थात् साठ-आठ योजन है । विपुलमतिविका विषयभूत जघन्य ३०
क्षेत्र योजन पुयस्त्व अर्थात् आठ-नौ योजन है और उत्कृष्टक्षेत्र मनुष्यलोक है ॥४५५॥

विपुलमतिविका विषय उत्कृष्टक्षेत्रका कथन करते हुए जो मनुष्यलोक कहा है वह

तन्विदियं कष्पाणनसंसेज्जाणं च समयसंतुसमं ।

धृवहारेणवहरिदे होदि हु उक्कस्सयं दब्बं ॥४५४॥

तद्विज्ञेयं रत्नानामतस्यात्मानां च समवतस्यासमं प्रयत्नारेणपटुते भगति सत्कल्पं द्रव्यं ।

तं नितोयं विप्रतमनःपथ्यं ज्ञानविषयितोयं यद्विप्रतमनःपथ्यं अतएवातकल्पं तमयं तं
तस्य तमनःपथ्यं ज्ञानविषयितोयं यद्विप्रतमनःपथ्यं अतएवातकल्पं तमयं तं
ज्ञानविषयितोयं यद्विप्रतमनःपथ्यं अतएवातकल्पं तमयं तं

950 959

गाडयपुषपमवरं उकरुस्तं होदि ज्ञेयणपुषत्तं ।

यिउलमदिस्म य अवरं तस्त पूषचं वरं रुर णरलोयं ॥४५५॥

गम्भीरपुष्पाक्षरमवरमुकुटं भजति योजननूपसरं । त्रिमुलमन्तरवरं तस्य पुष्पशयं तलु ॥
नल्लोकः ॥

श्रुमतिमनःपुष्पतानविषयजपन्यशेनं गच्छुतिनुयस्त्वभेरकुमुह कोदांगठपुत्रु । को २ ।

३ । मरुत्कृष्टाभिर्यो जननपुष्पस्तत्सनाद्योजनप्रमाणमरुतं । यो ७ । ८ । त्रिगुलमतिमत्तः पर्ययजानं
 निषयत्रपन्धरेभ्यं तस्य वृक्षस्तथा योजनं गच्छ वृक्षस्त्यमद्योजनतयोजनप्रमाणमरुतं । ८ । ९ ।
 तान्कृष्ट्याजानयिष्योः कृष्टाभिर्यं तन् कृष्टमाणि । नारोक्तः मनुष्यलोके नैवतिष्ठति प्रमाणमरुतं ।

नारलोएत्ति य त्रयणं विपत्तुंमणियामयं ण वट्टस्स ।

बम्हा तग्यणपदरं मणपज्जक्खेत्तमुदिहं ॥४५६॥

नरलोक इति वचनं पिप्पलननियामकं न युतस्य । यस्मात्तद्वपनप्रतरं मनःपर्यायः श्रेष्ठमुद्दिष्टं ॥

शिवुलमतिमनःपद्मपमानशिवपराध्यांरूपशेषप्रमाणशब्द नरलोक इति यत्नं नरलोकनं बो
 दध्वं तन्मनुष्यशेषप्रपत्तिपिण्डभनित्वामरुमतोके बोधे यस्मात् आमुदोत् कारणदिवं तत्पुनःप्रतरमा

सन्मिन् विराजमतिविषयविहीनयन्त्रे यमस्यानल्पगमयसंस्पर्शवहादैवते विपुलमतिविषय सर्वोद्भू- २०

इसमें प्रयत्नि— रु ७० ७ नव रु १८५४।

91 4 2 9 9 9

श्रुतमन्त्रिप्रियवज्रपथ्यं च मन्त्रिप्रियवज्रं त्रिभिर्भोगाः २।३। उरुहं योजनपुष्पसं सप्ताहयोज-
नानि ७।८। श्रुतमन्त्रिप्रियवज्रपथ्यं च योजनपुष्पसं अष्टनवयोजनानि ८।९। उरुहं सुदं
मरुतः ॥६५॥

यद्भिन्नमतिरिदोऽष्टशतं नरलोक इति वचनमुत्तरं तत् सङ्गतविष्णुमन्त्रस्य नियामकं निरवापकं २५

विपुलमतिके विषयभूत उस दूसरे द्रव्यमें असंख्यात कल्पकालके समयोंकी संख्या
चितनी है पतनी बार ध्रुवहारसे भाग देनेपर विपुलमतिके विषयभूत सूर्य १८८८८८८८
आवा है ॥४५४॥

प्रजुमविका विषयभूत जषन्य क्षेत्र गव्वूति प्रथकर अयांत दो-
वत्कृष्ट क्षेत्र योजन प्रथसर अथांत सात-आठ योजन हे । विपुलम-
क्षेत्र योजन प्रथसर अथांत आठ-नौ योजन हे और वत्कृष्टक्षेत्र
विपुलमविका विषय उत्कृष्टक्षेत्रका फयन करत हए

आवलिभर्तृभागं अवरं च वरं च वरमसंरुणुणं ।

वचो अनंरुणुनिदं अतंसलोगं तु विउलमदी ॥४५८॥

आवत्यसंरुणुभागो अवरश्च वरश्च वरोजसंरुणुनः ततोऽजसंरुणुनितः अर्थावलीकस्तु विपुलमतेः ॥

भावं प्रति वक्ति । श्रुतुमतिमनःपद्व्ययज्ञानविषयजपन्यमावत्यसंरुणुलीकभागमरुमुमु-
हृन्दनुमते आवत्यसंरुणुभागमरुमादोडे जपन्यम नोडतसंरुणुतगुमरुहं । ततः आ श्रुतुमति-
मनःपद्व्ययज्ञानविषयोऽरुहृष्टभावनमानमं नोडतु विपुलमतिमनःपद्व्ययज्ञानविषयजपन्यभापम-
संरुणुतगुनितमरुमा विपुलमतिमनःपद्व्ययज्ञानविषयोऽरुहृष्टभावं गु मते असंरुणुतलोकः असंरुणुत-
लोकमानमरुहं । ३७ ।

मज्झिमदव्यं रोचं कालं भावं च मज्झिमं णाणं ।

वागदि इदि मणपज्जयणाणं कहिदं समासेण ॥४५९॥

मध्यमद्वयं क्षेत्रं कालं भावं च मध्यमज्ञानं जानाति । इतिमनःपद्व्ययज्ञानं कथितं समासेन ॥

श्रुतुमतिमनःपद्व्ययज्ञानजपन्योऽरुहृष्टज्ञानं गच्छं विपुलमतिमनःपद्व्ययजपन्योऽरुहृष्टज्ञानं गच्छं
ई पेडत्यटु तंममजपन्योऽरुहृष्टद्व्ययज्ञानकालभावं गज्जनरियुमा मध्यमज्ञानविरुत्पणं तंमम
मध्यमद्व्ययज्ञानकालं भावं गज्जनरियुमा मनःपद्व्ययज्ञानं संक्षेपविदं पेडत्यटुदु । तद्व्ययज्ञानकाल-
भावं गच्छो तंशुष्टिः —

भावं प्रति श्रुतुमतेविषयजपन्यं आवत्यसंरुणुलीकभागः ८ । उरुहृष्टं वदज्ञानमवि जपन्यार्थं रूपाव-

७७७

गुणं ८ ७ । उ३. विपुलमतेविषयजपन्यं रूपावगुणं ८ ७ उरुहृष्टं गु पुनः अनंरुणुतलोकः ॥३३॥४५८॥

७७७

७७७

श्रुतुविपुलमते, जपन्योऽरुहृष्टकल्पो उरुहृष्टवद्व्ययज्ञानोऽरुहृष्टद्व्ययज्ञानकालभावान् जानीतः । मध्यम-
विद्वत्पालु रूपावमध्यमद्व्ययज्ञानकालभावान् जानन्ति इत्येवं मनःपद्व्ययज्ञान संक्षेपोऽवगच्छ ॥४५९॥

२०

भावं अर्था श्रुतुमतिं जपन्य विषय आवलीका असंरुणुतवर्षा भाग ई । उरुहृष्ट
भी वचना दी ई इति जपन्यसे असंरुणुतवर्षा ई । उससे विपुलमतिं जपन्य विषय
असंरुणुतवर्षा ई और उरुहृष्ट असंरुणुत लोका ई ॥४५८॥

श्रुतुमति और विपुलमति जपन्य और उरुहृष्ट भेद अपने-अपने जपन्य और उरुहृष्ट
द्व्ययज्ञानकाल और भावों को जानते हैं । तथा मध्यमभेद अपने-अपने मध्यम क्षेत्र-काल-भाव-
को जानते हैं । इस प्रकार मनःपद्व्ययज्ञानका संक्षेपसे कथन किया ॥४५९॥

अनंतरं ज्ञानमार्गणयोऽङ्ग जीवसंख्येयं पञ्चमं ।

चतुर्गदमदिसुदबोद्धा पन्थासंखेज्जया हु मणपज्जा ।

संखेज्जा केवलिणो सिद्धादो होंति अदिर्त्तिचा ॥४६१॥

चतुर्गतिमतिभूतबोधाः पन्थासंख्येयमात्राः एतु मनःपर्ययज्ञानिनः संख्येयाः केवलिनः
सिद्धेभ्यो भवत्यतिरिक्ताः ॥

चतुर्गतिप मतिज्ञानिगळ् भूतज्ञानिगळ् प्रत्येकं पन्थासंख्यातभागप्रमितर स्फुटमार्ग ।
म । प । धु । प । मनःपर्ययज्ञानिगळ् संख्यातप्रमितरेयपुवु । १ । केवलज्ञानिगळ् सिद्धर नोडे

जिनर संख्येयिबं साधिररप्यर १ ।

ओहिरहिदा तिरिक्खा मदिणाणि असंखमागगा मणुवा ।

संखेज्जा हु तद्दणा मदिणाणी ओहिरिमार्ण ॥४६२॥

अवधिरहितास्तिप्यंघो मतिज्ञान्यसंख्यभागप्रमिता मानवाः । संख्येयाः एतु तदुना मति-
ज्ञानिनो अवधिज्ञानिनः परिमाण ॥

अवधिज्ञानरहिततिप्यंघर मतिज्ञानिगळ् संख्येयं नोडसंख्यातभागप्रमितरप्यर प १ अवधि-

रहितमनुप्यर संख्यातप्रमितरप्यर- १ । मो थेरहु राधिगळिबं प १ होनमप्य मतिज्ञानिगळ्

संख्ये अवधिज्ञानिगळ् परिमाणमक्कु प १

१५

मन्तप्यम् ॥४६०॥ अय ज्ञानमार्गणायां जीवसंख्यामाह—

चतुर्गतेर्मतिज्ञानिनः भूतज्ञानिनश्च प्रत्येकं पन्थासंख्यातैकमागमात्राः स्तुः स्फुटं म प धु प । मनःपर्यय-

ज्ञानिनः संख्यावाः १ । केवलज्ञानिनः जिनसंख्या समधिरुसिद्धरातिः ३ ॥४६१॥

अवधिज्ञानरहितिजियंज्ज मतिज्ञानिगळ्याया अवधेरवभागः प १ । अवधिरहितमनुप्याः संख्यावाः १

एतदाधिदोणा मतिज्ञानसंख्येय चतुर्गत्ववधिज्ञानपरिमाणं भवति प १-३ ॥४६२॥

२०

अय ज्ञानमार्गणार्थं जीवोंकी संख्या कहते हैं—

पारों गतियोंमें मतिज्ञानी पन्थके असंख्यातवें भाग हैं और भूतज्ञानी भी पन्थके
असंख्यातवें भाग हैं । मनःपर्ययज्ञानी संख्यात हैं । और केवलज्ञानी सिद्धराशिमें तेरहवें
और चौदहवें गुणस्थानके जिनोंकी संख्या मिलानेपर जो प्रमाण हो खने हैं ॥४६१॥

अवधिज्ञानसे रहित तिर्यच मतिज्ञानियोंकी संख्यासे असंख्यातवें भाग हैं । अवधि-
ज्ञानसे रहित मनुप्य संख्यात हैं । मतिज्ञानियोंकी संख्यामें ये दोनों राशि घटा देनेपर
पारों गतिके अवधिज्ञानियोंका प्रमाण होता है ॥४६२॥

मतिभूतावधिमनःपद्म्ययकेवलज्ञानिगळ संख्येगळनष्टु राशिगळ कूडिदोडे केवलज्ञानिगळ संख्येय मेले साधिकमवकु $\frac{1}{2}$ मी राशिंयं सर्वजीवराशिपोळ १६ कलेयुत्तिरलुट्टिद शेपं १३-

प्रत्येकं मत्यज्ञानिगळ संख्येयुं भूताज्ञानिगळ संख्येयुमवकु १३।१३। मितु पेळ्पट्ट संख्येगळ संदृष्टि चतुर्गंतियवकु । मतिज्ञानिगळ १३-। चतुर्गंतियवकु भूतज्ञानिगळ १३-। चतुर्गंतिय विभंगज्ञानिगळ

$\frac{H}{1} = 1$ चतुर्गंतियमतिज्ञानिगळ ५ चतुर्गंतिय भूतज्ञानिगळ ५ चतुर्गंतिय अवधिज्ञानिगळ ५
४।६५ = १

५ ० मनुष्यगंतियमनःपद्म्ययज्ञानिगळ १ केवलज्ञानिगळ सिद्धं जिनं १ तिर्यगंतिय विभंग-
ज्ञानिगळ ६ ५ मनुष्यगंतिय विभंगज्ञानिगळ १ नारकविभंगज्ञानिगळ—२—। देवविभंगज्ञानि-

गळ $\frac{1}{1} = 1$ संदृष्टिः—
४।६५ = १

कुमति	कुभुत	विभंग	मतिभूत	अवधि मनः केवल	तिरि-विभंग ॥
१३-	१३-	$\frac{H}{4 \cdot 65} = 1$	$\frac{5}{2}$	$\frac{5}{2}$	$\frac{1}{3}$
			३	३	३

मनु-विभंग	नारक-विभंग	देव-विभंग
१	—२—	$\frac{1}{4 \cdot 65} = 1$

इंतु भगवद्देहत्वरमेश्वरचारचरणारविंदद्वंद्वदनांनंदित पुष्यपुंजायमान धीमद्वायराजगुह-
मंडलाचाप्यंमहावादादीश्वररामवादिपितामह सकलविद्वज्जनचक्रवर्तिभूमवभवमूरिसिद्धांतचक्र-
वर्त्तिस श्रीपादपंकजराजोरजितललाटपट्टं धीमत्केसवण्णविरचितमप्य गोममटसारकर्णाटकवृत्ति जीव-
तत्त्वप्रदीपिकेयोळ जीवकांडविज्ञतिप्ररूपणंकोळ द्वादशज्ञानमार्गणामहाविकारं समाप्तमाप्नु ॥

मत्वादिसम्यग्ज्ञानराशिपञ्चकेन साधिककेवलराशिमात्रेण १ सर्वजीवराशि. १६ होनस्तदा १३-प्रत्येकं १५
मतिभूताज्ञानिपरिमाणं स्यात् ॥४६४॥

मति आदि पाँच सम्यग्ज्ञानियोंकी संख्या केवलज्ञानियोंकी संख्यासे कुछ अधिक है। इसको सर्वजीवराशियों-से घटानेपर मतिअज्ञानों और भ्रुवअज्ञानों जीवका परिमाण होवा है ॥४६४॥

गुणमस्तु ।

जहत्वादसंजमो पुण उवसमदो होदि मोहणोपसस ।

खयदो वि य सो णियमा होदि च जिणेहि णिदिदुद्धं ॥४६८॥

यथाक्यातसंयमः पुनरप्यप्रमादुवति मोहनोपसस । क्षयतोपि च ॥ नियमाद् भवति इति जितेन्निदिद्धं ॥

यथाक्यातसंयमं मत्ते मोहनोपपुपशमविबमस्तु । मोहनोपनिरवशोपशमविबम आ यथा-
क्यातसंयमं नियमविबमस्तुमे विमु जिनरुणाद्धवं पेञ्चत्पट्टुवु ।

तदियकसायुदयेण य विरदाविरदो गुणो हवे जुगवं ।

विदियकसायुदयेण य असंजमो होदि णियमेण ॥४६९॥

तृतीयरूपायोवयेन ॥ विरताविरतगुणो भवेद्युगपत् । द्वितीयरूपायोवयेन च असंयमो भवति ।
नियमेन ॥

प्रत्याक्यातावरणतृतीयरूपायोवयविरं विरताविरतगुणमोम्पो बलाद्धेयस्तु । संयमसंयमपु-
मोम्पो बलाद्धेयस्तुमपुकारणमाणि सम्पत्तिम्यावृष्टिये तंते देशसंपत्तनुमिधसंपत्तिमियस्तुमंनुररं ।
द्वितीयरूपायोवयवोद्धप्रत्याक्यातावरणतृतीयरूपायोवयवोद्धसंयमं नियमविरं मस्तु ।

संगहिय सयलसंजममेयजममणुत्तरं दुरवगमं ।

जीवो समुन्वहो सामादयसंजमो होदि ॥४७०॥

संगृह्य सकलसंयममेकयममनुत्तरं दुरवगम्यं । जीवः समुन्वहो सामादिकसंयमो भवति ॥

संगृह्य सकलसंयमं प्रतारणादिष्वविधिमप्यसंयमं पुणपत्तयंतावच्छादितोत्तिम यस्मिन्
संप्रतिष्ठि संक्षेपित एकयमं भेदरहितसरलसावधनिवृत्तित्वकमप्य एकयममं अनुत्तरं अतस्तु

सूक्ष्मसावधयंयमगुणो भवति ॥४७१॥

च यथाक्यातसंयमः पुनः मोहनोपपुपशमविबमस्तु । निरवशोपशमविबम निरवशोपशमविबम ॥४७२॥

प्रत्याक्यातावरणतृतीयरूपायोवयविरताविरतगुणो गुणस्तु भवति, संयमासंयमोव्यवसायव्यवसाय । सम्पत्तिम्या-
वृष्टिये तंते देशसंपत्तनुमिधसंपत्तिमियस्तुमंनुररं । अतस्तुसंयममेकयममं भवति ॥४७३॥

सकलसंयमं—प्रतारणादिष्वविधिमं पुणपत्तयंतावच्छादितोत्तिमोति अनुत्तरं—संक्षेपित, एकयमं—भेदरहित-

पर्यन्त होते है । सूक्ष्मकृष्टिको प्राप्त संग्रहण क्षीयका इत्य होते हुए सूक्ष्म सावधराय नामक २१
संयमगुण होता है ॥४७४॥

यथाक्यात संयम नियमसे मोहनोपके वपशमसे अथवा सम्पूर्ण क्षयसे होता है 'देम'
जिनवेषने कहा है ॥४७५॥

तीसरी प्रत्याक्यात कथायके इत्यसे एक साथ विरतजविरतरूप पुन होता है
क्योंकि संयम और असंयम एक साथ होते हैं । अर्थात् जैसे ठीसरे पुनस्थानमें सम्पत्ति १०
और मिथ्यात्व मित्रे-जुडे होते हैं वैसे ही देशसंपत्त नामक संयम पुनस्थानमें संयम और
असंयम मित्रा हुआ होता है । दूसरी अष्टाक्यात कथायके इत्यसे नियमसे प्रथमव
होता है ॥४७६॥

प्रतारण आदि रूप पाँच प्रकारके सक्क संयमको एक साथ 'दे' मन्त्रक माधयने
विरत है इस प्रकार संगृहीत करके एक यम रूपसे धारण करना सामादिक संयम है । २१

पंचसमितयोऽस्यसंतोति पंचसमितः । पंचसमितियुक्तं त्रयो गुणयोऽस्मिन्निति निगुनः
निगुतिगच्छेद्विदुः सवापि सर्व्वेवापि एत्ता कालम् सावयं प्राणिवपनं परिहरति परिहरिगुणं ।
यः प्रापनोऽर्थं पंचैक्यमः पंचैक्यमनुच्छ पुरयः पुष्पयु सः वातं परिहारकसंयतः सत्तु परिहार-
विगुदिसंयतनकुं स्फुटमाणि ।

तीसं वासो जग्मे वासपुपचं सु तित्ययरमूले ।
पचकसाणं पठिदो संज्ञदुगाउयविहारो ॥४७३॥

त्रिगदयो जन्मनि वर्षपुपकथं सत्तु तोत्यंकरमुले । प्रत्याख्यानं पठितः संयोजनद्विगदुति-
विहारः ॥

जन्मबोजु त्रिगदयमनुच्छं सर्व्वेवा मुतिनयं बहु बीजेगोऽं यर्षपुपकथं वरं तोत्यंकर १०
धीपावमूलबोजु प्रत्याख्यानमेवो भसनय पुष्पं पठियितिशतं परिहारविगुदिसंयमं केकोऽं
संध्याप्रयगुनसंयकालबोजरु क्रोशप्रमाणविहारमनुच्छं रात्रिगोऽंविहारहितं प्रापुट्काल-
नियममित्तवनं परिहारविगुदिसंयमनकुं । परिहरणं परिहारः प्राणिवपान्निवृत्तिस्तनं परि-
हारेण विगिष्टा गुदिसंयमिन् स परिहारविगुदिसंयमो यस्य स परिहारविगुदिसंयमः एवितु
परिहारविगुदिसंयमगे जपन्यकालमंतस्मंभूतंमककुमेके बोधे परिहारविगुदिसंयमं पौहि जपन्य-
कालपुष्पंतिमिदंयगुनस्थानं पौहिदंयं तयंतस्मंभूतंमककुमेके बोधे पुट्टिरदिनं मोदसोऽं मुनयं यर्षं सर्व्वं त्रिगद- १५
त्रिगदयमनुच्छं कोटियर्षमककुमेके बोधे पुट्टिरदिनं मोदसोऽं मुनयं यर्षं सर्व्वं त्रिगद-
कालं कळुं संयमं पौहि मेले यर्षपुपकथं वरं तोत्यंकरधीपावमूलबोजु प्रत्याख्यानमपेय-

पञ्चसमिविधैकः विगुनिमुतः सवापि प्राणिवपं परिहरति, यः पञ्चाशं गामाविहारीनां मये परिहार-
विगुदिसंयमः पुष्पः सः परिहारविगुदिसंयमः स्फुटं भवति ॥४७३॥

जन्मनि विगदयिकः सर्व्वदा गुणी सन्नागत्य रोषां दुष्टोत्ता वपुपकथंयमं तोत्यंकरधीपावमुले २०
प्रत्याख्यानं नवमपूर्वं पठितं स परिहारविगुदिसंयमं स्वीकृत्य संयोजनसर्व्वकां द्विगोऽंविहारविहारी यो
विहारविहः प्रापुट्कालनियमरहितः परिहारविगुदिसंयमो भवति । परिहरणं परिहारः प्राणिवपान्निवृत्तिः,
तेन विगिष्टा गुदिसंयमिन् स परिहारविगुदि, यः सन्मो दस्य स परिहारविगुदिसंयमः यस्य यदन्वयापोऽं
मुदुतः, जपन्येन वाककालमेव स विहार गुनस्थानान्तरषट्पचा । जगुहः ब्रह्मविगदयमनुच्छं, जन्मनि-

जो पांच समिति और तीन गुणिपांचे मुक होकर सदा ही प्राणिवपसे दूर रहवा है २५
बह सामाविक आदि पांच संयमोंमेंसे परिहारविगुदि नामक एक संयमको धारण करनेसे
परिहारविगुदि संयमो होता है ॥४७३॥

जन्म से तीस वर्ष तक सर्व्वदा मुनपूर्व्वक रहते हुए उसे त्याग दोषा मदन करके
वर्षपुपकथंयमं तोत्यंकरके पादमूलमें जिसने प्रत्याख्यान नामक नीच पूर्व्वको पढ़ा है वह
परिहारविगुदि संयमको स्वीकार करके सदा काळ वनों सन्ध्याओंको छोड़कर दो कोस १०
प्रमाण विहार करता है, रात्रिमें विहार नहीं करता, वर्षाकालमें उसको विहार न करनेका
नियम नहीं रहवा, वह परिहारविगुदि संयमो होता है । परिहरण अर्थात् प्राणिवपसे
निवृत्तिको परिहार कहते हैं । उनसे विगिष्टगुदि जिसमें है वह परिहारविगुदि है । वह
संयम जिसके होता है वह परिहारविगुदि संयमो है । उसका जपन्य काळ अन्वयुदुष्ट है
क्योंकि कमसे कम इतने काळ पठन ही उस संयममें रहकर अन्य गुनस्थानोंमें चला जाता १५
है । कटुष्ट काळ अर्द्धवाच वर्ष कम एक पूर्व्व कोटि है क्योंकि उत्पत्ति दिनसे केहर तीस वर्ष

तस्य भावावस्थायै शालक्षणं यथाख्यातं चारित्र्यमित्याख्यायते ।

पञ्चतिहिचउविहेहि य अणुगुणसिक्खावएहि संजुत्ता ।
उच्चंति देसविरया सम्माहट्टी शलियकम्मा ॥४७६॥

पञ्चत्रिचतुर्विधैश्च अणुगुणसिक्खावतैः संयुक्तः । उच्चते देशविरतः सम्यग्बुध्यो जटित-
कम्माणः ॥
पञ्चविधानुवर्तंगच्छिदं त्रिविधगुणवर्तंगच्छिदं चतुर्विधपञ्चविधवर्तंगच्छिदं संपुक्तरूपं सम्यग्बुद्धि-
युक्तं कर्मनिर्जरेयोऽकूटिदवर्गं देशविरतरं दु परमाणमदोऽप्येकत्पट्टव ।
दंसणवदसामायियपोसहसच्चिराद्भवे य ।
वम्हारंभपरिगह अणुमणमुद्धिदु देसविरदेदे ॥४७७॥

दर्शनिरुपतिरुसामायिकप्रोपपोषवाससच्चित्तविरत-रात्रिभक्तविरतब्रह्मचार्यारंभविरतपरि-
ग्रहविरतानुमतिविरतोद्धिष्टविरतः देशविरता एते ॥
इति नामैकदेशो नाम्नि वर्तते एवो न्यायदिदं छाये भावत्पट्टदु । आ देशविरतमेवंगच्छन्तो
बहुवदे ते बोदे वर्गनिरुं यतिरुं सामायिकुं प्रोपपोषदासुं सचित्तविरतुं रात्रिभक्तविर-
तनुं ब्रह्मचारिणुं आरंभविरतनुं परिग्रहविरतनुमनुमतिविरतनुमुद्धिष्टविरतनुमे वितिलि-
दर्शनिरुनेवं ।

“पञ्चविरसहिंयाहं सत्तह वसणाइ जो विवग्गेइ ।
सम्मत्तविमुज्जई सो दंसणसावयो भणियो ॥” [वसु. धा १७]

यथाख्यातचारित्र्यमित्याख्यायते ॥४७५॥

पञ्चत्रिचतुर्विधैश्च अणुगुणसिक्खावतैः संयुक्तमस्यगृह्यः कर्मनिर्जरास्तः ते देशविरताः इति परमाणवे

उच्यन्ते ॥४७६॥
अत्र नामैकदेशो नाम्नि वर्तते इति नियमाद् याथाार्थं व्याख्यायते । दर्शनिको, प्रविकः, सामायिकः,
प्रोपपोषवायः, सचित्तविरतः, रात्रिभक्तविरतः, ब्रह्मचारी, आरम्भविरतः, परिग्रहविरतः, अनुमतिविरतः,
उद्धिष्टविरतश्चेत्येकैराचर्यते विरजभेदाः । तत्र—“पञ्चविरसहिंयाहं सत्तह वसणानि जो विवग्गेइ । सम्मत्तविमुज्जई
सो दंसणसावयो भणियो ॥” (वसु. धा १७) इत्यादिकथनानि प्रत्यान्तरैज्यगन्तव्यानि ॥४७७॥

समस्त मोहनीय कर्मके उपराम अथवा क्षयसे आत्मस्वभावकी अवस्थारूप लक्षणपाठा २५
यथाख्यात चारित्र्य कहलावा है ॥४७५॥

पाँच अणुप्रव, तीन गुणप्रव और चार सिक्खात्रवोंसे संयुक्त सम्यग्बुद्धी जो कर्माँझी
निर्जरा करते हैं उन्हें परमाणममें देशविरत कहते हैं ॥४७६॥

यहाँ नामका एकदेश नामका वाचक होता है इस नियमके अनुसार याथाका अर्थ
कहते हैं—दर्शनिक, प्रविक, सामायिक, प्रोपपोषवास, सचित्तविरत, रात्रिभक्तविरत, १०
ब्रह्मचारी, आरम्भविरत, परिग्रहविरत, अनुमतिविरत और उद्धिष्टविरत ये स्यारह देश-
विरतके भेद हैं । पाँच बुद्ध्यादिकके साथ साथ व्यसनोंको जो छोड़वा है उस विमुद
सम्यक्त्ववाचको दर्शनिक भावक कहते हैं । इत्यादि इन भेदोंके लक्षण अन्य ग्रन्थोंसे
जानना ॥४७७॥

प्रमत्तादिचतुर्णां युतिः सामायिकद्विकं प्रमत्तर संख्ये ५९३९८२०६ । अप्रमत्तरसंख्ये २९६९९१०३ । उपशमकापूर्वकरणह २९९ । उपशमकानिवृत्तिकरणह २९९ । क्षपकापूर्वकरणह ५९८ । क्षपकानिवृत्तिकरणह ५९८ । इतु प्रमत्तादिचतुर्गुणस्थानवर्त्तिगळ युति प्रत्येकसामायिक-संयमिगळसंख्येयुं छेदोपस्थापनसंयमिगळ संख्येयवकुमेकें बोडे सामायिकसंयमिगळनिवरनिवरे छेदोपस्थापनसंयमिगळपुर्वारिचं । ८९०९९१०३ । ८९०९९१०३ । क्रमविष शोपत्रयं परिहार-विशुद्धिसंयमिगळ संख्येयुं सूक्ष्मसांपरायसंयमिगळ संख्येयुं यथाख्यातसंयमिगळ संख्येयुं त्रिरूपोन-सप्तसहस्रमुं ६९९७ । त्रिरूपोननवशतमुं ८९७ । त्रिरूपोननवलभसुमकुं । ८९९९९७ ।

पन्थासंख्येज्जदिमं विरदाविरदाण दन्वपरिमाणं ।

पुव्वुत्तरासिहोणो संसारो अविरदाण पमा ॥४८१॥

पत्थासंख्येयभागो विरताविरतानां प्रव्यप्रमाणं । पुव्वोक्तराशिहीनः संसारो अविरतानां प्रमा ॥

पत्थासंख्यातैकभागं देशसंयतजीवद्रव्यप्रमाणमवकु ५ मो पुव्वोक्तराशिहीन-
३ ३ ४ ३

प्रमत्ताः ५, ९३, ९८, २०६ अप्रमत्ताः २, ९९, ९९, १०३, उपशमकापूर्वकरणाः २९९, उपशम-कानिवृत्तिकरणाः २९९, क्षपकापूर्वकरणाः ५९८, क्षपकानिवृत्तिकरणाः ५९८, एतां चतुर्णां युतिः प्रत्येकं सामायिकछेदोपस्थापनसंयमिसंख्या भवति उभयत्र समसंख्यात्वात् ८, ९०, ९९, १०३ । ८, ९०, ९९, १०३ । परिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययाख्यातसंयमिसंख्या क्रमेण त्रिरूपोनसप्तसहस्रं ६९९७ त्रिरूपोननवशतं ८९७, त्रिरूपोननवलभं ८९९९९७ भवति ॥४८०॥

पत्थासंख्यातैकभागो देशसंयतजीवद्रव्यप्रमाणं भवति ५ एतत्पूर्वोक्तराशिहीनसंसारिराशिरेव
३ ३ ४ ३

प्रमत्तादि चार गुणस्थानवर्त्ता जीवोंका जितना जोड़ है इतने ही सामायिक और छेदोपस्थापना संयमी होते हैं । सो प्रमत्तसंयत पाँच करोड़ तिरानवे लाख, अठानवे हजार दो सौ छह ५९३ ९८ २०६, अप्रमत्तसंयत दो करोड़ छियानवे लाख, निन्यानवे हजार एक सौ तीन २९६९९१०३, उपशम श्रेणीवाले अपूर्वकरण गुणस्थानवर्त्ता दो सौ निन्यानवे २९९, उपशम श्रेणीवाले अपूर्वकरण गुणस्थानवर्त्ता दो सौ निन्यानवे २९९, उपशम श्रेणीवाले अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्त्ता दो सौ निन्यानवे २९९, क्षपक श्रेणीवाले अपूर्वकरण पाँचसौ अठानवे, क्षपक-श्रेणीवाले अनिवृत्तिकरण पाँचसौ अठानवे ५९८ इन सबका जोड़ आठ करोड़, नव्वे लाख, निन्यानवे हजार एक सौ तीन ८९०९९१०३ इतने जीव सामायिक संयमी और इतने ही छेदोपस्थापना संयमी होते हैं । दोनोंकी संख्या समान होती है । परिहार विशुद्धि संयमोंकी संख्या तीन फम सात हजार ६९९७ है । सूक्ष्मसाम्पराय संयमियोंकी संख्या तीन कम नौ ८९७ है । यथाख्यात संयमोंकी संख्या तीन कम नौ लाख ८९९९९७ है ॥४८०॥

पत्थके असंख्यातवर्गे भाग देश संयमी जीवोंका प्रमाण है । इन छहों राशियोंकी
८७

दर्शन-मार्गणा ॥१४॥

संयममार्गणानंतरं दर्शनमार्गणं येच्छयं :—

जं सामण्णं गृहणं मावाणं णेव कट्ठुमापारं ।

अविसेसिदण अट्ठे दंसणमिदि मण्णये समये ॥४८२॥

यत्सामान्यप्रहणं भावानां नैव कृत्वाऽऽकारमविशेषात्पार्थान्नमिति भण्यते समये ॥

भावानां सामान्यविशेषात्मकबाह्यपदार्थगत आकारं नैव कृत्वा भेदप्रहणं मादवे
यत्सामान्यप्रहणं आयुर्वोदु स्वरूपमात्रं केकोन्मुवदु दर्शनमेवितु परमागमवोदु पेळत्पददुवु । ५

वस्तुस्वरूपमात्रप्रहणमेतद् बोधे अर्थाविशेष्य बाह्यार्थगतं जातिक्रियागुणप्रकारैर्गणितं
विकल्पितं स्वपरसत्तावभासनं दर्शनमेवितु पेळत्पददुवु बुदत्यं । सत्तमोपत्यमने विशयं माडिवपं—

मावाणं सामण्णविसेसयाणं सरूवमेचं जं ।

वण्णणहीणगृहण जीवेण य दंसणं होदि ॥४८३॥

भावानां सामान्यविशेषात्मकानां स्वरूपमात्रं यदर्शनहीनप्रहणं जीवेन च दर्शनं भवति ॥

सामान्यविशेषात्मकगळप्य पदार्थगत आयुर्वोदु स्वरूपमात्रं विकल्परहितमाणि जीवनिधं
स्वपरसत्तावभासनमनु दर्शनमेव बुदवकुं । पश्यति वृक्षयतेज्जेन दर्शनमात्रं वा दर्शनमेवितु कर्तुकरण- १०

अकृतानन्दसंसारसामरोत्तारहेतुकम् ।

अनन्तं तीर्थकठारं बन्देऽनन्तमूदे सदा ॥१५॥

अथ संयममार्गणां व्याख्याय दर्शनमार्गणां व्याख्याति—

१५

भावानां सामान्यविशेषात्मकबाह्यपदार्थानां आकारं-भेदप्रहणं, अकृत्वा यत्सामान्यप्रहणं-स्वरूपमात्र-
वभासनं तद् दर्शनमिति परमागमे भण्यते । वस्तुस्वरूपमात्रप्रहणं कथम् ? अर्थात्-बाह्यपदार्थान् अविशेष्य-
जातिक्रियाप्रहणविकारैर्द्विकल्प्य स्वपरसत्तावभासनं दर्शनमित्यर्थः ॥४८२॥ अप्रमेयवार्थं विशदयति—

भावानां सामान्यविशेषात्मकपदार्थानां यत्स्वरूपमात्रं विकल्परहितं यथा भवति तथा जीवेन स्वपर- २०

संयममार्गणाको कट्ठकर दर्शनं मार्गणाको कहते हैं—

भाय अर्थात् सामान्य विशेषात्मक पदार्थोंके आकार अर्थात् भेदप्रहण न करके जो
सामान्य प्रहण अर्थात् स्वरूपमात्रका अवभासन है, उसे परमागममें दर्शन कहते हैं । वस्तु-
स्वरूपमात्रका प्रहण कैसे करता है ? अर्थात् पदार्थोंके जाति, क्रिया, गुण आदि विकारों-
का विकल्प न करते हुए अपना और अन्यका केवल सत्तामात्रका अवभासन दर्शन २५
है ॥४८२॥

इसी अर्थको स्पष्ट करते हैं—

सामान्य विशेषात्मक पदार्थोंका विकल्परहित स्वरूपमात्र जैसा है वैसा जीवके साथ
स्वपर सत्ताका अवभासन दर्शन है । जो देखता है, जिसके द्वारा देखा जाता है या देसना

बहुविधंगुणं बहुप्रकारंगुणमप्येकगुणं चंद्रसूर्यरत्नाविप्रकाशंगुणं लोकबोध्यपरिमितशेष
बोध्यंभुवाय येकगुणजिह्वं पवणिसत्पद्मं लोकालोक्यबोध्यबोध्योऽबु विगततिमिरमप्युबु केवल-
दर्शनोद्योतमश्नुं ।

अनंतरं दर्शनमार्गपेयोऽं जीवसंख्येयं गाथाद्वयविधं पेञ्चपं :—

जोगे चतुरस्रपाणं पञ्चस्रपाणं च सीणचरिमाणं ।

चक्षुष्णमोहिक्तेरुपरिमाणं ताण जाणं व ॥४८७॥

योने चतुरक्षाणां पंचाक्षणां च क्षीणकपायधरमाणां । चक्षुषामप्यधिकेयलपरिमाणं
तयोर्ज्ञानयत् ।

मिथ्यादृष्टिगुणस्थानमादियायि क्षीणकपायावसानमात्रं गुणस्थानवर्तिगुणं शक्तिचक्षु-
हृदंनिगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं । चक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं १०
पय्यामकचतुरिन्द्रियजीवंगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं पंचेन्द्रियलक्ष्यपय्यामिजीवंगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं
शक्तिगतचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं । पय्यामकचतुरिन्द्रियजीवंगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं
संख्येयं संयोगं माहृत्तिरच्छेत्तुं स्यत्तिगतचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं । तच्छक्तिव्यक्तिगतचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं
संख्येयं स्यत्ति श्रैरामिच्छेत्तुं माहृत्तिरच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं । तच्छक्तिव्यक्तिगतचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं
प्रतरांगुलभाजितजगत्प्रतरमाणं फलराशियागुत्तिरच्छेत्तुं चक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं १५

बहुविधाः—तीक्ष्णमन्दमध्यमादिभावेन अनेकविधाः बहुप्रकारावद्योताः चन्द्रसूर्यरत्नाविप्रकाराः लोके-
परिमितशेषे एव भवन्ति तैः प्रकाशयन्प्रेमैव । लोकालोक्योविगततिमिरो यः स केवलदर्शनोद्योतो भवति ॥४८९॥
नय दर्शनमार्गमात्रं जीवसंख्येयं गाथाद्वयेनाह—

मिथ्यादृष्ट्यादयः क्षीणकपायान्ताः शक्तिगतचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं । तत्र लक्ष्यपय्यामि-
चतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियाः शक्तिगतचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं स्यत्तिचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं । पय्यामकचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियाः स्यत्तिगतचक्षुहृदंनिगच्छेत्तुं । तद्यथा— २०
द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियप्रमाणं सद्यं यथावत्पञ्चैक्यवन्नप्रतरांगुलभाजितजगत्प्रतरं तदा चक्षुःपञ्चेन्द्रियप्रमाणं

वीर, मन्द, मध्यम आदिके भेदसे अनेक प्रकारके चन्द्र, सूर्य, रत्न आदि सम्यग्धी
उद्योत परिमित क्षेत्रको ही प्रकाशित करनेवाले हैं । इन प्रकाशोंकी उपमा जिसे नदी दी जा
सकती ऐसा जो लोक-अलोक दोनोंको प्रकाशित करता है वह केवल दर्शनरूप उद्योत २५
है ॥४८६॥

अथ दर्शन मार्गणार्थं जीवोंकी संख्या दो गाथाओंसे कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान पर्यन्त जीव दो प्रकारके हैं, शक्तिरूप
चक्षुदर्शनवाले और व्यक्तिरूप चक्षुदर्शनवाले । उनमेंसे लक्ष्यपय्यामि चतुरिन्द्रिय और
पञ्चेन्द्रिय दो शक्तिरूप चक्षुदर्शनवाले हैं और पय्यामि चतुरिन्द्रिय व्यक्तिरूप चक्षुदर्शन वाले ३०
हैं । यदि दोन्द्रिय, त्रैन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण आवश्यक असंख्या-
वर्धे भागसे भाजित प्रतरांगुल और उससे भाजित जगत्प्रतर प्रमाण है तो चतुरिन्द्रिय

१. भेदनानेकप्रकारा उद्योताः प्रकाशविशेषा लोके परिमितशेषे एव प्रकाशये । यो लोकालोक्योऽव्यसामान्याकारे
वितिमिरः प्रसरणव्यवधानरहितैवेन यदावभासमानः स केवलदर्शनोद्योत भवति इतोऽप्येवमपि
प्राप्ते दृश्यते श्रुतच्छेद ।

एकैन्द्रियबहुदीर्घं स्त्रीणकसायंतणंतरासीणं ।

जोगो अचक्षुर्दंतणजीवाणं होदि परिमाणं ॥४८८॥

एकैन्द्रियप्रभूतो नो स्त्रीणकसायंतणान्तरासीणो योगो अचक्षुर्दन्तजीवानो भवति परिमाणं ।

एकैन्द्रियप्रभूति स्त्रीणकसायंतणान्तानंतजोयंगलयोगं अचक्षुर्दन्तजीवंगळ प्रमाणमकुरुं ॥१३॥

शक्तिचक्षु	व्यक्तिचक्षु	अचक्षु	अव्यभिदर्शन	केवलदर्शन
२	२	१	५	७
४ २—	४	०	०	३
२ ४	५		०	
०				

इतु भगवदहंस्वरमेद्वरजाद्वरगारविद्वंद्वयंबनानंदितुष्यपुंजायमानधोमद्रायराजगुह मंड- ५
लार्थमहावादादोद्वररायवारिपितामह सकलपिद्वज्जनचक्षुर्वात्तिधोमद्वभयसूरि सिद्धांतचक्षुर्वात्ति
धोपादपंकरजोरजित ललाटपट्ट धोमकेशवर्णजिरचित गोम्मटसारकर्णादिवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपि-
पिकेयोऽं जीवकाद्विद्वतिप्रक्षयंगळोऽं अचक्षुर्दन्त दर्शनमार्गणाधिकारं निगदितमाप्नु ।

एकैन्द्रियप्रभूतिधोमकसायान्तानन्तजीवानो योगः अचक्षुर्दन्तजीवप्रमाणं भवति १३-॥४८८॥

एकैन्द्रियसे लेकर स्त्रीणकसाय गुणस्थान पर्यन्त अनन्त जीवोंका जो योग है उतना १०
अचक्षुर्दन्तनो जीवोंका प्रमाण है ॥४८८॥

इस प्रकार मिश्राम्ब चक्रवर्ती आचार्य नेमिचन्द्र रचित गोम्मटसार अपर नाम

पंचतंत्रप्रहरी केपादवर्णों रचित कर्माटक वृत्ति अनुसारीणी हिन्दू टीकामें

जीवकाद्वके अन्तर्गत दर्शन मार्गणा प्रकृष्टणा नामक चौदहवें

अधिकार समाप्त हुआ ॥१४॥

वीगपडर्चा लेस्ना कनायडदयानुसंविता होइ ।

ततो दोष्णं कञ्जं बंधनउत्तरं मनुदिदम् ॥४२०॥

योगप्रवृत्तिर्नद्या कयायोदयानुरक्षिता भवति । ततो ज्योः कालं वयवकालं गन्ति ॥

कायवाङ्मयप्रवृत्तिर्न लेभ्ये ये बुद्धिः कश्चिन्नानुवृत्तिवत् । नेह नृः कायवाङ्मयं

दृष्टोः कार्यं योगव्यासंगं ह कार्यमप्यं वंशमुक्तं नृनिश्चितमुत्पन्नमेव कथं वंशमुत्पन्नं सं १३

वाप्यमरुपेन्दु सनुद्विष्ट परमागमोन्नेकलक्ष्णुः । योगार्थं महिषदेवदन्वयः । कपार्थं

विष्णुपद्मभागवतसंस्कृतमुद्रितं कृपायोगानुराजिउज्ज्वलभूषितं श्रीकृष्णविरचिता मधुपर्णि

अनुष्ठीयते च पुच्छिपुच्छनेयकमुने' इति तात्पर्यम् ।

संख्यामातृगणैकधिकारनिर्देश्य मातृगणं गणपदार्थः :-

जिह्वे मधुषणपरिणामसंकयो कम्बलकक्षगदो य ।

सानी माइणसंखा गेनं धमं न हो ज्ञानो ॥५१॥

अंतराक्षरप्यरह अक्षिपारा मोक्षमा दशतिष्ठ ।

लेस्मानाण माहण्डं ब्रह्मकर्म तेहि सोच्छानि ॥४९२॥

निर्देशावयवैरिवामातङ्गमकम्भंतप्रथमनरत्न । श्यामो भास्वमकन्यप्रैश्च त्वर्च ३४ काव्य ॥

अनरभावात्पञ्चबोधिकायाः शोध्यते भवति । तद्वशात् साधनायै सदाहमं नैवेद्यम् ॥

निर्देशात्, स्वयम्, परिचायम्, गण्यम्, उच्यते, ज्ञानम्, दर्शितुं, स्वयम्, ज्ञानम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । श्रीकृष्णार्चनम् ।

[illegible][illegible]

क्यानासोदना ६ विद्यासुखादयोः सदासुखः । येन सदासुखः सुखसुखः सदासुखः सदासुखः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

સાલનું કાર્ય સંપૂર્ણ થઈ ગયું છે. આગળના વર્ષમાં પણ આ પ્રકારે જ ચાલુ રહેશે.

काय, कर्म और मनकी पूर्णतः सेवा दे। यह मन, कर्म, कायकी पूर्णतः सेवा-रह

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

... ..

विश्व योगसूक्तिः । अथवा अथर्ववेदः ।

11854

उपपणीलकचोदमुहेमंजुवसंखसंणिहा वण्णे ।

संखेज्जाऽसंखेज्जाणंतवियप्पा य पचेयं ॥४९५॥

पदपरनीलकपोतमुहेमंजुवसंखसंणिभा वणं । संखेयासंखेया अनंतविकल्पाश्च प्रत्येकं ॥

मुंयिय, नीलरत्नव, कपोतपक्षिय, मुहेमव, अंजुव, शंखव सन्निभंगळु यथाक्रमविदमप्पु ।
कृष्णलेखादिगळु वण्णवोळु विद्रियप्पत्तिगळिबं प्रत्येकं संख्यातंगळप्पु । कृ १ नो १ क १ ते १
प १ पु १ ॥ स्कंधभेदविबं प्रत्येकमसंख्यातंगळप्पु । कृ २ नील २ क २ ते २ प २ पु २ ॥ परमाणु-
भेदविबं प्रत्येकमनंतानंतगळप्पु । कृ ३ नो ३ क ३ ते ३ प ३ पु ३ ॥

णिरया क्खिहा कप्पा भावाणुगया हु तिसुरणरतिरिये ।

उत्तरदेहे एकं भोगे रविचंद्रहरिदंगा ॥४९६॥

नारकाः कृष्णाः कल्पजा भावानुगता राज्ञु तिसुरनरतिव्यंशु । उत्तरदेहे पदं भोगे
रविचंद्रहरितांगाः ॥

नारकरत्नव कृष्णदगळेयप्पव कल्पजरत्नव भावलेखानुगतस्यव । भवनप्रयदेवकर्तुं
मनुष्यवैतिष्यं पदं उत्तरदेहंगळु देवकर्तुं यंकुप्पं शरीरंगळु अयं पदवर्णंगळप्पु यथाक्रम-
मुत्तममध्यमजपम्यभोगभूमिजरप्य नरतिव्यंशुगळु शरीरंगळु रविचंद्रहरिदंगळप्पु ॥

कृष्णादिदेवाः वणं पदपर-नीलरत्न-कपोत-मुहेम-अंजुव-शंखसंनिभा भवन्ति । पुनस्ता इन्द्रिय-
पक्षिभिः प्रत्येकं संख्याताः कृ १ । नो १ । क १ । ते १ । प १ । पु १ । स्कंधभेदेनासंख्याताः कृ २ । नो २
क २ । ते २ । प २ । पु २ । परमाणुभेदेन अनन्तानन्तराव भवन्ति । कृ ३ । नो ३ । क ३ । ते ३ । प ३ । पु ३ ।
५ प ५ ॥४९५॥

नारकाः सर्वे कृष्णा एव, कल्पजाः सर्वे स्वत्वभावलेखानुया एव । भवनव्यदेवाः मनुष्यास्तिव्यंशो
देवविपुलदेहाश्च सर्वे पदवर्णाः । उत्तममध्यमजपम्यभोगभूमिजनरतिव्यंशः क्रमशः रविचंद्रहरिद्वर्णा
एव ॥४९६॥

वर्णके रूपमें कृष्ण आदि रेश्या भंरि, नीलम, कपूतर, स्वर्ण, कमल और शंखके
समान होती हैं । अर्थात् भंरि के समान जिनके शरीरका रंग काला है, उनके द्रव्यरेश्या कृष्ण
है । नीलमके समान नील रंग वालोंकी द्रव्यरेश्या नील होती है । कपूतरके समान शरीरके
वर्णवालोंकी द्रव्यरेश्या कापोत होती है । स्वर्णके समान पीत वर्ण वालोंकी द्रव्यरेश्या पीत
होती है । कमलके समान शरीरके वर्णवालोंकी द्रव्यरेश्या पद्म होती है । और जिनका शरीर-
का रंग शंखके समान सफेद होता है उनकी द्रव्यरेश्या शुक्ल होती है । इन्द्रियोंके द्वारा प्रतीत
होनेकी अपेक्षा प्रत्येक रेश्याके संख्यात भेद होते हैं । स्कंधोंके भेदसे असंख्यात भेद हैं और
परमाणुओंके भेदसे अनन्त भेद हैं ॥४९५॥

सब नारकी कृष्णवर्ण ही होते हैं । सब कल्पवासी देव अपनी-अपनी भावलेख्याके
अनुसार ही द्रव्यरेश्यावाले होते हैं । अर्थात् जैसी उनकी भावलेख्या होती है वसीके
अनुसार उनके शरीरका वर्ण होता है । भवनवासी, व्यन्तर, व्योतिषोदेव, मनुष्य, तिर्यच
और देवोंके विप्रियासे बना शरीर ये सब छहों वर्णवाले होते हैं । उत्तम, मध्यम और जघन्य

काऊ णीलं किण्हं परिणमदि किलेसवद्धिदो अप्पा ।

एवं किलेसहाणीवद्धोदो होदि असुद्धितयं ॥५०२॥

कपोतं नीलं कृष्णं परिणमति क्लेशवृद्धित आत्मा । एवं क्लेशहानिवृद्धितोऽनुभयं भवति ।

संक्लेशवृद्धिद्विरमात्मं कपोतनीलकृष्णलेश्यारूपमेतत्पुनरंते परिणमति परिणमिसुगुमितु संक्लेशहानिवृद्धिर्गच्छिमनुभययरूपनक्तुं ।

तेऊ पम्मे सुक्के सुहाणमवरादि अंसगे अप्पा ।

मुद्धिस्म य वद्धोदो हाणीदो अण्णहा होदि ॥५०३॥

तेजसि पक्षे सुक्ले गुणानामवराद्यंशके आत्मा विमुद्धेश्च वृद्धितो हानितोऽप्यया भवति ।

शुभंगकृष्ण तेजःपद्मसुक्ललेश्येयं च जघन्याद्यंशमक्रोडात्मं विमुद्धिवृद्धिर्पिबं भवति परिणमि-
गुगुं । हानितोऽप्यया भवति विमुद्धि हानिर्पिबं सुक्ललेश्योत्कृष्टं मोक्षयो'हु तेजोलेश्याजघन्यांश-
पर्यंतं भवति परिणमिसुगुं । संवृष्टि :-

अनुभलेद्या	स्थानानि १०८	सर्वधनं ३०	शुभलेश्या	स्थानानि	१०११
तीव्रतमकृष्ण	तिव्वतरणीळ	तिव्वकजोल	मंदतेज	मंदतरपय	मंदतमसुक्ल
उ ००००००	उ ००००००	उ ००००००	ज ००००००	ज ००००००	ज ००००००
३०८८	३०८८८	३०८८१	३०८८	३०८८	३०८८
९९	९९९	९९९	९९	९९९	९९९

परिणामाधिकारं तृतीयं समाप्तमाम्नु ।

अनंतरं संक्रमणाधिकारं गाथात्रयविधं स्वस्थानपरस्थानसंक्रमणमपि परिणामपरावृत्ति-
रचनेयं कटाक्षितिकी' दु येच्छयं ।

संक्लेशवृद्धिपात्मा कपोतनीलकृष्णलेश्यारूपेण परिणमति इति संक्लेशहानिवृद्धिम्यामनुभययरूपो
भवति ॥५०२॥

गुमानां तेजःपद्मसुक्ललेश्यानां जघन्याद्यंशेषु आत्मा विमुद्धिवृद्धितो भवति परिणमति, हानितोऽप्यया
सुक्ललेश्योत्कृष्टातेजोव्यप्यंशपर्यंतं परिणमति ॥५०३॥ इति परिणामाधिकारः । उक्तपरिणामपरावृत्तिरचनां
मनसिहृत्य संक्रमणाधिकारं गाथात्रयेणाह—

तथा संक्लेश परिणामोर्ध्वं वृद्धि होनेसे कपोत, नील और कृष्ण लेश्यारूपसे परिणमन
करता है । इस प्रकार संक्लेश परिणामोर्ध्वं हानि, वृद्धि होनेसे तीन अनुभ लेश्या रूपसे
परिणमन करता है ॥५०२॥

शुभ तेज, पद्म और सुक्ल लेश्याओंके जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट अंशोंमें आत्मा विमुद्धि-
की वृद्धिसे परिणमन करता है । और विमुद्धिकी हानिसे अन्यथा अर्थात् सुक्ल लेश्याके
उत्कृष्ट अंशसे तेजोलेश्याके जघन्य अंश तक परिणमन करता है ॥५०३॥

इस प्रकार परिणामाधिकार समाप्त हुआ ।

उक्त परिणामोंके परिवर्तनकी रचनाको मनमें रखकर तीन गाथाओंसे संक्रमण
अधिकारको कहते हैं—

लेश्यानां कृष्णाविसर्गबोद्धेयगळ उत्कृष्टात् उत्कृष्टवर्तणिवं अनंतरस्वलेश्यास्थानविकल्पबोद्धु
अवरहानिः अनंतैकभागहानियक्कुम् । एकैबोद्धुल्लेश्योदयस्थानकमप्युदरिदमनंतरोद्वेकस्थान-
बोद्धुनंतैकभागहानियक्कुम्पुर्वरिवं । अवरस्मात् सर्वलेश्येगळ जघन्यस्थानवर्तणिवं स्वस्थाने स्वस्था-
नबोद्धु अवरवृद्धिः अनंतभागवृद्धये अक्कुमेकैबोद्धे लेश्याजघन्यस्थानंगळनितुमष्टांरंगळपुदरिवमनं-
तरस्थानंगळोद्धु अनंतभागवृद्धये नियमदिवमक्कुमेकैबोद्धे जघन्यमा पदस्थानादिमप्युदरिवं । ५
उत्तरस्थानमनंतैकभागवृद्धिस्थानमक्कुम्पुर्वरिवं । अवरस्मात् सर्वलेश्येगळ जघन्यस्थानवर्तणिवं
परस्थाने परस्थानसंक्रमणबोद्धु अनंतरस्थानबोद्धु हानिः अनंतगुणहानिये नियमाव् भवति नियमवि-
मक्कुमेकैबोद्धे शुक्ललेश्याजघन्यदिवमनंतरपद्मलेश्यास्थानबोद्धुनंतगुणहानि नियमविमं तक्कुमंते
कृष्णालेश्याजघन्यदिवमनंतरनोल्लेश्यास्थानबोद्धुमनंतगुणहानियक्कुमंतेस्त्वा लेश्येगळामक्कुम् ॥

संक्रमणे छद्वाणा हाणिसु बद्धीसु हौति तृणामा ।

१०

परिमाणं च य पुष्वं उचकमं होदि सुदणाले ॥५०६॥

संक्रमणे पदस्थानानि हानिषु वृद्धिषु भवति तन्नामानि । परिमाणं च पुष्वंभुक्तकनो भवति
भूतज्ञाने ॥

ई संक्रमणबोद्धु हानिगळोद्धु वृद्धिगळोद्धु पदवृद्धिगळं पदहानिगळं मप्युवु । तद्वृद्धिहानिगळ
पैसगळुमभर प्रमाणंगळुमं मुलं भूतज्ञानमार्गणेयोध्येद्ध क्रममेयक्कुमेवरिवुदवैतेबोद्धे अनंत- १५

कृष्णाविसर्गबोद्धुद्वान्तरस्वलेश्यास्थानविकल्पे अवरहानिः अनन्तैकभागहानियंभवति, कुतः ?
वदनन्तरयोर्विज्ञातमक्त्वात् । सर्वलेश्यानां जघन्यास्तुनः स्वस्थाने अवरवृद्धिः अन्तर्वैकभागवृद्धये भवति ।
कुतः ? तज्जघन्यानामष्टांकरत्वात् । सर्वलेश्याजघन्यस्थानात् परस्थानसंक्रमणेअन्तरस्थाने अनन्तगुणहानिरेव
नियमाव्भवति । कुतः ? शुक्ललेश्याजघन्यादनन्तरपद्मलेश्यास्थानवत्कृष्णलेश्याजघन्यादनन्तरनीललेश्यास्थानेऽपि
वदानैरेव संभवात् । एवं सर्वलेश्यानां भवति ॥५०५॥

२०

अस्मिन् संक्रमणे हानिषु वृद्धिषु च पदवृद्धयः पदहानयश्च भवन्ति । तस्मां नायानि प्रमाणानि च पूर्व

कृष्ण आदि सष लेश्याओंके वत्कृष्ट स्थानमें जिवने परिणाम होते हैं वनसे उत्कृष्ट
स्थानके समीपवर्ती उसी लेश्याके स्थानमें 'अवरहानि' अर्थात् वत्कृष्ट स्थानसे अनन्त भाग
हानिकी छिये हुए परिणाम होते हैं क्योंकि वत्कृष्टके अनन्तरवर्ती परिणाम सर्वरूप होता है
और अनन्त भागकी संवृष्टि सर्वरूप है । तथा सष लेश्याओंके जघन्य स्थानसे उसी लेश्यामें २५
उसके समीपवर्ती स्थानमें अनन्तवैक भागवृद्धि ही होती है क्योंकि उनके जघन्य अष्टांकरूप
होते हैं । सष लेश्याओंके जघन्य स्थानसे परस्थानसंक्रमण होनेपर उसके अनन्तरवर्ती
स्थानमें अनन्त गुणहानि ही नियमसे होती है । क्योंकि शुक्ललेश्याके जघन्य स्थानके
अनन्तर जो पद्मलेश्याका वत्कृष्ट स्थान है उसीकी तरह कृष्णलेश्याके जघन्य स्थानके
अनन्तर जो नीललेश्याका वत्कृष्ट स्थान है उनमें भी अनन्त गुणहानि ही सम्भव है । इसी ३०
प्रकार सष लेश्याओंमें जानना ॥५०५॥

इस संक्रमणमें हानि और वृद्धिमें छह हानियाँ और छह वृद्धियाँ होती हैं । उनके

१. म अस्मात् अवरवृद्धि स. । २. म. हानिः हानिये ।

पहिया जे छप्पुरिता परिमद्धारणमज्झदेसम्मि ।

फलभरिपरुखमेगं पेक्खिचा ते विचिंतति ॥५०७॥

परिका ये पटपुण्याः परिभ्रष्टाः अरूपमध्यदेशे, फलभरितमेकं वृक्षं प्रेक्ष्य ते विचिंतयन्ति ॥

णिम्मूलखंधसाहुवसाहं छित्तुं चिणित्तुं पडिदाइं ।

खाउं फलाइ इदि जं मणेण वयणं हवे कम्मं ॥५०८॥

निर्मूलस्कंधसाक्षोपशाखाश्छित्वा उच्चित्य पतितानि । जावितुं फलानीति यन्मनसा वचनं भवेत्कर्म ॥

मुपेज्ज पयिकरववं तोज्जत्तमरूपमप्यवोद्धोतुं फलभरितमाकंदवृक्षमं कंदुं तत्फलभक्षणो-
पायमं कृष्णलेश्याविपरिणामजीवगच्छितं बु चित्तिसिद्धपक्षः । मरनं निम्मूलमप्यंतु कडिदुं, स्कंधमने
कडिदुं, शाखेपने कडिदुं, उपशाखेपने कडिदुं, मरनं नोपसिद्धे पण्णत्तने तिरिदुं, इत्थि विद्दिदुं ध्वने १०
मेलुधेमे वितापुवेतुं मनेविनालापमवा कृष्णलेश्यादि पटप्रकारव जीवगच्छो ययाक्रमविदं कम्ममं बु-
दक्कुं । अपिदनेयक कर्माधिकारं तोवहुं ॥

अनतरं लक्षणाधिकारमं गायानवकर्तव्यं पेज्जयं ॥

चंडो ण मुचइ वेरं भंडणसीलो य धम्मदयारहिओ ।

दुट्ठो ण य इदि वसं लक्खणमेयं तु किण्हस्स ॥५०९॥

चंडो न मुंचति बेरं भंडनशीलश्च धर्मवयारहितः । दुष्टः न चेति वसं लक्षणमेतत्तु
कृष्णस्य ॥

ध्वः तोवकोपनुं न मुंचति बेरं येरमं यिद्वनत्तं । भंडनशीलश्च युद्धशीलं धर्मवयारहितः
धम्मं वपेपुमित्तवन् दुष्टः दुष्टं न चेति वसं वसवत्तिपप्यनुमत्तं । एतत्लक्षणं इतप्य लक्षणमनुत्तं तु

कृष्णावर्णकैकलेश्यायुक्तपटप्रमिकाः पुण्याः पयः परिभ्रष्टाः अरूपमध्यदेशे फलभरितमेकं वृक्षं दृष्ट्वा ते
विचिंतयन्ति । तत्र आद्यः—वृक्षं निर्मूलं छित्वा, अन्यः स्कन्धं छित्वा, परः शाखा छित्वा, अन्यः उपशाखा
छित्वा, परो वृक्षावर्धं फलान्येव छित्वा, अन्यः पतितान्येव गृहीत्वा च फलान्यपोति यन्मनःपूर्वकं वचः
वत्कमश्चस्त्रासां कर्म भवति ॥५०७-५०८॥ इति कर्माधिकारः ॥ अथ लक्षणाधिकारं गायानवकेनाह—

चण्डनस्तीक्ष्णकोपनः बेरं न मुञ्चति, भण्डनशीलश्च युद्धशीलश्च धर्मवयारहितः दुष्टः निर्दयो यत्र नैति

कृष्ण आदि एक-एक लेश्यावाले छह पथिक मार्ग भूल गये । वनके मध्यमें फलोंसे
छेदे हुए एक वृक्षको देखकर वे विचार करते हैं—कृष्णलेश्यावाला विचारता है कि वृक्षको २५
जड़से उखाड़कर इसके फल खाऊंगा । नीललेश्यावाला विचारता है कि इस वृक्षके स्कन्धको
काटकर फल खाऊंगा । कपोतलेश्यावाला विचारता है, इसकी बड़ी डाल काटकर फल
खाऊंगा । तेजो लेश्यावाला विचारता है इसकी छोटी डाल काटकर फल खाऊंगा । पद्म-
लेश्यावाला विचारता है वृक्षको हानि न पहुँचाकर केवल फल ही खोड़कर खाऊंगा । शुक्ल- ३०
लेश्यावाला विचारता है गिरे हुए फलोंको ही खाऊंगा । इस प्रकार मनपूर्वक जो वचन
होता है यह क्रमसे उन लेश्याओंका कार्य होता है ॥५०७-५०८॥

अब नौ गायानांसे लक्षणाधिकार कहते हैं—

वीर क्रोधी हो, बेर न छोड़े, लड़ाई-शगड़ा करनेका स्वभाव हो, दया-धर्मसे रहित

पेररं कोपिसुगुं बहुप्रकारदिवं पेररं निदिसुगुं । बहुप्रकारदिवं पेररं रूपिसुगुं । शोकबहुलुं भयबहुलुं परनं सैरिसनुं परनं परिमविसुगुं तन्न बहुप्रकारदिवं प्रसंसयं मादिकोळुं ।

ण य पत्तियद् परं सो अप्पाणं यिव परं पि मण्णतो ।

धूसद् अभित्थुवंतो ण य जाणद् हाणि वडिद्ध वा ॥५१३॥

न च विदवसिति परं सः आत्मानमिव परमपि मन्यमानः । तुष्यत्यभिष्टुवतो न च जानाति हानिं वृद्धिं वा । ५

सः अंतप्य जीवं परनं नंबुवनल्लं तन्तंतेये एंडु परनं बघेथुं । तन्न पोमळुत्तिरलु संतोपिसुगुं तनगं परंगं हानियुमं वृद्धियुमं न जानाति अरियं ।

मरणं पत्थेद् रणे देद् सुबहुगं पि धुव्वमाणो दु ।

ण गणद् कज्जाकज्जं लक्खणमेयं तु काउत्स ॥५१४॥

मरणं प्रार्थयति रणे वदाति सुबहुकमपि स्तुतः । न गणयति कार्प्याकार्प्यं लक्षणमेतत्कपोतलेऽस्य । १०

काळगबोळु मरणमं बयसुगुं स्तुतिमाळंगे बहुयेनमनोगुं । कार्प्यमुमनकार्प्यमुमं गणिदमुयनल्लनित्तु कपोतलेऽयेयमनुळंगे लक्षणमक्कुं ।

जाणद् कज्जाकज्जं सेयमसेयं च सव्वसमंपासी ।

दपदाणरदो य मिद् लक्खणमेयं तु तेउत्स ॥५१५॥

जानाति कार्प्याकार्प्यं सेयमसेयं च सर्वसमदर्शी । दयादानरतश्च मुहुर्लक्षणमेतत्तेजो- १५

पैरस्मि कुप्यति, बहुधा परं निन्दति, बहुधा परं दुष्यति, च शोकबहुलः, भयबहुलः, परं न सहते परं परिभवति आत्मानं बहुधा प्रसंसति ॥५१२॥

स परं न प्रत्येति—न विदवसिति आत्मानमिव परमपि मन्यमानः अभिष्टुवतः परस्परं तुष्यति स्वपरयोर्हानिवृद्धौ न च—नैव जानाति ॥५१३॥ २०

रणे मरणं प्रार्थयते, स्तुतिं कुर्वते बहुधनं (स्तूयमानस्तु बहुकमपि धनं) वदाति, कार्यमकार्यं च न गणयति इत्येतत्कपोतलेऽस्य लक्षणं भवति ॥५१४॥

दूसरोपर बहुत फोध करता हो, दूसरोकी बहुत निन्दा करता हो, दूसरोको बहुधा २५
बोप लगाता हो, बहुत शोक करता हो, बहुत डरता हो, दूसरोको अच्छा न देख सकता हो,
अन्यकी निन्दा और अपनी बहुत प्रशंसा करता हो, दूसरोका विश्वास न करता हो,
दूसरोको भी अपनी ही तरह अविविश्वास करनेवाला मानता हो, प्रशंसा करनेवालेपर परम
प्रसन्न हो, अपनी और परकी हानि-वृद्धिकी परवाह न करता हो, युद्धमें मरनेको तैयार हो,
अपनी स्तुति करनेवालेको बहुत कुछ दे दाढता हो, कार्य-अकार्यको न जाने, ये सब कपोत- ३०
लेट्यावालेके लक्षण हैं ॥५१२-५१४॥

लेखाणां खलु अंसा छन्वीसा ह्येति तत्त्व मज्झिमया ।

आउगयंधणजोग्गा अट्ठद्वगगसिक्कालभवा ॥५१८॥

लेखानां खल्वंशाः षड्विंशतिर्भवन्ति तत्र मध्यमगाः । आयुर्वधनयोग्याः अप्पाप्पापकर्ष-
कालभवाः ।

शिला भेदसमान	पृथ्वी भेदसमान	धूम्रीरेखासमान	जल रेखासमान
उ ००००००० ज	उ ०००००००००० ज	उ ००००००००००० ज	उ ००००००० ज
कु १ ० ११	कु १ ११२१३४५६७ ११११११११११ २१ ३	तेज ६१११३१२११ ४११११११०१० ३ २० म ८	शु १ ०

आहं लेखयोग्यो अंशमकृन्तिनुं कूडि षड्विंशतिगच्छन्तु २६ । अवेतं दोडे कृष्णाद्यभुभलेख्या-
प्रयवक्कं जघन्यमध्यमोरकृष्टगच्छं प्रत्येकं मूकमूरागलोभतंशगच्छन्तु । शुक्ललेख्यादि शुभलेखाप्रय-
वकर्मतेयोभतंशगच्छन्तु- । मा कपोतलेखयेय उत्कृष्टांशदिवं मदे तेजोलेखयेय उत्कृष्टांशदिवं पिदे
कपायोदयस्थानगच्छ नहु ।

लेख्या
४१५६१६१५४
४१४४४१११
स्थिति

वगाहं लेखयोग्यं यथासंभवगच्छान्तुर्वधयोग्यमध्यमा- १०

पहलेखानामंशा जघन्यमध्यमोरकृष्टगच्छंशदशादश । पुनः कपोतलेखोत्कृष्टांशदशे तेजोलेखोत्कृष्टांशाद्या-
कपायोदयस्थानेषु मध्यमांशा आयुर्वधनयोग्या अष्टौ । एवं षड्विंशतिर्भवन्ति । तेषु—

शिला	पृथ्वी	धूम्री	जल
उ ०००००० ज	उ ०००००० ज	उ ०००००० ज	उ ०००००० ज
कु १	१ २ ३ ४ ५ ६	६ ५ ४ ३ २ १	ग १
० १	१ १ १ ४ ४ ४	४ १ १ १ ० ०	०
	२	३	
	३	२	
	० ० ० ०	० ० ० ०	

मध्यमांशाः

मध्यमा अष्टौ अप्पापकर्षकाले संभवन्ति । तद्यथा—भुज्यमानायुरपक्क्यापकृष्ण परमवायुर्वन्धते इत्याकरः ।
अपकर्षाणां स्वरूपमुन्वते-कर्मभूमितिर्गमनमुष्णाणां भुज्यमानायुर्वधन्यमध्यमोरकृष्टं विवक्षितमिदं ६५६१ अत्र

उहं लेखाओंके उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्यके भेदसे अठारह अंश होते हैं । पुनः १५
कपोतलेखाके उत्कृष्ट अंशसे आगे और तेजोलेखाके उत्कृष्ट अंशसे पहले कपायके
उदयस्थानोंमें आठ मध्यम अंश हैं जो आयुर्वधनके योग्य होते हैं । इस प्रकार छन्वीस अंश
होते हैं । आठ मध्यम अंश अपकर्ष कालमें होते हैं । जो इस प्रकार हैं—भुज्यमान अर्थात्
वर्तमानमें जिसे भोग रहे हैं उस आयुका अपकर्षण कर-करके परमवकी आयुका वन्ध

कण्टिवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

२	३
१	३
३	९
२०	८१
८१	२४३
२४३	७२९
७२९	२१८७
६५६१ सख्यायुः	

इल्लि बिशेषनिर्णयं माहत्पडुगुमवेत्ते बोडे आवनोर्ब्ब सोपक्रमायुष्यनत्प जीव सोपक्रमा-
युष्यने वे बुदेने बोडे कदलीपातायुष्यमनुज्जने बवत्थंमदु कारणमायि देवनारकव भोगभूमिजव-
मनुपक्रमायुष्यरे बुदत्थं । आ सोपक्रमायुष्यजोवंगळु तंतम्म भुज्यमानायुष्यत्थितियोलु त्रिभिभाग-
मतिक्रांतमागुत्तिरलु दोवत्रिभागव प्रथमसमयं मोदलोडु अंतर्मुहूर्तपम्यंतं परभवायुष्यप-
प्रायोगपरप्पव । मुपेळ्ळा संक्षेपाद्विपम्यंतमल्लि आयुस्तोकबंधादा कालाम्यंतरबोडायुष्यप्रायो-
ग्यपरिणामंगळिव केल्यु जोवंगळु अष्टवारंगळं केल्यु जोवंगळु सप्तवारंगळं केल्यु जोवंगळु
षड्वारंगळं केल्यु जोवंगळु पंचवारंगळं केल्यु जोवंगळु चतुर्वारंगळं केल्यु जोवंगळु त्रिवारं-
गळं केल्यु जोवंगळु द्विवारंगळं केल्यु जोवंगळं कवारंगळं परिणमिसुववेके बोडे स्वभावदिवनेतद्वध-
प्रायोग्यपरिणमनमा जोवंगळुने कारणांतरनिरपेक्षमे बुदत्थं । संदुष्टिरचने ॥

अथ बिशेषनिर्णयः क्रियते । सोपक्रमायुष्काः कदलीपातायुष्काः तेन देवनारकभोग-
भूमिजा मनुपक्रमायुष्का भवन्ति । सोपक्रमायुष्का उक्तरीत्या आयुर्वजन्ति । १०
तत्रायुस्तोक्तबन्धादाम्यन्तरे तयोप्यपरिणामः केचिदष्टवारं केचित्सप्तवारं केचित्
षड्वारं केचित्पञ्चवारं केचित् चतुर्वारं केचित्त्रिवारं केचित् द्विवारं केचित्कवारं
परिणमन्ति । स्वभावादेव तद्बन्धप्रायोग्यपरिणमनं जीवानां कारणान्तरनिरपेक्ष-
मित्यर्थः । संदुष्टिः—

निर्णय करते हैं । जिनका विपादिके द्वारा कदलीपातमरण होता है वे सोपक्रम आयुवाले
होते हैं । अतः देव, नारकी और भोगभूमिया निरुपक्रम आयुवाले होते हैं । सोपक्रम आयु-
वाले उक्त रीतिसे आयुबन्ध करते हैं । उन अपकर्षोंमें आयुबन्धके कालमें आयुबन्धके योग्य
परिणामोंसे कोई आठ बार, कोई सात बार, कोई छह बार, कोई पाँच बार, कोई चार बार,
कोई तीन बार, कोई दो बार, कोई एक बार परिणमन करते हैं । अपकर्ष कालमें ही जीवोंके
आयुबन्धके योग्य परिणमन स्वभावसे होता है । उसका कोई अन्य कारण नहीं है । आयुके २०

पद्मलेख्योत्कृष्टांशविदं मृतराव जीवंगळु सहस्रारमुपयाति सहस्रारकल्पदोलु पुटदुवव खलु स्फुटमाणि । पद्मलेख्याजघन्यांशविदं मृतराव जीवंगळु, सनत्कुमारं च माहेन्द्रमुपयाति सनत्कुमार कल्पदोलं माहेन्द्रकल्पदोलं पुटदुवव ।

मज्झिमअंसेण मुदा तम्मज्झं जाति तेउजेट्ठमुदा ।

साणक्कुमारमाहिंदंतिमचकिंदसेदिमि ॥५२२॥

मध्यमांशेन मृताः तन्मध्यं याति तेजोऽप्येष्टमृताः सानत्कुमारमाहेन्द्रांतिमचक्रेद्रकश्रेण्या ।

पद्मलेख्यामध्यमांशविदं मृतराव जीवंगळु तन्मध्यं याति सहस्रारकल्पादिदं कळपे सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पंगळिदं भेले यथासंभवरानि पुटदुवव । तेजोलेख्योत्कृष्टांशविदं मृतराव जीवंगळु सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पंगळु चरमपटलचक्रेद्रकप्रणिधिगतश्रेणीबद्धविमानंगळुमुटदुवव ।

अवरंसमुदा सोहम्मोसाणादिमउडुमि सेदिमि ।

मज्झिम अंसेण मुदा विमलविमानादिवलमव्दे ॥५२३॥

अवरांसमृताः सौधर्मज्ञानाविभूतश्चत्वीद्रके श्रेण्या । मध्यमांशेन मृताः विमलविमानादिवलभदे ।

तेजोलेख्याजघन्यांशविदं मृतराव जीवंगळु सौधर्मज्ञानकल्पंगळाविभूतश्चत्वीद्रकबोळं श्रेणीबद्धबोळं पुटदुवव । तेजोलेख्यामध्यमांशविदं मृतराव जीवंगळु सौधर्मज्ञानकल्पद्वितीयपटलविद्रकं विमलविमानमदु मोबलाणि सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पंगळु द्विचरमपटलविद्रकं बलभद्रविमानमवकु मल्लि पर्यंतं पुटदुवव ।

पद्मलेख्योत्कृष्टांशेन मृता जीवाः सहस्रारकल्पमुपयान्ति खलु स्फुटम् । पद्मलेख्याजघन्यांशेन मृता जीवाः सानत्कुमारं माहेन्द्रं चोपयान्ति ॥५२१॥

पद्मलेख्यामध्यमांशेन मृता जीवाः सहस्रारकल्पादयः सानत्कुमारमाहेन्द्रद्वयानुपरि यथासंभवमुत्पद्यन्ते । तेजोलेख्योत्कृष्टांशेन मृता जीवाः सानत्कुमारमाहेन्द्रकल्पगोचरमपटलचक्रेद्रकप्रणिधिगतश्रेणीबद्धविमानैः उत्पद्यन्ते ॥५२२॥

तेजोलेख्याजघन्यांशेन मृता जीवाः सौधर्मज्ञानकल्पयोरुपरिदुववश्चत्वीद्रके श्रेणीबद्धे उत्पद्यन्ते । तेजोलेख्यामध्यमांशेन मृता जीवाः सौधर्मज्ञानकल्पद्वितीयपटलस्येन्द्रकं विमलनामकपादि कुरवा सानत्कुमारमाहेन्द्रद्विचरमपटलस्येन्द्रकं बलभद्रनामकं तत्पर्यन्तम् उत्पद्यन्ते ॥५२३॥

पद्मलेख्याके उत्कृष्ट अंशसे मरे जीव सहस्रारकल्पमें उत्पन्न होते हैं । पद्मलेख्याके अघन्य अंशसे मरे जीव सानत्कुमार माहेन्द्र स्वर्गमें उत्पन्न होते हैं ॥५२१॥

पद्मलेख्याके मध्यम अंशसे मरे जीव सहस्रारकल्पासे नीचे और सानत्कुमार माहेन्द्रसे ऊपर यथासंभव उत्पन्न होते हैं । तेजोलेख्याके उत्कृष्ट अंशसे मरे जीव सानत्कुमार माहेन्द्र कल्पके अन्तिम पटल चक्रेन्द्रक सम्बन्धी श्रेणीबद्ध विमानोंमें उत्पन्न होते हैं ॥५२२॥

तेजोलेख्याके अघन्य अंशसे मरे जीव सौधर्म ऐशान कल्पके प्रथम श्रुत नामक इन्द्रके श्रेणिबद्ध विमानोंमें उत्पन्न होते हैं । तेजोलेख्याके मध्यम अंशसे मरे जीव सौधर्म ऐशान कल्पके द्वितीय पटलके विमल नामक इन्द्रकसे लेकर सानत्कुमार माहेन्द्रके द्विचरम पटलके बलभद्र नामक इन्द्रक पर्यन्त उत्पन्न होते हैं ॥५२३॥

गङ्गोऽङ्गं चरमपटलद्वयं संप्रत्यक्षलितेन्द्रकविलिखितं जायते पट्टद्वयम् । नीललेख्यामध्यमाङ्गोऽङ्गं मृतराव-
जोवङ्गं ततोऽप्यध्वमेधेयमवपटलद्वयं संप्रत्यक्षलितेन्द्रकविलिखितं केलये चतुर्थपूष्पि अङ्गनेयं पटल-
सप्तकङ्गोऽङ्गं पञ्चमपूष्पिअरिप्रेष्य पटलपञ्चकङ्गोऽङ्गं चतुर्थपटलद्वयं अर्धेन्द्रकविलिखितं मेले
मध्यदोऽङ्गं यथायोग्यमाङ्गं जायते पट्टद्वयम् ।

वरकाओदंसमुदा संजलिदं वांति तदियणिरयस्स ।

सीमंतं अक्षरमुदा मज्झे मज्झेण आयंते ॥५२६॥

उत्कृष्टकपोतांगमृताः संयुजितं याति तृतीयनरकस्य । सीमंतं अवरमृताः मध्ये मध्येन जायते ॥

कापोतलेद्योतकृष्टांशदिवं मृतराव जोवंगन्नु ततोयपुम्बिमेधेय नवपटलंगळोञ्ज द्विचरमा-
ष्टमपटलव संन्यलितेद्रकवोञ्जपुट्टदुषय । कैलंयरुगलु चरमसंप्रन्यलितेद्रकविलबोर्ज पुट्टदुवरंजो ।
बिदोयमरिपत्यदुगु । कापोतलेद्योतकृष्टांशदिवं मृतराव जोवंगन्नु सीमंतं याति धम्मंय प्रपन-
पटलव सीमंतोद्रकविलबोञ्जपुट्टदुषय ।

कापोतलेऽप्यामप्यमांशदिवं मृतराद जीवंगन्तु सोमंतद्वकदिव केळयम पन्नेरदु पदलंगळोळं
मेपेय द्विचरमसंजवलितंइकधिलदिव मेलन पदलंपेन्नेकेळरोळु द्वितोपपुण्ड्रशेष पन्नांतु पदल-
गळोळं ययायोप्यमागि पृट्ट वर ।

इति विधेयो ज्ञातव्यः । नीलसेदनाजैपञ्चाशेन मृता जीवाः बालकप्रधानवपदलेषु चरमपदलस्य संप्रग्वलितेन्द्रके जायन्ते । नीलसेदनाम्यांशेन मृताः जीवाः तृतीयपुष्पीनवमपदलस्य संप्रग्वलिभ्रकादशवपदलेषु पृथ्वीपदलसप्तके पञ्चमपृथ्वीवपदलसप्तम्यम्रेन्द्रकादरि यथाशेषं जायन्ते ॥२५॥

कापोतलेखेयोहृष्टांघ्रिं मृता जीवाः तृतीयपङ्क्तीयनपटलेषु द्विचरमाष्टमपटलस्य संश्रालितेन्द्रके उत्पद्यन्ते ।
 केचिन् चरमसंश्रव्यवित्तेन्द्रकेऽतोऽत्र विद्येतेऽप्यगस्त्यः । कापोतलेषामात्रवर्णयोऽंघ्रिं मृता जीवाः पद्मत्रयपटलस्य
 क्षीमतेन्द्रके उत्पद्यन्ते । कापोतलेषामष्टमांघ्रिं मृता जीवाः क्षीमतेन्द्रकादपस्तनद्वादशपटलेषु विषाया
 द्विचरमसंश्रव्यवित्तेन्द्रकादुपरितनस्रमपटलेषु द्वितीयपङ्क्त्येकादशपटलेषु च वषायोध्यमत्पद्यन्ते ॥५२६॥

होते हैं। नीललेङ्गोंके मध्यम अङ्गसे मरे जीव तीसरी पृथ्वीके नीचे पटलके सम्प्रक्षलित इन्द्रक बिलेसे नीचे और चतुर्थ पृथ्वीके सातों पटलोंमें तथा पंचम पृथ्वीके चतुर्थ पटल सम्बन्धी आग्नेन्द्रकसे ऊपर यथायोग्य उत्पन्न होते हैं ॥५२५॥

कापोतलेइयाके वल्गुष्ट अंगसे भरे जीव तीसरी पृष्ठकी नौ पटलोंमेंसे द्विचरम आठवें पटलके संभवलित इन्द्रक चिलेमें उत्पन्न होते हैं। कोई-कोई अन्तिम संप्रचलित इन्द्रकमें भी उत्पन्न होते हैं यह विशेष जानना। कापोतलेइयाके जघन्य अंगसे भरे जीव घर्मा नामक प्रथम पृष्ठकी प्रथम पटल सम्बन्धी सीमन्त इन्द्रकमें उत्पन्न होते हैं। कापोतलेइयाके मध्यम अंगसे भरे जीव सीमन्त इन्द्रकसे नीचेके चारह पटलोंमें मेघा नामक तीसरी पृष्ठकी द्विचरम संभवलित इन्द्रकसे ऊपरके सात पटलोंमें और दूसरी पृष्ठकी ग्यारह पटलोंमें यथायोग्य उत्पन्न होते हैं ॥१२६॥

१. म^०लेगलेलरोलं । २. जपन्यायेनापि मृता. । मु. । ३. छ. संप्रज्वं ।

मोदलाणि सर्वात्यंतिद्विजलसानमाद मुरदं धर्मे मोदलाणि अवधिस्थानायसानमाद
वस्त्वलेस्यानुगम्य नरत्त्वमुमं तिम्यंस्त्वमुमं याति येदुचय । एळनेय गत्यधिकारं तिवदुं ॥

नंतरं स्याम्याधिकारं गायासप्तकविदं पेळ्दपं—

काऊ काऊ काऊ नीला नीला य नीलकिण्हा य ।

किण्हा य परमकिण्हा लेस्सा पदमादिपुढवीणं ॥५२९॥

गापोतो कापोतो तथा कापोतो नीले नीला च नीलकृष्णे च । कृष्णा च परमकृष्णा लेस्साः
दिपुष्पीनां ॥

धर्मादिसप्तपुष्पिगल नारकागे ययासंख्यमाणि धर्मेय नारकमे कपोतलेस्याजघन्यमवकुं ।
नारकमे कपोतलेस्यामध्यमांशमवकुं । मेघेय नारकमे कपोतलेस्योत्कृष्टमु नीललेस्याजघन्या-
स्कुं । अंजनेय नारकमे नीललेस्यामध्यमांशमवकुं । अरिष्टेय नारकमे नीललेस्योत्कृष्टमु
लेस्याजघन्यांशमुमस्कुं । मघविय नारकमे कृष्णलेस्यामध्यांशमवकुं । माघविय नारकमे
लेस्योत्कृष्टांशमुमस्कुं ।

णरतिरियाणं ओषो इगिविगले तिणिण चउ असणिणस्स ।

सणिण-अपुण्णगमिच्छे सासणसम्मे वि असुइतियं ॥५३०॥

नरतिरिचामोष एकविकले तिलः चतस्रोऽसंज्ञिनः संशयपूर्णमिष्यादृष्टौ सासादनसम्यगृष्टा-
म्यधुनप्रयो ॥

नरतिरिचामोषः नरतिर्मयचरुगळो प्रत्येकं सामान्योक्त पङ्कलेस्येगळणुववरोळु तिम्यंचरोळु
कविकलेपु एकद्वियजीवंगळ्यां विकलत्रयजीवंगळ्यां तिलः कृष्णाद्यनुभलेस्याप्रयमेयवकुं ।

त्यदयन्ते । भवनप्रमादि तर्वादीमिदपन्तमुपः पर्माववधिस्थानान्तवारकादय स्वस्त्वलेस्यानुगं नरतिर्मयं
गन्ति ॥५२८॥ इति गत्यधिकारः ॥ अथ स्वाम्याधिकारं गायासप्तकेनाह—

प्रपमादिपुष्पीनारकाया च लेस्योष्यते-उत्र धर्मायां कपोतत्रयन्यादाः । वंशाया कापोतमध्यमायाः ।
मेघाया कापोतोत्कृष्टाशनीलत्रयन्यादा । अंजनाया नीलमध्यमायाः । अरिष्टाया नीलोत्कृष्टाशकृष्णत्रयन्यादा ।
मघवाया कृष्णमध्यमायाः । माघवाया कृष्णोत्कृष्टाः ॥५२९॥

नरतिरिचार् प्रत्येकं ओषः सामान्योत्कृष्टपदलेस्वाः स्युः । उत्र एकैन्द्रियविकलत्रयजीवंगु द्विषः—

कायिक, वायुकायिक, विकलत्रय, असंज्ञिर्पंचेन्द्रिय और साधारण बनस्पति जीविके उत्पन्न
होते हैं । भवनत्रिकसे लेकर सर्वाथसिद्धि पर्यन्त देव और धर्मा पृथिवीसे उत्पन्न
पृथ्वी तकके नारकी अपनी-अपनी लेखाके अनुसार मनुष्य और तिर्यच होते हैं ।

गतिअधिकार समाप्त हुआ ।

आगे सात गाथाओंसे स्वामी अधिकार कहते हैं—

प्रथम पृथ्वी आदिके नारकियोंको लेखा कहते हैं—धर्माय कपोतका उत्कृष्ट अंश
अंश है । वंशाय कपोतका मध्यम अंश है । मेघाय कपोतका उत्कृष्ट अंश
अंश है । अंजनाय नीलका मध्यम अंश है । अरिष्टाय नीलका उत्कृष्ट अंश
जघन्य अंश है । मघवाय कृष्णका मध्यम अंश है । माघवाय
मनुष्यों और तिर्यचों 'ओष' अर्थात्

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

कर्मावृत्ति जीवतत्त्वप्रतीपका
मरुहुं । भवनप्रसर निर्वृत्यपम्याप्रक्रम्यं जगुभतेदयाप्रमेयकुमिरिबमे दोषबेमानिदनिर्वृत्यपम्याम-
निरुद्धं । तत्तम्य सेदयेगजेयपुत्रे बु भुजितमरित्यपम्यां । एतदेव स्याम्यधिकारं तोहनुं ।

कानं पश्चात्तरुणं ततश्च सदयगजयुग्मं
 जनंतरे सायनाधिहारमनो वे गाथागूर्वादिं पेन्द्रपं ।
 गणोद्यमं पादिदं सरीरवर्णो

वृण्णोदयसंपादिद सरीरवण्णो दृ दग्गदो लेस्सा ।
 वेण्णोदयसंपादिद सरीरवण्णो दृ दग्गदो लेस्सा ।

मोहदुदयसञ्जोवममोवसमरसुपज्जोवकंदणं भावो ॥५३६॥

[illegible][illegible]

अभिनये साधनाधिकार तिरुमुत्तमः—
अनन्तरं संस्थाधिकारं गायाम् यदुक्तिं येन्द्रियः—

अनंतर संस्थाधिकारमै गावा घटकरिब पत्रद्वारा
अनुमानानुसारचुनिविदावाला शुधनंतरद्वारा भवति । भवनवसेदाः अर्थात्काले अनुमानितेदा एव, अनेन
वैमानिकाः अर्थात्काले १९९९तसेदा एवति मुक्तिं आगच्छत् ॥१९८४-१९९॥ इति स्वाम्यधिकारोऽष्टमः ॥ १९
अथ गावनाधिकारमाह—
सर्वसंविद-नंजित धारीरवर्षी इत्यनेदा भवति । असपत्तान्धगुप्तपानवकुले
सर्वसंविद-धारीरवर्षी इत्यनेदा भवति । सर्वसंविद-धारीरवर्षी इत्यनेदा भवति । सर्वसंविद-धारीरवर्षी इत्यनेदा भवति ।

अथ माधवनाथिहारमाह—

[illegible]

मन्त्रः यः भावेनेना दीर्घात्प्राप्तमन्त्रेनोक्तः इति ।
इति प्राप्ताधिकारो नमः । अथ संवत्साधिकारं प्राप्ताधिकारम्—
मन्त्रलेख्यायाः कृष्टं अंशं होता है । अथपि कृष्टं देव अपराधं अथपि तीन अनुभ
लेख्यायाः ही होते हैं । इससे यह गृहित किया जानना कि वैमानिक देवों कि अपराधकालमें
अपनी-अपनी लेख्या ही होते हैं । १५३४-५३५॥
अथपि अथपि अधिकार समाप्त हुआ ।
अथपि अथपि अधिकार समाप्त हुआ । अथपि अथपि अधिकार समाप्त हुआ । अथपि अथपि अधिकार समाप्त हुआ ।

अपनी लक्ष्य ही होती है। विरट-र-
थाठयो। स्वामि अधिकार समाप्त हुआ।
अधिकार कहते हैं—

आठवां स्वामि अधिकार कहते हैं—
अथ साधनाधिकार कहते हैं—

[illegible]

नौवाँ माधनाधिकार समाप्त हुआ ।

नौर्षा माधनाधिकार समाप्त हुआ।
आगे छह गाथाओंसे संख्याअधिकार कहते हैं—

मवक्तुं । भवनययत्र निर्वृत्यपम्याप्रक्रमं अद्भुतलेख्याश्रयमेयः कुमिवरिदमे देयवेमानिः कनिर्वृत्यपम्याप्र-
क्रमं पम्याप्रक्रमं ततस्म लेख्यपञ्चपुर्वं मुञ्चितमरियत्पदुगु । एतन्नेय स्वात्म्यधिकारं तोदुहुं ।
अनन्तरं साधनाधिकारमनो वे गाथासुवर्चिवं पेञ्चवर्षं ।

वृष्णोदयसंपादिद सरीरवृष्णो दु दन्तदो लेस्ता ।

मोहोदयस्योन्नतमोवसमरखयत्रजीवहृदणं भावो ॥५३६॥

५

वर्णोदयसंपादितसरीरवर्णलु इत्यतो लेस्या । मोहोदयस्योपपन्नमोपपन्नमशयत्रीरस्यंनं

भावः ॥

वर्णनामकर्मोदयसंपादितसंज्ञितसरीरवर्णमनु इत्यलेख्येयम् । असंयतरीत्र मोहोदयस्यं
देहाविरतप्रदोऽहं मोहोदयोपपन्नमिवं उपपन्नमरोऽहं मोहोदयमविवं धवकरोऽहं मोहोदयस्यं
संज्ञितसंस्कारं जीवस्यंमंनु जेयमकुमनु भावलेख्येयम् । मा जीउनपरिणामप्रदेनासंज्ञित
भावलेख्ये माहत्पददुर्वंयुवार्थं । अद्भु कारमविवं योगरुपायंमंनंनं भावलेख्ये एतद्गु वेदत्पद-
वक्तुं । को भूतनेय साधनाधिकारं तदुहुं ॥

अनन्तरं संख्याधिकारं गाथा यदुक्तिवं पेञ्चवर्षः—

अनुविद्यानुतरपगुंसंविमानां गुणोद्गच्छावो भवति । भवनययदेवाः अयस्यकाने अनुवर्तिनां एव, अनेन
वैमानिषाः अयस्यविरासे कश्चिदनेत्या एवेति मुञ्चितं जातमय ॥५३६-५३५॥ इति स्वात्म्यधिकारोऽष्टमः ॥ १५
अथ साधनाधिकारमाह—

वर्णनामकर्मोदयेन सारादि-संज्ञित सरीरवर्णो इत्यनेनया भवति । अयस्यपुनरुपपन्नमनुके
मोहोदय उपपन्न, देहाविरतमे धवोदयमेव, उपपन्नमे उपपन्नमे, धवके धवमे व संज्ञितसंज्ञितो जीवस्यंन-
संज्ञः व भावलेख्यो जीवस्यंनमप्रदेनासंज्ञितमेव इत्यर्थः । तेन वारमेव जीवस्यंनमना भावलेख्येयम् ॥५३५॥
इति साधनाधिकारो नवमः ॥ अथ मन्त्राधिकारं साधयत्वेनाह—

३०

मूललेख्याका अहं अहं होता है । भवनययदेव देव अयस्यं अयस्यं तं अहं
लेख्याका हो होते हैं । इससे यह मुचित किया जानना कि वैमानिक देवोंके अयस्यंनमने
अपनी-अपनी लेख्या हो होती है ॥५३५-५३५॥

जाउयां स्वामि अधिकार ममात्त हुआ ।

अथ साधनाधिकार कहते हैं—

३१

वर्णनाम कर्मके उदयसे उत्पन्न हुआ सरीरका वर्ण इत्यनेनया है । अयस्यं सन्नि-
धार गुणरुपायोंमें मोहके उदयसे, देहाविरत आदि तीन गुणस्थानोंमें मोहके उदयसे
से, उत्पन्न भवतीं धार गुणरुपायोंमें मोहोदयके उत्पन्नसे, धवक धवके व संज्ञितसंज्ञित
मोहोदयके धवसे ओ संस्कार उत्पन्न होता है जिससे जीवका स्वरूप स्वरूप है व संज्ञित
है । अर्थात् जीवके परिणामों और वदेनोंका संज्ञित होता स्वरूप है । अर्थात्
संज्ञित होता स्वरूप है और धवलोका संज्ञित होता स्वरूप है । अर्थात्
भावलेख्यो वही है ॥५३५॥

मोहो साधनाधिकार
आगे यह साधनाधिकार

आ ।

३२-३३

हेतुनाशान्नियमाया भावाद् किंहास्ययोः ।

नेउनिपायमेवञ्चा मंग्गानमेवञ्चवायकना ॥५३९॥

केवलज्ञानाभयकलागाः भावाः हृदयप्रदीपाः । तेषामवस्थासंख्यायाः अष्टादश-
ह्रस्वाः ॥

भाष्यप्रमाणविशिष्टं हृत्पाठिभिरुपेक्षितं ननु तदेकं संवत्सरमायनैकमयमासश्च सप्तत्य-
गताम् किंचित्प्रक्रमणयेष्यते। भा। इ। कं। यो। छ। क। कं = इति। चेत्यादि। मातङ्गना

प्र ११- फल ११ के। सम्यक् के मार्ग के फल ११ के। वेदोक्तः।

1-	11-	11-	a
	1	1-	

[illegible]

सं=००११९००।पु०।

जोर्गियादो भद्रिया विरिससगण्डिसन गंगवायो इ ।

एहम् अंगुष्ठान् य अंगुष्ठान् तु भुजनिभम् ॥२४०॥

10

अथोपनिषद्परिचयः। अथोपनिषद्परिचयः। अथोपनिषद्परिचयः। अथोपनिषद्परिचयः। अथोपनिषद्परिचयः।

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1- 11-
1-

● 此項試驗係在 1950 年 10 月 1 日以前，由本局委託中國醫藥工業公司，在重慶試驗場，以各種藥品，分別試驗，其結果如下：

[illegible]

1. 1945年10月1日，日本投降，结束了长达十四年的侵华战争。中国人民从此开始了重建家园、恢复生产的新阶段。

सद्वाणसमुद्रादे उववादे सन्वलयमसुद्धानं ।

लोयस्सासंखेज्जदिभागं खेचं तु तेजतिथे ॥५४३॥

स्वस्थाने समुद्रपाते उपपादे सर्वलोकोऽनुभावा । लोकास्पासंतयेयभार्गं क्षेत्रं तु तेजस्त्रितये ॥

अनुभावा कृष्णनोलकपोताशुभलेऽयाप्रयव स्वस्थानबोळं समुद्रपातबोळं उपपादबोळमितु

त्रिस्थानबोळं क्षेत्रं सम्बलोकमेयम् ॥ तेजस्त्रितये तेजःपञ्चसुभलेऽयाप्रयव स्वस्थानबोळं ५

समुद्रपातबोळं उपपादबोळमितो त्रिस्थानबोळं तु भर्तु क्षेत्रं क्षेत्रवु लोकास्पासंतयेयभार्गः सम्बलोकव

असंख्यातेरुभागमवकुमितु सामान्यविदमनुभलेऽयेगळ्यं शुभलंऽयगळ्यं त्रिस्थानबोळं क्षेत्रं

पेळत्पट्टदुहु । विरोपविदं पट्टलेऽयगळ्यो वडास्थानगळोळु क्षेत्रं पेळत्पट्टगुमस्ति क्षेत्रं बुदेनं बोडे

विषक्षितलेऽयाबोवेगळिं वरुमानकालबोळु विषक्षितपट्टविशिष्टविदमवष्टयाकाशप्रवेशगळं क्षेत्रं

मैवुदयमैवुडिल्लि सामान्यविदं स्वस्थानमं समुद्रपातमुपपादमुमं बु त्रिपदंगळोळु लेऽयेगळ्यो क्षेत्रं १०

पेळत्पट्टदुहु । विरोपविदं वडास्थानगळोळु पट्टलेऽयेगळ्यं क्षेत्रं पेळत्पट्टगुमस्ति स्वस्थानं सामान्य-

विदमो वरु भेविस्तिबोडे स्वस्थानस्वस्थानमं बु विहारपत्तस्वस्थानमं बु द्विविधमवकुं ।

सामान्यविदं समुद्रपातमो वरु भेविस्तिबोडे येवनासमुद्रपातमं बु कपायसमुद्रपातमं बु

वैकिष्णिकसमुद्रपातमं बु मारणातिकसमुद्रपातमं बु तेजःसमुद्रपातमं बुमाहारकसमुद्रपातमं बु

केवलिसमुद्रपातमं विनु समुद्रपातं समविधमवकुमुपपादमेकप्रकारमेयम् ॥ १५

विषक्षितलेऽयाबीवैवर्तमानकाले विक्षितपट्टविशिष्टवेनावष्टयाकाशः क्षेत्रम् । तत्र स्वस्थाने समुद्रपाते

उपपादे च अनुभलेऽयाभा मर्बलोकाः ॥ तेजोलेऽयादित्रयस्य तु पुनः लोकास्पासंतयेयभार्गः सामान्येन भवति

विशेषेण तु तत्र द्वापदेवैष्यते । तत्र सावतु उत्तरपञ्चामादिभेदं तनु स्वस्थानस्वस्थानं, विषक्षितपर्यायपरिणतेन

परिभ्रमिनुम्विषक्षेत्रं विहारवत्स्वस्थानमिति स्वस्थानं देवा । वेदनादिवदेन निवचारीराजबीवप्रदेवानां

वहिःप्रदेवे वडापोग्यविषर्पं समुद्रपातः । त च वेदनाकपायवैकिष्णिकमारणान्तिकवैवसाहारककेवलिवेदात् २०

वसता । परित्यक्तदूर्बलवस्य उत्तरभवप्रथमसमये प्रवर्तनमुपपाद इति द्वापदानि । तेषु स्वस्थानस्वस्थाने

वेदनासमुद्रपाते कपायसमुद्रपाते मारणान्तिकसमुद्रपाते उपपादे चेति पञ्चपदेव कृष्णलेऽयाबीवक्षेत्रं सर्वलोकः ॥

विषक्षित लेऽयावाले जीव वर्तमान कालमें विषक्षित स्वस्थानादि पदसे विदिष्ट होते

हुए जितने आकाशमें पाये जाते हैं उसका नाम क्षेत्र है । वह क्षेत्र स्वस्थान, समुद्रपात और

उपपादमें तीन अनुभ लेऽयावालोक सार्वलोक है । तेजोलेऽया आदि तीनका क्षेत्र सामान्यसे २५

लोका असंख्यातवा भाग है । विशेष रूपसे दस स्थानोंमें कहते हैं—स्वस्थानके दो भेद

हैं—स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थान । उत्पन्न होनेके प्राम-नगर आदि क्षेत्रको

स्वस्थानस्वस्थान कहते हैं । और विषक्षित पर्यायसे परिणत होते हुए परिभ्रमण करनेके

उचित क्षेत्रको विहारवत्स्वस्थान कहते हैं । वेदना आदिके कारणसे अपने शरीरसे जीवके

प्रदेशोंके उसके योग्य पाद प्रदेशमें फैलनेको समुद्रपात कहते हैं । उसके सात भेद १०

हैं—वेदना, कपाय, वैकिष्णिक, मारणान्तिक, तेजस, आहारक और केवली समुद्रपात ।

पूर्वभयको छोड़कर उत्तरभवके प्रथम समयमें प्रवर्तनको उपपाद कहते हैं । इस प्रकार ये

दस स्थान हैं । उनमें-से स्वस्थानस्वस्थान, वेदना समुद्रपात, कपाय समुद्रपात, मारणान्तिक

समुद्रपात और उपपाद इन पाँच पदोंमें कृष्णलेऽयावाले जीवोंका क्षेत्र सर्वलोक है । अव

मोयुपपादपर कृष्णलेइयाजीवंगळ संख्येयं फल राशियं माडि मारणांतिकसमुद्धातकालप्रमाणमंत-
स्मं हतं न व निच्छाराशियं माडि शुनिधिसुतं विरलु प्र स १ फ = १३ - इच्छे २७ । लब्ध-
३-५ । ५५ । २७

राशियं मूलराशिय संख्यातेरुभागमकुमा मारणांतिकसमुद्धातपवबोळु कृष्णलेइयाजीवंगळमुयु
१३ मत्तं कृष्णलेइयाप्रसपर्याप्तराशियं संख्यातविदं भागिसि बहुभागमं = ४ स्वस्थान-
३-५ ३-४ । ५

स्वस्थानशेळित्तु शेषैरुभागमं मत्तं संख्यातविदं भागिसि बहुभागमं = ४ विहारवत्स्वस्थान- ५
३-४ । ५ । ५

पदशेळित्तु शेषैरुभागमं ४ । ३-५ । ५ शेषपदंगळोळु यथायोग्यमागि दातव्यमप्युतु ।

प्रसपर्याप्तमध्यमावगाहनाजनितसंख्यातघनांगुलंगळं फलराशियं माडि विहारवत्स्वस्थानकृष्णलेइया-
जीवराशियनिच्छाराशियं माडि प्र १ फ ६९ इ = ४ लब्धराशियनपर्याप्तिसिदोडे संख्यात-
३-४ । ५ । ५

सूच्यंगुलगुणितजगतप्रतरमायं विहारवत्स्वस्थानबोळु क्षेत्रमकुं । = सु २१ । मत्तं पत्यासंख्यात-

= ४
भागः = ४ । ३-५ । स्वस्थानस्वस्थानेजतीति देवः । शेषैरुभागस्य संख्यातमत्तबहुभागो ४ । ३-५ । ५ विहार- १०
५-

= १
वत्त्वस्थाने देवः । शेषैरुभागः ४ । ३ । ५ शेषपदेयु यथायोग्यं पतिवोस्तीति ज्ञातव्यः । प्रसपर्याप्तमध्य-
५-

मावगाहनं संख्यातपनांगुलं फलराशि इत्या विहारवत्स्वस्थानकृष्णलेइयाजीवराशिमिच्छं कृत्वा—

प्र १ । फ १ । १ इ = ४
४ । ३-५ । ५ लब्धममवतिष्ठं संख्यातमूच्यंगुलगुणितजगतप्रतरो विहारवत्स्वस्थाने क्षेत्रं
५-

प्रस जीवोंके प्रमाणको संख्यातसे भाग देकर बहुभाग प्रमाण स्वस्थानस्वस्थानवाले जीव
हैं । शेष एक भागमें संख्यातका भाग देकर बहुभाग प्रमाण विहारवत्स्वस्थानवाले जीव १५
हैं । शेष एक भाग रहा सो शेष स्थानोंमें यथायोग्य जानना । प्रसपर्याप्त जीवोंकी मध्यम
अवगाहनाके अनेक प्रकार हैं । उसे बराबर करनेपर एक प्रसपर्याप्त जीवकी मध्यम अव-
गाहना संख्यात घनांगुल है । उसे फलराशि करके और विहारवत्स्वस्थान की अपेक्षा कृष्ण-
लेइयावाले जीवोंकी राशिको इच्छाराशि करो । तथा एक जीवको प्रमाणराशि करो । फलसे
इच्छाको गुणा करके प्रमाण राशिका भाग देनेपर संख्यात सूच्यंगुलसे गुणित जगतप्रतर २०
प्रमाण विहारवत्स्वस्थानका क्षेत्र आता है ।

$\frac{1}{(3)}$

॥ १ ॥ इति तत्तधनुस्तेषु ७ तद्भागभागमुत्तविस्तारं ७ अथ देवायगाहनं गच्छोः-

४।६५ = १११११

“यासो तिगुणो परिहो यासचत्तपाहो तु येत्तफळं, ७।३।७।७ येत्तफळं वेहगुणं
१०।१०।४

७।३।७।७ तावकं होइ तत्त्वत्त।”

१०।१०।४

एवो देवायगाहनं घनात्मकं पञ्च धनुषं मंगुळं गळं माइत्वेडि तो भत्तारर घनात्मकविं
गुणिसि मत्तमां गुलं गळं प्रमाणां गुलं गळं माइत्वेडि पंचात्तविं घनात्मकविं भागिसि स्वापिसि—
७।३।७।७।९६।९६।९६ अथर्ततिहो देवायगाहनं प्रमाणघनां गुलसं वनातैरुभाण-

१०।१०।४।५००।५००।५००

$\frac{1}{(3)}$

मधुमदविं स्वस्थानस्वस्थानराशिं गुणिसि ॥ १ ॥ १।४।९। मत्तमो येकायगाहनं एकावि-
४।६५ = ७५७

~~~~~

कथनयमुद्राते ४ दत्ता ॥ १ ॥ १।४।९। मत्तमो येकायगाहनं एकावि-  
४।६५ = ७५७

॥ १ ॥ १।४।९। मत्तमो येकायगाहनं एकावि-  
४।६५ = ७५७

देवायगाहनेन वासोतिगुणं वनातैरुभाण ७।३।७।७ घनां गुलं गळं पञ्चधनुषं पञ्चधनुषं पञ्चधनुषं  
१०।१०।४  
प्रमाणं गुलं गळं पञ्चधनुषं पञ्चधनुषं पञ्चधनुषं ७।३।७।७ ९६।९६।९६ अथर्ततिहो वातपनां गुल-  
१०।१०।४।५००।५००।५००

प्रकार जीवोका प्रमाण कहा। स्वस्थानस्वस्थान अपेक्षा क्षेत्रका प्रमाण लानेके लिए कहते  
हैं—वेजालेइया मुख्य रूपसे भवनत्रिक आदि देवोंमें होती है। उनमें एक देवकी अवगाहना-  
का प्रमाण सात धनुष ऊँचा और सात धनुषके दसवें भाग चौड़ा है। इसका क्षेत्रफल लानेके  
लिए सात धनुषके दसवें भाग चौड़ाईको तिगुना करनेपर परिधि होती है क्योंकि चौड़ाईसे  
तिगुनी परिधि कही है। इस परिधिको चौड़ाईके चतुर्थ भागसे गुणा करनेपर क्षेत्रफल होता  
है। इसको ऊँचाई सात धनुषसे गुणा करनेपर घनरूप क्षेत्रफल होता है। घनरूप राशिके  
गुणकार भागहार घनरूप ही होते हैं। सो यहाँ घनां गुल करनेके लिए एक छियानवे  
अंगुल होते हैं अतः घनरूप क्षेत्रफलको छियानवेके घनसे गुणसे है और देवोंके शरीरका प्रमाण उत्सेधांगुलसे २० अतः भाग २०

१. मं गलुमनं गुलं ।

रं वीरवदु विभिन्नापनदेव्यवहृष्यधेनवन्ति २।२ संख्यातपनापुनरिदं विहारकाव-  
३।३  
मो १

राजिं नुमिगु  $\frac{11}{2} = \frac{2}{1} \times 1.1$  इसावेणजवमिदं विगुमिदर  
४।११ = ४१

जोरोरवदहृष्यधेनवन्ति संख्यातपनापुनरिदं वैदिकिक समुद्रपातराजिं नुमिगु—  
 $\frac{11}{2} = \frac{2}{1} \times 1.1$  इगु नुमिगुत विरनु संख्या धेनवदहृ। मतं संतरराजिं  
४१ = ४१११

विमिदिकवतं संख्यातपनापुनरिदं १००००। गुणमकावेणजुमोत्तं विदं ० ११ भा १२ = ५  
विगु नुमिगुत विरनेकमवदोऽनु धियभाषराजिगु = मारोऽनु  
४११ = ८१।१०।०११

विमिदं जोरवदहृष्यधेनवन्ति संख्यातपनापुनरिदं भाविनि एकभाषयं कजेरोऽनु वदुभातं  
विमिदं जोरवदहृष्यधेनवन्ति ४११ = ८१।१०।०११ यं मारोऽनु मारवार्तिकममुद्रपातरीहृत-

मकावदु वदविकवतं संख्यातपनापुनरिदं १।१ हरी गयेवं संख्या। विहारकावराजिगुः  
१।२

जोरोरवदहृष्यधेनवन्ति संख्यातपनापुनरिदं १।१ मविगुमकावपनापुनरिदं १ १ हरागुयेवं १०  
१।२  
मो १

१।१ विमिदं नुमिगुत विरनेकमवदोऽनु धियभाषराजिगु १ १ हरागु-  
मकावदु वदविकवतं संख्यातपनापुनरिदं १०००० गुणमकावतिः ० १ १ मकावदु वदविकवतं  
मकावदु वदविकवतं संख्यातपनापुनरिदं १०००० गुणमकावतिः ० १ १ मकावदु वदविकवतं  
४११ = ८१।१०।०११

मो धेनवका प्रमाण भागा है। वैदिकिक समुद्रपातके सम्बन्धमें यह ज्ञातव्य है कि  
समुद्रपात ही अन्य धेनवें रहते हैं और विहार करते हुए विक्रियात्म्य शरीर अन्य  
होते हैं। दोनोंके बीचमें आगमाके प्रदेन मूर्धन्यगुणके सम्बन्धमें भागमान उभे पोंके  
हैं। और ऊपर गुणवताकी अपेक्षा संख्यात योजन मध्ये पड़े हैं। तथा देव अपनी  
वस्तु हाथी, पंजा हाथीदि मन्त्र विक्रिया करते हैं। उसकी अवगाहना एक जोरकी  
मो संख्यात पनापुन प्रमाण है। इससे पूर्वमें पड़े वैदिकिक समुद्रपात करनेवाले जोरों-  
नानकी गुना करनेपर सर्वत्रयी सम्बन्धी वैदिकिक समुद्रपातमें धेनवका परियाय आता  
पौरुषेयवाच्योमें अन्तर देवोंका मरण अधिक होता है अतः उनकी मृत्युवासे यहाँ  
नानिक समुद्रपात सम्बन्धी कथन करते हैं। अन्तर देवोंकी संख्यामें एक अन्तर देवकी  
१५  
२०

विमिदं नुमिगुत विरनेकमवदोऽनु धियभाषराजिगु १ १ हरागुयेवं १०  
१।२



संख्यातदिवं संद्विसिद्ध बहुभाग विप्रहृणतिषोडश्वु -३ प मत्तमिदं पत्त्यासंख्यातदिवं  
 $\begin{matrix} ० \\ ५ \\ ५ \\ ० \end{matrix}$

सिद्ध बहुभागगलु मारणान्तिकसमुद्घातमुञ्चवप्पु -३ प ५ इवर पत्त्यासंख्यातैकभाग-  
 $\begin{matrix} ० \\ ५ \\ ५ \\ ० \end{matrix}$

गलु दूरमारणान्तिकसमुद्घातजोबंगळप्पु -३ प ५ ई दूरमारणान्तिकसमुद्घातजीव-  
 $\begin{matrix} ० \\ ५ \\ ५ \\ ० \end{matrix}$

य द्वितीयदीर्घदंडस्थितमारणान्तिकपूर्वोपपादजोवागमनास्यं पत्त्यासंख्यातदिवं भागिसिद्धेक-  
 मुपपादजोबंगळप्पु -३ प ५ ईमुपपादजोवरामियं समीकरणकृततिर्य्यगजीवमुखप्रमाण-  
 $\begin{matrix} ० \\ ५ \\ ५ \\ ० \end{matrix}$

तेन भक्ते एकभाग. प्रतिप्रमयं प्रियमाणराशिर्भवति—३ तस्मिन् पत्त्यासंख्यातेन भक्ते बहुभागो विप्रहृणतो  
 $\begin{matrix} ५ \\ ० \end{matrix}$

—३ प तस्मिन् पत्त्यासंख्यातेन भक्ते बहुभागो मारणान्तिकसमुद्घाते भवति  
 $\begin{matrix} ० \\ ५ \\ ५ \\ ० \end{matrix}$

—३ प ५ अस्य पत्त्यासंख्यातैकभागो दूरमारणान्तिके जीवा भवन्ति —३। प ५  
 $\begin{matrix} ० \\ ५ \\ ५ \\ ० \end{matrix}$

न द्वितीयदीर्घदण्डस्थितमारणान्तिकपूर्वोपपादजोवानेतुं पत्त्यासंख्यातेन भक्ते एकभाग उपपादजीव-

की मुख्यतासे कहते हैं। सो सौधर्म और ऐशान स्वर्गके देवोंकी राशि घनांगुलके तीसरे  
 मूलसे गुणित जगतत्रेणि प्रमाण है। इसमें पत्त्यके असंख्यातवें भागसे भाग देनेपर एक  
 प्रमाण प्रतिसमय मरनेवाले जीवोंकी राशि होती है। उसमें पत्त्यके असंख्यातवें भागसे  
 देनेपर बहुभाग प्रमाण विप्रहृणतिवाले जीवोंका प्रमाण होता है। उस प्रमाणमें पत्त्यके  
 ख्यातवें भागसे भाग देनेपर बहुभाग प्रमाण मारणान्तिक समुद्घात करनेवाले जीवोंका  
 प्रमाण होता है। उसमें पत्त्यके असंख्यातवें भागसे भाग देनेपर एक भाग प्रमाण दूर  
 णान्तिक करनेवाले जीव होते हैं। इसमें द्वितीय दीर्घदण्डमें स्थित मारणान्तिक समुद्-  
 से पूर्व होनेवाले उपपादसे युक्त जीवोंका प्रमाण लानेके लिए पत्त्यके असंख्यातवें भागसे  
 देनेपर एक भाग प्रमाण उपपाद जीवोंका प्रमाण होता है। यहाँ तिर्यचोंके उत्पन्न होने-

१०

१५



विष्णुपुराणपुस्तक ओरव्यापकसङ्ग —  $\begin{matrix} \text{—} & \text{—} \\ \text{१} & \text{१} \\ \text{११} & \text{११} \\ \text{११} & \text{११} \end{matrix}$  मातामिदं पादासंख्यापरिहं भाषितदेवभाष

द्वार्यापारविष्णुपुराणओरव्यापकसङ्ग —  $\begin{matrix} \text{—} & \text{—} \\ \text{१} & \text{१} \\ \text{११} & \text{११} \\ \text{११} & \text{११} \end{matrix}$  मयं पादासंख्यापरिहं भाषितदेवभाष

गुणविष्णु तदेव भाषपुराणपरिहं भाषितओरव्यापकसङ्ग —  $\begin{matrix} \text{—} & \text{—} \\ \text{१} & \text{१} \\ \text{११} & \text{११} \\ \text{११} & \text{११} \end{matrix}$  यो देवदु रागिणं विर-

द्वार्यापारगुणविष्णुपुराणपारिहं भाषितओरव्यापकसङ्ग —  $\begin{matrix} \text{—} & \text{—} \\ \text{१} & \text{१} \\ \text{११} & \text{११} \\ \text{११} & \text{११} \end{matrix}$  द्विद्वार्यापारपारिहं भाषितओरव्यापकसङ्ग

—  $\begin{matrix} \text{—} & \text{—} \\ \text{१} & \text{१} \\ \text{११} & \text{११} \\ \text{११} & \text{११} \end{matrix}$  दृष्ट पादासंख्यापरिहं भाषितओरव्यापकसङ्ग —  $\begin{matrix} \text{—} & \text{—} \\ \text{१} & \text{१} \\ \text{११} & \text{११} \\ \text{११} & \text{११} \end{matrix}$  दृष्ट

द्वार्यापारद्वार्यापारविष्णुपुराणओरव्यापकसङ्ग —  $\begin{matrix} \text{—} & \text{—} \\ \text{१} & \text{१} \\ \text{११} & \text{११} \\ \text{११} & \text{११} \end{matrix}$  दृष्ट द्वार्यापारविष्णुपुराणओरव्यापकसङ्ग

द्वार्यापारद्वार्यापारविष्णुपुराणओरव्यापकसङ्ग —  $\begin{matrix} \text{—} & \text{—} \\ \text{१} & \text{१} \\ \text{११} & \text{११} \\ \text{११} & \text{११} \end{matrix}$  द्वार्यापारद्वार्यापारविष्णुपुराणओरव्यापकसङ्ग

‘मर्त्य अर्थात्’ शब्दादि भाषापुराणके अनुसार मानकुमार माहेन्द्र नामके देवोंके समानमे परबके अर्थात्वाचने भाषमे भाग हैं। एक भाग प्रमान देव प्रनिमयन मारते हैं। इस शक्तिमे भी परबके अर्थात्वाचने भाषमे भाग हैं। बहुभाग प्रमान विषयगतिवाले जीव होते हैं। इस शक्तिमे भी परबके अर्थात्वाचने भाषमे भाग हैं। बहुभाग प्रमान मारणात्मिक समुद्रवाचनमे जीव हैं। इस शक्तिमे भी परबके अर्थात्वाचने भाषमे भाग हैं। एक भाग प्रमान दूर मारणात्मिक समुद्रवाचन करनेवाले जीव हैं। इस शक्तिमे भी परबके अर्थात्वाचने भाषमे भाग हैं। एक भाग प्रमान चरवारदण्डविषय जीवोंका प्रमान है। मानकुमार माहेन्द्रके देवोंके द्वारा द्विमे मयं मारणात्मिक वृद्धका छेद छेद राजू सखा और राज्यगुणके मन्त्राचने भाग पीढ़ा है। यमका पनछेदक मन्त्राचने भाषमे भी राजूकी गुणा करनेपर जो प्रमान हो कलमा है। इस पनछेदकमे दूर मारणात्मिक समुद्रवाचनमे जीवोंकी शक्तिमे गुणा करनेपर मारणात्मिक समुद्रवाचने छेदका प्रमान होता है।

भागिसि भागिसि बहुभागबहुभागमंळं स्वस्थानस्वस्थानदोळं ५४ विहारवत् स्वस्थानदोळं

५४ वेदनासमुद्घातदोळं ५४ कषायसमुद्घातदोळं ५४ कोट्टु दोषैकभागमं

वैक्रियिकसमुद्घातदोळीयुद्ध ५१ बन्धिवरुमो पंचराशिगळोळु प्रथमराशिं तृतीयराशिं

चतुर्थराशिंयुं यथासंख्यमाणि त्रिहस्तोत्तेष तद्दशमभागमुत्प्यासविदं "ध्यासत्रिगुणः परिधिध्यासचतुर्थाहस्तु क्षेत्रफलम् । क्षेत्रफलं वेदगुणं छात्रफलं भवति सर्वत्र ।" एवौ सूत्राभिप्रायविदं ह । ३ । ३ । ह ३ । ह ३ अनितवेवावगाहनप्रमाणवृंदांगुलसंख्यातैकभागविदं

मत्तं नवार्द्धघनांगुलसंख्यातभागविदं मत्तं तावन्मार्तविदं गुणिसिदोळे यथाक्रमवि स्वस्थानपरस्थानवेदनासमुद्घातकषायसमुद्घातक्षेत्रगळप्यु । स्व = स्व = ५४ । ६ वेद

५४ । ६ । ९ कषाय— ५४ । ६ । ९ मत्तं विहारवत्स्वस्थानद्वितीयपदजीवराशिपदसंख्यात-

योजनायामसूत्रगुलसंख्यातभागविदंभोत्तेष २१ २१ क्षेत्रघनफलं संख्यातघनांगुलंमन्त्रिदं गुणिसि-

वैक्रियिकसमुद्घाते दद्यात्— १ मत्र प्रथमराशी त्रिहस्तोत्तेषतद्दशमभागमुत्प्यासवैकदेवावगाहनरय

बासो त्रिगुणो परिधिस्थावनीत ह ३ । ३ । ह ३ । ३ घनक्रमेन घनाङ्गुलसंख्यातैकभागेन १ पुनस्तृतीयराशी

नवार्धघनाङ्गुलसंख्यातभागैः १ । ९ पुनश्चतुर्थराशी तानवैव ५ । ९ गुणिते षडि क्रमेण

स्वस्थानस्वस्थानवेदनासमुद्घातक्षेत्राणि भवन्ति—स्व = ५४ । ६ वेद = ५४ । ६ । ९ कषा

= ५४ १ । ९ पुनः द्वितीयराशी संख्यातवेदनायामसूत्रगुलसंख्यातभागविदंभोत्तेष—२१ । २१

क्षेत्र एक भाग प्रमाण जीव वैक्रियिक समुद्घातमं जानना । मुस्तलेस्यावाले देवोको मुख्यता

होनेसे एक देवकी अवगाहना तीन हाथ ऊँची और उसके दसवें भाग मुखको पौड़ाई है । 'वासो त्रिगुणो परिधि' इत्यादि सूत्रके अनुसार क्षेत्रफल घनांगुलका संख्यावर्षा भाग होता है । इससे स्वस्थानस्वस्थानवाले जीवोंके प्रमाणको गुणा करनेपर स्वस्थानस्वस्थान

सम्बन्धी क्षेत्रका परिमाण होता है । एक जीवका मूलसरीरकी अवगाहनासे साढ़े चार गुना क्षेत्र वेदना तथा कषाय समुद्घातमं होता है । इस साढ़े चार गुना घनांगुलके संख्यातवें भागसे वेदना और कषाय समुद्घातवाले जीवोंके प्रमाणको गुणा करनेपर वेदना और कषाय समुद्घातमं क्षेत्र होता है । एक देवके विहार करते अपने मूलसरीरसे पाहर निकल उत्तर दिक्कासे उत्पन्न हुए सरीर पर्यन्त आत्माके प्रदेश संख्यात योजन लम्बे और सूत्रगुलके संख्यातवें भाग पौड़ा ५ ऊँचा क्षेत्र रोकते हैं । इसका घनरूप क्षेत्रगुल संख्यात घनांगुल होता है । इससे विहारवत्स्वस्थान जीवोंके प्रमाणको गुणा करनेपर

१५

१५



सत्तासीदिचतुस्सदसहस्सतिसीदिलवसउणवोसं ।

चउवीसधिपं कोडोसहस्सगुणिदं तु जगपवरं ॥

सट्ठोसत्तसएहं णवयसहस्सेगलवसभजिवं तु ।

सत्त्वं वावाकदं गुणिघं भणिदं समासेष ॥ —त्रिलोक. १३९-१४० गा. ।

एंदो सूत्रद्वयदिदं पेळळपट्ट सत्त्वंवातावच्छेदोत्रयुतियं = १०१२४१९८३४८७ सत्त्वंलोका-  
१०१९७ २०

संख्यातेकभागं = १ कळेदुल्लिख सत्त्वंलोकमेकजीवप्रतिबद्धप्रतरसमुद्रघातसेत्रमक्कु

= १. — लोकपूरणसमुद्रघातदोलमेकजीवप्रतिबद्धसेत्रं सत्त्वंलोकमक्कु = १ मिल्लि आरोह-

घटवत्वारिपल्लभ्यहंगुलहतजगत्प्रतरमुत्तराभिमुखोसीनकषाटसमुद्रघातयोत्रं भवति = मृ २ । १४४० प्रतर-  
समुद्रघातस्य बहिर्वातप्रयाम्भन्तरे सर्वलोके ध्यातत्वात् तदातलोनकलेन लोकासंख्यातैकभावेन = १ । १ जं

लोकमात्रमेकजीवप्रतिबद्धयोत्रं भवति = १ लोकपूरणसमुद्रघाते एकजीवप्रतिबद्धयोत्रं सर्वलोको भवति = ३४

अधोलोकके नीचे सात राजू चौड़ा है । कमसे घटवे-पटवे मध्यलोकमें एक राजू चौड़ा है । इसका क्षेत्रफल निकालनेके लिए करणसूत्रके अनुसार मुख एक राजू, भूमि सात राजू दोनोंको जोड़नेपर आठ हुए । उसका आधा चारको अधोलोककी ऊँचाई सातसे गुणा करनेपर अठाईस राजू अधोलोकका प्रतररूप क्षेत्रफल होता है । मध्यलोकमें एक राजू चौड़ा है । वहाँसे बढ़ते-बढ़ते ब्रह्मस्वर्गके निकट पाँच राजू चौड़ा है । सो यहाँ मुख एक राजू, भूमि पाँच राजू । दोनोंको जोड़नेपर छह हुए । उसका आधा तीनसे मध्य लोकसे ब्रह्मस्वर्ग तक की ऊँचाई साढ़े तीन राजूसे गुणा करनेपर आठ ऊर्ध्वलोकका क्षेत्रफल साढ़े इस राजू होता है । इतना ही क्षेत्रफल ऊपरके आठ ऊर्ध्वलोकका होता है । इसमें अधोलोक-का फल मिलानेपर जगत्प्रतर होता है । बारह अंगुल प्रमाण उत्तर-दक्षिण दिशामें ऊँचा है । सो जगत्प्रतरको बारह सूच्यंगुलसे गुणा करनेपर एक जीव-सम्बन्धी क्षेत्र बारह अंगुल गुणित जगत्प्रतर प्रमाण होता है । इसको चालीससे गुणा करनेपर चार सौ अस्सी अंगुलसे गुणित जगत्प्रतर प्रमाण उत्तराभिमुख कषाट समुद्रावका क्षेत्र होता है । स्थितमें ऊँचाई बारह अंगुल फहरी, षपविष्टमें (बैठनेपर) उससे त्रिगुणी छत्तीस अंगुल ऊँचाई होती है । अतः सत्त्व प्रमाणको तीनसे गुणा करनेपर एक हजार चार सौ चालीस सूच्यंगुलसे गुणित जगत्प्रतर प्रमाण उत्तराभिमुख बैठे हुए कषाट समुद्रावसम्बन्धी क्षेत्र होता है । प्रतरसमुद्रावमें तीन वातवलयको छोड़कर सर्वलोकमें प्रदेश न्यात होते हैं । सो तीन वातवलयका क्षेत्रफल लोक-का असंख्यातवाँ भाग है । इसे लोकमें घटानेपर जो शेष रहे उतना एक जीव सम्बन्धी

१. व. ० मुखस्थितक ।







कर्णाटवृत्ति जीवतरवप्रदोषिका

विशेषविदं स्वस्थानस्वस्थानादिदशपदंगळोळु स्पर्शं पेळत्पडुगुमवे तें दोडे तिर्यंग्लोकव  
रज्जुप्रतरक्षेत्रबोळु ७ जलचरसहितंगळप्य लवणोदकालोदस्वयंभूरमणसमुद्रमे वो समुद्रप्रय-



रहितसर्वसमुद्रक्षेत्रफलं कर्जयुत्तिरलु शेषक्षेत्रं शुभत्रयलेइयास्वस्थानस्वस्थानस्पर्शक्षेत्रमकुं ।  
तदानयनक्रमं पेळत्पडुगुमवे तें दोडे जंजूद्वीपमादियागि स्वयंभूरमणसमुद्रपयंतमाव सव्यंद्वीपसमुद्र-  
पळु द्विगुणद्विगुण विस्तीर्णगळागिरुतिपुंयु १ ल। २ ल। ४ ल। ८ ल। १६ ल। ३२ ल। ६४ ल।  
१२८ ल। २५६ ल। ५१२ ल। इत्ति लसंयोजनविष्कंभमप्य जंजूद्वीपसमक्षेत्रफलं :—  
सत्त जव मुण्य पंच य छण्णव चउरेक्क पंच मुण्यं च ।  
जंजूद्वीपसेवे गणिबफलं होवि नावस्वं ॥

७९०५६९४१५० एतावन्मानं जंजूद्वीपगुणितफलमबकुमिदोडु खंडमेडु माडत्पडुवुडु  
। १। मत्तं लवणसमुद्रबोळु तत्प्रमाणजंडंगळु चतुर्विंशतिगळप्यु १४४। घातकीयंड्वीपबोळु १०  
चतुस्तरचत्वारिंशच्छतप्रमितंगळप्यु १४४। काळोवकसमुद्रबोळु पदच्छतद्व्यासप्रमाणंगळप्यु ६७२। पुष्करवरद्वीपबोळु अशोत्पुत-  
राष्ट्राविंशतिशतप्रमितंगळप्यु २८८०। तत्समुद्रबोळु एकादशसहस्रनयद्यतचतुःप्रमितखंडंगळप्यु २०

उक्तः । विशेषेण तु दण्डेषु उच्यते—तिर्यंग्लोकस्य रज्जुप्रतरस्य क्षेत्रे ७ जलचरसहितलवणोदकालोदक-



स्वयंभूरमणसमुद्रेश्वरः शेषसर्वसमुद्रक्षेत्रफलं प्रणीते शेषं शुभत्रयलेइयास्वस्थानस्वस्थाने स्पर्शो भवति । तद्यथा १५  
जंजूद्वीपादयः स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यन्ताः सर्वे द्वीपसमुद्राः द्विगुणद्विगुणविस्ताराः सन्ति । तत्र संयोजनविष्कंभो  
जंजूद्वीपः तस्य मूलक्षेत्रफलं—  
उत्तजवमुण्यपंचयछण्णवचउरेक्कपंचमुण्यं च ।  
इत्येतावत् ७९०५६९४१५० इदमेकसष्टं कृत्वा लवणसमुद्रे तावुद्यानि चतुर्विंशतिः २४। घातकीसण्डे  
शतचतुस्तरचत्वारिंशत् १४४। बालोदके समुद्रे पदच्छतशतसतिः ६७२। पुष्करद्वीपे द्विशहस्राष्ट्रशतशोतिः १२८८०। २०

स्पर्शं हे । उपपादस्थानमें प्रसनालीके चौदह भागोंमें-से कुछ कम देद भाग प्रमाण स्पर्शं हे ।  
यह सामान्यसे तेजोलेइयाके तीन स्थानोंमें स्पर्शं कहा । विशेषसे दस स्थानोंमें स्पर्शं कहते  
हैं—तिर्यंग्लोक एक राजु लम्बा व चौड़ा हे । इसमें लवणोदक, कालोदक और स्वयंभूरमण  
समुद्रमें ही जलचर जीव पाये जाते हैं शेष समुद्रोंमें नहीं । सो तिर्यंग्लोकके क्षेत्रमें-से जिन  
समुद्रोंमें जलचर जीव नहीं हैं उन समुद्रोंका क्षेत्रफल घटानेपर जितना जेप रहे उतना तीन  
गुम लेइयाओका स्वस्थानस्वस्थानमें स्पर्शं जानना । उसीको कहते हैं—जंजूद्वीपसे लेकर २५  
स्वयंभूरमण समुद्रपर्यन्त सब द्वीपसमुद्र दूने-दूने विस्तारवाले हैं । उनमें-से जंजूद्वीपका  
विस्तार एक लाख योजन हे । उसका सूक्ष्म क्षेत्रफल इस प्रकार हे—सात नौ शून्य पाँच छह  
नौ चार पक पाँच और शून्य ७९०५६९४१५० । इसे एक खण्ड मानकर लवण समुद्रमें इतने  
१. च. पा. स्वस्थाने ।

रुक्मणसला २ । बारस १२ । सलाग २ । गुणिवे दु २ । १२ । २ । वलयखंडाणि ।

२४ । बाहिरसूई सलागा ५ कवी २५ । तवंताखिला खंडा ।

बाहिरसूईवलयवासूणा चउगुणिट्टवासहवा ।

इगिलखलवगभजिवा जंबूसमवलपखंडाणि ॥ —त्रि. सा. ३१८ गा. ।

बाहिरसूई ५ ल । वळयं । वास २ ल । उणा ३ ल । चउगुण ३ ल । ४ । इट्टवास २ ल ।  
हवा २४ ल ल । इगिलखलवग १ ल ल भजिवा २४ ल ल जंबूसमवलपखंडाणि २४ । इल्लि  
१ ल ल

सर्वद्वीपखंडंगळं विदुः समुद्रखंडंगळने यागुकोडु प्रकृतं पेळत्पडुगुमदेते वोडे लवणसमुद्रवोळु  
जंबद्वीपोपमानजंबंगळु चतुर्विंशतिप्रमितग २४ । जधनोडु लवणसमुद्रखंडमेडु माडि १ । या  
चतुर्विंशतिलखंडंगळं काळोदकसमुद्र जंबद्वीपसमानद सर्वखंडंगळं भागिसिडोडे ६७२ लवण-  
२४

समुद्रोपमानलखंडंगळपुविष्पतेंडु २८ । मतमा चतुर्विंशतिलखंडंगळं पुष्करसमुद्र जंबद्वीप-

खण्डाणि २४ । रुक्मणसला २ । बारस १२ सलाग २ । गुणिवे दु २ । १२ । २ । वलयखण्डाणि २४ ।  
बाहिरसूई सलागा ५ कवी २५ तदन्ताखिलाखण्डा । बाहिरसूई ५ ल वलयखंडा २ ल, या ३ ल, चउगुणिट्टवास  
४२ ल, हवा २४ ल ल, इगिलखलवगभजिवा २४ ल ल जंबूसमवलपखण्डाणि २४ । अथ सर्वद्वीपखण्डाणि  
१ ल ल

त्यस्या सर्वसमुद्रखण्डेषु जम्बूद्वीपसमचतुर्विंशतिलखंडमेकेषु लवणसमुद्रे लवणसमुद्रसमखण्डमेकं १ ।  
कालोदकखण्डेषु भक्तेषु ५७२ अष्टाविंशतिः २८ । पुष्करसमुद्रखण्डेषु भक्तेषु ११९०४ षण्णवत्यष्टाविंशतिः ५९९, १  
२४ २४

शेष रहे चौबीस लाख लाख योजन । इस तरह बाह्य सूचीके बर्गमें-से अभ्यन्तर सूचीके  
बर्गकी घटाना । फिर उसे जम्बूद्वीपके व्यास लाख योजनके बर्गसे भाग देनेपर चौबीस  
लख आया । उसने ही खण्ड लवणसमुद्रमें होते हैं । तथा लवणसमुद्रका व्यास दो लाख  
होनेसे उसकी शलाका दो है । उसमें-से एक घटानेपर एक रहा । उसको बारह और शलाका  
दोसे गुणा करनेपर चौबीस वलयखण्ड होते हैं । तथा लवणसमुद्रकी बाह्य सूची पाँच लाख  
योजन है अतः शलाकाका प्रमाण पाँच, उसका बर्ग पचोस । सो लवण समुद्र पर्यन्त  
पचोस खण्ड होते हैं । तथा लवण समुद्रकी बाह्य सूची पाँच लाख योजन, उसमें-से उसका  
व्यास दो लाख योजन घटानेपर तीन लाख शेष रहे । इनको चौगुणे व्यास आठ लाख  
योजनसे गुणा करनेपर चौबीस लाख हुए । इसमें एक लाखके बर्गसे भाग देनेपर चौबीस  
आये । उसने ही जम्बूद्वीपके समान वलयाकार खण्ड लवण समुद्रमें होते हैं ।

सो यहाँ सर्वद्वीप सम्बन्धी खण्डोंको छोड़कर सर्वसमुद्र सम्बन्धी खण्ड ही लेना ।  
तथा जम्बूद्वीप समान चौबीस खण्डोंका भाग समुद्रके खण्डोंमें देना । तब लवणसमुद्रमें  
लवणसमुद्रके समान एक खण्ड होवा है । कालोदके छह सो बहत्तर खण्डोंमें चौबीससे भाग  
देनेपर कालोद समुद्रमें लवणसमुद्रके समान अठारह खण्ड होते हैं । पुष्कर समुद्रके ग्यारह



= ४।२।१६।१६।२४।७९०५६९४१५०।७६८०००।७६८०००

४।७।७।१५।१६।१६।७६८०००।७६८०००।४।१६।१६।१६

अपवर्तितं = ७९०५६९४१५० हारंगळं गुणिसिबोडिबु = ७९०५६९४१५० इवतपवर्तिसुव  
७।७।१६।१६।४।५।९८००००००००००००

क्रममेतेदोडे भाग्यवि भागहारमं भागिसिव शेषमे भागहारमन्तुं मंतु भागिसुत्तिरलु वगरय भक्त-  
जगत्प्रतरप्रमितमवकु १।१।१ संकलनधनदोळिप्यं ऋणं पवमेते इत्यादिद्वंद्वं गच्छार्द्धनिमित्तं  
१२।३९

गुणोत्तरद मूलं प्राह्यमप्युदरिदं गुणोत्तरं नात्कवर मूलमेरडारिदं रज्जुछेदंगळ विरळिसि वर्गित- ५  
संवर्ग माडिबोडे रज्जु पुट्टुगुं। रुवपरिहोणे रुपमेकप्रवेशमदरिदं परिहोत माडिबोडिबु ७ ६

ऊगगुणेगहि ७।३ मूहेण गुणियंमि गुणगणियं। मुलं पुष्करसमुद्रमप्युदरि विनारारि गुणिसि-  
बोडिबु १६ इदं क्षतुग्विज्ञातिद्वंद्वंगळिदं जंबूद्वीपक्षेत्रफलदिवसं एकयोजनागुलंगळ  
७ ३

भक्त्या भाग्यभागहारान् निरीक्ष्य=४।२।१६।१६।२४।७९०५६९४१५०।७६८०००।७६८०००  
४।७।७।१५।१६।१६।७६८०००।७६८०००।४।१६।१६।१६

अपवर्त = ७९०५६९४१५० हारान् परस्परं गुणित्वा = ७९०५६९४१५० १०  
७।७।१६।१६।४।५।९८००००००००००००

भक्ते साधिकधगरयभक्तजगत्प्रतरं स्यात् = १। अत्रत्य ऋणमानीयते 'पदमेते गुणयारे अण्णोणं गुणियं' अत्रापि  
१२३९

गच्छार्थत्वाद् गुणोत्तरचतुष्कल्प मूलं गृहीत्वा गच्छमात्रद्विकेपु परस्परं गुणितेपु रज्जु-रुवपरिहोणे-ऊकण  
७ ७

हारमें पन्द्रह और सोलहको परस्परमें गुणा करनेसे दो सौ चालीस होते हैं। इसे अड़वालीस-  
से अपवर्तित करनेपर भागहारमें पाँच रहे। इस प्रकार करनेसे स्थिति इस प्रकार रही—

= ४।२।१६।१६।२४।७९०५६९४१५०।७६८०००।७६८००० अपवर्तन करनेपर १५  
४।७।७।१५।१६।१६।७६८०००।७६८०००।४।१६।१६।१६

७९०५६९४१५० सब भागहारोंको परस्परमें गुणा करनेपर और इनको गुणकारके अंकोंसे  
७।७।१६।१६।४।५।९८००००००००००००

भाग देनेपर धनराशिमें सर्वक्षेत्र फल 'साधिक धगरय' अर्थात् कुछ अधिक धारह सौ  
उनवालीससे भाजित जगत्प्रतर प्रमाण होता है। अब ऋण जाना है। सो जलचर सहित  
समुद्रोंका ऋणरूप क्षेत्रफल लाते हैं—'पदमेते गुणयारे' इत्यादि सूत्रके अनुसार गच्छमात्र  
गुणकार चारका परस्परमें गुणा करना चाहिए। सो राजूके अर्धच्छेदोंके आधे प्रमाण चारको २०  
परस्परमें गुणा करनेसे एक राजू होता है। यहाँ गच्छ सर्वद्वीप समुद्रोंके प्रमाणसे आधा है।  
अतः गुणकार चारका वर्गमूल दो ग्रहण करना। सम्पूर्ण गच्छमें एक राजूके अर्धच्छेद फले  
हैं। अतः एक राजूके अर्धच्छेद मात्र दोको परस्परमें गुणा करनेसे एक राजूका प्रमाण होता  
है वह जगत्प्रणेका सातवाँ भाग है। उसमें एक घटानेपर जो प्रमाण हो उसको एकहीन  
गुणकार तीनसे भाग दें। तथा पुष्कर समुद्रकी अपेक्षा आदि स्थानमें प्रमाण सोलह है २५

पूर्वोक्तद्वय भक्तजगत्प्रतरमात्रक्षेत्रं सिद्धमातुदाक्षेत्रं रज्जुप्रतरमात्रक्षेत्रं = सम-  
च्छेदं माडिकुट्टिदोष्टे शेषमिदं = ११९० इदं नपवत्तिसल्लेदु भाग्यवि भागहारं भागिसिद्धे  
४९।१२३९

साधिककाम ५१ भक्तजगत्प्रतरमात्रं विवक्षितक्षेत्रं तलस्पर्शमकं = १ इदं पूर्वस्पर्शग्रहणात्

मागि जीवोत्पन्ननितसंख्यातसूच्यंगुलंगुलिदं गुणिसिद्धे शुभलेख्यगो स्वस्थानस्वस्थानस्पर्श-  
मकं = २१ इदं कदाचित् तेजोदेश्ये स्वस्थानस्वस्थानापेक्षितं लोकासंख्यातभागं स्वस्थानं बु  
५१

वेद्यत्पददुः। विहारवत् स्वस्थानदोषं वेदनाकषायवैक्रियिकसमुद्भातदोषं तेजोदेश्ये अष्टचतु-  
र्वदशाभांगं किंचिद्वृत्तगुणं ८ = प्रत्येकं नात्केडोक्तमकुमी किंचिद्वृत्ताष्टचतुर्वदशाभांगं  
१४

क्षेत्रं सिद्धम्। इदं रज्जुप्रतरे = समच्छेदोपनीय = ११९० अपवर्तनार्थं भाग्येन भागहारं भक्त्वा  
४९ ४९।१२३९

साधिककाम ५१ भक्तजगत्प्रतरं विवक्षितक्षेत्रं तलस्पर्शं भवति = १। इदं पूर्वस्पर्शग्रहणात् जीवोत्पन्ननित-

संख्यातसूच्यंगुलंगुणितं शुभलेख्यानां स्वस्थानस्वस्थानस्पर्शं भवति = २१। इदं दृष्ट्वा तेजोलेख्याः स्वस्थान-  
५१

स्वस्थानापेक्षया लोकासंख्येयभागः स्पर्शः इत्युक्तम्। विहारवत्स्वस्थाने वेदनाकषायवैक्रियिकसमुद्भाते च  
तेजोलेख्याया अष्टचतुर्वदशाभांगः किंचिद्वृत्तः स्यात्। ८- कुतः? सनत्कुमारमाहेन्द्रजाना तेजोलेख्योत्पत्त्यानां  
१४

सूच्यंगुलसे गुणित जगत्त्रयेणि मात्र क्षेत्रफलं दृष्ट्वा। इसे पूर्वांशं धनरासिरूप क्षेत्रफलमेवे  
घटाना चाक्षिप। सो किंचित्क्षेत्रं साधिक बारह सौ उनवालीससे भाजित जगत्प्रतर प्रमाण  
सर्वजलचर रहित समुद्रोका ऋणरूप क्षेत्रफलं दृष्ट्वा। इसको एक राजू लम्बा चौड़ा तथा १५  
जगत्प्रतरका उनचासवां भाग मात्र रज्जु प्रतरक्षेत्रमेसे समच्छेद करके घटाइए। तब  
जगत्प्रतरमे ग्यारह सौ नव्येका गुणकार और उनचास गुणा बारह सौ उनवालीसका  
भागहार हुआ।  $\frac{ज. प्र. \times ११९०}{४९ \times १२३९}$  अपवर्तन करनेके लिए भाग्यसे भागहारमें भाग देनेपर

साधिक इक्ष्वावनसे भाजित जगत्प्रतर प्रमाण विवक्षित क्षेत्रका प्रतररूप तलस्पर्श होता है।  
इसको ऊँचाईका स्पर्श ग्रहण करनेके लिए जीवोंकी ऊँचाईके प्रमाण संख्यात सूच्यंगुलसे २०  
गुणा करनेपर कुछ अधिक इक्ष्वावनसे भाजित संख्यात सूच्यंगुल गुणित जगत्प्रतर मात्र  
शुभलेख्यार्थोका स्वस्थान-स्वस्थान सम्बन्धी स्पर्श होता है। इसको देखकर तेजोलेख्याका  
स्वस्थान-स्वस्थानकी अपेक्षा स्पर्श लोकका असंख्यातवां भाग मात्र कहा है।

तमस्तप्रकृतिस्यित्तिअनुभागप्रदेवंधंययोगंरूपं स्थितिवंधाप्यवसायानुभागबंधाप्यवसाय-  
योगस्यानंगत्वेनितोच्चवर्तिनुं पृथिव्योऽनु भावसंसारबोच्चोऽत्यं जीवनिवमनुभयितसत्त्वदृषु । इल्लि  
स्थितिवंधाप्यवसायजपण्य मोक्षोऽनुहृष्टपय्यंतंमते अनुभागबंधाप्यवसायजपण्यस्यानमोक्षोऽनु-  
हृष्टस्यानपय्यंतं योगस्यानंगत्वं जपण्यं मोक्षोऽनुहृष्टस्यानपय्यंतं सर्वजपण्यस्थितिसंधंयि  
गच्छोदेनागि सज्योऽनुहृष्टस्थितपय्यंतं तत्तत्तंधंयिगत्वं स्थापिति अक्षतधारक्रमविदं भावसंसार-  
बोच्चनुभयितसत्त्व स्थितिवंधाप्यवसायादिगच्छं सापिनुनुदं बुद्धयं ।

इति एकपुद्गलपरिवर्तनकालमनंतमशुभं नोदत्तु शेषपरिवर्तनकालमनंतगुणं जपं नोदत्तु कालपरिवर्तनशरीरजन्तव्यगुणमशुभं नोदत्तु भूषणपरिवर्तनकालमनंतगुणमशुभं नोदत्तु भावपरिवर्तनकालमनंतगुणमशुभमिति संदृष्टिश्चेन्नैवितुः—भा० । ल ल ल ल ल

भय । ए सु सु सु सु

काल । स स स

क्षेत्र । स स

द्वयम् । स

ओम्बं जीवगे जतीतकालबोद्धुं भावपरिवर्त्तनवारंगन्तु अनंतंगन्तु । ए । अयं नोदन्तु भव-  
परिवर्त्तनवारंगन्तु भवगन्तु नोदन्तु कालपरिवर्त्तनवारंगन्तु अनंतगुणंगन्तु नोदन्तु शेषपरिवर्त्तन- १५  
वारंगन्तु अनंतगुणंगन्तु नोदन्तु दृश्यपरिवर्त्तनवारंगन्तु अनंतगुणंगन्तु । संवृष्टिः—

महर्षिः प्रकृत्यतिष्ठत्यनुभाषद्देशबन्धयोग्यानि ।

इयानाम्यनुष्ठानि भ्रमता भुवि भावसंचारे ॥

अत्र स्थितिद्वयाप्यत्रावयवव्यपत्तद्वयद्वयमस्तीति पुनः अनुभाषद्वयप्यत्रावयवव्यपत्तद्वयद्वयमस्तीति  
योग्यत्वावयवव्यपत्तद्वयद्वयमस्तीति च सर्वत्राप्यस्ति स्थितिर्बन्धोनि आदि कृत्वा सर्वत्राप्यस्ति स्थितिर्बन्धोनि २०  
स्थित्याप्य अक्षरं वाक्यमेव भाववशादे अनुभूतस्थित्यापि स्थितिद्वयाप्यवयवादीन् साधयेदित्यर्थः । अत्रैक-  
पुन्यत्वस्यैवार्थवत्त्वात् अन्तः । ततः क्षेत्रपरिवर्तनकालः अन्तस्तृतीयः । अतः वाक्परिवर्तनकालः अन्तस्तृतीयः,  
ततो मन्त्रपरिवर्तनकालः अन्तस्तृतीयः । ततो भावपरिवर्तनकालः अन्तस्तृतीयः । संक्षेपः—

भाष्य ए ए ए ए ए

भय स स स स

काष्ठ एवम्

ਭੈਰਵ ਧਰਮ

द्वितीयः प्रश्नः

~~~~~

एकजीवस्य अतीतकाले भावपरिवर्तनकारा अनन्ताः । तेभ्यः भवपरिवर्तनकारा अनन्तमुष्णाः । तेभ्यः क्षेत्रारिवर्तनकारा अनन्तमुष्णाः । तेभ्यः द्रव्यारिवर्तनकारा अनन्तमुष्णाः । संक्षेपः—

‘भावसंसारमें भ्रमण करते हुए जीवने सब प्रकृतियोंके स्थितिवन्ध, अनुभागवन्ध और प्रदेष्टवन्धके योग्य स्थानोंका अनुभव किया।’

समयसे अप्रत्यक्ष स्थितिसे लेकर कष्टस्थिति पर्यन्त तत्सम्बन्धी स्थिति बन्धाध्यवसाय-स्थान, अनुमागवन्धाध्यवसायस्थान और योगस्थान अप्रत्यक्षसे लेकर कष्ट पर्यन्त स्थापित करके जैसे पहले प्रमादोंमें असंसार कहा है उसी क्रमसे भावसंसारमें अनुभूत स्थिति जादि सम्बन्धी स्थिति बन्धाध्यवसाय आदिको साधना पाठिप ।

यहाँ एक पुनर्गलपरावर्तन काल सबसे थोड़ा अर्थात् अनन्त है। उससे दोषपरिवर्तन काल अनन्त गुणा है। उससे कालपरिवर्तनका काल अनन्त गुणा है। उससे भयपरिवर्तनका काल अनन्त गुणा है। उससे मायपरिवर्तनकाल अनन्त गुणा है। इसीसे एक जोषके अतीत

जीवाजीवं द्रव्यं रूवारुविच्छि होदि पचेयं ।

संसारस्था रूवा कम्मविमुक्का अरुवगया ॥५६३॥

जीवाजीवद्रव्ये रूपारुपिणेति भवतः प्रत्येकं । संसारस्था रूपाः रूपाभ्येषां संतोति -रूपाः कम्मविमुक्ता अरुवगताः ॥

सामान्यदिवं संप्रह्नयापेक्षायिदं द्रव्यमो'बु । अवं भेदिसिदोहे जीवद्रव्यमे'बु अजीवद्रव्यमे'बु ५
द्विविधमवकुमल्लि जीवद्रव्यं रूपि जीवद्रव्यमे'बुमरूपिजीवद्रव्यमे'बु द्विविधमपुवलि संसार-
स्थंगळ रूपिजीवद्रव्यंगळपुवु । कम्मविमुक्तसिद्धपरमेष्ठिजीवंगळ अरुवगतजीवद्रव्यंगळपुवु ।
अजीवद्रव्यमुं रूप्यजीवद्रव्यमे'बुमरूप्यजीवद्रव्यमे'बु द्विविधमवकु ।

अज्जीवेसु य रूवी पोमालदब्बाणि धम्म इदरो वि ।

आगासं कालो वि य चत्तारि अरुविणो होति ॥५६४॥

अजीवेषु च रूपीणि पुद्गलद्रव्याणि धम्म इतरोपि च । आकाशं कालोपि च चत्वार्य-
रूपीणि भवन्ति ॥

अजीवद्रव्यंगळो'बु पुद्गलद्रव्यंगळ रूपिद्रव्यंगळपुवु । इल्लि

“वर्णगंधरसस्पर्शः पूरणं गलनं च यत् ।

कुर्वन्ति स्कंधवत्तस्मात्पुद्गलाः परमाणवः ॥” [] १५

ए'दितु परमाणुगळं पुद्गलत्वमुंदापुत्तं विरलु द्विप्रदेशादि स्कंधगळमे'बु प्रहणमकुमे'बो'बो
प्रदेशपूरणगलनरूपदिवं द्रवति द्रोष्यति अदुद्रवगिति पुद्गलद्रव्यमे'बितु द्व्यणुकादिस्कंधगळमे'बु
पुद्गलगड्ढावयत्तं मयावत्तापि संभविमुगुणपुर्वदिवं परमाणुविधे “वट्केन युगपद्योगात्परमाणोः

सामान्येन संप्रह्नयापेक्षया द्रव्यमेकम् । तदेव भेदविवक्षया जीवद्रव्यं अजीवद्रव्यं च । तत्र जीवद्रव्यं
रूप्यरूपि च । तत्र संसारस्थाः रूपिणः, कम्मविमुक्ताः सिद्धा अरूपिणो भवन्ति । अजीवद्रव्यमपि रूप्यरूपि १०
च ॥५६१॥

अजीवेषु पुद्गलद्रव्याणि रूपीणि भवन्ति धर्मद्रव्यं तथा अधर्मद्रव्यं आकाशद्रव्यं कालद्रव्यं चेति
चत्वारि अरूपीणि भवन्ति । अत्र “वर्णगन्धरसस्पर्शः पूरणं गलनं च यत् । कुर्वन्ति स्कन्धवत् तस्मात्पुद्गलाः
परमाणवः” इत्येवं परमाणूनां पुद्गलत्वे द्व्यणुकादीनामेव कर्म ? प्रदेशपूरणगलनरूपेण द्रवन्ति द्रोष्यन्ति
अदुद्रवमिति ब्रूमः । ननु— १५

सामान्यसे संप्रह्नयकी अपेक्षा द्रव्य एक है । भेदविवक्षासे दो प्रकारका है—जीव
द्रव्य और अजीव द्रव्य । उसमें जीव द्रव्यके दो प्रकार हैं—रूपी और अरूपी । संसारी
जीव रूपी है और कर्मसे मुक्त सिद्ध अरूपी है । अजीव द्रव्य भी रूपी और अरूपी
होता है ॥ ५६३ ॥

अजीवोर्मे पुद्गल द्रव्य रूपी होते हैं । धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और काल- १०
द्रव्य ये चार अरूपी हैं ।

शंका—कहा है कि ‘परमाणु स्कन्धकी तरह वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शके द्वारा पूरण गलन
करते हैं अतः वे पुद्गल हैं’ इस प्रकार परमाणुको पुद्गल कहनेपर द्व्यणुक आदिमें पुद्गल-
पना कैसे घटित होता है ?

समाधान—द्व्यणुक आदि प्रदेशोंके पूरण गलन रूपके द्वारा अन्य परमाणुओंको प्राप्त ३५

गदिठाणोग्गहकिरिया जीवाणं पोग्गलाणमेव हवे ।

धम्मतिथे ण हि किरिया सुक्खा पुण साधगा होति ॥५६६॥

गतिस्थानावगाहक्रियाः जीवानां पुद्गलानामेव भवेयुः । धर्म्मत्रये न हि क्रियाः सुस्था पुनः साधका भवन्ति ॥

गतिस्थानावगाहक्रियेगळे बी मूरं जीवंगळ्यां पुद्गलंगळ्येधणुवु । धर्म्मत्रये धर्म्माधर्म्मा- ५
कातंगळे बी मूरं द्रव्यंगळोळु ॥ हि क्रिया क्रियेयिल्लेके बोडे स्थानचलनमुं प्रवेशचलनमुमित्त-
मप्पुवरिवं । पुनः मत्तेनें बोडे धर्म्मादिद्रव्यंगळु गत्यादिगळ्यो मुख्यसाधकंगळपुवु अडे तें बोडे :—

जत्तस्स पढं ठत्तस्स आसणं निवसगस्स वसदी वा ।

गदिठाणोग्गहकरणे धम्मतिथं साधगं होति ॥५६७॥

गच्छतः पंथाः तिष्ठतः आसनं नियतकस्य वसतिरिव गतिस्थानावगाहकरणे धर्म्मप्रयं १०
साधकं भवति ॥

नडेबंगे वट्ठियं कुल्लिप्वंगसासनमुं इप्पंगे निवासमुमेदितु गतिस्थानावगाहकरणबोळु
सायसंगळपुवन्ते धर्म्मप्रयमुं गमनादिकरणबोळु साधकमव्वं । कारणमव्वकुमे बुदस्यं ।

वत्तणहेद्दु कालो वत्तणगुणमविय दव्वणिचयेसु ।

कालाधारेणेव य वट्ठन्ति सब्बदव्व्याणि ॥५६८॥

१५

वर्तनाहेतुः कालो वर्तनगुणोपि च द्रव्यनिधयेषु । कालाधारेणैव वर्तते सर्वद्रव्याणि ॥

गिजंतमप्प वृत्तं धातुविनत्तणिडं कम्मदोळं मेभावदोळं खील्लिगदोळं वर्तना एदितु
शब्दस्वित्तिपक्कु । वर्तते वर्तनमात्रं वा वर्तना । धर्म्मादिद्रव्यंगळ्ये स्वपर्यायनिवृत्तिर्यं कुरुवु

गतिस्थानावगाहनक्रियास्थितः जीवपुद्गलयोरेव भवन्ति, धर्माधर्माकाशेषु क्रिया नहि स्थानचलनप्रदेश-
चलनयोरनावात् । किं तर्हि ? धर्मादिद्रव्याणि गत्यादीनां मुख्यसाधिकाणि भवन्ति ॥५६६॥ तद्यथा—

२०

गच्छतः पन्थाः, तिष्ठतः आसने, निवसतो निवासो, यथा गतिस्थानावगाहकरणे साधका भवन्ति
तथा धर्मादिद्रव्यमपि साधकं कारणमित्यर्थः ॥५६७॥

णिजन्ताद् वृत्तुपातोः कर्माणि भावे वा वर्तनाद्यन्दव्यवस्थितिः वर्तते वर्तनमात्रं वेति । धर्मादि-

गति, स्थिति और अवगाह ये तीन क्रियाएँ जीव और पुद्गलमें ही होती हैं । धर्म, अधर्म और आकाशमें क्रिया नहीं है क्योंकि न तो ये अपने स्थानको छोड़कर अन्य स्थानमें २५
जाते हैं और न इनके प्रदेशोंमें ही चलन होता है । किन्तु ये धर्मादि द्रव्य, गति आदि क्रियाओंमें मुख्य साधक होते हैं ॥ ५६६ ॥

वही कहते हैं—

जैसे जाते हुएको मार्ग, बैठनेवालेको आसन, निवास करनेवालेको निवासस्थान, चलने, ठहरने, अवगाह करनेमें साधक होता है उसी तरह धर्मादि तीन द्रव्य भी सहायक ३०
कारण होते हैं ॥ ५६७ ॥

णिजंत वृत्तु धातुसे कर्ममें अथवा भावमें वर्तना शब्द निष्पन्न होता है । सो वर्त या वर्तन मात्र वर्तना है । धर्मादि द्रव्य अपनी-अपनी पर्यायोंको निर्वृत्तिके प्रति स्वयं ही

ओषपदगलंगलोऽऽ परिणामादिपरत्वापरत्वंगळु काणल्पदुग्ं । धर्माद्यमूर्तद्रव्यंगळोऽऽ
परिणामादिगळे ते दोडे वेळवपः—

धर्माधर्मादीणं अगुरुगलहृगं तु छद्दिहि वड्ढीहि ।

हाणीहि वि वड्ढंतो हायंतो वड्ढे जम्हा ॥५६९॥

धर्माधर्मादीनां अगुरुलघुकस्तु पद्भिरपि वृद्धिर्निर्हानिभिरपि चर्द्धमानो होयमानो वत्तते ५
यस्मात् ॥

आतुरोऽदु कारणादिदं धर्माधर्मादिद्रव्यंगळु अगुरुलघुगुणाविभागप्रतिच्छेदंगळु स्वद्रव्यत्वकळे
निमित्तमप्य शक्तिविदोपंगळु पद्बुद्धिगण्डिवं पद्भानिगण्डिवं चर्द्धमानंगळु होयमानंगळुमागुतं
परिणमिसुवत्तु । कारणं मुख्यकालमेयवक्तुं ।

ण य परिणमदि सयं सो ण य परिणामेद् अणमण्णेहि ।

१०

विविधपरिणामियाणं हवदि हु कालो सयं हेद् ॥५७०॥

न च परिणमति स्वयं सः न च परिणामयति अन्यदन्यैः । विविधपरिणामिकानां भवति हु
कालः स्वयं हेतुः ॥

सः कालः आ कालं न च परिणमति संक्रमविधानादिदं स्वकीयगुणंगण्डिवं अन्यद्रव्यदोष-
रिणमिसत्तु । ये तीगळु परद्रव्यगुणंगळमे तन्मोऽऽ संक्रमदिदं परिणमनमिल्लंतं सत्तं हेतु कर्तृत्वादिदं १५
अन्यद्रव्यमनन्यगुणंगळोऽऽकूडि न च परिणमयति परिणमननं भाडिसत्तु । सत्तने दोडे विविधपरि-
णामिकानां विविधपरिणामिगळप्प द्रव्यंगळु परिणमनवके कालं ताते उवात्तेननिमित्तमवक्तुं ।

कालं अस्सिय दब्बं सगसगपज्जायपरिणदं होदि ।

पज्जायावद्वाणं सुदणए होदि खणमेत्तं ॥५७१॥

कालमाश्रित्य द्रव्यं स्वस्वधर्माद्यपरिणतं भवति । धर्माद्यावस्थानं शुद्धनये भवति क्षणमात्रं ॥ २०

यतः धर्माधर्मादीनां अगुरुलघुगुणाविभागप्रतिच्छेदः स्वद्रव्यत्वस्य निमित्तमूवपत्तिविरोधाः पद्बुद्धि-
मिर्वर्धमाना पद्भानिभिरपि हीयमानाः परिणमन्ति ततः कारणात्तापि च मुख्यकालस्यैव कारणत्वात् ॥५६९॥

स कालः संक्रमविधानेन स्वगुणैरन्यद्रव्ये न परिणमति । न च परद्रव्यगुणान् स्वस्मिन् परिणामयति ।
नापि हेतुकर्तृत्वेन अन्यद् द्रव्यम् अन्यगुणैः सह परिणामयति । किं तद्दि ? विविधपरिणामिकानां द्रव्याणां
परिणमनस्य स्वयमुदासीननिमित्तं भवति ॥५७०॥

२५

अपरत्वं उपकार कालके ही कहे हैं । और ये जीव और पुद्गलमें ही देखे जाते हैं ॥५६८॥

तप धर्मादि अमूर्तद्रव्योंमें वर्तना कैसे होती है यह बतलाते हैं—

यतः धर्म, अधर्म आदिमें अपने द्रव्यत्वमें निमित्त भूत शक्ति विशेष अगुरुलघु नामक
गुणके अविभागी प्रतिच्छेद छह प्रकारकी वृद्धिसे वर्धमान और छह प्रकारकी हानिसे
हीयमान होकर परिणमन करते हैं । इस कारणसे वहाँ भी मुख्य काल ही कारण है ॥५६९॥ २०

वह काल संक्रमविधानके द्वारा अपने गुणोंसे अन्य द्रव्यके रूपमें परिणमन नहीं
करता । और अन्य द्रव्यके गुणोंको अपने रूपमें भी नहीं परिणमाता । हेतुकर्ता होकर अन्य
द्रव्यको अन्य द्रव्यके गुणोंके साथ भी नहीं परिणमाता । किन्तु अनेक रूपसे स्वयं परिणमन
करनेवाले द्रव्योंके परिणमनमें उदासीन निमित्त होता है ॥ ५७० ॥

आकाशव एकप्रदेशबोद्धिर् परमाणु भवपतिपिबं परिचयतमादुतु द्वितीयमन्तरलोत्रं याव-
 पितितु योजितगोमुमुमनु समयमेवं कालमनुमा नमः प्रदेशमे बुद्धे तै बोद्धे :—
 जेति वि खेतमेतं अणुणा खं तु गयणदब्धं च ।
 तं च पदेतं भणियं अवरावरकारणं जस्त ॥ []
 आपुवो तु परमाणुविगे अपरापरकारणं पितु मुमुमेवं बो धवस्थितिगे निमित्तमप्य गगनद्रव्य-
 वेमात्रं परमाणुविबं रगपितरदुतु तु स्फुटमाणि सः अतु प्रदेशो भणितः प्रदेशमे बु-
 नंतरं धवहारकालमं वेब्धवं :—

आवलि असंखसमया संखेज्जावलितमूहमुस्तासो ।
 सन्धुस्तासो घोवो सत्तयोवो लवो भणियो ॥५७४॥
 लिरसंखसमया संखेयावलितमूह उच्छ्वासः । समोच्छ्वासा स्तोकाः सप्तस्तोका लवो
 जे ये बुद्धे असंख्यातसमया अतुज्जुदेके बोद्धे युस्तासंख्यातअधन्यराशिप्रमाणमप्युवरिबं ।
 मूहमुच्छ्वासमेववरकुमाउच्छ्वासमे तप्परोज्जे बोद्धे :—
 अद्दस अणलसस य निखहदस य हवेज्ज जीवसस ।
 उस्तासो गिस्तासो एगो पाणोति आहीवो ॥ []

एकप्रदेशस्थितपरमाणुः मन्दगतिपरिणतः सन् द्वितीयमन्तरलोत्रं यावयाति स समयाव्य-
 स च प्रदेशः कियान्—
 जेतीवि खेतमेतं अणुणा खं तु गयणदब्धं च ।
 तं च पदेतं भणियं अवरावरकारणं जस्त ॥२॥
 अपरापरकारणं गगनद्रव्यं यावत्लोत्रमार्गं परमाणुना व्याप्तं स्फुटं च प्रदेशो भणितः ॥२॥

यावत्समयावतिः आवलिः । संख्यातावलितमूह उच्छ्वासः । स च शिख्यः ?
 अद्दस अणलसस य निखहदस य हवेज्ज जीवसस ।
 उस्तासो गिस्तासो एगो पाणोति आहीवो ॥१॥

हो गाथाओंका अर्थ इस प्रकार है—
 प्रदेशमें स्थित परमाणु मन्द गतिसे चलता हुआ अनन्तरवर्ती दूसरे
 जावा है वह समय नामक काल है । वह प्रदेश कितना है यह कहते
 क्षेत्रको एक परमाणु रोका है उसे प्रदेश कहते हैं । वह दूर और
 होता है ।
 गालको कहते हैं—

यावत्समयावतिः आवलिः । संख्यात आवलीके
 है । वह सुखी, निरालसी और नीरोगी जीवका उच्छ्वास-

विवसमे'दुं पक्षमे'दुं मासमे'दुं ऋतुमे'दुं मयनमे'दुं वर्षमे'दित्यवमाविगच्छ स्फुटमाणि आवल्यादिभेदादि संख्यातासंख्यातानंतपर्यंतं यथासंख्यमाणि श्रुतावधिकेवलज्ञानविषयतयापि विकल्पंगच्छप्युपवेत्तं व्यवहारकालमवर्क ।

ववहारो पुण कालो माणुसखेचमि जाणिदन्वो दु ।

जोइसियाणं चारे ववहारो खलु समाणोचि ॥५७७॥

व्यवहारः पुनः कालो मनुष्यक्षेत्रे जातव्यस्तु । ज्योतिष्काणां चारे व्यवहारः खलु समान इति ॥

व्यवहारकालमे'दुं मत्ते मनुष्यक्षेत्रबोद्धे मातव्यमवकुमे'दोडे ज्योतिष्कचारबोद्धे व्यवहारकालं तु मत्ते खलु स्फुटमाणि समानमे'दितिबु कारणमाणि ।

ववहारो पुण तिविहो तीदो वट्टंतगो भविस्सो दु ।

तीदो संखेज्जावलिहदसिद्धानं पमाणो दु ॥५७८॥

व्यवहारः पुनस्त्रिविधोऽतीतो वर्तमानो भविष्यस्तु । अतीतः संख्यातावलहतसिद्धानां प्रमाणं तु ॥

व्यवहारकालमे'दुं मत्ते त्रिविधमवकुं । अतीतकालमे'दुं वर्तमानकालमे'दुं भविष्यकालमे'दितु । अल्लि अतीतकालप्रमाणं तु मत्ते संख्यातावलहियं गुणिसत्पट्ट सिद्धरूपञ्च प्रमाणमे'दिति- १५
नित्यककुमे'दोडे त्रैराशिक सिद्धमप्युर्वारवमा त्रैराशिकमे'तं बोडे वरुनर ए'दुं जीवंगळ मुत्तिगे सलुत्तिरलु अर्वाङ्गलमे'दुं समयकालमागुत्तिरलु सव्वजोवराशिय अनंतकालमागमात्रमप्य जीवंगळ

विवसः पक्षः मासः ऋतुः अयनं वर्षं इत्यादयः स्फुटं आवल्यादिभेदतः संख्यातासंख्यातानन्तरपर्यंतं क्रमशः ध्रुवाधिकेवलज्ञानविषयविकल्पाः सर्वे व्यवहारकालो भवति ॥५७९॥

व्यवहारकालः पुनः मनुष्यक्षेत्रे स्फुटं जातव्यः । कुतः ? ज्योतिष्काणां चारे स समान इति २०
कारणात् ॥५७७॥

व्यवहारकालः पुनस्त्रिविधः अतीतोऽनागतो वर्तमानश्चेति । तु-पुनः अतीतः संख्यातावलहियुगित-
सिद्धराशिर्भवति, कुतः ? अष्टोत्तरपद्धतजीवानां मुक्तिगवनकालोऽष्टसमयाधिकपश्चात्ताः तदा, सर्वजोवराशय-

एक समय अधिक आवली जपन्त्य अन्तर्मुहूर्तं हे । एक समय कम मुहूर्तं उत्कृष्ट अन्त-
र्मुहूर्तं हे । दोनोके मध्यमे' असंख्यात भेद हे वे सब अन्तर्मुहूर्तं जानना । २५

दिवस, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, वर्ष इत्यादि आवली आदिसे लेकर संख्यात, असंख्यात अनन्तरपर्यन्त क्रमसे श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और केवलज्ञानके विषयभूत सय चिकल्प व्यवहार काल है ॥५७६॥

व्यवहारकाल मनुष्यलोकमें ही जाना जाता है क्योंकि ज्योतिषी देवोंके चलनेसे ही व्यवहारकाल निर्णय होता है अतः ज्योतिषी देवोंके चलनेका काल और व्यवहार काल १०
दोनों समान हैं ॥ ५७७ ॥

व्यवहारकाल तीन प्रकारका है—अतीत, अनागत और वर्तमान । अतीतकाल संख्यात आवलीसे गुणित सिद्धराशि प्रमाण है । क्योंकि छह सौ आठ जीवोंके मुक्ति जानेका काल आठ समय अधिक छह मास है । तब समस्त जीव राशिके अनन्तर भाग कुछ जीवोंका

लोगस्त असंखेज्जदिभागप्पहुडिं तु सच्चलोगोत्ति ।

अप्पपदेसविसप्पणसंहारे वावदो जीवो ॥५८४॥

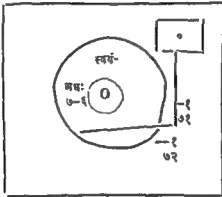
लोकस्यासंख्येयभागप्रभृतिस्तु सर्वलोकपर्यन्तमात्मप्रदेशविसर्पणसंहारे व्याप्तो जीवः ॥

सूक्ष्मनिगोदलब्धपर्याप्तजघन्यावगाहं मोदल्लो'डु महामत्सयावगाहपर्यन्तं प्रदेशोत्तरवृद्धि-

क्रमंगलपुपु ६ ६ ६०००६११११११ वेदनापुतंगे एकप्रदेशोत्तरवृद्धिक्रमविवं जघन्यविवं मेले ५
५ ३ १ ३

नडदुत्तुष्टं त्रिपुणितमक्कुं ६ १ १ १ १ १ ३ । मेले मत्ते मारणांतिकसमुद्घातजघन्यं मोदल्लो'डु

६ १ १ १ १ १ ३ पदेशोत्तरक्रमविवं नडेदुत्तुष्टंस्वयंभूरमणसमुद्रबहिस्त्वितस्यंडिलक्षेत्रबोळिहं महा-
मत्स्यसंबंधि सप्तमपृष्ठिय महारौरवनामश्रेणीबद्धं कुदत्तु मारणांतिकसमुद्घातबंडमुत्तुष्टमक्कुं
१५ । ४१ सो क्षेत्रके संदृष्टि :-
१ २



सूक्ष्मनिगोदलब्धपर्याप्तजघन्यात्मप्रदेशोत्तरेषु महामत्स्यपर्यन्तेषु तदुपरि प्रदेशोत्तरेषु वेदनासमुद्घातस्य १०
त्रिगुणव्याप्तमहामत्स्यपर्यन्तेषु तदुपरि प्रदेशोत्तरेषु स्वयंभूरमणसमुद्रबाल्पस्थण्डिलक्षेत्रस्थितमहामत्स्येन सप्तम-
पृष्ठीमहारौरवनामाश्रेणीबद्धं प्रति मुक्तमारणान्तिकसमुद्घातस्य पञ्चवतयोजनतदर्पविष्कम्भोत्सेधकार्यपदरज्जवा-
यतप्रथमद्वितीयतृतीयचकोत्कृष्टपर्यन्तेषु तदुपरिलोकपूरणपर्यन्तेषु च अवगाहनविकल्पेषु आत्यप्रदेशविसर्पणसंहारे

सूक्ष्मनिगोदिधा लब्धपर्याप्तकी जघन्य अवगाहनासे लेकर एक-एक प्रदेश बढ़ते-
बढ़ते महामत्स्यपर्यन्त उत्कृष्ट अवगाहना होती है । उससे ऊपर एक-एक प्रदेश बढ़ते हुए वेदना १५
समुद्घातवाले हा क्षेत्र महामत्स्यकी अवगाहनासे तीन गुणा लम्बा, चौड़ा होता है पुनः एक-
एक प्रदेश बढ़ते हुए स्वयंभूरमण समुद्रके बाहर स्थण्डिलक्षेत्रमें रहनेवाला महामत्स्य सप्तम
पृष्ठीके महारौरव नामक श्रेणीबद्ध विलेकी ओर मारणान्तिक समुद्घात करता है तब पाँच
सौ योजन चौड़ा, अढ़ाई सौ योजन ऊँचा तथा प्रथम मोर्चेमें एक राज्, दूसरेमें आधा राज्
और तीसरेमें छह राज् लम्बा उत्कृष्टक्षेत्र होता है । उसके ऊपर केवलिसमुद्घातमें लोकपूरण २०

लोगस्य असंख्येज्जदिभागप्यहुडिं तु सन्वलोगोचि ।

अप्यपदेसविसर्पणसंहारे वावदो जीवो ॥८८४॥

सोऽस्यासंख्येयभागप्रभृतिस्तु सध्वंलोरुपप्यंतमात्मप्रवेशविसर्पणसंहारे व्यापृतो जीवः ॥

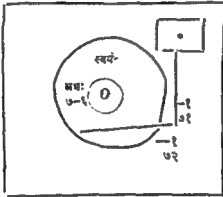
सूक्ष्मनिगोदलम्प्यपयामजपन्मावगाहं मोदतोऽङ्गु महामत्स्यापगाहपर्यंतं प्रदेशोत्तरपृष्टि-

क्रमंगदप्युपु ६६ ६०००६१११११ वेदनापुलंगे एरुप्रदेशोत्तरपृष्टिक्रमविं जघन्यविं मेले ५

नङ्गुत्तुष्टं त्रिगुणितमस्तु ६११११११११ मेले मत्ते मारणांतिकसमुद्रपातजप्यं मोदतोऽङ्गु

६११११११११ प्रदेशोत्तरक्रमविं नङ्गुत्तुष्टंस्वयंभूरमपसमुद्रबहिस्थितस्पर्धिलक्षेत्रबोद्धिं महा-
मत्स्यासंबंधि सप्तमपृष्ठिय महारौरवनामधेनीबद्धं कुस्तु मारणांतिकसमुद्रपातबद्धमुत्तुष्टमस्तु
१५।४१ मो क्षेत्रके संदृष्टि :—

१२



सूक्ष्मनिगोदलम्प्यपयामजपन्मावदेनोत्तरेषु महामत्स्यापर्यन्तेषु तदुपरि प्रदेशोत्तरेषु वेदनासमुद्रपातस्य
त्रिगुणप्राप्तमहामत्स्यापर्यन्तेषु तदुपरि प्रदेशोत्तरेषु स्वयंभूरमपसमुद्रबाह्यस्थितसोवस्थितमहामत्स्येन सप्तम-
पृष्ठीमहाराौरवनामधेनीबद्धं प्रति मुक्तमारणांतिकसमुद्रपातस्य पञ्चतयोजनतदपर्यन्तपेक्षापर्यन्तज्जवा-
पतत्रपमद्वितीयपृष्ठीमहाराौरवपर्यन्तेषु तदुपरिलोकपूरणपर्यन्तेषु च अवगाहनविकल्पेषु आत्मप्रदेशविसर्पणसंहारे

१०

सूक्ष्मनिगोदिया लम्प्यपयामकफी जघन्य अवगाहनासे लेकर एक-एक प्रदेश घटते-
घटते महामत्स्यापर्यन्त उत्कृष्ट अवगाहना होती है। उससे ऊपर एक-एक प्रदेश घटते हुए वेदना
समुद्रपातवाले का क्षेत्र महामत्स्याकी अवगाहनासे तीन गुणा लम्बा, चौड़ा होता है पुनः एक-
एक प्रदेश घटते हुए स्वयंभूरमप समुद्रके बाहर स्थण्डिलक्षेत्रमें रहनेवाला महामत्स्या सप्तम
पृष्ठीके महारौरव नामक थ्रेणीबद्ध विलेकी ओर मारणांतिक समुद्रपात करता है तब पाँच
सौ योजन चौड़ा, अर्द्धाई सौ योजन ऊँचा तथा प्रथम मोड़में एक राजू, दूसरेमें आधा राजू
और तीसरेमें छह राजू लम्बा उत्कृष्टक्षेत्र होता है। उसके ऊपर कैबलिसमुद्रपातमें लोकपूरण २०

१५

२०

विशतिभेदंगळपुवु । इल्लिगुपयोगिइल्लोकमिनु :-

“मूर्तिमत्सु पदार्थेषु संसारिण्यपि पुद्गलाः ।

अकर्मकर्म नो कर्मजातिभेदेषु वर्गणाः ॥” []

मूर्तिमंतंगळपु पदार्थंगळोळं संसारिजीवनोळं पुद्गलशब्दं, अकर्मजातिगळोळं कर्म-
जातिगळोळं नो कर्मजातिगळोळं वर्गणं^१ येंब शब्दं वत्तिमुगुं । इल्लिगुपुवर्गणंगळु सुगमंगळु ।
संख्याताणुसमूह वर्गणंगळु द्वयणुक इयणुकं भोदलावसदुश धनिकंगळु मेले मेलेकैक परमाणुविद-
धिकंगळु नडु चरमवोळु संख्यातोत्कृष्टप्रमितपरमाणुस्कंधंगळु सहशधनिकंगळु तद्योग्यंगळपुवु
उ १५ । १५ । १५ । असंख्यातवर्गणंगळोळु जघन्यवर्गणंगळु सहशधनिकंगळु । परि-

५

० ३ । ३ । ३ । ३ । ३ । ३
ज २ । २ । २ । २ । २
अणु १ । १ । १ । १ । १ । १ । १

मितासंख्यातजघन्याराशिप्रमितपरमाणुस्कंधंगळपुवु । मेलेकैकपरमाणुचयकमदिवं योगि चरमवोळु
द्विकबारासंख्यातोत्कृष्टराशिप्रमितपरमाणुगळु स्कंधंगळु सदुशधनिकंगळपुवु

१०

मूर्तिमत्सु पदार्थेषु संसारिण्यपि पुद्गलाः ।

अकर्मकर्मनो कर्मजातिभेदेषु वर्गणाः ॥१॥

मूर्तिमत्सु पदार्थेषु संसारिजीवे च पुद्गलशब्दो वर्तते । अकर्मजातिषु कर्मजातिषु नो कर्मजातिषु च
वर्गणाघन्दो वर्तते । अणुवर्गणा (सुगमा) एकपरमाणुरूपा स्यात् १ । १ । १ । १ । १ । अणुवर्गणा ।
संख्याताणुवर्गणा द्वयणुकादयः एकैकावधिकाः, उत्कृष्टसंख्याताणुस्कन्धपर्यन्ताः—

१५

उ १५ । १५ । ०० १५
० ० ०
० ० ०
म ३ ३ ०० ३
ज २ २ ०० २

असंख्याताणुवर्गणा जघन्यपरिमितासंख्याताणुकादयः एकैकावधिका उत्कृष्टद्विकबारासंख्याताणुस्कन्ध-
पर्यन्ताः—

हि—पुद्गल शब्द मूर्तिमान् पदार्थोंका और संसारी जीवोंका वाचक है । और वर्गणाशब्द
अकर्मजातिके, कर्म जातिके और नो कर्मजातिके पुद्गलोंको कहता है ।

इनमें से अणुवर्गणा सुगम है । एक-एक परमाणुको अणुवर्गणा कहते हैं । अन्य दार्ष्ट
वर्गणाओंमें भेद हैं सो उनमें जघन्य और उत्कृष्ट भेद कहते हैं । द्वयणुकसे लेकर एक-एक
परमाणु बढ़ते-बढ़ते उत्कृष्ट संख्यात परमाणुओंके स्कन्ध पर्यन्त संख्याताणुवर्गणा है । उसमें
जघन्य दो अणुओंका स्कन्ध है और उत्कृष्ट-उत्कृष्ट संख्यात अणुओंका स्कन्ध है । जघन्य
परिमितासंख्यात परमाणुओंसे लेकर एक-एक अणु बढ़ते-बढ़ते उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात
परमाणुओंके स्कन्ध पर्यन्त असंख्याताणुवर्गणा है । यहाँ जघन्य परीवासंख्यात परमाणुओंका
स्कन्ध है और उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात परमाणुओंका स्कन्ध है । संख्याताणुवर्गणा और
असंख्याताणुवर्गणा में विवक्षितवर्गणाको ढानेके लिए गुणकार नीचेकी वर्गणासे विवक्षित-

२०

२५

१. म पुद्गलंगळु । २. म योग्यलेंवुपुवु ।

विजातिभेदगन्धपुत्रु । इतिगुणयोगिदत्तोरुमिदुः—

“मृत्तिमत्सु पदार्थेषु संसारिभ्योपि पुद्गलाः ।

अकर्मरुग्मं नोऽकर्मजातिभेदेषु वर्गणाः ॥” []

मृत्तिमंतगत्पु पदार्थगन्धोऽं संसारिजीवोऽं पुद्गलेशब्दं, अकर्मजातिगन्धोऽं कर्म-
जातिगन्धोऽं नोऽकर्मजातिगन्धोऽं वर्गणं^१ येन शब्दं वर्तितुमुं । इतिगुणवर्गणोक्तं गुणमंगल ।
संख्यातानुसमं वर्गणोक्तं द्वयमुक्तं येषु भोक्तावतद्वयं धनिकं गच्छेत् मेले मेलेके परमाणुवि-
धिकं गच्छेत् ननु चरमवोक्तं संख्यातानुसमं परमाणुस्वरूपं गच्छेत् सहापनिकं गच्छेत् तद्योग्यं गच्छेत्
उ १५ । १५ । १५ । अमंख्यातवर्गणोक्तं जघन्यवर्गणोक्तं सहापनिकं गच्छेत् परि-

० १ । १ । १ । १ । १ । १

अ २ । २ । २ । २ । २

अनु १ । १ । १ । १ । १ । १

विजातिभेदगन्धपुत्रु पदार्थेषु संसारिभ्योपि पुद्गलाः । मेलेके परमाणुधनिकं गच्छेत् योगि चरमवोक्तं
द्विकवारासंख्यातानुसमं परमाणुस्वरूपं गच्छेत् सहापनिकं गच्छेत्

मृत्तिमत्सु पदार्थेषु संसारिभ्योपि पुद्गलाः ।

अकर्मरुग्मं नोऽकर्मजातिभेदेषु वर्गणाः ॥१॥

मृत्तिमान् पदार्थेषु संसारिभ्यो च पुद्गलेशब्दो वर्तते । अकर्मजातिषु कर्मजातिषु नोऽकर्मजातिषु च
वर्णनार्थो वर्तते । अत्रानुवर्णना (गुणना) एकैकपरमाणुका स्यात् १ । १ । १ । १ । १ । अनुवर्णना ।
संख्यातानुवर्णना द्वयगुणादयः एकैकामपिका, उत्कृष्टसंख्यातानुवर्णनाः—

उ १५ । १५ । ०० १५
० ० ०
० ० ०
अ १ १ ०० १
अ २ २ ०० २

असंख्यातानुवर्णना जघन्यविजातिभेदगन्धपुत्रुकादयः एकैकामपिका उत्कृष्टद्विकवारासंख्यातानुवर्णना-
वर्णनाः—

ह—पुद्गल शब्द मृत्तिमान् पदार्थोका और संसारी जीवोका वाचक है । और वर्णनाशब्द
अकर्मजातिके, कर्म जातिके और नोऽकर्मजातिके पुद्गलोंको कहता है ।

इनमें-से अनुवर्णना गुणम है । एक-एक परमाणुको अनुवर्णना कहते हैं । अन्य पाईस
वर्णनाओंमें भेद है सो उनमें जघन्य और उत्कृष्ट भेद कहते हैं । द्वयगुणसे लेकर एक-एक
परमाणु बढ़ते-बढ़ते उत्कृष्ट संख्यात परमाणुओंके स्कन्ध पर्यन्त संख्यातानुवर्णना है । उसमें
जघन्य दो अनुओंका स्कन्ध है और उत्कृष्ट-उत्कृष्ट संख्यात अनुओंका स्कन्ध है । जघन्य
परिमितसंख्यात परमाणुओंसे लेकर एक-एक अनु बढ़ते-बढ़ते उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात
परमाणुओंके स्कन्ध पर्यन्त असंख्यातानुवर्णना है । यहाँ जघन्य परीतासंख्यात परमाणुओंका
स्कन्ध है और उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात परमाणुओंका स्कन्ध है । संख्यातानुवर्णना और
असंख्यातानुवर्णनामें विवक्षितवर्णनाको लानेके लिए गुणकार नीचेकी वर्णनासे विवक्षित-

१. न पुद्गलं गच्छेत् । २. मं भोक्तावतद्वयं ।

पुष्टकृष्टं । तज्जघन्यान्तैकभागदि विशेषाधिकमवकुं उ २५६ ख ख मेलणप्राह्ववर्गगेगळोळ
आ ०

ज २५६ ख

जघन्यमेकपरमाणुविदमधिकमवकुं । तदुत्कृष्टं जघन्यमे नोडलनंतगुणितमवकुं :-

उ २५६ ख १ ख ख तदनंतरोपरितनतेजःशरीरवर्गगेगळोळ जघन्यवर्गमे एकपरमाणु-
अप्रा ० ख

ख

ज २५६ ख १ ख

विदधिकमवकुं तदुत्कृष्टं तदनंतैकभागदि विशेषाधिकमवकुं उ २५६ ख १ ख १ ख ख
तेज ० ख ख

अथ २५६ ख १ ख १ ख
ख

तनमन्तवर्गणाजघन्यमेकानुनाधिकं तदुत्कृष्टं ततोऽनन्तगुणं उ २५६ ख तदनन्तरोपरितनाहारवर्गणाजघन्य- ५

०
०
ज २५६

मेकानुनाधिकं तदुत्कृष्टं तदनन्तैकभागेनाधिकं उ २५६ ख ख तदनन्तरोपरितनाप्राह्ववर्गणाजघन्यमेकानु-
० ख

आहा ०

ज २५६ ख

नाधिकं तदुत्कृष्टं ततोऽनन्तगुणं— उ २५६ ख १ ख ख तदनन्तरोपरितनतेजःशरीरवर्गणाजघन्यमेकानुनाधिकं
० ख

अनेज ०

ज २५६ ख १ ख
ख

उत्कृष्ट होता है । उत्कृष्ट आहारवर्गणामें एक परमाणु अधिक होनेपर उससे ऊपरकी अमाहा-
वर्गणाका जघन्य होता है । उसमें सिद्धराशिके अनन्तवें मागसे भाग देकर जो लब्ध आवे उसे
उसीमें मिला देनेपर अमाहवर्गणाका उत्कृष्ट होता है । इसमें एक परमाणु अधिक होनेपर उससे १०५

मेकपरमाणुविदधिकमवकुं तदुत्कृष्टमनंतगुणितमवकुं उ २५६ ख १ ख १ ख १ ख ख ख ख
अप्रा ० ख ख ख

ज २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
ख ख ख

तदनन्तरोपरितनमनोवर्गगणेशो जघन्यमेकपरमाणुविदधिकमवकुं तदुत्कृष्टमनंतैकभागदि विशेषा-

धिकमवकुं उ २५६ ख ख ख ख १ ख १ ख १ ख १ ख तदनन्तरोपरितना-
मनोवर्गणा ० ख ख ख ख

ज २५६ ख १ ख १ ख १ ख ख ख ख
ख ख ख

प्राह्यवर्गगणेशो जघन्यमेकपरमाणुविदधिकमवकुं तदुत्कृष्टं तद्वजघन्यमं नोदलनंतगुणितमवकुं—

उ २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख ख १ ख ख
अप्राह्य ० ख ख ख ख

ज २५६ ख १ ख ख ख १ ख ख १ ख १ ख
ख ख ख ख

तदनन्तरोपरितनाप्राह्यवर्गगणजघन्य एकाधुनाधिकं तदुत्कृष्टं ततोऽनन्तगुणं—

उ २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख ख
अनेग्न ० ख ख ख

ज २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
ख ख ख

तदनन्तरोपरितनमनोवर्गगणजघन्यमेकाधुनाधिकं तदुत्कृष्टं तदनन्तैकभागनाधिकं—

उ २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
मनोव ० ख ख ख ख

ज २५६ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख १ ख
ख ख ख

तदनन्तरोपरितनाप्राह्यवर्गगणजघन्यमेकाधुनाधिकं तदुत्कृष्टं ततोऽनन्तगुणं—

उससे ऊपरकी भाषा वर्गणाका जघन्य है। उसमें सिद्धरात्रिके अनन्तवै भागसे भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिलानेपर उसका उत्कृष्ट होता है। तमें एक परमाणु अधिक होनेपर उससे ऊपरकी अप्राह्यवर्गणाका जघन्य है। उससे उसका उत्कृष्ट होता है। उसमें एक परमाणु अधिक होनेपर उससे ऊपरकी है। उसमें सिद्धरात्रिके

तदनन्तरोपरितनतातरनिरन्तरवर्गभोग्यञ्च जपन्यमेकपरमाणुविरपिकमस्कं । तदुत्कृष्ट तजपन्यम् नोऽतनन्तजीवराशिगुणितमङ्कुमदशके संदृष्टिः—

उ १५६ प १ प प प प प १ प प प १६ प १६ प
सांतर नि ० प प प प प

ज १५६ प १ प प १ प प प १ प १ प प प १६ प
प प प प प प

इति पितोषं देवत्पुत्रं । परमाणुवर्गभोग्य मोदतोऽष्ट ई सांतरनिरन्तरवर्गभोग्य उत्कृष्टवर्गभोग्य पप्यन्तं पदिनेतुं वर्गभोग्यञ्च सदुपापनिकवर्गभोग्यञ्च अनन्तपुद्गलवर्गमूलमात्रं गच्छन्तु । पु = मुद्रावन्ता-
गुत्तं विशेषहीनक्रमं गच्छन्तु प्रतिभागहारं सिद्धान्तैकभागवचकुं विदुः तदनन्तरोपरितनता- ५
वर्गभोग्यञ्च जपन्यमेकरूपाविकमवन्तुमुत्कृष्टमनन्तजीवराशि गुणितमवन्तुः—

उ १५६ प १ प १ प १ प प प प प १ प प १६ प १६ प १६ प
पुन्य ० प प प प प

ज १५६ प १ प प प १ प प १ प प १ प प १६ प १६ प
प प प प प

यिनु पदिनावं वर्गभोग्यञ्चैकप्रकारदिवं सिद्धान्तं गच्छन्तु ।

तदनन्तरोपरितनतातरनिरन्तरवर्गभाजपयमेकागुनाधिकं तदुत्कृष्टं ततोऽनन्तजीवराशिगुणं—

उ १५६ प १ प १ प १ प १ प १ प १ प १ प १ प १६ प १६ प
प प प प प प प प प

साम्भार ०

निरन्तर ०

ज १५६ प १ प १ प १ प १ प १ प १ प १ प १ प १६ प
प प प प प प प प प

अथर्व विधेयः—परमाणुवर्गमात्रं कृत्वा साम्भारनिरन्तरवर्गभाजपयन्तं पञ्चदशवर्गभाजं सदुपापनिकानि
अनन्तगुणपुद्गलवर्गमूलमात्रावधि विधेयहीनक्रमाणि भवन्ति । तत्र प्रतिभागहारः सिद्धान्तैकभागः । १०
तदनन्तरोपरितनतातरनिरन्तरवर्गभाजपयन्तं एकरूपाधिकं तदुत्कृष्टं ततोऽनन्तजीवराशिगुणं—

जपन्य है । उससे अनन्तजीवराशिसे गुणा करनेपर उसका उत्कृष्ट होता है । उससे एक
परमाणु अधिक उससे ऊपरकी सान्तरनिरन्तरवर्गभाजका जपन्य है । उससे अनन्तजीवराशिसे
गुणा करनेपर उसका उत्कृष्ट होता है । यहाँ इतना विशेष है कि परमाणुवर्गभाजसे लेकर
सान्तरनिरन्तरवर्गभाज पर्यन्त पन्द्रह वर्गभाजोंका समानधन अनन्तगुणे पुद्गलको वर्गमूल १५
प्रमाण होनेपर भी क्रमसे विशेषहीन है । उनका प्रतिभागहार सिद्धराशिका अनन्तवर्ग
भाग है ।

पर्याप्ततेजस्कायिकजीवंगच्छेकवंपनबदंगलजसंस्थातावलिवगंप्रमितंगलवरोन् गुणितकर्मशगलप्य जीवंगल्ल यवि मुष्टु बहुगंगल्लपुयाबोडभावत्यसंस्थातैकभागप्रमितंगल्लेयपुवुळिदवेहलम गुणित- कर्माशंगल्लेयपुया गुणितकर्माशंगल्लेकवंपनबदंगल्ल यादरपर्याप्ततेजस्कायिकगल्ल सवित्तसोपचय- निगरीरसंचयं जीवारिकतेजसकर्मणशरीरसंचयं प्रत्येकदेहोत्कृष्टवर्गगोपचकुं :-

उत्त ३२ ० ० ख १२ १६ ख ८

प्रत्येक शरीर

ई प्रत्येकशरीरोत्कृष्टवर्गगोये रूपाधिकमाबोडे ५

जस ० ० ख १२ १६ ख ३

ध्रुवमूल्यवर्गगोयल्लो जयन्यवर्गगोयल्लो

आवनोर्व्व क्षपितकर्माशिलदागदिवं थंडु पूर्वकोटिवर्षागुम्नमन्युनागि पुष्टि गभार्घ्यवर्ष- मंतम्भुहृत्ताधिकंगल्लमेले सम्यक्त्वमुमं संयममुमं युगपत्कैकोडु कर्मभक्तुत्कृष्टगुणश्रेणिनिजंरेयं देगोनपूर्वकोटिवर्षयंर माडियंतम्भुहृत्ताविशेषबोडु सिद्धितम्यनेदितु क्षपकथेणियनेरिवोनुत्कृष्टकर्म- निजरेयं क्रियमाणं क्षोणकयायनाबोनासंगे शरीरवोडु जयन्यदिवमुत्कृष्टदिवमुमेकवंपनबदंगल्लप्य १०

वेपु गुणितकर्मायाः मुष्टु बहुलवेप्रि आवत्यसंस्थातैकभागमात्राः ८ तेषा सवित्तसोपचयनिगरीरसंचयस्तदुत्कृष्टं भवति— उत्त ३२ ० ० ख १२ १६ ख ८ इत्येव रूपाधिकं ध्रुवमूल्यवर्गगाजयन्यं

पतयेयरीर

ज

ख ० ० ख १२ १६ ख ३

भवति । कविषत् क्षपितकर्माशिलक्षणो जीवः पूर्वकोटिवर्षागुः मनुष्यो भूत्वा अन्तर्मुहूर्ताधिकगभार्घ्यवर्षोपरि सम्यक्त्वसंयमौ युगपत् स्वीकृत्य कर्मणामुत्कृष्टगुणश्रेणिनिजं देयोनपूर्वकोटिवर्षपर्यन्तं कुर्वन् अन्तर्मुहूर्तं सिद्धितम्यनास्ते तदा क्षपकथेप्याकडः उत्कृष्टकर्मनिजंरा कुर्वन् वीणक्यामो जातः, तच्छरीरे जयन्येन उत्कृष्टेन १५

आबलीके वर्गं प्रमाण यादर पर्याप्त तेजस्कायिक जीवोंके शरीरोंका एक स्कन्ध रूप हैं । उनमें गुणित कर्मास जीव बहुत अधिक होनेपर भी आबलीके असंख्यातवर्ग भागमात्र हैं । वनका जीवारिक तेजस कर्मणशरीरोंका विद्यसोपचयसहित उत्कृष्ट संचय उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवर्गणा है । उसमें एक परमाणु अधिक होनेपर जपन्य ध्रुवमूल्यवर्गणा होती है । इस जपन्यको सब मिथ्यावृष्टि जीवोंके प्रमाणको असंख्यात लोकसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे २० उससे गुणा करनेपर उत्कृष्ट भेद होता है । उससे एक परमाणु अधिक यादरनिगोद वर्गणा है । यादर निगोदिया जीवोंके विससोपचय सहित कर्म-नोर्कर्म परमाणुओंके एक स्कन्धको कोई जीव एक पूर्वकोटि वर्षकी आयुवाला मनुष्य हुआ । अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्षके ऊपर सम्यक्त्व और संयमको एक साथ धारण करके कुछ कम पूर्व कोटिवर्ष पर्यन्त कर्मांश २५ उत्कृष्ट गुणश्रेणि निर्जरा करते हुए जब सिद्ध पद प्राप्त करनेमें अन्तर्मुहूर्तकाल जेप रहा तब

एकवचनवशात्पञ्चसंख्यातेकभागमात्रपुत्रविगजोद्धतिर्ह
तविप्रसोपचयिनिरोरसंचयनं कौटुम्भिकरक्तम्

सहितकर्मानान्तानंतमूधमनिगोदगच्छ

न त ०० य य १२- १६ य १३। ८३१। ८-८२०
१२० ५- ००

निरोद्धकृत् कौटुम्भिकरक्तम् मूधमनिगोदगच्छो जलपृथगंगेयवत्—

उ त ०० य य १२- १६ य १३- ८३०। ८२० इति बोधकनिर्देशं बाहरनिगोदोद्ध-
१३० ५

मूधमनिगोदवर्गं धेष्पसंख्येयभागमात्रं जपन्यमूधमनिगोदवर्गमेवोक्तं पुत्रविगजं आगत्य-
बाधंमेवोक्तं पुत्रविगजं धेष्पसंख्येयभागमात्रं जपन्यमूधमनिगोदवर्गमेवोक्तं कौटुम्भिकरक्तं मूधमनिगोदजपन्यवर्गमेवा-
संख्यातेकभागमात्रं गजपुत्रकारणमात्रिपुत्रबाहरनिगोदवर्गमेवोक्तं कौटुम्भिकरक्तं मूधमनिगोदजपन्यवर्गमेवा-
गच्छेयं कौटुम्भिकरक्तं रोहिणु बोधयत्तेकैरोद्धे बाहरनिगोदवर्गमेवोक्तं निगोदसारीगच्छं मोहन्तु मूधम-
निगोदवर्गमात्रोदगच्छं मूधमनिगोदवर्गमेवोक्तं मूधमनिगोदवर्गमेवोक्तं मूधमनिगोदवर्गमेवोक्तं मूधमनिगोदवर्गमेवोक्तं

न त ०० य य १२- १६ य १३- ८३०। ८२० इति बोधकनिर्देशं बाहरनिगोदोद्ध-
१३० ५

न त ०० य य १२- १६ य १३- ८३०। ८२० इति बोधकनिर्देशं बाहरनिगोदोद्ध-
१३० ५

यह कठुष्ट बाहरनिगोदवर्गमात्रं है। उसमें एक परमाणु अधिक होनेपर तीसरी शून्यवर्गमा-
त्रा जपन्य होता है। यह कैसे है सो कहते हैं—जल-थल अथवा आकाशमें एकवचनवद्व १५
आवलीके अक्षय्यातवर्ग भाग पुलवियों सहितकर्मान् अनन्तानन्त मूधमनिगोद जीव रहते
हैं उनके विप्रसोपचय सहित औदारिक तेजस कामणसारीरका संख्य मूधमनिगोद जपन्य
वर्गमात्रं है। उसमें एक परमाणु हीन करनेपर तीसरी शून्यवर्गमात्रा कटुष्ट होता है।
यका—बाहरनिगोदवर्गमात्रा के कटुष्टमें पुलवियों श्रेणिके अक्षय्यातवर्ग भाग कही हैं
और मूधमनिगोदवर्गमात्रा के जपन्यमें आवलीके अक्षय्यातवर्ग भाग कही हैं। अतः बाहरनिगोद २०
वर्गमात्रासे पहले मूधमनिगोदवर्गमात्रा होनी चाहिए। क्योंकि पुलवियोंका प्रमाण बहुत होनेसे
परमाणुओंका प्रमाण बहुत होना सम्भव है।
१. म सोरह।

तन्महास्वरूपोत्कृष्टवर्गगोपबकुर्मेवुवत्यं ।

संखेज्वासंखेज्जे गुणगारो सो दु दोदि दु अणंते ।
चचारि अगेज्जेसु वि सिद्धानमणंतिमो मागो ॥५९८॥

संख्यातासंख्यातयोर्बर्गगोपगुणकारौ तौ तु भजतः सलु अन्ते । चतुर्ध्वग्राह्येप्यवि
सिद्धानामनन्तरुभागः ॥

संख्यातवर्गगोपयोऽं असंख्यातवर्गगोपयोऽं तन्मुत्कृष्टवर्गगोपानिमित्तमागि गुणकारं यथा-
संख्यामागि तु मत्ते तौ वा संख्यातमुमसंख्यातमु भवतः अप्युतु । अर्धंते दोहे संख्यातवर्गगोप-
अप्यन्तरादिपुत्कृष्टसंख्याताद्विदं गुणिसिदोहे संख्यातोत्कृष्टवर्गगोपबकु २१५ अपवर्तितमिदु
१५ । असंख्यातवर्गगोपान्यप्यन्तरादिपं परिमितासंख्यातअप्यन्तं तद्वादिबिभक्तद्विकवारासंख्यातो-
त्कृष्टराशिपिदं गुणिसुत्तिरलु तदुत्कृष्टवर्गगोपबकु १६।२५५ अपवर्तितमिदु २५५ । अनन्तदोहम- १०

ग्राह्यतुत्कृष्टवर्गगोपानिमित्तं तदुत्कृष्टवर्गगोपानिमित्तं गुणकारं सिद्धान्तैरुभागमात्रमबकुमा गुणकारविदं
तन्मम अत्यन्तवर्गगोपं गुणिसुत्तिरलु तन्मुत्कृष्टवर्गगोपगोपबकु १६ । अनन्तदोहम- १०

जीवादोणंतगुणो ध्रुवादितिहं असंखभागो दु ।
पन्तस्त तदो तचो असंखलोगवदिदो मिच्छो ॥५९९॥

जीवारनंतगुणो ध्रुवादितिसुणां असंख्यातभागस्तु पत्यस्य ततस्ततोऽसंखलोकापहत- १५
मिध्यादुष्टिः ॥

संख्यायः ॥५९७॥

तु-गुणः संख्यातासंख्यातवर्गगोपयोस्तुष्टार्थं स्वस्ववर्गगोपस्य गुणकारः स संख्यातवर्गगोपायं स्ववर्गगोपमत्त-

स्वोत्कृष्टमात्रसंख्यातः १५ असंख्यातवर्गगोपायं स्ववर्गगोपमत्त-
स्ववर्गगोपस्य गुणमित्ता १ । १५ । १६ । २५५ अपवर्तिते १५ । २५५ सलु स्फुटं योस्तुत्कृष्टे स्याताम् इत्यर्थः । २०
अनन्तवर्गगोपायं अग्राह्यवर्गगोपबकु १६ । २५५ अपवर्तिते १५ । २५५ सलु स्फुटं योस्तुत्कृष्टे स्याताम् इत्यर्थः । २०

अपन्यवर्गमं मिलानेपर अपना-अपना उत्कृष्ट होता है । अन्तिम महास्वरूपका उत्कृष्ट लानेके
लिए भागहार पत्यका असंख्यातवर्गो भाग है ॥५९७॥

संख्यावाणुवर्गणा और असंख्यावाणुवर्गणामें अपने-अपने उत्कृष्टमें अपने-अपने
अन्यसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उतना ही गुणकार होता है । उनसे अपने-अपने
अपन्यको गुणा करनेपर अपना-अपना उत्कृष्ट होता है । अनन्ताणुवर्गणा और चार अग्रह- २५
वर्गणामें उत्कृष्ट लानेके लिए गुणकार सिद्धराशिका अनन्तवर्गो भाग है ॥५९८॥

माणि । ई अयोर्विशतिवर्गणैर्गण्योऽस्तु प्रत्येकवर्गणेषु बाबरनिगोदवर्गणेषु सूरमनिगोदवर्गणेषु-
मेवो मूकं वर्गणैर्गण्योऽस्तु सचित्तवर्गणैर्गण्योऽस्तु अयोगिचरमसमयवर्गणेषु प्रथमप्रत्येकशरीरवर्गणैर्गण्योऽस्तु
जघन्यवर्गणाद्रव्यं स्यादस्ति स्यान्नास्ति यद्यस्ति तदा एकं मेणु द्वयं मेणु त्रयं मेणु उत्कृष्टादिवं
चतुष्टयमवकं द्वितीयवर्गणैर्गण्योऽस्तु द्वयं स्यादस्ति स्यान्नास्ति यद्यस्ति तदा एकं वा द्वयं वा त्रयं वा
उत्कृष्टेन चत्वारि भवन्ति इतदवस्थितकर्मविदमनन्तवर्गणैर्गण्योऽस्तु सलुत्तविरलु बळिष्कालिल मेले ५
आयुवो दनन्तरवर्गणैर्गण्योऽस्तु द्वयं स्यादस्ति स्यान्नास्ति यद्यस्ति तदा एकं वा द्वयं वा
त्रयं वा उत्कृष्टेन पंच भवन्ति सहस्रधनिकानि । इतदवस्थितकर्मविदमनन्तवर्गणैर्गण्योऽस्तु सलुत्तं विरलु
बळिष्कमायुवो दनन्तरवर्गणैर्गण्योऽस्तु वर्गणैर्गण्योऽस्तु कर्षचिदुदु कर्षचिदिलि येत्तलानुमुदकुम्पोडा-
गनु एकं मेणु द्वयं मेणु त्रयं मेणु उत्कृष्टादिवं सहस्रधनिकं गनु यद्विजोयंगळपुवो क्रमविदं सप्ताष्ट-
सप्तपदपंचचतुस्त्रिद्विसदुशधनिकवर्गणैर्गण्योऽस्तु संभविमुबुवु । ई यभिप्रायव मध्यप्ररूपणे भव्यसिद्ध- १०
प्रायोग्यस्यानंगळोऽस्तु गृहीतव्यमवकु- । मल्लिदं मेले आयुवोदनन्तरवर्गणैर्गण्योऽस्तु संसारिजीवप्रायोग्य-
वर्गणैर्गण्योऽस्तु वर्गणैर्गण्योऽस्तु कर्षचिदुदु कर्षचिदिलि एत्तलानुमुदकुम्पोडागनु एकं मेणु द्वयं

एषु स्फुटम् । तामु प्रत्येकबाबरनिगोदसूरमनिगोदवर्गणाः तिस्रः सचित्ताः । तत्र अयोगिचरमसमये प्रत्येकशरीर-
वर्गणं स्यादस्ति स्यान्नास्ति ? यद्यस्ति तदा एकं वा द्वयं वा त्रयं वा उत्कृष्टेन चत्वारि । तथा तद्वितीय-
वर्गणाद्रव्यं स्यादस्ति स्यान्नास्ति । यद्यस्ति तदा एकं वा द्वयं वा त्रयं वा उत्कृष्टेन चत्वारि इत्यवस्थितक्रमेणा- १५
नन्तवर्गणा अतीत्य अनन्तरवर्गणाद्रव्यं स्यादस्ति स्यान्नास्ति । यद्यस्ति तदा एकं वा द्वयं वा त्रयं वा उत्कृष्टेन
पञ्च इत्यवस्थितक्रमेण अनन्तवर्गणा अतीत्य अनन्तरवर्गणाद्रव्यं कषश्चिदस्ति कषश्चिन्नास्ति । यद्यस्ति तदा
एकं वा द्वयं वा त्रयं वा उत्कृष्टेन पद अनेन क्रमेण सप्ताष्ट सप्तपद पञ्चचतुस्त्रिद्विसदुशधनिकानि भवन्ति ।
इदं यवमध्यप्ररूपणा भव्यसिद्धशायोव्यवस्थानेषु ग्राह्या । अनन्तरवर्गणा सा संसारिजीवप्रायोग्या तद् द्वयं
कषश्चिदस्ति कषश्चिन्नास्ति यद्यस्ति तदा एकं वा द्वयं वा त्रयं वा उत्कृष्टेन आयुवोदव्यवस्थित- २०

वर्गणाके भेदु लिये हुए पुद्गल द्रव्योंका कथन किया है । उनमें प्रत्येक शरीर, बाबरनिगोद
और ये तीन वर्गणा सचित्त हैं । उनका विज्ञेय कहते हैं—उनमेंसे अयोगिकेबलीके अन्तिम
समयमें पायी जानेवाली जघन्य प्रत्येक शरीरवर्गणा लोकमें होती भी है और नहीं भी होती ।
यदि होती है तो एक या दो या तीन या उत्कृष्टसे चार तक होती हैं । उस जघन्य वर्गणासे २५
एक परमाणु अधिक द्वितीय प्रत्येक शरीरवर्गणा होती भी है और नहीं भी होती । यदि होती
है तो एक या दो या तीन या उत्कृष्टसे चार होती हैं । इसी अवस्थित क्रमसे एक-एक परमाणु
बढ़ाते-बढ़ाते अनन्त वर्गणाओंके होनेपर उसके अनन्तर एक परमाणु अधिक वर्गणा लोकमें
होती भी है और नहीं भी होती । यदि है तब एक या दो या तीन या उत्कृष्टसे पाँच होती
हैं । इसी अवस्थित क्रमसे एक-एक परमाणु बढ़ाते-बढ़ाते अनन्त वर्गणाएँ जीवनेपर पुनः
एक परमाणु अधिक वर्गणा होती भी है और नहीं भी होती । यदि है तब एक या दो या ३०
तीन या उत्कृष्टसे छह होती हैं । इसी क्रमसे अनन्तवर्गणा पर्यन्त उत्कृष्ट सात, आठ, सात,
छह, पाँच, चार, तीन-दो वर्गणा लोकमें समान परमाणुओंके परिमाणको लिये हुए होती हैं ।
यह यवमध्यप्ररूपणा मोक्ष जानेवाले भव्य जीवोंके योग्य स्थानोंमें ग्रहण करनेके योग्य है ।
अथ जो अनन्तरवर्गणा संसारि जीवोंके योग्य हैं उसे कहते हैं । पूर्वमें कही प्रत्येक

वादरवादरवादर वादरसुहृमं च सुहृमधूलं च ।

सुहृमं च सुहृमसुहृमं धरादियं होदि छन्मेयं ॥६०३॥

वादरवादरं वादरसूक्ष्मं च सूक्ष्मसूक्ष्मं च । सूक्ष्मं च सूक्ष्मसूक्ष्मं धरादिकं भवति पदभेदं ॥

पृथ्वीरूपपुद्गलद्रव्यम् वादरवादरम् बुद्धु । छेदिसत्त्वं भेदिसत्त्वं अन्यत्रमोष्वदं शक्यमप्यु-
वादरवादरम् बुद्धयं । जलम् वादरम् बुद्धु । आयुर्दोषं छेदिसत्त्वं भेदिसत्त्वं अज्ञायमन्यत्रमोष्वदं ५
शक्यमप्युवादरम् बुद्धयं । छायेयं वादरसूक्ष्मम् बुद्धु । आयुर्दोषं छेदिसत्त्वं भेदिसत्त्वं अन्यत्रमोष्वद-
शक्यमप्युवादरम् वादरसूक्ष्मम् बुद्धयं । आयुर्दोषं बुद्धु चक्षुरिन्द्रियरहितज्ञेयचतुरिन्द्रियविषयमप्य बाह्यात्यंमदं
सूक्ष्मसूक्ष्मम् बुद्धु । कर्मसं सूक्ष्मम् बुद्धु । आयुर्दोषं बुद्धु वैज्ञावधिपरमावधिविषयमप्य सूक्ष्मम् बुद्धयं ।
परमाणुं सूक्ष्मसूक्ष्मम् बुद्धु । आयुर्दोषं पुद्गलद्रव्यमप्य सत्त्वावधिविषयमेवावोढे सूक्ष्मसूक्ष्मम्-
बुद्धयं ।

खंधं सयलसमत्थं तस्स य अद्धं मणंति देसो चि ।

अद्धं च पदेसो अविभागी चेव परमाणु ॥६०४॥

स्कंधं सकलसमत्थं तस्य चाद्धं भणंति देश इति । अर्द्धाद्धं च प्रदेशः अविभागी चेव
परमाणुः ॥

स्कंधम् बुद्धु सवर्गशङ्खजिह्वं संपूर्णमक्कुमदरद्धं देशमेवितु पेञ्जव । अर्द्धस्याद्धमर्द्धाद्धमं १५
प्रदेशम् बुद्धु पेञ्जव । अविभागियपुर्वाद्धं परमाणुं बुद्धु पेञ्जव गणधराविपरमावमज्ञानिगळ । इंतु
स्थानस्वरूपाधिकारंतिदुर्बुद्धु ।

पृथ्वीरूपपुद्गलद्रव्यं वादरवादरं छेत्तु भेत्तु अन्यत्र नेत्तु शक्यं तद्वादरवादरमित्यर्थः । जलं वादरं,
पच्छेत्तु भेत्तुमशक्यं, अन्यत्र नेत्तु शक्यं तद्वादरमित्यर्थः । छाया वादरसूक्ष्मं यच्छेत्तु भेत्तुमशक्यं नेत्तुमशक्यं
तद्वादरसूक्ष्ममित्यर्थः । यः चक्षुर्वजितचतुरिन्द्रियविषयो बाह्यार्थः तत्सूक्ष्मसूक्ष्मम् । कर्म सूक्ष्मं, यद्द्रव्यं देशा- २०
वधिपरमावधिविषयं तत्सूक्ष्ममित्यर्थः । परमाणुसूक्ष्मसूक्ष्मं तत्सर्वविषयविषयं तत्सूक्ष्मसूक्ष्ममित्यर्थः ॥६०३॥

स्कन्धं सर्वांशसंपूर्णं भणन्ति तदर्थं च देशं, अर्थस्त्वायं प्रदेशं अवियापिमूर्तं परमाणुम् ॥६०४॥ इति
स्थानस्वरूपाधिकारः ।

पृथ्वीरूप पुद्गल द्रव्य वादर-वादर है । जिसका छेदन-भेदन किया जा सके, जिसे
एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाया जा सके वह वादर-वादर है । जिसका छेदन-भेदन २५
तो न हो सके किन्तु अन्यत्र ले जाया जा सके वह वादर है । छाया वादरसूक्ष्म है । जो
छेदन-भेदन और अन्यत्र ले जानेमें अशक्य हो वह वादर सूक्ष्म है । जो चक्षुको छोड़ शेष
चार इन्द्रियोंका विषय याज्ञ पदार्थ है वह सूक्ष्म स्थूल है । कर्मस्कन्ध सूक्ष्म है । जो द्रव्य
देशावधि और परमावधिज्ञानका विषय होता है वह सूक्ष्म है । परमाणु सूक्ष्मसूक्ष्म है ।
जो सर्वविधिज्ञानका विषय है वह सूक्ष्मसूक्ष्म है ॥६०३॥

जो सब अंशोंसे पूर्ण हो उसे स्कन्ध कहते हैं । उसके आघेको देश कहते हैं । और ३०
आघेके आघेको प्रदेश कहते हैं । जिसका विभाग न हो सके वह परमाणु है ॥६०४॥

स्थानाधिकार समाप्त हुआ ।

वादरवादरवादर वादरसुहृमं च सुहृमथूलं च ।

सुहृमं च सुहृमसुहृमं धरादियं होदि छन्मेयं ॥६०३॥

वादरवादरं वादरसूक्ष्मं च सूक्ष्मसूक्ष्मं धरादिकं भवति पदभेदं ॥

पृथ्वीरूपपुद्गलद्रव्यं वादरवादरमेव बुद्धु । छेदिसत्त्वं भेदिसत्त्वं अन्यत्रमोष्येवं शक्यमप्युद्ग-
वादरवादरमेव बुद्धु । जलं वादरमेव बुद्धु । आवुदोद्गु छेदिसत्त्वं भेदिसत्त्वं अशक्यमन्यत्रमोष्येवं
शक्यमप्युद्गु वादरमेव बुद्धु । छायेयं वादरसूक्ष्ममेव बुद्धु । आवुदोद्गु छेदिसत्त्वं भेदिसत्त्वं अशक्यमन्यत्रमोष्येवं
शक्यमप्युद्गु वादरसूक्ष्ममेव बुद्धु । आवुदोद्गु चक्षुरिन्द्रियरहितजोषचतुरिन्द्रियविषयमप्य बाह्यात्यंमहं
सूक्ष्मसूक्ष्ममेव बुद्धु । कर्ममं सूक्ष्ममेव बुद्धु । आवुदोद्गु द्रव्यं देशावधिपरमावधिषयमप्य सूक्ष्ममेव बुद्धु ।
परमाणुवं सूक्ष्मसूक्ष्ममेव बुद्धु । आवुदोद्गु पुद्गलद्रव्यमप्य सर्वावधिषयमेवावोक्ते सूक्ष्मसूक्ष्ममे-
व बुद्धु ।

खुंधं सयलसमर्थं तस्स य अद्धं भणंति देसो चि ।

अद्धद्धं च पदेसो अविभागी चेव परमाणु ॥६०४॥

स्कन्धं सकलसमर्थं तस्य चाद्धं भणंति देश इति । अर्द्धाद्धं च प्रवेशः अविभागी चेव
परमाणुः ॥

स्कन्धमेव बुद्धु सर्वशक्तिं संपूर्णमकुमदरद्धं देशमेवितु पेञ्चवह । अर्द्धस्याद्धं अर्द्धमहं
प्रदेशमेव पेञ्चवह । अविभागियप्युर्वारिद्धं परमाणुवेव पेञ्चवह गणधरादिपरमाणुनातिगच्छ । इत्तु
स्थानत्वरूपाधिकारित्वबुद्धु ।

पृथ्वीरूपपुद्गलद्रव्यं वादरवादरं छेत्तु भेत्तु अन्यत्र नेत्तु शक्यं तद्वादरवादरमित्यर्थः । जलं वादरं,
यच्छेत्तु भेत्तुमशक्यं, अन्यत्र नेत्तु शक्यं तद्वादरमित्यर्थः । छाया वादरसूक्ष्मं यच्छेत्तु भेत्तुमन्यत्र नेत्तुमशक्यं
तद्वादरसूक्ष्ममित्यर्थः । यः चक्षुरिन्द्रियरहितजोषचतुरिन्द्रियविषयो बाह्यात्यं तत्सूक्ष्मसूक्ष्मम् । कर्म सूक्ष्मं, यद्द्रव्यं देशा-
वधिपरमावधिषयं तत्सूक्ष्ममित्यर्थः । परमाणुमूदमसूक्ष्मं तत्सर्वावधिषयं तत्सूक्ष्मसूक्ष्ममित्यर्थः ॥६०३॥

स्कन्धं सर्वाशक्तं भणंति तदर्थं च देशं, अर्धस्यार्धं प्रवेशं अविभागियमूलं परमाणुम् ॥६०४॥ इति
स्थानत्वरूपाधिकारः ।

पृथ्वीरूप पुद्गल द्रव्य वादर-वादर है । जिसका छेदन-भेदन किया जा सके, जिसे
एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाया जा सके वह वादर-वादर है । जिसका छेदन-भेदन
तो न हो सके किन्तु अन्यत्र ले जाया जा सके वह वादर है । छाया वादरसूक्ष्म है । जो
छेदन-भेदन और अन्यत्र ले जानेमें अशक्य हो वह वादर सूक्ष्म है । जो चक्षुको छोड़ शेष
चार इन्द्रियोंका विषय बाह्य पदार्थ है वह सूक्ष्म स्थूल है । कर्मस्कन्ध सूक्ष्म है । जो द्रव्य
देशावधि और परमावधिज्ञानका विषय होता है वह सूक्ष्म है । परमाणु सूक्ष्मसूक्ष्म है ।
जो सर्वावधिज्ञानका विषय है वह सूक्ष्मसूक्ष्म है ॥६०३॥

जो सब अंशोंसे पूर्ण हो उसे स्कन्ध कहते हैं । उसके आधेको देश कहते हैं । और
आधेके आधेको प्रदेश कहते हैं । जिसका विभाग न हो सके वह परमाणु है ॥६०४॥

स्थानाधिकार समाप्त हुआ ।

पातमागुप्तं विरलु विपच्यमानत्वविदं पौद्गलिकमेवे निश्चेतत्पहुनु । याम् द्विप्रकारमरुं द्वयवाक् भावचारोदिततिल भावचारके बुद्धु बोध्यांतरायमतिभूतज्ञानावरणस्योपशमांगोपांगनामलाभनिमित्त-
त्वविदं पौद्गलिकमेवकुमेके बोधे तवभावमागुप्तिरलु तत्पुत्त्यभावमप्युदरिदं । तत्सामर्थ्योपेतत्वविदं
क्रियायंतनप्यात्मनिदं प्रेम्भंभाषंगरूप्य पुद्गलंगत्तु धावत्वविदं परिणमिमुक्तेदितु द्वयवाक्कुं
पौद्गलिकमेवकुं मेकेबोडे धोनेद्विप्रविययत्वविदं इतरैद्विप्रविययमेनु कारणमागवेदोडे तद्वहणा-
योग्यत्वविदं प्रागप्राप्त्यप्यप्रम्यरोज् रसाद्यनुपलम्पियते, अमूर्तं धारकेवेतलानुमेवेप्योडे पुक्त
मत्तेके बोधे मूर्तिमद्वहणावरोपम्यापाताभिभवारिदधंनिदं मूर्तिमत्त्व सिद्धिप्युदरिदं ।

५

मनमु द्विप्रकारमरुं द्वयभावभेदविदितिल भावमनस्तेषु लभ्यपुपयोगलक्षणं पुद्गला-
लंबनविदं पौद्गलिकमरुं । द्वयमनमु ज्ञानावरणयोप्यंतरायस्योपशमांगोपांगनामलाभप्रत्यय-
गत्तु गुणदोषविचारस्मरणादिप्रणिधानाभिमुखमप्यात्मंगुप्राहृक्पुद्गलंगत्तुमनस्त्वविदं परिण-
तंगत्तेदितु पौद्गलिकमरुं । योद्वंनं वयं :—मनं द्वयान्तरं रूपादिपरिणमनविरहितमनुमाय-

१०

यमाज्ञोपात्तनामकर्मलाभनिमित्तत्वात् पौद्गलिका वदमाने तद्वृत्त्यभावात् । तत्सामर्थ्योपेतत्वेन त्रिधावताम्नना
प्रेम्भंभाषंगुद्गलाः शक्तत्वेन परितमनोविदं द्वयवागपि पौद्गलिकैर धोनेद्विप्रविययत्वात् । इतरैद्विप्रविययपि
बुद्धो न स्यात् तद्वहणावरोपम्यात् प्रागप्राप्त्ये गत्तुम्ये रसाद्यनुपलम्पियत् । अमूर्तं कागु इत्यप्युपगतं
मूर्तंरहणावरोपम्यात्प्रागप्राप्त्येदितु मूर्तत्वविदं । मनोऽपि तथा देवा । तत्र भावमनः लभ्यपुपयोगलक्षणं
पुद्गलात्मनानात् पौद्गलिकम् । द्वयमनोऽपि ज्ञानावरणयोप्यंतरायस्योपशमांगोपांगनामकर्मलाभप्रत्यय-
गुणदोषविचारस्मरणादिप्रणिधानाभिमुखमप्यात्मंगुप्राहृक्पुद्गलानां तथात्वेन परिणमनात् पौद्गलिकम् ।
कदिबोह—मनः इत्यान्तर रूपादिपरिणमनविरहितमनुमायं, पौद्गलिकं न । आचार्य आह—तेन आत्मनः

१५

वरण और भवतानावरणके क्षयोपशम तथा अंगोपांग नामक कर्मके वक्ष्यके निमित्तसे होनेसे
पौद्गलिक है । उसके अभावमें भाववचन—बोलनेकी शक्ति नहीं होती । भाववचनकी
शक्तिसे युक्त क्रियावान् आत्माके द्वारा प्रेरित पुद्गल वचन रूप परिणत होते हैं इसलिये
द्वयवाक् भी पौद्गलिक ही है क्योंकि श्रोत्र इन्द्रियका विषय है ।

२०

शंका—जय वचन पौद्गलिक है तो अन्य इन्द्रियोंका भी विषय क्यों नहीं है ?

समाधान—यह अन्य इन्द्रियोंसे ग्रहण करनेके अयोग्य है । जैसे प्राण इन्द्रियसे प्राज्ञ
सुगन्धित द्रव्यमें रसना आदि इन्द्रियोंकी प्रवृत्ति नहीं होती ।

२५

वचन अमूर्तक है ऐसा कहना भी अयुक्त है क्योंकि मूर्त इन्द्रियके द्वारा शब्दका
ग्रहण होता है, मूर्त हीकार आदिसे रोका जाता है, मूर्त पदार्थसे टकरावा है तथा बहुत
दीर्घ शब्दसे मन्द शब्द दब जाता है इससे वचन मूर्तिक सिद्ध होता है । मन भी दो प्रकार-
का है—भावमन और द्वयमन । भावमन लम्पि और उपयोग लक्षणवाला है । वह पुद्गलके
अवलम्बनसे होता है । इसलिये पौद्गलिक है । द्वयमन भी पौद्गलिक है क्योंकि ज्ञानावरण
और धीर्यान्तरायके क्षयोपशम तथा अंगोपांग नामक कर्मके वक्ष्यसे जब आत्मा गुण-दोषके
विचार, स्मरण आदिके अभिमुख होता है तो उसके उपकारी पुद्गल मन रूपसे परिणमन
करते हैं इसलिये पौद्गलिक है । किसीका कहना है—मन एक पृथक् द्रव्य है उसमें रूपादि

३०

पातमागुप्तं विरलं विपक्ष्यमानत्वं विदं पौद्गलिकमर्थं निरूपेतत्पुद्गलु। वाग् द्विप्रकारमरक्तं द्रव्यवाक् भाववाक् संदितस्ति भाववाक् संबु बोध्यांतरायमतिश्रुतज्ञानावरणक्षयोपशमांगोपांगनामलाभनिमित्त-
त्वविदं पौद्गलिकेयवकुमेरं बोधे तदभावमागुप्तिरलु तद्वृत्त्यभावमप्युदरिदं। तत्सामर्थ्योपेतत्त्वविदं
क्रियापतनप्यात्मनिदं प्रेक्ष्यमाण्यष्टस्य पुद्गलंगत्वं वाक्यविदं परिणमिसुवर्गेदितु द्रव्यवाक्
पौद्गलिकेयवकु मेरं बोधे श्रोत्रेन्द्रियविषयत्वविदं इतरेन्द्रियविषयमेतु कारणमागर्धे बोधे तदग्रहणा-
पोष्यत्वविदं प्राणप्राहृत्यं पद्मबोजु रसाद्यनुपलब्धिपते, अमूर्तं वाक् बोधेतलानुमेयेष्यपोधे युक्त
मत्तेकं बोधे मूर्तिमदग्रहणावरणप्याघाताभिभवादिबर्धनविदं मूर्तिमत्स्य सिद्धिप्युदरिदं।

५

१०

१५

२०

२५

३०

मनसु द्विप्रकारमरक्तं द्रव्यभावभेदादितस्ति भावमनस्तेषु लब्धपुत्रयोगलक्षण पुद्गला
संजनविदं पौद्गलिकमरक्तं। द्रव्यमनसु ज्ञानावरणयोप्यांतरायक्षयोपशमांगोपांगनामलाभप्रत्यय-
गत्तस्य गुणदोषविधारस्मरणादिप्रणिपानाभिमुखमप्यात्मंगनुप्राहकपुद्गलंगत्वं मनस्त्वविदं परिण-
तंगत्वंदितु पौद्गलिकमरक्तं। योश्चनं वषः—मनं द्रव्यांतरं कृपादिपरिणमनविरहितमनुमात्र-

यमाज्ञोपाज्ञानमकर्मलाभनिमित्तत्वाद् पौद्गलिक। तदभावे तद्वृत्त्यभावात्। तत्सामर्थ्यवितत्वेन त्रियावत्तमना
प्रेष्यमाणपुद्गलाः वास्तवेन परिणमन्तीति द्रव्यवाक्पि पौद्गलिकेव श्रोत्रेन्द्रियविषयत्वात्। इतरेन्द्रियविषयापि
कुतो न स्यात् तद्वृत्त्यभावात्तत्वाद् प्राणप्राह्ये गन्धद्रव्ये रसपाद्यनुपलब्धिवत्। अपूर्वा वाग् इत्यप्युक्तं
मूर्तग्रहणावरणप्याघाताभिभवादिदर्शानां मूर्तत्वसिद्धेः। मनोऽपि तथा दृष्टा। तत्र भावमनः लब्धपुत्रयोगलक्षण
पुद्गलालम्बनाद् पौद्गलिकम्। द्रव्यमनोऽपि ज्ञानावरणयोप्यांतरायक्षयोपशमाज्ञोपाज्ञानमकर्मलाभप्रत्यय-
गुणदोषविकारस्मरणादिप्रणिपानाभिमुखमप्यात्मंगनुप्राहकपुद्गलानां तथात्वेन परिणमनाद् पौद्गलिकम्।
कश्चिदाहुः—यनः द्रव्यान्तरं कृपादिपरिणमनविरहितमनुमानं, पौद्गलिकं न। आचार्य आह—तेन आत्मनः

धरण और भूतज्ञानावरणके क्षयोपशम तथा अंगोपांग नामक कर्मके उदयके निमित्तसे होनेसे
पौद्गलिक है। उसके अभावमें भावयचन—बोलनेकी शक्ति नहीं होती। भावयचनकी
शक्तिसे युक्त क्रियावान् आत्माके द्वारा प्रेरित पुद्गल वचन रूप परिणत होते हैं इसलिये
द्रव्यवाक् भी पौद्गलिक ही है क्योंकि श्रोत्र इन्द्रियका विषय है।

३०

शंका—जब वचन पौद्गलिक है तो अन्य इन्द्रियोंका भी विषय क्यों नहीं है ?
समाधान—यह अन्य इन्द्रियोंसे ग्रहण करनेके अयोग्य है। जैसे प्राण इन्द्रियसे प्राज्ञ
सुगन्धित द्रव्यमें रसना आदि इन्द्रियोंकी प्रवृत्ति नहीं होती।

३५

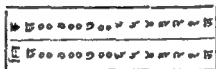
वचन अमूर्तिक है ऐसा कहना भी अयुक्त है क्योंकि मूर्त इन्द्रियके द्वारा शब्दका
ग्रहण होता है, मूर्त दोषकार आदिसे रोका जाता है, मूर्त पदार्थसे टकराता है तथा बहुत
तीव्र शब्दसे मन्द शब्द दब जाता है इससे वचन मूर्तिक सिद्ध होता है। मन भी दो प्रकार-
का है—भावमन और द्रव्यमन। भावमन लब्धि और उपयोग लक्षणवाला है। यह पुद्गलके
अवलम्बनसे होता है। इसलिये पौद्गलिक है। द्रव्यमन भी पौद्गलिक है क्योंकि ज्ञानावरण
और बोध्यांतरायके क्षयोपशम तथा अंगोपांग नामक कर्मके उदयसे जब आत्मा गुण-दोषके
विचार, स्मरण आदिके अभिमुख होता है तो उसके उपकारी पुद्गल मन रूपसे परिणमन
करते हैं इसलिये पौद्गलिक है। किसीका कहना है—मन एक पृथक् द्रव्य है उसमें कृपादि

प्राणापानगच्छो प्रतिघातं पश्येत्पट्टदुदु, श्लेष्मदिबं मेणु अभिभवं काणल्पदुदु । अमूर्तत्वं मूर्तिमत्-
गच्छिदभिघातादिगच्छाम्बु । अदु कारणदिबमे आत्मास्तित्वसिद्धियवकुमे तोमळेत्तिल्यानुं प्रतिमा-
चेष्टितं प्रयोक्तृलिगस्तित्वमनरिपुगुमते प्राणापानादिव्यापारमुं क्रियाचंतनप्पात्मनं साधिसुगुमि-
वत्त्वदेयं मत्ते केलवुं जीवितमरणमुखदुःखनिर्वर्तनकारणभूतंगळ पुद्गलंगळप्पुवु । सदसद्वेद्यो-
दयमंतरंगहेतुवुंटापुत्तिरलु बाह्यद्रव्यादिपरिपाकनिमित्तवर्जदिवमुत्पद्यमानप्रीतिपरितापरूपपरिणामं
मुखदुःखमं दु पेळत्पट्टदुदु । भवधारणकारणायुदाख्यकर्मोदयविदं भवस्त्यित्यं धरिसिद जीवकके
पूज्योक्तप्राणपानक्रियाविशेषाभ्युच्छेवं जीवितमं दु पेळत्पट्टदुदु, तदुच्छेवं मरणमं दु पेळत्पट्टदुदु ।
ई मुखादिगळ जीवकके पुद्गलंगळिबमे संभविषुवु । मूर्तिमद्वेतु सन्निधानमापुत्तिरलु तदुत्पत्ति-
युंटापुद्वरिदं । केवलं जीवंगळ शरीरादिनिर्वर्तनकारणभूतंगळ पुद्गलंगळं बुदितल । पुद्गलवकं
पुद्गलंगळ निर्वर्तनहेतुगळप्पुवु । कांस्यादिगळो भस्मादिगळिबं जलादिगळो कतकादिगळिबं
अयःप्रभृतिगळो जलादिगळिबं उपकारं माडल्पट्टदुदु काणल्पदुगुमप्पुद्वरिदं । इंतु औदारिक-
वैक्रियिक आहारकशरीरनामकर्मोदयविदमा मूवं शरीरंगळ मुख्वासानिश्वासमुमाहारवर्गणे-
पिनप्पुवु । तैजसशरीरनामकर्मोदयविदं तेजोवर्गणंयिबं तैजसशरीरमक्कुं । कार्म्मणशरीरनाम-

प्राणापानयोश्च इवादिपुटिगन्धिप्रतिभयेन हस्ततलपुटादिभिरास्यसंवरणेन श्लेष्मणा वा प्रतिघातदर्शनात्,
अमूर्तस्य मूर्तिमद्विस्तृतसंभवाच्च । तत एव प्राणापानादिव्यापारादात्मनोऽस्तित्वसिद्धिः प्रयोक्तुरभावे
प्रतिमाचेष्टितस्यैव आत्माभावे तद्वचनात् । तथा सदसद्वेद्योदयान्तरङ्गहेतौ सवि बाह्यद्रव्यादिपरिपाकनिमित्त-
वदेन उत्पद्यमानप्रीतिपरितापरूपपरिणामौ मुखदुःखे । आयुस्वयेन भवस्पर्शितं विभ्रतः प्राणापानक्रियाविशेषा-
भ्युच्छेदो जीविषं, तदुच्छेदो मरणम् । तावयि पीद्गलिकानि मूर्तिमद्वेतुसन्निधाने सवि तदुत्पत्तिर्भवत् ।
न केवलं जीवशरीरादीनामेव निर्वर्तनकारणभूताः पुद्गलाः पुद्गलादीनामपि कास्यादीना भस्मादीनि
जलादीना कतकादिभिः अयःप्रभृतीनां जलादिभिश्च उपकारदर्शनात् । एवमौदारिकवैक्रियिकाद्वारकनामकर्मोदयात्
आहारवर्गणायातानि श्रीणि शरीराणि च्छ्वासानिश्वासां च । तैजसनामकर्मोदयात् तेजोवर्गण्या तैजसशरीरम् ।

दुर्गन्ध आदिके भयसे ह्येही आदिसे मुखको बन्द कर लेमेसे तथा जुकामसे प्राण अपानका
प्रतिघात देखा जाता है । अमूर्तका मूर्तिमानके द्वारा प्रतिघात सम्भव नहीं है । उसी प्राण
अपान आदि की क्रियासे आत्माके अस्तित्वकी सिद्धि होती है । जैसे प्रयोक्ताके अभावमें
यन्त्रादि मशीनमें क्रिया सम्भव नहीं है । तथा साता-असाता वेदनीयके उदयरूप अन्तरंग
कारणके होनेपर बाह्य द्रव्यादिके परिपाकके निमित्तसे जो प्रीतिरूप या सन्तापरूप परिणाम
उत्पन्न होता है उसे सुख और दुःख कहते हैं । आयुर्कर्मके उदयसे भवमें स्थिति करते हुए
श्वास-वच्छ्वास आदि क्रिया विशेषका होते रहना जीवन है और उसका छेद होना मरण
है । ये भी पीद्गलिक हैं क्योंकि मूर्तिमान् कारणके होनेपर सुखादिकी उत्पत्ति होती है ।
पुद्गल केवल जीवोंके ही शरीरादिकी रचनामें कारण नहीं हैं पुद्गल पुद्गलोंका भी उपकार
करते हैं । भस्मसे कांसीके घरतन आदि, निर्मली आदिसे जलादि तथा जळादिसे लोहा आदि
श्चच्छ होते हैं । इसी प्रकार औदारिक, वैक्रियिक और आहारक नामकर्मके उदयसे आहार-
वर्गणके रूपमें आये तीन शरीर और च्छ्वासानिश्वास, तैजस नामकर्मके उदयसे

याह्याभ्यन्तरकारणावर्तदिव स्नेहपर्म्यान्नाविर्त्तनीवदिव स्निह्यतेप्रतिमन्निति स्निग्धः स्निग्धस्य भावःस्निग्धत्वं । चिरकृत्तक्षणपर्म्यावयमेवैवर्थं । तोषात्रागोमहिष्युष्टिकाशीरधृतंगञ्जोक्त स्निग्धगुण-
मेतु प्रकृष्टप्रिक्तपर्वदिव यन्निगुणु । दक्षणाद्व्यास्तस्य भावः दक्षतरः । आपुरोऽबु चिरकृत्तक्षणपर्म्यापि-
मरर विपरीतवरिषामं कृत्तत्वमेवैवर्थं । पांगुकिनाकाशरकरादिमञ्जोक्त दक्षगुणमेतु काणत्प-
द्वुवन्ते परमानुगञ्जोक्त स्निग्धदक्षगुणव्यञ्ज युतियं प्रकृष्टप्रिक्तपर्वदिवमनुमानितस्यद्वुगु । स्निग्धत्वमुं
दक्षत्वमुं द्वपनुकारिपर्वदिवरिजमनरूपयंपरके कारणमरन्तं । य दाम्बदिव विदत्तेपरकेयं कारण-
मरन्तं । स्निग्धगुणपरिणतपरमानुगञ्जं दक्षगुणपरिणतपरमानुगञ्जं परस्परदत्तेवलक्षणयंपमा-
गुतिरन्तु द्वपनुकृत्तपर्म्यावयमेवैवर्थंमनु संक्षेप्यातस्येयानंतप्रवेप्रारकं योजितस्यद्वुगु । अल्लि
स्नेहगुणमेकद्विप्रिषु संक्षेप्यातस्येयानंतविकल्पमरनुमा प्रकारदिवमे दक्षगुणमरन्तं । संक्षेपिः—

[illegible]

पाद्य और अभ्यन्तर कारणके वशसे स्नेह पर्यायके प्रकट होनेसे स्नेहपन होना सिग्ध है। उसके भावको सिग्धता कहते हैं जिसका अर्थ चिकणता है। रूपापनसे रूक्ष है। उसका भाव रूक्षता है। उसका अर्थ चिकणतासे विपरीत होना है। जल तथा बकरी, गाय, भैंस, ऊँचीके दूध-पी आदिमें सिग्धता व भूखि, रेत, बजरी आदिमें रूक्षता होनाधिक रूपसे देयी जाती है। इसी तरह परमाणुओंमें भी होती है। वह सिग्धता और रूक्षता द्रव्यगुण आदि पर्याय परिणामनरूप वन्धका और 'च' शब्दसे वन्धके भेदवत्ता कारण है। सिग्धगुणरूप परिणत दो परमाणुके रूक्षगुणरूप परिणत दो परमाणुके और एक सिग्ध तथा एक रूक्षगुणरूप परिणत परमाणुके परस्परमें मिलने रूप वन्धके होनेपर द्रव्यगुण स्कन्ध बनता है। इसी प्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तप्रदेशी स्कन्ध भी जानना। उनमेंसे स्नेहगुण एक, दो, तीन, चार, संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रकारका होता है। इसी तरह रूक्षगुण भी होता है ॥६०॥

अदिदग्गुणा अदिदग्गुणा ह्येषं परिणामपन्ति चंयम्मि ।

सुमेन्द्रासुमेन्द्राणंनृदेसाय नन्दानं ॥६१०॥

स्निग्धेनरुण्डा ब्रुविष्ठाः ह्रीर्नं परिबन्धयन्ति यत्ने । मन्त्राणां मन्त्राणां मन्त्राणां मन्त्राणां ॥

संस्थागतमध्यमावर्तनप्रदेशद्वयम् स्वधर्मम् सम्बोधित विचारवाक्यम् ॥४॥

ସର୍ବସାଧାରଣ ସମ୍ମତି: ପ୍ରାୟତଃ ସମସ୍ତଙ୍କ ସମ୍ମତି ସହିତ । କିନ୍ତୁ କେତେକଙ୍କ ସମ୍ମତି ନାହିଁ । ସମସ୍ତଙ୍କ ସମ୍ମତି ନାହିଁ ।

विहित कोटि मन्थनं वारिमुत्तु । नारायणोत्तमं "वन्द्यं च" कतिपयविक्रमं भवतु । एतत्

कायस्थानं चतुर्दशवर्षाभ्यां विदुः ।

अनंतदेव पञ्चाभिः कायगर्भं वेन्दतः :-

द्वयं परममख्यं पञ्चमः अथ मण्डपः द्वयं ।

५३ पद्मपत्रो जगता जगिषि निर्दहं ॥६२०॥

10

४३०७५६८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

सप्तमः अध्यायः ॥

समस्त अक्षरार्थः—

19

सुखं मे पश्यता भौताभौता मातुं च नृपस्यारथम् ।

આચાર્યશ્રીનિવૃત્તિના દિવસો ૨૪ મે ૨૦૧૧

मनुज्य ओरंगर् पावरोपमनुज्यं तानुसंभ्यन्तरोहविष्णुगुणपुत्राणुरितिशुभं मत्वातद्वार्तक-
भाष्यमावमनुज १

448

दिग्गजा तावयमागजनिष्ठ्या विरदा द्वावर्णता य ।

६८॥ तान्तेनैव दिवसमगं गृह्युणं संयुगुणमसंयुगुणं ॥६८॥

निष्कारुद्वयः । कस्यचित्कर्मनिष्कारिताः द्विकृत्यस्तनवत् । पत्न्यासंपत्न्यौ कृत्राणोत्सवेष्टुमः ।
संवेष्टुमोत्सवेष्टुमः ॥

मिथ्याहृदिबोधेन किंचिद्वृत्तमंगारितमिदमिति मनुजैरिदमनन्ततन्तुषु ॥ १३—॥ देव-
संज्ञितमनुजैरपि पुरोहितैः सन्तुजैः देवमंगारितमिदमिति त्वत्पुण्यमिति च यत्प्राप्तं वा तैः कथमिति
रम्यं च ॥ यन् १३ कोऽसाधारणमनुजैः सन्तुजैः पुरोहितैः सन्तुजैः पुरोहितैः सन्तुजैः पुरोहितैः सन्तुजैः पुरोहितैः

इसपर विचार कर साक्षात्कार करने में देखा कि यह नं० ४८५ अंतर्गत आगुनमण्डल पृथक् ५२ को ई साक्षात्कार १०

संस्थेये श्रीरङ्ग मनुष्यगतिविपरिहं बूर नात्कु कोटिगर्भमपिहमप्य त्रिगतमभिध संस्थात-
गुदमप्य व मन १०४ ७) ई मिधगुहापानरतिबोवंगं श्रीरङ्ग मनुष्यगतित्राग्यतरिमेज

॥ ३ ॥
 नृह द्योदित्तिहमदिहमप्य त्रिगुणनातंयनद्यमंतयातगुनरूपक व घन ७०० यो

११- । वागादनुया वरि वागा अन्तःपुष्पः-दन्तोरवेन प्राप्तिमया-वपुषः-वाग् वर्यातस्वातंक्रमागमाया
 ५४३९ व ॥५३१॥

विष्णुसुहृदः कविबुधसंगणितशास्त्रप्रस्तावः १३- । देवसंयुताः ज्ञानोद्योगोदितबुधपिचरितुसंज्ञाः
 वाग्राग्रास्यसंज्ञादयः वा- व ५४ १३ को । देवः शिवायः कोदितबुधपिचरितुसंज्ञादयः अर्थात्-
 देवः शिवायः कोदितबुधपिचरितुसंज्ञादयः अर्थात्-
 देवः शिवायः कोदितबुधपिचरितुसंज्ञादयः अर्थात्-

दृष्ट्या : १ घन मी. को. । शेषतः चतुर्भुजसमोत्पन्नचतुर्भुजाविवर्धितविधायाः संख्यास्तूनाः १ घन १०४ को. ।

शुभतः गणपतेशोऽस्मिन्प्राधिकृतियवर्षपञ्चाशद्वत्सराऽनुवा १ खन ७०० को ॥६२४॥

सायाइनगुणगणनवाले भी पाया है क्योंकि अनन्तानुषङ्गीरूपायकी श्रीकृष्णदेवो किसी भी २०
 एक अध्यायिका उद्यम होनेसे निष्पातवगुणगणनको प्राप्त होते हैं। उनकी संख्या पन्द्रहके
 अंशक्यान्वये भाग है ॥१२३॥

मिथ्याबुद्धि कुछ कम संभारी राक्षि प्रमाण होनेसे अनन्तानन्द हैं। वेद संयत गुण-
ग्यातवान् ऐहिक कोटि मनुष्य तथा पशुके असंख्यातये भागमात्र विषये हैं। उनसे पांचन
कोटि मनुष्य तथा शेष तीन गतिके तप्य सामाज्यगुणस्थानवान् असंख्यातगुणे हैं। उनसे २५
पशु मो पार कोटि मनुष्य और शेष तीन गतिके सब मिथ गुणस्थानवान् संख्यातगुणे हैं।
उनसे मात्र मो कोटि मनुष्य और शेष तीन गतिके अविरत गुणस्थानवान् सब असंख्यात-
गुणे हैं ॥६२॥

मनुज्ज जीवंगळं पाप जीवंगळपुनरन्तानुबन्धन्यतरोदयमिध्यागुणपुनरपुनरिनबुधं पत्मासंख्यातैक-
भागप्रमाणमपुव ५
३३४

मिच्छा सावयसासणमिस्सा विरदा दुवारणंता य ।

पन्नासंखेज्जदिममसंखगुणं संखगुणमसंखेज्जगुणं ॥६२४॥

मिध्यादृष्टिधात्रकसासादनमिध्याविरताः द्विकवारानंताश्च । पत्मासंख्यातैकभागोसंखेयगुणः ५
संखेयगुणोऽसंखेयगुणः ॥

मिध्यादृष्टिजीवंगळु किंचिदूनसंसारिराशिप्रमितमप्युदरिदमनंतानंतगळपुव ॥ १३—॥ देश-
संयतगळु पविमूफकोटि मनुष्य देशसंयतरिनधिकमप्य तिष्यंमतिजह पत्मासंख्यातैकभागप्रमित-
रप्यव ५ । धन १३ को । सासादनगळु मनुष्यगतिजिद्विषंवागळकोटिसासादनरिदमधिकमप्य
३ ३४।३

इतरगतिप्रयत्रसासादनरनिनु देशसंयतरं नोडलु असंख्यातगुणमप्य ५ धन ५२ को ई सासादनर १०
३ ३ ४

संखेयं नोडलु मनुष्यगतिजमिध्याविरं नूर नाल्कु कोटिगळिदमधिकमप्य त्रिगतिजमिध्या संख्यात-
गुणमप्यव ५ धन १०४ को ई मिध्यागुणस्थानवर्तिजीवंगळं नोडलु मनुष्यगतिजासंयतरिदमेळु
३ ३

नूर कोटिगळिदमधिकमप्य त्रिगतिजासंयतकमसंख्यातगुणरप्यव ५ धन ७०० को
३

१३- । सासादनगुणा अपि पापाः अनन्तानुबन्धन्यतरोदयेन प्राप्तमिध्यास्वगुणत्वात् पत्मासंख्यातैकभागमात्रा
भवन्ति ५ ॥६२३॥
३ ३ ४

मिध्यादृष्टयः किंचिदूनसंसारिवादनन्तान्ताः १३- । देशसंयताः त्रयोदशकोटिमनुष्याधिकतिर्यञ्चः
पत्मासंख्यातैकभागमात्राः- ५ धन १३ को । तेष्वः द्विपञ्चाशत्कोटिमनुष्याधिकेतरत्रिगतिजासादानाः असंख्यात-
३ ३ ४ ३

गुणाः ५ धन ५२ को । तेष्वः चतुस्तरशत्कोटिमनुष्याधिकत्रिगतिमिध्याः संख्यातगुणाः ५ धन १०४ को ।
३ ३ ३ ३

तेष्वः सप्तमशत्कोटिमनुष्याधिकत्रिगतिर्यसंयता असंख्यातगुणा ५ धन ७०० को ॥६२४॥
३

सासादनगुणस्थानवाले भी पापी हैं क्योंकि अनन्तानुबन्धीकपायकी चौकड़ीमें-से किसी भी २०
एक कोधादिका उद्भय होनेसे मिध्यास्वगुणस्थानको प्राप्त होते हैं । उनकी संख्या पत्त्यके
असंख्यातवै भाग है ॥६२३॥

मिध्यादृष्टि कुछ कम संसारी राशि प्रमाण होनेसे अनन्तानन्त हैं । देश संयत गुण-
स्थानवाले तेरह कोटि मनुष्य तथा पत्त्यके असंख्यातवै भागमात्र तिर्यंच हैं । उनसे वाचन
कोटि मनुष्य तथा शेष तीन गतिके सब सासादनगुणस्थानवाले असंख्यातगुणे हैं । उनसे २५
एक सौ चार कोटि मनुष्य और शेष तीन गतिके सब मिश्र गुणस्थानवाले संख्यातगुणे हैं ।
उनसे सात सौ कोटि मनुष्य और शेष तीन गतिके अविरत गुणस्थानवाले सब असंख्यात-
गुणे हैं ॥६२४॥

अथमहोदयः पौषमासः शुभशुक्लपक्षे त्रिंशत्तमे तिथिदिने अष्ट-
महाविष्णवे शुभरात्र्यादिभिः शुभयोगैश्च निरंतराष्टमयंगजोद्भवः । १६। २४। ३०।
१६। १२। ४८। १४। १४।

रचनं प्रदत्तं मही सावचरो य पूतमीदी ।

उच्चउरी भद्रतुलानयमद्रुतानयं पं सुतमेसु ॥६२८॥

आविर्भवस्यैवास्ति यद्वि दुर्गतमस्ति यदुत्तममिति । यन्मयविरष्टोत्तरगतमष्टोत्तरगत-
धरदेव ॥

धारकरोम् निरन्तरावगमनं यज्जोम् उपगमकरं तं क्वेन मोहम् विगुणमाणि इति प्रज्ञादादि-
 मन्त्रम् ॥ ३२। ४८। ६०। ७२। ८४। ९६। १०८। १०८॥ ई तं क्वेन निरन्तरावगमनं यज्जोम्
 समो करगविषयानिदि धारकः। आदि ३४। उत्तर १२। मध्ये ८। परमेयेन विहोममिष्यादि १०
 तं क्वेन गुरविदि तत्पट्टं कम्प्यमिति मधो गुरवद्वयमप्यहं १०८॥ उपगमकरं। आदि १७।
 उत्तर १। मध्ये ८। इति मन्त्रं आ गुरविदि तत्पट्टं कम्प्यमिति मधुगुरवविज्ञातप्यहं ३०४॥

अद्वैत सयमहस्मा भद्राणउदो तदा सहस्मानं ।

मंगाः योगिजिज्ञाषं पञ्चसुखविभुतरं वदे ॥६२९॥

अथैव गगनगुह्यानि अद्भुतवतिस्तथा सहस्रानां । संख्या योगिनिर्णयानां पञ्चमत्तं दृष्टुम् ॥ १५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । विष्णुः पदं विष्णुः हाससाविष्णुः मयसाविष्णुः ।
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । १६ । १७ । १८ । १९ । २० । २१ । २२ । २३ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ३२ । ३३ । ३४ । ३५ । ३६ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० । ४१ । ४२ । ४३ । ४४ । ४५ । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५९ । ६० । ६१ । ६२ । ६३ । ६४ । ६५ । ६६ । ६७ । ६८ । ६९ । ७० । ७१ । ७२ । ७३ । ७४ । ७५ । ७६ । ७७ । ७८ । ७९ । ८० । ८१ । ८२ । ८३ । ८४ । ८५ । ८६ । ८७ । ८८ । ८९ । ९० । ९१ । ९२ । ९३ । ९४ । ९५ । ९६ । ९७ । ९८ । ९९ । १०० ।

प्राङ्के निरुत्तमपर्वतसु उत्तमपर्वतेऽपि त्रिमुखायाः शक्तिर्या अष्टवक्त्रादिनाः सतिः सायातिः चतुर-
 मूर्तिः सप्तवक्त्रः अष्टोत्तमसु अष्टोत्तमसु भवति । इत्यपि सत्या निरुत्तमपर्वतसु एषीष्टवक्त्रादिना २०
 भातिः १४ वक्त्रः १२ मुखः ८ वक्त्रेण विहीनमिवादिवा-नीष्टवक्त्रम् । धारा अष्टोत्तमसु भवति ।
 १०८ । उत्तमपर्वत भातिः १० वक्त्रः ९ मुखः ८ वक्त्रेण वक्त्रादिना ३०४ भवति ॥१३८॥

कृतमन्त्रमिदं निरन्तरं पढ़नेवाले जीवोंकी आठ भयघोरोंमें संख्या कमसे सोलह, पौषोष्ण, काम, उत्ताप, पयाहीस, अदवाहीस, पौषन, भीषण होती है। ॥२२॥

ध्वजध्वनि की संख्या पात्रमण्डलों से जुगुनी होती है इसलिये निरन्तर आठ समयों में ध्वजध्वनि चढ़नेवालों की संख्या कम से बत्तीस, अड़तीस, साठ, बहत्तर, चौदासी, छियावन, एक सौ आठ, एक सौ आठ होती है। इसी संख्याको निरन्तर आठ समयों में समीकरण विधान के द्वारा बराबर करके पहलें समयमें पचीस, फिर आठ समयों में बारह-बारह अधिक करनेसे आदिपन पचीस, चत्तर बारह और गच्छ आठ, इसको 'पद्मेगेन विहीन' इत्यादि मूलक अनुसार गच्छ आठमें एक घटानेसे सात रहे, दोका भाग देनेसे साढ़े तीन रहे। चत्तर बारहमें गुणा करनेसे बयालीस हुए। इसमें आदिपन पचीस जोड़नेसे छियावन हुए। ऐसे गच्छ आठमें गुणा करनेसे छह सौ आठ हुए। ये सब ध्वजोंका जोड़ होता है। इसी तरह उपसमध्वजियोंका आदिपन सतरह, चत्तर छह, गच्छ आठका घन उससे आधा तीन सौ बार होता है ॥१३८॥

108

इतिदोऽङ्गु यक्षांतरमस्मिन्पुनः । अनंतरमेक समयदोऽङ्गु युयपत्तंनदिनुः ॥
संक्षेपमुत्तमपदमकर विदोपसंक्षेपमुत्तं गायत्र्यादिदं पेक्ष्यपव ।

होति खवा इमिसमये वोहियबुद्धा य पुरिसवेदा य ।

उक्कस्सेणट्टुत्तरसयप्पमा सम्गदो य चुदा ॥६३०॥

भवति क्षपकाः एकस्मिन्समये बोधितबुद्धाश्च पुरुषवेदाश्च ।
स्वर्णतश्च ज्युताः ॥

पत्तेयबुद्धतित्थयरित्थिणवुं सयमणोद्दिणाणलुदा ।

दसछक्कवीसदसवीसट्ठावीसं जहाकमसो ॥६३१॥

प्रत्येकबुद्धतीत्यंकरस्त्रीनपुंसकमनोवर्षिज्ञानप्रसाः । दस दस ॥

मप्युद १०८ प्रत्येकबुद्धः क्षपकश्च पतुपशमकरम्वर १० तीर्थंकरश्च क्षपकरश्चरुपशमकरः
 ५४ ५
 भूवर ६ स्त्रीवेदिकक्षपकश्चमिप्यत्पशमकर्णोदिवर २० नपुंसकवेदिगळ् क्षपकश्च पदिवरवरद्वं-
 ३ १०
 मुपशमकर १० मनःपर्ययज्ञानिगळ् क्षपकश्चगळिप्यत्तु तद्वर्द्धमुपशमकर २० अवधिज्ञानिगळ्
 ५ १०
 क्षपकश्चगळिप्यत्तेदुमुपशमकरगळ् तद्वर्द्धमप्यर २८ उत्कृष्टावगाहनयुतक्षपकश्चगळीवर्द्धपशमक-
 ११४
 नोर्व्वने २ जघन्यावगाहनयुतक्षपकश्च नाल्वरुपशमकरीवर्द्ध ४ बहुमध्यमावगाहनयुतक्षपक- ५
 १
 रेण्वरुपशमकन्नाल्वर ८ मितेत्ला क्षपकश्च ४३२ । उपशमकर २१६ ।
 ४

अनंतरं अयोगिजिनरसंख्येयं कंठोक्तमाणि पेञ्जुबिल्लप्युदरिदं प्रमत्तगुणस्थानं मोवल्गो'बु
 अयोगकेवलभट्टारकावसानमाव समस्तसंयमिगळ् संख्येयं पेञ्जुडदरोळ् सयोगकेवलप्यर्थातं कंठोक्त-
 माणि पेञ्जुहपट्ट संयमिगळ् संख्येयं कूडि कळेदोडे क्षेपमयोगिकेवल्लिगळ् संख्येयं ककुमेंबुवं मनदोळि-
 रिसि संयमिगळ् सर्वसंख्येयं पेञ्जुवर्णः :—

सत्तादी अहुंता छणवमज्झा य संजदा सव्वे ।

अंजलिमौलियहत्थो तियरणमुद्धे णमंसांमि ॥६३३॥

सत्ताद्यष्टांतां पणवमज्झांश्च संयुतान्सर्वाण् । अंजलिमौलिकहस्तस्त्रिकरणशुद्धया नम-
 स्स्यामि ॥

सत्ताकमादियाणि अधांक्रमवसानमाणि पणवांश्चकंगळं मध्यमागुळं त्रिहीननवकोटिसंयत- १५
 गळनंजलिमौलिकहस्तमाणि मनोवाक्कायमुद्धिगळिदं बंदिमुवे ॥ एवेतु सम्मंसंयमिगळ् संख्येयो

कास्तवर्णं भवन्ति । पुनः प्रत्येकबुद्धाः तीर्थंकराः स्त्रीवेदिनः नपुंसकवेदिनः यनःपर्ययज्ञानिनः अवधितानिनः
 उत्कृष्टावगाहाः जघन्यावगाहाः बहुमध्यमावगाहाश्च क्षपकाः क्रमशः दस पदविपतिः दस विपतिः अष्टाविपतिः
 द्वौ चत्वारः अष्टौ, उपशमकाः तदर्थं भवन्ति । सर्वे मिलित्वा क्षपकाः ४३२ । उपशमकाः २१६ ॥६३०-६३२॥
 अथ सर्वसंयमिसंख्यामाह—

धावो सत्ताङ्कं अन्तेष्टाङ्कं च लिखित्वा तयोर्मध्ये च पटसु नवाङ्केषु लिखितेषु संजनिदभूननवकोटि-
 संख्यामात्रान् सर्वसंयतान् अंजलिमौलिकहस्तोर्ध्वं मनोवाक्कायशुद्धया नमस्यामि । ८९९९९९७ । अथ च

होते हैं । और उपशमक इनसे आधे अर्थात् चौवन-चौवन होते हैं । पुनः क्षपकश्रेणीवाले
 प्रत्येकबुद्ध दस, तीर्थंकर छह, स्त्रीवेदी बीस, नपुंसकवेदी दस, मनःपर्ययज्ञानी बीस,
 अवधिज्ञानी अठ्ठाईस, उत्कृष्ट अवगाहनावाले दो, जघन्य अवगाहनावाले चार, बहुमध्यम २५
 अवगाहनावाले आठ एक समयमें उत्कृष्ट रूपसे होते हैं । उपशमक इनसे आधे होते हैं ।
 सो उक्त सब क्षपकोंकी संख्या मिलकर चार सौ बत्तीस होती है और उपशमकोंकी दो सौ
 सोलह ॥६३०-६३२॥

आगे सब संयमियोंकी संख्या कहते हैं—

सावका अंक आदिमें और अन्वमें आठका अंक लिखकर दोनोंके मध्यमें छह नौके ३०

गुणस्थानबोन्नेन्न असंयतसम्पद्गृष्टि सम्पन्निध्यावृष्टि सासादनसम्पद्गृष्टिगच्छे'षी मूरं
गुणस्थानगच्छ व्यापुत्र केतु पत्न्यके पोषक भागहारगच्छ अ ० पुरुषोनायत्यसंख्यातविदं

मि ० ०

सा ० ० ४

०-१ । भागिति भागिति तंतम्म हारबोळे कल्पद्रुवाबोळे देवोपबोळु तंतम्म भागहारगच्छपुत्र ।

अ ० ० मत्तमो देवतामान्यगुणस्थानप्रपभागहारगच्छ रूपोनायत्यसंख्यातविदं भागिति

०-१

मि ० ० ०

०-१

सा ० ० ४ ०

०-१

भागितिदेवभागमं तंतम्म हारगच्छोळु प्रक्षेपितुत्त विरक्तु सौधम्मज्ञानकल्पद्रुपद असंयतमिध्रसासा-

दनगच्छ भागहारगच्छपुत्र । सौधम्मकल्पद्रुपद असंयतन भागहारगच्छ प मिध्रभागहारगच्छ

० ० ०

०-१०-१

प सासादनर भागहारगच्छ य अनंतरमो सौधम्मकल्पद्रुपासंयतावि सासादनगुण-

० ० ० ०

० ० ४ ० ०

०-१०-१

०-१०-१

गुणस्थानोक्तः असंयतसम्पन्निध्यावृष्टिसासादनानां ये पत्न्यासंयतप्रविष्टभायहाराः अ ०

मि ० ०

सा ० ० ४

एतेषु रूपोनायत्यसंख्यातेन ०-१ भक्त्या एतेष्वेव निधितेषु देशीये स्वस्वभायहारा भवन्ति ।

अ ० ० एतान् पुनः रूपोनायत्यसंख्यातेन भक्त्या एकैकभागे स्वस्वहारे प्रविष्टे सौधम्मज्ञानासंयत-

०-१

मि ० ० ०

०-१

सा ० ० ४ ०

०-१

गुणस्थानोर्नि जीवोक्ती संख्या कहते हुए पूर्वमें जो असंयत, सम्पन्निध्यावृष्टि और सासादनोर्नि पदके भागहार कहे हैं उनमें एक कम आवलीके असंख्यातवर्षे भागसे भाग देनेसे जो प्रमाण आवे उन्हीं उन्हीं भागहारोंमें मिलानेसे देवगतिमें अपना-अपना भागहार होता है । इन भागहारोंको पुनः एक कम आवलीके असंख्यातवर्षे भागसे भाग देकर एक-एक भाग अपने-अपने भागहारमें मिलानेपर सौधर्म और ऐतान स्वर्गमें असंयत मिध्र और सासादनोर्नि भागहार होते हैं ।

विशेषार्थ—पहले असंयतगुणस्थानमें भागहारका प्रमाण एक ३ - संख्यात कहा

था । उसे एक कम आवलीके असंख्यातवर्षे भागसे भाग

उस भागहारमें मिलानेपर जो प्रमाण हो उतना

भागहार जानना । इस भागहारका भाग पदमें देनेसे

असंयतगुणस्थानवर्षी जीव है । मिध्रमें दो

सोहम्मादासारं जोइसवणभवणतिरियणुढवीसु ।

अविरदमिस्सेऽसंखं संखासंखगुण सासणे देसे ॥६३७॥

सोयम्मदासहस्रारं ज्योतिषिकवानभावनतिर्य्यङ्मपुष्पीषु । अविरतमिन्नेऽसंख्ये संख्य अतस्य-
गुणं सासादने देशसंयते ॥

सोयम्मद्वयवर्तनिवं मेळे सानत्कुमारकल्पद्वयं मोदलोडु सहस्रारकल्पपर्यन्तं कल्पद्वय- ५
पंचरुदोऽं ज्योतिषिकवानभावनतिर्य्यङ् प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थपंचमपष्ठसप्तमपुष्पिंष्वीषो दोडश
स्थानदोळमवितरोळं मिथरोळमसंख्यातगुणितक्रममक्कु । सासादनरोळसंख्यातगुणमक्कु । तिर्य्यच-
देशसंयतरोळसंख्यातगुणमक्कुमवे तं दोडेमु पेळ्ळ सानत्कुमारकल्पद्वयव सासादनहारमं नोडलु
सहस्रकल्पद्वयासंयतहारमसंख्यातगुण ००००४००४० मवं नोडलु मिथहारमसंख्यातगुण
०-१०-१

००००४००४०० मवं नोडलु सासादनर हारं संख्यातं गुणमक्कु ००००४००४००४ १०
०-१०-१ ०-१०-१

मवं नोडलु सांतवकल्पद्वयवऽसंयतहारमसंख्यातगुण ००००४००४१२।० मवं नोडलु
०-१०-१

मिथर हारमसंख्यातगुण ००००४००४१२।०० मवं नोडलु सासादनहारं संख्यातगुण
०-१०-१

मक्कु ००००४००४१२।००४ मवं नोडलु शुक्रकल्पद्वयासंयतहारमसंख्यातगुणमक्कु
०-१०-१

००००४००४१२।० मवं नोडलु मिथहारमसंख्यातगुणमक्कु ००००४००४१३।००
०-१०-१ ०-१०-१

मवं नोडलु तत्रत्य सासादनहारं संख्यातगुणमक्कु ००००४००४१३००४ मवं नोडलु १५
०-१०-१

सोयर्मद्वयादुपरि सानत्कुमारादिसहस्रारपर्यन्तं पञ्चगुणेषु ज्योतिषिकवानभावनतिर्य्यङ्मपुष्पीषु वेति
पोडशस्थानेषु अविरते मिथे स्वर्णैर्यगुणितक्रमः सासादने संख्यातगुणितक्रमः, तिर्य्यदेशसंयते अर्धसंख्यातगुणित-
क्रमव भवति । तथाहि—उक्तज्ञानत्कुमारद्वयसासादनहारवद् ब्रह्मद्वयस्य अर्धयतहारोऽर्धसंख्यातगुणः । ततो
मिथहारोऽर्धसंख्यातगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः । अत्र संख्यातस्य संयुक्तिचतुरङ्कः । ततः सान्तवद्वये
अर्धयतहारः अर्धसंख्यातगुणः । ततः मिथहारः अर्धसंख्यातगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः । ततः शुक्रद्वये- २०

सोयर्मसे ऊर सानत्कुमारसे ढेकर सहस्रार पर्यन्त पांच स्वर्ग युगलोंमें और
ज्योतिषी, व्यन्तर, भवनप्राप्ती, तिर्य्यच, और सात नरक इन सोलह स्थानोंमें अविरत और
मिथ्रमें अर्धसंख्यात गुणितक्रम जानना । सासादनमें संख्यात गुणितक्रम जानना । और तिर्य्यच
सम्बन्धी देशसंयत गुणस्थानमें अर्धसंख्यात गुणितक्रम जानना । इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार
है—सानत्कुमार, माहेन्द्रमें जो सासादनका भागहार कहा उससे ब्रह्म-ब्रह्मोत्तरमें अर्धयतका २५
भागहार अर्धसंख्यातगुणा है । उससे मिथका भागहार अर्धसंख्यातगुणा है । उससे सासादनका
भागहार संख्यातगुणा है । यहाँ संख्यातकी संदृष्टि चारका अंक ४ है । उससे सान्तव-
कापिष्ठमें अर्धयतका भागहार अर्धसंख्यातगुणा है । उससे मिथका भागहार अर्धसंख्यातगुणा
है । उससे सासादनका भागहार संख्यातगुणा है । उससे शुक्र महाशुक्रमें अर्धयतका
भागहार अर्धसंख्यातगुणा है । उससे मिथका भागहार अर्धसंख्यातगुणा है । उससे सासा- ३०
दनका भागहार संख्यातगुणा है । उससे सतारसहस्रारमें अर्धयतका भागहार

संयतहारमुमसंख्यातगुणमन्त्रं	॥ ० ० ० ४ ० ० ४ ९ ०	प्रथमपुण्य = असंयताहार
	० - १० - १	
० ० ० ० ४ ० ० ४ १ ९ १ ० मवं नोडलु तन्मिधहारमसंख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ९ १ ० ०	
	० - १० - १	
मवं नोडलु तत्रत्यसासादनहारं संख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ ९ ० ० ४	मवं नोडलु
	० - १० - १	
द्वितीयपुण्य असंयतहारमसंख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ १० १ ० १	मवं नोडलु
	० - १० - १	
तन्मिधहारमसंख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ १० १ ० ०	मवं नोडलु तत्रत्यसासादन-
	० - १० - १	५
हारं संख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ १० १ ० ० ४	मवं नोडलु तृतीयधरासंयत-
	० - ०१ - १	
हारमसंख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ ११ ० १	मवं नोडलु तन्मिधहारमसंख्यातगुण-
	० - १० - १	
मन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ ११ ० ०	मवं नोडलु तत्रत्य सासादनहारं संख्यातगुणमन्त्रं
	० - १० - १	
० ० ० ० ४ ० ० ४ १ ११ ० ० ४	मवं नोडलु चतुर्थभूनारकासंयतहारमसंख्यातगुणमन्त्रं	
	० - १० - १	
० ० ० ० ४ ० ० ४ १ १२ १ ०	मवं नोडलु तन्मिधहारमसंख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ १२ १ ० ० १०
	० - १० - १	० - १० - १
मवं नोडलु तत्रत्यसासादनहारं संख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ १२ १ ० ० ४	मवं नोडलु
	० - १० - १	
पंचमधरासंयतहारमसंख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ १३ १ ०	मवं नोडलु तन्मिधहारम-
	० - १० - १	
संख्यातगुणमन्त्रं	० ० ० ० ४ ० ० ४ १ १३ १ ० ०	मवं नोडलु तत्रत्यसासादनहारं संख्यातगुण-
	० - १० - १	

यद्देशसंयतहारः अक्षयतगुणः । अयमेव प्रथमपुण्यसंयतस्यापि हारः । ततः मिधहारः अक्षयतगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः । ततः द्वितीयपुण्यसंयतहारः अक्षयतगुणः । ततः मिधहारः अक्षयतगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः । ततः तृतीयपुण्यसंयतहारः अक्षयतगुणः । ततः मिधहारः अक्षयतगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः । ततः चतुर्थपुण्यसंयतहारः अक्षयतगुणः । ततः मिधहारः अक्षयतगुणः । ततः सासादनहारः संख्यातगुणः । ततः पञ्चमधरासंयतहारः अक्षयतगुणः । ततः मिधहारः	१५
--	----

इ वही भागहार प्रथम नरकमें असंयतका भी है । उससे मिथका भागहार असंख्यातगुणा है । उससे सासादनका भागहार संख्यातगुणा है । उससे दूसरे नरकमें असंयतका भागहार असंख्यातगुणा है । उससे मिथका भागहार असंख्यातगुणा है । उससे सासादनका भागहार संख्यातगुणा है । उससे तीसरे नरकमें असंयतका भागहार असंख्यातगुणा है । उससे मिथका भागहार असंख्यातगुणा है । उससे सासादनका भागहार संख्यातगुणा है । उससे चौथे नरकमें असंयतका भागहार असंख्यातगुणा है । उससे मिथका भागहार असंख्यातगुणा है । उससे पंचम नरकमें असंयत भागहार असंख्यातगुणा है । उससे मिथका भागहार असंख्यातगुणा है । उससे सासादनका	२०
---	----

तत्तो संसृज्जगुणो मानणनुम्भाण होदि संसृगुणो ।

उत्तहाणे क्रममा पणउत्तमचट्टचट्टमंदिट्ट्यं । ६४०॥

ततः संख्येयगुणः साक्षादवतन्म्यादुद्योना भवति संख्येयगुणः । उत्तरस्थाने इत्यन्तः पञ्चमः-
साक्षाद्वज्रवारः संप्रति ॥ गायत्रि त्रितयं ॥

[illegible]

दृष्टिहारं तस्यात्तगुणमस्तु ०००४००४।१६।०५ मरु मोहन अष्टावक्राष्टावक्र-
४-१०-१

गणप्रदेशकसम्यग्प्रतिहारं संस्थापयन्मन्त्रवर्गः २००४।२०४।१६.०।१।१ वर्ष मोहम् १-
३-१०-१

अपराधमध्यमपेक्षितामृतद्विहारां तांशतानुममर्हः ०००४००४१११११११
०-१०-१

सर्वे गोहनुमपस्तनोपरितनर्पेयकतम्यादृष्टिहारं स/द्व्यातगुणममनु ०३००४०४११६०१५१५१५१५
०-१०-१

मई मोहसुमभ्यमापरातनप्रेषकतम्यगृष्टिहारं तस्यातनुममरकु २००२२००६ १६ ०/१५/०१/१९
३-१३-१

मई मोहत्तु माध्यम मय्यमपेदेयक साम्याभूट्टिहारं सारवातमुधमरक्तु ॥३३॥ ४००॥ १६०॥ १५०॥ १५०॥
३-१७-१

मई मी हतु माध्यमोपस्थिततास्यः बुद्धिहारं संस्थापयामासु ००००४००४।१६।०।२। १३

५।५।५।५।५।५ सर्व मोहनपुरितनयात्मपदेवतमय्यभूतिहारं भगवान्मुक्तमकु
०००४००४। ॥ १।५।५।५।५।५।५ सर्व मोहनपुरितनयात्मपदेवतमय्यभूतिहारं
०-१०-१

શ્રી ૧૦-૧
શ્રી ૧૦-૨

[illegible][illegible]

गणराज्यविधायक आचार्यजीसहस्रसंख्येयस्य। १९५१संख्येय ३ अथ १९५१संख्येय ३
अतिरिक्त प्रेरक पत्रिका द्वारा स्थानीय विद्यार्थीसहित गणराज्य विचार कक्ष में आचार्यजी
हैं। यहाँ गणराज्य संयुक्ति तदका जल है। यथेष्ट अतिरिक्त आचार्यजी विचार दृष्टि
आचार्यजी भी अनुदान और विद्यार्थीसहित विचार कक्ष में आचार्यजी विचार दृष्टि
गणराज्य हैं। यहाँ गणराज्य संयुक्ति आचार्यजी जल है। विद्यार्थी आचार्यजी आचार्य
आचार्यजी आचार्यसहित आचार्यजी विचार कक्ष में आचार्यजी जल है। १९५१

55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1050 1051 1052 1053 1054 1055 1056 1057 1058 1059 1060 1061 1062 1063 1064 1065 1066 1067 1068 1069 1070 1

भक्तव्रगच्छेनिमात्रं वामरुगळप्पुह ८ । पंचमपुंभियोळु गुणप्रतिपन्नराशिप्रयविहोननिज-
 पळमुलभक्तव्रगच्छेनिमात्रं वामरुगळप्पुह ९ । पष्ठपुंभियोळु गुणप्रतिपन्नराशिप्रयविहोननिज-
 त्तोयपूतभक्तव्रगच्छेनिमात्रं वामरुगळप्पुह ३ । सप्तमपुंभियोळु गुणप्रतिपन्नराशिप्रयविहोन-
 निजद्वितोयपूतभक्तव्रगच्छेनिमात्रं वामरुगळप्पुह २ । आनताविगळोळु कठोक्तमागि पेळल्-
 पट्टुह । सप्तार्थसिद्धिनिमात्राहमिद्वर असंयतसम्यग्दृष्टिगळु । 'तिगुणा सप्तगुणा वा सव्यव्हा माणुसो ५
 पमादारो' एंवितु संख्यातमप्यह ४२=४२=४२=३ । ३ । ७॥ मनुष्यगतिपोळु देशसंयतादिगळं
 पेळ्वपः—

तेरसकोडीदेमे वावण्णं सासणे मुणेदव्वा ।

मिरसावि य तव्दुगुणा असंजदा सचकोडिसया ॥६४२॥

प्रयोदशकोटयो देशसंयते द्विपंचाशत्कोटयः सासादने ज्ञातव्याः । मिधाश्चापि तद्विगुणा १०
 वंति अयं यताः सप्तकोटिज्ञाताः ॥

मनुष्यगतिपोळु देशसंयतह पविमूह कोटिगळप्पुह । १३ को । सासादनह द्विपंचाशत्कोटि-
 शप्पह । ५२ को । मिधरुगळु तद्विगुणमप्यह १०४ को । असंयतसम्यग्दृष्टिगळु सप्तकोटिगत-
 मितरप्यह ७०० को । प्रमत्तादिसंख्ये मुल्लमे पेळ्वपट्टुह ।

नीवु किचिदूना कूमजो निवद्दाइयइयमाहमपष्ठपूतीयपूतभक्तव्रगच्छेनिः । आनतादिपु कठोक्तपोत्तर १५
 शीर्षविद्वाहमिद्वर असंयत एव । ते य मानुषोप्रमाणाद्विगुणाः सप्तगुणा वा भवन्ति ॥६४१॥
 गुण्यगतायाह—

देशसंयते त्रयोदशकोटयो मन्वव्याः । १३ को । सासादने द्विपञ्चाशत् कोटयः ५२ को । मिथे ततो
 गुणाः १०४ को । असंयते सप्त चतकोटयः ७०० को । प्रमत्तादीनां संख्या तु प्रायुक्त ॥६४२॥

सर्वे, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलका भाग जगत्त्रयेनिमें वेनेसे जो-जो प्रमाण २०
 पावे उसमें कुछ-कुछ कम मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण है । यहाँ जो अपनी-अपनी समस्त राशि-
 कुछ कम किया है सो दूसरे आदि गुणस्थानवाले जीवोंके प्रमाणको घटानेके लिए
 किया है क्योंकि मिथ्यादृष्टियोंकी तुलनामें उनका परिमाण बहुत अल्प है । आनतादिमें
 रंध्यादृष्टियोंका प्रमाण पहले कहा ही है । सर्वार्थसिद्धिमें अहमिन्द्र असंयत सम्यग्दृष्टि
 २५
 १ है । मानुषियोंके प्रमाणसे उनका प्रमाण तिगुना और किन्हींके मतसे सात गुणा
 कहा है ॥६४१॥

मनुष्यगतिमें कहते हैं—

मनुष्य देशसंयत गुणस्थानमें तेरह कोटि जानना । सासादनमें वावन कोटि जानना ।
 मेश्रमें उससे दुगुने अर्थात् एक सौ चार कोटि जानना । असंयतमें सात सौ कोटि जानना ।
 मत्त आदिकी संख्या पहले कही है ॥६४२॥

कर्णात्पुनः जीवतत्त्वप्रदोषिका
आयवद्रव्यं भक्ष्यं प्रत्येकं तन्मयप्रवृत्तं निरञ्जितं तु मते तन्मयप्रवृत्तं
नोदनुमत्तं वातगुचितमुत्कृष्टमवकुं नियमवितं ।

बंधो समयप्रवृत्तो किं नूणदिवद्भवेत्तु गुणहाणी ।
मोक्षो य होदि एवं सद्बहिदन्वा दु उच्चहा ॥६४५॥

यः समयप्रवृत्तः किंचिदनुपपन्नं गुणहानिमात्रं भवत्येवं धृतात्म्यास्तु तत्कार्याः ॥
तु मते बंधं समयप्रवृत्तमेव कुं । मोक्षं किंचिदनुपपन्नं गुणहानिमात्रं समयप्रवृत्तं गच्छन्तु-
वेदितु तत्कार्यं धृतात्म्यं गच्छन्तु ।
अनंतरं समयप्रवृत्तं येनैव यः—

सोपे दंतणमोहे जं सद्बहणं सुणिम्मलं होई ।
तत्सुताइयसम्मत्तं निच्चं कम्मक्खवणहेइ ॥६४६॥

शोने दंतणमोहे यत्तु ज्ञानं भवति मुनिर्मलं । तत्सुताइयसम्मत्तं नित्यं कर्मक्षपणहेतुः ॥
मिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्वसम्यक्त्वप्रवृत्तिगुणमनंतानुबंधितुष्टयं करणलब्धिपरिणाम-
सामर्थ्यं दंतं शोचमागुत्तं विरत्तु आनुबोत्तु धृतां मुनिर्मलमवकुमत्तु क्षापिकसम्यग्दर्शनं बुद्धकुमा-
क्षापिकसम्यग्दर्शनं नित्यं नित्यमवकुमेके दोहे प्रतिपक्षकर्मप्रसादिवं पुष्टिवात्मगुणविशुद्धिरूप-

संज्ञानमोहप्रवृत्तिरे तिगत्तइ एवकेय तदियतुरियभवे ।
शादिचपदि तुरिय भवं न विगत्तइ तेस सम्मं व ॥

आयवद्रव्यं संवद्व्यं च समयप्रवृत्तः । निरञ्जितं तु पुनः उत्कृष्टं समयप्रवृत्तान्मियमेनासंख्यातगुणं
भवति ॥६४७॥

तु—तुनः कर्णोर्ध्वं समयप्रवृत्त एव । मोक्षद्व्यं किंचिदनुपपन्नं गुणहानिमात्रं समयप्रवृत्तं भवतीति एवं २०
तत्कार्याः धृतात्म्याः ॥६४५॥ अथ समयप्रवृत्तमाह—
मिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्वसम्यक्त्वप्रवृत्तिव्ये अनन्तानुबन्धितुष्टये च करणलब्धिपरिणामयामर्थ्यादि
शोने एहि यत्तु ज्ञानं मुनिर्मलं भवति तत्सुताइयसम्यग्दर्शनं नाम । तच्च नित्यं स्यात् प्रतिपक्षप्रसादोत्पन्नात्म-

गुणत्वाद् । पुनः प्रतिपक्षं गुणभेदिनिरञ्जितकारणं भवति । तथा चोक्तं—
आयवद्रव्यं और संवद्व्यं प्रवृत्त प्रमाण है । किन्तु उत्कृष्ट निरञ्जितस्य समयप्रवृत्तसे २५
नियमसे अवस्थावगुणा होता है ॥६४६॥

समयप्रवृत्त भी समयप्रवृत्त प्रमाण हो है । और मोक्षद्व्यं किंचित् हीन डेढ गुण हानिसे
गुणित समयप्रवृत्त प्रमाण होता है । इस प्रकार तत्कार्याका अद्वान करना चाहिय ॥६४७॥
आगे सम्यक्त्वके भेद कहते हैं—
करणलब्धि रूप परिणामोक्ती सामर्थ्यसे मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्व ३०
प्रकृति इन तीन दर्शनमोहके तथा अनन्तानुबन्धो क्रोध मान माया लोभके क्षय होनेपर जो
धरयन्त निर्मल अद्वान होता है वसुका नाम क्षापिक सम्यग्दर्शन है । यह नित्य है; क्योंकि
प्रतिपक्षी कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होनेके साथ आत्माका गुण है । तथा प्रतिसमय गुणभेदि

ण य मिच्छन्तं पचो सम्मचादो य जो य परिवडिदो ।

सो सासणोत्ति गेयो पंचमभावेण संजुत्तो ॥६५४॥

न च मिध्यात्वं प्राप्तः सम्यक्त्वतश्च यद्वच परिपतितः । सासादन इति ज्ञेयः पंचमभावेन संयुक्तः ॥

आवनोर्ध्वं जीवन्तु सम्यक्त्वादिदं यच्छिचि मिध्यात्वयं पोहंवेन्नवरमिध्वं वन्नेवरमा जीवं ५
सासादनने दितरियल्पद्वं । दर्शनमोहनीयोदयोपशमादिनिरपेक्षापेक्षेयिबं पारिणामिकभावदोऽङ्गुडि-
वन्तुमप्यनेकं दोडे धारित्रमोहनीयापेक्षेयिनातं गोदधिकभावमप्युदरिबं ।

सद्दहणासद्दहणं जस्स य जीवस्स होह तच्चेसु ।

विरयाविरयेण समो सम्मामिच्छोत्ति णायव्वो ॥६५५॥

अद्वानाअद्वानं यस्य च जीवस्य भवति तत्त्वेयु । विरताविरतेन समः सम्यग्मिध्यावृष्टिरिति १०
ज्ञातव्यः ।

जीवाविपकार्यगळोऽङ्ग आवनोर्ध्वंजीवने अद्वानमुमअद्वानमुमोम्मो'दलोऽङ्गं संयतासंयतंगंतु
संपममुमसंपममुमोम्मो'दलोऽङ्गयक्कुमते । मिध्नोऽङ्गं तत्त्वार्थप्रद्वानमुमतत्त्वार्थप्रद्वानमुमोम्मो'द-
लोऽङ्गयक्कुमप्युदरिना जीवं सम्यग्मिध्यावृष्टिये दितरियल्पद्वं ।

मिच्छाद्दो जीवो उवड्ढं पवयणं ण सद्दहदि ।

सद्दहदि असम्भावं उवड्ढं वा अणुवड्ढं ॥६५६॥

मिध्यावृष्टिर्जीवः उपदिष्टं प्रवचनं न अद्वयाति । अद्वयात्पसद्भावमुपदिष्टं वाऽनुपदिष्टं ॥
मिध्यावृष्टिर्जीवं उपदेशं गेय्यत्पट्टासागमपदार्थगळं नमुयनत्तं । उपदेशं गेय्यत्पट्टमनुपदेशं
गेय्यत्पट्टमुमनसद्भावमननामागमपदार्थगळं नंबुवं ।

यो जीवः सम्यक्त्वात्पतितो मिध्यात्वं यावन्न प्राप्तः सावत् सासादन इति ज्ञेयं स च दर्शनमोहनीय- २०
स्वभावेया पारिणामिकभावेन सहितः, धारित्रमोहनीयापेक्षया तत्त्वोदधिकभावसङ्गात्वात् ॥६५४॥

जीवाविपकार्येण यस्य जीवस्य अद्वानमअद्वानं च युगपदेश देशसंयमस्य संयवासंयमवद्भवति स जीवः
सम्यग्मिध्यावृष्टिरिति ज्ञातव्यः ॥६५५॥

मिध्यावृष्टिर्जीवः उपदिष्टान् आसाधमपदार्थान् न अद्वयाति । उपदिष्टान् अनुपदिष्टांश्च असङ्गावान्
अनाप्यागमपदार्थान् अद्वयाति ॥६५६॥ अथ सम्यक्त्वमार्गप्राप्तौ जीवसंस्थौ यावायवेवाह— २५

जो जीव सम्यक्त्वसे गिरकर जयत्तक मिध्यात्वको प्राप्त नही होता तत्त्वतः उसे
सासादन जानना । वह दर्शन मोहनीयकी अपेक्षा ही पारिणामिक भाववाला होता है ।
धारित्र मोहनीयकी अपेक्षा तो अनन्तानुबन्धीका उदय होनेसे औदधिक भाववाला है ॥६५४॥
जैसे देशसंयमकी एक साथ संयम और असंयम दोनों होते हैं वैसे ही जिस जीवके
जीवादि पदार्थोंमें अद्वान और अधद्वान दोनों ही एक साथ होते हैं वह जीव सम्यग्मिध्या- ३०
वृष्टि जानना ॥६५५॥

मिध्यावृष्टि जीव जिन भगवान्के द्वारा कहे गये आग, आगम और पदार्थोंका अद्वान
नहीं करता । किन्तु कुदेवोंके द्वारा उपदिष्ट और अनुपदिष्ट असमीचीन मिथ्या आग, मिथ्या
आगम और मिथ्या पदार्थोंका अद्वान करता है ॥६५६॥

पन्नासंख्येज्जदिमा सासणमिच्छा य संखगुणिदा हु ।

मिस्सा तेहि विहीणो संसारी वामपरिमाणं ॥६५९॥

पत्थासंख्यातेकभागः सासादनमिच्छादृष्टयश्च संख्यातगुणिताः खलु । मिथः तैस्विहीनः

संसारी वामपरिमाणं ॥

पत्थासंख्यातेकभागप्रमितः सासादनमिच्छादृष्टयश्च ५ मा सासादनं नोडलु ५
० ० ४

सम्यग्मिध्यादृष्टिगत्तु संख्यातगुणितमाश्रप्पु ५ स्फुटमाणि ई राशिपंचकविहीनसंसारिराशि-
० ०

यामरुगळ प्रमाणमक्कुं । पा १३- ।

नवपदार्थगळ प्रमाणं पेत्रल्पहुपुं । जीवंगळु । १६ अजीवंगळु पुद्गलंगळु सखंजीवराशिगं
मोडलनंतगुणमक्कुं । १६ ख । धर्मद्रव्यमो'हु १ । अधर्मद्रव्यमो'हु १ । आकाशद्रव्यमो'हु १ । काल-
द्रव्यं जगत्त्रैणिकधनप्रमितमक्कुं ॥ मितजीवं गुडि साधिकपुद्गलराशिप्रमितमक्कुं ३ पुण्यजीवं- १०

गळु असंयतरं देशसंयतरं कूडि प्रमत्ताद्युपरितनगुणस्यानर्वासिगळं संख्यातविदं साधिकरप्पु ५
० ० ४ अजीवपुण्यं द्वपदं गुणहानिसंख्यातेकभागमक्कु स ०-१२-१ पापजीवंगळु
० ० ० ४

साधिकसिद्धराशिबिहीन संसारिराशिप्रमाणमप्य १३ । अजीवपापं द्वपदं गुणहानिसंख्यातबहु-

पत्थासंख्यातेकभागमात्राः सासादनमिच्छादृष्टयः ५ तेभ्यः सम्यग्मिध्यादृष्टयः संख्यातगुणाः ५
० ० ४

स्फुटं एवराशिपञ्चकोनसंसारिराशिर्कामपरिमाणं भवति वा १३-नवपदार्थप्रमाणमुच्यते— १५

जीवाः १६ अजीवेषु पुद्गलाः धर्मजीवराशिदोऽनन्तगुणाः १६ ख । धर्मद्रव्यमेकं । अधर्मद्रव्यमेकं ।
आकाशद्रव्यमेकं । कालद्रव्यं जगत्त्रैणिकधनमात्रं । ॥ एवमजीवपदार्थां मिलित्वा साधिकपुद्गलराशिमात्रः
१

१६ ख । पुण्यजीवा अवयवतद्देशसंयतामेकमित्वा सत्र प्रमत्तादीना संख्याते भूते एतावन्तः ५ ० ० ४ अजीव-
० ० ० ४

पुण्यं द्वपदं गुणहानिसंख्यातेकभागः स ० १२-१ पापजीवाः साधिकपुण्यजीवसिद्धराशिबिहीनसंसारिराशिः १३-१
१

पर्युक्ते असंख्यातवै भाग सासादन होते हैं जिनकी कचि मिथ्या होती है । उनसे २०
सम्यग्मिध्यादृष्टि संख्यातगुणे हैं । संसारी जीवोंकी राशिमेंसे साधिकसम्यग्दृष्टि, वेदक-
सम्यग्दृष्टि, उपसमसम्यग्दृष्टि, सासादन और मिथ इन पाँचकी राशियोंको घटानेपर मिथ्या-
दृष्टियोंका परिमाण होता है । अब नौ पदार्थोंका परिमाण कहते हैं—जीव अनन्त हैं ।
अजीवोंमें पुद्गल समस्त जीवराशिसे अनन्तगुणा है । धर्मद्रव्य एक है । अधर्मद्रव्य एक है ।
आकाशद्रव्य एक है । कालद्रव्य जगत्त्रैणिके धन अर्थात् लोकप्रमाण है । इस प्रकार अजीव २५
पदार्थ सष मिलकर साधिक पुद्गलराशिप्रमाण है । असंयव और देशसंयवोंके प्रमाणको
प्रमत्त आदिके प्रमाणमें मिलानेपर पुण्य जीवोंका प्रमाण होता है । वेद गुण-हानि प्रमाण
११२

इंनु भगवदहृत्परमेश्वर घाटवरवारविग्रहं वंदमानं विततुषुर्गुणायमानं श्रीमद्वायराजगुरु-
मंडलाचार्यमहावारजादोऽवरराजवादिपिआमहसकलविद्वज्जनवक्रवर्ति श्रीमदभयपूरितिसिद्धांतचक्र-
वर्ति धीपादरंकरजोर्जिततलाटपट्टं श्रीमत्केतवर्णविरचितगोम्मटसारकर्णाटवृत्तिजीवतत्त्व-
प्रदीपिकेयोऽनु जीवकाश्चिजितप्रकरणं यज्जोऽनु रामरां सम्प्रत्यमार्गं नामहापिकारं व्याकृतमाप्नु ॥

हत्वाचार्यधोनेविद्वज्जितान्प्रकरणविरचितवर्तमानं गोम्मटसाररत्नामयप्रबंधमुत्ती जीवदत्त-
प्रदीपिकायां जीवकाश्चे विजितप्रकरणानु सम्प्रसारमार्गं पात्रकमनाम
सतद्विजितकारः ॥१७॥

५

इस प्रकार आचार्य श्री नेमिचन्द्र विरचित गोम्मटसार अथ नाम ईश्वरप्रदीपको भगवान् अहम्भ देव
परमेश्वरके सुन्दर चरनकमलोंको वन्दनासे प्राप्त गुणके पुंनस्वरूप राजगुरु महर्षिआचार्य
महाबाहो श्री भगवदम्हो विद्वज्ज चक्रवर्तिके चरनकमलोंकी धुकिसे सोभित कलाटवाले
श्री केतवर्णकी हस्त लिखित गोम्मटसार कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्व प्रदीपिकाकी
अनुसारीको संस्कृतकी तथा बसकी अनुसारीणी पं. टीकामकरविरत
सम्प्रदायचर्चिका नामक मापाटीकी अनुसारीणी हिन्दी भाषा
टीकामें जीवकाण्डकी कौत प्रकरणामें से सम्प्रत्यमार्गना
प्रकरणा नामक सप्तहर्षी अधिकार सम्पूर्ण हुआ ॥१७॥

१०

१५

आहारमारुणंति यद्गमं पि जियमेण प्गदिति गंतु ।

दशदिग्गता इति चेत्ता पञ्चसमुत्पादया इति ॥६६९॥

आहारमारपातिहसामुखात्तुल्यभेदविनिर्दिष्टं तु । वगद्विगताः सन्तु दोषाः संप्रसमुत्पाता
भविंति ॥

अष्टादशसमुद्रपातुं सारपातिसमुद्रपातभेदेन समुद्रपातगणेशविशिरंगजम्बु । तत्र- ५
वेदनासमुद्रपातद्विरुद्धसमुद्रपातगणेशविशिरंगजम्बु ।

ब्रह्मसामन्वयारुह्यतमं वेन्दरं :—

अंगुलप्रपञ्चभागे कालो जाहारयस्म उच्यते ।

कम्बुमि अणाहारो उक्कस्तं तिण्णि समया इ ॥६७०॥

अंगुलासंख्याभागाः काल आहारस्योत्पृष्टः । कर्मभेदे अनाहारः उत्पृष्टश्चयः समयाः सन्तु ॥ १०

गृह्यसूत्रात्स्वातंत्र्यभागमात्रद्वाराहृतशुद्धमवहं । त्रिसप्ततितोषासाष्टादशैकभाग-
मात्रद्वारात् त्रयस्यमवहं । काम्यमन्त्रादीन् अनाहारशुद्धद्वारात् शुद्ध तत्पर्यगच्छन्तु । त्रयस्यद्वारा-
मेकसप्तममवहं अनाहार अनाहार

उत्तर १-२ उत्तर ३ ज - स १

मनःतरमाहारमागंभयोऽत्र जीवातंभ्येव पेन्द्रप ।

24

कम्मवृत्तयत्रोगी होदि अणाहारयाण परिमाणं ।

तच्चिरदिदमंशारी मज्जो आहारपरिमाणं ॥६७१॥

काम्यं न चापयोगिनो भवत्यनहारकणां परिमाणं । तद्विरहितसंसारो सर्वः आहारक-
परिमाणं ॥

आहारात्मिकाभिरुपममृताभिरुपमैश्च एवमित्यर्थं भवति तु- पुनः शेषाः पञ्चममृताद्याः दद्यादित्यत्र २०
भूयन्ति ॥६६९॥ आहारात्मिकाभिरुपममृताभिरुपमैश्च

आहारेकानः उद्दिष्टं गुरुभ्रमराधन्यात्रैक्यायः २ । जयभ्यः निवृत्तयोनीक्युत्ताराहारेक्यभागाः ।

कथाहारात्मकः कर्मनिरासे आश्रितः विग्रहः । नष्टः एतन्मयः । धनुः—रघुर्देवः ॥१७०॥ अथान्त्रिक-
पञ्चाङ्गः—

आहारक और भारणान्तिक ये दो समुद्रपात ही एक दिशामें गमन करते हैं। किन्तु २५
 ये पाँच समुद्रपात दलों दिशाओंमें गमन करते हैं ॥६६॥

भाग आहार और अनाहारका काल कहते हैं—

आहारका उत्कृष्टकाल सूर्यगुल्फके असंख्यातवें भाग है। जयन्त्यकाल तीन समय कम उत्कृष्टकालका अन्तर्हर्षा भाग है। अनाहारका काठ कामंजकायमें उत्कृष्ट तीन समय और जयन्त्य एक समय है ॥६७॥

इनमें बीमारोंकी संख्या कमते हैं—

30

आहारानां भोजनियमं च नियमनं मर्गद्विगुणम् ।

द्वयद्विगुणं च मेमां पंचगव्यपादनां होति ॥६६॥

आहारपारमार्थिकपुनरावृत्तिप्रवृत्तिर्द्विगुणं च । द्वाविंशत्यः पञ्चगव्यः पञ्चगव्यपादा
भवति ॥

आहारपुनरावृत्तिं मारुतानि कर्मपुनरावृत्तिं चेतुः सप्तपुनरावृत्तिं चेतुः १
पंचगव्यपादनां भोजनपुनरावृत्तिं चेतुः सप्तपुनरावृत्तिं चेतुः १

आहारानां प्रवृत्तिः —

अंगुष्ठप्रमाणं वा गोक्षेत्रे आहारपत्रं उच्यते ।

कर्मणि अनाहारो उच्यते त्रिणि मन्वा ॥६७॥

अंगुष्ठप्रमाणं वा गोक्षेत्रे आहारपत्रं उच्यते । कर्मणि अनाहारो उच्यते त्रिणि मन्वा ॥ १०
अंगुष्ठप्रमाणं वा गोक्षेत्रे आहारपत्रं उच्यते । कर्मणि अनाहारो उच्यते त्रिणि मन्वा ॥ १०
अंगुष्ठप्रमाणं वा गोक्षेत्रे आहारपत्रं उच्यते । कर्मणि अनाहारो उच्यते त्रिणि मन्वा ॥ १०
अंगुष्ठप्रमाणं वा गोक्षेत्रे आहारपत्रं उच्यते । कर्मणि अनाहारो उच्यते त्रिणि मन्वा ॥ १०

उच्यते च १—१ आहारपत्रं १ मन्वा १

अनाहारपत्रं प्रमाणं होति अनाहारपत्रं प्रमाणं ।

११

कर्मणि अनाहारो उच्यते त्रिणि मन्वा ॥६८॥

त्रिणि मन्वा अनाहारो उच्यते त्रिणि मन्वा ॥६९॥

कर्मणि अनाहारो उच्यते त्रिणि मन्वा ॥६९॥

आहारपत्रं प्रमाणं होति अनाहारपत्रं प्रमाणं ।

आहारपत्रं प्रमाणं होति अनाहारपत्रं प्रमाणं ।

आहारपत्रं प्रमाणं होति अनाहारपत्रं प्रमाणं ।

आहारपत्रं प्रमाणं होति अनाहारपत्रं प्रमाणं ।

आहारपत्रं प्रमाणं होति अनाहारपत्रं प्रमाणं ।

आहारपत्रं प्रमाणं होति अनाहारपत्रं प्रमाणं ।

आहारपत्रं प्रमाणं होति अनाहारपत्रं प्रमाणं ।

१११

इत्तु धीमदहृत्तरमेदवरचादचरनारविद्वद्वंशवंशानंदितपुण्यपुंजायमान धीमद्व्यपानमुह-
मंडलावाप्यं ग्यंनहावावपावोद्वररायवारिपितामहसकलविद्वज्जनचक्राक्षि धीमदभयगुरितिस्रोत-
चक्रवर्तिधोपादपंकजरजोरनितललाटपट्टं धीमत्केलावधनविरचितमण्य गोम्मटसारकर्णाटकवृत्ति-
जीवतत्त्वप्रदीपिकेपोद्गु जीवकांडविशति प्रकल्पचंगडोद्गु पृथान्विविशति साहारमार्गवाधिकारं
निष्पितमाप्नु ।

हरपाचार्यधीनेमिचन्द्रविद्वान्मन्त्रचक्रार्णवविरचितपाथो गोम्मटसाररत्नामरत्नमंगलवृत्तौ वरपद्मेपिका-
स्यायो जीवकाण्डे विद्वत्प्रकरणानु साहारमार्गवादकल्पनात्मकान्निरिजोर्विभक्तः ॥१९॥

इस प्रकार भाषार्थ श्री नेमिचन्द्र विरचित गोम्मटसार अथ नाम पंचमं ब्रह्मको भगवान् अहंस्व देव
पारमेस्वरके मुन्दर चरनकमलोंकी बन्दुनासे प्राप्त पुण्यके पुंजरवक्त्र पाठगुण मण्डकाचार्य
महापाद्री श्री भमयवन्द्यो सिद्धान्त चक्रवर्तीके चरनकमलोंकी पृष्ठिमे शोभित ककाटवाडे
श्री केशवधर्मीके द्वारा रचित गोम्मटसार कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्व प्रदीपिकाकी
अनुसारिनी संस्कृतटीका तथा उसकी अनुसारिनी श्री, डॉक्टरमकरचिह्न
सम्पत्ज्ञानचन्द्रिका नामक भाषाटीकाकी अनुसारिनी हिन्दी भाषा
टीकामें जीवकाण्डकी श्रीम प्रकल्पनामीसे साहारमार्गवा
प्रकल्पना नामक उचीतर्था भविकार सम्पूर्ण हुआ ॥१९॥

५

१०

१५

राशि गस्ति चतुर्दशानिगच्छ २ व्यसित चतुर्दशानिजीवंगच्छ । प्र १ फ = ४ इ । २ लघु = २
४४ ५ ४४ ५

अचतुर्दशानिगच्छ १३—अवधिदशानिगच्छ ५० केवलदर्शननिगच्छ ३-॥
००

इतु भगवदहंत्वरमेश्वरपादचरणारविबद्धसंदनानंदितपुष्पपुंजायमानधोमद्रापराजगुरुभूम-
दलाधाम्यंयमहावाववाशेवरराय चाविपितामहसकलविद्वज्जनचक्र्यतिथोमदभयसूरिसिद्धांत-
चक्र्यतिथोपादपकजरजोरंजितललाटपट्टं थोमस्केअवष्णविरचितमण्य गोम्मटसारकण्टिकवृत्ति ५
जीवतत्त्व प्रदीपिकेयोक्तु विद्यामुपयोगाधिकारं निगदितमाबुतु ॥

४। फ = १ इ ५। प = २। इति वैरागिकलक्षणमात्राः = २ = व्यक्तिकवर्गनिमित्तः प्र - ४। फ = ४ २
४ ५ ० ४ ५ ५

इति वैरागिकलक्षणमात्राः = २ - अचतुर्दशानिगच्छः १३- अवधिदशानिगच्छः ५० केवलदर्शननिगच्छः ३ ॥६७६॥
२ ० ० ४ ५ ४

हयाचार्यभोनेमिबन्धविद्वान्महर्षिगिरिधाराय गोम्मटसारापरमाण्वज्ञसंपदवृत्तौ तत्त्वप्रदीपिका-
व्यास जीवकाण्डे विद्यतिप्रकल्पणामु उपयोगमार्गणाप्रकल्पना नाम विधोर्प्रधिकारः ॥२०॥ १०

४८७ की टीकामें कहा है। अवधिदर्शनवालोंका परिमाण अवधिदशानिगच्छे समान और
केवलदर्शननिगच्छे परिमाण केवलदशानिगच्छे समान जानना। एकेन्द्रियसे लेकर क्षीणकपाय
गुणस्थान पर्यन्त अनन्तानन्त जीवराशि प्रमाण अवधिदर्शनी हैं ॥६७६॥

इस प्रकार भाचार्य श्री नेमिचन्द्र विरचित गोम्मटसार अपर नाम पंचसमहकी भगवान् अहंन्त ऐव
परमेश्वरके सुन्दर चरणकमलोंकी वन्दनासे प्राप्त पुण्यके पुंजस्वरूप राजगुरु महर्षिगिरिधाराय महापादी १५
श्री भगवन्मन्त्रो सिद्धान्तचक्रवर्तीके चरणकमलोंकी धृक्छिछे शोभित ललाटवाले श्री केशववर्णी-
के द्वारा रचित गोम्मटसार कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्व प्रदीपिकाकी अनुसारीणी संस्कृतटीका
यथा उसकी अनुसारीणी पं. टीकामकर रचित सम्प्रदायानुसंगिका भासक
भाषाटीकाकी अनुसारीणी हिन्दी भाषा टीकामें जीवकाण्डके अन्तर्गत
मध्य प्रकल्पनाओंमेंसे उपयोगमार्गणा प्रकल्पना नामक बीसवें
अधिकार सम्पूर्ण हुआ ॥२०॥ २०

नियमविदमवकुमा नात्कमपध्याप्तगुणस्थानं पञ्चावुषे बोधे पेच्छवः—

मिच्छे सासणसम्ममे पुवेदयदे कवाडजोगिमि ।

परतिरिये वि य दोष्णि वि होंतिचि जिणेहि णिदिदुं ॥६८१॥

मिध्यादृष्टो सासादनसम्यग्दृष्टो पुवेदासंयते कवाटयोगिनि नरतिरिचि च द्वावपि भवत इति जिनेन्द्रिष्टे ॥

मिध्यादृष्टिगुणस्थानबोळं सासादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थानबोळं पुवेदोदयासंयतसम्यग्दृष्टिगुणस्थानबोळं कपाटसमुद्घातसयोगकेवलसिगुणस्थानबोळमिनु मनुष्यरोळं तिम्यंचरोळमा परदुमोदारिकाययोगमं तन्मिश्रकाययोगमुपपुषे विनु चीतरागसर्वज्जरिदं पेळस्पट्टुनु । सप्तमीवारिकमिधकाययोगबोळं एकंद्रिषदावरसूक्ष्मद्वित्रिचतुरिद्वियासंज्ञिपंचेंद्रियसंज्ञिपंचेंद्रियापध्याप्तजीवसमाससप्तकमं सयोगिकेवलियोलु कवाटसमुद्घातबोळं औदारिकमिश्रयोगमदुवुं कूडि जीवसमासाष्टकमवुं १०

औ	मिश्र
१३	४
७	८

वेगुळं पज्जते इदरे खलु होदि तस्स मिस्सं तु ।

सुरणिरयचउट्ठाणे मिस्से ण हि मिस्सजोमो दु ॥६८२॥

वेगुधः पर्याप्ते इतरस्मिन् खलु भवति तस्य मिधस्तु । सुरनारकचतुःस्थाने मिश्रे न हि मिश्रयोगस्तु ॥

वैक्रियिककाययोग पंचेंद्रियपध्याप्तदेवनारकमिध्यादृष्टिसासादनमिधासंयतगुणस्थानचतुष्टयबोळवुं । तन्मिश्रयोगं देवनारकमिध्यादृष्टिसासादनासंयतगुणस्थानत्रयबोळमवुं । वैक्रियिक-

तन्मिश्रयोगः अपर्याप्तचतुर्गुणस्थानेष्वेव नियमेन ॥६८०॥ तेषु केव ? इति चेदाह—

मिध्यादृष्टो सासादने पुवेदोदयासंयते कपाटसमुद्घातसयोगे, चेतेषु अपर्याप्तचतुर्गुणस्थानेषु स औदारिकमिश्रयोगः स्यादित्यर्थः । ठो योगो द्वावपि नरतिरिचोरेवेति सर्वज्ञव्यक्तम् । जीवसमासाः औदारिकयोगे पर्याप्ताः स्युः । तेन मिश्रयोगे अपर्याप्ताः स्युः । सयोगस्य चैकः एवमष्टो ॥६८१॥

वैक्रियिककाययोगः पर्याप्तदेवनारकमिध्यादृष्ट्यादिचतुर्गुणस्थानेषु भवति खलु स्फुटम् । तु-युनः

चार गुणस्थानोंमें होता है ॥६८०॥

किन गुणस्थानोंमें होता है यह कहते हैं—

मिध्यादृष्टिमें, सासादनमें, पुरुषवेदके उदय सहित असंयतमें और कपाट समुद्घात सहित सयोगकेवलीमें इन चार अपर्याप्त अवस्था सहित गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्रयोग होता है । औदारिक और औदारिकमिश्र ये दोनों भी योग मनुष्य और तिर्यंचोंमें ही सर्वज्ञ-देवने कहे हैं । औदारिक योगमें सात पर्याप्त जीवसमास होते हैं । अतः औदारिक मिश्र योगमें सात अपर्याप्त जीवसमास होते हैं और सयोगकेवलीके एक जीवसमास होता है इस तरह आठ जीवसमास होते हैं ॥६८१॥

वैक्रियिक काययोग पर्याप्त देव नारकियोंके मिध्यादृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमें होता है । वैक्रियिक मिश्रकाय योग मिश्रगुणस्थानमें तो नहीं होता, अतः देवनारकियोंके

स्यानचतुष्टयम् एकं द्विषावरसूक्ष्मद्वित्रिचतुरिद्विषासंज्ञिपंचेन्द्रियसंज्ञिपंचेन्द्रियजीवगन्तु उत्तरभव-
दारोरग्रहगत्यै स्वस्वयोप्यचतुष्टयंतिगच्छे पोषुदं विप्रहृतिये युवा विप्रहृतियोरुप्य अपर्ष्यामिजीव-
समासिगच्छे प्रतरसमुत्पातलोकपुरणसमुत्पातसमयप्रभवत्तिसयोमिभट्टारकन काम्मंगकाययोगाऽ
पर्ष्यामिजीवसमासेगृहि काम्मंगकाययोगबोद्धे दु जीवसमासेगच्छन्पुत्र का =

गु ४
जी ८

धावरकाय२५हुडी संदो सेसा असणिआदी य ।

अणियद्विसस्य पढमो भागोचि जिणेहि णिविदुं ॥६८५॥

स्यावरकायप्रभृति पंडः शेषाः अक्षमाइयश्च । अनिवृत्तेः प्रथमभागपर्यंतं जिनैर्निर्दिष्टं ॥

वेदमार्गणेयोऽ स्यावरकायबोद्धे मिथ्यादृष्टिप्रभृतियानि पंडवेदियन्ननिवृत्तिकरणगुणस्थान-

पंचमार्गलोऽ प्रथमसवेदभागपर्यंतमो भूतं गुणस्थानं गच्छोऽप्यह । अतु कारणमागि नपुंसक-
वेदबोद्धे गुणस्थाननवरुम् एकं द्विषावरसूक्ष्मद्वित्रिचतुःपंचेन्द्रियसंज्ञिपंचेन्द्रियजीवसमासेगच्छ १०
पविनालकुम्पुपु । शेषस्त्रीवेदिगच्छं पुंवेदिगच्छं संज्ञ्यसंज्ञिमिथ्यादृष्टिगुणस्थानं मोबल्लोडनिवृत्ति-
करणगुणस्थानद तंतम्म सवेदभागपर्यंतमो भूतं गुणस्थानं गच्छोऽप्यह । अतु कारणमागि स्त्रीवेद-
बोद्धे पुंवेदबोद्धेभूतमो भूतं गुणस्थानं गच्छ । संज्ञ्यसंज्ञिपंचेन्द्रियपर्य्याप्तपर्य्याप्तजीवसमासेगच्छ
नालकु नालकुम्पुपु न । स्त्री । पुं
१ । १ । १ ।
४ ४ ४

धावरकाय२५हुडी अणियद्वीवितिचउत्थभागोचि ।

फोदितियं लोहो पुण सुहुमसरागोचि विण्णेयो ॥६८६॥

स्यावरकायप्रभृतिनिवृत्तिद्वित्रिचतुर्ध्वभागपर्यंतं । कोपत्रयं भवति लोभः पुनः सूक्ष्मसराग-
पर्यंतं वित्तैः ॥

पूरणवाळे च भवति तेन तत्र गुणस्थानानि जीवसमासाश्च ठड्डु चत्वारि अष्टौ भवन्ति ॥६८७॥

वेदमार्गणायो पञ्चवेदः स्यावरकायमिथ्यादृष्ट्याद्यनिवृत्तिकरणप्रथमसवेदभागपर्यंतं भवति तेन तत्र
गुणस्थानानि नव । जीवसमासाश्चतुर्दश । शेषस्त्रीपुंवेदी संज्ञ्यसंज्ञिमिथ्यादृष्ट्याद्यनिवृत्तिकरणस्वस्ववेदभाग- १०
पर्यंतं भवतः तेन तयोर्गुणस्थानानि नव नव । जीवसमासाः संज्ञ्यसंज्ञिनी पर्याप्तपर्याप्तविति चत्वारः इति
जिनैरवतम् ॥६८५॥

फाळमें होवा हे । इससे छसमें गुणस्थान थीर जीवसमास छसीकी तरह क्रमसे चार और
आठ होते हैं ॥६८४॥

वेदमार्गणार्थे नपुंसकवेद स्यावरकायसम्बन्धी मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणके २५
प्रथम सवेदभागपर्यन्त होवा है । अतः छसमें नौ गुणस्थान होते हैं । जीवसमास भीदह
होते हैं । संप स्त्रीवेद और पुरुषवेद संज्ञी-असंज्ञी मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरणके अपने-
अपने सवेद भागपर्यन्त होते हैं । इससे उनमें नौ-नौ गुणस्थान होते हैं । तथा जीवसमास
संज्ञी, असंज्ञी, पर्याप्त, अपर्याप्त चार होते हैं ऐसा जिनवैपने कहा है ॥६८५॥

सण्णाणतिगं अविरदसन्मादी छट्ठादि मणपञ्जो ।

खीणकसायं जात्र हु केवलणार्णं जिणे सिद्धे ॥६८८॥

सज्जानात्रिकमसंयतसम्पगृहृष्टादि पट्टकादि मनःपर्यायः क्षीणकपायं यावत् केवलज्ञानं जिनेसिद्धे ॥

मतिधृतावधि सम्यग्ज्ञानत्रितयमसंयतसम्यगृहृष्टादिक्षीणकपायगुणस्थानपर्यन्त मो'भत्तु ५
गुणस्थानगच्छोत्पुद्गु । संज्ञिपंचेद्रियपर्याप्ताऽपपर्याप्तजीवसमासेगच्छेरहेरदणुयु । मनःपर्यायज्ञानं
पट्टगुणस्थानवर्ति प्रमत्तसंयतनाविद्याणि क्षीणकपायपर्यन्तनेत्र गुणस्थानबोळ्पुद्गु । संज्ञिपंचेद्रिय-
पर्याप्तिजीवसमासमो'देयत्तु । केवलज्ञानं सयोगिकेवलियोळमयोगिकेवलियोळं सिद्धरोळमक्कुमल्लि
संज्ञिपंचेद्रियपर्याप्तिजीवसमासमुं समुद्घातजिननल्लि ओदारिकमिधुं काम्मंयकाययोगमुमुळ्ळ-
वरिदमपर्याप्तिजीवसमासमुं कूडि जीवसमासद्वयं संभविमुगुं— १०

कु । कु । वि । म । धु । अ । म । के

२ । २ । २ । २ । २ । २ । २ । २

१४ । १४ । १ । २ । २ । २ । २ । २

अयदोचि हु अविरमणं देसे देसो पमचइदरे य ।

परिहारो सामाइयच्छेदो छट्ठादि धूलोचि ॥६८९॥

असंयतपर्यन्तमविरमणं देसे देशः प्रमत्ते इतरस्मिन्श्च । परिहारः सामायिकच्छेदोपस्था-
पनी पट्टादिस्थूलपर्यन्तं ॥

सुहुमो सुहुमकसाए संते खीणे जिणे जइस्सादं ।

संजममग्गणभेदा सिद्धे णत्थिचि णिविदट्ठं ॥६९०॥

सूक्ष्मः सूक्ष्मकपाये छाते क्षीणे जिने यथाख्यातः । संयममार्गणभेदाः सिद्धे न संति
इति निहिट्टं ॥

संयममार्गणेपोळु मिध्यादृष्टिगुणस्थानं मो'बत्तो'इसंयतसम्यगृहृष्टिगुणस्थानपर्यन्तं नाल्कुं २०
गुणस्थानगच्छो'विरमणमक्कुमल्लि पदिनाल्कुं जीवसमासंगळुमण्णुयु । देशसंयतगुणस्थानबोळु देश-

मत्तादिसम्यग्ज्ञानत्रयं असंयतादिक्षीणकपायान्तं तेन तत्र गुणस्थानानि नव । जीवसमासो संज्ञिपर्याप्ता-
पर्याप्तो द्वौ । मनःपर्यायज्ञानं पट्टादिक्षीणकपायान्तं तेन तत्र गुणस्थानानि सप्त जीवसमासः संज्ञिपर्याप्ति एवैकः ।
केवलज्ञानं सयोगायोगयोः सिद्धे च । तत्र जीवसमासो संज्ञिपर्याप्तसयोगापर्याप्तो द्वौ ॥६९८॥

संयममार्गणाया अविरमणं मिध्यादृष्ट्याद्यसंयतान्तचतुर्गुणस्थानेषु । तत्र जीवसमासाश्चतुर्दश । देशसंयमः

मति आदि तीन सम्यग्ज्ञान असंयतसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थानपर्यन्त होते हैं इससे २५
उनमें नौ गुणस्थान होते हैं । जीवसमास संज्ञिपर्याप्त अपर्याप्त दो होते हैं । मनःपर्यायज्ञान
छठे गुणस्थानसे क्षीणकपाय पर्यन्त होता है अतः उसमें सात गुणस्थान होते हैं और जीव-
समास एक संज्ञिपर्याप्त ही होता है । केवलज्ञान सयोगी, अयोगी और सिद्धोंमें होता है ।
उसमें संज्ञी पर्याप्त तथा समुद्घातगत सयोगीको अपेक्षा संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमान
होते हैं ॥६९८॥

संयममार्गणामें असंयम मिध्यादृष्टिसे लेकर असंयतपर्यन्त चार गुणस्थानोंमें होता ३०

दशान्तरमागर्जनेषु चतुर्दशान्तरं चतुरिद्वयमिध्याह्णं मोदत्माह्णं क्षीणकृपायगुणस्थानपर्यंतं
पन्नेरद्वं गुणस्थानं गच्छेत्पुनरुद्वं चतुरिद्वयसंज्ञिर्न चैद्वयसंज्ञिर्न चैद्वयपर्याप्तापर्याप्तजीवसमासे
गच्छेत्पुनरुद्वं अथ चतुर्दशान्तरं म्यावरकायमिध्याह्णं गुणस्थानमाविद्याणि क्षीणकृपायगुणस्थानपर्यंतं
पन्नेरद्वं गुणस्थानं गच्छेत्पुनरुद्वं पश्चिनात्कुं जीवसमासे गच्छेत्पुनरुद्वं अथ चतुर्दशान्तरं पन्नेरद्वं सस्यमृष्टि-
गुणस्थानमाविद्याणि क्षीणकृपायगुणस्थानपर्यंतं भूतं गुणस्थानं गच्छेत्पुनरुद्वं संज्ञिर्न चैद्वय-
पर्याप्तापर्याप्तजीवसमासे गच्छेत्पुनरुद्वं केवलदर्शनं सयोगिकेवलपरयोगिकेवलगतं बेरद्वं गुण-
स्थानं गच्छेत्पुनरुद्वं संज्ञिर्न चैद्वयपर्याप्तजीवसमासे संसुमुदपातकेवलपर्याप्तजीवसमासे
मन्तेरद्वं जीवसमासे गच्छेत्पुनरुद्वं च । अ । अ । के । गुणस्थानातीतरणं सिद्धरोक्षं केव-

१२। १२। ९। २।

६।१४।२।२।

लक्ष्मणभयम् ॥

धावरकायप्पहुडी अविरदसम्मोचि असुहत्तियलेस्सा ।

१०

सण्णीदो अयमत्तो जाव हू सहतिण्णि लेस्साओ ॥६९२॥

स्थावरकायप्रभृत्यविरतसम्याभूष्टिषम्यंतमनुभ्रयलेप्याः । संजितोऽप्रमत्तं पावत्
 अनुभ्रयलेप्याः ॥

लेख्यमागर्गण्येन अमुभयपक्षेभ्योऽपि स्थावरकायमिथावृष्टिगुणस्थानमादियाणि असंयत-
सम्पद्वृष्टिगुणस्थानपर्यन्तं नोक्तं गुणस्थानगोष्ठौ संभविसुखवर्हिल एकद्विपञ्चरसूक्तद्वित्रिघटु- १५
पञ्चद्विपञ्चरसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्तभेदविभिन्नजोषतमासंगत् पदिनास्कुमप्यु । तेजःपक्षलेख्यगु-
संज्ञिमिथावृष्टिगुणस्थानमादियाणि अप्रसन्नगुणस्थानपर्यन्तमेतत् गुणस्थानगोष्ठ्युवर्हिल संज्ञि-
पर्याप्तापर्याप्तजोषतमासंगत्तेरहप्यु ।

[illegible]

लेदयामार्गगायां भद्रमुलेस्यावयं स्वावकायमिष्यादृष्ट्याससंपत्तन्तं तत्र जीवसमाप्ताः ननुदं ।
तेजःपक्षेदेयं संज्ञिमिष्यादृष्ट्याधप्रमत्तान्तं तत्र जीवसमाप्तां संज्ञिप्राप्तापर्यायी ॥११२॥

दर्शनमार्गणामे चक्षुर्दृशनं चतुरिन्द्रियं मिथ्यावृष्टिसे लेकर क्षीणरूपाय पर्यन्त होता है। उसमें जीवसमास चौडिन्द्रिय, संक्षी पंचेन्द्रिय, असंक्षि पंचेन्द्रिय इनके पर्याप्त और अपर्याप्त के भेदसे छह होते हैं। अवक्षुदर्शन स्थावरकाय मिथ्यावृष्टिसे लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान पर्यन्त होता है। उसमें जीवसमास चौदह होते हैं। अवचिदर्शन असंयतसे लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थानपर्यन्त होता है। उसमें जीवसमास संक्षिपर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं। केवलदर्शन सयोगी-अयोगी गुणस्थानोंमें होता है। उसमें दो जीवसमास होते हैं जो केवल-स्थानमें होते हैं। सिद्धोंमें भी केवलदर्शन होता है ॥६०१॥

लेइयामार्गणामें तीन अंशुम लेइया स्थावरकाय मिध्यादृष्टिसे लेकर असंयत गुणस्थान पर्यन्त होती है उनमें जीवसमास चौदह हैं। तेजोलेइया और पद्मलेइया संज्ञिमिध्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्त गुणस्थान पर्यन्त होती हैं। उसमें जीवसमास संज्ञिपर्याप्त और संज्ञिअपर्याप्त होते हैं ॥६९३॥

सम्यक्त्वमार्गणयोः मिथ्यादृष्टिषु सासादनं मिथुनं तंतम्म गुणस्थानदोषयकुमलितं
मिथ्यादृष्टिषु पविनाल्लु जीवसमासेगळप्यु । सासादनोऽयं केन्द्रियवावरापय्यात् द्विद्रियापय्यात्
त्रिद्रियापय्यात् चतुर्द्रियापय्यात् संज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तापय्यात् संज्ञिपंचेन्द्रियापय्यात् जीवसमासे-
गळेळप्यु । द्वितीयोपशमसम्यक्त्वविराधकनप्य सासादननुमोऽने बाचाप्यापेधमिवं
संज्ञिपंचेन्द्रियपर्याप्तजीवसमासेयु देवापय्याप्तजीवसमासेयु मेरडप्यु । मिथ्योऽयं संज्ञिपंचेन्द्रिय- ५
पर्याप्तजीवसमासेयो देयकुं । प्रथमोपशमसम्यक्त्वेषु वेदकसम्यक्त्वमुपगतसम्यग्दृष्टि-
यागियागप्रमत्तपय्यात् नाल्लु नाल्लु गुणस्थानगळेळप्यु । अल्लि प्रथमोपशमसम्यक्त्वोऽयं
मरणमितल्लप्युदरिवं संज्ञिपय्याप्तपंचेन्द्रियजीवसमासेयो देयकुं । वेदकसम्यक्त्वोऽयं संज्ञिपंचेन्द्रिय-
पर्याप्तापय्यात् जीवसमासेयु मेरडप्यु वेके बोधे धम्मय नारकापय्यात्तनुं भवनप्रयवजितदेवापय्यात्तनुं
भोगभूमिजमनुष्यतियं चापय्यात्तनुं वेदकसम्यग्दृष्टिषु नाल्लप्युदरिवं । १०

द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके येळवपं ।

विदिपुवसमसम्मत्तं अविरदसम्मादि संतमोहो चि ।

खड्गं सम्मं च तद्वा सिद्धोत्ति जिणेहि निदिद्धं ॥६९६॥

द्वितीयोपशमसम्यक्त्वमविरतसम्यग्दृष्ट्यापुपज्ञातमोहगुणस्थानपय्यात् आधिकसम्यक्त्वं च
तथा सिद्धपय्यात् जिनेनिदिद्धं ॥ १५

सम्यक्त्वमार्गणयो मिथ्यादृष्टिः सासादनः मिथुनः स्वस्वगुणस्थाने एव भवति । ॥ मिथ्यादृष्टौ
जीवसमासाधनपुरतः । सासादने बाधरकद्वित्रिचतुरिन्द्रियसंज्ञिपय्यात् संज्ञिपय्यात्तः यत् । द्वितीयोपशमसम्य-
क्त्वविराधकस्य सासादनेत्वप्रातिपदो च संज्ञिपय्यात्तदेवापय्यात्तौचि द्वौ । मिथे संज्ञिपय्यात्तः । प्रथमोपशमवेदक-
धम्मयत्वे द्वे अंत्यगताग्रमत्तान्तं स्तः । तत्र जीवसमासेः प्रथमोपशमसम्यक्त्वे मरणाभावात् संज्ञिपय्यात् एवैकः ।
वेदकधम्मयत्वे संज्ञिपय्यात्तपय्यात्तौ द्वौ । परमानारकस्य भवनप्रयवजितदेवस्य भोगभूमिनरदिवरबोधे वरय्यात्तदेवैव २०
वत्संभवात् ॥६९५॥ द्वितीयोपशमसम्यक्त्वस्याह—

सम्यक्त्वमार्गणयो मिथ्यादृष्टिः, सासादन, और मिथ अपने-अपने गुणस्थानमें होते
हैं । मिथ्यादृष्टिमें जीवसमास चौदह होते हैं । सासादनमें बाधर एकन्द्रिय, दोइन्द्रिय,
तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, असंज्ञिअपय्यात् तथा संज्ञिपय्यात्तअपय्यात् ये साव जीवसमास होते हैं ।
द्वितीयोपशम सम्यक्त्वकी विराधना करके सासादनको प्राप्त होनेके पक्षमें संज्ञिपय्यात् और २५
देवअपय्यात् दो जीवसमास होते हैं । मिथगुणस्थानमें संज्ञिपय्यात् जीवसमास होता है ।
प्रथमोपशम सम्यक्त्व और वेदकसम्यक्त्व असंयतसे अग्रमत्त गुणस्थान पय्येत्त होते हैं ।
प्रथमोपशम सम्यक्त्वमें मरणका अभाव होनेसे जीवसमास एक संज्ञिपय्यात् ही है । वेदक
सम्यक्त्वमें संज्ञिपय्यात्, अपय्यात् दो होते हैं । क्योंकि यहाँ नानक प्रधान नरकमें भवनप्रिकको
छोड़कर देवोंमें और भोगभूमिया मनुष्य तथा तिर्यचोमें अपय्यात् दत्तानें भी वेदक सम्यक्त्व १०
होता है ॥६९५॥

द्वितीयोपशम सम्यक्त्वको कहते हैं—

१. यु. सावित्रि द्वौ ।

दृष्टिगुणस्थानमोदेयकुमल्लि संज्ञिजीवसंबंधिपर्याप्तापर्याप्तजीवसमासद्वयमुच्चितुष्टिव द्वादश-
जीवसमासेगळनितुमप्यु नियमविंसे सं । अ
१२ । १ ।
२ । १२ ।

धावरकायप्पहुडो सजोगिचरिमोत्ति होदि आहारी ।

कम्मइय अणाहारी अजोगिसिद्धे वि णायव्वो ॥६९८॥

स्थावरकायप्रभृति सयोगिचरमन्त्रं भवत्पाहारो । कार्मणे अनाहारी अयोगिसिद्धे वि
शातथ्यः ॥

आहारमार्गणेयोद्धु स्थावरकायमिध्यादृष्टिपादियागि सयोगकेवलपर्यन्तं पविमूलं गुणस्या-
नंगळोळाहारिगळोळु आहारियक्कुमल्लि सर्व्वमुं जीवसमासेगळु पविनात्कुमप्यु । विप्रहृति-
कार्मणकाययोगे भिध्यादृष्टिसासादनसम्बन्धदृष्टि असंयतसम्बन्धदृष्टिगुणस्थानत्रयमुं प्रतरलोकपूरण-
समुद्घातसयोगिगुणस्थानमुमयोगिगुणस्थानमुमितुगुणस्थानपंचकबोळमनाहारियक्कुमल्लि एकैत्रिय-
बावरसूक्मापप्याप्तजीवसमासद्वयमुं द्वित्रिचतुरिद्विषापप्याप्तजीवसमासत्रयमुं संज्ञिरचैत्रियपर्याप्ता-
पर्याप्तद्वयमुमसंयतपर्याप्तजीवसमासेयुमितु जीवसमासाष्टकमन्त्रुं आ । अ अनंतरं गुण-
१३ । ५
१४ । ८

स्थानंगळोळु जीवसमासयं पेळइपवः—

मिच्छे चोद्दसजीवा सासण अयदे पमत्तविरते य ।

सण्णिदुगं सेसगुणे सण्णी पुण्णो दु खीणोत्ति ॥६९९॥

मिध्यादृष्टौ चतुर्दशजीवाः सासादने अयते प्रमत्तविरते च । संज्ञिद्वयं दोयगुणे सजिदूर्गस्तु
क्षीणकयापपर्यन्तं ॥

द्वौ । तु-तुनः असंज्ञिजीवः स्थावरकायाद्यसंयतमिध्यादृष्टिगुणस्थाने एव स्थान्निवसेन तत्र जीवसमासा द्वादश
संज्ञिनो द्वाभावात् ॥६९७॥

आहारमार्गणायां स्थावरकायमिध्यादृष्टिपादिसयोगान्तं आहारी भवति । तत्र जीवसमासाद्यतुदंश
मिध्यादृष्टिपासादानात्संयतसयोगानां कार्मणयोगावसरे अयोगिसिद्धयोश्च अनाहारी शातथ्यः । तत्र जीवसमासा
अभावाः सन् । अयोगस्य पैकः ॥६९८॥ अथ गुणस्थानेषु जीवसमासानाह—

असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यन्त मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें ही होता है । नियमसे उसमें चारह जीव-
समास होते हैं क्योंकि संज्ञी सम्बन्धी दो जीवसमास नहीं होते ॥६९७॥

आहारमार्गणामें स्थावरकाय मिध्यादृष्टिसे डेकर सयोगकेवलपर्यन्त आहारी होता
है । उसमें जीवसमास चौदह होते हैं । मिध्यादृष्टि, सासादन, असंयत, और सयोगकेवली
के कार्मणयोगके समय सदा अयोगी और सिद्धोंमें अनाहारी जानना । उसमें जीवसमास
अपर्याप्त सम्बन्धी सात होते हैं और अयोगोंके एक पर्याप्त होता है ॥६९८॥

अथ गुणस्थानोंमें जीवसमासोंको कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिगुणस्थानं मोरलोहं पविनात्कुं गुणस्थानं गच्छेत् पथ्याप्तिगन्तं प्राणं गन्तुं
पुष्पकाणि पेक्षलपट्टयेकं बोधे सुगमं गच्छन् पुनरिव भवेत्तं बोधे क्षीणकपायगुणस्थानपर्यन्तं प्रत्येकमारु-
पथ्याप्तिगन्तं दशप्राणं गन्तुं मप्युतु । सयोगिकेवति भट्टारकनोऽहं भावेन्द्रियमित्तु । द्रव्येन्द्रियापेक्षेयिनाहं
पथ्याप्तिगच्छेत्तु वायव्यप्राणमुमुच्छ्वासनिश्वासाप्राणमुमायुःप्राणमुं कायव्यप्राणमेवो नात्कुं
प्राणं गच्छन्तु । उच्छ्वित्त्रिय प्राणं गच्छन्तु मनोबलप्राणमुं संभवित्तु । आ सयोगिकेवति वायव्यं ५
निलुत्तिरत्तु मूत्र प्राणं गच्छन्तु । उच्छ्वासनिश्वासाप्राणमुपरतमायुत्तिरत्तु मेरुदेप्राणं गच्छन्तु । अयोगि
भट्टारकनोऽहं आयुष्यप्राणमो देयत्तु । पूर्वसंचितनो कर्मकर्मसंचयं प्रतिसमयमेकैकनिपेक्षयति-
यति चरमसमयदेहं किञ्चिन्पूतपदं गुणहानिमात्रनो कर्मसंचयं कर्मसंचयमुमुदयति
द्रव्याधिक्यनपापेक्षेयिदमयोगिचरमसमयदेहं कर्मभुं नो कर्मभुं केदुतु पथ्यापि अधिक्यनपापेक्षेयि-
नतरसमयदेहं किञ्चित्तिरत्तु लोकाप्रतिवाति सिद्धपरमेष्ठियपने बुतु तात्पर्यं । १०

अनंतरं गुणस्थानं गच्छेत् संज्ञेपक्षं पेक्षदपक्षः—

छद्मोचि पदमसंज्ञा सकृज्ज्ञ सेसा य कारणावेकता ।

पुच्छो पदमणियद्वी सुदुमोचि कमेण सेसाओ ॥७०२॥

पट्टपर्यंतं प्रथमसंज्ञा सकार्या दोषाश्च कारणापेक्षाः । अपूर्वप्रथमानिवृत्ति सुखपर्यंतं
क्रमेण दोषाश्च ॥ १५

मिथ्यादृष्टिगुणस्थानमादिष्यामि प्रमत्तगुणस्थानपर्यन्तमूर्धं गुणस्थानं गच्छेत् सकार्यामप्या-
हारादिचतुःसंज्ञे गच्छन् मप्युतु पट्टनस्ति आहारसंज्ञे व्युच्छित्तिपाद्यु । उपरितनगुणस्थानदोऽभायं

चतुर्दशगुणस्थानेषु पर्याप्तयः प्राणाश्च पुष्कं नोच्यन्ते सुगमस्तात् । तथाहि—क्षीणकपायपर्यन्तं
पदपर्याप्तयः दश प्राणाः । सयोगिने भावेन्द्रियं न, द्रव्येन्द्रियापेक्षया पदपर्याप्तयः बागुच्छ्वासनिश्वासायुः-
कायमानाश्चत्वारि भवन्ति । दोषेन्द्रियनः प्राणाः पद न सन्ति । तथापि बायोरे विद्यन्ते त्रयः । पुनः २०
उच्छ्वासनिश्वासे विद्यन्ते द्वौ । अयोगे आयुः प्राण एकः । प्राक्सचितनो कर्मकर्मसंचयः प्रतिसमयमेकैकनिपेक्षं
यत्तु किञ्चित्पूतपदं गुणहानिमात्रो द्रव्याधिक्यनयेन अयोगिचरमे विनश्यति पर्यायाधिक्यनयेन अनन्तरसमये
एवेति तात्पर्यं ॥७०१॥ अथ गुणस्थानेषु संज्ञा आह—

मिथ्यादृष्टमादिप्रमत्तगन्तं सकार्याः आहारादिचतसः संज्ञा भवन्ति । पट्टगुणस्थाने आहारसंज्ञा

चौदह गुणस्थानोर्मं पर्याप्ति और प्राण पृथक् नहीं कहे हैं क्योंकि सुगम है । यथा— २५
क्षीणकपाय गुणस्थान पर्यन्त छह पर्याप्तियाँ और दस प्राण होते हैं । सयोगिकेवलीमें भावेन्द्रिय
नहीं है । उनके द्रव्येन्द्रियकी अपेक्षा छह पर्याप्तियाँ हैं और वचनबल, उच्छ्वास-निश्वासा,
आयु और कायबल ये चार प्राण होते हैं । दोषेन्द्रियाँ और मन ये छह प्राण नहीं हैं । उन
चार प्राणोंमें-से भी वचनयोगके एक आनेपर तीन रहते हैं, पुनः उच्छ्वास-निश्वासाका
निरोध होनेपर दो रहते हैं । अयोगिकेवलीके एक आयुप्राण होता है । पूर्व संचित कर्म-
नो कर्मका संचय प्रतिसमय एक-एक निपेक्ष गलते-गलते किञ्चित् न्यून देह गुणहानि प्रमाण १०
रहता है । सो द्रव्याधिक्य नयसे तो अयोगीके अन्तिम समयमें नष्ट होता है और पर्यायाधिक्य
नयसे अनन्तर समयमें नष्ट होता है ॥७०१॥

गुणस्थानोर्मं संज्ञा कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्त गुणस्थान पर्यन्त आहार आदि चारों संज्ञाएँ कार्यरूपमें ३५

निरूपयन्पुत्रु। मिथगुणस्यानबोद्ध पय्याप्तपंचेंद्रियप्रसक्त्याधिकमेववक्तुं। असंपतगुणस्यानबोद्ध पय्याप्तपंचेंद्रियप्रसक्त्याधिकमेववक्तुं। वैशसंपतगुणस्यानबोद्ध पय्याप्तपंचेंद्रियप्रसक्त्याधिकमेववक्तुं। प्रमत्तगुणस्यानबोद्ध संचिपंचेंद्रियपय्याप्तप्रसक्त्याधिकमेववक्तुं। अग्रमत्तगुणस्यान मोदलोडु क्षीणकृपायगुणस्यानपय्यंतमाहं गुणस्यानंगबोद्ध प्रत्येकं पय्याप्तपंचेंद्रियप्रसक्त्याधिकमेववक्तुं। सयोगकेवलगुणस्यानबोद्ध पय्याप्तसंचिपंचेंद्रियप्रसक्त्याधिकमेववक्तुं मल्लि समुदातसयोगकेवल भट्टारकनोद्ध जोहारिकमिथयोगं काम्मर्णकपयोगमुमुळुद्धरिदमपय्याप्तपंचेंद्रियप्रसक्त्याधिकमु- ५

पुद्गलविपाकिप्रतीरांयोपांगनामकर्मोदयंगीळवं मनोवचनकायपुक्तमप्य जीवके कर्ममो-
कर्ममगमनकारणमपुत्रावुडु शक्ति जीवप्रवेशपरित्पंदसंभूतमनु योगमं बुदवकुमनु मनोवचनकाय- १०

प्रवृत्तिरेवद्वि विविपमवक्तुमल्लि योप्यांतरायनोहंद्रियावरणक्षयोपशमविदमंगोपांगनामकर्मोदयविदं-
मनःपय्याप्तियुक्तये मनोवर्णनायातपुद्गलस्कंधंयज्जो अष्टच्छदारविदाकारविदं त्वयवोद्ध निम्माणि-
नामकर्मोदयसंपावितद्रव्यमनः पदपत्रंयज्जोद्ध नोहंद्रियक्षयोपशमजीवप्रवेशप्रचयवोद्ध लक्ष्म्युप-
योगलक्षणमावेद्विदं मनमंबुदवकुमा मनोव्यापारमं मनोयोगमंबुदवा मनोयोगमुं सत्याद्यर्थ

पय्याप्तः सतिनवकायः उमयस्वेति वद्विजीविकायः। विद्ये सतिपञ्चेंद्रियप्रसक्त्यायपय्याप्त एव। असंपते उमयः, १५
देवसंपते पय्याप्त एव। प्रमत्ते पय्याप्तः। साधारकपितृमयः। अग्रमत्तादिधीयवयामवेपु पय्याप्त एव।
सयोगे पय्याप्तः। सधमुद्पाते तृमयः। अयोगे पय्याप्त एव।

पुद्गलविपाकिप्रतीरांयोपांगनामकर्मोदयः मनोवचनकायपुक्तजीवस्य कर्मनोक्त्यायकारणा या शक्तिः
तन्मनित जीवप्रवेशपरित्पंदनं वा योयः स च मनोवचनकायवृत्तिभेदावनेषा। वन वीर्यान्तरायनोहंद्रियावरण-
क्षयोपशमेन अज्ञोपाङ्गनामोदयेन च मनःपय्याप्तियुक्तजीवस्य मनोवर्णनायातपुद्गलस्कन्धानां अष्टच्छदारविदा- २०
कारेण हृदये निर्माणनामोदयसंपावितं द्रव्यमनः। तत्पञ्चाशेषु मोहंद्रियावरणक्षयोपशमयुक्तजीवप्रवेशप्रचये

इन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंख्य पंचेन्द्रिय प्रसक्त्याय अपर्याप्त होते हैं। संख्य पंचेन्द्रिय
प्रसक्त्याय दोनो होते हैं। इस प्रकार इस गुणस्थानमें छहो जीवनिकाय होते हैं। मिथमें संख्य
इन्द्रिय प्रसक्त्याय पर्याप्त ही है। असंयतमें दोनो है। दैतसंयतमें पर्याप्त ही है। प्रमत्तमें
तै है। आहारक श्रद्धि सहित दोनो है। अग्रमत्तसे क्षीणकृपायपर्यन्त दोनो है। सयोगीमें
तै है। समुदायवर्तमें दोनो है। अयोगीमें पर्याप्त ही है। २५

पुद्गलविपाकी शरीर और अंगोपांग नामकर्मके उदयके साथ मन-वचन-कायसे युक्त
विके कर्म-नोक्तमके आनेमें कारण जो शक्ति है अथवा उसके द्वारा होनेवाला जो जीवके
शोका चलन है वह योग है। वह मन-वचन-कायकी प्रवृत्तिके भेदसे तीन प्रकारका है।
गन्धराय और नोहंद्रियावरणके क्षयोपशमसे तथा अंगोपांगनाम कर्मके उदयसे मनः- ३०
तिसे युक्त जीवके मनोवर्णनारूपसे आये हुए पुद्गल स्कन्धोंका आठ पाँचुडोके कमलके
गरसे हृदयमें निर्माणनाम कर्मके उदयसे रचा गया द्रव्यमन है। उन पाँचुडोके अभागांमें

सम्यग्दृष्टिप्राप्तित्वं मातृकुम्भपया केळगे देशसंयमगुणस्थानम् पोद्दि द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिप्राप्तिकुम्भपया, असंयतगुणस्थानम् पोद्दि असंयतसम्यग्दृष्टिप्राप्तिकुम्भपया मरणमावोडे देवाऽसंयतनकुं । मेनु मिथप्रकृत्युदयविदं मिथनरकु । मनन्तानुबन्धिरुपायोदयविदं द्वितीयोपशमसम्यक्त्वविराधकं सासादननुमोळने याचाभ्यं पशवोळ सासादननुमकुम्भपया मिथ्यात्वकर्मोदयविदं मिथ्यादृष्टिगुमरकुमेवो विशेषं द्वितीयोपशमसम्यक्त्ववोळरित्युत्पद्युं । क्षायिकसम्यक्त्वसंयताविचतुर्गुणस्थानप्राप्तिगत्तु येदकसम्यग्दृष्टिगत्तुममंभूमि जेदमप्परयगंज्जकुमवर्गत्तुं केवल श्रुतकेवलित्तुय थोवारपादवंदोळ सामप्रकृतिगत्तुं निरवशेषं कोडिसि क्षायिकसम्यग्दृष्टिगत्तुपपह । मानुषियदमसंयतसम्यग्दृष्टिगत्तु देशयतिज्येष्पुपचारमहायतिकेयद केवलित्तुयपादमूलवोळ सामप्रकृतिगत्तुं क्षयिदिसि क्षायिकसम्यग्दृष्टिगत्तुपपह । मितु सम्यक्त्वं सामान्यविदमोवु विशेषविदं मिथ्यात्व सासादननिभउपशमवेदकक्षायिकमेवितु यद्विधमकुं । मिथ्यादृष्टिगुणस्थानवोळ मिथ्यावचियक्कुं । सासादननोळमा सासादनवचियक्कुं । मिथगुणस्थानवोळ मिथवचियक्कुं । असंयतगुणस्थानमादियागिअप्रमत्तगुणस्थानपप्यवं प्रत्येकमुपशमवेदकक्षायिकगत्तुमूहं साम्यवर्गगत्तुयु ।

अपूर्वकरणगुणस्थानं मोदलागि उपशांतकपायगुणस्थानपम्यंतमुपशमभेगिपोळ नाल्कुं गुणस्थानगत्तुवोळ प्रत्येकमुपशमसम्यक्त्वमुं क्षायिकसम्यक्त्वमुंरेवुं संभविसुययु । क्षपकश्रेणिपोळ

मिथ्यादृष्टो भवन्ति । द्वितीयोपशमसम्यक्त्वे विशेषः । स कः ? उपशमधेयमारोहणायं साविद्याप्रमत्तवेदक-
पम्यग्दृष्टिः करमयपरिणामलामप्यान् अनन्तानुबन्धिनो प्रवर्तोपशमं विना अप्रवर्तोपशमने अघोनिपेकानु-
रूप्य वा विंशोय्य सापयिषा दर्शनमोदयस्य अन्तरकरणेन अन्तरं कृत्वा उपशमविधानेन उपशमस्य
अनन्तरप्रथममये द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिर्नुत्ता उपशमश्रेणिमाह उपशमस्तत्त्वायं यत्वा अन्तर्गृह्यते स्थित्वा
क्रमेण अवशोयं अप्रमत्तगुणस्थानं प्राप्य प्रमत्ताप्रमत्तारवृत्तिवृत्तायि करोति । वा अयः देशसंयतो भूत्वा
भास्ते । वा अवयवो भूत्वा भास्ते । वा मरणे देशसंयतः स्यात् वापिथप्रकृत्युदये मिथः स्यात् । अनन्तानु-
बन्धन्यमवोदये द्वितीयोपशमसम्यक्त्वं विराचयवोत्वाचार्यवधे सासादनः स्यान् वा मिथ्यात्वोदये मिथ्यादृष्टिः
स्यान् इति । क्षायिकसम्यक्त्वं तु अक्षयताविचतुर्गुणस्थानमनुधाणां असंयतदेशसंयतोपचारमहावतमानुषीणां

मिथ्यात्वका उदय होनेपर मिथ्यादृष्टि हो जाते हैं । द्वितीयोपशम सम्यक्त्वमें विशेष कथन
है । उपशम भेगीपर आरोहण करनेके लिए साविश्य अप्रमत्तवेदक सम्यग्दृष्टि तीन फरणरूप
परिणामोंकी सामर्थ्यसे अनन्तानुबन्धी कपार्योका प्रसस्त उपशमके विना अप्रसस्त उपशमके
द्वारा नीचेके निपेकोको वरुर्पणके द्वारा ऊपरके निपेकोमें स्थापित करता है अथवा विंशो-
जन द्वारा अन्य प्रकृतिरूप परिणामाता है । इस तरह इनका क्षपण करके दर्शनमोहकी तीन
प्रकृतिर्योका अन्तरकरणके द्वारा अन्तर करके उपशम विधानके द्वारा उपशम करता है ।
तदनन्तर प्रथम समयमें द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी होकर उपशम भेगीपर चढ़ता है । और
उपशान्त कपाय तक जाकर वहाँ अन्तर्गृह्य तक ठहरकर कमसे ऊपरता हुआ अप्रमत्त
गुणस्थानको प्राप्त करके हजारों बार सातवेंसे छठेमें और छठेसे सातवेंमें आता-जाता है ।
अथवा नीचे उतरकर देशसंयमी या असंयमी हो जाता है । अथवा मरणकाल आनेपर
असंयतदेव हो जाता है अथवा मिथ प्रकृतिके उदयमें मिथगुणस्थानवर्ती हो जाता है । जिन
आचार्योंका मत है कि अनन्तानुबन्धीका उदय होनेपर द्वितीयोपशम सम्यक्त्वको विरा-
धना करता है उनके मतसे सासादन हो जाता है । अथवा मिथ्यात्वके उदयमें मिथ्यादृष्टि

स्यानंगलोऽं आहारमो देयवक्तुं । अयोगिकेवलमद्वारकरोऽं गुणस्थानातीतरण्य सिद्धपरमेष्ठिगलो-
ळमनाहारमेयवक्तुं :—

मि । सा । मि । अ । दे । प्र । अ । अ । अ । सू । उ । क्षी । स । अ । सि
२ । २ । १ । २ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । १ । २ । १ । १

अनंतरं गुणस्थानंगलोऽप्युपयोगमं पेक्ष्यं :—

दोषहं पंच य उच्येव दोषु मिस्सम्मि होति वामिस्सा ।

सत्तुवजोगा सत्तु दो चेव जिणे य सिद्धे य ॥७०५॥

५

द्वयोः पंच च पट् चेव द्वयोः मिथे भवति व्यामिश्राः । साधोपयोगाः सप्तषु द्वावेव जिनयोः
सिद्धे च ॥

गुणपर्ययवद्वस्तुग्रहणव्यापारमुपयोगमे बुद्धकं । ज्ञानमं वस्तु पुट्टितसुवस्तुमंते पेक्ष्यपट्टदुत्तु ।
स्वहेतुजनितोप्यत्यर्थः परिच्छेद्यः स्वतो यथा ।

तथा ज्ञानं स्वहेतुत्यर्थं परिच्छेद्यात्मकं स्वतः ॥ []

१०

‘नात्यालोको कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत्’ । [परी० मु०] ऐदितु अंतपुपयोगं ज्ञानोपयोग-
मे बुं दर्शनोपयोगमे बुं द्विविधमवकुमल्लि कुमसि कुभृत विभंग मतिभ्रुतावधिभनःपर्ययकेवलज्ञान-
मे बुं ज्ञानोपयोगमे बुं तेरनवक्तुं । चक्षुरवक्षुरवधिकेवलदर्शनमे बुं दर्शनोपयोगं नाल्कु तेरनवक्तुं ।
मिथ्यादृष्टिगुणस्थानवोऽं कुमसि कुभृतविभंगमे बुं मूर्ख ज्ञानोपयोगंगळं चक्षुरवक्षुर्दर्शनमे बुं वेरदं
दर्शनोपयोगंगळमितु अद्वुमुपयोगंगळप्युत्तु । सासादनगुणस्थानवोऽंमंते अद्वुमुपयोगंगळप्युत्तु । १५
निधगुणस्थानवोऽं मतिभ्रुतावधिवक्षुरवक्षुरवधिगळ बाव मिथोपयोगंगळप्युत्तु । असंयतसम्यग्दृष्टि-

सयोगे अपयोगे विद्धे च अनाहारः । तेन मिथ्यादृष्टि सासादनसंयतसंयोगेषु तौ द्वौ शेषनवस्वाहारः । अयोगि-
विद्धे वा अनाहारः ॥७०५॥ गुणस्थानेषु उपयोगमाह—

गुणपर्ययवद्वस्तु तदग्रहणव्यापार उपयोगः । ज्ञानं न वस्तुत्यर्थं तथा चीर्क—

स्वहेतुजनितोप्यत्यर्थः परिच्छेद्यः स्वतो यथा ।

२०

तथा ज्ञानं स्वहेतुत्यर्थं परिच्छेद्यात्मकं स्वतः ॥११॥

“नात्यालोको कारणं परिच्छेद्यत्वात् तमोवत् इति” । त साधोपयोगः ज्ञानदर्शनमेदादृष्टेया । तन
ज्ञानोपयोगः—कुमसि कुभृतविभंगमतिभ्रुतावधिभनःपर्ययकेवलज्ञानमेदादृष्टेया । दर्शनोपयोगः चक्षुरवक्षुरवधि-

शरीर और अंगोपांग नामकर्मसे उत्पन्न शरीर वचन और मनके योग्य नोकर्म वर्गणाओंके
ग्रहणको आधार कहते हैं । विग्रहगतिमें प्रवर और लोकपूरण समुद्घात सहित सयोगीमें, २५
अयोगी और सिद्ध अनाहारक है । अवः मिथ्यादृष्टि, सासादन, असंयत और सयोगकेवलीमें
प्रवर लोकपूरणवाले अनाहारक हैं । शेष नौ गुणस्थानोंमें आधार है । अयोगकेवली और सिद्ध
अनाहारक हैं ॥७०४॥

गुणस्थानोंमें उपयोग कहते हैं—

गुणपर्यायसे जो युक्त है वह वस्तु है । उसको ग्रहण करनेरूप व्यापारका नाम उपयोग ३०
है । ज्ञान वस्तुसे उत्पन्न नहीं होता । कहा है—जैसे अर्थ अपने कारणसे उत्पन्न होता है, आप
स्वतः ही ज्ञानका विषय होनेके योग्य होता है । उसी प्रकार ज्ञान अपने कारणसे उत्पन्न होता
है और स्वतः अर्थको ज्ञाननेरूप होता है ॥ और कहा है—अर्थ और प्रकाश ज्ञानके कारण नहीं

आलापाधिकारः ॥२२॥

अनंतरमालापाधिकारं पेठसुपक्रममुत्तमिष्टदेवतानमस्काररूपपरममंगलमनंगीकरि सुतं गुणस्थानदोळं मार्गणास्थानदोळं विंशतिभेदंगळ्ये प्राग्योजितंगळ्यालापत्रयमं पेठपेनेंदाचार्य प्रतिजेयं माडिवपं :—

गोदमथेरं पणमिय ओघादेसेसु बीसमेदार्ण ।

जोजणिकाणालावं बोळ्यामि जडाकर्म सुणुह ॥७०६॥

गौतमस्थविरं प्रणम्य ओघावेशेषु विंशतिभेदानां । योजितानामालापं वक्ष्यामि यथाक्रमं श्रुणुत ॥

विशिष्टा गौर्भूमिर्गौतमा अष्टमपुष्पी सा स्थविरा नित्या यस्य सिद्धपरमेष्ठिसमूहस्य स गौतमस्थविरः गौतमस्थविरः गौतमस्थविर एव गौतमस्थविरस्तं । अथवा गौतमो गौतमस्वामी स्थविरो यस्यासौ गौतमस्थविरः श्रीवीरवर्द्धमानस्वामी तं । अथवा विशिष्टा गौर्बाणी गौतम सर्वज्ञभारती तां वेत्ति अथोते वा गौतमः । स चासौ स्थविरश्च गौतमस्थविरः गौतमस्वामी तं प्रणम्येतिवर्त्यः । सिद्धपरमेष्ठिसमूहं श्रीवीरवर्द्धमानस्वामियुग्मं येषु गौतमगणधरस्वामियुग्मं नमस्कारं माडि गुणस्थानमार्गणास्थानदोळं मुनं योजितसत्पट्टं विंशतिप्रकारंगळ्यालापनं सामान्यवर्ष्यामिपर्व्यामनें च त्रिप्रकारंगळ्यापनं यथाक्रमं दिवं पेठपेनें केळिमेंदाचार्यं शिष्यं शिक्षि-
सिबिपं । अवेतें बोडे :—

नेमि धर्मसे नेमि पुत्र्य सर्वनरामरैः ।

बहिरन्तःत्रियोपेतं जितेष्टं तच्छिष्ये धमे ॥२२॥

अमालापाधिकारं स्वेष्टदेवतानमस्कारपूर्वकं वक्तुं प्रतिजानीते—

विशिष्टा गौर्भूमिः गौतमा—अष्टमपुष्पी सा स्थविरा नित्या यस्य स गौतमस्थविरः सिद्धसमूहः, गौतम-
स्थविर एव गौतमस्थविरः तं अथवा गौतमः गौतमस्वामी स्थविरो यस्यासौ गौतमस्थविरः श्रीवर्धमानस्वामी तं । अथवा विशिष्टा गौः बाणी यस्यासौ गौतमः गोदम एव गौतमः स चासौ स्थविरश्च गौतमस्थविरः तं प्रणम्य गुणस्थानमार्गणास्थानदोः प्राग् योजितानां विंशतिप्रकारणां आलापं यथाक्रमं वक्ष्यामि ॥७०६॥
सद्यथा—

अपने इष्टदेवको नमस्कारपूर्वक आलापाधिकारको कहनेकी प्रतिज्ञा करते हैं—विशिष्ट 'गौ' अर्थात् भूमि गोतमा अर्थात् आठवी पृथ्वी वह जिसकी स्थविर अर्थात् नित्य है वह गौतमस्थविर अर्थात् सिद्ध समूह । अथवा गौतम स्वामी जिसके गणधर हैं वे वर्धमान स्वामी, अथवा जिसकी गौ अर्थात् बाणी विशिष्ट है उन गौतमस्थविरको नमस्कार करके गुणस्थान और मार्गणास्थानोंमें पूर्वयोजित बीस प्रकारके आलापोंको यथाक्रम कहेंगा ॥७०६॥

१. म^० बाणी यस्यासौ गौतमः । गौतम एव गौतमः स चासौ ।

सामर्थ्यं पञ्चतमपञ्चतं चेदि तिष्ठिण आलावा ।

दुवियप्यमपञ्चतं लदो णिव्वत्तमं चेदि ॥७०९॥

सामान्यपर्याप्तमपर्याप्तं चेति त्रय एवालावाः । द्विविकल्पपर्याप्तं लक्ष्यनिवृत्तिश्चेति ॥

सामान्यमेवं पर्याप्तमेव दुमपर्याप्तमेवेति आलापगच्छ मूर्त्युवत्ति अपर्याप्तालापं लक्ष्य-
पर्याप्तं निवृत्त्यपर्याप्तमेवेति द्विविकल्पमकम् ।

दुविहं पि अपञ्चतं ओधे मिच्छेव होदि णियमेण ।

सासण अयदपमचे णिव्वत्ति अपुण्णमं होदि ॥७१०॥

द्विविधमप्यपर्याप्तं ओधे मिष्यादृष्टादेव भवति नियमेन । सासादनसंयतप्रमत्ते निवृत्त्य-
पर्याप्तं भवति ॥

द्विप्रकारमनुज्ज्वलपर्याप्तं ओघबोद्ध सामान्यबोद्ध मिष्यादृष्टियोज्येयकुरु नियमद्विहं ।

सासादनसम्पदवृष्टिगुणस्थानबोद्धमसंयतसम्पदवृष्टिगुणस्थानबोद्ध प्रमत्तसंयतगुणस्थान-
बोद्धमी मूर्धं गुणस्थानगच्छोद्ध नियमद्विहं निवृत्त्यपर्याप्तमेयकम् ।

जोगं पडि जोगिजिणे होदि दु णियमा अपुण्णमत्तं तु ।

अवसेसणवट्टाणे पञ्चत्तालावगो एकको ॥७११॥

योषं प्रति योगिजिने भवति एतत् नियमावपूर्वकत्वं तु । अवरोधं नवस्थाने पर्याप्तालापक
एकः ॥

योगमं कुवत्तु सयोगिकेयत्तिभट्टारकजिननोद्ध एतत् स्फुटमाणि अपूर्वकत्वमपर्याप्तकत्व-
मकम् । तु मत्ते अवरोधं नवगुणस्थानगच्छोद्ध पर्याप्तालापनो देयकम् ।

अनंतरं चतुर्हं मागं नास्थानगच्छोद्धालापमं पेज्जलुपकमिदि मोरतोद्ध गतिमागं भेयोद्ध
पेज्जवः ।—

ते आलावाः सामान्यः पर्याप्तः अपर्याप्तश्चेति त्रयो भवन्ति । तत्रावरोधालापः लक्ष्यपर्याप्तः
निवृत्त्यपर्याप्तश्चेति द्विविधो भवति ॥७०९॥

॥ द्विविधोऽयं अपर्याप्तालापः सामान्यमिष्यादृष्टादेव भवति नियमेन । सासादनसंयतप्रमत्तो न नियमेन
निवृत्त्यपर्याप्तालाप एव भवति ॥७१०॥

योगमाधिवैध सयोगिजिने नियमेन धनु आलोचकत्वं भवति । तु-दुनः अवरोधनवगुणस्थानेषु एकः
पर्याप्तालापः ॥७११॥ अथ चतुर्हं मागं नास्थानेषु द्वौ—

इसी अर्थको स्पष्ट करते हैं—

वे आलाप सामान्य, पर्याप्त, अपर्याप्त इस तरह तीन हैं । उनमेंसे अपर्याप्त आलापके
भेद दो हैं—लक्ष्यपर्याप्त और निवृत्त्यपर्याप्त ॥७०९॥

यह दोनों ही प्रकारका अपर्याप्त आलाप नियमसे सामान्य मिष्यादृष्टिमें ही होता
है । सासादन, असंयत और प्रमत्तमें नियमसे निवृत्त्यपर्याप्त आलाप ही होता है ॥७१०॥

सयोगी जिनेमें नियमसे योगको अपेक्षा ही अपर्याप्त आलाप होता है । शेर नो
गुणस्थानोंमें एक पर्याप्त आलाप ही होता है ॥७११॥

चौदह मागं नास्थानोंमें कहते हैं—

१. म धेदि । २. म धेदि ।

तेरिच्छिपलद्वियपञ्चचे एको अपुण्ण आलावो ।

मूलोपं मणुसतिये मणुसिणि अयदग्मि पञ्चचे ॥७१४॥

तिप्यंलक्ष्यपर्याप्तो एकोऽप्युपगतापः मूलोपो मनुष्यत्रये मानुष्यसंयते पर्याप्तः ॥

तिप्यंचलक्ष्यपर्याप्तोऽप्युपगतापमो देयवक्तुं । मनुष्यमतिथोऽप्यविनात्कुं गुणस्थानंग-

लोऽनु सामान्यमनुष्यपर्याप्तमनुष्ययोनिमतिमनुष्यमेवो मनुष्यत्रयद प्रत्येकं पविनात्कुं पविनात्कुं ५

गुणस्थानंगलोऽनु मुपेब्बाळापं मूलोपमेयवक्तुमावोडं योनिमत्यसंपतसम्यग्बुद्धिगुणस्थानबोळु पर्याप्ता-

ळापमेयवक्तुमेकं बोडे कारणं मुत्तं तिप्यंगतिपोऽनु पेज्जुदेयवक्तुं । मत्तोऽनु विशेषमुंढवावुडं बोडे

असंयतयोनिमतिरितिप्यंचेयदमसंयतयोनिमतिमानुषियं प्रथमोपशमवेदकआधिकसम्यग्बुद्धिगळुमो-

ळरप्पुवरि । भुज्यमानपर्याप्ताळापमेयवक्तुं । योनिमतिमनुष्यगळय्दु गुणस्थानंगळं पप्पुवरिदमुप-

शमथेप्यवतरणबोळमा द्वितीयोपशमसम्यक्त्वसंभवमिल्ल एके बोडयग्गे अंघ्यारोहणे घटिसव- १०

पुवरिडं ॥

मणुसिणि पमचविरदे आहारदुगं तु णत्थि णियमेण ।

अवगदवेदे मणुसिणि सण्णा भूदगदिमासेज्ज ॥७१५॥

मानुषि प्रमचविरते आहारद्वयं नास्ति तु नियमेन । अपगतवेदायां मानुष्यां संज्ञा

भूतगतिमाभित्य ॥

१५

तिर्यंगलक्ष्यपर्याप्तके एकः अपर्याप्तालाप एव । मनुष्यपदो सामान्यपर्याप्तयोनिमन्मनुष्येषु प्रत्येकं

चतुर्दशगुणस्थानेषु गुणस्थानवत् मूलोपः स्यात् तथापि योनिमदसंयते पर्याप्तालाप एव । कारणं प्रापकमेव ।

पुनरर्थं विधेयः—असंयततरङ्गया प्रथमोपशमकवेदकसम्यक्त्वद्वयं, असंयतमानुष्यां प्रथमोपशमवेदकआधिक-

सम्यक्त्वत्रयं च संभवति तथापि एको भुज्यमानपर्याप्तालाप एव । योनिमदोनां पञ्चगुणस्थानादुपरि गमना-

संभवात् द्वितीयोपशमसम्यक्त्वं नास्ति ॥७१४॥

२०

स्त्री और नपुंसकांमें उत्पन्न नहीं होता । तथा श्रेय मिश्र और वैज्ञ संयत गुणस्थानोंमें भी एक

पर्याप्त आलाप ही होता है ॥७१३॥

तिर्यंच लक्ष्यपर्याप्तकमें एक अपर्याप्त आलाप ही होता है । मनुष्यगतिमें सामान्य,

पर्याप्त और योनिमत् मनुष्योंमें-से प्रत्येकमें चौदह गुणस्थानोंमें गुणस्थानवत् जानना । फिर

भी योनिमत् मनुष्यके असंयत गुणस्थानमें एक पर्याप्त आलाप ही होता है । कारण पहले २५

कहा ही है । पुनः इतना विशेष और है कि असंयत गुणस्थानमें तिर्यंचीके प्रथमोपशम और

वेदक दो ही सम्यक्त्व होते हैं । और मानुषीके प्रथमोपशम, वेदक तथा आधिक तीन

सम्यक्त्व होते हैं । तथापि एक भुज्यमान पर्याप्त आलाप ही है । योनिमदो पंचम गुण स्थानसे

ऊपर नहीं जाती इसलिपि उसके द्वितीयोपशम सम्यक्त्व नहीं होता ॥७१४॥

१. म^० तालापमेयवक्तुमुपशमप्रेष्यवतरणबोळु द्वितीयोपशमसम्यक्त्वं योनिमतिवत्त्व^० गलेयपुवरिदमा ३०

द्वितीयोपशमसम्यक्त्वसंभवमिल्ल ।

मनुष्यलक्ष्यपर्याप्तकनोज्ञ अपूर्णालापमोदे यत्कं । लेश्येगजिबं माडलपट्ट भेदंगजिदं-
विनिर्गलप्य देवस्कं स्थानंगञ्ज समविकल्पंगलप्यु । बरवैदोदे :-

तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च ।

एतो य चोदसण्हं लेस्ता भवणादिवेवानं ॥

प्रयानां द्वयोर्द्वयोः पण्णा द्वयोश्च त्रयोदशानां इतश्चतुर्दशानां लेश्याः भवनाविवेवानां ॥ ५

भवनत्रयदेवस्कं सौधर्म्यज्ञानरूपजगं सानत्कुमारमाहंरूपजगं यद्वायहोत्तरलांतय-
गपिष्टगुरुमहागुरुपट्टरूपजगं शतारसहस्रारकल्पयजगं आनतप्राणतारणाञ्जुतकल्पनयप्रदे-
रूपकल्पातीतजगं अल्लितं मेलण अनुविज्ञानुत्तरचतुर्दशविमानसंभूतगंमितु सप्तस्थानंगळ देव-
स्कं लेश्येगळप्येदत्तपट्टरूपु ॥

तेऊ तेऊ तह तेऊ पम्मपम्मा य पम्ममुक्का य ।

मुक्का य परममुक्का लेस्ता भवणादिवेवानं ॥

तेजस्तेनस्ताथा तेजः पद्यं पद्यं च पद्यमुक्ते च । मुक्ता च परममुक्ता लेश्या भवनावि-
वेवानां ॥

मुपेज्ज सप्तस्थानंगळोळ यथासंख्यमाणि भवनत्रयादिविज्ञानंगलोळ तेजोलेश्येयजघन्यांशमुं
तेजोलेश्येयमध्यमांशमुं तेजोलेश्येय उत्कृष्टांशमुं पद्मलेश्येय जघन्यांशमेरुं पद्मलेश्येय मध्य-
मांशमुं पद्मलेश्येय उत्कृष्टांशमुं शुक्ललेश्येय जघन्यांशमुरेडुं शुक्ललेश्येय मध्यमांशमुं शुक्लले-
येयुत्कृष्टांशमुं भवनत्रयादिवेवस्कं लेश्येगळप्यु ॥

सक्कसुराणं ओघे मिच्छदुगे अविरदेय तिण्णेव ।

णवरि य भवणतिकप्पिरधीणं च य अविरदे पुण्णो ॥७१७॥

सर्वसुराणामोघे निम्मावुट्ठिये अविरते च त्रय एव । नवमस्ति भवनत्रयकल्पजीणां च
आविरते पुणः ॥ १०

तु-पुनः, मनुष्यलक्ष्यपर्याप्तै एकः सधर्मपर्याप्ताश्च एव । लेश्याभेदविनिर्गलदेवस्थानानि सतविश्वानि
भवन्ति तद्यथा—

तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च ।

एतो य चोदसण्हं लेस्ता भवणादिवेवानं ॥१॥

तेऊ तेऊ तेऊ पम्मा पम्मा य पम्ममुक्का य ।

मुक्का य परममुक्का भवणतिया पुण्णये अनुहा ॥२॥

भवनत्रय-नीधर्म्य-ज्ञानकुमारद्वय-ब्रह्मपट्ट-शतारद्वय-ज्ञानतादित्रयोदश-उपरितनचतुर्दशविमान-
ज्ञानांक्रमणः तेजोलेश्यांशमेरुमध्यमांश-तेज उत्कृष्टांश-पद्मलेश्यांश-पद्मलेश्यांश-पद्मलेश्यांश-शुक्ललेश्यांश-
शुक्ललेश्यांश-शुक्ललेश्यांश-अश्वि ॥७१६॥

मनुष्य लक्ष्यपर्याप्तकर्म एक लक्ष्यपर्याप्त आलाप ही होता है । लेश्याभेदसे देवोंके
साथ स्थान होते हैं । भवनत्रिक, सौधर्म्यगुल, सनत्कुमार गुल, वदा आदि छह स्वर्ग,
शतार गुल, आनतादि तेरह और ऊपरके चौदह विमानवालोंके क्रमसे तेजोलेश्याका जघन्य
अंश, तेजोलेश्याका मध्यम अंश, तेजोलेश्याका उत्कृष्ट अंश और पद्मलेश्याका जघन्य अंश,
पद्मलेश्याका मध्यम अंश, पद्मलेश्याका उत्कृष्ट अंश और शुक्लका जघन्य अंश, शुक्लका
मध्यम अंश तथा शुक्लका उत्कृष्ट अंश होता है ॥७१६॥

गुणस्थानंगळोळ पद्यगुणस्थानवर्तिप्रमत्तसंयतनोळआहारक आहारकमिथमं बाळापद्वयमं वेळुकोळ-
 त्वेडेकं बोडा गुणस्थानवोळ अद्यभवेबोदयमुळळरोळाहारवि संभविसवप्पदरिवं हृत्यपमाणं पसत्यु-
 दयमं बाहारकशरीरवोळ प्रशस्तप्रकृतिगुणव्यनियममुत्पुर्दारिवं । येदमागणंयोळनिवृत्तिकरण-
 सवेवभागिपर्यंतमो भत्तं गुणस्थानंगळपुवु । मेलण नात्कुमवेवभागिपर्यंतं कषापमागणंय
 कोधवो भत्तं मानवो भत्तं मायेयो भत्तं बावरलोमवो भत्तं मिम्यावृष्टिगुणस्थानमावियागिहं ५
 गुणस्थानंगळोळ सूक्ष्मलोभक्के सूक्ष्मसांपरायगुणस्थानवोळ ज्ञानमागणंय कुमतिज्ञानवेरडुं कुश्रुत-
 ज्ञानवेरडुं विभंगज्ञानवेरडुं मतिज्ञानवो भत्तं भुतज्ञानवो भत्तं अवधिज्ञानवो भत्तं मनःपर्ययज्ञानदेळं
 केवलज्ञानवेरडुं गुणस्थानंगळोळ । संयममागणंय असंयमव नात्कुं देशसंयमवो डुं सामायिकव
 नात्कुं छेवोपस्थापनव नात्कुं परिहारविशुद्धि संयमवेरडुं सूक्ष्मसांपरायसंयमवो डुं यथाख्यातसंयमव
 नात्कुं गुणस्थानंगळोळ दर्शनमागणंय चक्षुर्दर्शनव पन्नेरडुं गुणस्थानंगळोळमचक्षुर्दर्शनव पन्नेरडुं १०
 अवधिदर्शनवो भत्तं केवलदर्शनवेरडुं गुणस्थानंगळोळ लेझ्यामागणंय कृष्णनीलकपोतंगळनात्कुं
 नात्कुं गुणस्थानंगळोळ तेजःपदमंगळोळ गुणस्थानंगळोळ शुक्ललेझ्येय पविमूवं गुणस्थानंगळोळ
 भव्यमागणंयोळ भव्यन पविनात्कुमभव्यनवो डुं गुणस्थानंगळोळ सम्यक्त्वमागणंय मिम्यात्ववो डुं
 सासादननतन्नो डुं मिथन तन्नो डुं द्वितीयोपशमसम्यक्त्ववेरडुं प्रथमोपशमसम्यक्त्ववनात्कुं
 वेदकसम्यक्त्वव नात्कुं क्षायिकसम्यक्त्वव पन्नो डुं गुणस्थानंगळोळ संज्ञिमागणंयोळ संज्ञिप १५

द्रव्यपुरुषे भावस्त्रीद्रव्यपुरुषे च प्रमत्तसंयते आहारकतन्मिधाणापी न । 'हृत्यपमाणं पसत्युदयं' इत्याहारक-
 शरीरे प्रशस्तप्रकृतीनामेवोदयनियमात् । वेदानामनिवृत्तिकरणसवेदभाषान्तेषु श्लेषमानमायाबादरलोभानां
 अवेदचतुर्भागांतेषु सूक्ष्मलोभस्य सूक्ष्मसांपराये । ज्ञानमागणायां कुमतिकुश्रुतविभङ्गानां द्वयोः, मतिभुतावधीनां
 नवसु, मनःपर्ययस्य सप्तसु, केवलज्ञानस्य द्वयोः, असंयमस्य चतुर्षु, देशसंयमस्य एकस्मिन्, सामायिकछेवोप-
 स्थापनयोदयचतुर्षु, परिहारविशुद्धेर्द्वयोः, सूक्ष्मसांपरायस्य एकस्मिन्, यथाख्यातस्य चतुर्षु, चक्षुरवचक्षुर्दर्शनयोः २०
 द्वावसु, अवधिदर्शनस्य नवसु, केवलदर्शनस्य द्वयोः, कृष्णनीलकपोतानां चतुर्षु, तेजःपदयोः सप्तसु, शुक्लाया-
 स्त्रयोदशसु, भव्यमागणायां भव्यस्य चतुर्दशसु, अभव्यस्य एकस्मिन्, सम्यक्त्वमागणायां मिम्यात्वसासादन-
 मिधाणामेकैकस्मिन्, द्वितीयोपशमस्य अष्टसु, प्रथमोपशमवेदकयोश्चतुर्षु, क्षायिकस्य एकादशसु, संज्ञिनो-

स्त्री द्रव्यसे पुरुषके प्रमत्तसंयतमै आहारक-आहारक मिथ आळाप नही होते क्योंकि
 'हृत्यपमाणं पसत्युदयं' इस आगम प्रमाणके अनुसार आहारक शरीरमें प्रशस्त प्रकृतियोंके २५
 ही उदयका नियम है । वेद अनिवृत्तिकरणके सवेद भाग पर्यन्त होते हैं । क्रोध, मान, माया,
 बादर लोभ अनिवृत्तिकरणके वेदरहित चार भागपर्यन्त क्रमसे होते हैं । सूक्ष्मलोभ सूक्ष्म-
 साम्परायमें होता है । ज्ञानमागणमें कुमति, कुश्रुत और विभंगके दो गुणस्थान हैं । मतिभुत-
 अवधिके नौ गुणस्थान हैं । मनःपर्ययके सात गुणस्थान हैं । केवलज्ञानके दो गुणस्थान
 हैं । असंयतके चार गुणस्थान हैं, देशसंयतका एक गुणस्थान है । सामायिक छेवोपस्थापनाके ३०
 चार गुणस्थान हैं । परिहारविशुद्धिके दो, सूक्ष्मसाम्परायका एक, यथाख्यातके चार, चक्षु-
 दर्शन-अवचक्षुदर्शनके चारह, अवधिदर्शनके नौ, केवलदर्शनके दो, कृष्ण-नील-कपोत लेझ्याके
 चार, तेज और पद्यके सात, शुक्ललेझ्याके तेरह, भव्यमागणामें भव्यके चौदह, अभव्यका
 एक, सम्यक्त्वमागणामें मिम्यात्व सासादन मिथका एक-एक गुणस्थान है । द्वितीयोपशम-
 सम्यक्त्वके आठ, प्रथमोपशम और वेदकके चार, क्षायिक सम्यक्त्वके ग्यारह, संज्ञीके ३५

स्थानबोद्धे दिव्यकाय प्राणंगळेरडुं अयोगिकेवलिंगस्थानदायुष्प्रापयोडुं नात्कुं संज्ञेगळुं नात्कुं गतिगळुं धम्बुमिश्रियंगळुं । आह्वापंगळुं पर्याप्तयोगंगळुं नात्कुं । अपर्याप्तयोगंगळुं नात्कुं मूरवेदंगळुं नात्कुं कषायंगळुं पुंडु ज्ञानंगळुं एलु संघमंगळुं नात्कुं दर्शनंगळुं आहं लेह्यंगळुं यरडुं भयंगळुं आहं सम्पत्त्यंगळुं येरडुं संज्ञेगळुं यरडुमाहारंगळुं । पन्नरडुमुपयोगंगळुं एंशे समुच्चयं गुणस्थानंगळोळं मार्गनास्थानंगळोळं यथायोग्यंगळ्यामि प्रहृषितस्त्वद्गुणवत्ति संवृष्टिः—

गु १ प १ जो १ उ १ अ ७ १ प ६ प्राणंगळु १० । ७ । ९ । ७ । ८ ।
१४ । अ १ ६ । प ५ १ अ ५ १ प ४

६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । ४ । स २ । अ १ । संज्ञेगळुनात्कु ४ । गतिगळु नात्कु ४ । इन्द्रिय ५ । काय ६ । यो ११ । ४ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ८ । सं ७ । द ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । वा २ । उ १२ ॥

जीवसमासेषोऽनु विद्येयमं पेच्छयः—

ओषे आदेशे वा सण्णी पञ्जंतमा हवे ज्ञत्य ।

तस्य य उणवोसंता इमिपित्तिगुणिदा हवे ठाणा ॥७२७॥

ओषे आदेशे वा संज्ञिपर्यन्ता भवेयुष्यं तत्र चैकान्नविशस्यंता एकद्वित्रिगुणिता भवेयुः स्थानानि ॥

सामान्यबोद्धे विद्येयबोद्धे संज्ञिपर्यंतमात्र मूलजीवसमासंगळावेडोऽनु पेच्छस्त्वद्गुणवत्ति एकान्नविदातिअंतमात्र उत्तरजीवसमासस्थानविकल्पंगळुं एकद्वित्रिगुणितमाबोद्धे सर्वजीवसमास-
॥

स्थानविकल्पंगळुं पृथु । सा १ । त्र १ । स्या १ । ए १ । वि १ । सं १ । ए १ । वि १ । अ १ । सं १ ।

पुनः मिश्रकायापुषी, ज्योतिष्य आयुर्नामिका । संज्ञास्वतसः, स्वतसः स्वतसः, इन्द्रियानि पञ्च, कायाः षट्, योपाः पर्याप्ता एकादश, अर्याप्ताश्चत्वारः, वेदाः चत्वारः, कषायाश्चत्वारः, ज्ञानानि षड्, संघमाः सप्त, दर्शनानि चत्वारि, लेह्याः षट्, भयंगळुं, सम्पत्त्यंगळुं पट्, संज्ञिगुणं आहारगुणं उपयोगाद्वाच्य-एवं एवं समुच्चयं गुणस्थानेषु मार्गनास्थानेषु च यथायोग्यं प्रहृषयिष्याः ॥७२५—७२६॥ जीवसमासेषु विद्येयमाह—

सामान्ये विद्येये वा संज्ञिपर्यन्ता मूलजीवसमासा यत्र विकल्पन्ते तत्र एकाप्रविशस्यन्ता उत्तरजीव-
समासस्थानविकल्पा एकद्वित्रिगुणिताः संतः सर्वजीवसमासस्थानविकल्पा भवन्ति ।

अयोगिके एक आयुर्मात्र है । संज्ञा पार, गति पार, इन्द्रिय वीच, काय छट्, पर्याप्तयोग वारह, अपर्याप्त पार, वेद तीन, कषाय पार, ज्ञान जाठ, संघम सात, दर्शन पार, लेह्या छट्, भय-अभय, सम्पत्त्य छट्, संज्ञी-असंज्ञी, आहारक-अनाहारक, उपयोग वारह । ये सप्त गुणस्थानों और मार्गनास्थानोंमें यथायोग्य प्ररूपजोय है ॥७२५—७२६॥

जीवसमासोंमें विद्येय करते हैं—

गुणस्थानों वा मार्गनाओंमें जहाँ संज्ञापर्यन्त मूल जीवसमास कहे जायें वहाँ उन्नांत पर्यन्त उत्तर जीवसमास स्थानके विकल्पोंको एक सामान्य, दो पर्याप्त-अपर्याप्त और तीन

९।१२।१५।१८।२१।२४।२७।३०।३३।३६।३९।४२।४५।४८।५१।५४।

५७ ॥ गुणकार इति ५७० ॥ इन्तु गुणस्थानं गच्छेत् मातृगुणस्थानं गच्छेत् विप्रतिपत्तिं गच्छेत्
योजितस्य गुणमेव ते दोषः :-

वीरमुहकमलणिग्गयसुयलसुयग्गहणपपढणसमत्थं ।

णमियुण गोदममहं सिद्धांतालावमणुबोच्चं ॥७२८॥

योरमुदरुमलनिर्गन्तसकलभूतग्रहप्रतिपादनसमर्थम् । नशा गौतममहं सिद्धांताच्छास्त्रमु-
 यदयामि ॥

सूत्रपूचितंगळप्य विप्रतिविधंगळापनिरूपणे माहस्पदुबल्लि मोडळोळं गुणस्यानदिवं
येळस्पदुगुमरं ते दोहे पदिनाल्हुं गुणस्यानवस्तिगळं गुणस्यानातोतरगळुमोळह । पदिनाल्हुं ओप-
समासंगळनुळहमतोतजोयसमासरगळुमोळह पदपम्याप्तिगळोळ्हुइदिवं । पदपम्याप्तिपुक्तहं ।
पंचपंचपम्याप्तिपम्याप्तिपुक्तहं । चतुःचतुःपम्याप्तिपम्याप्तिपुक्तरगळुमोळह । अतोतपम्याप्तिरगळु-
मोळह । द्वाप्राण । सप्तप्राण । नवप्राण । नवप्राण । सप्तप्राण । अष्टप्राण । पदप्राण । सप्तप्राण ।
पंचप्राण । पदप्राण । चतुःप्राण । पनुप्राण । त्रिप्राण । चतुःप्राण । द्विप्राण । एकप्राण । युतर-
मतीतप्राणरगळुमोळह । घतुम्यधसंतामुक्तहं । शोणसंसरगळुमोळह । चतुर्गतिप्रोवंगळं
सिद्धपतिजोवंगळुमोळह ।

एकैद्विषादिपंचजातिपुतजोषंगजुमतीतजातिगजुमोजु । वृष्योकायिकादिपदकायिकंगजु-
मतीतकायिकंगजुमोजु । पंचदशयोगपुतदमपोगदपजुमोजु । श्रिवेदिगजुमपगतवेदिगजुमोजु ।

एकः १ । युतिः १५० । २ ४ ८ १० १२ १४ १६ १८ २० २२ २४ २६ २८ ३० ३२ ३४ ३६ ३८
गुणकारः २ युतिः ३८० । ३ ६ ९ १२ १५ १८ २१ २४ २७ ३० ३३ ३६ ३९ ४२ ४५ ४८ ५१ ५४ ५७
गुणकारः ३ । युतिः ५७० ॥७२७॥ हनोऽये गुणस्थानेषु मार्गस्थानेषु च ते गुणद्विवेत्तादिविपक्षितेदा २०
योग्यन्ते तद्यथा—

तत्र पुण्यस्वानेषु यथा शास्त्रकृतं पुण्यमानदीयाः तदतीत्याह सति । अनुसंधानमप्युक्तं तदतीत्याह सति । यद् यद् पश्य पश्यन्तु क्व । पश्यन्तु यदतीत्याह सति । ददप्यन्यथासाहचर्यमप्यद् यद् पश्यन्तु क्व पश्यन्तु क्व । तदतीत्याह सति । अनुसंधानः तदतीत्याह सति । अनुसंधानः तदतीत्याह सति ।

होता है। इन्हें दोसे गुना करनेपर सबका जोड़ २८० होता है और वॉनसे गुना करनेपर २५ सबका जोड़ ५७० होता है ॥७२॥

यहसि आगे गुणस्थानोंमें और जागणाओंमें गुणस्थान जीवसनास इत्यादि बांस भेड़ोंकी योजना करते हैं—

वर्धमान स्वामीके मुखरूपी कमलसे निकले सकलभूतको महण और प्रकट करनेमें समर्थ गौतम स्वामीको नमस्कार करके सिद्धान्तालापको करूंगा।

गुणस्थानोंमें जैसे चौरह गुणस्थानकी जोड़ है। गुणस्थानसे रहित सिद्ध है। चौरह जोड़समाप्तसे मुक्त जोड़ है उनसे रहित जोड़ है। छह-छह, पाँच-पाँच, चार-चार परांति और अपरांतिसे मुक्त जोड़ है और उनसे रहित जोड़ है। दस सात, नौ सात, आठ छह, सात पाँच, छह चार, चार तीन, चार दो और एक प्राक्के पारी जोड़ है और उनसे रहित जोड़ है। चार संज्ञावाले और उनसे रहित जोड़ है। चार गतिवाले और गतिरहित सिद्ध १५

के। सं४। अ। सा। छे। यया। द४ ले२ क। गु॥

भा६

सर्व्वेति सुदृमाणं कावोर्वं सब्वविगहे मुक्का ।

सध्वो मिस्सो देहो कवोदधण्णो हवे णियमा ॥

भ२। सं५। मिधरुचिरहित सं२। आ२। उ१०। विभंग ज्ञानसहित मिय्याहृष्टिगुण-
स्यानर्वातिगन्धगे गु१। जो१४ प६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०। ७। ९। ७। ८। ६। ५

७। ५। ६। ४। ४। ३। सं४। ग४। इं५। का६। यो१३। आहारकद्रव्यरहित। वे३।
क४। ज्ञा३। कु। कु। वि। सं१। अ। द२। ले६ भ२। सं१। मि। सं२। आ२।

भा६

उ५। पय्याप्तिमिय्याहृष्टिगन्धगे। गु१। मि। जो७। प६। ५। ४। प्रा१०। ९। ८।
७। ६। ४॥

सं४। ग४। इं५। का६। यो१०। वे३। क४। ज्ञा३। कु। कु। वि। सं१। अ।
द२। ले३६। भा६। भ२। सं१। मि। सं२। आ१। उ५॥ अपय्याप्तिमिय्याहृष्टिगन्धगे १०

गु१। मि। जि७। पय्या। ६। ५। ४। प्रा७। ७। ६। ५। ४। ३। सं१। ग४। इं५।
का६। यो३। ओमि वैमि। कार्म्म। वे३। क४। ज्ञा२। सं१। अ। द२। ले२ क।

भा६

गु। भ२। सं१। मि। सं२। आ२। उ४॥

सासादनगुणस्यानर्वातिगन्धगे गु१। सासा। जो२। य। अ। य६। ६। प्रा१०। ७।
सं४। ग४। इं१। का१। ज्ञ। यो१३। म४। वा४। ओ२। वै२। का१। वे३। क४। १५

ज्ञा३। कु। कु। वि। सं१। अ। द२। ले६ भ२। सं१। सा। सा। सं१। आ२।
६ भा

सं४ अ सा छे यया। द४ ले२ क गु।

भा६

भ२। सं५। मिश्रं न हि, सं२। आ२ उ१०। विभङ्गमनःपर्ययो न हि, सानान्यमिय्याहृष्टीनां ।
गु१। जो१४। प६। ६। ५। ५। ४। प्रा१०। ७। ९। ७। ८। ६। ५। ४। ३। सं४। ग४। इं५।

का६। यो१३ आहारकद्रव्यं न हि। वे३। क४। ज्ञा३ कु कु वि। सं१। अ। द२। ले६। भ२। सं१। २०

भा६

मि। सं३। आ३। उ५। तदपय्याप्तिनां गु१। जो७। प६। ५। ४। प्रा१०। ९। ८। ७। ६। ५। सं४।
ग४। इं५। का६। यो१०। वे३। क४। ज्ञा३ कु कु वि। सं१। अ। द२। ले६। भ२।

भा६

स१ मि। सं२। आ१। उ५। तदपय्याप्तिनां-गु१। जो७। प६। ५। ४। प्रा७। ७। ६। ५। ४। ३।
सं४। ग४। इं५। का६। यो३। ओमि। वैमि। का। वे३। क४। ज्ञा२। सं१। अ। द२।

ले२। क। गु। भ२। सं१। मि। सं२। आ२। उ४। सासादनानां-गु१ सासा। जो२। य। अ। २५

भा६
प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग४। इं५। का६। यो१३। म४। वा४। ओ२। वै२।

का१। वे३। क४। ज्ञा३ कु, कु, वि। सं१। अ। द२। ले६। भ२। सं१। सासा। सं१। आ२।
भा६

असंयतगुणस्थानवर्ति अषष्पत्ति संयतसम्पद्गुणगुणो गु १। अ सं। जो १। अ। प।
ज। प्रा ७। अ। सं ४। म ४। ई १। पं। का १। य। यो ३। ओ मि। वे मि। का।
। ननु। क ४। सा ३। म। य। अ। सं १। अ। य ३। य। अ। अ। से २। क। गु।
भा ६

। सं ३। उ। ये। सा। सं १। आ २। उ ६॥

देवसंयतगुणस्थानवर्तिगुणो गु १। देव। जो १। प। य ६। प। प्रा १०। सं ४। ५
। ति। म। ई १। पं। का १। य। यो ९। म ४। य ४। ओ का १। ये ३। क ४। सा ३।
यु। अ। सं १। देव। य ३। य। अ। अ। से ६। म १। सं ३। उ। ये। सा। सं १।
भा ३

१। उ ६॥

प्रमत्तगुणस्थानवर्तिप्रमत्तगुणो गु १। प्र। जो २। प। अ। य ६। प। प्रा १०। उ। सं ४।
। म। ई १। पं। का १। य। यो ११। म ४। य ४। ओ। का १। आ २। ये ३। क ४। १०
। म। यु। अ। म ४। सं ३। सा। छे। प। य ३। य। अ। अ। से ६। म १। सं ३।
ये। सा। सं १। आ १। उ ७॥ भा ३

अप्रमत्तगुणस्थानवर्ति अप्रमत्तगुणो गु १। अप्र जो १। प। य ६। प। प्रा १०। सं ३।
। मे। य। कारणाभावे कार्यस्याप्यभावः एतु सदसद्वैयर्थ्ये प्रमत्तगुणोत्पत्तौ व्युत्पत्तिरित्याहु-
पुनरिदमाहारसंज्ञे अप्रमत्तगुणो संभविष्यति। म १। म। ई १। पं। का १। प्र। यो ९। १५
। य ४। ओ का १। ये ३। क ४। सा ४। म। यु। अ। म। सं ३। सा। छे। प। य ३।
। अ। अ। से ६। म १। सं ३। उ। ये। सा। सं १। आ १। उ ७॥

भा ३

अपूर्वकरणगुणस्थानवर्तिगुणो गु १। अ। जो १। प ६। प्रा १०। सं ३। ग १।
अ। सं १। अ। य ३। य ३। अ। से ६। म १। उ ३। उ ३। ये ३। सं १। आ १। उ ६। उपपत्तिर्ना-
भा ६

। अ सं। जो १। अ। य ६। अ। प्रा ७। अ। सं ४। म ४। ई १। पं। का १। य। यो ३। ओ मि। वे मि। २०
। ये २। न पुं। क ४। सा ३। म यु। अ। सं १। अ। य ३। य ३। अ। से २। क गु। म १। उ ३। उ
भा ६

सा। सं १। आ २। उ ६। देवसंयतगुणो गु १। देव। जो १। प। य ६। प। प्रा १०। य। सं ४। ग २
म। ई १। पं। का १। य। यो ९। म ४। य ४। ओ का १। ये ३। क ४। सा ३। म यु। अ। सं १। देव।
३। य ३। अ। से ६। म १। उ ३। उ ३। ये ३। सं १। आ १। उ ६। प्रमत्तगुणो गु १। प्र। जो २
भा ६

अ। य ६। प। प्रा १०। उ। सं ४। म १। म। ई १। पं। का १। य। यो ११। म ४। य ४। ओ का १। २५
। य ३। क ४। सा ४। म यु। अ। सं ३। सा छे। प। य ३। य ३। अ। से ६। म १। उ ३। उ ३। ये
भा ३

। सं १। आ १। उ ७। अप्रमत्तगुणो गु १। अप्र जो १। प ६। प। प्रा १०। सं ३। म मे। य। कारणा-
भावे कार्यस्याप्यभावः एतु सदसद्वैयर्थ्ये प्रमत्तगुणोत्पत्तौ व्युत्पत्तिरित्याहु-
पुनरिदमाहारसंज्ञा नहि। म १। म। ई १। पं। का १। य। यो ९
। य ४। ओ का १। ये ३। क ४। सा ४। म यु। अ। सं ३। सा छे। प। य ३। य ३। अ। से ६।
भा ३

। म ३। उ ३। ये ३। सं १। आ १। उ ७। अपूर्वकरणगुणो गु १। अप्र जो १। प ६। प्रा १०। ३०
१२०

गुल्मसांपराजगुलस्थानवर्तिगुलमसांपराजगु १। गु१। जो१। प६। प्रा१०। सं१। प१।

हं१। का१। यो१। वे०। क०। सा४। सं१। गु१। व३। से६। से६। सं२। उ१।
भा१

शा१। सं१। जा१। उ७॥

उपशोतकपायगुलस्थानवर्तिउपशोतकपायगु १। गु१। उ७। जो१। प६। प्रा१०।
स०। ग१। म१। हं१। का१। यो१। वे०। क०। सा४। सं१। यपा। व३। से६।
भा१

भ१। सं२। उ१। शा१। सं१। जा१। उ७॥

शोतकपायगुलस्थानवर्तिशोतकपायगु १। शो१। जो१। प६। प्रा१०। स०।
ग१। म१। हं१। का१। यो१। वे०। क०। सा४। सं१। यपा। व३। से६। भ१।
भा१

सं१। शा१। सं१। जा१। उ७॥

सयोगिदेवतिगुलस्थानवर्ति सयोगिदेवतिभट्टारकगु १। जो२। प६। ६। प्रा४। २। १०।
स०। ग१। म१। हं१। का१। यो७। म२। व२। ओ२। का१। वे०। क०। सा१।
के। सं१। यपा। व३। के। से६। भ१। सं१। शा१। सं०। जा२। उ२॥
भा१

अयोगिदेवतिगुलस्थानवर्ति अयोगिदेवतिभट्टारकगु १। अयो१। जो१। प६। प्रा१।
आयुध्म। सं०। ग१। म१। हं१। प०। का१। व३। यो०। वे०। क०। सा१। के।
सं१। यपा। व३। के। से६। भ१॥ सं१। शा१। सं०। जा१। अनाहार। उ२॥ १५
भा०

अतोतगुलस्थानवर्तिअतोतगुलस्थानवर्तिगु० जो० प० प्रा० सं० ग१। तिष्ठति।

छे। ६१। से६। भ१। व२। उ७। सं१। जा१। उ७। गुलमसांपराजगु—गु१। गु१। जो१।
भा१

प६। प्रा१०। सं१। प१। य१। म१। हं१। का१। यो१। वे०। क१। सा४। सं१। गु१। व३।
से६। भ१। व२। उ७। सं१। जा१। उ७। उपशोतकपायगु—गु१। उ७। जो१। प६।
भा१

प्रा१०। स०। ग१। म१। हं१। का१। यो१। वे०। क०। सा४। सं१। यपा। व३। से६। २०
भा१

भ१। व२। उ७। सं१। जा१। उ७। शोतकपायगु—गु१। शो१। जो१। प६। प्रा१०।
सं०। ग१। म१। हं१। का१। यो१। वे०। क०। सा४। सं१। यपा। व३। से६। भ१।
भा१

स१। शा१। सं१। जा१। उ७। सयोगिदेवतिगु—गु१। जो२। प६। ६। प्रा४। २। सं०। ग१। म१।
हं१। ना१। यो७। म२। व२। ओ२। का१। वे०। क०। सा१। के। सं१। यपा। व३। के।
से६। भ०। स१। शा१। सं०। जा२। उ२। अयोगिदेवतिगु—गु१। अयो१। जो१। प६। प्रा१। २५
भा१

आयुध्म। सं०। ग१। म१। हं१। ना१। यो०। वे०। क०। सा१। के। सं१। यपा। व३। के।
से६। य०। स१। शा१। सं०। जा१। अनाहार। उ२। गुलस्थानादीतिष्ठपरमेष्ठिना—गु०। यो०।
भा०

सामान्यनारकपर्याप्तमिथ्यादृष्टिगन्धो गु १ मि। जी १। पर्या १६। प्रा १०। सं ४।
ग १। न। इ १। का १। यो ९। म ४। वा ४। वै। का १। वे १। प ०। क ४। ज्ञा ३।
कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले १। कु। भ २। सं १। मिथ्यावचि। सं १। आ १। उ ५॥
भा ३

सामान्यनारकापर्याप्तमिथ्यादृष्टिगन्धो गु १। मि। जी १। अ। प ६। अ। प्रा ७।
अ। सं ४। ग १। नरक। इ १। का १। यो २। वै मि। का। वे १। प ०। क ४। ज्ञा २। कु। ५
कु। सं १। अ। व २। ले २। कु। भ २। सं १। मिथ्यावचि। सं १। आ २। उ ४॥
भा ३ अ शु

सामान्यनारकसाक्षादनसम्यग्दृष्टिगन्धो गु १। सा। जी १। प। प ६। प्रा १०। सं ४।
ग १। न। इ १। का १। यो ९। म ४। व ४। वै का १। वे १। प ०। क ४। ज्ञा ३। कु। कु।
वि। सं १। अ। व २। ले १। कु। भ १। सं १। साक्षादनवचि। सं १। आ १। उ ५॥
भा ३

नारकसामान्यमिथ्ये गु १। जि १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। न। इ १। का १। १०
यो ९। वे १। प ०। क ४। ज्ञा ३। मिथ। सं १। अ। व ३। ले १। कु। भ १। सं १।
भा ३
मिथ। सं १। आ १। उ ६॥

नारकसामान्यसंपत्तौ गु १। जी २। प। अ। प ६। ६। प्रा १०। उ। सं ४। ग १।
न। इ १। का १। यो ११। म ४। व ४। वै २। का १। वै १। प ०। क ४। ज्ञा ३। म। भु।
अ। सं १। अ। व ३। ले ३। कु। क। भु। भ १। सं ३। उ। वे। क्षा। सं १। आ २। १५
भा ३ अ शु
उ ६॥

मि। सं १। आ २। उ ५। तत्पर्याप्तानां—गु १ मि। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। न। इ १।
का १। यो ९। म ४। वा ४। वै का १। वे १। प ०। क ४। ज्ञा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले १। कु।
भा ३

भ २। सं १। मिथ्यावचि। सं १। आ १। उ ५। तत्पर्याप्तानां गु १ मि। जी १। अ। प ६। अ। प्रा ७।
अ। सं ४। ग १। न। इ १। का १। यो २। वै मि। का। वे १। प ०। क ४। ज्ञा २। कु। कु। सं १। अ। २०
व २। ले २। कु। भ २। सं १। मिथ्यावचि। सं १। आ २। उ ४। साक्षादनानां गु १ सा। जी १। प
भा ३

प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। न। इ १। का १। यो ९। म ४। वा ४। वै का १। वे १। प ०। क ४। ज्ञा ३।
कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले १। कु। भ १। सं १। साक्षादनवचि। सं १। आ १। उ ५। मिथ्याणां—
भा ३

गु १ मिथ। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। न। इ १। का १। यो ९। वे १। प ०। क ४। ज्ञा ३।
मिथ्याणि सं १। अ। व २। ले १। कु। भ १। सं १। मिथ। सं १। आ १। उ ५। अर्चयन्तानां गु १ गु २
भा ३

जी २। प ५। प ६। प्रा १०। उ। सं ४। ग १। इ १। का १। यो ११। म ४।
वे १। प ०। क ४। ज्ञा ३। म। भु। अ। सं १। अ। व ३। ले ३। कु। क। भु। भ १। सं ३। उ। वे। क्षा। सं १। आ २। १५

धम्मो'य मिप्पावृट्टिगळ्णे । गु १ । जो २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । न ।
इ १ । का १ । यो १ । म ४ । वा ४ । वे २ । का १ । वे १ । प ० । क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि ।
सं १ । अ । व २ । ले ३ । कृ कृ पु । भ २ । सं १ । मि । सं १ । आ २ । उ ५ ॥

भा १ क

धम्मो'य नारकपय्यामिकमिप्पावृट्टिगळ्णे । गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ ।
न । इ १ । का १ । यो ९ । म ४ । वा ४ । वे २ । का १ । वे १ । प ० । क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि । ५
सं १ । अ । व २ । ले १ । भ २ । सं १ । मिप्पासवि । सं १ । आ १ । उ ५ ॥

भा १ क

धम्मो'य नारकापय्यामिकमिप्पावृट्टिगळ्णे । गु १ । जो १ । प ६ । अ प्रा ७ । अ । सं ४ । ग
१ । इ १ । का १ । यो २ । वे मि । का । वे १ । क वा ४ । ज्ञा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । ले
भा १ क

२ क पु । भ २ । सं १ । सं १ । आ २ । उ ४ । कु । कु । अ । अ ॥

धम्मो'य पय्यामसासावन्गे । गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इ १ । का १ । १०
यो ९ । वे १ । क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि । सं १ । व २ । ले १ कृ भ १ । सं १ । सं १ । आ
भा १ क

१ उ ५ ॥ कु । कु । वि । अ । अ ॥

धम्मो'य मिभ्रंगे । गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इ १ । का १ । यो
९ । वे १ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले १ कृ भ १ । सं १ । सं १ । आ १ । उ ५ ।

भा १ क

धम्मो'य असंयतने । गु १ । जो २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इ १ । का १ । १५

तन्मिप्पावृत्ता—गु १ । जो २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । न । इ १ । का १ । यो १ । म ४
वा ४ । वे २ । का १ । वे १ । प । क ४ । ज्ञा ३ । कु कु वि । सं १ । अ । व २ । ले ३ कृ कृ पु । भ २ । सं १
भा १ क

मि । सं १ । आ २ । उ ५ । तत्पर्याप्तानां—गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । न । इ १ ।
का १ । यो ९ । म ४ । वा ४ । वे २ । का १ । वे १ । प । क ४ । ज्ञा ३ । कु कु वि । सं १ । अ । व २ । ले १ कृ ।
भा १ क

भ २ । सं १ । मिप्पासवि । सं १ । आ १ । उ ५ । तत्पर्याप्तानां—गु १ । जो १ । प ६ । प्रा ७ । अ । २०
सं ४ । ग १ । न । इ १ । का १ । यो २ । वे मि । का । वे १ । क ४ । ज्ञा २ । कु कु । सं १ । अ । व २ ।
ले २ कृ पु । भ २ । सं १ । सं १ । आ २ । उ ४ । कु कु प । अ । शाखादनां—गु १ । जो १ । प ६ ।

भा १ क
प्रा १० । सं ४ । ग १ । इ १ । का १ । यो ९ । वे १ । क ४ । ज्ञा ३ । कु कु वि । सं १ । व २ ।
ले १ कृ । भ १ । सं १ । सं १ । आ १ । उ ५ । कु कु वि । अ । मिप्राणां—गु १ । जो १ । प ६ ।
भा १ क

प्रा १० । सं ४ । ग १ । इ १ । का १ । यो ९ । वे १ । क ४ । ज्ञा ३ । कु कु वि । सं १ । व २ । २५
ले १ कृ । भ १ । सं १ । सं १ । आ १ । उ ५ । असंयतानां—गु १ । जो २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ ।
भा १ क

सा।ये।सं२।आ२।उ८।मा।घ।बा।कु।कु।चा।ब।ब॥

तिर्य्यंक्षसामान्यप्रम्याप्रमिध्यावृष्टिगन्धे। गु१। जो१४। प६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०।
७। ९। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। सं४। ग१। इ५। का६। यो११। वे३। क४।
मा३। कु। कु। वि। सं१। बा। ब२। चा। बा। से६। भ२। सं१। मि। सं२। आ२।
उ५। कु। कु। वि। चा। ब॥

तिर्य्यंक्षसामान्यप्रम्याप्रमिध्यावृष्टिगन्धे। गु१। जो७। प६। ५। ४। प्रा१०। ९।
८। ७। ६। ४। सं४। ग१। ति। इ५। का६। यो९। वे३। क४। मा३। कु। कु। वि।
सं१। बा। ब२। से६। भ२। सं१। मि। सं२। आ१। प५॥

तिर्य्यंक्षसामान्यप्रम्याप्रमिध्यावृष्टिगन्धे। गु१। मि। जो७। बा। प६। ५। ४। बा।
प्रा७। ७। ६। ५। ४। ३। सं४। ग१। ति। इ५। का६। यो२। मि। का। वे३। १०
क४। सा२। कु। कु। सं१। बा। ब२। चा। बा। से२। क५। भ२। सं१। मि। सं२।
आ२। उ४। कु। कु। चा। ब॥

तिर्य्यंक्षसामान्यप्रम्याप्रमिध्यावृष्टिगन्धे। गु१। जो२। प६। ६। प्रा१०। ७॥ सं४। ग१।
ति। इ१। का१। यो११। वे३। क४। मा३। सं१। बा। ब२। से६। भ२। सं१।
सा। सं१। आ२। उ५। कु। कु। वि। चा। ब॥

तिर्य्यंक्षसामान्यप्रम्याप्रमिध्यावृष्टिगन्धे। गु१। जो१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। ति।
इ१। पं। का१। यो९। वे३। क४। मा३। सं१। बा। ब२। से६। भ२। सं१।

इ३। च। बा। वे२। क५। भ२। ल४। मि। सा। सा। वे३। आ२। उ८। म। घ। ब। कु। कु।
बा। ३। भगु
म। बा। त्रिध्यावृष्टि—गु१। जो१४। प६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०। ७। ७। ६। ५। ४। ४।
सं४। ग१। इ५। का६। यो११। वे३। क४। मा३। कु। कु। वि। सं१। बा। ब२। च। बा। २०
भा१
भ२। मि। सं२। आ२। उ५। कु। कु। वि। च। बा। त्रिध्यावृष्टि—गु१। जो७। प६। ५। ४। प्रा१०। ८।
७। ५। सं४। ग१। ति। इ५। का६। यो९। वे३। क४। मा३। कु। कु। वि। सं१। बा। ब२। से६। भ२।
भा१
ग१। मि। सं२। आ२। उ५। त्रिध्यावृष्टि—गु१। जो७। प६। ५। ४। प्रा१०। ७। ७। ६। ५। ४। ४।
सं४। ग१। ति। इ५। का६। यो९। वे३। क४। मा३। कु। कु। वि। सं१। बा। ब२। से६। भ२।
भा१
भो२। क५। भ२। ल४। मि। सं२। आ२। उ४। कु। कु। वि। च। बा। त्रिध्यावृष्टि—गु१। जो७। प६। ५। ४। प्रा१०। ७। ७। ६। ५। ४। ४।
भा१
प्रा१०। ७। ७। ६। ५। ४। ४। ३। सं४। ग१। ति। इ५। का६। यो९। वे३। क४। मा३। कु। कु। वि। सं१। बा। ब२। से६। भ२। सं१।

१। सा। सं१। आ२। उ५। कु। कु। वि। च। बा। त्रिध्यावृष्टि—गु१। १६५. १६५.

सामान्यतिथ्यं च देशसंयतंगे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । य १ । इ १ । का १ ।
यो ९ । खे ३ । क ४ । प्रा ३ । मा ५ । ज १ । सं १ । वे १ । व ३ । छे ६ । भ १ । सं २ । उ । यो ।
भा शुभ

सं १ । वा १ । उ । ६ । म । थ । व । च । व । व ॥

पंचेन्द्रियतिष्ठचमो । मु५ । जो ४ ॥ पंचेन्द्रियसंशयसंतिषर्प्यासाऽप्यर्प्याम ॥ य ६ । ६ ।
 प्रा १० । ७ । ९ । ७ । सं ४ । म १ । ति । ह १ । पं । का १ । प्र । यो ११ । वे ३ । क ४ । मा ६ । ५
 म । भू । ज । कु । कु । वि । सं २ । अ २ । ह ३ । ख । ख । अ । से ६ । भ २ । सं ६ । उ ।

वे। क्षा। मि। सा। मि। सं२। आ२। उ१। म। श्रु। अ। कु। कु। वि। च। अ। अ॥

पंचद्विपत्तिम्येवपम्यात्तकम् । गु ५ । जो २ । प ६ । ५ । प्रा १० । ९ । सं ४ । ग १ ।
इ १ । का १ । पो ९ । खे ३ । क ४ । सा ६ । सं २ । अ । दे । ब । ३ । च । अ । अ । ले ६ । भ २ ।

सं ६। उ। षे। क्षा। मि। सा। मि। सं २। वा १। उ ९॥

पंचमिदित्थंवाप्यमिकमै। गु३। मि। सा। अ। जीव२। ५६। ५। अ। प्रा७। १०।
 ७। अ। सं४। ग१। ई१। का१। यो२। मि। का। वे३। क४। सा५। म। धु। अ।
 कु। कु। सं१। अ। व३। वा। अ। अ। ले२। कु। धु। भ२। सं४। वे। क्षा। मि। सा।
 भा३

सं२। आ२। उ८। म। मू। व। कु। कु। च। ब। य। य॥

पंचेन्द्रियतिथ्याग्निध्याहृष्टिगर्भा । गु १ । जो ४ । संतिपर्व्यान्नापर्व्यान् । अचंतिपर्व्यान्नापर्व्यान् ।
 प ६ । ६ । ५ । ५ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । सं ४ । य १ । इ १ । का १ । यो ११ । वे ३ । क ४ । १५
 सा ३ । सं १ । अ । ब २ । छे ६ । भ २ । सं १ । मि । सं । २ । वा २ । उ ५ ॥

म १, स २ वे शा, सं १, जा २, उ ६ देससंयानां—जु १, जो १, प ६, प्रा १०, सं ४, य १, ई १,
वा १, धी १, वे १, क ४, जा ३ म शुभ, सं १ दे, द ३, छे ६, थ १, स २ उ वे, सं १, आ १,
भा ३ शुभ

उ ६ म धु ब ख ब ख, पञ्चोन्द्रियविरम्भा-गु ५, जी ४ संयसंज्ञिपयसापयसाः, प ६ ६ ५ ५, प्रा १० ७
१ ७, लं ४, ग १ ति, ई १ पं, का १ न, यो १ १, वे ३, क ४, आ ६ म धु ब कु कु वि, सं २ ब दे, २०
द १ ब ब ख, ले ६, म २, स ६, उ वे धा मि सा मि, लं २, वा २, उ ९ म धु ब कु कु वि ब ब ख,
प्रा ६

तत्पर्याप्तानां—गु ५, जी २, प ६५, प्रा १०९, सं ४, य १, ई १, वा १, यो ९, बे १, क ४, शा ९,
 स २ अ ३, द ३ च ७ अ, छे ६। म २, स ६ उ बे धा मि सा मि, सं २, या १, उ ९ म धृ व कु कु
 भा ९

विषय, तदवर्णना—युग्मिका, जी २, प ५५ अ, प्रा ७७ अ, सं ४, प १, इं १, का १,
यो २ मि का, वे ३, क ४, ना ५ म धृ अ कृ कृ, सं १ आ, द ३ अ अ अ । से २ क धृ, अ २, स ४ २५
आ ३ अ

वेदा मि सा, सं २, आ २, उ ८ म धु ल कु कु च व ल, मिष्यादृष्टा—गु १,
१० उ १ उ, सं ४, ग १, ई १, का १, यो ११, वे ३, क ४, आ ३, सं १,
१५, आ २, सं १

मो१।वे३।क४।शा३।मत्पारिमिधत्रयं।सं१।अ।द२।च।अ।से६।भ१।त१
मिध।सं१।आ१।उ५॥

मत्पारिमिधत्रयं चतुरश्रयुः॥ पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। गु१।जी२।प६।अ६।प्रा१०।
उ।सं४।ग१।इ१।का१।मो११।वे३।क४।शा३।सम्पत्तामत्रयं।सं१।अ।
द२।से६।भ१।सं३।सं१।आ२।उ६।मा।धु।अ।च।अ।अ॥

पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। गु१।जी१।प६।प्रा१०।सं४।ग१।इ१।
का१।मो१।क४।शा३।सं१।अ।द२।से६।भ१।सं३।उ।वे।शा।सं१।
आ१।उ६॥

पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। गु१।जी१।अ।प६।अ।प्रा७।अ।
सं४।ग१।ति।इ१।पं।का१।मो२।मिध।का।वे१।पुं।क४।शा३।
मा।धु।अ।सं१।अ।द२।च।अ।अ।से२।क४।भ१।सं२।दा।वे।सं१।
आ१।क॥
आ२।उ६।मा।धु।अ।च।अ।अ॥

पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। गु१।जी१।प६।प्रा१०।सं४।ग१।ति।इ१।
पं।का१।मो१।वे३।क४।शा३।सं१।देवार्थमा।द२।से६।भ१।सं२।
आ३

उ।वे।सं१।आ१।उ६।मा।धु।अ।च।अ।अ॥

पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। पंचेन्द्रिग्यं तातेयते।

वे३।क४।शा३।मत्पारिमिधत्रयं।सं१।अ।द२।च।अ।से६।भ१।ग१।मिध।सं१।आ१।उ५।
आ६

मत्पारिमिधत्रयं चतुरश्रयुः। मत्पारिमिधत्रयं—गु१।जी२।प६।अ६।प्रा१०।अ।प्रा७।सं४।
ग१।इ१।का१।मो११।वे३।क४।शा३।मत्पारिमिधत्रयं।सं१।अ।द२।च।अ।से६।भ१।ग१।मिध।सं१।
आ१।उ५॥

सं१।आ२।उ६।मा।धु।अ।च।अ।अ॥ उपपत्तिना—गु१।जी१।प६।प्रा१०।सं४।ग१।
इ१।का१।मो१।वे३।क४।शा३।सं१।अ।द२।से६।भ१।ग१।मिध।सं१।
आ१।उ५॥

आ१।उ५॥ उपपत्तिना—गु१।जी१।अ।प६।अ।प्रा७।अ।सं४।ग१।ति।इ१।पं।का१।
मो२।मिध।का।वे१।पुं।क४।शा३।मो१।मिध।का।वे१।पुं।क४।शा३।मो१।मिध।का।वे१।पुं।
आ१।क॥

सं१।आ२।उ६।मा।धु।अ।च।अ।अ॥ देवार्थमा।द२।से६।भ१।ग१।मिध।सं१।आ१।उ५॥
पं१।का१।मो१।वे३।क४।शा३।सं१।देवार्थमा।द२।से६।भ१।ग१।मिध।सं१।
आ१।उ५॥

मा।धु।अ।च।अ।अ॥ पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। पंचेन्द्रिग्यं तातेयते। पंचेन्द्रिग्यं तातेयते।

पंचेन्द्रियतिव्यंग्योनिमतिपर्याप्तमिष्यादृष्टिगन्धे । गु १ । मि । जी २ । संज्ञिपर्याप्तासंज्ञि-
पर्याप्ता । प ६ ॥ संज्ञिपर्याप्तिगन्ध ५ ॥ असंज्ञिपर्याप्तिगन्ध प्रा १० । संज्ञि । ९ । असंज्ञि । सं ४ ।
ग १ । ति । इ १ । पं । का १ । प्र । यो ९ । वे १ । स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । अ । व २ ।
ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ ॥

पंचेन्द्रियतिव्यंग्योनिमत्यपर्याप्तमिष्यादृष्टिगन्धे । गु १ । मि । जी २ । संज्ञिपर्याप्तासंज्ञि-
पर्याप्ता । प ६ । संज्ञिपर्याप्तिगन्ध ५ । असंज्ञिपर्याप्तिगन्ध प्रा ७ । संज्ञि । ७ । असंज्ञि । सं ४ ॥
ग १ । इ १ । पं । का १ । प्र । यो २ । मिथ । का । वे १ । स्त्री । क ४ । ज्ञा २ । कु । कु । सं १ ।
अ । व २ । अ । अ । ले २ क शु भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ४ । कु । कु । च । अ ॥
भा ३ अशुभ

पंचेन्द्रियतिव्यंग्योनिमतितासावनग । गु १ । सा । जी २ । सं । प । अ । प ६ । प । प्रा १० ।
७ । सं ४ । ग १ । ति । इ १ । पं । का १ । प्र । यो ११ । वे १ । स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ ।
अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । सा । सं १ । आ २ । उ ५ ॥

पंचेन्द्रियतिव्यंग्योनिमतितासावनपर्याप्तकं । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ ।
इ १ । का १ । यो ९ । वे १ । स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ ।
सं १ । आ १ । उ ५ ॥

पंचेन्द्रियतिव्यंग्योनिमत्यपर्याप्तासावनगे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा ७ । सं ४ । ग १ ।
इ १ । का । यो २ । मिथ । का । वे १ । स्त्री । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । व २ । ले २ क शु भ १ ।
सं १ । सं १ । आ २ । उ ४ । कु । कु । च । अ ॥
भा ३ अशुभ

मिष्यास्वं, सं २, आ २, उ ५ कु कु वि च अ, तत्पर्याप्तानां—गु १ मि, जी २ संज्ञिपर्याप्ता, प ६ संज्ञि
५ असंज्ञि, प्रा १० सं, ९ असंज्ञि, सं ४, ग १ वि, इ १ पं, का १ प्र, यो ९, वे १ स्त्री, क ४, ज्ञा ३ कु
कु वि, सं १ अ, व २, ले ६, भ २, सं १ मि, सं २, आ १, उ ५, तत्पर्याप्तानां—गु १ मि, जी ३ संज्ञि-
संज्ञिपर्याप्ता, प ६ संज्ञिपर्याप्ता, ५ असंज्ञिपर्याप्ता, प्रा ७ सं, ७ असंज्ञि, सं ४, ग १ वि, इ १ पं, का १
प्र, यो २ मिथ, का, वे १ स्त्री, क ४, ज्ञा २ कु कु, सं १ अ, व २ च अ, ले २ क शु भ २, सं १ मि,
भा ३ अशुभ

सं २, आ २, उ ४, कु कु च अ, सासावनानां—गु १ सा, जी २ सं प अ, प ६ ६, प्रा १०, ७, सं ४,
ग १ वि, इ १ पं, का १ प्र, यो ११, वे १ स्त्री, क ४, ज्ञा ३, सं १ अ, व २, ले ६, भ १, सं १ अ,
सं १, आ २, उ ५, तत्पर्याप्तानां—गु १, जी १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, इ १, का, १, यो ९, वे १
स्त्री, क ४, ज्ञा ३, सं १ अ, व २, ले ६ भ १, सं १, आ १, उ ५, तत्पर्याप्तानां—गु १, जी १ ।

प ६ । प्रा ७, सं ४, ग १, इ १, का १, यो २ मि का, वे १ स्त्री, क ४, ज्ञा २, सं १ अ, व २,
१२२

कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्वप्रदीपिका

का १। यो ११। वे ३। क ४। जा ८। सं ७। द ४। से ६ भ २। सं ६। सं १।
वा २। उ २२॥

सामान्यमनुष्यापर्याप्तकर्मो। गु ५। मि। सा। अ। प्र। स। जो १। प ६। अ। प्रा ७।
अ। सं ४। ग १। ई १। का १। यो ३। ओकारिमिथ आहारकमिथ काम्मणि। वे ३। क ४।
सा ६। म भू। अ। के। कु। कु। सं ४। अ। सा। छे। यथाख्यात। द ४। से क गु भ २। ५
सं ४। मि। सा। वे। दा। सं १। वा २। उ १०॥ कु। कु। स। धु। अ। के। च।
अ। अ। के॥

सामान्यमनुष्यमिष्यावृष्टिगन्धो। गु १। जो २। प ६। द। प्रा १०। उ। सं ४। ग १।
ई १। का १। यो ११। म ४। व ४। ओ २। का १। वे ३। क ४। सा ३। सं १। अ। व २।
वा ७। से ६ भ २। सं १। मि। सं १। वा २। उ ५॥ १०

सामान्यमनुष्यपर्याप्तमिष्यावृष्टिगन्धो। गु १। जो १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। म।
ई १। पं। का १। प्र। यो ९। वे ३। क ४। जा ३। सं १। अ। व २। से ६ भ २। सं १।
मि। सं १। वा १। उ ५॥

सामान्यमनुष्यापर्याप्तमिष्यावृष्टिगन्धो। गु १। जो १। प ६। अ प्रा ७। अ सं ४। ग १।
म। ई। पं। का १। प्र। यो २। ओ मि का १। वे ३। क ४। सा २। सं १। व २ १५
से २। क। गु। भ २। सं १। मि। सं १। वा २। उ ४॥
भा ३। अघुम

ग १, ई १, का १, यो १०, वे ३, क ४, जा ८, सं ७, द ४, से ६, म २, अ ६, सं १, वा २, उ १२,
भा ३

तदपर्याप्तानां—गु ५, मि सा अ प्र स, जो १, प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, ग १, ई १, का १, यो ३, ओमि
आमि का, वे ३, क ४, सा ६ म भू अ के कु कु, सं ४ अ सा छे यथाख्यात, द ४, से २ क गु, भ २,
भा ३

स ४ मि सा वे दा, स १ वा २, उ १० कु कु म धु अ के च अ अ के, तन्मिष्यादृष्टा—गु १, जो २, प ६ २०
५, प्रा १० उ, सं ४, ग १, ई १, का १, यो ११ म ४ वा ४ जो २ का १, वे ३, क ४, सा ३, सं १ अ,
द २ व अ, से ६, म २, अ १ मि, सं १, वा २, उ ५, तदपर्याप्तानां—गु १, जो १, प ६, प्रा १०,

सं ४, ग १ म, ई १ पं, का १ व, यो ९, वे ३, क ४, जा ३, सं १ अ, व २, से ६, भ २, सं १ मि,
भा ३

सं १, वा १, उ ५, तदपर्याप्तानां—गु १ जो १, प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, ग १ म, ई १ पं, का १ व,
यो २ ओमि का, वे ३, क ४, जा २, सं १, द २, से २ क गु, भ २, स १ मि, सं १, वा २, उ ४। २५

ग १। ई १। का १। यो ९। वे ०। क ३। मा। मा। लो। झा ४। सं २। छा। छे। द ३।
ले ६। भ १। स २। उ। धा।। सं १। सं १। आ १। उ ७॥
भा १

सामान्यमनुष्यचतुर्व्यंभानिबृत्तिगे। गु १। जो १। प ६। प्रा १०। मं १। परिप्लु।
ग १। इ १। का १। यो ९। वे ०। क ३। माया। लो। झा ४। सं २। द ३। ले ६। भ १।
भा १
सं २। स १। आ १। उ ७॥

सामान्यमनुष्यचतुर्व्यंभानिबृत्तिगे। गु १। जो १। प ६। प्रा १०। सं १। ग १। ई १।
का १। यो ९। वे ०। क १। सोभ। झा ४। सं २। द ३। ले ६। भ १। सं २। ग १।
भा १
भा १। उ ७॥

सामान्यमनुष्यसुखसंपरायणे गु १। गु। जो १। प ६। प्रा १०। मं १। परिप्लु। ग १।
ई १। का १। यो ९। वे ०। क १। लो। झा ४। मं १। गु। द ३। ले ६। भ १। सं २। १०
भा १
उ। धा। सं १। आ १। उ ७॥

सामान्यमनुष्योपशान्तक्यार्थगे। गु १। उ। जो १। प ६। प्रा १०। सं ०। ग १।
ई १। का १। यो ९। वे ०। क ०। झा ४। सं १। यथाक्यात। द ३। ले ६। भ १। मं २।
भा १
उ। धा। सं १। आ १। उ ७॥

सामान्यमनुष्यशीवक्यार्थगे। गु १। जो १। प ६। प्रा १०। सं ०। ग १। ई १। १५
का १। यो ९। वे ०। क ०। झा ४। मं १। यथाक्यात। द ३। ले ६। भ १। सं १। धा।
भा १
सं १। आ १। उ ७॥

गु १। जो १। प ६। प्रा १०। सं १। परिप्लु। ग १। ई १। का १। यो ९। वे ०। क ३। मा। मा।
लो। झा ४। सं २। छा। छे। द ३। ले ६। भ १। स २। उ। धा।। सं १। आ १। उ ७। चतुर्व्यंभाने—
भा १

गु १। जो १। प ६। प्रा १०। सं १। परिप्लु। क १। ई १। का १। यो ९। वे ०। क ३। मा। मा। झा ४। २०
सं २। द ३। ले ६। भ १। स २। सं १। आ १। उ ७। चतुर्व्यंभाने—गु १। जो १। प ६।
भा १

प्रा १०। सं १। ग १। इ १। का १। यो ९। वे ०। क १। लो। झा ४। सं २। द ३। ले ६। भ १।
भा १

ग २। सं १। आ १। उ ७। चतुर्व्यंभाने—गु १। गु। जो १। प ६। प्रा १०। सं १। परिप्लु। क १।
ई १। का १। यो ९। वे ०। क १। लो। झा ४। मं १। गु। द ३। ले ६। भ १। स २। उ। धा।। सं १।
भा १

भा १। उ ७। चतुर्व्यंभाने—गु १। उ। जो १। प ६। प्रा १०। सं ०। क १। इ १। ग १। यो ९। २५
वे ०। क ०। झा ४। सं १। यथाक्यात। द ३। ले ६। भ १। स २। उ। धा।। सं १। आ १। उ ७।
भा १

शेषक्याते गु १। जो १। प ६। प्रा १०। सं ०। ग १। ई १। ग १। यो ९। वे ०। क ०। झा ४।

मनःपर्यवसानोपयोगं। स्त्रीवेदगच्छप्य सखिलष्टोऽनु संभवितवपुर्वारिर्बं। अपर्याप्तमानुषि-
यमे। गु२। मि। सा। सयोप। जी१। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ०। संज्ञारहितः।
ग१। हं१। का१। यो२। मि। का। ०। अयोगर्हं। वे१। स्त्री। ०। अवेदं। क४। ०।
अकपायं। शा३। कु। कु। के। सं२। अ। यथाख्यातं। ह३। अ। ख। के। से२। क। गु
भा४ अ३ गु१
भ२। सं३। मि। सा। सा। सं। १। ०। संक्षिप्तन्युयं। आ२। उ६। कु। कु। के। ५
। अ। के॥

मानुषिमिध्यावृष्टिगन्धो। गु१। जी२। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग१। हं१। का
१। यो११। वे२। आ२। न्युयं। वे१। स्त्री। क४। शा३। कु। कु। वि। सं१। आ। व
२। ख। अ। ले६। भ२। सं१। मि। सं१। आ२। उ५। कु। कु। वि। ख। अ॥

६

पर्याप्तमानुषिमिध्यावृष्टिर्ग—गु१। मि। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। हं१। १०
का१। यो९। वे१। स्त्री। क४। शा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ले६। भ२।
सं१। मि। सं१। आ१। उ५॥

अपर्याप्तमानुषिमिध्यावृष्टिगे—गु१। जी१। प६। प्रा७। अ। सं४। ग१। हं१।
का१। यो२। मि। का। वे१। स्त्री। क४। शा२। सं१। अ। व२। ले२। क। गु। भ२।
भा३ अगुभ
सं१। मि। सं१। आ२। उ५॥

१५

मानुषिसातवन्धो—गु१। सा। जी२। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग१। हं१।
का१। यो११। वे१। स्त्री। क४। शा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ले६। भ१।
६

१। न्युयं। ख। आ२। उ११। मनःपर्यवः स्त्रीवेदिषु नहि संक्षिप्तपरिणामित्वात्। तदपर्याप्तानां—गु३ मि
सा सयोपः। जी१। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। न्युयं। ख। ग१। हं१। का१। यो२ मि का न्युयं। ख।
वे१। स्त्री। न्युयं। ख। क४। न्युयं। ख। शा३। कु। कु। के। सं२। अ। य। ह३। ख। अ। के। से२। क। गु
भा४ अगु ३ गु१
भ२। सं३ मि सा धा। सं१। न्युयं। ख। आ२। उ६। कु। कु। के। ख। अ। के। मानुषिमिध्यावृष्टा—गु१।
जी२। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग१। हं१। का१। यो११। वे१। स्त्री। क४। शा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ख। अ। के। से१। भ२। सं१। मि। सं१। आ२। उ५
६

२०

कु। कु। वि। ख। अ। तत्पर्याप्तानां—गु१। मि। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। हं१। का१। यो२।
वे१। स्त्री। क४। शा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ख। अ। के। से१। भ२। सं१। मि। सं१। आ२। उ५
६

२५

तदपर्याप्तानां—गु१। मि। जी१। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग१। हं१। का१। यो२। मि। का। वे
१। स्त्री। क४। आ२। सं१। अ। व२। से२। क। गु। य२। सं१। मि। सं१। आ२। उ५। काना-
३ अगुभ

दनां—गु१। सा। जी२। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग१। हं१। का१। यो११। वे१। स्त्री।
१२१

स्त्रीपुंनपुंसकवेदोदयगणित्वं । आहारद्विकं मनःपर्ययज्ञानं परिहारविमुक्तिः संयममुत्तमम् ।

सं २ । सा छे । ब ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । उ । वे । क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

भा ३

मानुष्यप्रमत्तसंयतगो । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ । आहारसंज्ञे शून्यं । ग १ ।

हं १ । का १ । यो ९ । वे १ । स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं २ । ब ३ । ले ६ । भ १ । स ३ । सं १ ।

भा ३

आ १ । उ ६ ॥

५

मानुष्यपूर्वकरणागो । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ । ग १ । हं १ । का १ ।

यो ९ । वे १ । स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं २ । सा छे । ब ३ । ज । अ । अ । ले ६ । भ १ । सं २ ।

भा १

उ । क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

मानुष्यप्रथमभागानिवृत्तिगो । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं २ । मैयु । प ।

ग १ । हं १ । का १ । यो ९ । वे १ । स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं २ । सा । छे । ब ३ । ले ६ । भ १ ।

भा १

१०

सं २ । उ । क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

मानुष्यद्वितीयानिवृत्तिगो । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ । ग १ । हं १ । का १ ।

यो ९ । वे ० । क ४ । ज्ञा ३ । सं २ । ब ३ । ले ६ । भ १ । सं २ । उ । क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

भा १

यो ९ । वे १ स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ वे । द ३ । ले ६ । भ १ । स ३ । सं १ । आ १ । उ ६ ।

भा ३ अथ

प्रमत्तस्य—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । हं १ । का १ । यो ९ । वे १ स्त्री । क ४ ।

१५

ज्ञा ३ । स्त्रीपुंसकोदये आहारकद्विभनः पर्ययपरिहारविमुक्तयो नहि सं २ सा छे । द ३ । ले ६ । भ १ । स ३

३

उ वे क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ । अग्रमत्तस्य—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ । आहारसंज्ञा नहि । ग १ । हं

१ । का १ । यो ९ । वे १ स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं २ । ब ३ । ले ६ । भ १ । स ३ । सं १ । आ १ । उ ६ । अपूर्व-

भा ३

करणानां—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ । ग १ । हं १ । का १ । यो ९ । वे १ स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं २

सा छे । द ३ । अ । अ । ले ६ । भ १ । स २ उ क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ । अनिवृत्तेः प्रथमभागे—गु १ । जी १ ।

२०

भा १

प ६ । प्रा १० । सं २ मैयु । ग १ । हं १ । का १ । यो ९ । वे १ स्त्री । क ४ । ज्ञा ३ । सं २ सा छे । द ३ । ले ६ ।

भा १

भ १ । स २ उ क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ । द्वितीयभागे—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ परिपहः ग १ ।

हं १ । का १ । यो ९ । वे ० । क ४ । ज्ञा ३ । सं २ । द ३ । ले ६ । भ १ । स २ उ क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ ।

भा १

मानुषिक्षेणकयारंभे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ० । म १ । इं १ । का १ ।
यो ९ । वे ० । क ० । जा ३ । सं १ । यया । व ३ । ले ६ । भ १ । सं १ । क्षा । सं १ ।
भा १

आ १ । उ ६ ।

मानुषित्तयोगकेवलिये । गु १ । जी २ । प ६ । प्रा ४ । २ । अ । सं ० । ग १ । इं १ ।
का १ । यो ७ । म २ । य २ । जी २ । का १ । वे ० । क ० । जा १ । के । सं १ । यया । व १ । ५
के ले ६ । भ १ । सं १ । क्षा । सं ० । आ २ । उ २ । के । के ॥

भा १

मानुषिययोगकेवलिजिनगे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १ । आयुष्य । सं ० । ग १ । इं ।
० । का १ । यो ० । वे ० । क ० । जा १ । सं १ । व १ । ले ६ । भ १ । सं १ । क्षा । सं ० ।
भा ०

आ १ । अनाहार । उ २ । के ॥

मनुष्यलब्धपर्व्यामकग' । गु १ । मि । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १०
१ । इं १ । का १ । यो २ । मि । का । वे १ । पंढ । क ४ । जा २ । कु । कु । सं १ । असंयम ।
व २ । अ । अ । ले २ क । गु । भ २ । सं १ । मि । सं १ । आ २ । उ ४ ॥

भा ३ अगुभ

इंतु मनुष्यगति समाम्नाहु ॥

देवगतिपोळ देवकल्लगे पेल्लपहुवलि । गु ४ । जी २ । प ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ ।
वे । इं १ । का १ । यो ११ । म ४ । व ४ । वे २ । का १ । वे २ । स्त्री । पुं ० । क ४ । जा ६ । १५
म भु अ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व ३ । अ । अ । अ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ । आ २ ।
भा ६

उ ९ । म । भु । अ । कु । कु । वि । अ । अ । अ ॥

सं १ । आ १ । उ ६ । क्षेणकयारस्य—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ० । ग १ । इं १ । का १ । यो
९ । वे ० । क ० । जा ३ । सं १ । य । व ३ । ले ६ । भ १ । सं १ । यया । सं १ । आ १ । उ ६ । संयोगस्य—
भा १

गु १ । जी २ । प ६ । प्रा ४ । २ । सं ० । म १ । इं १ । का १ । यो ७ । म २ । व २ । जी २ । का १ । २०
वे ० । क ० । जा १ । के । सं १ । य । व ३ । के । ले ६ । भ १ । सं १ । क्षा । सं १ । आ २ । उ २ । के । के ।
भा १

अयोगस्य—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १ । आयु- । सं ० । ग १ । इं १ । का १ । यो ० । वे ० । क ० ।
जा १ । के । सं १ । व १ । ले ६ । भ १ । सं १ । क्षा । सं ० । आ १ । अनाहार । उ २ । के । के । मनुष्यलब्ध-
भा ०

पर्यायाना—गु १ । मि । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो २ । मि । का ।
वे १ । पं । क ४ । जा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । अ । अ । ले २ क । गु । भ २ । सं १ । मि । सं १ । २५
भा ३ अगुभ

आ २ । उ ४ । देवगती—गु ४ । जी २ । प ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इं १ । पं । का १ । न ।
यो ११ । म ४ । व ४ । का १ । वे २ । स्त्री । पुं । क ४ । जा ६ । म भु अ कु कु वि । सं १ । अ । व ३

देवसामान्यसासादनंये । गु १ । सा । जी २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ ।
 इं १ । का १ । यो १ । वे २ । क ४ । सा ३ । कु । कु । बि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ ।
 भा ६
 सं १ । सा । सं १ । आ २ । उ ५ ॥

देवसामान्यसासादनपम्यामिकर्णे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ ।
 का १ । यो १ । वे २ । क ४ । सा ३ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । सा । सं १ । ५
 भा ३ पु
 आ १ । उ ५ ॥

देवसामान्यसासादनपम्यामिकर्णे । गु १ । जी १ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ ।
 इं १ । का १ । यो २ । मि । का । वे २ । क ४ । सा २ । सं १ । व २ । ले २ क । पु । भ १ ।
 भा ६
 सं १ । सा । सं १ । आ २ । अ ४ ॥

देवसामान्यसाम्यमिम्याहृष्टिगन्धे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ । १०
 का १ । यो १ । वे २ । क ४ । सा ३ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । मिथ । सं १ ।
 भा ३
 आ १ । उ ५ ॥

देवसामान्यसंदतग्ये । गु १ । जी २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इं १ ।
 का १ । यो १ । वे २ । क ४ । सा ३ । सा । अ । सं । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं ३ ।
 भा ३
 सं १ । आ २ । उ ६ ॥

१५

का । वे २ । क ४ । सा २ । सं १ अ । व २ । ले २ क पु । भ २ । सं १ मि । सं १ । आ २ । उ ४
 भा ६

कु कु व अ । गापीद्वानां—गु १ सा । जी २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो
 १ । वे २ । क ४ । सा ३ कु कु बि । सं १ अ । व २ ले ६ । भ १ । सं १ सा । सं १ । आ २ । उ ५ ।
 भा ६

वृष्यपान्दानां—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो १ । वे २ । क ४ । सा
 ३ । सं १ अ । व २ ले ६ । भ १ । सं १ सा । सं १ । आ २ । उ ५ । वृष्यपान्दानां गु १ जी १ । प ६ । प्रा १० ।
 भा ३ पु

प ६ अ । प्रा ७ अ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो २ मि का । वे २ । क ४ । सा २ । सं १ । व २ ।
 ले २ क पु । न । उ । सा । सं १ । आ २ । उ ४ । सम्यमिम्यापुधां—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० ।
 भा ६

सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो १ । वे २ । क ४ । सा ३ । सं १ अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १
 भा ३

मिथ । सं १ । आ १ । उ ५ । अर्धवतानां—गु १ । जी २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इं १ ।
 का १ । यो १ । वे २ । क ४ । सा ३ म थु अ । सं १ अ । व २ ले ६ । भ १ । सं १ । आ २ । २५
 भा ३

भयनप्रयपम्यामिद्विगच्छो । गु १ । मि । जो २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ ।
इ १ । का १ । यो ११ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले ६ भ २ । सं १ । मि । सं १ ।
भा ४

आ २ । उ ५ ॥

भयनप्रयपम्यामिद्विगच्छो । गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इ १ ।
का १ । यो ९ । वे २ । का ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले ६ भ २ । सं १ । मि । सं १ । ५
भा १

या १ । उ ५ ॥

भयनप्रयपम्यामिद्विगच्छो । गु १ । जो १ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ ।
इ १ । का १ । यो २ । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । व २ । ले २ । क गु भ २ । सं १ । मि । सं १ ।
भा ३ भ शु

आ २ । उ ४ ॥

भयनप्रयपम्यामिद्विगच्छो । गु १ । सा । जो २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इ १ । १०
का १ । यो ११ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । अ । व २ । ले ६ भ १ । सं १ । सा । सं १ ।
भा ४

आ २ । उ ५ ॥

भयनप्रयपम्यामिद्विगच्छो । गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इ १ ।
का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले ६ भ १ । सं १ । सा । सं १ ।
भा १

१
आ २ । उ ५ ॥

भयनप्रयपम्यामिद्विगच्छो । गु १ । जो १ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ सं ४ । ग १ ।
इ १ । का १ । यो २ । वे २ । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । व २ । ले २ क गु भ १ । सं १ । सा ।
भा ३ भ शु

सं १ । आ २ । उ ४ ॥

१५

मिथ्यादुष्टा—गु १ मि, जो २, प ६ ६, प्रा १० ७, सं ४, ग १, इ १, का १, यो ११, वे २, क ४,
ज्ञा ३, सं १, व २, ले ६, भ २, स १ मि, सं १, आ २, उ ५, तत्पर्याप्तानां—गु १ जो १, प ६, प्रा १०, २०
भा ४

सं ४, ग १, इ १ का १, यो ९, वे २, क ४, ज्ञा ३, सं १, व २ ले ६, भ २, स १ मि, सं १, आ १, उ ५,
१

तदपर्याप्तानां—गु १, जो १, प ६ ७, प्रा १० अ, सं ४, ग १, इ १, का १, यो २ मि का, वे २, क ४,
ज्ञा २, सं १, व २, ले २ क गु भ २, स १ मि, सं १, आ २, उ ४, तत्पर्याप्तानां—गु १ सा, जो २,
भा ३ भ शु

प ६ ६, प्रा १० ७, सं ४, ग १, इ १, का १, यो ११, वे २, क ४, ज्ञा ३, सं १ अ, व २, ले ६ भ १,
भा ४

स १ सा, सं १, आ २, उ ५, तत्पर्याप्तानां—गु १, जो १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, इ १, का १, यो १, वे २, क ४, ज्ञा ३, सं १, व २, ले ६, भ १, स १ सा, सं १, आ १, उ ५, तदपर्याप्तानां—गु १, २५
भा १

जो १, प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, ग १, इ १, का १, यो २, वे २, क ४, ज्ञा २, सं १, व २, स व,
१२४

सौधर्मद्वयमिभ्याद्विष्टपम्यात्तकम्गे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ ।
इ १ । का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले १ । भ २ । सं १ । मि । सं १ ।
भा १

आ १ । उ ५ ॥

सौधर्मद्वयमिभ्याद्विष्टपम्यात्तकम्गे । गु १ । जी १ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ ।
ग १ । इ १ । का १ । यो २ । वे २ । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । व २ । ले २ । भ २ । सं १ । मि ।
भा १

सं १ । आ २ । उ ४ ॥

सौधर्मद्वयसासादनगे । गु १ । जी २ । प ६ । इ । प्रा १० । उ । सं ४ । ग १ । इ १ ।
का १ । यो ११ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ ॥ सं १ । व २ । ले ३ । भ १ । सं १ । सा । सं १ ।
भा १

आ २ । उ ५ ॥

सौधर्मद्वयमपसितासादनगे । गु १ सा । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इ १ । १०
का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले १ । भ १ । सं १ । सं १ । आ १ । उ ५ ॥
भा १

सौधर्मद्वयसासादनापम्यात्तकम्गे । गु १ । जी १ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ ।
इ १ । का १ । यो २ । मि । का । वे २ । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । व २ । ले २ क शु भ १ ।
भा १

सं १ । सा । सं १ । आ २ । उ ४ ॥

सौधर्मद्वयसम्यमिभ्याद्विष्टपम्यात्तकम्गे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इ १ । १५
का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले १ । भ १ । सं १ । मि । सं १ ।
भा १

आ १ । उ ५ ॥

जी २, प ६, प्रा १०, उ, सं ४, ग १, इ १, का १, यो ११, वे २, क ४, ज्ञा ३, सं १, व २, ले ३,
भा १

भ २, उ १ मि, सं १, आ २, उ ५, तत्पर्याप्तानां—गु १, जी १, प ६, प्रा १०, उ ४, प १, इ १,
का १, यो ९, वे २, क ४, ज्ञा ३, सं १, व २, ले १, भ २, उ १ मि, सं १, आ १, उ १, तत्पर्याप्तानां— २०
भा १

गु १, जी १, प ६, प्रा ७, अ, सं ४, ग १, इ १, का १, यो २, वे २, क ४, ज्ञा २, सं १, व २, ले २,
भा १

भ २, उ १ मि, सं १, आ २, उ ४, छायादानां—गु १, जी २, प ६, प्रा १०, उ, सं ४, ग १, इ १,
का १, यो ११, वे २, क ४, ज्ञा ३, सं १, व २, ले ३, भ १, उ १ सा,
भा १

गु १ सा, जी १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, इ १, का १, यो ९, वे २

भ १, उ १, सं १, आ १, उ ५, तत्पर्याप्तानां—गु १, जी १, प ६, अ,
यो २ मि का, वे २, क ४, ज्ञा २, सं १, व २, ले २ क शु, भ

सम्यमिभ्याद्विष्टा—गु १, जी १, प ६, प्रा १०, सं

सानत्कुमारमाहेन्द्रदेवकर्मणो । गु ४ । जी २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ ।
 १ । का १ । यो ११ । ये १ । पुंस्त्रोवेविगळ्णे सौषम्मद्वयोऽंते उत्पत्तिपण्युर्वरिदे । क ४ । मा ६ ।
 १ । व ३ । ले ४ ते प क १ गु १ भ २ । सं ६ । उ । वे । क्षा । मि । सा । मि । सं १ ।
 भा २ । ते प
 २ । उ ९ ॥

सानत्कुमारद्वयदेवप्यप्रिमो । गु ४ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । ५
 १ । ये १ । क ४ । मा ६ । सं १ । व ३ । ले २ । भ २ । सं ६ । सं १ । आ १ । उ ९ ॥
 २

सानत्कुमारद्वयदेवाप्यप्रिकर्मो । गु ३ । मि । सा । अ । जी १ । य । प ६ । अ प्रा ७ ।
 सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । य । यो २ । वे ० मिश्र १ । का १ । वे १ । पुं ० । क ४ ।
 ५ । कु । कु । म । भु । अ । सं १ । अ । व ३ । च । अ । अ । ले २ क गु । भ २ । सं ५ ।
 २
 । सा । उ । ये । क्षा । सं १ । आ २ । उ ८ ॥ १०

संप्रति मिथ्यादृष्टिप्रभृति यावत्संयतसम्यग्दृष्टि तावत्तुगुणस्यानंगळो सौषम्मं पुदेवमंगं
 त्यमश्नुं । ई प्रकारविबं मेलेयुं संतम्मलेइयानुसारविबं वक्तव्यमश्नुं । अनुविशानुत्तरविमानंगळ
 गृहदृष्टिगळो साम्यवत्त्वप्रमाणापं कसंभ्यमश्नुमस्ति विद्रोपमुंटापुवे बोडे उपशमसम्यक्त्वमं विदु
 णिकालबोडु वेवकशाधिकसम्यक्त्वद्वयमे वक्तव्यमश्नुं । इतु देवगति समाप्तमावुतु ॥

सिद्धगतिमोडु सिद्धगो'तंते वक्तव्यमश्नुं । विद्रोपमुंटापुवे बोडे अस्ति सिद्धगतिस्तत्र केवल- १५
 केवलसंज्ञानवायिकसम्यक्त्वमनाहारमुपयोगद्वयमुंटा दोषाढायमिस्त एक'बोडे सिद्धगळो एक-
 णविजातिनामकर्मोदयाभायमण्युर्वरिदे । इतु गतिमाग्यंथेसमाग्यंथे समाप्तमावुतु ।

सानत्कुमारमाहेन्द्रदेवाना-गु ४, जी २, प ६ ६, प्रा १० ७, सं ४, ग १, इं १, का १, यो ११,
 पुं स्त्रोवेविगळ्णे सौषम्मद्वय एवोत्पत्तेः, क ४, मा ६, सं १, व ३, ले ४ ते प क गु, भ २, व १ उ वे
 भा २ ते प
 मि सा मि, सं १, आ २, उ ९, उत्पत्तिगतानां-गु ४, जी १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, इं १, का १, १०
 १, वे १, का ४, मा ६, सं १, व ३, ले २, भ २, व १, सं १, आ १, उ ९ ।
 २

उत्पत्तिगतानां-गु ३ मि सा अ, जी १ अ, प ६ अ, प्रा १० ७ अ, सं ४, ग १ इं, इं १ पं, का १ व,
 २ वे मि का, वे १ पु, क ४, मा ५ कु कु म भु अ, सं १ अ, व ३ अ अ अ, ले २ क गु, भ २, व ५
 २
 धा उ वे धा, सं १, आ २, उ ८, शमिथ्यादृष्ट्याद्वयं वान्तानां सौषम्यं पुदेवमंगं एवमूर्त्तिर स्याद-
 यानुसारेण योग्यं, अनुविशानुत्तरविमानं यानामवंगताद्वय एव तथाप्यं विदेवः, यदाप्यपने वेवकशाधिक- १५
 वत्त्वद्वयमे, सिद्धगती विज्ञानां यथाकामं वक्तव्यं, अस्ति सिद्धगतिस्तत्र केवलज्ञानसंज्ञानवायिकसम्यक्ता-
 हापेक्षेनोदयेभ्यः दोषात्ततो नास्ति सिद्धाग्येरेविद्याविनामोदयाभावाद्, इति भावंथा दया ।

बादरेकेंद्रियापर्व्याप्तकर्गो । गु १ । मि । जो १ । ख । प ४ । ख । प्रा ३ । ए । का । आ ।
४ । ग १ । ति । इ १ । का ५ । यो २ । मि । का । वे १ । प ० । क ४ । ज्ञा २ । सं १ ।
१ व १ । ख घ से २ क गु भ २ । सं १ । मि । सं १ । असंति । आ २ । उ ३ ॥

भा ३ ख

इतु बादरपर्व्यामिनामकर्मोदयसहितये आलापप्रथं पेळस्पट्टदुवपर्व्यामिनामकर्मोदयसहित
बादरेकेंद्रियापर्व्याप्तकर्गो पेळस्पट्टयस्ति बादरेकेंद्रियापर्व्याप्तायापवंतायापमयकुं ॥

५

मूधमैत्रियंगलो । गु १ । मि । जो २ । प । ख घ ४ । ४ । प्रा ४ । ३ । स ४ । ग १ । इ १ ।
१ का ५ । यो ३ । ओ २ । का १ । वे १ । पं । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । ख । व १ । ख घ ।
२ क गु एके बोडे :—
भा ३ ख

सन्वेति मुद्रमाणं काओदा सन्वविगहे मुक्का ।

सन्वो मिस्रो देहो कवोदयणो हवे नियमा ॥

१०

एवं नियममुंष्ट्युदरिद । भ २ । सं १ । मि । सं १ । असंति । आ २ । उ ३ ॥

मूधमैत्रियपर्व्याप्तकर्गो । गु १ । जो १ । प ४ । प्रा ४ । सं ४ । ग १ । इ १ । का ५ ।
१ । ओ का । वे १ । प ९ । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । ख । व १ । ख घ । से ३ क भ २ ।
भा ३

१ । मि । सं १ । असंति । आ २ । उ ३ ॥

का ५, यो १ जो, वे १ पं, क ४, ज्ञा २ कु कु, सं १ ख, व १ ख घ, से ३, भ २, स १ मि, सं १ १५
३ ख

संज्ञी, आ १, उ ३, उदयप्राप्तानां—गु १ मि, जो १ ख, प ४ ख, प्रा ३ एका आ, सं ४, ग १ ति, इ १
का ५, यो २ मि का, वे १ पं, क ४, ज्ञा २, सं १ ख, व १ ख घ, से २ क गु, भ २, स १ मि, स १
भा ३ ख

संज्ञी, आ २, उ ३, एवं बादरप्राप्तानामोदयानामेकेन्द्रियाणामुक्तं, अप्राप्तानामोदयानां तत्त्वध्वपप्राप्तानां
उदयप्राप्तवधोग्यं,

मूधमाणां—गु १ मि, जो २ प ख, प ४ ४, प्रा ४ ३, सं ४, ग १ ति, इ १ ए, का ५, यो ३ ओ २ २०
का १, वे १ पं, क ४, ज्ञा २, सं १ ख, व १ ख घ, से २ क गु

भा ३ ख—कुतः ?

सन्वेति मुद्रमाणं काओदा सन्वविगहे मुक्का ।

सन्वो मिस्रो देहो कवोदयणो हवे नियमा ॥१॥

सर्वेषां मूधमाणां कापोता सर्वविग्रहे मुक्का ।

सर्वो मिथो देहः कपोतवर्णो यवेनियमात् ॥१॥

२५

भ २, ग १ मि, सं १ असंति, आ २, उ ३, उदयप्राप्तानां—गु १, जो १, प ४, प्रा ४, सं ४, ग १, इ १,
का ५, यो १ जो, वे १ पं, क ४, ज्ञा २, सं १ ख, व १ ख घ, से १ क, भ २, सं १ मि, सं १ असंति,
भा ३ ख

त्रौद्रियपर्याप्तिकर्णे । गु १ । जी १ । प्रो १ । प ५ । प्रा ७ । सं ४ । ग १ । ति । इं १ ।
प्रो । का १ । प्र । यो २ । ओ । वा । वे १ । पं । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । अ ६ । अच ।
ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं १ । अ । आ १ । उ ३ ॥
भा ३

त्रौद्रियपर्याप्तिकर्णे । गु १ । जी १ । प ५ । अ प्रा ५ । अ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ ।
यो २ । मि । का । वे १ । पं । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । अ ६ । अच । ले २ क गु । भ २ । सं १ । ५
भा ३ अशु
मि । सं १ । अ । आ २ । उ ३ ॥

त्रौद्रियलघ्वपर्याप्तिकर्णेयुमो प्रकारविदमो देवाद्यापमस्कृं ॥ चतुर्दिगंगणे । गु १ । मि ।
जी २ । प । अ ५ । ५ । प्रा ८ । ६ । सं ४ । ग १ । ति । इं १ । चतुर्दिग । का १ । प्र । यो ४ ।
ओ २ । वा १ । का १ । वे १ । पं । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । अ । अ ६ । च अ । ले ६ । भ २ ।
सं १ । मि । सं १ । अ । आ २ । उ ३ ॥
भा ३

१०

चतुर्दिगपर्याप्तिकर्णे । गु । मि । जी १ । च । प ५ । प्रा ८ । च ४ । वा १ । का १ ।
उ १ । आ १ । सं ४ । ग १ । इं १ । च । का १ । प्र । यो २ । औदारिक का १ । वा १ । वे १ । पं ।
क ४ । ज्ञा २ । सं १ । अ । अ ६ । च । अ । ले ६ । अशु । भ २ । सं १ । मि । सं १ । अ । सं ।
भा ३ । अशु
आ १ । उ ४ ॥

चतुर्दिगपर्याप्तिकर्णे । गु १ । जी १ । प ५ । अ । प्रा ६ । च ४ । का १ । आ १ ।
सं ४ । ग १ । इं १ । च । का १ । यो २ । मि । का । वे १ । पं । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । अ ।
२ । च । अ । ले २ क गु । भ २ । सं १ । मि । सं १ । अ । सं । आ २ । उ ४ ॥
भा ३ अशु
इंनु आद्यापप्रयं वेळत्पट्टु ॥

१५

स १ मि, सं १ अ, आ २, उ ३ । तदपर्याप्तानां—गु १ मि, जी १ प्रो १, प ५, प्रा ७, सं ४, ग १ ति,
इं १ प्रो, का १ प्र, यो २ ओ १ वा १, वे १ पं, क ४, ज्ञा २, सं १ अ, द १ अ च, ले ६, भ २, सं १
भा ३

मि, सं १ अ, आ १, उ ३ । तदपर्याप्तानां—गु १, जी १, प ५ अ, प्रा ५ अ, सं ४, ग १, इं १, का १, २०
यो २ मि का, वे १ पं, क ४, ज्ञा २, सं १ अ, द १ अ च, ले २ क गु, भ २, सं १ मि, सं १, आ २,
भा ३ अशु

उ ३ । तदलघ्वपर्याप्तानां तदपर्याप्तवत्, चतुर्दिगार्थां—गु १ मि, जी २ प अ, प ५ ५, प्रा ८, ६, सं ४,
ग १, इं १ चतुरि, का १ प्र, यो ४ ओ २ वा १ का, वे १ पं, क ४, ज्ञा २, सं १ अ, द २ अ च, ले ६,
भा ३

भ २, सं १ मि, सं १ अ, आ २, उ ४ । तदपर्याप्तानां—गु १ मि, जी १ च प, प ५, प्रा ८ च ४ वा १
का १ ओ १ आ १, सं ४, ग १ ति, इं १ प्र, का १ प्र, यो २ ओ १ वा १, वे १ पं, क ४, ज्ञा २, सं १
अ, द २ अ च, ले ६, भ २, सं १ मि, सं १ अ, आ १, उ ४ । तदपर्याप्तानां—गु १, जी १ अ, प ५ अ, २५
भा ३

प्रा ६ अ, च ४, का १ आ १, सं ४, ग १, इं १ प्र, का १, यो २ मि का, वे १ पं, क ४, ज्ञा २, सं १
१२५

पट्कपायसामान्यपर्याप्तकर्मो । गु १४ । जी १९ । ३७ । १८६ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । सयोमि । ४ । ४ । अयोमि १ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ११ । मिथ-
चतुष्प्रहोने । वे ३ । क ४ । ज्ञा ८ । सं ७ । ब ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ २ । उ १२ ॥

६

पट्कपायसामान्यपर्याप्तकर्मो । गु ५ । मि । सा । अ । प्र । सयो । जी ३८ । ६१ । २२० ।
प ६ । ५ । ४ । प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । २ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ४ । मिथ ५
चतुष्टयं । वे ३ । क ४ । ज्ञा ६ ॥ मन्ःपर्यायविभंगरहितं । सं ४ । अ । सा । छे । यया । ब ४
ले २ क गु भ २ । सं ५ । मि । सा । उ । वे । छा । सं २ । आ २ । उ १० । ज्ञा ६ । ब ४ ॥
भा ६

मिथ्यादृष्टिप्रभृतिगन्धो मूलोपभंगमकुमल्लि मिथ्यादृष्टि त्रिविवस्मन्धो कायानुवाददल्लि
मूलोपबोद्धु येन्द्रजीवसमासगन्धु वक्तव्यगन्धपुषु । नास्त्यन्यत्र विशेषः ॥

पृथ्वीकायपर्याप्तकर्मो । गु १ । जी ४ । वादरपर्याप्तापर्याप्तमूकमपर्याप्तापर्याप्ता । प ४ । ४ । १०
प्रा ४ । ३ । सं ४ । ग १ । ति । इं १ । ए । का १ । पु । यो ३ । ओ २ । का १ । वे १ । यं । क ४ ।
ज्ञा २ । सं १ । अ सं । ब १ । अच । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं १ । अ सं । आ २ । उ ३ ॥
भा ३

पृथ्वीकायपर्याप्तकर्मो । गु १ । जी २ । वा । सू । प ४ । प्रा ४ । सं ४ । ग १ । ति । इं १ ।
ए । का १ पु । यो २ । ओ का । वे १ । यं । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । अ । ब १ । अ च ले ६
भा ३
भ २ । सं १ । मि । सं १ । अ । सं । आ १ । उ ३ ॥

१५.

तत्पर्याप्तानां—गु १४ । जी १९ । ३७ । १८६ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ ।
४ । ४ । १ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ११ । मिथजनकार्यभावात् । वे ३ । क ४ । ज्ञा ८ ।
सं ७ । ब ४ । ले ६ । भ २ । सं १ । सं २ । आ २ । उ १२ । तदपर्याप्तानां—गु ५ मि सा अ प्र स ।
६

जी ३८ । ६१ । २२० । प ६ ५ ४ । प्रा ७ ७ ६ ५ ४ ३ २ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ४ तयो
मिथ्याः कार्यण्डक । वे ३ । क ४ । ज्ञा ६ मन्ःपर्यायविभंगराहात् । सं ४ अ सा छे यया । ब ४ । ले २ क गु । २०
भा ६

भ २ । सं ५ मि सा उ वे छा । सं २ । आ २ । उ १० ज्ञा ६ द ४ । मिथ्यादृष्ट्यादीनां मूलोपः किन्तु
सामान्यादिविविधमिथ्यादृष्टीनामेव कायानुवादमूलोपोक्तजीवसमासा वक्तव्याः । अन्यत्र विशेषो नास्ति ।

पृथ्वीकायिकानां—गु १ । जी ४ वादरमूकमपर्याप्तापर्याप्ताः । प ४ ४ । प्रा ४ । ३ । सं ४ । ग १
ति । इं १ ए । का १ पु । यो ३ ओ २ का १ । वे १ यं । क ४ । ज्ञा २ । सं १ अ । द १ अच । ले ६
३

भ २ । सं १ मि । सं १ अ सं । आ २ । उ ३ । तत्पर्याप्तानां—गु १ मि । जी २ वा सू । प ४ । प्रा ४ । २५
सं ४ । ग १ ति । इं १ ए । का १ पु । यो १ ओ । वे १ यं । क ४ । ज्ञा २ । सं १ अ । द १ अच ।

कपोतमे वादरंगज्जो पय्यत्तिपोऽप्युत्तममे जनयत्तं । विष्टमत्तिपोऽप्युत्तममे । वातकादिह-
गज्जोयमपय्यत्तिवाल्लोऽप्युत्तममे । गोमूत्रमुत्तममप्यत्तममे । वनस्पतिवादिहगज्जोऽप्युत्तममे । गु १ । जी १२ ॥

[illegible]

भा ३

यनस्पतिपद्ममिकये । गु १ । जो ६ । प्र । अ । निवनिगोह बाहरगुम्पमनिबगुम्पति-
निगोदबाहरगुम्पमनिगुम्प ५ । प्र । अ । न । ४ । ग १ ति । ई १ । ए । का १ । वन । यो १ ।
ओ । ये १ । प । क ४ । ज २ । न १ । अ । ब १ । अ । अ २ । न १ । मि । त १ ।
प्र । ३

ਕ. ਕਾ. ੧. ੩ ੩੪

20

वनस्पतिसामिकापर्याप्तकारणे । गु १ । मि । जी १ । ज । प ४ अ । प्रा ३ । ज । तं ४ ।
ग । ति १ । ई १ । ए । का १ धन । मो २ । मि का । धे १ र्वा । क ४ । आ २ । तं १ अ । ह १
अज । से २ कदा । भ २ । मं १ मि । तं १ । अमं । आ २ । न ३ ॥

भा ३ अक्ष

प्रत्येकवनरस्यतिगच्छये । गु र मिः जी ह । प्रति । अग्रिः प । ज । व । ह । प्र । ह ।
 न । मं ह । ग र ति । ई र ए । का र यन । सो रे । जो रे । वा रे । खे र्वा क ह । जा रे ।
 सं र ष । व र भय । ले र्भ । अ रे । मं र मिः मं र । अ सं । आ रे । उ र ॥
 भा ३

15

પીણા । રથચરિત્રદ્વયો મુખ્ય । શાસ્ત્રાદિકાનાં ધારણીપદ્યોને કલોગ્ન । ચિત્રદ્વયો મુખ્ય । વર્ણ-પદ્યોને
 યોગ્યદ્વયદામ્યગતર્થો ।

[illegible][illegible][illegible][illegible]

यथा। द४ ले २ क ॥ भ २। सं ५। मि। सा उ। वे। क्षा। सं २। आ २। उ १०॥
भा ६

प्रसमिष्यादृष्टिगन्धो। गु १। मि।। जी १०। वि। ति। च। सं। अ। प ६। ६।
२ २ २ २ २
५। ५। प्रा १०। ७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। सं ४। ग ४। इं ४। का १। प्र। यो १३।
आहारद्वयवर्जितमणि। वे ३। क ४। जा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। द २। ले ६। भ २।
६
सं १। मि। सं २। आ २। उ ५॥

प्रसपर्याप्तमिष्यादृष्टिगन्धो। गु १। मि। जी ५। वि। ति। च। पं। अ प ६। ५।
१ १ १ १ १
प्रा १०। ९। ८। ७। ६। सं ४। ग ४। इं ४। वि। ति। च। पं। का १। प्र। यो १०।
१ १ १ १
म ४। आ ४। ओ १। वे १। वे ३। क ४। जा ३। सं १। अ। द २। ले ६। भ २। सं मि।
६
सं २। आ १ उ ५॥

प्रसापपर्याप्तमिष्यादृष्टिगन्धो। गु १। मि। जी ५। वि। ति। च। सं। अ प ६। ५। १०
१ १ १ १ १
अ। प्रा ७। ७। ६। ५। ४। सं ४। ग ४। इं ४। वि। ति। च। पं। का १। प्र। यो ३।
१ १ १ १
ओ मि। वे मि। का। वे ३। क ४। जा २। सं १। अ। द २। ले २ क शु भ २। सं १।
भा ६
मि। सं २। आ २। उ ४॥

सासावनसम्यग्गुण्डिप्रभृतिषामि अघोमिकेवल्लिप्यंतं मूलौघभंगमवकुं ॥

सं ४ अ सा छे य। द४। ले २ क शु। भ २। सं ५ मि सा उ वे क्षा। सं २। आ २। उ १०। १५
भा ३
मिष्यादृष्टां—गु १ मि। जी १० वि ति च सं अ सं। प ६ ६। ५ ५। प्रा १० ७, ९, ७, ८, ६, ७, ५,
२ २ २ २ २
६, ४, सं ४, ग ४, इं ४, का १ प्र, यो १३ आहारद्वयवर्जितं। वे ३, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ।
द २, ले ६, भ २, सं १ मि, सं २, आ २, उ ५, तत्पर्याप्तानां—गु १ मि। जी ५ वि ति च सं अ।
१ १ १ १ १
प ६। ५, प्रा १० ९ ८ ७, ६, सं ४। ग ४, इं ४, वि ति च पं। का १ प्र, यो १० म ४ आ ४ ओ १
१ १ १ १
वे ३। वे ३. क ४. जा ३. सं १. अ. द २. ले ६। भ २. सं १ मि. सं २. आ १, उ ५. तत्पर्याप्तानां— २०
६
गु १ मि. जी ५ वि ति च सं अ। प ६. ५ अ. प्रा ७. ७. ६. ५. ४. सं ४ ग ४. इं ४ वि ति च पं का १ प्र.
१ १ १ १ १
यो ३ ओ मि १ वे मि १ का १. वे ३ क ४. जा २. सं १ अ. द २. ले २ क शु। भ २. सं १ मि. सं २.
भा ६

मनोयोगिमिमंसे । गृ १ । मिथ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । ई १ । पं ।
का १ । जो ४ । मनो । वे ३ । क ४ । प्रा ३ । सं १ । आ २ । से ६ । भ १ । सं १ । मिथ ।
मं १ । आ १ । उ ५ ॥

मनोयोगिद्वयसंगे गृ १ । प्र । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । ई १ । का १ ।
जो ४ । मनो । वे ३ । क ४ । प्रा ३ । म । भु । ज । म । सं १ । आ २ । पा । ज । म । से ६ ।
भ १ । सं १ । उ । वे । पा । सं १ । आ १ । उ ५ ॥

मनोयोगिद्वयसंगे । गृ १ । रे । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग २ । ति । म । ई १ ।
का १ । जो ४ । मनो । वे ३ । क ४ । प्रा ३ । मं । रे । आ २ । से ६ । भ १ । सं १ । उ । वे ।
पा । मं १ । आ १ । उ ५ ॥

मनोयोगिद्वयसंगे । गृ १ । प्र । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । म । ई १ । का १ । १०
जो ४ । मनोयोग । वे ३ । क ४ । प्रा ४ । म । भु । ज । म । मं ३ । ता । छे । पा । रे । पा । ज ।
म । से ६ । भ १ । मं ३ । उ । वे । पा । सं १ । आ १ । उ ७ ॥
भा ३

मनोयोगिद्वयसंगे । गृ १ । प्र । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । म । ई १ । का १ । १०
जो ४ । मनोयोग । वे ३ । क ४ । प्रा ४ । म । भु । ज । म । मं ३ । ता । छे । पा । रे । पा । ज ।
म । से ६ । भ १ । मं ३ । उ । वे । पा । सं १ । आ १ । उ ७ ॥
भा ३

४ २, के ६ । भ १, म १ ग, मं १, आ १, उ ५ । नमिपत्य—गृ १ मिथ जो १ प ६, प्रा १०, प ४,
म ४, ई १ प, का १ प, जो ४ प, वे ३, क ४, प्रा ३ म भु ज, मं १ ज, प २, के ६ । भ १ । प १ मिथ,
मं १, आ १ । उ ५ । नमिपत्य—गृ १ म, जो १, प ६ । प्रा १०, मं ४, प ४, ई १ प, का १ प,
जो ४ म, वे ३, क ४, प्रा ३ म भु ज, मं १ ज, प २ प ज ज, के ६, भ १, प ३ उ वे पा, मं १, २०

भा १, उ ६ । पदोद्वयसंगे—गृ १ वे, जो १, प ६, प्रा १०, मं ४, म २ ति म, ई १ पं, का १ प,
जो ४ म, वे ३, क ४, प्रा ३, मं १ रे, प ३ प ज ज, के ६, भ १ । म ३ उ वे पा । मं १ । आ १ ।
भा ३ गु

उ ६ । पदोद्वयसंगे—गृ १ म, जो १ प, प ६, प्रा १०, मं ४, म १ म, ई १ पं, का १ प, जो ४ म,
वे ३, क ४, प्रा ४ म भु ज म, मं ३ ता छे प, प ३ प ज ज, के ६, भ १, प ३ उ वे पा । मं १, आ १ ।
भा ३

उ ७ । पदोद्वयसंगे—गृ १ म, जो १ प, प ६, प्रा १०, मं ४, म १ म, ई १ पं, का १ प, जो ४ म,
वे ३, क ४, प्रा ४ म भु ज म, मं ३ ता छे प, प ३ प ज ज, के ६, भ १, प ३ उ वे पा । मं १, आ १ ।
भा ३

उ ७ । पदोद्वयसंगे—गृ १ म, जो १ प, प ६, प्रा १०, मं ४, म १ म, ई १ पं, का १ प, जो ४ म,
वे ३, क ४, प्रा ४ म भु ज म, मं ३ ता छे प, प ३ प ज ज, के ६, भ १, प ३ उ वे पा । मं १, आ १ ।
भा ३

काययोगिपर्व्याप्तकर्णे । गु १३ । जी ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । ४ ।
४ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ३ । ओ । वै । आ । वे ३ । क ४ । जा ८ । सं ७ । द ४ ।
ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ १ । आहारकः । उ १२ ॥
६

अपर्व्याप्तकाययोगिपर्व्याप्तकर्णे । गु ५ । मि । सा । अ । प्र । सा । जी ७ । अ । प । ६ । ५ । ४ ।
प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । २ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ४ । ओ मि । वै मि । आ मि । ५
का १ । वे ३ । क ४ । जा ६ । कु । कु । म । ध । अ । के । सं ४ । अ १ । सा १ । छे १ । यथा
१ । द ४ । ले २ । क शु । भ २ । सं ५ । मि । सा । ऊ । वे । सा । सं २ । आ २ । उ १० ॥
भा ६

काययोगिमिम्यावृष्टिपर्व्याप्तकर्णे । गु १ । मि । जी १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० ।
७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ५ ॥ आहार-
द्वयरहित । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । अ । द २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । १०
६
आ २ । उ ५ ॥

काययोगिमिम्यावृष्टिपर्व्याप्तकर्णे । गु १ । जी ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ ।
६ । ४ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो २ । ओ । वै । वे ३ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि ।
सं १ । अ । द २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ ॥
६

काययोगिमिम्यावृष्ट्यपर्व्याप्तकर्णे । गु १ । जी ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । १५
४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ३ । ओ । मि । वै । मि । का । वे ३ । क ४ । जा २ ।
सं १ । अ । द २ । ले २ । क शु । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ४ ॥
भा ६

सं २ । आ २ । उ १२ । तत्पर्व्याप्तानां—गु १३ । जी ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ ।
४ । ४ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ३ । ओ । वै । आ । वे ३ । क ४ । जा ८ । सं ७ । द ४ ।
ले ६ । भ २ । उ ६ । सं २ । आ १ । आहारकः । उ १२ । तत्पर्व्याप्तानां—गु ५ । मि । सा । अ । प्र । सा । जी २०
६
उ । अ । प ६ । ५ । ४ । प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । २ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ४ । ओ मि । वै मि । आ मि । का ।
वे ३ । क ४ । जा ६ । कु कु म धु अ के । सं ४ । अ । सा । छे । य । द ४ । ले २ । क शु । भ २ । सं ५ । मि
भा ६

सा उ वे सा । सं २ । आ २ । उ १० । तत्पर्व्याप्तानां—गु १ । जी १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० । ७
९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ५ । आहारकद्वयं नहि । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १
अ । द २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ५ । तत्पर्व्याप्तानां—गु १ । जी ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा २५
६

१० । ९ । ८ । ७ । ६ । ४ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो २ । ओ । वै । वे ३ । क ४ । जा ३ । कु कु वि ।
सं १ । अ । द २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ । तत्पर्व्याप्तानां—गु १ । जी ७ ।
६

प ६ । ५ । ४ । प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ३ । ओ मि । वै मि । का । वे ३ । क ४ ।

औदारिककाययोगिसंयतसम्यग्दृष्टिगे । गु १। अ। जो १। पंवि। प। प ६। प्रा १०।
सं ४। ग २। ति। म। इ १। पं। का १। यो १। औ। वे ३। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ।
द ३। ले ६। भ १। सं ३। सं १। आ १। उ ६॥

औदारिककाययोगि वेशप्रतिगच्छे । गु १। वे। जो १। पं प। प ६। प्रा १०। सं ४।
ग २। ति। म। इ १। पं। का १। यो १। औ का। वे ३। क ४। ज्ञा ३। सं १। वे। द ३।
ले ६। भ १। सं ३। सं १। आ १। उ ६॥
भा ३

प्रमत्तसंयतप्रभृति सयोगिकेवलपर्व्यंतं काययोगिभंषं वक्तव्यमवक्तुं विशेषमावुर्बोद्धे
सर्वप्रौदारिककाययोगिभंषं वक्तव्यमवक्तुं ॥

औदारिकमिथकाययोगिगच्छे । गु ४। मि। सा। अ। सयो। जी ७। अ। प ६। ५।
४। प्रा ७। ७। ६। ५। ४। ३। २। सं ४। ग २। म। ति। इ ५। का ६। यो १। औ मि। १०
वे ३। क ४। ज्ञा ६। विभंगमनःपर्व्यंतरहितं। सं २। अ। यथा। द ४। ले १। क। भ २।
सं ४। मि। सा। वे। क्षा। सं २। आ १। उ १०॥
भा ६

औदारिकमिथकाययोगिमिथ्यादृष्टिगच्छे । गु १। मि। जी ७। अ। प ६। ५। ४।
प्रा ७। ७। ६। ५। ४। ३। सं ४। ग २। ति। म। इ ५। का १। यो १। औ मि। वे ३।
क ४। ज्ञा २। सं १। अ। द २। ले १। क। भ २। सं १। मि। सं २। आ १। उ ४॥ १५
भा ३

औदारिकसासादनमिथ्यगे । गु १। सासा। जी १। सं। पं। अ। प ६। प्रा ७। सं ४।
ग २। ति। म। इ १। पं। का १। यो १। औ मि। वे ३। क ४। ज्ञा २। सं १। अ।

जो १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग २ ति म, इ १, का १ यो १ औ, वे ३, क ४, ज्ञा ३, सं १ अ,
द २, ले ६। भ १, सं १ मिथं, सं १, आ १, उ ५, अर्थात्तानां—गु १ अ, जो १ पं प, प ६, प्रा १०,
६

सं ४, ग २ ति म, इ १ पं, का १ यो १ औ, वे ३, क ४, ज्ञा ३, सं १ अ, द ३, ले ६। म १, सं ३, २०
६

सं १, आ १, उ ६, देयवतानां—गु १ वे, जी १ पं प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग २ ति म, इ १ पं, का १ यो,
यो १ औ, वे ३, क ४, ज्ञा ३, सं १ वे, द ३ ले ६, भ १, सं ३, सं १, आ १, उ ६, प्रमत्तासंयोगासं
३

काययोगिवत् किन्तु सर्वत्र औदारिकयोग एव वक्तव्यः ।

औदारिकमिथयोगिनां—गु ४ मि सा अ स। जी ७ अ। प ६। ५। ४। प्रा ७। ७। ६। ५।
४। ३। २। सं ४। ग २ ति म। इ ५। का ६। यो १ औ मि। वे ३। क ४। ज्ञा ६, विभंगमनःपर्व्याभा- २५
वात्। सं २ अ य। द ४। ले १ क। भ २। सं ४ मि सा वे सा। सं २। आ १। उ १०। वन्मिथ्यादृशा
भा ६

गु १ मि। जी ७ अ। प ६। ५। ४। प्रा ७। ७। ६। ५। ४। ३। सं ४। ग २ ति म। इ ५। का
६। यो १ औ मि। वे ३। क ४। ज्ञा २। सं १ अ। द २। ले १। भ २। सं १ मि। सं २। आ १।
भा ३

उ ४। वत्सासादनानां—गु १ सा। जी १ सं अ। प ६ अ। प्रा ७। सं ४। ग २ ति म। इ १ पं।

वैक्रियिकाययोगिसम्यग्मिथ्यावृष्टिगन्धो । गु १ । मिथ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
ग २ न वे । इं १ । पं । का १ न । यो १ । वै । का । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि । सं १ ।
अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । मिथ । सं १ । आ १ । उ ४ ॥
भा ६

वैक्रियिकाययोगि असंयतसम्यग्मिथ्यावृष्टिगन्धो । गु १ । अ सं । जी १ । प ६ । प्रा १० ।
सं ४ । ग २ । न वे । इं १ । पं । का १ न । यो १ । वै का । वे ३ । का ४ । ज्ञा ३ । म ध्रु ज । ५
सं १ । अ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ६ ॥
६

वैक्रियिकमिथ्याययोगिगन्धो । गु ३ । मि । सा । अ । जी १ । प ६ । अ । प्राण ७ । अ ।
सं ४ । ग २ । न वे । इं १ । पं । का १ न । यो १ । वै मि । वे ३ । क ४ । ज्ञा ५ । कु । कु । म ।
ध्रु । अ । सं १ । अ । व ३ । ले १ । भ २ । सं ५ । मि । सा । उ । वे । आ । सं १ ।
भा ६

आ १ । उ ८ ॥

१०

वैक्रियिकमिथ्याययोगिमिथ्यावृष्टिगन्धो । गु १ । मि । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ६ ।
अ । सं ४ । ग २ । न वे । इं १ । पं । का १ न । यो १ । वै मि । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । सं १ ।
अ व २ । ले १ । भ २ । सं १ । मि । सं १ । आ १ । उ ४ ॥
भा ६

वैक्रियिकमिथ्याययोगिसासादनसम्यग्मिथ्यावृष्टिगन्धो । गु १ । सासा । जी १ । अ । प ६ । अ ।
प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ देव । इं १ । पं । का १ । न । यो १ । वै मि । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । १५

प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग २ न वे । इं १ पं । का १ न । यो १ वै । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ कु कु वि ।
सं १ अ । व २ । ले ६ । भ १ । स १ सा । सं १ । आ १ । उ ५ । तत्सम्यग्मिथ्यावृष्टा—गु १ मिथ ।
६

जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग २ न वे । इं १ पं । का १ न । यो १ वै । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ कु कु
वि । सं १ अ । व २ । ले ६ । भ १ । स १ मिथ । सं १ । आ १ । उ ५ । तदसंयतानां—गु १ अ ।
६

जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग २ न वे । इं १ पं । का १ न । यो १ वै । वे ३ । क ४ । २०
ज्ञा ३ म ध्रु ज । व ३ । ले ६ । भ १ । स ३ । सं १ । आ १ । उ ६ । तन्मिथयोगिनां—गु १ मि
६

सा अ । जी १ । प ६ अ । प्रा ७ अ । सं ४ । ग २ न वे । इं १ पं । का १ न । यो १ वै मि । वे ३ । क ४ ।
ज्ञा ५ कु कु म ध्रु ज । सं १ अ । व ३ । ले १ क । भ २ । सं ५ मि सा उ वे सा । सं १ । आ १ । उ ८ ।
भा ६

तन्मिथ्यावृष्टा—गु १ मि । जी १ अ । प ६ अ । प्रा ७ अ । सं ४ । ग २ न वे । इं १ पं । का १ न । यो १ वै मि ।
वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । सं १ अ । व २ । ले १ । भ २ । स १ मि । सं १ । आ १ । उ ४ । तत्सासादनानां—गु १ सा । २५
६

जी १ अ । प ६ अ । प्रा ७ अ । सं ४ । ग १ दे । इं १ पं । का १ न । यो १ वै मि । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ अ ।

का। ये १ स्त्री। क ४। मा २। कु। कु। सं १। अ। इ २। घ। अ। से २ क गु भ २।
मा ३ अ गु
सं १। नि। सं २। आ २। उ ४॥

ह्रोवेदितासावनये^०। गु १। साता। जो २। पंचेद्विषसंज्ञिपम्यानापम्यानि। प ६। प ६।
प्रा १०। सं ४। ग ३। ति। मा। दे। ई १। पं। का १। त्र। यो १३। आहारइयरहित।
ये १ स्त्री। क ४। मा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। इ २। से ६। भ १ सं १। साता।
सं १। आ २। उ ५॥

ह्रोवेदितासावनपर्यामकये^०। गु १। साता। जो १। संतिपंचद्विषपम्यानि। प ६।
प्रा १०। सं ४। ग ३। ति। मा। दे। ई १। पं। का १। त्र। यो १०। म ४। य ४। श्री। ये।
ये १ स्त्री। क ४। मा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। इ २। घ। अ। से ६। भ १। सं १।
साता। सं १। आ १। उ ५॥

ह्रोवेदितासावनाम्यम्यामिकये^०। गु १। साता। जो १। सपंच ० प ६। अ। प्रा ७।
अ। सं ४। ग ३। ति। मा। दे। ई १। पं। का १। त्र। यो ३। ओ मि। पं मि। का। ये १।
ह्रो। क ४। मा २। कु। कु। सं १। अ। इ २। घ। अ। से २ क गु। भ १। सं १।
साता। सं १। आ २। उ ४॥

ह्रोवेदिताम्यमिभ्यादुष्टिगम्ये^०। गु १। मिभ। जो १। प। प ६। प्रा १०। सं ४।
ग ३। ति। मा। दे। ई १। पं। का १। त्र। योग १०। म ४। य ४। श्री। ये १। ये १। स्त्री।
क ४। मा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। इ २। घ। अ। से ६। भ १। सं १। मिभ।
६

का। वे१ ह्री०। क४। सा२। कु। कु। सं१। ज। व२। पा। अ। से२ क गु भ२।
भा३ अ गु
तं१। मि। सं२। आ२। उ४॥

ह्रीवेदितासादनयो०। गु१। साता। जो२। वंचेद्रियमंतिपर्म्याप्तापर्म्याप्ति। प६। प६।
प्रा१०। उ। सं४। ग३। ति। म। दे। इं१। पं। का१। त्र। यो१३। आहारद्वयपरहित।
वे१ ह्री०। क४। सा३। कु। कु। वि। सं१। ज। व२। से६। भ१ सं१। साता। ५
तं१। आ२। उ५॥

ह्रीवेदितासादनवर्जमिकयो०। गु१। साता। जो१। तंतिपंचद्रियपर्म्याप्तक। प६।
प्रा१०। सं४। ग३। ति। म। दे। इं१। पं। का१। त्र। यो१०। म४। य४। ओ। वे।
वे१ ह्री०। क४। सा३। कु। कु। वि। सं१। ज। व२। पा। अ। से६। भ१। सं१।
साता। सं१। आ१। उ५॥ १०

ह्रीवेदितासादनवर्जमिक्तयो०। गु१। साता। जो१। सवं अ० प६। ज। प्रा७।
अ। सं४। ग३। ति। म। दे। इं१। पं। का१। त्र। यो३। ओ। मि। ये। मि। का। वे१।
ह्री०। क४। सा२। कु। कु। सं१। ज। व२। पा। अ। से२ क गु। भ१। सं१।
साता। सं१। आ२। उ४॥ भा३ अ गु

ह्रीवेदितासम्पन्निभ्यादुष्टिगन्धो०। गु१। मिथ। जो१। प। प६। प्रा१०। सं४। १५
ग३। ति। म। दे। इं१। पं। का१। त्र। यो१०। म४। य४। ओ१। वे१। वे१ ह्री०।
क४। सा३। कु। कु। वि। सं१। ज। व२। पा। अ। से६। भ१। सं१। मिथ।
६

प६ प६ ज। प्रा७ उ। सं४। ग३ ति म दे। इं१ पं। का१ त्र। यो३ ओमि वंमि का। वे१ ह्री०।
क४। सा२ कु कु। सं१ ज। व२ प अ। से२ क गु। म२। छ१ मि। सं२। आ२। उ४।
भा३ अ गु

वल्गायादनानां—गु१। सा। जो२ संक्षिप्तसाधनार्थो०। प६ प६। प्रा१० उ। सं४। ग३ ति म दे। इं१ २०
पं। का१ त्र। यो१३ आहारद्वयभारात्। वे१ ह्री०। क४। सा३ कु कु वि। सं१ ज। व२। से६।
६

म१। ग१ या। सं१। आ२। उ५। वल्गायादनानां—गु१। सा। जो१ संक्षिप्तार्थतः। प६। प्रा१०।
सं४। ग३ ति म दे। इं१ पं। का१ त्र। यो१० म४ य४ ओ१ वे१। वे१ ह्री०। क४। सा३
कु कु वि। सं१ ज। व२ प अ। से६। भ१। छ१ या। सं१। आ१। उ५। वदपर्वतानां—गु

१ या। जो१ सं अ, प६ अ, प्रा७ अ, सं४, ग३ ति म दे, इं१ पं, का१ त्र, यो३ ओमि वंमि का। २५
वे१ ह्री०। क४। सा२ कु कु, सं१ ज, व२ प अ, से२ क गु, भ१, छ१ या, सं१, आ२, उ४,
भा३ अ गु

वल्गायादनानां—गु१ मिथ, जो१, प६, प्रा१०, सं४, ग३ ति म दे, इं१ पं, का१ त्र, यो१० म
४ य४ ओ वे। वे१ ह्री०, क४, सा३ कु कु वि, सं१ ज, व२ प अ, से६, भ१, छ१ मिथ,
६

मा १२। ता १०। द ३। च। मा ३। से ६। भ १। सं २। उ। धा। सं १। मा १। उ ६॥
भा १

पुंवेदि अग्निवृत्तिरूपेण—गु १। अग्नि। ओ १। व ६। प्रा १०। सं २। मे। वा। ग १।
मा १०। सं ४। ग ३। ता १०। मा ४। व ४। ओ १। वे १। र १। क ४। मा ३। मा ५।
मा ३। ता १०। द ३। च। मा ३। से ६। भ १। सं २। उ। धा। सं १। मा १। उ ६॥
भा १

पुंवेदिमन्त्रो—गु १। ओ १। सं ४। ग ३। ता १०। मा ४। व ४। ओ १। वे १। र १। क ४। मा ३।
मा ५। ता १०। द ३। च। मा ३। से ६। भ १। सं २। उ। धा। सं १। मा १। उ ६॥
भा १

पुंवेदिमन्त्रो—गु १। ओ १। सं ४। ग ३। ता १०। मा ४। व ४। ओ १। वे १। र १। क ४। मा ३।
मा ५। ता १०। द ३। च। मा ३। से ६। भ १। सं २। उ। धा। सं १। मा १। उ ६॥
भा १

पुंवेदिमन्त्रो—गु १। ओ १। सं ४। ग ३। ता १०। मा ४। व ४। ओ १। वे १। र १। क ४। मा ३।
मा ५। ता १०। द ३। च। मा ३। से ६। भ १। सं २। उ। धा। सं १। मा १। उ ६॥
भा १

पुंवेदिमन्त्रो—गु १। ओ १। सं ४। ग ३। ता १०। मा ४। व ४। ओ १। वे १। र १। क ४। मा ३।
मा ५। ता १०। द ३। च। मा ३। से ६। भ १। सं २। उ। धा। सं १। मा १। उ ६॥
भा १

पुंवेदिमन्त्रो—गु १। ओ १। सं ४। ग ३। ता १०। मा ४। व ४। ओ १। वे १। र १। क ४। मा ३।
मा ५। ता १०। द ३। च। मा ३। से ६। भ १। सं २। उ। धा। सं १। मा १। उ ६॥
भा १

पुंवेदिमन्त्रो—गु १। ओ १। सं ४। ग ३। ता १०। मा ४। व ४। ओ १। वे १। र १। क ४। मा ३।
मा ५। ता १०। द ३। च। मा ३। से ६। भ १। सं २। उ। धा। सं १। मा १। उ ६॥
भा १

क ४। जा ६। कु। कु। वि। म। म्रु। अ। सं ४। अ। वे। सा। छे। व ३। च। अ। अ। ले ६।
भ २। सं ६। सं २। आ १। उ ९॥

नपुंसकवेदिमिध्यावृष्टिगण्ये। गु ३। मि। सा। अ। जी ७। प ६। ५। ४। प्रा ७। ७।
६। ५। ४। ३। सं ४। ग ३। न। ति। म। इ ५। का ६। यो ३। ओमि। वेमि। का।
वे १। पं। क ४। जा ५। कु। कु। म। म्रु। अ। सं १। अ। व ३। च। अ। अ। ले २ क म्रु।
भा ३ अशु
भ २ सं १। ४। मि। सा। वे। धा। सं २। आ २। उ ८॥

नपुंसकवेदिमिध्यावृष्टिगण्ये। गु १। मि। जी १४। प ६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा १०।
७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। सं ४। ग ३। न। ति। म। इ ५। का ६।
यो १३। आहारकद्वयवर्जित। ये १। नपुं। क ४। जा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २।
ले ६। भ २। सं १। मि। सं २। आ २। उ ५॥

नपुंसकवेदिमिध्यावृष्टिगण्ये। गु १। मि। जी ७। प ६। ५। ४। प्रा १०। ९। ८।
७। ६। ४। सं ४। ग ३। न। ति। म। इ ५। का ६। यो १०। म ४। व ४। ओ। वे।
वे १ पं। क ४ जा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले ६। भ २। सं १। मि। सं २।
आ १। उ ५॥

नपुंसकमिध्यावृष्टि अपर्याप्तकण्ये। गु १। मि। जी ७। प ६। ५। ४। प्रा ७। ७। ६।
५। ४। ३। सं ४। ग ३। न। ति। म। इ ५। का ६। यो ३। ओमि। वेमि। का ४। ये १

१० म ४ व ४ ओ १ वे १, वे १ पं, क ४, जा ६ कु कु वि म म्रु अ, सं ४ अ दे सा छे, व ३ व अ अ,
ले ६। भ २, स ६, सं २, आ १, उ ९। तदपर्याप्तानां—गु ३ मि सा अ, धी ७, प ६ ५, ४ अ, प्रा ७, ७,
६, ५, ४, ३। ४, प्रा १०, ९, ८, ७, ६, ४, सं ४। ग ३ न वि म, इ ५, का ६, यो ३ ओमि वेमि

का, वे १ पं, क ४, जा ५ कु कु वि म म्रु अ, सं १ अ, व ३ व अ अ, ले २ क म्रु भ २, स ४ मि सा वे शा,
भा ३ अशु

सं २, आ २, उ ८। तन्मिध्यादुतां—गु १ मि, जी १४, प ६, ६, ५, ५, ४, ४, प्रा १०, ७, ९, ७, ८,
६, ७, ५, ६, ४, ४, ३, सं ४, ग ३ न वि म, इ ५, का ६, यो १३ आहारकद्वयं नहि, वे १ न, क ४,
जा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २, ले ६, भ २, स १ मि, सं २, आ २ उ ५। तदपर्याप्तानां—गु १ मि, जी

७, प ६, ५, ४, प्रा १०, ९, ८ उ ६, ४, सं ४, ग ३ न वि म, इ ५, का ६, यो १० म ४ व ४ ओ वे,
वे १ पं, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २। ले ६। भ २, स १ मि, सं २, आ १, उ ५। तद-

पर्याप्तानां—गु १ मि, जी ७, प ६, ५, ४, प्रा ७, ७, ६, ५, ४, ३, सं ४, ग ३ न वि म, इ ५, का ६,

क४। जा६। कु। कु। वि। म। म्। अ। सं४। अ। वे। सा। छे। द३। च। अ। अले६।
६

भ२। सं६। सं२। आ१। उ९॥

नपुंसकवेदिवर्णमिकर्णम्। गु३। मि। सा। अ। जी७। प६। ५। ४। प्रा७। ७।
६। ५। ४। ३। सं४। ग३। न। ति। म। इ५। का६। यो३। औमि। वेमि। का।
१ १ १

वे१। पं। क४। जा५। कु। कु। म। म्। अ। सं१। अ। द३। च। अ। अ। ले२। क४।
भा३। अशु।
५

भ२। सं४। मि। सा। वे। सा। सं२। आ२। उ८॥

नपुंसकवेदिवर्णमिकर्णम्। गु१। मि। जी१४। प६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०।
७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। सं४। ग३। न। ति। म। इ५। का६।
यो१३। आहारकद्रुपवर्जित। वे१। नपुं। क४। जा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२।
ले६। भ२। सं१। मि। सं२। आ२। उ९॥
६

१०

नपुंसकवेदिवर्णमिकर्णम्। गु१। मि। जी७। प६। ५। ४। प्रा१०। ९। ८।
७। ६। ४। सं४। ग३। न। ति। म। इ५। का६। यो१०। म४। व४। औ। वे।
वे१। पं। क४। जा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ले६। भ२। सं१। मि। सं२।
६

आ१। उ९॥

नपुंसकवेदिवर्णमिकर्णम्। गु१। मि। जी७। प६। ५। ४। प्रा७। ७। ६।
५। ४। ३। सं४। ग३। न। ति। म। इ५। का६। यो३। औमि। वेमि। का४। वे१
१५

१० म४ व४ औ१ वे१, वे१ पं, क४, जा६ कु कु वि म म् अ, सं४ अ वे सा छे, द३ व अ अ,
ले६। भ२, छ६, सं२, आ१, उ९। तदपर्याप्तानां—गु३ मि सा अ, जी७, प६ ५, ४ अ, प्रा७, ७,
६

६, ५, ४, ३। ४, प्रा१०, ९, ८, ७, ६, ४, सं४। ग३ न वि म, इ५, का६, यो३ औमि वेमि
का, वे१ पं, क४, जा५ कु कु म म् अ, सं१ अ, द३ व अ अ, ले२ क४ भ२, स४ मि सा वे सा,
भा३ अशु।
२०

सं२, आ२, उ८। तन्मिथ्यादुषां—गु१ मि, जी१४, प६, ६, ५, ५, ४, ४, प्रा१०, ७, ९, ७, ८,
६, ७, ५, ६, ४, ४, ३, सं४, ग३ न वि म, इ५, का६, यो१३ आहारकद्रुपवर्जित, वे१ न, क४,
जा३ कु कु वि, सं१ अ, व२, ले६, भ२, स१ मि, सं२, आ२ उ९। तदपर्याप्तानां—गु१ मि, जी
६

७, प६, ५, ४, प्रा१०, ९, ८, ७, ६, ४, सं४, ग३ न वि म, इ५, का६, यो१० म४ व४ औ वे,
वे१ पं, क४, जा३ कु कु वि, सं१ अ, व२। ले६। भ२, स१ मि, सं२, आ१, उ९। तद-
६

२५

पर्याप्तानां—गु१ मि, जी७, प६, ५, ४, प्रा७, ७, ६, ५, ४, ३, सं४, ग३ न वि म, इ५, का६,

नपुंसकवेदिब्रह्मसंयतसम्यग्बुद्धिगच्छे । गु १ । असं । जो २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० ।
 ७ । सं ४ । ग ३ । न ति । म । इ १ । का १ । यो १२ । म ४ । व ४ । ओ का १ । वै का १ ।
 का १ । ये १ नपुं । क ४ । ज्ञा ३ । म । थु । अ । सं १ । अ । व ३ । छ । अ । अ । ले ६ भ १ ।
 सं ३ । ड । खे । क्षा । सं १ । आ २ । उ ६ ॥

नपुंसकवेदि अर्चयेत्तपस्यास्तकंठो । गु १ । अ । जी १ । पा । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ३ । ५
न । ति । म । इ १ । का १ । यो १० । म ४ । व ४ । ओ १ । ऐ १ । ये १ । नपुं । फ ४ । शा ३ ।
म । ध्रु । अ । सं १ । अ । व ३ । च । अ । अ । लें ६ भ १ । र्ज ३ । उ । ये । क्षा । सं १ ।
वा १ । उ ६ ॥

नृपुंसकवेदिकपम्प्यस्तिसयतगे । गु १ । अ । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ ।
ग १ । न । ई १ । का १ । यो २ । के मि १ । का १ । ये १ । नृपुं । क ४ । जा ३ । सं १ । अ । १०
व ३ । च । अ । अ । ले २ क गु । भ १ । सं २ । क्षा । ये । सं १ । आ २ । उ ६ ॥
भा १ अ शु

मनुसकवेदिवेगवतिगन्तो । गु १ । वे । जो १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग २ । ति म ।
ई १ । का १ । यो ९ । म ४ । पा ४ । जी का १ । वे १ मनु । क ४ । शा ३ । म । भु । ज ।
सं १ । वे । व ३ । ज । ज । ज । ले ६ । भ १ । सं ३ । ज । वे । सा । सं १ । आ १ । उ ६ ।
आ ३ शु

नृपसकरुषेविप्रनत्तप्रभृतिप्रयमभागानिवृत्तिपथ्यंत स्त्रौवेविपळ भंगमवकुं विशेषमायुषेदोडे १५
सध्वं नृपसकरुषेदमोदे वक्तव्यमवकं ॥

भा ३ कु कु वि, सं १ अ, इ २, ए अ, ओ ६, न १, स १ मिथुं, सं १, वा १, उ ५। तदसंवादानां—

गु १ अ, जी २ व अ, प ६, ६, प्रा १०, ७, सं ४, ग ३ न सि म, ई १ पं, का १ अ, यो १ २ म ४ व
४ जो वी वंमि का, वे १ न, क ४, सा ३ म थु अ, सं १ अ, द ३ व अ अ, ले ६, भ १, त ३,

सं १, धा २, उ ६। सत्यर्थाप्तानो-यु १ अ, जी १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ३ न वि म। ई १, का १, २०
यो १० म ४ व ४ औ १ वं १, वे १ न, क ४, शा ३ म थु अ, सं १ अ, द ३ न अ अ, ले ६। भ १,

स ३ छ वे ङा, सं १, का १, उ ६। तदपरांस्तानां-गु १ ख। जी १ ख। प ६ ख। प्रा ७ ख। सं ४।
ग १ न। ई १। का १। यो २ वैमि का। वे १ न। क ४। आ ३। सं १ ख। द ३ च ख ख।
ले २ क गु। अ १। स २ वे ङा। सं १। का २। उ ६। तदसवितानां-गु १ दे। जी १ प। प ६।
भा ३ अ नम

भा १०। सं ४। य २ ति म। इ १। का १। गो १ म ४ व ४ जी १। वे १ न। क ४। ता ३ म यु २५
अ। सं १ १ २। द ३ ष ब ब। ले ६। भ १। ख ३ उ के ला। सं १। बा १। उ ६। प्रमत्तात् प्रथम-
भा ३ य

भागानियुत्यंतं स्त्रीवेदिवत् किंतु वेदस्याने नपुंसकवेद एव ।

ब।ब। से २ क गु। भ २। सं ५। मि। सा। उ। वे। क्षा। सं २। आ २। उ ८॥
भा ६

छोपक्याविमिम्यादृष्टिगन्धो। गु १। मि। जो १४। प ६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा १०।
७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ३। सं ४। म ४। इं ५। का ६। यो १३। बाह्यद्वय-
रहित। वे ३। क १। को। सा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २। च। अ। से ६। भ २।
सं १। मि। सं २। आ २। उ ५॥

छोपक्याविमिम्यादृष्टिगन्धो। गु १। मि। जो ७। प। प ६। ५। ४। प। प्रा १०।
९। ८। ७। ६। ४। सं ४। म ४। इं ५। का ६। यो १०। म ४। वा ४। जो। वे। वे ३।
क १। को। सा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २। च। अ। से ६। भ २। सं १। मि।
सं २। आ १। उ ५॥

छोपक्याविमिम्यादृष्टिगन्धो। गु १। मि। जो ७। अ। प ६। ५। ४। अ। प्रा ७। १०
७। ६। ५। ४। ३। अ। सं ४। म ४। इं ५। का ६। यो ३। ओ मि। वे मि। का। वे ३।
क १। को। सा २। कु। कु। सं १। अ। व २। से २ क गु। भ २। सं १। मि। सं २।
आ २। उ ४॥

छोपक्याविमिम्यादृष्टिगन्धो। गु १। सा। जो २। प ४। प ६। ६। प्रा १०। ७। सं ४।
म ४। इं १। पं। का १। अ। यो १३। बाह्यद्वयगन्धित। वे ३। क १। को। सा ३। कु। कु। १५
वि। सं १। अ। व २। से ६। भ १। सं १। सासा। सं १। आ २। उ ५॥

म धु ब, सं १ अ सा ७, द ३ प अ अ, से २ क गु, भ २, सं ५ मि सा उ वे क्षा, सं २
भा ६

आ २, उ ८। तन्मिम्यादृष्टा—गु १ मि, जो १४, प ६, ६, ५, ५, ४, ४, प्रा १० ७ ९ ७ ८ ६ ७ ५
६ ४ ४ ३, सं ४, म ४, इं ५, का ६। यो १३ बाह्यद्वय गन्धि, वे ३, क १ को, सा ३ कु कु वि, सं १ अ,
द २ प अ। से ६। भ २। सं १ मि। सं २। आ २। उ ५। तत्त्वार्थानां—गु १ मि। जो ७। प ६। २०
भा ६

५। ४। प्रा १०। ९। ८। ७। ६। ४। सं ४। म ४। इं ५। का ६। यो १० म ४ प ४ ओ १
वे १। वे ३। क १ को। सा ३ कु कु वि। सं १ अ। द २ च अ। से ६। भ २। सं १ मि। सं २।
६

आ १। उ ५। तद्वर्थाणां—गु १ मि। जो ७ अ। प ६ ५ ४ अ। प्रा ७। ७। ६। ५। ४।
३ अ। सं ४। म ४। इं ५। का ६। यो ३ ओ मि वे मि का। वे ३। क १ को। सा २ कु कु।
सं १ अ। द २। से २ क गु। भ २। सं १ मि। सं २। आ २। उ ४। तत्त्वार्थानां—गु १ सा। २५
भा ६

जो २ प अ। प ६ ६। प्रा १०। ७। सं ४। म ४। इं १ पं। का १ अ। यो १३ बाह्यद्वयगन्धित। वे ३।
क १ को। सा ३ कु कु वि। सं १ अ। व २। से ६। भ १। सं १ सा। सं १। आ १। उ ५।
६

। क्रोषकपायिअप्यसिसंयतंगे। गु१। अ०। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४।
ग४। इ१। पं। का१। अ। यो२। ओमि। वेमि। का। वे२। पुं। नपुं। क१। क्रो।
जा३। म। धु। अ। सं१। अ। द३। च। अ। अ। । ले२। क३। भ१। सं३। उ।
भा६
वे। आ। सं१। आ२। उ६॥

क्रोषकपायिवेशप्रतिकंगे। गु१। वे। जी१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग२। ति। म। ५
इ१। पं। का१। अ। यो२। वे३। क१। क्रो। जा३। म। धु। अ। सं१। वे। य३। च।
अ। अ। ले६। भ१। सं३। उ। वे। आ। सं१। आ१। उ६॥
भा६

क्रोषकपायिप्रमत्तसंयतंगे। गु१। प्र। जी२। प६। द। प्रा१०। उ। सं४। ग१। म।
इ१। पं। का१। अ। यो२। म४। वा४। ओ१। आ२। वे३। क१। क्रो। जा४।
म। धु। अ। म। सं३। सा। छे। प। द३। ले६। भ१। सं३। उ। वे। आ। सं१। १०
भा३
आ१। उ७॥

क्रोषकपायाप्रमत्तंगे। गु१। अ०। जी१। प६। प्रा१०। सं३। भ। मै। प। ग१।
म। इ१। पं। का१। अ। यो२। वे३। क१। क्रो। जा४। म। धु। अ। म। सं३। सा। छे।
प। द३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं३। उ। वे। आ। सं१। आ१। उ७॥
भा३

क्रोषकपायिअपूर्वकरणंगे। गु१। अ०। जी१। प। प६। प्रा१०। सं३। भ। मै। १५
प। ग१। म। इ१। पं। का१। अ। यो२। वे३। क१। क्रो। जा४। म। धु। अ। म। सं२।
सा। छे। द३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं२। उ। आ। सं१। आ१। उ७॥
भा३

उ६। तृतीयान्तानां—गु१। अ। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग४। इ१। पं। का१। अ।
यो३। ओमि। वेमि। का। वे२। पुं। क१। क्रो। जा३। म। धु। अ। सं१। अ। द३। च। अ। अ। ले२। क३।
भा६

भ१। सं३। उ। वे। आ। सं१। आ२। उ६। देवतानां—गु१। दे। जी१। प। प६। प्रा१०। सं४। २०
ग२। ति। म। इ१। पं। का१। अ। यो२। वे३। क१। क्रो। जा३। म। धु। अ। सं१। दे। द३। च। अ। अ।
ले६। भ१। सं३। उ। वे। आ। सं१। आ१। उ६। प्रमत्तानां—गु१। प्र। जी२। प६। प्रा१०। सं४।

प्रा१०। उ। सं४। ग१। म। इ१। पं। का१। अ। यो२। म४। वा४। ओ१। आ२। वे३। क१।
क्रो। जा४। म। धु। अ। म। सं३। सा। छे। प। द३। ले६। भ१। सं३। उ। वे। आ। सं१। आ१। उ७।
३

अप्रमत्तानां—गु१। अ०। जी१। प६। प्रा१०। सं३। भ। मै। प। ग१। म। इ१। पं। का१। अ। यो२। वे३। २५
क१। क्रो। जा४। म। धु। अ। म। सं२। सा। छे। प। द३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं२। उ। वे। आ। सं१। आ१। उ७।
३

उ७। अपूर्वकरणानां—गु१। अ०। जी१। प। प६। प्रा१०। सं३। भ। मै। प। ग१। म। इ१। पं। का१। अ।
यो२। वे३। क१। क्रो। जा४। म। धु। अ। म। सं२। सा। छे। द३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं२। उ।
१

३।सं४।ग४।इ५।का६।यो१३।वे३।क४।ज्ञा२।सं१अ।व२।ले६।
भ२।सं२।मि।सा।सं२।आ२।उ४॥

कुमतिकुमुतज्ञानिप्रप्योप्तकर्मो०।गुर।मि।सा।जी७।प।प६।५।४।प्रा१०।
९।८।७।६।४।सं४।ग४।इ५।का६।यो१०।म४।वा४।ओका१।वेका१।
वे३।क४।ज्ञा२।कु।कु।सं१।अ।व२।ब।अ।ले६।भ२।सं२।मि।
सा।सं२।आ१।उ४॥

कुमतिकुमुतज्ञानिप्रप्योप्तकर्मो०।गुर।मि।सा।जी७।अ।प६।५।४।अ।
प्रा७।७।६।५।४।३।सं४।ग४।इ५।का६।यो३।ओमि।यैमि।का।
वे३।क४।ज्ञा२।सं१।अ।व२।ले२कगु।भ२।सं२।मि।सा।सं२।
आ२।उ४॥

कुमतिकुमुतज्ञानिमिप्यादृष्टिगन्धो०।गुर।मि।जी१४।प६।६।५।५।४।४।
प्रा१०।७।९।१।७।८।६।७।५।६।४।४।३।सं४।ग४।इ५।का६।
यो१३।वे३।क४।ज्ञा२।सं१।अ।व२।ले६।भ२।सं१।मि।सं२।
आ२।उ४॥

कुमतिकुमुतज्ञानिप्रप्योप्तकर्मो०।गुर।मि।सा।जी७।प।प६।५।४।प्रा१०।
९।८।७।६।४।सं४।ग४।इ५।का६।यो१०।म४।वा४।ओका१।वेका१।
वे३।क४।ज्ञा२।कु।कु।सं१।अ।व२।ब।अ।ले६।भ२।सं२।मि।
सा।सं२।आ१।उ४॥

३, सं४।ग४, इ५, का६, यो१३, वे३, क४, ज्ञा२, सं१अ, व२, ले६, भ२, सं२ मि सा,

सं२, आ२, उ४। तत्पर्याप्तानां—गुर मि सा, जी७प, प६५४, प्रा१०९८७६४, सं४, ग४, इ५, का६, यो१० म४ व४ ओ१वे१, वे३, क४, ज्ञा२, कुकु, सं१अ, व२बअ, ले६, भ२, सं२ मि सा, सं२, आ१, उ४। तदवस्थांतिनां—गुर मि सा, जी७अ, प६५४, प्रा७७६५४३, सं४, ग४, इ५, का६, यो३ओमि यैमि का, वे३, क४, ज्ञा२, सं१अ, व२बअ, ले२कगु। भ२, सं२ मि सा, सं२, आ२, उ४। तन्मिप्यादृष्टां—गुर मि, जी१४, प६६५५

मा६४४, प्रा१०७९७८६७५६४४३, सं४, ग४, इ५, का६, यो१३ बाह्याद्वयवर्ज्य, वे३, क४, ज्ञा२ कुकु, सं१अ, व२बअ, ले६, भ२, सं१ मि, सं२, आ२, उ४। तत्पर्याप्तानां—

गुर मि, जी७प, प६५४प, प्रा१०९८७६४, सं४, ग४, इ५, का६, यो१०, म४ व४ ओ१वे१, वे३, क४, ज्ञा२ कुकु, सं१अ, व२बअ, ले६, भ२। सं१ मि, सं२, आ१, उ४॥

कुमतिकुधृतज्ञानिसासादनापम्याप्तिरुग्मे । गु १ । सास । जो १ । व । प ६ । व । प्रा ७ ।
 अ । सं ४ । ग ३ । ति । मा । वे । ई १ । पं । का १ प्र । यो ३ । ओ मि । वै मि । का । वे ३ ।
 क ४ । ज्ञा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । ले २ क गु । भ १ । सं १ । सासा । सं १ ।
 भा ६
 आ २ । उ ४ ॥

विभंगज्ञानिगच्छे । गु २ । मि । सा । जो १ प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । ई १ । पं ।
 का १ प्र । यो १० । म ४ । वा ४ । ओ का १ । वे का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा १ । विभंग ।
 सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ । सं २ । मि । सा । सं १ । आ १ । उ ३ ॥
 ६

विभंगज्ञानिमिध्यादृष्टिगच्छे । गु १ । मि । जो १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ ।
 ई १ । पं । का १ प्र । यो १० । वे ३ । क ४ । ज्ञा १ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ ।
 सं १ । मि । सं १ । आ १ । उ ३ ॥
 ६

विभंगज्ञानिसासावर्तने । गु १ । सासा । जो १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । ई १ ।
 का १ । यो १० । म ४ । व ४ । ओ का १ । वे का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा १ । विभंग । सं १ ।
 अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । सासा । सं १ । आ १ । उ ३ ॥
 ६

मतिधृतज्ञानिगच्छे । गु २ । जो २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग ४ ।
 ई १ । का १ प्र । यो १५ । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । म । म् । सं ७ । व ३ । अ । अ । अ । ले ६ ।
 सं ३ । उ । वे । क्षा । सं १ । आ २ । उ ५ ॥
 ६

छे १, आ १, उ ४, तदपर्याप्तानां—गु १ सा, जो १ अ, प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, ग ३ डि म वे, ई १ पं,
 का १ प्र, यो ३ ओ मि वै मि का, वे ३, क ४, ज्ञा २ कु कु, सं १ अ, व २, ले २ क गु । न १, स १ सा,
 भा ६

सं १, आ २, उ ४ । विभंगज्ञानिनां—गु २ मि सा, जो १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ४, ई १ पं,
 का १ प्र, यो १० म ४ व ४ ओ १ वे १, वे ३, क ४, ज्ञा १ विभंगः । सं १ अ, व २, ले ६ । भ २, र ०
 ६

स २ मि सा, स १, आ १, उ ३ वि प अ । तन्मिध्यादृष्टा—गु १ मि, जो १ प, प ६, प्रा १०, सं ४,
 ग ४, ई १ पं, का १ प्र, यो १०, वे ३, क ४, ज्ञा १, सं १ अ, व २, ले ६, न २, स १ मि, सं १, आ
 १, उ ३ ।
 ६

१, उ ३ । तत्सासादनानां—गु १ सा, जो १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ४, ई १, अ १, यो १०, म ४
 व ४ ओ वे, वे ३, क ४, ज्ञा १ विभंगः । सं १ अ, व २, ले ६ । भ १, व १ अ, सं १, आ १, उ ३ ।
 ६

मतिधृतानां—गु १, जो २ व अ । प ६ ६, प्रा १० ७, सं ४, व ४ । ई १ । अ १ प्र, यो १५ । वे ३ ।
 क ४ । ज्ञा २ म् । सं ७ । व ३ व अ । ले ६ । भ १ । म ३ उ वे या । सं १, का २ । उ ५ ।
 ६

ओ २। का १। वे ०। क ०। शा ५। म। शु। अ। म। के। सं १। यया। व ४। ले ६।
भा १

भ १। सं २। उ। क्षा। सं १। आ २। उ ९॥

उपजातरूपायप्रभृति अपोमिकेवल्लिप्यन्तं मूलोद्योगमवकुं । देशसंयमवके ओद्योगमेवकुं ।

असंयमरुग्णो गु ४। मि। सा। मि। अ। जो १४। प ६। ६। ५। ५। ४। ४।

प्रा १०। ७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। सं ४। ग ४। इ ५। का ६। यो १३। ५

आहारकद्वयरहित। वे ३। क ४। शा ६। कु। कु। वि। म। शु। अ। सं १। अ। व ३।

ले ६। भ २। सं ६। सं २। आ २। उ ९॥

६

असंयमिपय्याप्तिकर्णे गु ४। मि। सा। मि। अ। जो ७। प। प ६। ५। ४। प्रा १०।

९। ८। ७। ६। ४। सं ४। ग ४। इ ५। का ६। यो १०। म ४। वा ४। ओ। का। वे। का।

वे ३। क ४। शा ६। कु। कु। वि। म। शु। अ। सं १। अ। व ३। ले ६। भ २। सं ६। १०

मि। सा। मि। उ। वे। सा। सं २। आ १। उ ९॥

असंयमि अपय्याप्तिकर्णे गु ३। मि। सा। अ। जो ७। अ। प ६। ५। ४। अ। प्रा ७। ७।

१। ६। ५। ४। ३। सं ४। ग ४। इ ५। का ६। यो ३। ओ। मि। वे। मि। का। वे ३। क ४।

शा ५। कु। कु। म। शु। अ। सं १। अ। व ३। च। अ। अ। ले २। क ५। भ २। सं ५।

भा ६

मि। सा। उ। वे। सा। सं २। आ २। उ ८॥

१५

मिथ्यादृष्टिप्रभृति असंयतसम्यग्दृष्टिपय्याप्तं मूलोद्योगमवकुं । इतु संयममागर्णं समाप्त-
मावुतु ॥

ग १ म। इ १ र्वा। का १ न। यो ११ म ४ व ४ ओ २ का १। वे ०। क ०। सा ५ म शु अ म के।
सं १ य। व ४। ले ६। भ १। स २ उ या। सं १। आ २। उ ९। उपजातरूपायप्रभृति देश-

संयतानां च मूलोद्योगः ।

२०

असंयतानां—गु ४ मि सा मि अ। जो १४। प ६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा १०। ७। ९।

७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। सं ४। इ ५। का ६। यो १३ आहारकद्वयं नहि। वे ३। क ४।

शा ६ कु कु वि म शु अ। सं १ अ। व ३। ले ६। भ २। स ६। सं २। आ २। उ ९। उत्तर्याप्तानां—

६

गु ४ मि सा मि अ। जो ७। प ६। ५। ४। प्रा १०। ९। ८। ७। ६। ४। सं ४। ग ४। इ ५।

का ६। यो १० म ४ व ४ ओ १ वे १। वे ३। क ४। शा ६ कु कु वि म शु अ। सं १ अ। व ३। २५

ले ६। भ २। स ६ मि सा मि उ वे या। सं २। आ १। उ ९। उत्तर्याप्तानां—गु ३ मि सा अ।

६

जो ७ अ। प ६। ५। ४। प्रा ७। ७। ६। ५। ४। ३। सं ४। ग ४। इ ५। का ६। यो ३

ओमि वेमि का। वे ३। क ४। शा ५ कु कु म शु अ। सं १ अ। व ३ च अ अ। ले २ क ५। भ २,

भा ६

स ५ मि सा उ वे या, सं २, आ २, उ ८। मिथ्यादृष्टिप्रभृतिप्रसंगं मूलोद्योगो भवति, संयममागर्णा मता ।

दर्शनानुवादे ओपालापो भवति—

३०

अवधिदर्शनिगच्छे । गु ९ । जो २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग ४ ।
इ १ । पं । का १ प्र । यो १५ । वे ३ । क ४ । जा ४ । म । थु । अ । म । सं ७ । व १ । अवधि-
दर्शन । ले ६ । भ १ । सं ३ । उ । वे ४ । सं १ । आ २ । उ ५ ॥

अवधिदर्शनिपर्म्यन्तिकम् । गु ९ । जो १ प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इ १ । पं ।
का १ प्र । यो ११ । म ४ । व ४ । ओ का । वे का । आ का । वे ३ । क ४ । जा ४ । म । थु । ५
अ । म । सं ७ । व १ । अवधि । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ५ ॥

अवधिदर्शनिअपर्म्यन्तिकम् । गु २ । अ । प्र । जो १ । प ६ । अ प्रा ७ । सं ४ । ग ४ ।
इ १ पं । का १ प्र । यो ४ । ओ मि । वे मि । आ मि । का । वे २ । पुं । पं । क ४ । जा ३ ।
म । थु । अ । सं ३ । अ । सा । ले । व १ अवधि । ले २ । भ १ । सं ३ । सं १ ।
भा ६
आ २ । उ ४ ॥

१०

“असंयतप्रभृतिधीनकषायपर्म्यन्तं अवधितानवके पेञ्चर्त्ते वस्तव्यमवकुं । केवलदर्शनिगे
केवलदर्शनिगे केवलज्ञानिगे पेञ्चर्त्ते वस्तव्यमवकुं । इतु दर्शनमार्गार्थं समाप्तमावुदु ॥

लेदयानुवादोऽङ्ग गुणस्थानालाघं मूलोपवन्तवकुं । विशेषमावुर्बोद्धे अयोनिगुणस्थानमित्ति ।
कृष्णलेदयानुवादे । गु ४ । मि । सा । मि । अ । जो १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० ।
७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो १३ । वे ३ । १५
क ४ । जा ६ । कु । कु । वि । म । थु । अ । सं १ । अ । व ३ । च । अ । अ । ले ६ । भ २ ।
भा १ कृ
सं ६ । मि । सा । मि । उ । वे । सा । सं २ । आ २ । उ ९ ॥

कृष्णलेदयपर्म्यन्तिकम् । गु ४ । मि । सा । मि । अ । जो ७ । प । प ६ । ५ । ४ ।

अवधिदर्शनिना—गु ९, जो २ प अ, प ६, ६, प्रा १०, ७, सं ४ । ग ४, इ १ पं, का १ प्र,
यो १५, वे ३, क ४, जा ४ म थु अ म, सं ७, व १ अ, ले ६ । भ १, सं ३ उ वे सा, सं १, आ २, २०

उ ५ । तत्पर्याप्तानां—गु ९, जो १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ४, इ १ पं, का १ प्र, यो ११ म ४, व ४,
ओ १, वं १, आ १, वे ३, क ४, जा ४ म थु अ म, सं ७, व १ अ, ले ६ । भ १ । सं ३, सं १, आ १,

उ ५ । तत्पर्याप्तानां—गु २ अ प्र, जो १ अ, प ६ अ, प्रा ७, सं ४, ग ४, इ ५, का १ प्र, यो ४ ओ मि
वं मि आ मि का, वे २ पुं न, क ४, जा ३ म थु अ, सं ३ अ सा ले, व १ अ, ले २, भ २, सं ३, सं १ ।

आ २, उ ४ । असंयतात् धीनकषायांतं अवधिज्ञानिवत् । केवलदर्शनिनां केवलज्ञानिवत् । दर्शनमार्गणा
गदा । लेदयानुवादो गुणस्थानालाघो मूलोपवत् । अयोनिगुणस्थानं नास्ति ।

कृष्णलेदयानां—गु ४ मि सा मि अ । जो १४ । प ६, ६, ५, ५, ४, ४, प्रा १०, ७, ९, ८, ६,
७, ५, ६, ४, ४, ३, सं ४, ग ४, इ ५, का ६, यो १३, वे ३, क ४, जा ६ कु कु वि म थु अ,
सं १ अ, व ३ व अ अ, ले ६ । भ २ । सं ६ मि सा मि उ वे सा, सं २, आ २, उ ९ । तत्पर्याप्तानां—
भा १ कृ

२५

अवधिरसंनिपन्नाः गु ९। जो २। प। अ। प ६। ६। प्रा १०। ७। सं ४। ग ४।
ई १। प। का १। यो १५। ये ३। क ४। जा ४। मा। थु। अ। मा। सं ७। द १। अवधि-
रसं। से ६। भ १। सं ३। उ। वे। सा। सं १। आ २। उ ५॥

अवधिरसंनिपन्नाः क्रम्ये ॥ गु ९। जो १। प। प ६। प्रा १०। सं ४। ग ४। ई १। प।
का १। यो ११। म ४। व ४। जो का। वे का। आ का। ये ३। क ४। जा ४। मा। थु। ५
अ। मा। सं ७। द १। अवधि। से ६। भ १। सं ३। सं १। आ १। उ ५॥

अवधिरसंनिपन्नाः क्रम्ये ॥ गु २। अ। प्रा। जो १। प ६। अ प्रा ७। सं ४। ग ४।
ई १। प। का १। यो ८। जो मि। ये मि। आ मि। का। ये २। पुं। पं। क ४। जा ३।
मा। थु। अ। सं ३। अ। सा। छे। द १। अवधि। से २। भ १। सं ३। सं १।
आ २। उ ४॥ भा ६

“असंपन्नभूतिस्तो न कृपा उपपद्यते अवधिज्ञानरुके येन ते वस्तव्यमवहुं। केवलज्ञानिणे
केवलज्ञानिणे केवलज्ञानिणे येन ते वस्तव्यमवहुं। इतु दर्शनमार्गार्थं समाप्तमावुतु ॥

छंदसानुवाहोऽनु गुणरसानां पं मुलोपवर्तकं। विशेषमानुवेदोऽवे अयोगिगुणस्यानमित्तं।
कृष्णछेदवानां गु ४। मि। सा। मि। अ। जो १४। प ६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा १०।
७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। सं ४। ग ४। ई ५। का ९। यो १३। ये ३। १५
क ४। जा ६। कु। कु। वि। म। म। अ। सं १। अ। व ३। घ। अ। अ। से ६। भ २।
भा १ कु
मं ६। मि। सा। मि। उ। वे। सा। सं २। आ २। उ ९॥

हृष्यतेऽवयवपन्नाः क्रम्ये ॥ गु ४। मि। सा। मि। अ। जो ७। प। प ६। ५। ४।

अवधिरसंनिता—गु ९, जो २ व अ, प ९, ९, प्रा १०, ७, सं ४। ग ४, ई १ पं, का १ व,
यो १५, वे ३, क ४, आ ४ म थु अ म, सं ७, द १ अ, से ६। भ १, छ ३ उ वे सा, सं १, आ २, २०

उ ५। तत्पदीशाना—गु ९, जो १ व, प ९, प्रा १०, सं ४, ग ४, ई १ पं, का १ व, यो ११ म ४, व ४,
जो १, वे १, आ १, वे ३, क ४, आ ४ म थु अ म, सं ७, द १ अ, से ६। भ १। छ ३, सं १, आ १,

उ ५। तत्पदीशाना—गु २ अ प्र, जो १ अ, प ९ अ, प्रा ७, सं ४, ग ४, ई ५, का १ व, यो ४ जो मि
वे मि आ मि वा, वे २ पुं अ, क ४, आ ३ म थु अ, छ ३ अ सा छे, द १ अ, से २, भ २, छ ३, सं १।

या २, उ ४। असंपन्नं दीनकृपायां अवधिज्ञानिवत्। केवलज्ञानिणे केवलज्ञानिवत्। दर्शनमार्गणा २५
गता। छेदसानुवाहे गुणरसानां पं मुलोपवत्। अयोगिगुणस्यानं नास्ति।

कृष्णछेदवानां—गु ४ मि सा मि अ। जो १४। प ९, ९, ५, ५, ४, ४, प्रा १०, ७, ९, ८, ९,
३, ५, ९, ४, ४, ३, सं ४, ग ४, ई ५, का ९, यो १३, वे ३, क ४, आ ६ कु कु वि म थु अ,
सं १ अ, द १ व अ अ, से ६। भ २। छ ३ मि सा मि उ वे सा, सं २, आ २, उ ९। तत्पदीशाना—
भा १ कु

जा २। कु। कु। सं १। अ। द २। ले २ क गु। भ २। सं १। मि। सं २। आ २। उ ४॥
भा १ कृ

कृष्णलेद्यासासादनये। गु १। सासा। जी २। प। अ। प ६। ६। प्रा १०। ७। सं ४।
ग ४। इं १। पं। का १ प्र। यो १३। आहारद्वयरहित। वे ३। क ४। जा ३। कु। कु। वि।
सं १। अ। द २। ले ६। भ १। सं १। सासा। सं १। आ २। उ ५॥
भा १ कृ

कृष्णलेद्यासासादनपम्यामिकर्गे। गु १। सा। जी १। प। प ६। प्रा १०। सं ४। ग ३ ५
न। ति। म। इं १। पं। का १ प्र। यो १०। म ४। वा ४। ओ का। वे का। वे ३। क ४।
जा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। द २। ले ६। भ १। सं १। सासा। सं १। आ २। उ ५॥
भा १ कृ

कृष्णलेद्यासासादनापम्यामिकर्गे। गु १। सा। जी १। अ। प ६। अ। प्रा ७। अ।
सं ४। ग ३। ति। म। वे। इं १। पं। का १ प्र। यो ३। ओ मि। वे मि। का। वे ३।
क ४। जा २। सं १। अ। द २। ले २ क गु। भ १। सं १। सासा। सं १। आ २। उ ४॥ १०
भा १ कृ

कृष्णलेद्यामिथ्रम। गु १ मिथ्र। जी १ प। प ६। प। प्रा १०। सं ४। ग ३। न। ति।
म। देवगतिपौष्टु कृष्णलेद्ये पम्यामिकर्गे संभवित्तु। अपम्यामिकालबोद्धिमधनिल्ल। इं १। पं।
का १ प्र। यो १०। म ४। वा ४। ओ का। वे का। वे ३। क ४। जा ३। मिथ्रानगळु।
सं १। अ। द २। घ। अ। ले ६। भ १। सं १। मिथ्रवि। सं १। आ १। उ ५॥
भा १ कृ

कृष्णलेद्यासंतयतसम्यग्दृष्टिमन्त्रो। गु १। अ सं। जी २। प। अ। प ६। ६। प्रा १०। १५
७। सं ४। ग ३। न। ति। म। कृष्णलेद्यासंतयते। देवगति संभवित्तु। इं १ पं। का १ प्र।

वे ३, क ४, जा २, कु कु, सं १। सं १ अ, द २, ले २ क गु। भ २, सं १ मि, सं २, आ २, उ ४।
भा १ कृ

उत्सासादनार्ता—गु १ सा, जी २ प अ, प ६, ६, प्रा १०, ७, सं ४, ग ४, इं १ पं, का १ प्र, यो १३
आहारद्वयानावाद्। वे ३, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, द २, ले ६, भ १, सं १ सा, सं १, आ २,
भा १ कृ

उ ५। उत्तर्यानिर्ता—गु १ सा, जी १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ३ न ति म, इं १ पं, का १ प्र, यो १० २०
म ४ व ४ ओ वे, वे ३, क ४। जा ३ कु कु वि। सं १ अ, द २, ले ६। भ १, सा १ सा, सं १, आ १,
भा १

उ ५। उत्तर्यानिर्ता—गु १ सा, जी १ अ, प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, ग ३ वि म रे, इं १ पं, का १ प्र,
यो ३ ओ मि वे मि का, वे ३, क ४, जा २ कु कु, सं १ अ, द २, प अ ले २ क गु। म १, सं १ सा,
भा १ कृ

सं १, आ २, उ ४। उन्मिथ्राणां—गु १ मिथ्र, जी १ पं, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ३ न ति म, देवगती
पयस्ते कृष्णलेद्या अपयस्ते मिथ्रगुणस्थानं च नहि। इं १ पं, का १ प्र, यो १० म ४ व ४ ओ वे, वे ३, २५
क ४, जा ३ मिथ्राणि, सं १ अ, द २ प अ, ले ६, भ १, सं १ मिथ्र, सं १, आ १, उ ५। उत्तरयत्नानां—
भा १ कृ

गु १ अ सं। जी २ प अ, प ६, ६, प्रा १०, ७, सं ४, ग ३ न ति म सेषां देवगतिर्नहि। इं १ पं, का १ प्र,
१३१

कपोतलेश्या पय्याप्तिकर्गो । गु ४ । मि । सा । मि । ख । जो ७ । प । प ६ । ५ । ४ ।
 प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । ४ । सं ४ । ग ३ । न । ति । म । अशुभलेश्याऽपय्याप्तिकर्गे देवगति
 संभविसदु । भवनत्रयादिवैकान्तितुं पय्याप्तिकालदोळु शुभलेश्यरेप्युदरिदं । इ ५ । का ६ ।
 यो १० । म ४ । वा ४ । ओ का । वै का । वे ३ । क ४ । जा ६ । कु । कु । वि । म । मृ । अ ।
 सं १ । अ । व ३ । ले ६ । भ २ । सं ६ । मि । सा । मि । उ । वे । क्षा । सं २ । आ १ । उ ९ ॥ ५
 भा १

कपोतलेश्या अपय्याप्तिकर्गो । गु ३ । मि । सा । ख । जो ७ । अ । प ६ । ५ । ४ । अ ।
 प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो ३ । ओ मि । ये मि । का ।
 वे ३ । क ४ । जा ५ । कु । कु । म । मृ । अ । सं । अ । व ३ । च । अ । अ । ले २ क शु ।
 भा १ क
 भ २ । सं २ । मि । सा । वे । क्षा । सं २ । आ २ । उ ८ ॥

कपोतलेश्यामिष्यादृष्टिगन्धो । गु १ । मि । जो १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० । १०
 ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो १३ । वे ३ ।
 क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । च । अ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि ।
 भा १ क
 आ २ । उ ५ ॥

कपोतलेश्यामिष्यादृष्टिपय्याप्तिकर्गो । गु १ । मि । जो ७ । प । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० ।
 ९ । ८ । ७ । ६ । ४ । सं ४ । ग ३ । न । ति । म । इ ५ । का ६ । यो १० । म ४ । या ४ । ओ १५
 का । वै का । वे ३ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । च । अ । ले ६ । भ २ ।
 भा १ क
 सं १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ ॥

उत्पय्याप्तानां—गु ४ मि सा मि अ, जो ७ प, प ६, ५, ४, प्रा १०, ९, ८, ७, ६, ४, सं ४, म ३ न ति म,
 देवगतिर्नहि भवनत्रयदेवानामपि पय्याप्तिकाले शुभलेश्यात्वात्, इ ५, का ६, यो १० म ४ व ४ ओ वै, वे ३,
 क ४, जा ६ कु कु वि म मृ अ, सं १ अ, व ३, ले ६ भ २, स ६ मि सा मि उ वे क्षा, सं २, आ १, २०
 भा १ क

उ १ । उत्पय्याप्तानां—गु ३ मि सा अ, जो ७ अ, प ६, ५, ४ अ । प्रा ७, ७, ६, ५, ४, ३, सं ४, ग ४,
 इ ५, का ६, यो ३ ओ मि वै मि का, वे ३, क ४, जा ६ कु कु वि म मृ अ, सं १ अ, द ३ व अ अ,
 ले २ क शु, भ २, स ४ मि सा वे क्षा, सं २, आ २, उ ८ । तन्मिष्यादृष्ट्या—गु १ मि, जो १४, प
 भा १ क
 ६, ६, ५, ५, ४, ४, प्रा १०, ७, ९, ७, ८, ६, ७, ५, ६, ४, ४, ३, सं ४, ग ४, इ ५, का ६, यो १३,
 वे ३, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, द २ व अ, ले ६ भ २, स १ मि, सं २, आ २, उ ५ । २५
 भा १ क

उत्पय्याप्तानां—गु १ मि, जो ७ प, प ६, ५, ४, प्रा १०, ९, ८, ७, ६, ४, सं ४, म ३ न ति म, इ ५,
 का १, यो १० म ४ व ४ ओ वै, वे ३, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, द २ व अ, ले ६ भ २,
 भा १ क

कपोतलेदयानसंपतसाम्यदुष्टिगन्धे । गु १ । अं । जो २ । पा । न । प ६ । ६ । प्रा १० ।
 ७ । सं ४ । ग ३ । न । ति । म । ई १ । पं । का १ । त्र । यो १३ । जो २ । बे २ । म ४ । वा ४ ।
 का १ । ये ३ । क ४ । सा ३ । म । धु । ज । सं १ । ज । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । नं १ ।
 भा १ क
 आ १ । उ ६ ॥

कपोतलेदयानसंपतसाम्यदुष्टिगन्धे । गु १ । अं । जो १ । पा । प ६ । प्रा १० ।
 सं ४ । ग ३ । न । ति । म । ई १ । पं । का १ । त्र । यो १० । म ४ । वा ४ । नं १ । जो १ ।
 ये ३ । क ४ । सा ३ । म । धु । ज । सं १ । ज । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । प्रा २ । उ ६ ॥
 भा १ क

कपोतलेदयानसंपतसाम्यदुष्टिगन्धे । गु १ । अं । जो १ । पा । प ६ । ज । प्रा ३ । म । सं ४ ।
 ग ३ । न । ति । म । ई १ । पं । का १ । त्र । यो ३ । जो १ । नं १ । म । म । का । ये २ । पु । म ।
 क ४ । सा ३ । सं १ । ज । व ३ । ले २ क गु । भ १ । सं २ । बे । धा । सं १ । प्रा २ । उ ६ ॥
 भा १ क

तेजोलेदयानसंपतसाम्यदुष्टिगन्धे । गु ७ । जो २ । पा । ज । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ ।
 ग ३ । म । ति । वे । ई १ । पं । का १ । त्र । यो १५ । बे ३ । क ४ । प्रा ७ । केयतरहित । नं ५ ।
 अ । वे । सा । छे । पा । व ३ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ । प्रा २ । उ १० ॥
 भा १ ले

तेजोलेदयानसंपतसाम्यदुष्टिगन्धे । गु ७ । जो १ । पा । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ३ । ति । म । वे ।
 ई १ । पं । का १ । त्र । यो ११ । म ४ । वा ४ । जो १ । नं १ । प्रा १ । बे ३ । क ४ ।
 प्रा ७ । केयतरहित । नं ५ । अ । वे । सा । छे । पा । व ३ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ ।
 भा १ ले
 आ १ । उ १० ॥

क ४, प्रा ३ विधावि, सं १ म, व २, ले ६, भ १, व १ विध, सं १, प्रा १, उ ५ । अमराना—
 भा १ क

गु १ म, जो २ व म, प ६, ६, प्रा १०, उ, सं ४, व ३ व विध, ई १ पं, का १ प, यो १३ म व ३
 जो २ बे २ वा १, बे ३, क ४, प्रा ३ म धु म, नं १ म, व ३, ले ६, भ १, व ३, सं ३, प्रा २, १०
 भा १ क

उ ६ । उदराना—गु १ म, जो १ म, प ६, प्रा १०, सं ४, व ३ व विध, ई १ पं, का १ प,
 यो १० म ४ व ४ जो १, बे ३, क ४, प्रा ३ म धु म, नं १ म, व ३, ले ६, भ १, व ३, सं ३,
 भा १ क

म १, उ ६ । उदराना—गु १ म, जो १ म, प ६ म, प्रा ३ म, सं ४, व ३ व विध, ई १ पं,
 का १ प, यो १ म विध व ४, बे ३, पु ४, क ४, प्रा ३, सं ३ म, व ३, ले २ क गु । म १, व ३
 भा १ क

बे धा । सं १, प्रा २, उ ६ । तेजोलेदयान—गु ७, जो २ व म, प ६ ६, प्रा १०, सं ४, व ३ व विध १५
 ई १ पं, का १ प, यो १५, बे ३, क ४, प्रा ७ व ४ व ३, सं ५ म व ३ व ३, ले ६, भ २,
 भा १ ले

म १, सं १, प्रा २, उ १० । उदराना—गु ७, जो १ म, प ६, प्रा १०, सं ४, व ३ व विध २,

का १। ये ३। क ४। ज्ञा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले ६। भ १। सं १।
सासादनवृत्ति। सं १। आ २। उ ५॥
भा १ ते

तेजोलेश्यासासादनपर्व्याप्तिकर्णे। गु १। सा। जी १। प। प ६। प्रा १०। सं ४।
ग ३। ति म दे। इ १। पं। का १। यो १०। म ४। वा ४। औ का। वै का। ये ३।
क ४। ज्ञा ३। कु। कु। वि। सं १। व २। ले ६। भ १। सं १। सासा। सं १। आ १।
उ ५॥
भा १ ते

तेजोलेश्यासासादनपर्व्याप्तिकर्णे। गु १। सासा। जी १। अ। प ६। अ। प्रा ७। अ।
सं ४। ग १। दे। इ १। पं। का १। यो २। वै मि। का। वे २। स्त्री पुं। क ४। ज्ञा २।
सं १। अ। व २। ले २। क ४। भ १। सं १। सासा। सं १। आ २। उ ४॥
भा १ ते

तेजोलेश्यासम्यग्मिथ्यावृष्टिगन्धे। गु १। मिथ। जी १। प। प ६। प्रा १०। सं ४। ग ३।
ति। म। दे। इ १। का १। यो १०। ये ३। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व २। ले ६। भ १।
सं १। मिथ। सं १। आ १। उ ५॥
भा १ ते

तेजोलेश्यासम्यगसंयतसम्यग्मिथ्यावृष्टिगन्धे। गु १। अ सं। जी १। प। अ। प ६। दे। प्रा १०। उ।
सं ४। ग ३। ति। म। दे। इ १। का १। यो १२। वे ३। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व ३।
ले ६। भ १। सं ३। सं १। आ २। उ ६॥
भा १ ते

तेजोलेश्यापर्व्याप्तिसंयतगणे। गु १। असं। जी १। प। प ६। प्रा १०। सं ४। ग ३।
प्रा १०। उ। सं ४। ग ३। ति म दे। इ १। पं। का १। यो १२। म ४। व ४। औ १। वै २। का १।
वे ३। क ४। ज्ञा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले ६। भ १। स १। सा। सं १। आ २। उ ५।
भा १ ते

सत्यप्राप्तानां—गु १। सा। जी १। प। प ६। प्रा १०। सं ४। ग ३। ति म दे। इ १। पं। का १। यो
१०। म ४। व ४। औ १। वै ३। क ४। ज्ञा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले ६। भ १। स १। सा।
भा १ ते

सं १। आ १। उ ५। सदप्राप्तानां—गु १। सा। जी १। अ। प ६। अ। प्रा ७। अ। सं ४। ग १। दे।
इ १। पं। का १। यो २। वै मि। का। वे २। स्त्री पुं। क ४। ज्ञा २। सं १। अ। व २। ले २। क ४।
भा १ ते

भ १। स १। सा। सं १। आ २। उ ४। सम्यग्मिथ्यादृष्टां—गु १। मिथ। जी १। प। प ६। प्रा १०। सं ४।
ग ३। ति म दे। इ १। पं। का १। यो १०। म ४। व ४। वै औ। वे ३। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व २।
ले ६। भ १। स १। मिथ। सं १। आ १। उ ५। असंप्राप्तानां—गु १। अ। जी २। प। अ। प ६।
भा १ ते

प्रा १०। उ। सं ४। ग ३। ति म दे। इ १। पं। का १। यो १२। वे ३। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ।
व ३। ले ६। भ १। स ३। सं १। आ २। उ ६। सत्यप्राप्तानां—गु १। अ। जी १। प। प ६। प्रा
भा १ ते

५

१०

१५

२०

२५

पद्मलेस्याजीवगन्धो गु७। जी२। प। अ। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग३।
ति। म। दे। इ१। का१। यो१५। वे३। क४। ज्ञा७। सं५। अ। दे। सा। छे। प।
व३। ले६। भ२। सं६। सं१। आ२। उ१०॥
भा १ पद्य

पद्मलेस्यापर्व्यान्तिकर्णे गु७। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग३। ति। म। दे।
इ१। का१। यो११। म४। वा४। ओ०। का। वै०। का। आ०। का। वे३। क४। ज्ञा७। सं५।
अ। दे। सा। छे। प। व३। ले६। भ२। सं६। सं१। आ१। उ१०॥
भा १ पद्य

पद्मलेस्यापर्व्यान्तिकर्णे गु४। मि। सा। अ। प्र। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ।
सं४। ग२। म। दे। इ१। पं। का१। यो४। ओ०। मि। वै०। मि। का। आ०। मि। वे१।
पुं। क४। ह्या५। कु। कु। म। श्रु। अ। सं३। अ। सा। छे। व३। ले२। क४।
भा १ पद्य
भ२। सं५। मि। सा। उ। वे। ह्या। सं१। आ२। उ८॥ १०

पद्मलेस्यामिष्यावृष्टिगन्धो गु१। मि। जी२। प। अ। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४।
ग३। ति। म। दे। इ१। का१। यो१२। म४। वा४। ओ०। का१। वे२। का१। वे३।
क४। ह्या३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ले६। भ२। सं१। मि। सं१।
भा १ प
आ२। उ५॥

पद्मलेस्यामिष्यावृष्टिपर्व्यान्तिके गु१। जी१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग३। ति। १५
म। दे। इ१। का१। यो१०। म४। वा४। ओ०। का। वै०। का। वे३। क४। ह्या३। कु।
कु। वि। सं१। अ। व२। ले६। भ२। सं१। मि। सं१। आ१। उ५॥
भा १ प

आ१। उ७। पद्मलेस्यानां—गु७। जी२। प६। प६६। प्रा१०७। सं४। ग३। ति। म। दे।
इ१। का१। यो१५। वे३। क४। ज्ञा७। सं५। अ। दे। सा। छे। प। व३। ले६। भ२। उ६।
भा १ प

सं१। आ२। उ१०। तत्पर्व्यान्तानां—गु७। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग३। ति। म। दे। इ१। २०
का१। यो११। म४। वा४। ओ०। का। वै०। का। वे३। क४। ज्ञा७। सं५। अ। दे। सा। छे। प। व३। ले६।
भा १ प

भ२। उ६। सं१। आ१। उ१०। तत्पर्व्यान्तानां—गु४। मि। सा। अ। प्र। जी१। अ। प६। अ।
प्रा७। अ। सं४। ग२। म। दे। इ१। पं। का१। यो४। ओ०। मि। वै०। मि। का। आ०। मि। वे१। पुं। क४।
ह्या५। कु। कु। म। श्रु। अ। सं३। अ। सा। छे। व३। ले२। क४। भ२। सं५। मि। सा। उ। वे। ह्या। सं१।
भा १ प

आ२। उ८। तन्निष्पादनां—गु१। मि। जी२। प६। प६६। प्रा१०। ७। सं४। ग३। ति। २५
म। दे। इ१। का१। यो१२। म४। वा४। ओ०। का। वै०। का। वे३। क४। ज्ञा७। कु। कु। वि। सं१। अ।
व२। ले६। भ२। सं१। मि। सं१। आ२। उ५। तत्पर्व्यान्तानां—गु१। मि। जी१। प। प६।
भा १ प

प्रा१०। सं४। ग३। ति। म। दे। इ१। का१। यो१०। म४। वा४। ओ०। का। वै०। का। वे३। क४।
१३२

पयलेइयाऽसंयतसम्पत्तिपञ्चमे । गु १ । असं । जो २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० ।
७ । सं ४ । प । ग ३ । ति । म । वे । इं १ । का १ । यो १३ । बाह्यरूपपरहित । वे ३ । क ४ ।
मा ३ । म । भु । अ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं ३ । उ । ये । धा । सं १ ।
भा १ प
आ २ । उ ६ ॥

पयलेइयाऽसंयतसम्पत्तिपञ्चमे । गु १ । अ । जो १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ३ ।
ति । म । वे । इं १ । का १ । योग १० । म ४ । या ४ । ओ का । वे का । वे ३ । क ४ । मा ३ ।
सं १ । अ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । उ । ये । धा । सं १ । आ १ । उ ६ ॥
भा १ प

पयलेइयाऽसंयतसम्पत्तिपञ्चमे । गु १ । असं । जो १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ ।
ग २ । म । वे । इं १ । का १ । यो ३ । ओ मि । बे मि । का । ये १ । क ४ । मा ३ । म । भु ।
अ । सं १ । अ । व ३ । ले २ क पु । भ १ । सं ३ । उ । ये । धा । सं १ । आ २ । उ ६ ॥
भा १ प

पयलेइयावेद्यप्रतिपञ्चमे गु १ । वेद्य । जो १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग २ । म । ति ।
इं १ । का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । मा ३ । म । भु । अ । सं १ । वेद्य । व ३ । ले ६ । भ १ ।
सं ३ । सं १ । आ १ । उ ६ ॥
भा १ प

पयलेइया-प्रमत्तसंयतमो । गु १ । प्र । जो २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० । उ । सं ४ ।
गति १ । म । इं १ । का १ । यो ११ । म ४ । या ४ । ओ का १ । आ का २ । ये ३ । क ४ ।
मा ४ । म । भु । अ । म । र्च ३ । सा । छे । प । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । उ । ये । धा ।
भा १ प
सं १ । आ १ । उ ७ ॥

मिथानि, सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ मिथ । सं १ । आ १, उ ५ । अर्धवर्णानां—गु १ अ, जी
भा १ प
२ प अ, प ६, ६, प्रा १०, उ, सं ४, म ३ ति म वे, इं १, का १ । यो १३ बाह्यरूपमात्रा, वे ३, क ४,
मा ३ म भु अ, सं १ अ, व ३, ले ६, भ १, सं ३ उ वे धा, सं १, आ २, उ ६ । अर्धवर्णानां—गु १ अ ।
भा १ प

जी १ प । प ६ । प्रा १० । सं ४, म ३ ति म वे । इं १ । का १ । यो १० म ४ व ४ जीवा र्धना । वे
३ । क ४ । मा ३ । सं १ अ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ उ वे धा । सं १ । आ १ । उ ६ । अर्ध-
भा १ प

पर्यायानां—गु १ अ, जी १ अ, प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, व २ म वे, इं १, का १, यो ३ ओ मि
बे मि वा, ये १ पु, क ४, आ ३ म भु अ, सं १ अ, व ३ । ले २ क पु, अ १, सं ३ उ वे धा, सं १,
भा १ प

आ २ उ ६ । देववर्णानां—गु १ वे । जो १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, व २ मि म, इं १ । का १ ।
यो ९, वे ३, क ४, आ ३ म भु अ, सं १ वे, व ३ । ले ६ । भ १, व ३, सं १, आ १, उ ६ ।
भा १ प

अपवर्णानां—गु १ प्र, जी २ प अ, प ६, ६, प्रा १० उ, सं ४, व १ म, इं १, का १ । जो ११ म ४ व
४ ओ १ आ २, वे ३, क ४ । आ ४ म भु अ म । सं १ छे प । इं १ । ले ६ । व २ । व ३ उ वे धा,
भा १ प

शुक्ललेइयामिम्यादृष्टिपम्याप्रिकर्गे । गु १ । मि । जी १ । पा । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
ग ३ । ति । म । दे । इं १ । का १ । यो १० । म ४ । वा ४ । औ का १ । वै का १ । वे ३ ।
क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं १ । आ १ ।
भा १ शु
उ ५ ॥

शुक्ललेइयामिम्यादृष्टिपम्याप्रिकर्गे । गु १ । मि । जी १ । अ । प ६ । अ । ६ । प्रा ७ । अ ।
सं ४ । ग १ । वे । इं १ । का १ । यो २ । वै मि १ । का १ । वे १ । पुं । क ४ । ज्ञा २ । ५
कु । कु । सं १ । अ । व २ । ले २ क शु । भ २ । सं १ । मि सं १ । आ २ । उ ४ ॥
भा १ शु

शुक्ललेइयासासावनर्गे । गु १ । सासा । जी २ । पा । अ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ ।
सं ४ । ग ३ । ति । म । दे । इं १ । का १ । यो १२ । म ४ । वा ४ । औ का १ । वै २ ।
का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । सासा ।
भा १ शु
सं १ । आ २ । उ ५ ॥

शुक्ललेइयापम्याप्रिसासावनसम्यादृष्टिगन्गे । गु १ । सासा । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
ग ३ । ति । म । दे । इं १ । का १ । यो १० । म ४ । वा ४ । औ का १ । वै कि का १ । वे ३ ।
क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । सासा सं १ ।
भा १ शु
आ १ । उ ५ ॥

शुक्ललेइयासासावनपम्याप्रिकर्गे । गु १ । सासा । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ ।
सं ४ । ग १ । वे । इं १ । का १ । यो २ । वै मि । का १ । वे १ । पुं । क ४ । ज्ञा २ । कु । कु ।
सं १ । अ । व २ । ले २ क शु । भ १ । सं १ । सासा । सं १ । आ २ । उ ४ ॥
भा १ शु

आ २, उ ५ । तदपर्याप्तानां—गु १ मि, जी १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ३ ति म दे, इं १, का १,
यो १० म ४ व ४ औ १ वै १, वे ३, क ४, ज्ञा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २, ले ६, भ २, स १, सं १,
भा १ शु

आ १, उ ५ । तदपर्याप्तानां—गु १ मि, जी १ अ, प ६ । प्रा ७, सं ४, ग १ दे । इं १, का १, यो २, वै मि २०
का, वे १ पुं, क ४, ज्ञा २ कु कु, सं १ अ, व २, ले २ क शु । भ २, स १ वि, सं १, आ २, उ ४ ।
भा १ शु

सासावनानां—गु १ सा, जी २ प, अ, प ६, ६, प्रा १०, ७ । सं ४ । ग ३ ति म दे, इं १, का १,
यो १२ म ४ व ४ औ १ वै २ का १, वे ३, क ४, ज्ञा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २ । ले ६ ।
भा १ शु

भ १, स १ सा, सं १, आ २, उ ५ । तदपर्याप्तानां—गु १ सा, जी १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ३
ति म दे, इं १, का १, यो १० म ४, व ४ औ वै, वे ३, क ४, ज्ञा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २, ले ६,
भा १ शु

भ १, स १ सा, सं १, आ १, उ ५ । तदपर्याप्तानां—गु १ सा, जी १ अ, प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४,
ग १ दे, इं १, का १ । यो २ वै मि का । वे १ पुं, क ४, ज्ञा २ कु कु, सं १ अ व २, ले २ क शु ।
भा १ शु

गुप्तलेश्याग्रमतसंयतयोः । गु १ । प्र। जी २ । प। अ। प ६ । ६ । प्रा १० । ७ ।
सं ४ । म। इ १ । का १ । यो ११ । म ४ । वा ४ । ओ का १ । आ २ । वे ३ । क ४ । जा ४ ।
सं ३ । सा । छे । प । द ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ७ ॥
भा १ गु

गुप्तलेश्याग्रमतसंयतयोः । गु १ । अ प्र। जी १ । प। प ६ । प्रा १० । सं ३ । ग १ ।
म। इ १ । का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ४ । सं ३ । सा । छे । प । द ३ । ले ६ । भ १ ।
भा १ गु
सं ३ । सं १ । आ १ । उ ७ ॥

गुप्तलेश्या अदुष्यकरणप्रभृतिसयोगकेवलितुल्यस्थानपर्यंतं ओषभंगमेवकुं । अलेश्यारप्य
अयोगकेवलिसिद्धपरमेष्ठिगठिगे ओषभंगमवकुं । इंतु लेश्यामार्गार्णं समाप्तमाहुवु ॥

मध्यानुयावदोक्तु भव्यरुज्जमे ओषभंगमवकुं । मभव्यसिद्धरुज्जमे । गु १ । मि । जी १४ ।
प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ ।
ग ४ । इ ५ । का ६ । यो १३ । वे ३ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । द २ ।
ले ६ । भ १ । अव्य । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ५ ॥
६

अभव्यपर्याप्तिकर्गो । गु १ । मि । जी ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ ।
४ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो १० । म ४ । वा ४ । ओ का १ । वे का १ । वे ३ । क ४ ।
जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । द २ । ले ६ । भ १ । अव्य । सं १ । मि । सं २ ।
भा ६

आ १ । उ ५ ॥

सं १ । वे । द ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ६ । प्रपत्तानां—गु १ प्र। जी २ प। अ।
भा १ गु
प ६ ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ म। इ १ । का १ । यो ११ म ४ व ४ ओ १ । आ २ । वे ३ ।
क ४ । जा ४ । सं ३ । सा छे प, द ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ७ । अग्रमतानां—गु १
भा १ गु

अ प्र। जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ । ग १ म। इ १ । का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ४ । सं ३ सा
छे प । द ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ७ । अपूर्वकरणात्सयोगपर्यंतानां अलेश्यायोमि-
भा १ गु

मिदानां च ओषभंगी भवति । लेश्यामार्गणा यथा ।
मध्यानुवादे मध्यानामोषभंगः । अव्यवर्तानां—गु १ मि । जी १४ प ६ ६ ५ ५ ४ ४ । प्रा १० ७
९ ७, ८ ७ ५ ६ ४ ४ ३, सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो १३ । वे ३ । क ४ । जा ३ कु कु वि ।
सं १ । अ । द २ । ले ६ । भ १ । अ । सं १ मि । सं २ । आ २ । उ ५ । तत्पर्याप्तानां—गु १ मि ।
६

जी ७ । प ६ ५ ४ । प्रा १० ९ ८ ७ ६ ४ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो १० म ४ व ४ ओ व ।
वे ३ । क ४ । जा ३ कु कु वि । सं १ । अ । द २ । ले ६ । भ १ । अ । सं १ मि । सं २ । आ १ ।
६

अभिहितमनुस्तिथये । गु११। प्रो२। प६। इ। प्रा१०। उ। य। र। र।
 म४। प४। इ१। वं। अ१। ब। मो१५। वे३। क४। मा५। त७। द४। ने९।
 ध१। म१। न१। आ३। उ५॥

[illegible][illegible]

प्रादिकगम्यादुद्धि समंयमे । गु १ । ज । जो २ । य । य । य ६ । ६ । प्रा १० । ३ ।
 मं ४ । य ४ । इ १ । र । का १ । ज । दो १३ । आहारदुपरहित । ये ३ । क ४ । ता ३ । म । भु ।
 म । मं १ । ज । क ३ । य । ज । ज । मे ६ । मं १ । र । ता । रं १ । मा २ । उ ६ ॥
 पा ६

[illegible]

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-विभाग-मुंबई-१
 संस्कृत-भाषा-शिक्षण-विभाग-मुंबई-१

४९। प्रत्ययः—यु ११। सो १। व ९। आ १०। इ १। ए ४। अ ४। इ १। का १। य। सो ११।
 म ४। व ४। यी १। वा, वे १। क ४। आ ९। म ५। न ५। कं। ए ४। इ ४। ओ ९। भ १। य १। वा। २०

पं० १। आ १। उ १। उदाहरण—गु १ क प्र १। जी १ ख १ व १। प्र ७, २। सं ४। ग ४।
 ई १। वा १। य १। सो १। शीवि दीवि भाषिका। वे २ ग, पुं। क ४। का ४ म भु म के। सं
 ४ म ण उ प। द ४ म क क के। मे २ क धु। म १। व १। छा १। र १। आ २। उ ८। उदाहरण—
 भा १

१३ अ। वीरवम। न ६६। आ १०७। सं ४। म ४। ई १२। पा १३। यो १३ माहाद्व्या-
पाशु। ई ३। क ४। का ३ मयुज। रं १ अ। व ३ पमम। से ६। म १। घ १ सा। सं १। २५

५२। ५६। दादासाभा—गु ६५। जी १। ५६। दा १०। धं ४। ग ४। रं १। पा १५।
 दा १०। म ४। क ४। जी १। १। से ३। क ४। सा ३। म ५। रं १। व ३। प ५। छे ६।

वेदकसम्यग्दृष्टसंयतसम्यग्दृष्टिगण्यो । गु १ । अ सं । जी २ प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० ।
७ । सं ४ । ग ४ । ई १ पं । का १ अ । यो १३ । म ४ । वा ४ । जी २ । वे २ । का १ । वे ३ ।
क ४ । जा ३ । म । श्रु । अ । सं १ । अ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं १ । वे । सं १ । आ २ ।
भा ६

उ ६ ॥

वेदकसम्यग्दृष्टसंयतसम्यग्दृष्टिगण्यो । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । ५
ई १ । का १ । यो १० । म ४ । वा ४ । जी १ । वे १ । का १ । वे ३ । क ४ । जा ३ । म । श्रु ।
अ । सं १ । अ संयम । व ३ । ले ६ । भ १ । सं १ । वे । सं १ । आ १ । उ ६ ॥
भा ६

वेदकसम्यग्दृष्टसंयतसम्यग्दृष्टिगण्यो । गु १ । अ । जी १ । अ । प ६ । प्रा ७ ।
अ । सं ४ । ग ४ । ई १ । का १ । यो ३ । जी मि । वे मि । का । वे २ । पं । पुं । क ४ ।
जा ३ । म । श्रु । अ । सं १ । अ । व ३ । ले २ । भ १ । सं १ । वे । सं १ । आ २ । उ ६ ॥ १०
भा ६

वेदकसम्यग्दृष्टिवेशावृत्तिगण्यो । गु १ । वेश । जी १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग २ ।
ति । म । ई १ । पं । का १ अ । यो २ । म ४ । वा ४ । जी १ । वे ३ । क ४ । जा ३ ।
सं १ । वेश । य ३ । ले ६ । भ १ । सं १ । वे । सं १ । आ १ । उ ६ ॥
भा ६

वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तगो । गु १ । प्रम । जी २ । प अ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ ।
सं ४ । ग १ । म । ई १ । पं । का १ अ । यो ११ । म ४ । वा ४ । जी १ । आ २ । वे ३ । १५
क ४ । जा ४ । म । श्रु । अ । म । सं ३ । सा । छे । प । व ३ । ले ६ । भ १ । सं १ । वे ।
भा ३
सं १ । आ १ । उ ७ ॥

सं ४, ग ४, ई १ पं, का १ अ, यो ४ जी मि वे मि आ मि का, वे २ न पुं, क ४, जा ३ म श्रु अ, छे ३ अ
छा छे, व ३, ले २, भ १, सं १ वे, सं १, आ १, उ ६ । तदुपपत्तानां—गु १ अ, जी २ प, अ प ६, ६ ।

प्रा १०, ७ सं ४, ग ४, ई १ पं, का १ अ, यो १३ म ४ व ४ जी २ व २ का १, वे ३, क ४, जा ३ म श्रु २०
अ, छे ३ अ, व ३, ले ६, भ १, सं १ वे, सं १, आ २, उ ६ । तदुपपत्तानां—गु १ अ, जी १ प, प ६,
भा ६

प्रा १०, सं ४, ग ४, ई १, का १ अ, यो १०, म ४ व ४ जी १ व १, वे ३, क ४, जा ३ म श्रु अ,
छे ३ अ, व ३, ले ६, भ १, सं १ वे, सं १, आ १, उ ६ । तदुपपत्तानां—गु १ अ, जी १ अ । प ६ अ,
भा ६

प्रा ७ अ, सं ४, ग ४, ई १, का १, यो ३ जी मि वे मि का, वे २ पं पुं, क ४, जा ३ म श्रु अ, छे ३ अ,
व ३, ले २ क पु, भ १, सं १ वे, सं १, आ २, उ ६ । तदुपपत्तानां—गु १ वे, जी १ प, प ६, प्रा १०, २५
भा ६

सं ४, ग २ ति म, ई १ पं, का १ अ, यो ९ म ४ व ४ जी, वे ३, क ४, जा ३, छे ३ वे, व ३ ले ६,
भ १, सं १ वे, सं १, आ १, उ ६ । प्रमत्तानां—गु १ प्र, जी २ प अ, प ६ ६, प्रा १० ७, सं ४, म १ म,
ई १ पं, का १ अ, यो ११ म ४ व ४ जी, आ २, वे ३, क ४, जा ४ म श्रु अ अ, सं ३ छा छे प,

उपशमसम्पद्दृष्टसंयतापर्याप्तकर्मो । गु१। अ। जो१। प६। प्रा१०। सं४।
ग४। इ१। का१। यो१०। म४। वा४। ओ१। वे१। क४। जा३।
सं१। अ। व३। ले६। भ१। सं१। उ। सं१। आ१। उ६॥
भा ६

उपशमसम्पद्दृष्टसंयतापर्याप्तकर्मो । गु१। अ। जो१। प६। अ। प्रा७। सं४।
ग१। वे१। इ१। का१। यो२। वे१। मि१। का१। वे१। पुं। क४। जा३। सं१। अ। ५
व३। ले२। क४। भ१। सं१। उ। सं१। आ२। उ६॥
भा ३

उपशमसम्पद्दृष्टिशक्तिगन्धो । गु१। वे। जो१। प६। प्रा१०। सं४। ग२। ति।
म। इ१। का१। यो९। म४। व४। ओ१। वे३। क४। जा३। सं१। वे। व३।
ले६। भ१। सं१। उ। सं१। आ१। उ६॥
भा ३

उपशमसम्पद्दृष्टिप्रमत्तगो । गु१। प्रम। जो१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। म।
इ१। का१। यो९। म४। व४। ओ१। वे३। क४। जा४। म। भु। अ। म। १०
सं२। सा। छे। व३। ले६। भ१। सं१। उ। सं१। आ१। उ७॥
भा ३

उपशमसम्पद्दृष्टिप्रमत्तसंयतगो । गु१। अप्र। जो१। प६। प्रा१०। सं३।
ग१। म। इ१। का१। यो९। म४। वा४। ओ१। वे३। क४। जा४। सं२।
सा। छे। व३। ले६। भ१। सं१। उ। सं१। आ१। उ७॥
भा २

उपशमसम्पद्दृष्टि अपूर्वकरणप्रभृति उपशान्तकपायछास्यवीतरामपर्यंत ओषभंगमकृं ।
मिथ्यादृष्टिासादननिधिरुचिगन्धो ओषभंगमेयपुत्रु । इंतु सम्पत्स्वमार्गणे समाममादुदु ॥

वत्सर्पान्तां—गु१। अ। जो१। प६। प्रा१०। सं४। ग४। इ१। का१। यो१०। म४। व४। ओ१।
वे१। वे३। क४। जा३। सं१। अ। व३। ले६। भ१। सं१। उ। सं१। आ१। उ६।
भा ६

वत्सर्पान्तां—गु१। अ। जो१। अ। प६। अ। प्रा७। सं४। ग१। वे३। इ१। का१। यो२। वे१।
मि१। का१। वे१। पुं। क४। जा३। सं१। अ। व३। ले२। क४। भ१। सं१। उ। सं१। आ२। उ६। २०
भा ३

वेदप्रदानां—गु१। वे। जो१। प६। प्रा१०। सं४। य२। ति। म। इ१। का१। यो९। म४। व४।
ओ१। वे३। क४। जा३। सं१। वे। व३। ले६। भ१। सं१। उ। सं१। आ१। उ६।
भा ३

प्रमत्तानां—गु१। प्र। जो१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। म। इ१। का१। यो९। म४। व४। ओ१।
वे३। क४। जा४। म। भु। अ। म। सं२। सा। छे। व३। ले६। भ१। सं१। उ। सं१। आ१। उ७।
भा ३

अप्रमत्तानां—गु१। अ। जो१। प६। प्रा१०। सं३। ग१। म। इ१। का१। यो९। म४। व४। ओ१।
वे३। क४। जा४। सं२। सा। छे। व३। ले६। भ१। सं१। उ। सं१। आ१। उ७।
भा ३

अपूर्वकरणादुपशान्तकपायपर्यंतमोषभंगः । तथा मिथ्यादृष्टिासादननिधिरुचो नानवि । सम्पत्स्वमार्गणा गता ।

संतिमिष्यादृष्टपय्यामिकम्गे । गु १ । मि । जी १ । अ । प ६ । प्रा ७ । सं ४ । ग ४ ।
 ई १ । पं । का १ प्र । यो ३ । बी मि १ । वी मि १ । का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । कु । कु ।
 सं १ । अ । व २ । च । अ । ले २ क शु । भ २ । सं १ । मि । सं १ । आ २ । उ ४ ॥
 भा ६

संतितासावनगे । गु १ । सासा । जी २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग ४ ।
 ई १ । पं । का १ प्र । यो १३ । म ४ । या ४ । बी २ । वे २ । का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ ।
 कु । कु । बि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । सासा । सं १ । आ २ । उ ५ ॥
 भा ६

संतिपय्याप्तिकसासावनगे । गु १ । सासा । जी १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ ।
 ई १ । पं । का १ प्र । यो १० । म ४ । या ४ । बी का १ । वी १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ ।
 कु । कु । बि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । सा । सं १ । आ १ । उ ५ ॥
 भा ६

संतितासावनसम्यदृष्टपय्यामिकम्गे । गु १ । सासा । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । १०
 अ । सं ४ । ग ३ । ति । म । वे । ई १ । का १ । यो ३ । बी मि । वी मि । का । वे ३ । क ४ ।
 ज्ञा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । ले २ क शु । भ १ । सं १ । सासा । सं १ । आ २ । उ ४ ॥
 भा ६

संतिमिश्रगे । गु १ । मिथ । जी १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । ई १ । का १ ।
 यो १० । म ४ । प ४ । बी का १ । वी का १ । आहारकद्वयमिधद्वय-कामर्गणरहित । वे ३ ।
 क ४ । ज्ञा ३ । मिथ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । मिथ । सं १ । आ १ । उ ५ ॥ १५
 भा ६

सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ । स १ मि । सं १ । आ १ । उ ५ । तदवर्गानां-गु १ मि । जी १ अ ।
 प ६ । प्रा ७ । सं ४ । ग ४ । ई १ पं । का १ व । यो ३ बीमि वीमि का । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ कु कु ।
 सं १ अ । व २ । ले २ क शु । भ २ । स १ मि । सं १ । आ २ । उ ४ । साधारणानां-गु १ सा । जी २ ।
 प ६ ६ । प्रा १० ७ । सं ४ । य ४ । ई १ । का १ व । यो १३ म ४ व ४ बी २ वे २ का १ । वे ३ ।
 क ४ । ज्ञा ३ कु कु बि । सं १ अ । व २ । ले ६ । भ १ । स १ सा । स १ । आ २ । उ ५ । २०
 तदवर्गानां-गु १ सा । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । य ४ । ई १ पं । का १ व । यो १० म ४ व ४
 बी १ वे १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ कु कु बि । सं १ अ । व २ । ले ६ । भ १ । स १ सा । सं १ ।
 आ १ । उ ५ । तदवर्गानां-गु १ सा । जी १ अ । प ६ अ । प्रा ७ अ । सं ४ । य ३ डि म वे । ई १ ।
 का १ । यो ३ बीमि वीमि का । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ कु कु । सं १ अ । व २ । ले २ । अ १ । स १ सा ।
 सं १ । आ २ । उ ४ । मिथानां-गु १ मिथं । जी १ प । प ६ । प्रा १० । सं ४ । य ४ । ई १ । का १ । २५
 यो १० । बीमारिकमिथ-वैक्रियकमिथकामेकाहारकद्वयानावा । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ मिथमि । सं १ अ ।

असंख्यपर्याप्तिकर्णे। गु१। मि। जो६। अ। प५। ४। अ। प्रा७। ६। ५। ४। ३।
 सं४। ग१। ति। ६५। का६। यो२। ओ। मि। का। वे३। क४। जा२। सं१। अ।
 ६२। ले२। क५। भ२। सं१। मि। सं१। असंति। आ२। उ४॥
 भा३ अणु

संख्यसंख्यपदेशरहितसयोपायोपि सिद्धलक्षणे मूलोपभंगमवर्त्तु। इतु संज्ञिमागणे
 समानभावु ॥

आहारानुपादबोज् आहारिण्ये। गु१३। जो१४। प६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०।
 ७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। ४। २। सं४। ग४। ६५। का६। यो१४।
 कर्मणकाययोगरहित। वे३। क४। जा८। सं७। द४। ले६। भ२। सं६। सं२।
 ६

आ१। उ१२॥

आहारिण्यपर्याप्तिकर्णे। गु१३। जो७। प६। ५। ४। प्रा१०। ९। ८। ७। ६। ५। १०
 ४। ४। सं४। ग४। ६५। का६। यो११। म४। या४। ओ। का। वे। का। आ। का।
 वे३। क४। जा८। सं७। द४। ले६। भ२। सं६। सं२। आ१। उ१२॥
 भा६

आहारिण्यपर्याप्तिकर्णे। गु५। मि। सा। अ। प्र। सयो। जो७। अ। प६। ५। ४। अ।
 प्रा७। ७। ६। ५। ४। ३। २। सं४। ग४। ६५। का६। यो३। ओ। मि। वे। मि। आ। मि।
 वे३। क४। जा६। कु। कु। म। प्र। अ। के। सं४। अ। सा। छे। यया। व४। १५
 छे१। क। भ२। सं५। मि। सा। उ। वे। क्षा। सं२। आ१। उ१०॥
 भा६

तदपर्याप्तानां-गु१। मि। जो६। संज्ञिपर्याप्तो नहि। प५। ४। प्रा९। ८। ७। ६। ४। सं४। ग१। ति।
 ६५। वा६। यो२। ओ। अनुमयवचनं। वे३। क४। जा२। कु। कु। सं१। अ। व२। ले६। भ२। सं१
 भा४ अ३ गु१

मि। सं१। अ। आ१। उ४। तदपर्याप्तानां-गु१। मि। जो६। अ। प४। अ। प्रा७। ६। ५। ४। ३।
 सं४। ग१। ति। ६५। का६। यो२। ओ। मि। का। वे३। क४। जा२। सं१। अ। व२। ले२। क५। २०
 भा३ अणु

भ२। सं१। मि। सं१। अ। आ२। उ४। संज्ञासंख्यपदेशरहितानां सयोपायोपिसिद्धानां मूलोपभंगः।
 संज्ञिमागणा गदा।

आहारानुपादे आहारिणां-गु१३। जो१४। प६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०। ७। ९। ७। ८। ६। ७।
 ५। ६। ४। ४। ३। ४। २। सं४। ग४। ६५। का६। यो१४। कर्मणो नहि। वे३। क४। जा८। सं७। द४।
 ले६। भ२। सं६। सं२। आ१। उ१२। तदपर्याप्तानां-गु१३। जो७। प६। ५। ४। प्रा१०। ९। ८। ७। २५

६। ४। ४। सं४। ग४। ६५। का६। यो११। म४। व४। ओ। वे। आ। वे३। क४। जा८। सं७। द४। ले६।
 भ२। सं६। सं२। आ१। उ१२। तदपर्याप्तानां-गु५। मि। सा। अ। प्र। स। जो७। अ। प६। ५। ४। प्रा७।
 ७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। ४। २। सं४। ग४। ६५। का६। यो३। ओ। मि। वे। मि। आ। मि।
 वे३। क४। जा६। कु। कु। म। प्र। अ। के। सं४। अ। सा। छे। यया। व४। ले१। क। भ२। सं५। मि। सा। उ। वे। क्षा। सं२। आ१। उ१०।
 अ। के। सं४। अ। सा। छे। यया। व४। ले१। क। भ२। सं५। मि। सा। उ। वे। क्षा। सं२। आ१। उ१०।
 भा६

ले ६। भ १। सं २। उ। क्षा। सं १। आ १। उ ७॥
भा १

आहारिपुंशतकपायघोतरामछद्यस्यंगे। गु १। उप। जी १। प ६। प्रा १०। सं ०।
ग १। म। ई १। पं। का १। त्र। यो ९। म ४। वा ४। जी का १। वे ०। क ०। आ ४। म
शु। अ। म। सं १। यया। व ३। अ। अ। म। ले ६। भ १। सं २। उ। क्षा। सं १।
भा १
आ १। उ ७॥

५

आहारिस्त्रीणकपायछद्यस्यवोतरामंगे। गु १। क्षीण। जी १। प ६। प्रा १०। सं ०।
ग १। म। ई १। पं। का १। त्र। यो ९। वे ०। क ०। आ ४। सं १। यया। व ३। ले ६।
भा १
ग १। सं १। क्षा। सं १। आ १। उ ७॥

आहारिसयोगकेवलभट्टारकंगे। गु १ सयोग के। जी २। प। अ। प ६। ६। प्रा ४। २।
सं ०। ग १। म। ई १। पं। का १। त्र। यो ६। म २। वा २। ओ २। वे ०। क ०। १०
आ १। के। सं १। यया। व १ के। ले ६। भ १। सं १। क्षा। सं ०। आ १। उ २॥
भा १

ई प्रकारदिवं सयोगकेवलभट्टारकंगे पय्यन्तापय्यन्ताकापद्वयं वक्तव्यमनुबु ॥

अनाहारिगणगे। गु ५। नि सा। अ। सयोग अपोयि। जी ८। एकत्रियवावरसूक्ष्मद्वित्रि-
भतुर्ध्वत्रियसंशयसंतिगळे अय्यन्तापय्यन्ताकंगे अयोगिकेवलरहितमागि। प ६। ५। ४। प्रा ७। ७।
६। ५। ४। ३। २। सं ४। म ४। ई ५। का ६। यो १। कर्मण। वे ३। क ४। १५
आ ६। कु। कु। म। अ। के। सं २। अर्धममनु यमाख्यातनुं। व ४। ले १। पु। भ २।
भा ६
सं ५। नि। सा। उ। वे। क्षा। सं २। वा १। अनाहार उ १०॥

पु. व ३, ले ६, भ १, स २, उ क्षा, सं १, आ १, उ ७। उपशतकपायाणां-गु १ उ, जी १, प ६,
प्रा १०, सं ०, ग १ म, ई १, का १, यो ९ म ४ व ४ जी, वे ०, क ४, आ ४ म पु अ म, सं १ य,
व ३ य अ अ, ले ६, भ १, स २ उ क्षा, सं १, आ १, उ ७। शीणकपायाणां-गु १ क्षी, जी १, प ६, २०
प्रा १०, सं ४, ग १ म, ई १, का १ त्र, यो ९, वे ०, क ०, आ ४, सं १ य, व ३, ले ६, भ १, स १ या,
सं १, वा १, उ ७। सयोगिकेवलना-गु १ सयोग, जी २ प अ, प ६ ६, प्रा ४, २, सं ०, ग १ म, ई १,
का १ त्र, यो ६ म २ व २ जी २, वे ०, क ०, आ १ के, सं १ य, व १ के, ले ६, भ १, स १ या,
सं ०, आ १, उ २। एषामपय्यन्ताकापोर्णि वक्तव्यः।

अनाहारिणां-गु ५ नि सा अ अ अ, जी ८ स्यामपय्यन्ता एकत्रियोदिनः, प ६, ५, ४, प्रा ७ ७ ६ २
५ ४ ३ २ १, सं ४, म ४, ई ५, का ६, यो १, वे १, क ४, आ ६ कु कु म अ अ के, सं २ अ न, व ४,

बन्धोदिकेतिमन्त्रारम्भे। गु० अ०। जो०। प०। प्रा०। आयुष्य। सं०।
प०। मा०। इ०। प०। का०। वा०। यो०। क०। प्रा०। के०। सं०। य०। द०। के०। ले०।
भा०

म०। सं०। प्रा०। सं०। प्रा०। अनाहार। उ०॥

अनाहारि विदुषर्भेष्टिज्यो। गु०। जो०। प०। प्रा०। यति०। सिद्धगति। इ०।
का०। यो०। वे०। क०। प्रा०। के०। म०। द०। के०। ले०। भ०। सं०। प्रा०। सं०।
मा०। अनाहार। उ०॥

१। १। प०। मा०। सं०। प्रा०। अ०। उ०। बन्धोदिकेतिमन्त्रा—गु० अ०। जो०। प०। प्रा०। आयुः।
सं०। प०। मा०। इ०। प०। का०। वा०। यो०। क०। प्रा०। के०। सं०। य०। द०। के०। ले०।
भा०

प०। प०। मा०। सं०। प्रा०। अ०। उ०। विद्वान्—गु०। जो०। प०। प्रा०। सं०। य०।
विद्वान्। इ०। का०। यो०। वे०। क०। प्रा०। के०। सं०। य०। द०। के०। ले०। भ०। सं०।
मा०। सं०। प्रा०। अ०। उ०। उ०॥

[अथ क्याटिपुत टीका और उद्गुताती संज्ञित टीकाये गुणस्थानों और मार्गस्थानोंमें बीज
प्रकृत्यामोष कथन दार्शनिक अष्टांगके द्वारा किया है। उन छहोंमें से प्रथम सेवे उक्त प्रकृत्यामोषों
कथन किया गया है।

प्रकृत्या और उनके कनेट अष्टांग इस प्रकार है।

गु (गुणस्थान १४) जो (जीवमात्र १४) प (पर्याप्त १) प्रा (प्राय १०) सं (संज्ञा ४)
व (वति ४) इ (इन्द्रिय ५) का (काय १) यो (योग १५) वे (वेद १) क (कथाय ४) मा
(मातृ ८) सं (संज्ञा ७) द (दार्शनिक ४) भ (भव्य-अव्यवहार) प (सम्प्रदाय १)
सं (संज्ञा-अव्यवहार) का (आहारक-अनाहारक)।

इन बीज प्रकृत्यामोषोंमें बड़ी विविधता उत्पन्न होती है। उनमें मुख्यता संकेताधारके आगे संख्यामुखक २०
वर्ग विभक्त हो गयी है। १५० में पर्याप्त गुणस्थानशालोंके गुणस्थान १४ कहे हैं। जीवमात्र ७
पर्याप्त सम्प्रदाय बने हैं। पर्याप्त १, ५, ४ बने हैं क्योंकि संवेन्द्रियके छह, विकसेन्द्रियके पाँच और
एकेन्द्रियके चार पर्याप्तियाँ होती हैं। प्राय १०, ९, ८, ७, ६, ५, ४, ३ बने हैं क्योंकि संज्ञाके दस प्राय
होते हैं जिनके एक-एक इन्द्रिय चटती जाती है। एकेन्द्रियके चार ही प्राय होते हैं। उपयोगकेवलीके चार
और अयोगकेवलीके एक प्राय होता है। संज्ञा चारों होती हैं। वति चार, इन्द्रिय एकसे लेकर पाँच तक, २५
काय छह, योग अष्टा (चार मन, चार बचन, तीन पूर्णकाय योग) होते हैं। वेद तीन, कथाय चार,
ज्ञान आठ (पाँच और तीन मिथ्या), संवय मातृ (संवय मार्गवाके सात भेद हैं), दर्शन चार, उद्गता छह,
व्यवहार-अव्यवहार, सम्प्रदाय मार्गवाके ६ भेद, संज्ञा-अव्यवहार, आहारक होते हैं। उपयोग बारह—आठ ज्ञान,
चार दर्शन। अष्टांग गुणस्थानशालोंके गुणस्थान पाँच हैं—मिथ्यात्व, साक्षात्त, अव्यवहार, प्रमत्त (आहारककी
अज्ञाता), उपयोगकेवली (समुद्रपात अवस्थाकी अज्ञाता)। जीव समाप्त सात अपर्याप्त होते हैं। पर्याप्त १५०
पाँच चार हैं। प्राय अपर्याप्त अवस्थाये सात, सात, छह, पाँच, चार, तीन, दो होते हैं। एकेन्द्रि
और समुद्रपात केवलीके दो होते हैं। संज्ञा चार, वति चार, इन्द्रिय पाँच,
होते हैं—औसत्त मिथ, वैयर्थिक मिथ, आहारक मिथ,
है—तुल्य, तुल्य, वति, पुन, अवधि, केवल। संवय

विदिषुवसमसम्मत्तं सेदीदो दिण्ण अविरदादोसु ।

सगसगलेस्सामरिदे देव अपज्जचगेव हवे ॥७३०॥

द्वितीयोपशमसम्पत्त्वं श्रेणितोऽवतीर्णाविरताविषु । स्वस्वलेदयामृते देवापम्यामरे एव भवेत् ॥

असंयतादिगळोऽङ्गु द्वितीयोपशमसम्पत्त्वसंभवमेवुपशमधेणियिदमिच्छिदु संक्लेषवश- ५
विदमसंयमादियोऽङ्गु परिपतितरादरोऽङ्गु निश्चैसुद्ध । आ द्वितीयोपशमसम्पत्त्वदृष्टिगच्छस्य
असंयतादिगळु तंतम्म लेदयेगळोऽङ्गुद्वि मृतरादरादोदे देवापम्यामिकासंयतसम्पत्त्वदृष्टिगळे नियम-
विदमप्यरेके दोदे बद्धदेवापुष्यंगलदे मरणमुपशमश्रेणियोऽङ्गु संभविसु । इतरापुत्त्रवयवद्वापुष्यंगे
देशसंयममुं सकलसंयममुं संभविसदप्युर्वारिव ।

सिद्धाणं सिद्धगई केवलजाणं च दंसणं खुयियं ।

सम्मत्तमणाहारं उवजोणाणकमपउत्ती ॥७३१॥

सिद्धानां सिद्धगतिः केवलज्ञानं च दर्शनं ध्यायिकं, सम्पत्त्वमनाहारः उपयोगयोरक्रम- १०
प्रवृत्तिः ॥

सिद्धपरमेष्ठिगळो सिद्धगतियुं केवलज्ञानमुं केवलदर्शनमुं ध्यायिकसम्पत्त्वमुं अनाहारमुं १५
ज्ञानदर्शनोपयोगद्वयपक्वक्रमप्रवृत्तिपुमरिपत्त्वदृष्टुं ।

मत्तं सिद्धपरमेष्ठिगळु :—

गुणजीवठाणरहिआ सण्णापज्जचिपाणपरिहीणा ।

सेसणवमग्गणूणा सिद्धा सुद्धा सदा होंति ॥७३२॥

गुणजीवस्थानरहिताः संसापम्यामिप्राणपरिहीताः । शेषवममार्गमोनाः सिद्धाः शुद्धा- २०
सत्त्वा भवन्ति ॥

द्वितीयोपशमसम्पत्त्वं संभवति । केव ? उपशमधेणितः संक्लेषवशादयः अवशेषविषु अवशेषेषु ।
ते च असंयतादयः स्वस्वलेदयया श्रियन्ते तदा देवापम्यामसयता एव नियमेन भवति । कुतः ? बद्धदेवामुपश-
मस्य उपशमधेण्या मरणाभावात् । शेषत्रिविधानुष्कारा च देशकलसंयमयोरवशेषभावात् ॥७३०॥

सिद्धपरमेष्ठिनां सिद्धगतिः केवलज्ञानं केवलदर्शनं ध्यायिकसम्पत्त्वं अनाहारः ज्ञानदर्शनोपयोग- २५
योरक्रमप्रवृत्तिश्च भवति ॥७३१॥

संक्लेष परिणामोक्तिं वरा उपशमधेणिते नाथे उवरनेपर असंयत आदि गुणस्थानांमे २५
द्वितीयोपशम सम्पत्त्व होता है । वे असंयत आदि जब अपनी-अपनी लेदयाके अनुसार
मरण करते हैं तो नियमसे देवगतिमें अपर्याप्त असंयत ही होते हैं, क्योंकि जिसने देवायुका
पन्थ किया है उसके सिवा अन्यका उपशमश्रेणिमें मरण नहीं होता । जिन्होंने देवायुके
सिवाय अन्य तीन आयुमें-से किसी एकका भी पन्थ किया है उसके तो देवसंयम और
सकलसंयम ही नहीं होते ॥७३०॥

सिद्ध परमेष्ठोके सिद्धगति, केवलज्ञान, केवलदर्शन, ध्यायिक सम्पत्त्व, अनाहार और ३०
ज्ञानोपयोग दर्शनोपयोगकी एक साथ प्रवृत्ति, इतनी प्ररूपनार्थ होती है ॥७३१॥

अज्जज्जसेणगुणगणसमूहसंधारि अजियसेणगुरु ।

ध्रुवणगुरु जस्स गुरु सो राजो गोम्मटो जयतु ॥७३४॥

आर्यसिंसेनगुणगणसमूह संधार्यजितसेनगुरुभुवनगुरुस्य गुरु स राजो य गोम्मटो जयतु ॥

इंतु भगवदहंत्परमेस्वर चारुचरणारविद्वंद्ववंनानंदितपुण्यपुंजायमानधोमद्रायराजगुरु-
भुमंडलाचार्यमहापादवादोऽकररायवाविपितामह सकलविद्वज्जनचक्रवर्तिभोमदभमसूरिसिद्धांत-
चक्रवर्ति श्रोपादयंकजरजोरंजित सलाहपटुं श्रीमत्केजवर्णधिरक्षितमप्य गोम्मटसारकर्णाटकवृत्ति-
जीवतत्त्वप्रदीपिकेपोळ आछापाधिकारं निरूपितमादुतु ॥

गणनेगळिविहं गुणगणमणिभूषण धर्मभूषणश्रीमुनि स-। द्गणिगुपरोपदि नानोणहे गुणि
गोम्मटसारवृत्तियं केदाण्यं ।

१०

आर्यसिंसेनगुणगणसमूहसंधार्यजितसेनगुरुः भुवनगुरुस्य गुरुः स राजा गोम्मटो जयतु ॥७३४॥

इत्याचार्यधीनेमिवन्त्रिद्विद्वान्तचक्रवर्तिविरचिताय गोम्मटसारपरनामपञ्चसंग्रहवृत्तौ जीवतत्त्वप्रदीपिका-
ख्यायां जीवकाण्डे विद्यतिप्ररूपणायु बोधादेशयोर्विद्यतिप्ररूपणालाप नाम
द्वाविद्यतिमयोऽधिकारः समाप्तः ॥२२॥

आर्य आर्यसेनके गुण और गणसमूहको धारण करनेवाले अजितसेन—जो तीन
जगत्के गुरु हैं—वे जिसके गुरु हैं वह गोम्मटराज चामुण्डराय जयवन्त हों ॥७३४॥

१५

इस प्रकार आचार्य श्री नेमिचन्द्र विरचित गोम्मटसार अपर नाम पंचसंग्रहकी सयवान् अहंम्ह देव
परमेस्वरके सुन्दर चरणकमलोंकी वन्दनासे प्राप्त पुण्यके पुंजस्वरूप राजगुरु मण्डकाराचार्य महावादी
श्री भमयनम्हो सिद्धान्तचक्रवर्तीके चरणकमलोंकी धूलिसे शोभित कजरटवाले श्री केशववर्णी-
के द्वारा रचित गोम्मटसार कर्णाटवृत्ति जीवतत्त्व प्रदीपिकाकी अनुसारिणी संस्कृतकी
रचना इसकी अनुसारिणी पं. टीकरमल रचित सम्बन्धानचन्द्रिका नामक
भाषाटीकाकी अनुसारिणी हिन्दी भाषा टीकामें जीवकाण्डके अन्तर्गत
दीर्घ प्ररूपणार्थमेंसे आछाप प्ररूपण नामक बाहंसर्वा
अधिकार सम्पूर्ण हुआ ॥२१॥

२०

गो० जीवकाण्डभाषानुक्रमणी

	गाथा	श्ल		गाथा	श्ल
अ			अवरो वरसंलगुणे	१०८	१८८
अह भोमरंमनेन न	११६	२७०	अवरोमाहममाणे	१०९	१८९
अहममनेनममपुन	७१४	१०७५	अवरो जुतामंतो	५६०	७८७
अहममनेनममपुन	८०	१५१	अवरोमाहममाणे	१८०	६२४
आमोवेगु म मनी	५६४	८०३	अवरोहिषेतादीहं	१७९	६२४
अहमं कामाच	४५३	६७२	अवरोहिषेतामज्ञे	३८२	६२५
अहमोयजुसदा	५७५	८१०	अवरं तु ओहिषेतं	३८१	६२५
अहमिदमममिदममा	६८	११७	अवरं दम्भमुरासिम	४५१	६७१
अहमस पातीक्ष	३५८	५९८	अवरंमुदा सोह०	५२३	७१९
अहमं यमपहस्ता	१२९	८५५	अवरं होदि अणंतं	३८७	६२९
अहमोदियमसदा	३५१	५८१	अवरंमुदा हंति	५२०	७१८
अहममिदं होदि तु	३०१	५०७	अवरोयदिता ओही	१७०	६१७
अहमोहं वेदंती	६०	१२६	अभाषादी मंडो	२३८	३७४
अहमोहं वेदंती	४७४	६८६	अहमय नापदसण	६४	१२८
अहमं छासंयोजा	५९४	८२२	अहमयमसंयोजा	४२७	६५९
अहमं छासंयोजा	६०६	८५०	अहमयमसंयोजा	४२८	६५९
अहमं छासंयोजा	३४८	५७८	अहमयं वरमजिम	५०१	७०२
अहमं छासंयोजा	३१५	५२२	अहमिदा जह देवा	१६४	२९३
अहमं छासंयोजा	१९७	३३०	अहमिदमिममिमोदिय	३०६	५१२
अहमं छासंयोजा	११५	२०४	अहियारो पाहुदयं	३४१	५७४
अहमं छासंयोजा	२८९	४८०			
अहमं छासंयोजा	२०५	३३९			
अहमं छासंयोजा	९८	१६८			
अहमं छासंयोजा	५३२	७२५	आहममममिदं	२०४	३३६
अहमं छासंयोजा	६८९	९११	आमसं यजिमता	५८३	८१४
अहमं छासंयोजा	३८४	६२८	आमदपापदवादी	४३१	६६०
अहमं छासंयोजा	१०९	१८९	आदिमछट्टापमिह य	३२७	५५२
अहमं छासंयोजा	९९	१६९	आदिम समसदा	१९	५०
अहमं छासंयोजा	५७३	८०८	आदेते संकीणा	४	३५
अहमं छासंयोजा	१०६	१८६	आमोयमामुरकयं	३०४	५१०
अहमं छासंयोजा	१०२	१८०	आमंयपी आमवपी	२२५	३६२
अहमं छासंयोजा	३२३	५२९	आमारे मुदयने	३५६	५९१

गायानुक्रमणी

१०७२

	भाषा	पृष्ठ		भाषा	पृष्ठ
एदम्हि विभज्जते	३९८	६३८	अंतरभावप्यबहु	४९३	६९७
एदे भावा पियमा	१२	४३	अंतरभवन्नकस्सं	५५३	७८०
एयन्नसरादु उवरि	३३५	५७०	अंतोमुहुत्तकालं	५०	११२
एयमुत्तं तु जहणं	६१०	८५६	अंतोमुहुत्तमेत्ते	५३	११३
एयसविपस्मि जे अ	५८२	८१३	अंतोमुहुत्तमेत्ता	२६२	४४९
एयपदासो उवरि	३३७	५७१	अंतोमुहुत्तमेत्तो	४९	८१
एया य कोटिकोटी	११७	२०५	अंतोमुहुत्तमेत्तं	२५३	३८७
एयंतबुद्धदरसी	१६	४७			
एवं असंखलोका	३३२	५६५			
एवं उवरि विणेओ	१११	१९२	कदकफलजुदजलं वा	६१	१२६
एवं गुणसंजुत्ता	६११	८५६	कप्पववहारकप्पा	३६८	६१२
एवं तु समुत्पादे	५४७	७६२	कप्पसुराणं सग सग	४३३	६६२
			कम्मवणुत्तरवड्डिय	३४९	५७८
			कम्मइयकायजोगी	६७१	८९७
			कम्मइयवगणं धुव	४१०	६४६
			कम्मव कम्मभावं	२४१	३७५
			कम्मोराणियमिस्सं य	२६४	४५३
			काऊ षोलं किण्हं	५०२	७०३
			काऊ काऊ काऊ	५२९	७२३
			कालविसेसेणवहिद	४०८	६४५
			काले चउण्ह उद्धी	४१२	६४७
			कालो छत्सेस्साणं	५५१	७७८
			कालोत्ति य ववएसो	५८०	८१२
			कालं अस्सिय दब्बं	५७१	८०७
			किण्हवउवकाणं पुण	५२७	७२२
			किण्हवियाणं मज्झिम	५२८	७२२
			किण्हवरसेण मुदा	५२४	७२०
			किण्हा षोला वाऊ	४९३	६९८
			किण्हादिरासिमावलि	५३७	७२८
			किण्हादिलेस्सरहिया	५५६	७८४
			किण्हं सितासमाणे	२९२	४८३
			किमिरायववत्तणुयल	२८७	४७९
			कुम्भुण्यजोणीए	८२	१५५
			केवलणाणाणंतिम	५३९	७३१
			केवलणाणदिवायर	६३	१२८
			कोडिससहस्साइ	११४	२०४
			कोट्टादिकसायाणं	२९०	४८१

गाथानुक्रमणी

१०८१

	गाथा	श्रुत		गाथा	श्रुत
जोहि व जासु व जीवा	१४१	२७४	य य सच्चमोसजुतो	२१९	३५७
जोबदुगं उत्तुं	६२२	८६२	जरतिरिय लोहमाया	२१८	५०१
जोबा अनंतसंखा	५८८	८१७	जरलोएत्ति य वयणं	४५६	६७३
जोबा जोहस मेया	४७८	६८८	जरतिरियाणं ओषो	५१०	७२३
जोबाजोबं दम्बं	५६३	८०३	ज रमति अतो गिण्णं	१४७	२७८
जोबामं य य रासी	३२४	५३०	जरलद्धि अपज्जत्ते	७१६	९४०
जोबादोणंतगुणा	२४९	३८४	जबमी अनकसरगदा	२२९	३६३
जोबासो नंतगुणो	५९९	८३९	जवि इंदियकरणजुदा	१७४	३०३
जोबिदरे कम्मघये	६४३	८८२	जवरिय डु सरीरायं	२५५	४०८
जेट्टावरवहुमजिस्सम	६३२	८६८	जब य पदत्ता जोबा	६२१	८६१
जेहि अमेया जोबा	७०	१४२	जवरि विसेसं भाणे	३१९	५२६
जेहि डु लक्खिज्जंते	८	३९	जवरि य सुक्का सेस्सा	६९३	९१४
जेहि य संति ओया	२७३	३०८	जवरि समुत्तादम्मि य	५५०	७७७
जोहसिमबाणजोणिणि	२७७	४६७	जाणुवजोमजुदायं	६७६	९०१
जोहसियादो अहिया	५४०	७३१	जाणं पंचविहं पि य	६७३	९००
जोहसियंठागोही	४३७	६९४	जारपठिरिक्खपरसुर	२८८	४७९
जोगपवत्ती लेस्सा	४९०	६९७	जिक्खित्तु विक्षियमेत्तं	३८	६७
जोगे जठरवदायं	४८७	६९३	जिक्खेवे एयत्ते	७३४	१०७५
जोगं पठि जोमिदिगे	७११	९३७	जिक्खिदरवाडु सत्तय	८९	१५९
जो मेव सच्चमोसो	२२१	३५८	जिहा पयसे जट्ठे	५५	११८
जो वसवहाव विरदो	३१	६०	जिहावंचणवहुलो	५११	७०८
जत्तस्स पहं ठत्तस्स	५६७	८०५	जिहसेवणपरिणा	४९१	६९७
जंझुरीवं नरहो	१९५	३२६	जिज्जत्तं लुक्खत्तं	६०९	८५४
जं सामग्गं गहणं	४८२	६९१	जिज्जणिदा य वज्जंति	६१२	८५६
			जिज्जदरोलीयस्से	६१३	८५७
ठ			जिज्जस्स जिडेण दुराहिएण	६१५	८५८
ठागेहि वि ओणीहि	७४	१४७	जिज्जिदरमुणा अहिया	६१९	८६१
			जिज्जिदरवरमुणाणु	६१८	८६०
ण			जिज्जिदरे समविसमा	६१६	८५९
णट्ठकसाये लेस्सा	५३३	७२५	जिम्मूलसंपसाहू व	५०८	७०७
णट्ठपमाए पट्ठमा	१३९	२७१	जियस्सेत्ते केवल्लिदुम	२३६	३७३
णट्ठासेसपनादो	४६	७८	जिरया किण्हा कप्पा	४९६	६९९
ण य कुणह पक्खवायं	५१७	७१०	जिस्सेस सोममोहो	६२	१२७
ण य जे भव्वाभग्ग्या	५५९	७७७	जोलुवक्कस्ससंमुदा	५२५	७२०
ण य पत्तिपयइ परं सो	५१३	७०९	जेरइया खलु संडा	९३	१६१
ण य परिणमदि सयं सो	५७०	८०७	जेवित्थी मेव पुंयं	२७५	४६६
ण य मिच्छत्तं पत्तो	६५४	८८७	जो इंदिय आवरण	६६०	८९२

गायानुक्रमणो

१०८३

	गाथा	पृष्ठ		गाथा	पृष्ठ
दसविहसन्ने वयणे	२२०	३५७	न		
दस सण्णोणं पाप्पा	१३३	२६७			
द्विगुडमिव वा मिस्से	२२	५२	नीलुक्कस्सं समुदा	५२५	७२०
दिण्णच्छेदेणवहिद	२१५	३५१	प		
दिण्णच्छेदेणवहिद	४२१	६५४			
दिदसो पक्खो मासो	५७६	८१०	पञ्चक्खानुदयादो	३०	५९
दोब्बसि जदो पिण्णं	१५१	२८१	पञ्चक्खाने विज्जा	३४६	५७९
दुपतिगभवा हु अवरं	४५७	६७४	पज्जत्तमणुस्साणं	१५९	२८८
दुगवारपादुकादो	३४२	५७४	पज्जत्तसरोरत्तं य	१२६	२६०
दुविहं पि थपज्जत्तं	७१०	९३७	पज्जत्तस्स य उदये	१२१	२५५
देवार्थं अवहारा	६३५	८७०	पज्जत्तो पटुवणं	१२०	२५३
देवेहिं साविरेमो	६६३	८९३	पज्जत्तो पाणावि य	७०१	९१८
देवेहिं साविरेया	२६१	४४८	पज्जायवखरपदसं	३१७	५२५
देवेहिं साविरेया	२७९	४६९	पडिवादो देसोही	३७५	६२१
देसविदे पमत्तो	१३	४४	पडिवादो पुण पडमा	४४७	६६९
देसोदिस्स य अवरं	३७४	६२१	पडमन्वो अंतगदो	४०	७०
देसावहिंवरदब्बं	४१३	६४८	पटुवत्तमसहिंदाए	१४५	२७७
देसोहिं अवरदब्बं	३९४	६३६	पट्ठमं पमदपमाणं	३७	६५
देसोहिं मज्झमेदे	३९५	६३७	पणजुगले तससहिंये	७६	१४८
दोग्गणिद्धानुस्स य	६१४	८५७	पण्णत्तदिसया वत्तु	३४७	५७७
दोणं पंच य छक्के	७०५	९३३	पण्णत्तुदाल पण्णीस	३६५	६०४
दोत्तिग पमवदुत्तर	६१७	८६०	पण्णत्तपिग्गजा भावा	३३४	५६९
दंसणमोहक्खवणा	६४८	८८४	पणिदरस भोयणेण	४२६	६५८
दंसणमोहदयासो	६४९	८८५	पणुवीस बोइणार्हं	६३१	८९७
दंसणमोहवत्तमदो	६५०	८८५	पत्तेयवुद्धवित्थ	४८०	६८८
दंसणवयसामाहय	४७७	६८७	पमशिवित्थहजुदी	५४८	७७६
			पम्भस्स य सट्ठापस	५२१	७१८
			पम्भुक्कस्सं समुदा	४४८	६९९
			परमणसिद्धियमट्ठं	४८५	६९३
			परमाणु आदिमाई	५९६	८३८
			परमाणुवन्धयम्मि ण	२४५	३७९
			परमाणुहिं जणंठहिं	३९३	६३५
			परमावहिस्स भेदा	४१४	६४८
			परमावहिस्स भेदा	४१९	६५२
			परमावहिंवरखेत्ते	४१६	६४९
			परमोहिदन्वभेदा	२५२	३१५
			पत्तलियं उवहोणं		
धनुवीसदसमकदो	१६८	२९८			
धम्मगुणमग्गगाहय	१४०	२७३			
धम्मधम्मोदीणं	५६९	८०७			
धुदकोमुंभयवत्तं	५८	१२१			
धुवशदधुवखेण य	४०२	६३९			
धुवहारकम्मवग्गण	३८५	६२८			
धुवहारस्स पमाणं	३८८	६३०			
धुत्तिग छवट्ठाणे	२९४	४८८			

गायानुक्रमणी

१०८५

	गाथा	पृष्ठ		गाथा	पृष्ठ
मिष्णुसमग्रद्विषेहि	५२	११२	मिच्छंतं वेदंतो	१७	४८
नू बाउ तेउ बाऊ	७३	१४६	मिस्मुदए संमिस्सं	३०२	५०८
नू बाउ तेउ बाऊ	७२१	९४३	मिस्से पुण्णालाओ	७१८	९४२
भोगापुण्णसम्मो	५३१	७२४	भीमंउदि जो पुब्बं	६६२	८९३
			मूलम्पपोरवीजा	१८६	३१७
			मुले कंदे छल्ली	१८८	३१९
			मूलसरीरमसंखिय	६६८	८९६
			मंदो बुद्धिविहीनो	५१०	७०८
मग्गणउबओपावि य	७०३	९२०			
मग्गिहम थंसेण मुदा	५२२	७१९			
मग्गिहम थउममवयणे	६७९	९०६	य	३६४	६०३
मग्गिहमदव्वं खेतं	४५९	६७५			
मग्गिहम पदक्खरवहिद	३५५	५९१	र		
मग्ग दव्ववग्गणाण	४५२	६७२			
मग्ग दव्ववग्गणाणवि	३८६	६२९	ऊअववरे अवव	१०७	१८७
मग्गपज्जवं य णाणं	४४५	६६८	ऊउत्तरेण उत्तो	११०	१९१
मग्गपज्जवं य दुविहं	४३९	६६५	ऊसइ निदइ अण्णे	५१२	७०८
मग्गपज्जयपरिहारी	७३९	१०७२	स		
मग्गवयपाणं मूल	२२७	३६४			
मग्गवयपाण पडसी	२१७	३५५	अदि अपुण्णं मिच्छे	१२७	२९०
मग्गसहिमाणं वयणं	२२८	३६६	अपिअ अण्णी कीरइ	४८९	६९६
मग्गसि जदो पिअ्वं	१४९	२८०	अस्साणुवस्तसादो	५०५	७०४
मग्गसिणि पमत्तविरवे	७१५	९३९	अस्साणं खलु अंवा	५१८	७११
मदि आवरण खओव	१६५	२९४	ओगापासपदेसा	५८७	८१७
मदिमुदओहिमनेहिम	६७४	९०१	ओगापासपदेसा	५९१	८१८
मरणं परयेइ रणे	५१४	७०९	ओगापासपदेसे	५८९	८१७
मरदि असंखेज्जदिमं	५४४	७४६	ओगाणमसंखेज्जा	४९९	७००
मवुरंभुविदु सुई	२०१	३३३	ओगाणमसंखमिदा	३१६	५२४
मायालोहे रदिपु	६	३७	ओयस्स असंखेज्जदि	५८४	८१५
मिच्छाइदुओ जीवो	१८	४८	ख		
मिच्छाइदुओ जीवो	६५६	८८७			
मिच्छाइदुओ पावा	६२३	८६२	वग्गणराविपमार्ण	३९२	६३५
मिच्छा सावयसासण	६२४	८६३	वग्गोदयसंपादिद		
मिच्छे खलु ओदइओ	११	४२	वग्गोदयेण अणिदो		
मिच्छे ओदइओ जीवा	६९९	९१७	वत्तपदेइ कालो		
मिच्छे सासणसम्मो	६८१	९०७	वत्तादत्तपमादे		
मिच्छोदयेण मिच्छ	१५	४६			
मिच्छो सासणमिस्सो	९	४०			
मिच्छो सासणमिस्सो	६९५	९१४			

गायानुक्रमणो

१०८७

गाथा	पृष्ठ	गाथा	पृष्ठ		
सायन्त्री शीव तदवा	७५	१४७	सेतुद्विजद्वेष्टे	२८५	४७७
सायन्त्री घेरदवा	१५३	२८२	सेतुद्वारस अंसा	५१९	७१८
सायन्त्री पंविदो	१५०	२८१	सोलस सय चरतीसा	३३६	५७०
सायन्त्री त्रिपती	७८	१५०	सोवचक्रमापुनवक्रम	२६६	४५५
सायन्त्री य एव	८८	१५९	सो संजमं य विष्णुदि	२३	५२
सायन्त्री पञ्चसम	७०९	१३७	सोलसयं चरतीस	६२७	८६४
सायन्त्री सहासमेकं	९५	१६३	सोहम्मसापहारम	६३६	८७२
सायन्त्री साहारासाहारा	१९२	३२२	सोहम्मसाहारा	६३७	८७३
सायन्त्री साहारासाहारेणु	२११	३४६	सोहम्मसापानम	४३५	६६३
सायन्त्री साहारासाहारेण	१९१	३२१	संक्रमणे छट्टाणा	५०६	७०५
सायन्त्री साहारासाहारेण	६६१	८९२	संक्रमण सट्टाणप	५०४	७०४
सायन्त्री साहारासाहारेण	५९७	८३८	संगहियसपलसंजम	४७०	६८३
सायन्त्री साहारासाहारेण	७३१	१०७३	संसा सह पारारो	३५	६३
सायन्त्री साहारासाहारेण	१	२६	संसातीदा समया	४०३	६४१
सायन्त्री साहारासाहारेण	२८४	४७६	संसावसय जोषी	८१	१५४
सायन्त्री साहारासाहारेण	२९१	४८२	संसावसिहियसला	६५८	८८८
सायन्त्री साहारासाहारेण	१२४	२५७	संसावो ओषोति य	३	३४
सायन्त्री साहारासाहारेण	६५	१२९	संसावपमे वासे	४०७	६४३
सायन्त्री साहारासाहारेण	५४५	७५८	संसावसासंसाव	५८६	८१६
सायन्त्री साहारासाहारेण	२९५	४८९	संसावसासंसाव	५९८	८३९
सायन्त्री साहारासाहारेण	२८	५८	संसाविकुण स्रं	४२	७३
सायन्त्री साहारासाहारेण	३६९	६१९	संजलणकोकसाया	४५	७८
सायन्त्री साहारासाहारेण	२८२	४७३	संजलणकोकसाया	३२	६०
सायन्त्री साहारासाहारेण	३२०	५२८	संसाव सा समयं	४६०	६७६
सायन्त्री साहारासाहारेण	३२१	५२८	संसाव सा समयं	१५५	२८४
सायन्त्री साहारासाहारेण	३२२	५२९	संसाव सा समयं	५९५	८२२
सायन्त्री साहारासाहारेण	९४	१६१	ह		
सायन्त्री साहारासाहारेण	१७३	३०२	हिति होदि हृ शब्दमभं	४४३	६६७
सायन्त्री साहारासाहारेण	३७८	६२३	हेट्टा जेति जहणां	११२	१९३
सायन्त्री साहारासाहारेण	१०१	१७०	हेट्टम छप्पुवकोण	१५४	२८३
सायन्त्री साहारासाहारेण	९७	१६७	हेट्टम छप्पुवकोण	१२८	२६२
सायन्त्री साहारासाहारेण	२०८	३४१	हेट्टम छप्पुवकोण	६०१	८४२
सायन्त्री साहारासाहारेण	६९०	९११	हेट्टम छप्पुवकोण	३८९	६३०
सायन्त्री साहारासाहारेण	१५७	२८६	होदि अणतिमभाषो	५७	१२०
सायन्त्री साहारासाहारेण	६००	८४०	होदि अणतिमभाषो	६३०	८६७
सायन्त्री साहारासाहारेण	२९३	४८७	होदि अणतिमभाषो		

हति जीवकाण्डप्रकरणस्याकारादिक्रमणिकायुची ।

हिति जीवकाण्डप्रकरणस्याकारादिक्रमणिकायुक्ता ।

पद्यानुक्रमणो

१०८९

संदं सयलसमत्वं [ति. प. ११५५]	२३१	गिण्णदठ्ठायदोसा [ति. प. ११८१]	२४
		गिण्णुठ्ठायद्वंद्वर [ति. प. ११५८]	२१
ग		त	
गणरायमंतितलवर	१८	तच्चिय पंचसयाई [ति. प. १११०८]	२३३
गालयदि विनासयदि [ति. प. ११९]	११	सत्तो स्वहियकमे	५४५
गुणपरिणदासणं [ति. प. ११२१]	१४	सदप्पसन्नवाहाहारम्यं	५६
गुणयारद्वच्छेसा [ति. सा. १०५]	२४२, २४९	तत्त्वमे पदरंगुल [ति. प. १११३२]	२४२
		उसरेणु रयरेणु [ति. प. १११०५]	२३२
घ		तिरियपदे क्कणे	५४५.
घणलोगगुणसंलागा	६९२	तिविकल्पमंगुलं तं [ति. प. १११०७]	२३३
घ		व	
चउविह उवसगोहि [ति. प. ११५९]	२१	चंडपमाणंगुलए [ति. प. १११२१]	२३४
चामर दुंडुहिपीठं [ति. प. ११११३]	२३३	चंसणमोहे णट्ठे [ति. प. ११७३]	२२
छ		दीवोवहिं सेलानं [ति. प. १११११]	२३३
छणजंठ भरहणाहो [ति. प. १४८]	१९	दुगुण परित्तासंतेय [ति. सा. १०९]	२४६
छट्ठकवीए उवर्	२८९	दुविहो हवैव हेडु	१६
छन्दस्वगवपदत्वे [ति. प. ११३४]	२८९	दुसहस्सपउववदाण [ति. प. ११४६]	१८
छहि अंगुले हि पादो [ति. प. १११३४]	२३४	देवमणुस्सादीहि [ति. प. ११३७]	१७
ज		दोअट्ठ सुण्ण विप	२३५
जणिदं इदं पठिदं [ति. प. ११४०]	१७	देहावदिठव केवल	१७
जयुद्धेसे जायदि [ति. सा. ८०]	२२२	दोणि विपप्पा वुत्ति वु [ति. प. १११०]	१२
जदं अरे जवं विट्ठे	५९२	दो नेदं च परोस्सं [ति. प. ११३९]	१७
जहिंस्स जहिंस्स काले [ति. प. १११०९]	२३३	न	
जादे अणत्तणामे [ति. प. ११७४]	२३	नरकजघन्यामुष्सा	७९६
जेत्ति जि जेतमैत्तं	८०९	नात्तामीयविद्येपेयु	५५
जो ण पमाणणएहि [ति. प. ११८२]	२५	निमित्तमान्तरं ठज	८१३
जो जो रासी दिस्सदि [ति. सा. ८८]	२३०	प	
जोयण पमाण सठिद [ति. प. ११६०]	२१	पंचंवर सट्ठियाई [वसु. आ. ५७]	१८७
ठ		पंचं सराजसायो [ति. प. ११४५]	१८
ठावणमंगलमेदं [ति. प. ११२०]	१३	पंचविधे संसारे	८००
ण		पढमे मंगलकरणे [ति. प. ११२९]	१५
णामएयपदेसत्थो	८०८	पत्तेयमंगमयं	५८५
णाणं होदि पमाणं [ति. प. ११८३]	२५	पदमेत्ते गुणयारे [ति. सा. २३१]	७६७
णाणावरणणुट्ठिय [ति. प. ११७१]	२३	परमाणूहि यणंतामणैहि [ति. प. १११०२]	२३२
नामाणि ठावणाओ [ति. प. १११८]	१३	परिमिक्कमयं केवल	१४
नासदि विग्घं भीदो [ति. प. ११२७]	१५	परिहारद्विसमेत्तः	१८६

	पद्यानुक्रमणो	१०९१
सत्तामोदितुस्तद [त्रि. सा. १३९]	७५७ सुदणायभावणाए [ति. प. ११५०]	१९
सत्पादिमज्झ बवसाणएमु [ति. प. ११३१]	१६ सुद्धरकुजलतेवा	१५३
सदागिवः सदाऽकर्म	१४० सुरत्तेयरमणहरणे [ति. प. ११५५]	२२
समनं पडि एववेवमं [ति. प. १११२७]	२३६ सुरत्तेयरमणुवाणं [ति. प. ११५२]	२०
समसद्वसायवम्मे [ति. प. ११११७]	२३४ सुद्धमं च नामकम्मं	१३८
समेऽप्यनन्तपत्तिस्से	५६ सुद्धमदिठदिघंजुत्तं	७९१
सरागवोत्तरागारम [सो. ज. २२७]	८०१ षेव जलरेणु [ति. प. ११११]	१२
सर्वं जगद्धोने	७९४ सेदरजादिमत्तेण [ति. प. ११५९]	२१
सर्वेऽपि पुद्गलाः क्षणु	७९३ सोत्तवं तिरपयराणं [ति. प. ११४९]	१९
सर्वमा स्वहितमाचरणायं	१० स्थान एव स्थितं	५६
सर्वद्रुतिस्वित्तनु	७९८ स्याद्वादकेवलज्ञाने [भासमी. १०५]	६१७
ससमयमावलि अवर्त	८१० स्वकारितेऽर्हत्तयायो	५५
सामु रराज कीर्तेरणाको	२८७ स्वहेतुजनितोऽप्यर्थ [सवीय० ५९ दलो.]	९३३

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

इन्द्रिय	१२२	कपोत केन्द्र	७०९	ग	
इन्द्रिय पर्याप्ति	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	यतिमार्गणा	२७८
इन्द्रिय प्राप	२६६	कल्पव्यवहार	६१५	गर्भ (जन्म)	१५५, १५८, १६०
ई		कल्प्याकल्प	६१५	गुण	३३, ३४
ईश्वर (दर्शन)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणकारसलाहा	२२३
ईहा	५१५	कर्मपुद्गलपरिवर्तन	७९०	गुणप्रत्यय	६१८
उ		कपाय	४७३	गुणश्रेणिनिर्जरा	१०४, ११८
उच्छ्वास	८०९	काय	१२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उत्तराभ्ययन	६१५	कायबल प्राप	२६६	गुणस्थान	३९, ४२
उभयानुगामी	६१९	काममार्गणा	३११	गुणहानि	१२२
उभयानुगामी	६१९	कारणविपर्यय	४९	गुणहानि आयाम	१२२
उपयोग	९००	कारणकाययोग	३७५, ९२४	घ	
उ		कालद्रव्य	८०६, ८०७	घनांगुल	२४२, २४४
श्रु		काल परिवर्तन	७९४	च	
श्रुमति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल सामायिक	६१३	चक्षुदर्शन	६९२
ए		कालाणु	८१७	चतुरंग	५११, ५५३, ५५५
एकज्ञान	५१९	कुसुमि	६००	चक्षुविद्यतिस्तव	६१४
एकविषयज्ञान	५१९	कृतिकर्म	६१४	चन्द्रप्रज्ञाति	६०१
एकान्तविषयाव	४६	कुम्भलेदया	७०७	चल (दोष)	५५
एकानुप	६००	केवलज्ञान	६७६	चारित्रमोह	४४, ४५
ऐ		केवल दर्शन	६९३	चुनि	५३८
ऐन्द्र दत्त	६००	केवल समुद्रपात	७५५	चुनिचुनि	५३८
ओ		कोरकल	५९९	चुलिका	६०२
ओष	३४	कोशिक	६००	छ	
ओ		क्रियावाद	६००	छेदोपस्थापना	६८४
औदयिक	३९, ४३	क्रियाविशालपूर्व	६११	ज	
औदारिक काययोग	३६८, ९२४	क्षायिक	३९, ५५	जगत्प्रतर	२४२
औदारिकमित्र	३६९	क्षायिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्प्रेणी	२४२
औपम्यव	६००	क्षायिकसम्यग्दृष्टी	८०	जघन्य अनन्तानन्त	२१४
औपशमिक	३९, ४५	क्षायोपशमिक	३९, ४३	जघन्य असंख्यादासंख्यात	२१०
औपशमिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८५	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	५४	जघन्य परीतासंख्यात	२०८
क		क्षायोपशमिक संयम	४४	जघन्य परीतानन्त	२११
कठ	६००	क्षोषकपाय	४१, १२७	जघन्य मुक्तनन्त	२१४
कष्टेविद्धि	५९९	क्षिप्र (ज्ञान)	५१९	जघन्य मुक्तसंख्यात	२१०
कपाट समुद्रपात	७५५	क्षेत्र सामायिक	६१३	जतुकर्ण	६००
कपिल	६००	क्षेत्रानुगामी	६१९	जनपदस्त्व	३५९
		क्षेत्रानुगामी	६१९		

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

इन्द्रिय	१२२	कपोत सेव्या	७०९	मतिमार्गणा	२७८
इन्द्रिय वर्णमिति	२५२, २६५	कर्मप्रवाह	६१०	मर्म (जन्म)	१५५, १५८, १६०
इन्द्रिय प्राय	२६६	कल्याणवहार	६१५	गुण	३३, ३४
ई		कल्याणकल्प	६१५	गुणकारणलाभा	२२३
ईतर (इतर)	१४०	कल्याणवाय	६११	गुणप्रत्यय	६१८
ईहा	५१५	कर्ममुद्रालनपरिवर्तन	७९०	गुणधेयिनिर्जरा	१०४, ११८
उ		कपाय	४७३	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उच्छ्वास	८०९	काय	९२२	गुणस्थान	३९, ४२
उत्तरात्मन	६१५	कायबल प्राय	२६९	गुणहानि	१२२
उदयाननुदामी	६१९	बायमार्गणा	३११	गुणहानि आयाम	१२२
उदयाननुदामी	६१९	बारणविषयाव	४९	घ	
उदयोम	१००	कामयकादयोम	३७५, ९२४	घनांगुल	२४२, २४४
ऋ		कालद्रव्य	८०६, ८०७	च	
ऋतुमति	६१५, ६५८, ६९९, १७१	काल परिवर्तन	७९४	चतुर्दश	६९२
ए		काल सामायिक	६१३	चतुरङ्क	५११, ५५३, ५५५
एक्यान	५१९	कालागु	८१७	चतुर्विधविस्तव	६१४
एकविषयान	५१९	गुणमि	६००	चन्द्रप्रज्ञाति	६०१
एकान्तमिष्याव	४६	इतिरुर्म	६१४	चल (दोष)	५५
एकान्त	१००	कल्पसेव्या	७०७	चारिप्रभोह	४४, ४५
ऐ		केवलज्ञान	६७६	चूर्णि	५३८
ऐङ्ग दत्त	६००	केवल दर्शन	६९३	चूर्णिचूर्णि	५३८
ओ		केनलि समुद्रपाठ	७५५	चूर्णिका	६०२
ओष	३४	कीकल	५९९		
ओ		कीतिक	६००		
ओषमिक	३९, ४३	किमावाद	६००		
ओषारिक बाययोम	३९८, ९२४	किमाविद्यालयपूर्व	६११	छेदोपस्थापना	६८४
ओषारिकमिथ	३६९	द्यायिक	३९, ५५	ज	
ओषमन्यव	६००	द्यायिक सम्पत्तव	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्प्रतर	२४२
ओषमामिक	३९, ४५	द्यायिकव्याम्यगृह्ये	८०	जगत्प्रेणी	२४२
ओषमामिक सम्पत्तव	४३, ५७, ८८५	द्यायोपचामिक	३९, ४३	जषन्य अनन्तानन्त	२१४
फ		द्यायोपचामिक सम्पत्तव	५४	जषन्य असंस्थातासंस्थात	२१०
फट	६००	द्यायोपचामिक संयम	४४	जषन्य परोतासंस्थात	२०८
फट्टेविति	५९९	धीषकपाय	४१, १२७	जषन्य परोतानन्त	२११
फाट समुद्रपाठ	७५५	धिप्र (ज्ञान)	५१९	जषन्य युक्तानन्त	२१४
फलि	६००	धेन सामायिक	६१३	जषन्य युक्तसंस्थात	२१०
		धेनाननुदामी	६१९	जलुर्कर्म	६००
		धेनाननुदामी	६१९	जनपदसत्य	३५९

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

हिन्दय	१२२	कपोल लेखना	७०९	ग	
हिन्दय पर्याय	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	गतिमार्गणा	२७८
हिन्दय प्राय	२६६	कल्पवृक्षहार	६१५	गर्भ (जन्म)	१५५, १५८, १६०
हि		कल्याणकृत्य	६१५	गुण	३३, ३४
हिर (द्यौः)	१४०	कल्याणपाद	६११	गुणकारणलावा	२२३
हृ	५१५	कल्पवृक्षपरिवर्तन	७९०	गुणप्रत्यय	६१८
उ		कपाय	४७३	गुणधर्मिनिर्वा	१०४, ११८
उद्ग्राह	८०९	काय	९२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उत्तराव्ययन	६१५	कायबल प्राण	२६६	गुणस्थान	३९, ४२
उभयानुगामी	६१९	कायमार्गणा	३११	गुणहानि	१२२
उभयानुगामी	६१९	कारणविपर्याय	४९	गुणहानि आयाम	१२२
उभयोर	९००	कायमकाययोय	३७५, ९२४	ग	
उद्		कातद्वय	८०६, ८०७	घनागुल	२४२, २४४
उद्गुमति	६९५, ६९८, ६९९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	घ	
ए		काल सामायिक	६१३	घटदुर्धन	६९२
एकमान	५१९	कालागु	८१७	घटुरक	५३१, ५५३, ५५५
एकविषयज्ञान	५१९	कृष्णमि	६००	घटुविद्यतिस्त्व	६१४
एकान्तमिष्टास्व	४६	कृतिकर्म	६१४	घनप्रकृति	६०१
एकान्त	६००	कृष्णलेखना	७०७	घल (दोष)	५५
ऐ		केवलज्ञान	६७६	घारिप्रमोह	४४, ४५
ऐन्द्र दत्त	६००	केवल दर्शन	६९३	घुनि	५१८
ओ		केवल समुद्रपात	७५५	घुनिघुनि	५३८
ओष	३४	कीरकल	५९९	घुलिका	६०२
ओ		कीरिक	६००	ग	
ओदयिक	३९, ४३	किन्मावाद	६००	छेदोपस्थापना	६८४
ओदारिक काययोग	३६८, ९२४	किन्माविशालपूर्व	६११	ज	
ओदारिकमित्र	३६९	शायिक	३९, ५५	जगत्प्रवर	२४२
ओनमन्यव	६००	क्षायिक सम्मन्त्र	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्प्रयो	२४२
ओपगमिक	३९, ४५	क्षायिकसम्पन्नदृष्टो	८०	जघन्य अनन्तान्त	२१४
ओपगमिक सम्मन्त्र	४३, ५७, ८८५	क्षायोपगमिक	३९, ४३	जघन्य अक्षय्यादासंख्यात	२१०
क		क्षायोपगमिक सम्मन्त्र	५४	जघन्य परीतासंख्यात	२०८
कठ	६००	क्षायोपगमिक संयम	४४	जघन्य परीतान्त	२११
कण्टेविद्धि	५९९	क्षोणकपाय	४१, १२७	जघन्य युक्तान्त	२१४
कण्ट समुद्रपात	७५५	क्षिप्र (ज्ञान)	५१९	जघन्य युक्तसंख्यात	२१०
कपिल	६००	क्षेत्र सामायिक	६१३	जतुकर्ण	६००
		क्षेत्रानुगामी	६१९	जनपदकृत्य	३५९
		क्षेत्रानुगामी	६१९		

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

इन्द्रिय	१२२	कपोत सेवना	७०९	गतिमार्गणा	२७८
इन्द्रिय पर्यायि	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	गर्भ (जन्म)	१५५, १५८, १६०
इन्द्रिय प्राण	२६६	कल्याणबहार	६१५	गुण	१३, ३४
ई		कल्याणकृत्य	६१५	गुणकारणलाभा	२२३
ईश्वर (दयान)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणप्रत्यय	६१८
ईश्वर	५१५	कर्मपुद्गलपरिवर्तन	७९०	गुणश्रेयिनिर्जरा	१०४, ११८
उ		कपाय	४७३	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उच्छ्वास	८०९	काय	१२२	गुणस्थान	३९, ४२
उत्तराख्यपन	६१५	कायबल प्राण	२६६	गुणहानि	१२२
उभयानुगामी	६१९	कायमार्गणा	३११	गुणहानि आयाम	१२२
उभयानुगामी	६१९	वारणविपर्याय	४९	घ	
उपयोग	१००	कर्मपञ्चाययोग	३७५, १२४	घनांगुल	२४२, २४४
उ		कालरम्य	८०६, ८०७	ज	
उत्तुमति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	जघुदयान	६९२
ए		काल सामायिक	६१३	जतुरक	१३१, ५५३, ५५५
एकज्ञान	५१९	कालानु	८१७	जतुविद्यतिस्तव	६१४
एकविज्ञान	५१९	मुमुक्षु	६००	जन्मप्रज्ञति	६०१
एकान्दमिष्टाव	४६	वृत्तिकर्म	६१४	जल (दोष)	५५
एकानु	६००	कुम्भलेदया	७०७	चारित्रमोह	४४, ४५
ऐ		केवलज्ञान	६७६	जुनि	५३८
ऐन्द्र दत्त	६००	केवल दर्शन	६९३	जुनिजुनि	५३८
ओ		केवलि समुद्रपाठ	७५५	जुलिका	६०२
ओष	३४	कौकल	५९९	झ	
ओ		कौतिक	६००	छेदोपस्थापना	६८४
औद्यमिक	३९, ४३	क्रियावाद	६००	झ	
औद्यमिक भागयोग	३६८, ९२४	क्रियाविद्यालयपूर्व	६११	जगत्प्रतर	२४२
औद्यमिकमित्र	३६९	द्यामिक	३९, ५५	जगत्प्रेयो	२४२
औद्यमिक	६००	द्यामिक सम्पत्त्व	४३, ५७, ८८४, ९३१	जघन्य अनन्तानन्त	२१४
औद्यमिक	३९, ४५	द्यामिकसम्पत्त्वगुष्टी	८०	जघन्य अर्धस्यातासंख्यात	२१०
औद्यमिक सम्पत्त्व	४३, ५७, ८८५	द्यानोपद्यमिक	३९, ४३	जघन्य परोतासंख्यात	२०८
क		द्यानोपद्यमिक सम्पत्त्व	५४	जघन्य परोतानन्त	२११
कट	६००	द्यानोपद्यमिक संयम	४४	जघन्य युक्तानन्त	२१४
कष्टेविद्धि	५९९	धीनकपाय	४१, १२७	जघन्य युक्तसंख्यात	२१०
कष्टाट समुद्रपाठ	७५५	दिप्र (ज्ञान)	५१९	जतुकर्ण	६००
कविल	६००	द्येन सामायिक	६१३	जनपदसत्य	३५९
		द्येनानुगामी	६१९		
		द्येनानुगामी	६१९		

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

हन्त्रिय	१२२	कपोष्ठ लेख्या	७०९	॥	
हन्त्रिय पर्वसि	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	यतिमार्गणा	२७८
हन्त्रिय प्राच	२६६	कल्पस्यारहार	६१५	गर्भ (जन्म)	१५५, १५८, १६०
हृ		कल्प्याकल्प	६१५	गुण	३३, ३४
ह्रस्व (द्वयं)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणकारणलावा	२२३
ह्रा	५१५	कर्मपुद्गलपरिवर्तन	७९०	गुणप्रत्यय	६१८
उ		कपाय	४७३	गुणधेयिनिर्जरा	१०४, ११८
उच्छ्राव	८०९	काय	१२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उच्छ्राव्यन	६१५	कायबल प्राण	२६६	गुणस्थान	३९, ४२
उभयानुगामी	६१९	कायमार्गणा	३११	गुणहानि	१२२
उभयानुगामी	६१९	कारणविपर्यय	४९	गुणहानि आयाम	१२२
उभयोर	९००	कामंशराययोग	३७५, ९२४	घ	
उ		कालद्रव्य	८०६, ८०७	घनागुल	२४२, २४४
उद्गमति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	घ	
ए		काल सामयिक	६१३	घटुदर्शन	६९२
एकज्ञान	५१९	कालानु	८१७	घटुरंक	५३१, ५५३, ५५५
एकविषयज्ञान	५१९	कृष्णमि	६००	घटुविपत्तिस्त्व	६१४
एकान्तमिथ्यात्व	४६	कृतिकर्म	६१४	चन्द्रप्रकृति	६०१
एकान्त	६००	कृष्णलेखा	७०७	चल (दोष)	५५
ऐ		केवलज्ञान	६७६	चारित्र्यमोह	४४, ४५
ऐन्द्र दत्त	६००	केवल दर्शन	६९३	चूर्ण	५३८
ओ		केवल समुद्घात	७५५	चूर्णित्व	५३८
ओष	३४	कीटक	५९९	चुलिका	६०२
ओ		कीशिक	६००	॥	
ओष	३४	क्रियावाद	६००	छेदोपस्थापना	६८४
ओष		क्रियाविशालपूर्व	६११	ज	
ओषधिक	३९, ४३	शामिक	३९, ५५	जगत्प्रवर	२४२
ओषाधिक काययोग	३६८, ९२४	शामिक सम्मन्वय	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्प्रेणी	२४२
ओषाधिकमित्र	३६९	शामिकसम्पन्वय	८०	जघन्य अनन्तानन्त	२१४
ओषमन्वय	६००	शामिकसम्पन्वय	३९, ४३	जघन्य अक्षय्यातासंख्यात	२१०
ओषाधिक	३९, ४५	शामिकसम्पन्वय	५४	जघन्य परीतासंख्यात	२०८
ओषाधिक सम्मन्वय	४३, ५७, ८८५	शामिकसम्पन्वय	४४	जघन्य परीतानन्त	२११
क		शामिकसम्पन्वय	४१, १२७	जघन्य युक्तानन्त	२१४
कट	६००	विषय (ज्ञान)	५१९	जघन्य युक्तसंख्यात	२१०
कट्टेविद्धि	५९९	खेत्र सामायिक	६१३	जतुकर्ण	६००
कपाट समुद्घात	७५५	खेत्रानुगामी	६१९	जनपदस्थ	३५९
कपिल	६००	खेत्रानुगामी	६१९		

विशिष्ट ग्रन्थ-सूची

१०९३

हिन्दु	१२२	कनौज सेवका	७०९	ग	
हिन्दु धर्मसिंह	२१२, २१५	कर्मदेव	६१०	यतिमार्गना	२७८
हिन्दु धर्म	२१६	कर्मसूत्र	६१५	यज्ञ (जन्म)	१५५, १५८, १६०
हि		कर्मसूत्र	६१५	गुण	३३, ३४
हिन्दु (धर्म)	१४०	कर्मसूत्र	६११	गुणकारणसूत्र	२२३
हि	११५	कर्मसूत्र	७१०	गुणप्रत्यय	६१८
हि		कर्मसूत्र	४७३	गुणधर्मिनिर्देश	१०४, ११८
हिन्दु		कर्मसूत्र	१२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
हिन्दु	८०९	कर्मसूत्र	२६६	गुणस्थान	३९, ४२
हिन्दु	६१५	कर्मसूत्र	३११	गुणहानि	१२२
हिन्दु	६१५	कर्मसूत्र	४९	गुणहानि भाष्य	१२२
हिन्दु	६१५	कर्मसूत्र	३७५, १२४	घ	
हिन्दु	१००	कर्मसूत्र	८०९, ८०७	यज्ञागुल	२४२, २४४
हि		कर्मसूत्र	७१४	घ	
हिन्दु	११५, ११८, ११९, १२१	कर्मसूत्र	६१३	यज्ञागुल	११२
हि		कर्मसूत्र	८१७	यज्ञागुल	१११, ५५३, ५५५
हि		कर्मसूत्र	६००	यज्ञागुल	६१४
हि	५१९	कर्मसूत्र	६१४	यज्ञागुल	६०१
हि	५१९	कर्मसूत्र	७०७	यज्ञ (दोष)	५५
हि	४६	कर्मसूत्र	१७६	यज्ञागुल	४४, ४५
हि	१००	कर्मसूत्र	६९३	यज्ञागुल	५१८
हि		कर्मसूत्र	७५५	यज्ञागुल	५३८
हि	१००	कर्मसूत्र	५९९	यज्ञागुल	६०२
हि		कर्मसूत्र	१००	घ	
हि	३४	कर्मसूत्र	१००	घ	
हि		कर्मसूत्र	१११	घ	
हि	३९, ४३	कर्मसूत्र	३९, ५५	घ	
हि	३९८, १२४	कर्मसूत्र	४३, ५७, ८८४, ९३१	घ	
हि	३९९	कर्मसूत्र	८०	घ	
हि	१००	कर्मसूत्र	३९, ४३	घ	
हि	३९, ४५	कर्मसूत्र	५४	घ	
हि	४३, ५७	कर्मसूत्र	४४	घ	
हि	८८५	कर्मसूत्र	४१, १२७	घ	
हि		कर्मसूत्र	५१९	घ	
हि	५९९	कर्मसूत्र	६१३	घ	
हि	७५५	कर्मसूत्र	६१९	घ	
हि	१००	कर्मसूत्र	६१९	घ	

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

इन्द्रिय	१२२	कपोत सेवया	७०९	ग	
इन्द्रिय पर्याप्ति	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	यतिमार्गणा	२७८
इन्द्रिय प्राण	२६६	कल्पव्यवहार	६१५	गर्भ (जन्म)	१५५, १५८, १६०
ई		कल्पाकल्प	६१५	गुण	३३, ३४
ईश्वर (दयन)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणकारखलावा	२२३
ईहा	५१५	कर्मपुद्गलपरिवर्तन	७९०	गुणप्रत्यय	६१८
उ		कपाय	४७३	गुणधेनिनिर्जरा	१०४, ११८
उच्छ्वास	८०९	काय	९२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उत्तराध्ययन	६१५	कायबल प्राण	२६६	गुणस्थान	३९, ४२
समयानुगामी	६१९	कायमार्गणा	३११	गुणहानि	१२२
समयानुगामी	६१९	वारणविपर्याप्त	४९	गुणहानि जायाम	१२२
उपयोग	९००	कार्मणकाययोग	३७५, ९२४	घ	
ऋ		कालद्रव्य	८०६, ८०७	घनांगुल	२४२, २४४
ऋजुनति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	च	
ए		काल सामायिक	९१३	चक्षुदर्शन	६९२
एकज्ञान	५१९	कालानु	८१७	चतुरंग	५११, ५५३, ५५५
एकविधज्ञान	५१९	कुमुदि	६००	चतुर्विधविस्तृत	६१४
एकान्तमिथ्यात्व	४६	कुविर्कर्म	६१४	चन्द्रप्रगति	६०१
एकापुत्र	६००	कृष्णलेदया	७०७	चल (शेष)	५५
ऐ		केवलज्ञान	६७९	चारित्र्यमोह	४४, ४५
ऐन्द्र दत्त	६००	केवल दर्शन	६९३	त्रुषि	५३८
ओ		केवल समुद्रपात	७५५	त्रुषिचुषि	५३८
ओष	३४	कौरकल	५९९	त्रुलिका	६०२
ओ		कौशिक	६००	उ	
औदयिक	३९, ४३	क्रियावाद	६००	छेदोपस्थापना	६८४
औदारिक कामयोग	३६८, ९२४	क्रियाविद्यालपूर्व	६११	उ	
औदारिकमित्र	३६९	धार्मिक	३९, ५५	जगत्तर	२४२
औरमन्यव	६००	धार्मिक सम्पत्त्व	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्त्रयो	२४२
औपशमिक	३९, ४५	धार्मिकसम्पत्त्व	८०	जघन्य अनन्तानन्त	२१४
औपशमिक सम्पत्त्व	४३, ५७, ८८५	धार्मिकपशमिक	३९, ४३	जघन्य असंख्यादासंख्या	२१०
क		धार्मिकपशमिक सम्पत्त्व	५४	जघन्य परोदासंख्या	२०८
कठ	६००	धार्मिकपशमिक संयम	४४	जघन्य परोदानन्त	२११
कठेविद्धि	५९९	धोणकपाय	४१, १२७	जघन्य मुक्तानन्त	२१४
कपात समुद्रपात	७५५	सिद्ध (ज्ञान)	५१९	जघन्य मुक्तसंख्या	२१०
कनिल	६००	खेत्र सामायिक	६१३	जलकर्म	६००
		खेत्राननुगामी	६१९	जननदलन	३५९
		खेत्राननुगामी	६१९		

विशिष्ट चन्द्र-सूची

१०९३

हस्त	१२२	कपोत सेव्या	७०९	ग	
हस्त चर्चाति	२५२, २९५	कर्मप्रवाद	६१०	मतिमार्गणा	२७८
हस्त प्राच	२९६	कल्पवृक्षार	६१५	गर्भ (जन्म)	१५५, १५८, १६०
ई		कल्पवृक्ष	६१५	गुण	३३, ३४
ईश्वर (दर्शन)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणकारणलावा	२२३
ईश	५१५	कर्ममुद्रुलनरिवर्तन	७९०	गुणप्रत्यय	६१८
उ		कपाय	४७३	गुणश्रेणिनिर्जरा	१०४, ११८
उपद्राव	८०९	काय	९२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उत्तप्राच्यन	९१५	कायबल प्राच	२९६	गुणस्थान	३९, ४२
उभयानुगामी	६१९	कायमार्गणा	३११	गुणहावि	१२२
उभयानुगामी	६१९	कारणविचारा	४९	गुणहानि भाषाम	१२२
उभयग	९००	काम्यकाययोग	३७५, ९२४	घ	
ऋ		कालद्वय	८०६, ८०७	घनांगुल	२४२, २४४
ऋतुमति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	घ	
ए		काल सामाजिक	६१३	च	
एकज्ञान	५१९	कालागु	८१७	चक्षुदर्शन	६९२
एकविषयज्ञान	५१९	कुपुमि	६००	चतुरंग	५३१, ५५३, ५५५
एकान्तमिथ्यात्व	४६	कृतिकर्म	६१४	चतुर्विधसिद्धय	६१४
एकपुत्र	६००	कृष्णलेखा	७०७	चन्द्रप्रकृति	६०१
ऐ		केवलज्ञान	६७६	चल (दोष)	५५
ऐम्ह वत	६००	केवल दर्शन	६९३	चारिमोह	४४, ४५
ओ		केवल समुद्रात	७५५	जुनि	५३८
ओष	३४	कोरुल	५९९	जुनिजुनि	५३८
ओ		कोशिक	६००	जुलिका	६०२
ओरमिक	३९, ४३	क्रियावाद	६००	छ	
ओशरिक वायमोग	३६८, ९२४	त्रिनाथिचालपूर्व	६११	छेदोपस्थापना	६८४
ओशरिकमित्र	३६९	शायिक	३९, ५५	ज	
ओरमन्य	६००	शायिक सम्प्रत्य	४३, ५७, ८८४, ९३१	जयप्रवर	२४२
ओपराधिक	३९, ४५	शायिकसम्प्रदृष्टी	८०	जयश्रेणी	२४२
ओपराधिक सम्प्रत्य	४३, ५७, ८८५	शायोपराधिक	३९, ४३	जघन्य अनन्तानन्त	२१४
फ		शायोपराधिक सम्प्रत्य	५४	जघन्य अक्षय्यादासंख्यात	२१०
फट	६००	शायोपराधिक संयम	४४	जघन्य परीतासंख्यात	२०८
फटेविद्धि	५९९	शोषकपाय	४१, १२७	जघन्य परीतानन्त	२११
फपाट समुद्रात	७५५	सिप्र (ज्ञान)	५१९	जघन्य युक्तानन्त	२१४
फपिल	६००	सोन सामाजिक	६१३	जघन्य युक्तसंख्यात	२१०
		सोनानुगामी	६१९	जतुकर्म	६००
		सोनानुगामी	६१९	जनपदसंख्या	३५९

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

इन्द्रिय	१२२	कपोल लेख्या	७०९	ग	
इन्द्रिय पर्याप्ति	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	वदिमार्गणा	२७८
इन्द्रिय प्राण	२६६	कल्पव्यवहार	६१५	वर्ग (जन्म)	१५५, १५८, १६०
ई		कल्प्याकल्प	६१५	गुण	३३, ३४
ईश्वर (दशान)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणकारसलाना	२२३
ईहा	५१५	कर्मपुद्गुलपरिवर्तन	७९०	गुणप्रत्यय	६१८
उ		कपाय	४७३	गुणधेनिनिर्जरा	१०४, ११८
उच्छ्वास	८०९	काय	९२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उत्तराभ्ययन	६१५	कायबल प्राण	२६६	गुणस्थान	३९, ४२
उभयाननुगामी	६१९	कायमार्गणा	३११	गुणहानि	१२२
उभयानुगामी	६१९	कारणविपर्याय	४९	गुणहानि आयाम	१२२
उपयोग	९००	कार्यणकाययोग	३७५, ९२४	घ	
ऋ		कालद्रव्य	८०६, ८०७	घनांगुल	२४२, २४४
ऋजुमति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	घ	
ए		काल सामायिक	६१३	च	
एकज्ञान	५१९	कालाणु	८१७	चक्षुदर्शन	६९२
एकविषयज्ञान	५१९	कुमुदि	६००	चतुरंग	१३१, ५५३, ५५५
एकान्तमिष्यास्व	४६	कृतिकर्म	६१४	चतुर्विधाविस्तृत	६१४
एलापुत्र	६००	कुम्पलेख्या	७०७	चन्द्रप्रकृति	६०१
ऐ		केवलज्ञान	६७६	चल (दोष)	५५
ऐन्द्र दत्त	६००	केवल दर्शन	६९३	चारित्रमोह	४४, ४५
ओ		केवल समुद्घात	७५५	चुनि	५३८
ओष	३४	कौटिल	५९९	चुनिचुनि	५३८
ओ		कौशिक	६००	चुलिका	६०२
औद्यिक	३९, ४३	क्रियावाद	६००	छ	
औद्यिक काययोग	३६८, ९२४	क्रियाविशालपूर्व	६११	छेदोपस्थापना	६८४
औद्यिकमिश्र	३६९	क्षायिक	३९, ५५	ज	
औपमन्यव	६००	क्षायिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्प्रवर	२४२
औपशमिक	३९, ४५	क्षायिकसम्यग्भूटी	८०	जगत्प्रेमी	२४२
औपशमिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८५	क्षायोपशमिक	३९, ४३	जघन्य अनन्तानन्त	२१४
क		क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	५४	जघन्य अस्वाभावस्थाव	२१०
कठ	६००	क्षायोपशमिक संयम	४४	जघन्य परोवास्वाव	२०८
कठेविट्टि	५९९	क्षीणकपाय	४१, १२७	जघन्य परोवानन्त	२११
कषाट समुद्घात	७५५	क्षिप्र (ज्ञान)	५१९	जघन्य युक्तानन्त	२१४
कपिल	६००	क्षेत्र सामायिक	६१३	जघन्य युक्तसंस्थाव	२१०
		क्षेत्राननुगामी	६१९	जतुकर्म	६००
		क्षेत्रानुगामी	६१९	जनपदसंय	३५९

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

इन्द्रिय	१२२	कपोत लेख्या	७०९	ग	
इन्द्रिय पर्यायि	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	गतिमार्गणा	२७८
इन्द्रिय प्राण	२६६	कल्पव्यवहार	६१५	धर्म (जन्म)	१५५, १५८, १६०
ई		कल्प्याकल्प	६१५	गुण	३३, ३४
ईश्वर (दर्शन)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणकारखलापा	२२३
ईहा	५१५	कर्मपुद्गलपरिवर्तन	७९०	गुणप्रत्यय	११८
उ		कपाय	४७३	गुणधेयिनिर्जरा	१०४, ११८
उच्छ्वास	८०९	काय	१२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उत्तराभ्यपन	६१५	कायबल प्राण	२६६	गुणस्यान	३९, ४२
उभयानुगामी	६१९	कायमार्गणा	३११	गुणहानि	१२२
उभयानुगामी	६१९	धारणविपर्याय	४९	गुणहानि आयाम	१२२
उपयोग	९००	कार्मणकाययोग	३७५, १२४	घ	
उष्ट्र		कासद्वय	८०६, ८०७	घनागुल	२४२, २४४
ऋजुमति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	च	
ए		काल सामायिक	६१३	चक्षुदर्शन	६९२
एकज्ञान	५१९	कालागु	८१७	चतुरक	५३१, ५५३, ५५५
एकविधज्ञान	५१९	कुमुभि	९००	चतुर्दिशविस्तव	६१४
एकान्तमिथ्यात्व	४६	कृतिर्कर्म	६१४	चन्द्रप्रकृति	६०१
एलापुत्र	६००	कृष्णलेख्या	७०७	चल (शेष)	५५
ऐ		केवलज्ञान	६७६	चारित्र्यमोह	४४, ४५
ऐन्द्र दत्त	६००	केवल दर्शन	६९३	चूनि	५३८
ओ		केवल समुद्रपाठ	७५५	चूनिचूनि	५३८
ओष	३४	कौरकल	५९९	चूलिका	६०२
ओ		कौशिक	६००	छ	
औदयिक	३९, ४३	क्रियावाद	६००	छेदोपस्थापना	६८४
औदारिक वाययोग	३६८, १२४	क्रियाविशालपूर्व	६११	ज	
औदारिकमिश्र	३६९	क्षामिक	३९, ५५	जगत्प्रतर	२४२
औपमन्यव	६००	क्षामिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्प्रेणी	२४२
औपशमिक	३९, ४५	क्षामिकसम्यग्दृष्टी	८०	जघन्य अनन्तानन्त	२१४
औपशमिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८५	क्षाम्योपशमिक	३९, ४३	जघन्य असंख्यादासंख्यात	२१०
क		क्षाम्योपशमिक सम्यक्त्व	५४	जघन्य परोदासंख्यात	२०८
कठ	६००	क्षाम्योपशमिक संयम	४४	जघन्य परोदानन्त	२११
कण्ठेविद्धि	५९९	क्षोणकपाय	४१, १२७	जघन्य युक्तानन्त	२१४
कपाट समुद्रपाठ	७५५	क्षिप्र (ज्ञान)	५१९	जघन्य युक्तसंख्यात	२१०
कपिल	६००	क्षेत्र सामायिक	६१३	जतुकर्म	६००
		क्षेत्राननुगामी	६१९	जननदत्त	३५९
		क्षेत्राननुगामी	६१९		

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९३

इन्द्रिय	१२२	कपोत लेखा	७०९	ग	
इन्द्रिय पराति	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	यतिमार्मणा	२७८
इन्द्रिय प्राय	२६६	कल्पव्यवहार	६१५	यर्म (जन्म)	१५५, १५८, १६०
ई		कल्याणकल्प	६१५	गुण	३३, ३४
ईश्वर (दर्शन)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणकारणतावा	२२३
ईहा	५१५	कर्मसुदृगलपरिवर्तन	७९०	गुणप्रत्यय	६१८
उ		कपाय	४७३	गुणधेनिनिर्जरा	१०४, ११८
उच्छ्वास	८०९	काय	९२२	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उत्तराभ्युपन	६१५	कायबल प्राय	२६६	गुणस्थान	३९, ४२
उभयानुगामी	६१९	कायमार्मणा	३११	गुणहानि	१२२
उभयानुगामी	६१९	कारणविपर्याय	४९	गुणहानि आयाम	१२२
उपयोग	९००	कामंकाययोग	३७५, ९२४	घ	
ऋ		कालरूप	८०६, ८०७	घनायुल	२४२, २४४
ऋजुनति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	घ	
ए		काल सामयिक	६१३	घटवर्धन	६९२
एकज्ञान	५१९	कालाणु	८१७	घटुरंक	५३१, ५५३, ५५५
एकविषयज्ञान	५१९	कुमुदि	६००	घटुविशतिस्तव	६१४
एकान्विमित्वात्	४६	कुटिर्कर्म	६१४	घनप्रज्ञति	६०१
एकानुव	६००	कुण्यलेखा	७०७	चल (दोष)	५५
ऐ		कुविलज्ञान	६७६	चारित्र्यमोह	४४, ४५
ऐन्द्र दत्त	६००	कुवल दर्शन	६९३	चूर्णि	५३८
ओ		कुवलि समुद्भात	७५५	चूर्णचूर्णि	५३८
ओष	३४	कौरकल	५९९	चूलिका	६०२
ओ		कौमिक	६००	छ	
औरमिक	३९, ४३	क्रियावाद	६००	छेदोपस्थापना	६८४
औदारिक भाषयोग	३६८, ९२४	क्रियाविशालपूर्व	६११	ज	
औदारिकमिथ	३६९	क्षामिक	३९, ५५	जगत्प्रतर	२४२
औपम्यव	६००	क्षामिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्त्रेणी	२४२
औपम्यमिक	३९, ४५	क्षामिकसम्यग्दृष्टी	८०	जगन्म अन्तान्म	२१४
औपम्यमिक सम्यक्त्व	४३, ५७	क्षायोपममिक	३९, ४३	जगन्म असंख्यातासंख्यात	२१०
क		क्षायोपममिक सम्यक्त्व	५४	जगन्म परीतासंख्यात	२०८
कठ	६००	क्षायोपममिक संयम	४४	जगन्म परीतान्म	२११
कष्टेविधि	५९९	क्षीणकपाय	४३, १२७	जगन्म मुक्तान्म	२११
कषात समुद्भात	७५५	क्षिप्र (ज्ञान)	५१९	जगन्म मुक्तान्म	२११
कविल		क्षेत्र सामयिक	६१३	जगन्म मुक्तान्म	२११
		क्षेत्र	६१३		

विशिष्ट धन्द-सूची

१०९३

				ग	
इन्द्रिय	१२२	कपोत लेख्या	७०९	गतिमार्गणा	२७८
इन्द्रिय पर्याप्ति	२५२, २६५	कर्मप्रवाद	६१०	गर्भ (जन्म)	१५५, १५८, १६०
इन्द्रिय प्राप्ति	२६६	कल्पव्यवहार	६१५	गुण	३३, ३४
ई		कल्पाकल्प	६१५	गुणकारशालावा	२२३
ईश्वर (दशमं)	१४०	कल्याणवाद	६११	गुणप्रत्यय	११८
ईहा	५१५	कर्मपदुद्गलपरिवर्तन	७९०	गुणधेयिनिर्जरा	१०४, ११८
उ		कपाय	४७३	गुण संक्रमण	१०४, ११८
उच्छ्वास	८०९	काय	१२२	गुणस्वात	१९, ४२
उत्तराभ्ययन	६१५	कायबल प्राप्ति	२६६	गुणहानि	१२२
उभयानुगामी	६१९	कायमार्गणा	३११	गुणहानि आमाम	१२२
उभयानुगामी	६१९	कारणविपर्याय	४९		
उपयोग	९००	कार्मणकाययोष	३७५, १२४	घ	
प्र		कालद्रव्य	८०९, ८०७	घनगुल	२४२, २४४
श्रुतमति	६६५, ६५८, ६६९, ६७१	काल परिवर्तन	७९४	घ	
ए		काल सामायिक	६१३	चक्षुदर्शन	६९२
एवज्ञान	५१९	कालानु	८१७	चक्षुरंक	१३१, ५५३, ५५५
एकविज्ञान	५१९	कुमुभि	६००	चक्षुर्विद्यतिस्तव	६१४
एकान्तमिथ्यात्व	४६	कुत्तिकर्म	६१४	चन्द्रप्रज्ञाति	६०१
एलानुव	६००	कुम्भलेख्या	७०७	चल (दोष)	५५
ऐ		केवलज्ञान	६७६	चारिन्मोह	४४, ४५
ऐन्द्र दत्त	६००	केवल दर्शन	६९३	चूर्ण	५३८
ओ		केवल समुद्पात	७५५	चूर्णिषुणि	५३८
धोष	३४	कौरकल	५९९	चुलिका	६०२
ओ		कौतिक	६००		
ओ		क्रियावाद	६००	ज	
ओद्यमिक	३९, ४३	क्रियाविशालपूर्व	६११	छेदोपस्थापना	१८४
ओदारिक कायमोम	३६८, १२४	क्षायिक	३९, ५५	ज	
ओदारिकमित्र	३६९	क्षायिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८४, ९३१	जगत्प्रवर	२४२
ओपमन्यव	६००	क्षायिकसम्यग्भुष्टी	८०	जगत्प्रेणी	२४२
ओपशमिक	३९, ४५	क्षायोपशमिक	३९, ४३	जघन्य अनन्तानन्त	२१४
ओपशमिक सम्यक्त्व	४३, ५७, ८८५	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व	५४	जघन्य असंख्यातासंख्यात	२१०
क		क्षायोपशमिक संयम	४४	जघन्य परीक्षासंख्यात	
कठ	६००	क्षोणकपाय	४१, १२७		
कण्टेविद्धि	५९९	क्षिप्र (ज्ञान)	५१९		
कपाट समुद्पात	७५५	क्षेत्र सामायिक	६१३		
कपिल	६००				

विशिष्ट शब्द-सूची

१०९५

प्रदनव्याकरण	५९७	मतिज्ञान	५२१, ५२३	ल	
प्रस्ताव	६५	मध्यमपद	५७०	लक्ष्यशर	५६८, ५६९
प्राग ३४, ३५, २६४, २६६, ८०९		मनःप्रयय	६६५, ६६७	लक्ष्यशर ध्रु.	५२९, ५५७
प्राभूतध्रु.	५७४	मनःपर्याप्ति	२५३, २६५	लक्ष्यपर्याप्तक	२५६, २६१
प्राभूतप्राभूत	५७३	मनुष्यगति	२८०	लव	८१०
प्राभूतसमास	५७४	मनप्राण	२६५, २६६	लेखा	६९६, ९२८
य		मरीचि	६००	य	
बहुमान	५१८	मलिन (दोष)	५६	यवन प्राय	२६५, २६६
बहुविध	५१८	मस्करी	४७, १४०	यवनयोय	१२४
बादरकृष्टि	१२१, १२५	महाकल्प	६१५	वन्दना	६१४
बादर निमोदवर्गणा	८३१, ८३३	महापुण्डरीक	६१५	वर्ग	१२२
बुद्धदशी	४७	माठर	६००	वर्षा	१२२, ३८०
भ		माध्यन्दिन	६००	वर्षमान	६२०
महाकलंक	५१५	मान्यपिक	६००	वसिष्ठ	६००
भयसंज्ञा	२७०	मायागवा	६०१	वस्तु	६००
भयपरिवर्तन	७९५	मायणा	३४, ३७४	वस्तु ध्रु.	५७५
भयप्रत्यय	६१८	विम्यास्व	४६, ४८	वस्तुसमास	५७६
भवानुगामी	६१९	विम्यास्वप्रकृति	४६	वाद्बलि	६००
भवानुगामी	६१९	विम्यादृष्टि	४०, ४२, ४८, ८८७	वाद्यपयण	६००
बन्ध	९२८	मिथ (यु)	४०, ४२, ५३	वाल्कल	६००
भावनपुंसक	४६२	मिथ (योनि)	१५९	वाल्मीकि	६००
भायपुरुष	४६२	मुष्ट	६००	विलोपनीकषा	५९७
भावप्रमाण	२१८	मुहूर्त	२५९, ८१०	विद्यानुवाद	६१०
भावप्राण	२६४	मैयुनसंज्ञा	२७०	विपरीत विम्यास्व	४७
भावमन	९२४	मौद	६००	विपाकमूत्र	५९८
भावसामाधिक	६१३	मौदुगलायन	६००	विपुलमति	६६५-६७२
भावसरय	३६०	य		विभंगज्ञान	५११
भावस्त्री	४६२	यथास्थाव	६८६	विराडाविराट	६०
भावेन्द्रिय	२९४	यात्रिक	४७	विबुध (योनि)	१५६
भाषापर्याप्ति	२५३, २६५	योन	३५४, ३५५, ९२२	विस्तार	३४
भाषपरिवर्तन	७९६	योनि	१५४, १५९	विस्तारचय	३८४
भावलेखा	७२७	र		विहारवत्स्वस्थान	७३५
भावबाहू	८५०	रामायण	५१०	बोधरागसम्पदसंज्ञ	८०१
भेदाभेद विपर्यास	४९	रूपयता	६०२	बोमानुदवाद	६०५
म		रूपसरय	३६०	बेदभाषणा	४६२
मण्डलि (दशन)	१४०	रोमय	६००	बेदकसम्पत्ति	४३, ५४, ८८५
मति अज्ञान	५०९	रोमहृषिकी	६००	वेदक सम्पत्ति	७९

[illegible]

[illegible]

सं १। आ १। उ ५॥

सामान्यतिर्य्यचापर्म्याप्तासावनंगे। गु १। जो १। प ६। प्रा ७। सं ४। ग १। इं १।
का १। यो २। ओ मि। का। वे ३। क ४। जा २। सं १। अ। व २। ले २ क गु। भ १।
३ अगुभ

सं १। सा। सं १। आ २। उ ४॥ कु। कु। च। अ॥

५ सामान्यतिर्य्यचसम्पन्निम्यादृष्टिगन्धे। गु १। जो १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १।
इं १। का १। यो ९। वे ३। क ४। जा ३। सं १। व २। ले ६ भ १। सं १। सं १।
६

आ १। उ ५॥

सामान्यतिर्य्यचासंयतंगे। गु १। जो २। प ६। ६। प्रा १०। ७। सं ४। ग १। इं १।
का १। यो ११। वे ३। क ४। जा ३। म। थु। अ। सं १। अ। व ३। च। अ। अ। ले ६

१० भ १। सं ३। उ। घे। क्षा। सं १। आ २। उ ६॥

सामान्यतिर्य्यचासंपतपर्याप्तंगे। गु १। जो १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। इं १।
का १। यो ९। वे ३। क ४। जा ३। सं १। व ३। ले ६ भ १। सं ३। सं १।
६

आ १। उ ६॥

सामान्यतिर्य्यचापर्म्याप्तासंपतंगे। गु १। जो १। प ६। अ। प्रा ७। सं ४। गति १।
१५ इं १। का १। यो २। वे १। पुं। क ४। जा ३। म। थु। अ। सं १। अ। व ३। च। अ।
अ। ले २ क। गु। भ १। सं २। क्षा। वे। सं १। आ २। उ ६॥
भा १ क

का १, यो ९, वे ३, क ४, जा ३, सं १ अ, व २, ले ६, भ १, सं १, सं १, आ १, उ ५, तदपर्याप्तानां
भा ६

गु १, जी १, प ६, प्रा ७, सं ४, ग १, इं १, वा १, यो २ ओ मि का, वे ३, क ४, जा २, सं १ अ,
व २, ले २ क गु, भ १, सं १ सा, सं १, आ २, उ ४, कु कु च अ। सम्पन्निम्यादृष्टां—गु १, जी १,
भा ३ अगुभ

२० प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, इं १, का १, यो ९, वे ३, क ४, जा ३, सं १, व २, ले ६ भ १, सं १,
भा ६

सं १, आ १, उ ५। असंयतानां—गु १, जी २, प ६ ६, प्रा १०, ७, सं ४, ग १, इं १, का १, यो ११,
वे ३, क ४, जा ३, म थु अ, सं १ अ, व ३ च अ अ, ले ६, भ १, सं ३ उ वे क्षा, सं १, आ २, उ ६,
भा ६

तदपर्याप्तानां—गु १, जी १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, इं १, का १, यो ९, वे ३, क ४, जा ३ म थु
अ, सं १, व ३, ले ६, भ १, सं ३, सं १, आ १, उ ६, तदपर्याप्तानां—गु १, जी १, प ६ अ, प्रा ७ अ,
भा ६

२५ सं ४, ग १, इं १, का १, यो २, वे १ पुं, क ४, जा ३ म थु अ, सं १ अ, व ३ च अ अ, ले २ गु क,
भा १ क

पंचेन्द्रियतिष्यंचयोनिमतिजीवंगणो गु ५। जी ४। संज्यसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्त भेदवि। प ६।
 १६। सं ५। ५। अ। सं। प्रा १०। ७। संज्ञि ९। ७। असंज्ञि। सं ४। ग १। इ १। का १।
 योग ११। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ६। म। धु। अ। कु। कु। वि। सं २। अ। वे। व ३। च।
 अ। अ। ले ६। भ २। सं ५। उ। वे। मि। सा। मि। सं २। आ २। उ २। म। धु। अ।
 ६

५ कु। कु। वि। च। अ। अ॥

तिष्यंग्योनिमतिपर्याप्तजीवंगणो गु ५। जी २। सं। अ। प ६। ५। प्रा १०। सं ५।
 अ। सं ४। ग १। ति। इ १। पं। का १। प्र। यो ९। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ६। म। धु।
 अ। कु। कु। वि। सं २। अ। वे। व ३। ले ६। भ २। सं ५। उ। वे। मि। सा। मि।
 ६

सं २। आ १। उ २। सं ३। मि ३। व ३। तिष्यंग्यपंचेन्द्रिययोनिमत्यपर्याप्तगो ॥ गु २। मि।
 १० सा। जी २। संज्यपर्याप्ता संज्यपर्याप्ता। प ६। सं। अ। ५। अ। प्रा ७। अ ७। अ। सं ४।
 ग १। ति। इ १। पं। का १। प्र॥ यो २। मिथ। का। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा २। कु।
 कु। सं १। अ। व २। च। अ। ले २। क गु भ २। सं २। मि। सा। सं २। आ २। उ ४।
 भा ३। अ गु
 कु। कु। च। अ॥

पंचेन्द्रियतिष्यंग्योनिमतिमिथ्यादृष्टिगो गु १। मि। जी ४। संज्यसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्ता।
 १५ प ६। ६। ५। ५। असंज्ञि। प्रा १०। ७। संज्ञि ९। ७। असंज्ञि। सं ४। ग १। इ १। पं।
 का १। प्र। यो ११। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व २। ले ६। भ २। सं १।
 ६।
 मिथ्यात्व। सं २। आ २। उ ५। कु। कु। वि। च। अ॥

तिष्यंग्योनिमतीनां—गु ५, जी ४ संज्यसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्तिभेदतः प ६ ६ सं, ५ ५ अ सं, प्रा १० ७
 संज्ञि ९ ७ असंज्ञि, सं ४, ग १, इ १, का १, यो ११, वे १ स्त्री, क ४, ज्ञा ६ म धु अ कु कु वि, सं २
 २० अ वे, व ३ च अ अ, ले ६, भ २, स ५ उ वे मि सा मिथाः, सं २, आ २, उ ९ म धु अ कु कु वि च

अ अ, तत्पर्याप्तानां—गु ५, जी २ सं अ, प ६ ५, प्रा १० सं, ९ अ, सं ४, ग १ ति, इ १ पं, का १ न,
 यो ९, वे १ स्त्री, क ४, ज्ञा ६ म धु अ कु कु वि, सं २ अ वे, व ३, ले ६, भ २, स ५ उ वे मि सा

मिथाः, सं २, आ १, उ ९ स ३ मि ३ व ३, तदपर्याप्तानां—गु २ मि सा, जी २ संज्यसंज्ञिपर्याप्ती, प ६
 अ ५ अ, प्रा ७ अ, ७ अ, सं ४, ग १ ति, इ १ पं, का १ न, यो २ मिथ का, वे १ स्त्री, क ४, ज्ञा २
 अ सं अ

कु कु, सं १ अ, व २ च अ, ले २ क गु, भ २, सं २ मि सा, सं २, आ २, उ ४ कु कु च अ, मिथ्या-
 भा ३ अ गु

दृष्टा—गु १ मि, जी ४ संज्यसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्ताः, प ६ ६ संज्ञि, ५ ५ असंज्ञि, प्रा १० ७ सं, ९ ७ असंज्ञि,
 सं ४, ग १ ति, इ १ पं, का १ न, यो ११, वे १ स्त्री, क ४, ज्ञा ३, सं १ आ, व २, ले ६, भ २, सं १
 ६

पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिमतिमिध्रंणे । गु १ । मिध्र । जो १ । पं० ५ । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे १ । स्त्री । क ४ । जा ३ । सं १ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ ।
मिध्र । सं १ । आ १ । उ ५ ॥

पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिमत्पस्यंतम् । गु १ । अ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ ।
५ । का १ । यो ९ । वे १ । स्त्री । क ४ । जा ३ । सं १ । आ ३ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ । उ ।
वे । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिमत्संपत्तास्यंतम् । गु १ । वे । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ ।
इं १ । का १ । यो ९ । वे १ । स्त्री । क ४ । जा ३ । सं १ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ । उ ।
आ ३ ।
वे । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

१० । तिर्यक्पंचेन्द्रियलब्धपण्याप्तिकर्म । गु १ । मि । जो २ । सं १ । अ । प ६ । ५ । प्रा ७ ।
७ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो २ । मिध्र । का । वे १ । वं । क ४ । जा २ । सं १ । व ।
व २ । ले २ क पु । भ २ । सं १ । मि । सं २ । जा २ । उ ४ ॥
भा ३ अशु

मनुष्यश्च क्षत्रियकल्पमप्यहः । अस्ति सामान्यमनुष्यग्ये । गु १४ । जो २ । प ६ । १ ।
प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो १२ । वैक्रमिकद्वयं नहि । वे ३ । क ४ । जा ८ ।
१५ । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ । आ २ । उ १२ ॥

सामान्यमनुष्यपण्याप्तिकर्म । गु १४ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ ।

ले २ क पु । भ १ । सं १ । आ २ । उ ४ । कु कु व अ । मिध्राणां—गु १ मिध्र । जो १ । सं ५ । प ९ ।
भा ३ अशुभ

प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे १ स्त्री । क ४ । जा ३ । सं १ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ मिध्र ।

सं १ । आ १ उ ५ । अद्यतानां—गु १ अ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे १ ।
२० स्त्री । क ४ । जा ३ । सं १ अ । व ३ । ले ६ भ १ । सं २ उ वे । सं १ । आ १ । उ ६ । संयत्तास्यतानां—गु १

वे । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे १ स्त्री । क ४ । जा ३ । सं १ । व ३ ।
ले ६ । भ १ सं २ उ वे । सा १ । आ १ । उ ६ । तिर्यक्पंचेन्द्रियलब्धपण्याप्तिकर्म—गु १ मि । जो २ स्त्री ।
भा ३

प ६ ५ । प्रा ७ ७ । सा ४ । भ १ । इं १ । का १ । यो २ मिध्र का । वे १ वं । क ४ । जा २ कु कु । सं १ भ ।
व २ । ले २ क पु । भ २ । सं १ मि । सं २ । आ २ । उ ४ । चतुर्विधमनुष्येषु सामान्यानां—गु १४ । जो २ ।
भा ३ अशुभ

२५ प ६ १ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो १२ । वैक्रमिकद्वयं नहि । वे ३ । क ४ । जा ८ । सं ३ ।
व ४ । ले ६ भ २ । सं ६ । सं १ । आ २ । उ १२ । तत्पण्याप्तिकर्म—गु १४ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
भा ३

सामान्यमनुष्यसासावनर्गे । गु १ सा । जी २ । प ६ । द । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । म ।
 ई १ । पं का १ । यो ११ । वे ३ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ भ १
 सं १ । सा । सं १ । आ २ । उ ५ ॥

सामान्यमनुष्यसासावनपर्याप्तिकर्मा । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । म ।
 ५ ई पं १ । का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ ।
 ले ६ भ १ । सं १ । आ १ । उ ५ ॥

सामान्यमनुष्यपर्याप्तसासावनर्गे । गु १ । सा । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ ।
 सं ४ । ग १ । ई १ । का १ । यो २ । औ । मिष । का । वे ३ । क ४ । जा २ । सं १ । अ । व २ ।
 ले । का । शु । भ १ । सं १ । सा । सं १ । आ २ । उ ४ ॥
 भा ३ अशुभ

१० सामान्यमनुष्यसम्यग्मिध्यादृष्टिगे । गु १ । मिष । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । गति १ ।
 म । ई १ । पं । का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । अ । व २ । ले ६ भ १ ।
 सं १ । मिष । सं १ । आ १ । उ ५ ॥

सामान्यमनुष्यसंयतगे । गु १ । अ । जी २ । प ६ । द । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ ।
 ई १ । का १ । यो ११ । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । व ३ । ले ६ भ १ । सं ३ । सं १ ।
 १५ आ २ । उ ६ ॥

सामान्यमनुष्यपर्याप्तसंयतगे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । ई १ ।
 का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । अ । व ३ । ले ६ भ १ । सं ३ । उ । वे । आ ।

सासादनार्ता—गु १ सा । जी २ । प ६ । द । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । म । ई १ पं । का १० । व ।
 यो ११ । वे ३ । क ४ जा ३ कु कु वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । स १ सा । सं १ । आ २ । उ ५ ।
 भा ६

२० तत्पर्याप्तार्ता गु १ सा । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । म । ई १ पं । का १० । व ।
 यो ११ । वे ३ । क ४ जा ३ कु कु वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । स १ सा । सं १ । आ १ । उ ५ । तदपर्याप्तार्ता—गु
 भा ६

१ सा । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ । ई १ । का १ । यो २ । मि । का । वे ३ । क ४ । जा
 २ । सं १ । द २ ले २ क शु । भ १ । स १ सा । सं १ । आ २ । उ ५ । सम्यग्मिध्यादृष्टा—गु १ मि । जी १ । प ६ ।
 भा ३ अशु

प्रा १० । सं ४ । ग १ । म । ई १ । का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । द २ । ले ६ । भ १ । स १ ।
 मिष । सं १ । आ १ । उ ५ । असंयतार्ता—गु १ अ । जी २ । प ६ । द । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । ई
 १ । का १ । यो ११ । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । अ । व ३ । ले ६ । भ १ । स ३ । सं १ । आ २ । उ ६ । तत्-
 पर्याप्तार्ता—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । म । ई १ पं । का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । अ ।

ग १। म। ई १। पं। का १। त्र। यो १। आ मि ॥ वे १। पुं। क ४। ता ३। म। थु। अ।
 सं २। सा। छे। द ३। च। अ। अ। ले १। क भ १। सं २। वे क्षा। सं १। आ १। उ ६।
 भा ३ शु
 म। भ्रु। अ। च। अ। अ ॥

सामान्यमनुष्याप्रमत्तगो०। गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं ३। आहारसंज्ञे इल्लेके दो०
 ५ प्रमत्तनो ज्ञे असातसातावेवोदोरणगे व्युत्पत्तिर्युट्पुवरिवं। ग १। ई १। का १। यो ९। वे ३।
 क ४। ता ४। सं ३। द ३। ले ६। भ १। सं ३। सं १। आ १। उ ७॥
 भा ३

मनुष्यसामान्यापूर्वकरणगे०। गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं ३। ग १। ई १। का १।
 यो ९। वे ३। क ४। ता ४। सं २। सा छे। द ३। ले ६। भ १। सं २। द्वितीयोपगम-
 क्षापिकंगळु। सं १। आ १। उ ७॥
 भा १ शु

१० सामान्यमनुष्यप्रथमभागानिवृत्तिगे०। गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं २। मे। पा। ग १।
 ई १। का १। यो ९। वे ३। क ४। ता ४। सं २। सा छे। द ३। ले ६। भ १। सं २।
 उ। क्षा। सं १। आ १। उ ७॥
 भा १

द्वितीयभागानिवृत्तिगे०। गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं १। परिग्रह। ग १। ई १।
 का १। यो ९। वे ०। क ४। ता ४। सं २। सा छे। द ३। ले ६। भ १। सं २। उ। क्षा।
 १५ सं १। आ १। उ ७॥
 भा १

सामान्यमनुष्यतृतीयभागानिवृत्तिगे०। गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं १। परिग्रह।

१। जी १। प ६। प्रा ७। सं ४। ग १। ई १। का १। यो १। आ मि। वे १। पुं। क ४।
 ता ३। म थु। अ। सं २। सा छे। द ३। च। अ। अ। ले १। क भ १। सं २। वे क्षा। सं १। आ १। उ ६। म थु
 भा ३ शु

अप्रमत्तानां—गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं ३। आहारसंज्ञा नहि सातासातानुदीरणा।
 २० ग १। ई १। का १। यो ९। वे ३। क ४। ता ४। सं ३। द ३। ले ६। भ १। सं ३। सं १। आ
 १। उ ७। अपूर्वकरणानां—गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं ३। ग १। ई १। का १। यो ९। वे
 ३। क ४। ता ४। सं २। सा छे। द ३। ले ६। भ १। सं २। द्वितीयोपगमक्षापिको। सं १। आ १।
 भा १

अनिवृत्तिकरणप्रथमभागे—गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं २। मे। पा। ग १। ई १। का १। यो
 ९। वे ३। क ४। ता ४। सं २। सा छे। द ३। ले ६। भ १। सं २। उ। क्षा। सं १। आ १। उ ७।
 भा १

२५ द्वितीयभागे—गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं १। परिग्रह। ग १। ई १। का १। यो ९। वे ०।
 क ४। ता ४। सं २। सा छे। द ३। ले ६। भ १। सं २। उ। क्षा। सं १। आ १। उ ७। तृतीयभागे—
 भा १

सामान्यमनुष्यसयोगकेवलम् । गु १ । जी २ । प ६ । ६ । प्रा ४ । २ । सं ० । ग १ ।
 इं १ । का १ । यो ७ । म २ । वा २ । बी २ । का १ । वे ० । क ० । ज्ञा १ । सं १ । व १ ।
 ले ६ । भ १ । सं १ । ० । आ २ । उ २ ।
 भा १

सामान्यमनुष्यायोगिकेवलम् । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १ । आयुष्य । सं ० । ग १ ।
 ५५ इं १ । का १ । यो ० । वे ० । क ० । ज्ञा १ । सं १ । व १ । ले ६ । भ १ । सं १ । सं ० ।
 भा ०

अनाहार । उ २ ॥

पर्याप्तमनुष्ये मूलोप्यं वस्तव्यमकुं । मानुषियम् । गु १ । जी २ । प ६ । ६ । प्रा १ ।
 ७ । सं ४ । ० । संज्ञारहितं । ग १ । इं १ । का १ । यो । ११ । ० । अपोमिज्जु । वे १ । ० ।
 वेदरहितं । क ४ । कपायरहितं । ज्ञा ७ । म । भु । अ । म । के । कु । कु । वि । सं ६ । वा ।
 १० वे । सा । छे । सु । य । व ४ । च । अ । अ । के । ले ६ । लेख्यारहितं । भ २ । सं ६ । सं १ ।
 १० । रहितसंज्ञित्वं । आ २ । उ ११ ॥

मनःपर्ययज्ञानोपयोगरहितं । पर्याप्तमानुषियम् । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १ ।
 सं ४ । ० । संज्ञारहितं । ग १ । इं १ । का १ । यो २ । ० । योगरहितं । वे १ । स्त्री ० ॥
 वेदरहितं । क ४ । ० । कपायरहितं । ज्ञा ७ । सं ६ । व ४ । ले ६ । अलेख्यं । भ २ । सं ६ ।
 १५ सं १ । ० । संज्ञित्वशून्यं । आ २ । उ ११ ॥

सं १ यथाख्यातः । द ३ । ले ६ । भ १ । व १ । धा । सं १ । आ १ । उ ७ । सयोगिज्जि—गु १ । जी २ ।

प ६ । प्रा ४ । २ । सं ० । ग १ । इं १ । का १ । यो ७ । म २ । वा २ । बी २ । का १ । वे ० । क ० । ज्ञा १ ।
 सं १ । व १ । ले ६ । भ १ । सं १ । सं ० । आ २ । उ २ । अपोमिज्जि—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १ ।

१ आयुष्यं । सं ० । ग १ । इं १ । का १ । यो ० । वे ० । क ० । ज्ञा १ । सं १ । व १ । ले ६ । भ १ ।

२० व १ । सं ० । आ १ । अनाहारः । उ २ । पर्याप्तमनुष्याणां मूलोप्यं वस्तव्यः । मानुषीणां—गु १ । जी २ ।
 प ६ । प्रा १ । ७ । सं ४ शून्यं । ग १ । इं १ । का १ । यो ११ शून्यं । वे १ । क ४ शून्यं ।
 ज्ञा ७ म भु अ के कु कु वि । सं ६ व वे सा छे सु य । व ४ च अ अ के । ले ६ शून्यं । भ २ । व १ ।
 सं १ शून्यं । आ २ । उ ११ मनःपर्ययो नहि ।

उत्तमार्थाणां—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १ । ० । सं ४ शून्यं । ग १ । इं १ । का १ । यो १
 २५ शून्यं । वे १ स्त्री शून्यं । क ४ शून्यं । ज्ञा ७ । सं ६ । व ४ । ले ६ शून्यं । भ २ । सं ६ । सं

१ भावस्त्रीणां ।

सं १। सं १। आ २। उ ५॥

मानुषि सासावनपर्व्यामिर्गणे। गु १। सा। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। इं १।
का १। यो ९। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व २। ले ६। भ १। सं १। सं १।
आहा १। उ ५॥

५ मानुषिसासावनापर्व्यामिर्गणे। गु १। सा। जी १। प ६। अ। प्रा ७। अ। सं ४। ग १।
इं १। का १। यो २। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा २। सं १। अ। व २। ले २। क शु। भ १। सं १।
सा। सं १। आ २। उ ५॥ भा ३ अशुभ

मानुषिसम्यग्मिष्यादृष्टिगणो। गु १। मिष। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १।
इं १। का १। यो ९। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व २। ले ६। भ १। सं १।
१० मिष। सं १। आ १। उ ५॥

मानुष्यसंयतसम्यादृष्टिगणो। गु १। अ। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। इं १।
का १। यो ९। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व ३। ले ६। भ १। सं ३। सं १।
आ १। उ ६॥

मानुषिवेशसंयतगे। गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। का १। इं १। यो
१५ ९। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ३। सं १। वे। व ३। ले ६। भ १। सं ३। सं १। आ १। उ ६॥
भा ३ शुभ

मानुषिप्रमत्तसंयतगे। गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। इं १। का १।
यो ९। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ३॥

क ४। ज्ञा ३ कु कु वि। सं १। व २। ले ६। भ १। स १। सा। सं १। आ २। उ ५। तत्पर्याय

घासावनामा—गु १। सा। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। इं १। का १। यो ९। वे १। स्त्री। क ४।
२० ज्ञा ३। सं १। अ। व २। ले ६। भ १। स १। सा। सं १। आ १। उ ५। तत्पर्यायानां—गु १। सा। जी
१। प ६। अ। प्रा ७। अ। सं ४। ग १। इं १। का १। यो २। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा २। सं १। व।
द २। ले २। क शु। भ १। स १। सा। सं १। आ २। उ ४। सम्यग्मिष्यादृष्टेः—गु १। मिष। जी १।
भा ३ अशुभ

प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। इं १। का १। यो ९। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व २।
ले ६। भ १। स १। मिष। सं १। आ १। उ ५। अर्थयत्नानां—गु १। अ। जी १। प ६। प्रा १०।
२५ सं ४। ग १। इं १। का १। यो ९। वे १। स्त्री। क ४। ज्ञा ३। सं १। अ। व ३। ले ६। भ १। व
३। सं १। आ १। उ ६। देवसंयतस्य—गु १। जी १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। इं १। का १।

मानुषितृतीयभागानिपुत्तिगन्धे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ । ग १ । इं १ ।
का १ । यो ९ । वे ० । क ३ । मा । या । लो । जा ३ । सं २ । सा । छे । व ३ । ले ६ भ १ ।
भा १
सं २ । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

मानुषिचतुर्व्यभागानिपुत्तिगन्धे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ । ग १ । इं १ ।
५ का १ । यो ९ । वे ० । क २ । या । लो । जा ३ । सं २ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ । सं १ ।
भा १
आ १ । उ ६ ॥

मानुषिपंचमभागानिपुत्तिगन्धे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ । परिग्रह । ग १ ।
इं १ । का १ । यो ९ । वे ० । क १ । या = लो । जा ३ । सं २ । सा । छे । व ३ । ले ६
भा १
भ १ । सं २ । उ । क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

१० मानुषिसूक्ष्मसांपरायणे । गु १ । सू । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ । परिग्रह । ग १ ।
इं १ । का १ । यो ९ । वे ० । क १ । सू = लो । जा ३ । सं १ । सू । व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ ।
भा १
उ । क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

मानुष्युपशांतकपायणे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं । ० । ग १ । इं १ । का १ ।
यो ९ । वे ० । क ० । जा ३ । सं १ । यपा । व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ । उ । क्षा । सं १ ।
भा १

१५ आ १ । उ ६ ॥

तृतीयभागे—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ । ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे १ ।
क ३ । मा माया लो । जा ३ । सं २ सा छे । व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ । सं १ । आ १ । उ ६ । वृत्तं
भा १

भागे—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ । परि । ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे ० । क २ य
लो । जा ३ । सं २ सा छे । व ३ ले ६ । भ १ । सं २ । सं १ । आ १ । उ ६ । पंचमभागे—गु १ । जी १ ।
भा १

२० प ६ । प्रा १० । सं १ प । ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे ० । क १ या लो । जा ३ । सं २ सा छे ।
व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ उ क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ । सूक्ष्मसांपरायस्य—गु १ । सू । जी १ । प ६ ।
भा १

प्रा १० । सं १ परिग्रहः । भ १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे ० । क १ । सू लो । जा ३ । सं १ सू । इं १ ।
ले ६ । भ १ । सं २ उ क्षा । सं १ । आ १ । उ ६ । उग्रतकपायस्य—गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० ।
भा १

सं ० । ग १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे ० । क ० । जा ३ । सं १ य । व ३ । ले ६ । भ १ । सं १ क्षा ।
भा १

देवसामान्यपर्याप्तिकर्मे । गु ४ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । वे १ । इं १ ।
का १ । प्र । यो ९ । वे २ । क ४ । जा ६ । सं १ । अ । व ३ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ ।
भा ३

आ १ । उ ९ ॥

देवसामान्यपर्याप्तिकर्मे । गु ३ । मि । सा । अ । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ ।
५ ग १ । इं १ । का १ । यो २ । मि । का । वे २ । क ४ । जा ५ । म । थु । अ । कु । कु । सं १ ।
व ३ । ले २ । क । द्यु । भ २ । सं ५ । उ । वे । छा मि । सा । सं १ । आ २ । उ ८ । म । थु । अ ।
भा ६
कु । कु । च । अ । अ ॥

देवसामान्यपर्याप्तिकर्मे । गु १ । मि । जी २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ ।
ग १ । इं १ । का १ । यो ११ । वे २ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । च । अ ।
१० ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं १ । आ २ । उ ५ । कु । कु । वि । च । अ ॥
भा ६

देवसामान्यपर्याप्तिकर्मे । गु १ । मि । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ ।
इं १ । का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । जा ३ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि ।
सं १ । आ १ । उ ५ ॥
भा ३

देवसामान्यपर्याप्तिकर्मे । गु १ । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ ।
१५ सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो २ । मि । का । वे २ । क ४ । जा २ । सं १ । अ । व २ ।
ले २ । क द्यु । भ २ । सं १ । मि । सं १ । आ २ । ऊ ४ ॥
भा ६

५ अ । व । ले ६ । भ २ । उ ९ । सं १ । आ २ । उ ९ । म थु अ कु कु वि च अ अ । तत्पर्याप्तानां—

गु ४ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । वे १ । इं १ । का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । प्रा ९ ।
सं १ । अ । व ३ । ले ६ । भ २ । उ ९ । सं १ । आ १ । उ ९ । तत्पर्याप्तानां—गु ३ मि सा अ । जी १ ।
भा ३

१० अ । प ६ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो २ मि का । वे २ । क ४ । जा ५ म थु अ कु
कु । सं १ । अ । व ३ । ले २ क द्यु । भ २ । उ ५ उ वे छा मि सा । सं १ । आ २ । उ ८ म थु अ कु
भा ६

कु च अ अ । पर्याप्तानां—गु १ मि । जी २ । प ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ ।
यो ११ । वे २ । क ४ । जा ३ कु कु वि । सं १ । अ । व २ । च अ । ले ६ । भ २ । उ ५ मि । सं १ ।
भा ६

अ २ । उ ५ कु कु वि च अ । पर्याप्तानां—गु १ अ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । इं १ ।
१५ का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । जा ३ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ । उ ५ मि । सं १ । प्रा १ ।
भा ३ गु ३

उ ५ । तत्पर्याप्तानां—गु १ । जी १ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ । इं १ । का १ । यो २ मि

देवसामान्यासंयतपर्याप्तिकर्मो०। गु१। जो१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। इं१।
का१। यो९। वे२। क४। शा३। सं१। अ। व३। ले६। भ१। सं३। सं१।
भा३
आ१। उ६॥

देवसामान्यासंयतपर्याप्तिकर्मो०। गु१। जो१। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग१।
५। इं१। का१। यो२। मि। का। वे१। पु०। क४। शा३। सं१। व३। ले२। क५।
भा३। गु
भ१। सं३। सं१। आ२। उ६॥

भवनप्रयवेवर्कज्जो०। गु४। जो२। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग१। इं१।
का१। यो११। वे२। क४। शा६। सं१। व३। ले६। भ२। सं५। उ। वे। मि।
भा४
सा। मि। सं१। आ२। उ९। म। थु। अ। कु। कु। वि। च। अ। अ॥

१०। भवनप्रयपर्याप्तिवेवर्कज्जो०। गु१। जो१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। इं१। का१।
यो९। वे२। क४। शा६। म। थु। अ। कु। कु। वि। सं१। व३। ले६। भ२।
भा१
सं५। उ। वे। मि। सा। मि। सं१। आ१। उ९॥

भवनप्रयापर्याप्तिवेवर्कज्जो०। गु२। मि। सा। जो१। प६। प्रा७। अ। सं४। ग१।
इं१। का१। यो२। मि। का। वे२। क४। शा२। सं१। व३। ले२। क५। भ२।
भा३। अ५।

१५। सं२। मि। सा। सं१। आ२। उ४॥

उ६। तत्पर्याप्तानां—गु१। जो१। प६। प्रा१०। सं४। ग१। इं१। का१। यो९। वे२।
क४। शा३। सं१। अ। व३। ले६। भ१। व३। सं१। आ१। उ६। तदपर्याप्तानां—गु१। जो१।
भा३

अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग१। इं१। यो२। मि। का। वे१। पु०। क४। शा३। सं१। व३।
ले२। क५। भ१। व३। सं१। आ२। उ६। भवनप्रयदेवानां—गु४। जो२। प६। ६। प्रा१०। ७।
भा३। भुम

२०। सं४। ग१। इं१। का१। यो११। वे२। क४। शा६। सं१। व३। ले६। भ२। सं५। उ।
भा४

मि। सा। मि। सं१। आ२। उ९। म। थु। अ। कु। कु। वि। च। अ। अ॥ तत्पर्याप्तानां—गु४। जो१। प६।
प्रा१०। सं४। ग१। इं१। का१। यो९। वे२। क४। शा६। म। थु। अ। कु। कु। वि। सं१। व३।
च। अ। अ॥ ले६। भ२। सं५। उ। वे। मि। सा। मि। सं१। आ१। उ९। तदपर्याप्तानां—गु२। मि। सा। यो१।
१।

अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग१। इं१। का१। यो२। मि। का। वे२। क४। शा२। सं१।
२५। व३। ले२। क५। भ२। सं५। उ। वे। मि। सा। सं१। आ२। उ४॥
भा३। अ५।

भवनप्रयसम्पत्तिम्यावृष्टिगच्छे । गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । ई १ ।
का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । मिथ । सं १ ।
आ १ । उ ५ ॥
भा १

भवनप्रयासंप्रतर्गो ॥ गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । ई १ । का १ । यो ९ ।
५ वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ । उ । वे । सं १ । आ १ । उ ६ ॥
भा १

सौधर्मेशानवेयस्कच्छे । गु ४ । जो २ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । ई १ ।
का १ । यो ११ । वे २ । क ४ । ज्ञा ६ । सं १ । व ३ । ले ३ । यो । प । गु । भ २ । त ६ ।
भा १
सं १ । आ २ । उ ९ ॥

सौधर्मद्वयपर्याप्तदेयस्कच्छे । गु ४ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । ई १ ।
१० का १ । यो ९ । वे २ । क ४ । ज्ञा ६ । सं १ । व ३ । ले १ ते । भ २ । सं ६ । सं १ ।
आ १ । उ ९ ॥

सौधर्मद्वयापर्याप्तदेयस्कच्छे । गु ३ । मि । सा । अ । जो १ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ ।
सं ४ । ग १ । ई १ । का १ । यो २ । वे २ । क ४ । ज्ञा ५ । कु । कु । म । धु । अ । सं १ ।
व ३ । ले २ । भ २ । सं ५ । उ । वे । क्षा । मि । सा । सं १ । आ २ । उ ८ । म । धु । अ ।
भा १
१५ कु । कु । च । अ । अ ॥

सौधर्मद्वयमिम्यावृष्टिगच्छे । गु १ । जो २ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ ।
ई १ । का १ । यो ११ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व २ । ले ३ । भ २ । सं १ । मि ।
भा १
सं १ । आ २ । उ ५ ॥

ले २ क गु भ १, सं १ सा, सं १ आ २, उ ४, सम्पत्तिम्यावृष्टी—गु १, जो १, प ६, प्रा १०, सं ४, प १,
भा ३ अथ
२० ई १, का १, यो ९, वे २, क ४, ज्ञा ४, सं १, व २, ले ६, भ १, सं १ मिथं, सं १, आ १, उ ५
भा १

असंपत्तिनां—गु १, जो १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, ई १, का १, यो ९, वे २, क ४, ज्ञा ३, सं १,
व ३, ले ६, भ १, सं २ उ वे, सं १, आ १, उ ६, सौधर्मेशानदेवानां—गु ४, जो २, प ६, प्रा १०,
भा १
सं ४, ग १, ई १, का १, यो ११, वे २, क ४, ज्ञा ६, सं १ व ३, ले ३ पी क गु, भ २, सं ६, सं १,
भा १ ते

आ २, उ ९, तत्पर्याप्तानां—गु ४, जो १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, ई १, का १, यो ९, वे २, क ४,
२५ ज्ञा ६, सं १, व ३ ले १ ते, भ २, सं ६, सं १, आ १, उ ९, तदपर्याप्तानां—गु ३ मि स अ, जो १,
भा १
प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, ग १, ई १, का १, यो २, वे २, क ४, ज्ञा ५ कु कु म धु अ, सं १, व ३,
ले २, भ २, उ ५ उ वे दा मि सा, सं १, आ २ उ ८ म धु अ कु कु च अ अ, मिम्यावृष्टीनां—गु १,
भा १

सौधर्मद्वयसंयतगो० । गु १ । जो २ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १ । ई १ ।
का १ । यो ११ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व ३ । ले ३ ते क गु १ भ १ । सं ३ । उ ।
भा १ ते

वे । क्षा । सं १ । आ २ । उ ६ ॥

सौधर्मद्वयपर्याप्तासंयतगो० । गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग १ । ई १ । का
५ । यो ९ । वे २ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व ३ । ले १ भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ६ ॥
भा १

सौधर्मद्वयपर्याप्तासंयतगो० । गु १ । जो १ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ । सं ४ । ग १ ।
ई १ । का १ । यो २ । मि । का । ये १ । पु ० । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । व ३ । ले २ क गु
भा १ ते
भ १ । सं ३ । सं १ । आ २ । उ ६ ॥

अपर्याप्तकालदोष्टपञ्चमसम्पत्त्यर्थं तु संभयितुं गुमे दोष्टे वेष्टरूपदुगु । श्रेणिपिबमवतीमं-
१० गच्छो असंयतादिचतुर्गुणस्यानंमलोऽद्वितीयोपञ्चमसम्पत्त्यमुत्पुर्वरिव अस्ति मध्यमतेजोलेश्ये-
योऽलु कालोऽप्यु सौधर्मद्वयदेवकंलोऽद्वितीयोऽप्युत्पन्नगो० अपर्याप्तकालदोष्टपञ्चमसम्पत्त्यर्थं पदेयस्-
दुगुमेके दोष्टे :-

तिष्ठं वोण्हं वोण्हं छण्हं वोण्हं च तेरसण्हं च ।

एत्तो य चोहसण्हं लेस्सा भवणाविदेवाणं ॥

तेऊ तेऊ तह तेउ पम्मा पम्मा य पम्ममुक्का य ।

१५

मुक्का य परममुक्का लेस्सा भवणाविदेवाणं ॥

इत्यादिसूत्रसूचितकर्मविबलपार्याप्तकालदोष्टपञ्चमसम्पत्त्यास्तित्थमरिपत्पदुगु । असंयत-
सम्पदुष्टिगे स्त्रीवेदबोऽलु उत्पत्तिर्भविसवेदितु आतंगे पर्याप्तापमोदे वस्तुम्यमवकुमलि
क्षायिकसम्पत्त्यमुभिल्लेके बोडे देवगतिपोऽलु दर्शनमोहनोपक्षणाभावमप्युर्वरिवनिते विशेषमरि-
पत्पदुगु ।

२० द २ ले १ ते, भ १, स १ मिथं, सं १, आ १, उ ५, असंयतानां-गु १, जो २, प ६ ६, प्रा १०, ७, सं ४,
ग १, ई १, का १, यो ११, वे २, क ४, ज्ञा ३, सं १, व ३, ले ३ ते क गु, भ १ स ३ उ वे क्षा, सं १,
भा १ ते

आ २, उ ६, उत्पत्तिमानां-गु १, जो १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग १, ई १, का १, यो ९, वे २, क ४,
ज्ञा ३, सं १, व ३, ले १, भ १, स ३, सं १, आ १, उ ६, उदपयमानां-गु १, जो १, प ६ अ, प्रा ७ अ,
भा १

सं ४, ग १, ई १, का १, यो २ मि का, ये १ पुं, क ४, ज्ञा ३, सं १, व ३, ले २ क गु भ १, स ३ ई १,
भा १ ते

२५ आ २, उ ६, वमानिकेषु द्वितीयोपञ्चमसम्पत्त्यर्थं आरोहकापूर्वकरणप्रथमभागवजितोपञ्चमधेय्यारोहकावरोहकाणां
उदवर्णनचतुरसंयतादीनां च तत्सम्पत्त्वमृतानां तत्तल्लेभ्यया तत्रोत्पत्तेरपर्याप्तकाले संभवति, असंयतस्त्रीणामेक-
पर्याप्ताकाप एक सम्पत्पदुष्टोनां तत्रानुत्पत्तेः, पर्याप्तकर्मभूमिमनुष्याणामेव दर्शनमोहक्षणाप्रारंभसंभवेऽपि
उनिष्ठापकानां चतुर्वर्तिपूतसेः, धायिकसम्पत्त्वमत्र संभवतीति विशेषः स्मर्तव्यः ।

इन्द्रियानुवादोऽन्तः श्रुतीषामनुवादः। सामान्यैर्केन्द्रियं यन्मन्त्रे पेल्लप्यद्वल्लि। गु१। मि।
 जो४। वा१। सू०। प४। अ१। प४। प्रा४। ३। सं४। ग१। ति। इं१। ए। का५।
 प्रसरहितमामि योग ३। औदारिक तन्मिधकर्मण। वे१। पंड। क४। ज्ञा२। कु। कु। सं१।
 अ। द१। अचक्षु। ले६। भ२। सं१। मि। सं१। अ१। आ२। उ३। कु। कु। अचक्षु।
 भा३ अशुभ

५ सामान्यैर्केन्द्रियं पर्म्याप्तकर्म०। गु१। मि। जि२। वा०। सू०। प४। प्रा४। ए। का
 उ। आयुः। सं४। ग१। ति। इं१। ए। का५। प्रसरहितमामि। यो१। ओ। का। वे१। पंड।
 क४। ज्ञा२। कु। कु। सं१। अ। द१। अचक्षु। ले६। भ२। सं१। मि। सं१।
 भा३ अशुभ
 असंति। आ। उ३। कु। कु। अचक्षुदशन॥

सामान्यैर्केन्द्रियं पर्म्याप्तकर्म०। गु१। मि। जो२। वा। अ०। सू०। प४। अ१। प्रा३।
 १० अ सं४। ग१। ति। इं१। ए। का५। यो२। मि। का। वे१। प०। क४। ज्ञा२। कु। कु।
 सं१। अ। द१। अचक्षु। ले२। क४। भ२। सं१। मि। सं१। अ सं१। आ२। उ३।
 भा३ अशुभ
 कु। कु। अच॥

वादेर्केन्द्रियं यन्मन्त्रे। गु१। मि। जो२। प। अ१। प४। प्रा४। ३। सं४। ग१।
 ति। इं१। ए। का५। यो३। ओ। मि। का। वे१। प०। क४। ज्ञा२। कु। कु। सं१। अ।
 १५ द१। अचक्षु। ले६। भ२। सं१। मि। सं१। असंति। आ२। उ३॥
 भा३ अशुभ

वादेर्केन्द्रियं पर्म्याप्तकर्म०। गु१। मि। जो१। प४। प्रा४। सं४। ग१। ति। इं१।
 ए। का५। यो१। ओ। का। वे१। प०। क४। ज्ञा२। सं१। अ। द१। अचक्षु। ले६। भ२।
 भा३ अशुभ
 सं१। मि। सं१। असंति। आ१। उ३॥

इन्द्रियानुवादोऽन्तः श्रुतीषामनुवादः—तत्र सामान्यैर्केन्द्रियाणां—गु१ मि, जो४ वा सू० प४, प४४, प्रा४१,
 २० सं४, ग१ ति, इं१ ए, का५ प्रसो नहि, यो३ औदारिकतन्मिधकर्मणाः, वे१ पं, क४, ज्ञा२ कु कु, सं१
 अ, द१ अ, ले१ भ२, सं१ मि, सं१ असंति, आ२, उ३ कु कु अचक्षुः। तत्परात्तानां—गु१ मि,
 भा३ अशुभ

जो२ वा प० प४, प४ ए, प्रा४ ए का उ आयुः, सं४, ग१ ति, इं१ ए, का५, प्रसो नहि, यो१ ओ,
 वे१ सं, क४, ज्ञा२ कु कु, सं१ अ, द१ अच, ले६ भ२, सं१ मि, सं१ असंति, आ१, उ३ कु कु
 भा३ अशुभ
 अचक्षुदशनं, तन्मिधकर्मणां—गु१ मि, जो२ वा अ० प४, प४ अ, प्रा३ अ, सं४, ग१ ति, इं१ ए,
 २५ का५, यो२ मि का, वे१ पं, क४, ज्ञा२ कु कु, सं१ अ, द१ अच, ले२ क४, भ२, सं१ मि,
 सं१ असंति, आ२, उ३ कु कु अच, वादराणां—गु१ मि, जो२ प४, प४४, प्रा४३, सं४, ग१
 ति, इं१ ए, का५, यो३ ओ मि का, वे१ पं, क४, ज्ञा२ कु कु, सं१ अ, द१ अच, ले१, प०,
 सं१ मि, सं१ असंति, आ२, उ३, तत्परात्तानां—गु१ मि, जो१ प४, प४, प्रा४, सं४, ग१ ति, इं१

સૂક્ષ્મેકેન્દ્રિયાપર્યાપ્તકર્મ ૧ ગુ ૧ જી ૧ પ ૪ અ પ્રા ૩ એ ૧ કા ૧ આ ૧ સં ૪
 ગ ૧ હં ૧ કા ૧ યો ૨ મિ ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ વ ૧
 લે ૨ ક શુ ૧ ભ ૨ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અસંજિ ૧ આ ૨ ૩ ૩ ॥
 આ ૩

ઇંતુ પર્યાપ્તનામકર્મોદય સહિતરપ્ય સૂક્ષ્મેકેન્દ્રિય નિવૃત્ત્યપર્યાપ્તકર્મ આલાપત્રયં પેઢત્વદ્યુ ॥

૫ સૂક્ષ્મેકેન્દ્રિયલઘ્યપર્યાપ્તનામકર્મોદયસહિતર્મો ઓદે અપર્યાપ્તિલાપં વત્તવ્યમશુભુ
 સૂક્ષ્મેકેન્દ્રિયાપર્યાપ્તિલાપવંતશ્ચુ ॥ યિયોપમિત્ત ॥

દ્વોન્દ્રિયંગઢો ૧ ગુ ૧ મિ ૧ જી ૨ પ ૪ અ ૫ ૫ પ્રા ૬ સં ૪ ગ ૧ તિ ૧
 હં ૧ દિ ૧ કા ૧ યો ૪ ઓ ૨ યા ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧
 વ ૧ અ ૧ લે ૬ ૧ ભ ૨ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અસંજિ ૧ આ ૨ ૩ ૩ ॥

આ ૩ અ શુ

૧૦ દ્વોન્દ્રિયપર્યાપ્તકર્મો ૧ ગુ ૧ જી ૧ પ ૫ પ્રા ૬ સં ૪ ગ ૧ હં ૧ કા ૧ યો ૨
 વા ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ વ ૧ અ ૧ લે ૬ ૧ ભ ૨ સં ૧
 મિ ૧ સં ૧ અસંજિ ૧ આ ૧ ૩ ૩ ॥

દ્વોન્દ્રિયાપર્યાપ્તકર્મો ૧ ગુ ૧ જી ૧ અ ૫ ૫ પ્રા ૪ સં ૪ ગ ૧ તિ ૧ હં ૧ દો
 કા ૧ યો ૨ મિ ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ વ ૧ અ ૧
 લે ૨ ક શુ ૧ ભ ૨ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અ ૧ આ ૨ ૩ ૩ ॥

આ ૩ અ શુ

દ્વોન્દ્રિયલઘ્યપર્યાપ્તિંગોદે અપર્યાપ્તિલાપં માત્રત્વકુ ૧ ત્રીન્દ્રિયંગઢો ગુ ૧ જી ૨ પ ૫
 ૫ પ્રા ૭ ૫ સં ૪ ગ ૧ તિ ૧ હં ૧ ત્રિ ૧ કા ૧ યો ૪ ઓ ૨ વા ૧ કા ૧ વે ૧ વં
 ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ વ ૧ અ ૧ લે ૬ ૧ ભ ૨ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અ
 આ ૨ ૩ ૩ ॥

આ ૩

૨૦ આ ૧ ૩ ૩ ॥ તદપર્યાપ્તિનાં—ગુ ૧ જી ૧ પ ૪ અ પ્રા ૩ એ ૧ કા ૧ આ ૧ સં ૪ ગ ૧ હં ૧ કા ૧ યો ૨ તિ
 કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ વ ૧ અ ૧ લે ૨ ક શુ ૧ ભ ૨ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અ ૧ આ ૧ ૩ ૩ ॥
 આ ૩ અ શુ

તલ્લઘ્યપર્યાપ્તિનાં તદપર્યાપ્તિવત્, દ્વોન્દ્રિયાનાં—ગુ ૧ મિ ૧ જી ૨ પ ૪ અ ૫ ૫ પ્રા ૬ સં ૪ ગ ૧ તિ ૧
 હં ૧ દો ૧ કા ૧ યો ૪ ઓ ૨ વા ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ વ ૧ અ ૧ લે ૬ ૧ ભ ૨
 સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અસંજો ૧ આ ૨ ૩ ૩ ॥ તદપર્યાપ્તિનાં—ગુ ૧ મિ ૧ જી ૧ પ ૫ પ્રા ૬ સં ૪ ગ ૧ તિ ૧
 દો ૧ કા ૧ યો ૨ વા ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ લે ૬ ૧ ભ ૨ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અ ૧ આ ૨ ૩ ૩ ॥
 આ ૩ અ શુ

૨૫ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અસંજો ૧ આ ૨ ૩ ૩ ॥ તદપર્યાપ્તિનાં—ગુ ૧ મિ ૧ જી ૧ પ ૫ પ્રા ૬ સં ૪ ગ ૧ તિ ૧
 દો ૧ કા ૧ યો ૨ વા ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ લે ૬ ૧ ભ ૨ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અ ૧ આ ૨ ૩ ૩ ॥
 આ ૩

સં ૧ અ ૧ આ ૧ ૩ ૩ ॥ તદપર્યાપ્તિનાં—ગુ ૧ જી ૧ પ ૫ અ પ્રા ૪ અ સં ૪ ગ ૧ હં ૧ કા ૧ યો ૨
 મિ ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ લે ૨ ક શુ ૧ ભ ૨ સં ૧ મિ ૧ સં ૧ અ ૧ આ ૨ ૩ ૩ ॥
 આ ૩ અ શુ

તલ્લઘ્યપર્યાપ્તિનાં તદપર્યાપ્તિવત્, ત્રીન્દ્રિયાનાં—ગુ ૧ જી ૨ પ ૫ ૫ પ્રા ૭ ૫ સં ૪ ગ ૧ તિ ૧
 હં ૧ ત્રો ૧ કા ૧ યો ૪ ઓ ૨ વા ૧ કા ૧ વે ૧ વં ૦ ક ૪ જા ૨ સં ૧ અ ૧ લે ૬ ૧ ભ ૨
 આ ૩

संतिपंचेन्द्रियलब्धपर्व्याप्तकणे । गु १ । मि । जो १ । त ० अ । प ६ । अ । प्रा ७ । अ ।
सं ४ । ग २ । ति । म । ई १ । प । का १ । य । यो २ । जो मि । का १ । ये १ । प ० । ड ।
जा २ । सं १ । अ । व २ । ले २ क नु भ २ । सं १ । मि । सं १ । संति । जा २ । ऊ ४ ॥
भा ३ अ नु
असंतिपंचेन्द्रियलब्धपर्व्याप्तकणे ।
१ । ति । इ १ । सं ।

असंतिपंचेन्द्रियलक्ष्यपर्याप्तिकगो०। गु१। मि०। जो१। प५। अ०। प्रा७। ज०५।
 १०। ग१। ति०। इ१। प०। का१। प्र०। यो२। ओ०। मि०। का१। वे१। यं०। क५। ज्ञा२। सं॥
 अ०। व२। च०। अ०। ले२। क०। भ२। सं१। मि०। सं१। असंति०। आ२। उ५॥
 भा३ अणु
 अनिन्द्रियलक्ष्यो तिष्ठगतिर्योऽन्वेयवन्तः।
 भावमपुनरिदमितिन्द्रियमण्डलं।

अनिद्रियदग्धो तिष्ठतियोऽन्वेष्टतयस्कुमेकं दोषे तिष्ठदग्धो एकेन्द्रियादिनामकर्मादिना

कायायुषादबोद्ध । शु १४ । जो ५७ । ९८ । ४०६ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । पा । १० ।
 १५ । ७ । १ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । ४ । २ । १ । सं ४ । ग ४ । ६ । ५ । का ६ । यो ११ ।
 वे ३ । क ४ । ना ८ । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ २ । उ १२ ॥

४१ मि, सं १ अर्चनी, आ २, उ ४। पंचैन्द्रियलक्षणपर्याप्तानां—गु १ मि, जी २ संयत्तसंयत्तयोः, ११
 अ, सं ५ अ अ, प्रा ७ सं अ, उ अ अ, सं ४, म २ वि म, ई १ पं, का १ अ, यो २ ओ मि १ म।
 वे १ पं, क ४, आ २, सं १ अ, द २ अ अ, के २ क गु, भ २, ख १ मि, सं २, आ २, उ ४।
 तत्त्वसंज्ञा—गु १ मि, जी १ प अ, प ६ प, प्रा ७ अ अ, भा २ अ अ, भ २, ख १ मि, सं २, आ २, उ ४।
 नौमि का, वे १ पं, क ४, आ २, सं १ अ, म २ वि म, ई १ पं, का १ अ, यो २ ओ मि १ म।
 ४१ मि, सं १ अर्चनी, आ २, उ ४। पंचैन्द्रियलक्षणपर्याप्तानां—गु १ मि, जी २ संयत्तसंयत्तयोः, ११

२०. वल्लभिना—गु १ मि, जी १ प ख, ण १ व, य १ रि म, इं १ पं, वा १ च, यो २ ओ मि १ म, लो १ मि का, वे १ पं, क ४, जा २, खं १ ख, द २, ले २ क गु, भ २, स १ मि, खं २, वा २, उ ४।
 वदसंतिता—गु १ मि, जी १ प ख, ण १ व, य १ रि म, इं १ पं, वा १ च, यो २ ओ मि १ म, लो १ मि का, वे १ पं, क ४, जा २, खं १ ख, द २, ले २ क गु, भ २, स १ मि, खं १ वंशो, वा २, उ ४।

वरसंज्ञिता-गु १ मि, जी १, व १ ब, प्रा ७ ब, सं ४, म १ ति म, इं १ पं, वा १ व, यो २
 सं १ पं, क ४, मा २, सं १ ब, द २ च ब, ले २ क गु, भ २, स १ मि, सं १ संज्ञो, आ २, उ ४।
 बलीन्द्रियाणां सिद्धयतिवत् । इति इन्द्रियमार्गणां गता ।
 कायानुवादे-गु १ मि, जी १, व १ ब, प्रा ७ ब, सं ४, म १ ति, इं १ पं, का १ व, यो २ बलि म,
 ४, ४ ४, ४ १ १, जी १, व १ ब, प्रा ७ ब, सं ४, म १ ति, इं १ मि, सं १ ब, आ २, उ ४।

अतीन्द्रियाणां सिद्धगतिवत् । इति इन्द्रियमार्गणां गत्वा ।
 १५ कायानुवादे-मु १४, जी ५७ १८ ४०६, प ६६, ५५, ४, ४, प्रा १०, ७, १७, ८, ६, २६
 ६, ४, ४३, ४२१, सं ४, य ४, ई ५, का ६, यो १५, वे ३, क ४, ज्ञा ८, सं ७, द ४, ले ६, प्र ३
 ६, सं २, आ २, उ १२ ।

प्रत्येकशरीरवनस्पतिपर्याप्तिकर्मो० गु १। मि। जी २। प ४। प्रा ४। सं ४। ग १ ति।
इं १ ए। का १ वन। यो १ ओ। वे १ यं। क ४। ज्ञा २। सं १ अ। द १ अच। ले ६ भ २।
भा ३

सं १। मि। सं १। अ सं। आ २। उ ३॥

प्रत्येकशरीरापार्याप्तयनस्पतिगे० गु १ मि। जी १। प ४। प्रा ३। अ। सं ४। ग १ ति।
५ इं १ ए। का १ वन। यो २। मि। का। वे १ यं। क ४। ज्ञा २। सं १। अ। व १। अच
ले २ क शु भ २। सं १ मि। सं १ अ। आ २। उ ३॥
भा ३ अ शु

इंतु निर्वृत्यपर्याप्तिकर्मो० आलापत्रयं पेक्षत्पटदुग्। लव्यपर्याप्तिकर्मो० यो० द्वे आलापमरकुम-
शुषुं प्रत्येकबादरनिगोदप्रतिष्ठितं गच्छं शु पेक्षदंते वल्लव्यमककुं॥

साधारणवनस्पतिगच्छे गु १ मि। जी ८॥ नित्यचतुर्गतियावरसूक्ष्मपर्याप्तापार्याप्ति।
१० प ४। ४। प्रा ४। ३। सं ४। ग १ ति। इं १ ए। का १ वन। यो ३। ओ २। का १। वे १ यं।
क ४। ज्ञा २। सं १। अ। व १। अच ले ६ भ २। सं १। मि। सं १ अ। आ २। उ ३॥
भा ३

साधारणवनस्पतिपर्याप्तिकर्मो० गु १। मि। जी ४। नित्यचतुर्गतियावरसूक्ष्मपर्याप्तिकव।
प ४। प्रा ४। सं ४। ग १ ति। इं १ ए। का १ वन। यो १ ओ। वे १ यं। क ४। ज्ञा २।
सं १। अ। व १। अच। ले ६ भ २। सं १। मि। सं १। अ। आ १। उ ३॥
भा ३

१९ क ४। ज्ञा २। सं १ अ। व १ अच। ले ६ भ २। सं १ मि। सं १ अ सं। आ २। उ ३। तत्पर्याप्तानां—
३

गु १ मि। जी २। प ५। ४। प्रा ४। सं ४। ग १ ति। इं १ ए। का १ व। यो १ ओ। वे १ यं। क ४।
ज्ञा २। सं १ अ। व १ अच। ले ६ भ २। सं १ मि। सं १ अ सं। आ १। उ ३। तदपर्याप्तानां—गु
३

१। जी २ अ। प ४। ४। प्रा ३ अ। सं ४। ग १ ति। इं १ ए। का १ व। यो २ मि का। वे १ यं।
क ४। ज्ञा २। सं १ अ। व १ अच। ले २ क शु भ २। सं १ मि। सं १ अ सं। आ २। उ ३।
३

२० तत्पर्याप्तानां निर्वृत्यपर्याप्तिकव०

साधारणानां—गु १ मि। जी ८ बादरसूक्ष्मनित्येतरनिगोदाः पर्याप्तापार्याप्तिः। प ४। ४। प्रा ४। ३।
सं ८। ग १ ति। इं १ ए। का १ व। यो ३ ओ २ का १। वे १ यं। क ४। ज्ञा २। सं १ अ। व १
अच। ले ६ भ २। सं १ मि। सं १ अ। आ २। उ ३। तत्पर्याप्तानां—गु १ मि। जी ४ बादरसूक्ष्म-
३

नित्यचतुर्गतिनिगोदाः पर्याप्ताः। प ४। प्रा ४। सं ४। ग १ ति। इं १ ए। का १ व। यो १ ओ। वे १
२१ यं। क ४। ज्ञा २। सं १ अ। व १ अच। ले ६ भ २। ग १ मि। सं १ अ। आ १। उ ३।
३

मातुर्वेदोडे नात्कु जीवसमासेगळं सूक्ष्मसाधारणवनस्पतिष्वेदितु यत्कथ्यमरकुं । मुञ्चिदन्ते निम्बिमे-
मवकुं । चतुर्गन्ति निगोदंगङ्गा साधारणवनस्पतिष्वेदयेद्वद क्रममेयस्कुं । नित्यनिगोदंगङ्गानु-
क्रममेयस्कुं । अस्तिगुपयोगियाया :—

पुढवीमादिचउण्णं केवळिआहारदेवणि रयंगा ।

अपविट्ठिवा नु सव्ये पविट्ठिवंगा हवे सेसा ॥

प्रसकार्यगङ्गे । गु १४ । जी १० । बि । ति । च सं पं । अ पं । प ६ । ५ । १ ।

२ २ २ २ २

प्रा १० । ७ । २ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । २ । १ । सं ४ । ग ४ । हं ४ । बि । ति ।
चा । पं । का १ । त्र । यो १ । ५ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ८ । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ ।

आ २ । उ १२ ॥

१० प्रसपर्याप्तकम् । गु १४ । जी ५ । बि । ति । चा । पं । सं । पं । अ । प ६ । ५ । प्रा १० । १ ।

१ १ १ १ १

८ । ७ । ६ । ४ । १ । सं ४ । ग ४ । हं ४ । बि । ति । चा । पं । का १ । त्र । यो १ । ५ । वे ३ । क ४ ।
ज्ञा ८ । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ २ । उ १२ । प्रसपर्याप्तकम् गु ५ ।

मि । सा । अ । प्र । स यो । जी ५ । बि । ति । चा । पं । सं । अ सं । प ६ । अ ५ । अ प्रा । ७ ।

१ १ १ १ १

७ । ६ । ५ । ४ । २ । सं ४ । ग ४ । हं ४ । बि । ति । चा । पं । का १ । त्र । यो ४ । मिथप्र-

१५ कार्मणयोगंगळु । वे ३ । क ४ । ज्ञा ६ । म । भु । अ । के । कु । कु । सं ४ । अ । सा । छे ।

साधारणवत् । अनोपयोगियाया—

पुढवीमादिचउण्णं केवळिआहारदेवणि रयंगा ।

अपविट्ठिवा नु सव्ये पविट्ठिवंगा हवे सेसा ॥१॥

वक्रायानां—गु १४ । जी १० । बि । ति । च सं । अ सं । पं ६ । ५ । १ । प्रा १० । ७ । २ । ७ । ८ । ६ ।

२ २ २ २ २

२० ७ । ६ । ४ । २ । १ । सं ४ । ग ४ । हं ४ । बि । ति । च पं । का १ । त्र । यो १ । ५ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ८ ।
सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ । उ १२ । सं ६ । सं २ । आ २ । उ १२ । तत्पर्याप्तानां—गु १४ । जी ५ । बि । ति ।

१ १ १

सं । अ सं । पं ६ । ५ । प्रा १० । ७ । ६ । ४ । २ । सं ४ । ग ४ । हं ४ । बि । ति । च पं । का १ । त्र । यो १ । ५ । वे ३ ।

१ १

क ४ । ज्ञा ८ । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ । उ १२ । सं ६ । सं २ । आ २ । उ १२ । तत्पर्याप्तानां—गु ५ । बि

६

सा अ प्र स । जी ५ । बि । ति । च सं । अ सं । पं ६ । अ । प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । २ । सं ४ । ग ४ ।

२१ हं ४ । बि । ति । च पं । का १ । त्र । यो ४ । मिथः ३ । कार्मणः । वे ३ । क ४ । ज्ञा ६ । म । भु । अ । के । कु । कु ।

१ १ १ १

अकायद्वयङ्गो गु० । जो० । प० । प्रा० । सं० ॥ ग१ । सिद्धगति । का० ।
यो० । वे० । क० । ज्ञा१ के० । सं० । व१ के० । ले० । भ० । सं१ । शा । सं० ।
आ१ । अनाहार । उ२ ॥

प्रसलम्बपय्याप्तकण्ठे । गु१ । मि । जो५ । वि । ति । च । पं । अ । प५ । ५ । प्रा० ।
१ । १ । १ । १
५ । ७ । ६ । ५ । ४ । सं४ । ग२ ति । म । इ० । ४ । वि । ति । च । पं । का१ । प्र । यो२ । जो
१ । १ । १ । १
मि । का१ । ये१ पं । क४ । ज्ञा२ । सं१ अ । व । च । ज । ले२ क नु । भ२ । सं१ मि ।
भा३ अ नु
सं२ । आ२ । उ४ । इ० नु कायमार्गणे समाप्तमातु ॥

योगानुवादबोद्ध मूलोपभंगमवकुं । विज्ञेयमायुर्वेदोक्ते त्रयोदशगुणस्थानंगठणुयु । मनोयोगि
गच्छे । गु१३ । जो१ । पं० । प१ । प६ । प्रा१० । सं४ । ग४ । इ१ । का१ । प्र । यो४ ।
१० । नाल्कुं मनोयोग । वे३ । क४ । ज्ञा८ । सं७ । व४ । ले६ भ२ । सं६ । सं१ ।
भा६
आ१ । उ१२ ॥

मनोयोगिमित्यादृष्टिगच्छे । गु१ मि । जो१ । प६ । प्रा१० । सं४ । ग४ । इ१ ।
का१ । यो४ । नाल्कुं मनोयोगंगच्छुं । वे३ । क४ । ज्ञा३ । सं१ । अ । व२ । ले६ भ२ ।
भा६
सं१ । मि । सं१ । आ१ । उ५ ॥

१५ मनोयोगिसासावनगे । गु१ । सा । जो१ । प६ । प्रा१० । सं४ । ग४ । इ१ । पं ।
का१ । प्र । यो४ । मनोयोगंगच्छुं । वे३ । क४ । ज्ञा३ । कु । कु । वि । सं१ । अ । व२
ले६ भ१ । सं१ । सासा । सं१ । आ१ । उ५ ॥

आ२ । उ४ । सासादनाद्ययोगादिषु मूलोपवत्, अकायानां—गु०, जो०, प०, प्रा०, सं० ग१ सिद्धगति,
इ०, का०, यो०, वे०, क०, ज्ञा१ के, सं० व० ले०, भ० । सं१ । शा, सं० आ१ अनाहार, उ२, तल्लम्ब-
२० पर्याप्तानां—गु१, जो५ वि ति व सं अ प ६, ५ अ, प्रा७, ७, ६, ५, ४, सं४, ग२ ति म, इ५
१ । १ । १ । १

वि ति व पं । का१ न, यो२ यो मि१ का१, वे१ पं, क४, ज्ञा२, सं१ अ, द२ व अ, ले२ क नु ।
१ । १ । १ । १
भा३ अ नु

भ२ । सं१ मि । सं२ । आ२ । उ४ । कायमार्गणा गता ।

योगानुवादे मूलोपः त्रिषु गुणस्थानानि त्रयोदशैव, मनोयोगिनां—गु१३, जो१, पं०, प६, प्रा१०,
सं४ । ग४, इ१, का१ न, यो४ म, वे३, क४, ज्ञा८, सं७, व४, ले६ म२, स६, सं१ आ१,
६

२५ उ१२ । तन्मिथ्यादुषा—गु१ मि, जो१, प६, प्रा१०, सं४, ग४, इ१, का१, यो४ म, वे३, क४,
ज्ञा३, सं१ अ, द२ ले६ म२, सं१ मि, सं१, आ१, उ५ । तत्सासादनस्य—गु१ सा, जो१, प६,
६

प्रा१० । सं४ । ग४ । इ१ पं, का१ न । यो४ म । वे३ । क४ । ज्ञा३ कु कु वि । सं१ अ ।

असत्यमनोयोगिगच्छे । गु १२ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इं १ । का १ । यो १ । असत्यमनोयोग वे ३ । क ४ । जा ७ । कु । कु । वि । म । थु । अ । म । सं ७ । ज ३ । सा । छे । प । सू । यया । व ३ । ले ६ । भ २ । सं ६ । मि । सा । मि । उ । वे । शा । सं । भा ६

आ १ । उ १० ॥

५ मिथ्यादृष्टिप्रभृतिशोणरूपायपथ्यंतमसत्यमनोयोगिगच्छे मुभयमनोयोगिगच्छे स्वस्वयोगे यत्तद्व्यमरकं इति विरोधमश्नुं ॥

वाग्योगिगच्छे । गु १३ । जो ५ । बि । ति । घ । सं । अ । प ६ । ५ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । ४ । सं ४ । ग ४ । इं ४ । का १ । यो ४ । यवमयोगंगतु । वे ३ । क ४ । जा ८ । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ १ । उ १२ ॥

१० वाग्योगिमिथ्यादृष्टिगच्छे । गु १ । मि । जो ५ । प ६ । ५ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । सं ४ । ग ४ । इं ४ । का १ । यो ४ ॥ वाग्योगंगतु । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । ज । व २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ ॥

सासावनप्रभृतिसयोगकेवलपथ्यंत मनोयोगिभंगं यत्तद्व्यमरकं । विशेषमिदु नाल्कुवाग्यो गंगळु यत्तद्व्यमरकं । सयोगरिगेयं एल्लेलिल मनोयोगं येद्वल्पदुबल्लिल वाग्यो गं यत्तद्व्यमरकं ॥

१५ काययोगिगच्छे । गु १३ । जो १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ८ । ३ । ४ । २ ॥ सयोगिकेवलि । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ७ ॥ काययोगंगतु । वे ३ । क ४ । जा ८ । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ २ । उ १२ ॥

असत्यमनोयोगिनां—गु १२ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इं १ । का १ । यो १ । असत्यमनः । वे ३ । क ४ । जा ७ । कु । कु । वि । म । थु । अ । म । सं ७ । अ वे सा छे प गू यया । व ३ । ले ६ । भ २ ।

स ६ । मि । सा । मि । उ । वे । शा । सं १ । आ १ । उ १० । तन्मिथ्यादृष्ट्यादिशोणरूपायांतं योग्यं । उभयमनो योगिनामप्येवं । स्वस्वयोग एव यत्तद्व्यमरकं ।

वाग्योगिनां—गु १३ । जो ५ । बि । ति । व । सं । अ । प ६ । ५ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । ४ । सं ४ । ग ४ । इं ४ । का १ । यो ४ । वा । वे ३ । क ४ । जा ८ । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ २ ।

२५ स ६ । सं २ । आ १ । उ १२ । तन्मिथ्यादृष्ट्यां—गु १ । मि । जो ५ । प ६ । ५ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । सं ४ । ग ४ । का १ । यो ४ । वा । वे ३ । क ४ । जा ३ । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ ।

स १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ । सासादनादिशयोगांतं मनोयोगिवत् किंतु योगस्वाने वाग्यो गो यत्तद्व्यमरकं । काययोगिनां—गु १३ । जो १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ८ । ३ । ४ । २ । स १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ । सासादनादिशयोगांतं मनोयोगिवत् किंतु योगस्वाने वाग्यो गो यत्तद्व्यमरकं ।

काययोगि अपूर्वकरणप्रभृतिक्षीणकपायपर्यंतं काययोगिगच्छे मूलोघर्भगमश्नुं । विशेष-
मायुर्वेदोऽत्र औदारिककाययोगमे वक्तव्यमश्नुं । काययोगि सयोगकेवलिगच्छे । गु १ । सके ।
जो २ । प १ । अ । प ६ । प ६ । प्रा ४ । २ । सं १० । ग १ । म । इ १ पं । का १ । प्र । यो ३ ।
ओ २ । का १ । वे ० । क ० । ज्ञा १ । के । सं १ । यया । ब १ के । ले ६ भं १ । सं १ । क्षा ।
भा १ ।

५ सं । ० । आ २ । उ २ । के । के ॥

औदारिककाययोगिगच्छे । गु १ । जो ३ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ ।
४ । ४ । सं ४ । ग २ । म । ति । इ ५ । का ६ । यो १ । ओ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ८ । सं ७ ।
ब ४ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ १ । उ १ २ ॥

औदारिककाययोगिमिथ्यादृष्टिगच्छे । गु १ । मि । जो ३ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ ।
७ । ६ । ४ । सं ४ । ग २ । ति । म । इ ५ । का ६ । यो १ । ओ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ ।
अ । ब २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ ॥

औदारिककाययोगितासादनं । गु १ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग २ । म । ति ।
इ १ । पं । का १ । प्र । यो १ । ओ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । अ । ब २ । ले ६ । भ १ ।
सं १ । सासा । सं १ । आ १ । उ ५ ॥

औदारिककाययोगिसम्पन्नमिथ्यादृष्टिगच्छे । गु १ । मि । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
ग २ । ति । म । इ १ । पं । का १ । प्र । यो १ । ओ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । अ । ब २ ।
ले ६ । भ १ । सं १ । मि । सं १ । आ १ । उ ५ ॥

ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ७ । अष्टेऽपूर्वकरणात् क्षीणकपायपर्यंतं मूलोघवत् किन्तु औदारिक-
योग एव वक्तव्यः ।

२० सयोगिवलिना—गु १ सा, जो २ प ५, प ६ ९, प्रा ४ २ सं ०, ग १ म, इ १ पं, का १ प्र,
यो ३ ओ २ वा १, वे ० क ०, आ १ के, सं १ यया, द १ के, ले ६ । भ १ सं १ सा, सं ०, आ २,
उ २ के के । औदारिकयोगिना—गु १ ३, जो ३ प, प ६, ५, ४, प्रा १०, ९, ८, ७, ६, ४, ४, सं ४, ग २
म ति, इ ५, का ६, यो १ ओ, वे ३, क ४, प्रा ८, सं ७, द ४, ले ६ । भ २, सं ६, सं २, आ १,
उ १ २ । तन्मिथ्यादृष्टा—गु १ मि, जो ३, प ६ ५ ४, प्रा १०, ९, ८, ७, ६, ४, सं ४, ग २ ति म, इ ५,
का ६, यो १ ओ, वे ३, क ४, प्रा ३, सं १ अ, द २, ले ६ । भ २, सं १ मि, सं २, आ २, उ ५ ।
भा ६

२५ तन्मिथ्यादृष्टा—गु १, जो १, प ६, प्रा १०, सं ४, ग २ म ति, इ १ पं, का १ प्र, यो १ ओ, वे ३,
क ४, प्रा ३, सं १ अ द २, ले ६, प १, ग १ सा, सं १, आ १, उ ५, तन्मिथ्यादृष्टा—गु १ मि,
भा ६

सं १। अ। ब२। ले १ क। भ १। सं १। सा। सं १। आ १। उ ४॥
भा ६

यैक्रियकमिधकाययोगि असंयतसाम्यमुष्टिगन्धो। गु १। जो १। अ। प ६। ज। प्रा ७।
अ। सं ४। ग २। न दे। ई १। पं। का १। यो १। ये मि। ये २। वं पुं। क ४। जा ३। म।
श्रु। अ। सं १। अ। ब ३। ले १ क। भ १। सं ३। उ। ये। क्षा। सं १। आ १। उ ६॥
भा ४

५ आहारककाययोगिगन्धो। गु १। प्र। जो १। प ६। प्रा १०। सं ४। ग १। म। ई १।
पं। का १। यो १। आ का। ये १ पुं। क ४। जा ३। म। श्रु। अ। सं २। सा। छे। द ३।
ले गु १। भ १। सं २। वे। क्षा। सं १। आ १। उ ६॥
भा ३

आहारकमिधकाययोगिगन्धो। गु १। जो १। प ६। अ। प्रा ७। अ। सं ४। ग १।
म। ई १। पं। का १। यो १। आ मि। ये १। पुं। क ४। जा ३। म। श्रु। अ। सं २। सा।
१० छे। द ३। च। अ। अ। ले १ क। भ १। सं २। वे। क्षा। सं १। आ १। उ ६॥
भा ३ शु

काम्मर्णकाययोगिगन्धो। गु ४। मि। सा। अ। सयो। जो ३। अ। प ६। अ ५। अ ४।
अ। प्रा ७। उ। द ५। ४। ३। सं ४। ई ५। का ६। यो १। का। वे ३। क ४। ता ६।
कु। कु। म। श्रु। अ। के। सं २। अ। यया। द ४। च अ। अ। के। ले १ शु भ २।
सं ५। मि। सा। उ। वे। क्षा। सं २। आ १। अनाहार। उ १०॥
भा ६

१५ काम्मर्णकाययोगिमिध्याहृष्टिगन्धो। गु १। मि। जो ७। अ। प ६। ५। ४। अ। प्रा ७।
उ। द ५। ५। ४। ३। सं ४। ग ४। ई ५। का ६। यो १। का। वे ३। क ४। जा २। कु। कु।
द २, ले १ क। भ १, सं १ सा। सं १, आ १, उ ४।
भा ६

सदसंयतानां—गु १ अ। जो १ अ। प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, ग २ न दे, ई १ पं, का १ य, यो
१ ये मि, वे २ वं पुं, क ४, जा ३ म श्रु अ, सं १ अ। द ३, ले १ क। भ १। सं ३, उ वे क्षा,
भा ४ गु ३ क १

२० सं १, आ १, उ ६। आहारकयोगिना—गु १ प्र, जो १। प ६, प्रा १०, सं ४, ग १ म, ई १ पं, का
१ य। यो १ आ, वे १ पु, क ४, जा ३ म श्रु अ, सं २ सा छे, द ३, ले १ गु, भ १, स २ वे क्षा, सं १,
भा ३

आ १, उ ६। तन्मिधयोगिनां—गु १ प्र, जो १, प ६ अ, प्रा ७ अ, सं ४, ग १ म, ई १ पं, का १ य,
यो १ आ मि, वे १ पुं, क ४, जा ३ म श्रु अ, सं २ सा छे, द ३ च अ अ, ले १ क। भ १, स २ वे क्षा,
भा ३

सं १ आ १, उ ६। काम्मर्णयोगिनां—गु ४ मि सा अ स, जो ७ अ, प ६ अ, ५ अ, ४ अ, प्रा ७, उ, द,
२५ ५, ४, ३, २, सं ४, ग ४, ई ५, का ६, यो १ का, वे ३, क ४, जा ६ कु कु म श्रु अ के, स २ अ य,
द ४ च अ अ के, ले १ गु। भ २, सं ५ मि सा उ वे क्षा, स २, आ १ अनाहार, उ १०। तन्मिध्यादयां—
भा ६

गु १ मि, जो ७ अ, प ६ ५ ४ अ, प्रा ७ उ ६ ५ ४ ३, सं ४, ग ४, ई ५, का ६, यो १ का, वे ३,

स्त्रीवेदियप्याप्तिकर्गे । गु ९ । जी २ । सं । । अ । प ।
 ति । म । दे । इ १ । पं । का १ प्र । यो १० । म ४ ।
 जा ६ । कु । कु । वि । म । थु । अ । सं ४ । अ । दे । सा ।
 भ २ । सं ६ । मि । सा । मि । उ । ये । सा । सं २ । आ १ ।

५ स्त्रीवेदियप्याप्तिकर्गे । गु २ । मि । सा । जी २ ।
 अ प्रा ७ । ७ । सं ४ । य ३ । ति । म । दे । इ १ । पं ।
 का १ । वे १ । स्त्री । क ४ । जा २ । कु । कु । सं १ । अ । द ।
 सं २ । मि । सा । सं २ । आ २ । उ ४ । कु । कु । च । अ ॥

स्त्रीवेदिमिष्यादृष्टिप्याप्तिकर्गे । गु १ । मि । जी ४ ।
 १० ६ । ५ । ५ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । सं ४ । य ३ । ति । म । दे ।
 अहारकठपरहित वे १ । स्त्री । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि ।
 भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ५ ॥

स्त्रीवेदिमिष्यादृष्टिप्याप्तिकर्गे । गु १ । जी २ ।
 प्रा १० । ९ । सं ४ । य ३ । ति । म । दे । इ १ । पं । का १ प्र ।
 १५ वे । वे १ । स्त्री । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ सं । द
 सं १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ ॥

स्त्रीवेदिमिष्यादृष्टिअप्याप्तिकर्गे । गु १ । मि । जी २ ।
 ५ । अ । प्रा ७ । ७ । सं ४ । य ३ । ति । म । इ १ । पं । का १ प्र ।

तत्पर्याप्तानां—गु ९ । जी २ सं अ । प ६ ५ । प्रा १० ९ । सं ४ । य ३
 २० यो १० म ४ व ४ ओ १ वे १ । वे १ स्त्री । क ४ । जा ६ कु कु वि म थु
 च अ अ । ले १ । भ २ । स ६ मि सा मि उ वे क्षा । सं २ । आ १ । उ

सा । जी २ संगसंज्ञिपर्याप्तौ । प ३ ५ अ । प्रा ७ ७ । सं ४ । य ३ वि म दे
 ३ धीमि र्मि का । वे १ स्त्री । क ४ । जा २ कु कु । सं १ अ । द २ च अ ।
 भा

मि सा । सं २ । आ २ । उ ४ कु कु च अ । तन्मिष्यादृष्टा—गु १ मि । जी ४
 २५ ६ ६ ५ ५ । प्रा १० ७ ९ ७ । सं ४ । य ३ म वि दे । इ १ पं । का १ प्र । यो
 वे १ स्त्री । क ४ । जा ३ कु कु वि । सं १ अ । द २ । ले ६ । भ २ । स १ मि

तत्पर्याप्तानां—गु १ मि । जी २ संगसंज्ञिपर्याप्तौ । प ६ ५ । प्रा १० ९ । सं ४ ।
 का १ प्र । यो १० म ४ व ४ ओ १ वे १ । वे १ स्त्री । क ४ । जा ३ कु कु वि ।
 म ६ । भ २ । स १ । सं २ । आ १ । उ ५ । तत्पर्याप्तानां—गु १ मि । जी २

स्त्रीवेदियप्याप्तकर्मो गु १। जी २। सं॥ अ। प ६। ५। प्रा १०। ९। सं ४। ग ३।
ति। म। दे। इं १। पं। का १ त्र। यो १०। म ४। व ४। ओ वै। वे १। स्त्री। क ४।
जा ६। कु। कु। वि। म। थु। अ। सं ४। अ। दे। सा। छे। व ३। च। अ। अ। ले ६।
भ २। सं ६। मि। सा। मि। उ। वे। क्षा। सं २। आ १। उ ९॥

५ स्त्रीवेदियप्याप्तकर्मो गु २। मि। सा। जी २। संज्ञसंज्ञप्याप्तक। प ६। ५।
अ प्रा ७। ७। सं ४। ग ३। ति। म। दे। इं १। पं। का १ त्र। यो ३। ओमि १। वै मि।
का १। वे १। स्त्री। क ४। जा २। कु। कु। सं १। अ। व २। च। अ। ले २ क गु। भ २।
सं २। मि। सा। सं २। आ २। उ ४। कु। कु। च। अ॥ भा ३ अ थु

स्त्रीवेदियप्याप्तकर्मो गु १। मि। जी ४। संज्ञसंज्ञप्याप्तकप्याप्तक। प ६।
१० ६। ५। ५। प्रा १०। ७। ९। ७। सं ४। ग ३। ति। म। दे। इं १। पं। का १ त्र। यो १३।
आहारकद्वपरहित वे १। स्त्री। क ४। जा ३। कु। कु। वि। सं १। अ सं। व २। ले ६।
भ २। सं १। मि। सं २। आ २। उ ५॥

स्त्रीवेदियप्याप्तकर्मो गु १। जी २। संज्ञप्याप्तसंज्ञप्याप्तक। प ६। ५।
प्रा १०। ९। सं ४। ग ३। ति। म। दे। इं १। पं। का १ त्र। यो १०। म ४। व ४। ओ।
१५ वै। वे १। स्त्री। क ४। जा ३। कु। कु। वि। सं १। अ सं। व २। च। अ। ले ६। भ २।
सं १। मि। सं २। आ १। उ ५॥

स्त्रीवेदियप्याप्तकर्मो गु १। मि। जी २। संज्ञप्याप्तसंज्ञप्याप्तक। प ६।
५। अ। प्रा ७। ७। सं ४। ग ३। ति। म। इं १। पं। का १ त्र। यो ३। ओ। मि। वै मि।

तत्पर्याप्तानां—गु १। जी २ सं अ। प ६ ५। प्रा १० ९। सं ४। ग ३ ति म दे। इं १ पं। का १ त्र।
२० यो १० म ४ व ४ ओ १ वै १। वे १ स्त्री। क ४। जा ६ कु कु वि म थु अ। सं ४ अ दे सा छे। द ३
व अ अ। ले ६। भ २। छ ६ मि सा मि उ वे क्षा। सं २। आ १। उ ९। तदपर्याप्तानां—गु २ मि

सा। जी २ संज्ञसंज्ञप्याप्तो। प ६ ५ अ। प्रा ७ ७। सं ४। ग ३ ति म दे। इं १ पं। का १ त्र। यो
३ ओमि वैमि का। वे १ स्त्री। क ४। जा २ कु कु। सं १ अ। द २ च अ। ले २ क गु। भ २। छ १
भा ३ अ थु

मि सा। सं २। आ २। उ ४ कु कु च अ। तन्मिप्यादुसा—गु १ मि। जी ४ संज्ञसंज्ञप्याप्तप्याप्तानां। प
२५ ६ ६ ५ ५। प्रा १० ७ ९ ७। सं ४। ग ३ म ति दे। इं १ पं। का १ त्र। यो १३ आहारकद्वामावात्।
वे १ स्त्री। क ४। जा ३ कु कु वि। सं १ अ। द २। ले ६। भ २। छ १ मि। सं २। आ २। उ ५।

तत्पर्याप्तानां—गु १ मि। जी २ संज्ञसंज्ञप्याप्तो। प ६ ५। प्रा १० ९। सं ४। ग ३ ति म दे। इं १ पं।
का १ त्र। यो १० म ४ व ४ ओ १ वै १। वे १ स्त्री। क ४। जा ३ कु कु वि। सं १ अ। द २ च अ।
म ६। भ २। छ १। सं २। आ १। उ ५। तदपर्याप्तानां—गु १ मि। जी २ संज्ञसंज्ञप्याप्तो।

योवेरिपम्याप्तिकर्णे० गु१। जो२। सं१। अ। प६। ५। प्रा१०। ९। सं४। ग३।
ति। म। वे। इ१। पं। का१त्र। यो१०। म४। व४। जीवे। वे१। स्त्री। क४।
जा६। कु। कु। वि। म। ध्रु। अ। सं४। अ। वे। सा। छे। व३। च। अ। अ। ले६।
म२। सं६। मि। सा। मि। उ। वे। सा। सं२। आ१। उ९॥

५ योवेरिपम्याप्तिकर्णे० गु२। मि। सा। जो२। संयसंयपम्याप्तिक० प६। ५।
अप्रा३। ३। सं४। ग३। ति। म। वे। इ१। पं। का१त्र। यो३। ओमि१। वेमि।
का१। वे१। स्त्री। क४। जा२। कु। कु। सं१। अ। व२। च। अ। ले२कगु। भ२।
मं२। मि। सा। सं२। आ२। उ४। कु। कु। च। अ॥ भा३अधु

योवेरिमिम्यावृष्टिगण्ये० गु१। मि। जो४। संयसंयपम्याप्तिकापम्याप्तिक० प६।
१० ६। ५। ५। प्रा१०। ३। ९। ३। सं४। ग३। ति। म। वे। इ१। पं। का१त्र। यो१३।
आहारकृष्णहित० ये१। स्त्री। क४। जा३। कु। कु। वि। सं१। अ। सं। व२। ले६।
भ२। सं१। मि। सं२। आ२। उ५॥

योवेरिमिम्यावृष्टिपम्याप्तिकर्णे० गु१। जो२। संयपम्याप्तिसंयपम्याप्तिक० प६। ५।
प्रा१०। ९। सं४। ग३। ति। म। वे। इ१। पं। का१त्र। यो१०। म४। व४। जी।
१५ वे। वे१। स्त्री। क४। जा३। कु। कु। वि। सं१। अ। सं। व२। च। अ। ले६। भ२।
सं१। मि। सं२। आ१। उ५॥

योवेरिमिम्यावृष्टिपम्याप्तिकर्णे० गु१। मि। जो२। संयपम्याप्तिसंयपम्याप्ति। प६।
५। अ। प्रा३। ३। सं४। ग३। ति। म। इ१। पं। का१त्र। यो३। ओ। मि। वेमि।

गण्यपमाना—गु१। जो२। सं४। व६। ५। प्रा१०। ९। सं४। ग३। विमदे। इ१। पं। का१त्र।
२० या१०। म४। व४। जो१। वे१। स्त्री। क४। जा६। कु। कु। विमधुअ। सं४। अदेवा। वे३।
प४अ। ले६। भ२। व६। मि। वि। उवेसा। सं२। आ१। उ९। गण्यपमाना—गु२। मि।

जा। वा३। म४। व४। गण्यपमाना। प६। ५। अ। प्रा३। ३। सं४। ग३। विमदे। इ१। पं। का१त्र। यो३।
वे३। ओमि। वेमि। वा३। वे१। स्त्री। क४। जा२। कु। कु। सं१। अ। व२। च। अ। ले२कगु। भ२। व३।
भा३अधु

विभा। व२। वा२। उ४। कु। कु। अ॥ यमिम्यावृष्टि—गु१। मि। जो४। संयसंयपम्याप्तिसंयपम्याप्ति। प६।
२५ ६। ५। ५। प्रा१०। ३। ९। ३। सं४। ग३। विमदे। इ१। पं। का१त्र। यो१३। आहारकृष्णहित०।
वे१। स्त्री। क४। जा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। च। अ। ले६। भ२। व६। मि। सं२। आ२। उ५॥

गण्यपमाना—गु१। मि। वा३। म४। व४। गण्यपमाना। प६। ५। अ। प्रा३। ३। सं४। ग३। विमदे। इ१। पं।
का१त्र। यो३। वे३। ओमि। वेमि। वा३। वे१। स्त्री। क४। जा२। कु। कु। सं१। अ। व२। च। अ। ले२कगु।
भ२। व३। भा३अधु

पुंवेदिमिष्याहृष्टिगन्धो। गु १। मि। जी ४। प ६। ६। ५। ५। प्रा १०। ७। ९। ७।
सं ४। ग ३। ति। म। दे। ई १। पं। का १। यो १३। आहारद्वयरहित। वे १। पुं। क ४।
जा ३। कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले ६। भ २। सं १। मि। सं २। आ २। उ ५।

पुंवेदिमिष्यावृष्टिपय्याप्तिकं। गु १। मि। जी २। प ६। ५। प्रा १०। ९। सं ४। ग ३।
५ ति। म। दे। ई १। का १। यो १०। म ४। व ४। ओ १। वे १। वे १। पुं। क ४। जा ३।
कु। कु। वि। सं १। अ। व २। ले ६। भ २। सं १। मि। सं २। आ १। उ ५॥

पुंवेदिमिष्याहृष्टिअपय्याप्तिकं। गु १। मि। जी २। प ६। ५। अ। प्रा ७। ७। सं ४।
ग ३। ति। म। दे। ई १। का १। यो ३। ओमि। वेमि। का। वेव १। पुं। क ४। जा २।
सं १। अ। व २। ले २ क शु। भ २। सं १। मि। सं २। आ २। उ ४॥

१० पुंवेदिसासादनप्रभृति प्रयमानिवृत्तिपर्यंतं मूलोपमंग वक्तव्यमवकुमल्लि विशेषमापुवेदोऽः
सर्वत्र पुंवेदमोऽवे वक्तव्यमवकुं। सासादनमिभासंयतये गतित्रयं वक्तव्यमवकुं। देशसंयतये गति-
त्रयं वक्तव्यमवकुंमन्यत्र विशेषमिल्ल। नपुंसकवेदिगन्धो। गु ९। जी ४। प ६। ६। ५। ५।
४। ४। प्रा १०। ७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४। ३। सं ४। ग ३। न। ति। म।
ई ५। का ६। यो १३। आहारद्वयरहित। वे १। पं। क ४। जा ६। कु। कु। वि। म। धु। अ।
१५ सं ४। अ। दे। सा। छे। व ३। अ। अ। ले ६। भ २। सं ६। सं २। आ २। उ ५॥

नपुंसकवेदिपर्याप्तिकं। गु ९। जी ७। प ६। ५। ४। प्रा १०। ९। ८। ७। ६। ४।
सं ४। ग ३। न। ति। म। ई ५। का ६। यो १०। म ४। व ४। ओ १। वे १। वे १। पं।

तन्मिष्यादृशा—गु १ मि, जी ४, प ६, ६, ५, ५, प्रा १०, ७, ९, ७, सं ४, ग ३ ति म दे,
ई १ पं, का १ अ, यो १३ आहारकद्वयं नहि, वे १ पुं, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २, ले ६, भ २,

२० स १ मि, सं २, आ २, उ ५। तत्पर्याप्तानां—गु १ मि, जी २, प ६ ५, प्रा १०, ९, सं ४, ग ३ ति म
दे, ई १ पं का १ अ, यो १० म ४ व ४ ओ वे, वे १ पु, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २, ले ६, भ २,

स १ मि, सं २, आ २, उ ५। तदपर्याप्तानां—गु १ मि, जी २, प ६, ५, अ, प्रा ७, ७, सं ४, ग ३ ति
म दे, ई १ पं, का १, यो ३ ओमि वेमि का, वे १ पुं, क ४, जा २, सं १ अ, व २। ले २ क शु, भ २,

स १ मि, सं २, आ २, उ ४। तत्सासादनात् प्रषभानिवृत्तिपर्यंतं मूलोपमंग अत्र सर्वत्र पुंवेदो वक्तव्य-
२५ सासादनमिभासंयतानां गतित्रयं। देशसंयतस्य गतिद्वयं, अन्यत्र विशेषो नास्ति।

नपुंसकवेदिनां—गु ९। जी ४। प ६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा १०। ७। ९। ७। ८। ६।
७। ५। ६। ४। ४। ३। सं ४। ग ३ न ति म, ई ५, का ६। यो १३ आहारद्वयाभावात्। वे १ पं, क ४,
जा ६ कु कु वि म धु अ, सं ४ अ दे सा छे, व ३ अ अ, ले ६ भ २, स ६, सं २, आ २, उ ५। तत्पर्या-

प्तानां—गु ९, जी ७, प ६, ५, ४, प्रा १०, ९, ८, ७, ६, ४, सं ४। ग ३ न ति म, ई ५, का ६, यो

पुवेदिमिव्याहृष्टिगज्जो । गु १ । मि । जो ४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । प्रा १० । ७ । ९ । ७
सं ४ । ग ३ । ति । म । दे । इ १ । पं । का १ । यो १३ । आहारद्वयरहित । वे १ । पुं । क ४ । जा ३ ।
कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ५ ।

पुवेदिमिव्याहृष्टिपय्यामिकंगे । गु १ । मि । जो २ । प ६ । ५ । प्रा १० । ९ । सं ४ । ग ३ ।
ति । म । दे । इ १ । का १ । यो १० । म ४ । य ४ । ओ १ । वे १ । वे १ । पुं । क ४ । जा ३ ।
कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ १ । उ ५ ॥

पुवेदिमिव्याहृष्टिअपय्यामिकंगे । गु १ । मि । जो २ । प ६ । ५ । अ । प्रा ७ । ७ । सं ४ ।
ग ३ । ति । म । दे । इ १ । का १ । यो ३ । ओमि । वेमि । का । वेव १ । पुं । क ४ । जा २ ।
सं १ । म । व २ । ले २ क शु । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ४ ॥

१० पुवेदिसासादनप्रभृति प्रयमानिबृत्तिपय्यंतं मूलौघभंग वक्तव्यमवकुमल्लि विशेषमायुवेदोः
सर्वप्र पुवेदमो वे वक्तव्यमवकुं । सासादनमिथासंयतये गतिप्रयं वक्तव्यमवकुं । देशसंयतये गति-
द्वयं दस्तव्यमवकुंमन्यत्र विशेषमिल्ल । नपुंसकवेदिगज्जो । गु ९ । जो १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ ।
४ । ४ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग ३ । न । ति । म ।
इ ५ । का ६ । यो १३ । आहारद्वयरहित । वे १ पं । क ४ । जा ६ । कु । कु । वि । म । धु । अ ।
१५ सं ४ । अ । वे । सा । छे । व ३ । च । अ । अ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ २ । उ ९ ॥

नपुंसकवेदिपय्यामिकंगे । गु ९ । जो ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । ४ ।
सं ४ । ग ३ । न । ति । म । इ ५ । का ६ । यो १० । म ४ । य ४ । ओ १ । वे १ । वे १ ।

तन्मिव्यादुषा—गु १ मि, जो ४, प ६, ६, ५, ५, प्रा १०, ७, ९, ७, सं ४, ग ३ वि म दे,
इ १ पं, का १ न, यो १३ आहारद्वयरहित, वे १ पुं, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २, ले ६, भ २,

२० ग १ मि, सं २, आ २, उ ५ । तद्व्याप्ताना—गु १ मि, जो २, प ६ ५, प्रा १०, ९, सं ४, ग ३ वि म
दे, इ १ पं, का १ न, यो १० म ४ य ४ ओ १, वे १ पु, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २, ले ६, भ २,

ग १ मि, सं २, आ २, उ ५ । तद्व्याप्ताना—गु १ मि, जो २, प ६, ५, अ, प्रा ७, ७, सं ४, ग ३ वि
म दे, इ १ पं, का १, यो ३ ओमि वेमि का, वे १ पु, क ४, जा २, सं १ अ, व २ । ले २ क शु, भ २,

ग १ मि, म २, आ २, उ ४ । तद्व्याप्ताना—गु १ मि, जो २, प ६ ५, प्रा ७, ७, सं ४, ग ३ वि म
दे, इ १ पं, का १, यो ३ ओमि वेमि का, वे १ पु, क ४, जा २, सं १ अ, व २ । ले २ क शु, भ २,

३० गानादनमिथार्थं गाना गतिप्रयं । देशसंयतये गतिद्वयं, अन्यत्र विशेषो नास्ति ।
नपुंसकवेदिना—गु ९ । जो १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ ।

३ । ५ । ५ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग ३ न वि म, इ ५, का ६ । यो १३ आहारद्वयमात्रा । वे १ पं, क ४,
जा ६ कु कु वि म धु अ, सं ४ व दे वा छे, व ३ च अ अ, ले ६ भ २, सं ६, सं २, आ २, उ ९ । तद्व्या-

प्ताना—गु ९, जो ७, प ६, ५, ४, प्रा १०, ९, ८, ७, ६, ४, सं ४ । ग ३ न वि म, इ ५, का ६, यो

पं। क४। ज्ञा२। सं१। अ। व२। ले२ क शु। भ२। सं१ मि। सं२। आ२। उ४।
भा३ अशु

नपुंसकसासादनर्मे। गु१। जी२। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग३। न। ति। म।
इं१। पं। का१। यो१२। म४। व४। ओ२। वे१। कार्म्मण का१। वे१ नपुं। क४।
ज्ञा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। च। अ। ले६। भ१। सं१। सासा। सं१।
५ आ२। उ५॥

नपुंसकवेदिसासादनपर्म्याप्तिकर्मे। गु१। सा। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग३।
न। ति। म। इं१। पं। का१। यो१०। म४। व४। ओ१। वे१। वे१ नपुं।
क४। ज्ञा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ले६। भ१। सं१। सा। सं१।
आ१। उ५॥

१० नपुंसकवेदिसासादनपर्म्याप्तिकर्मे। गु१। सासा। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ।
सं४। ग२। ति। म। इं१। का१। यो२। ओ मि। का। वे नपुं। क४। ज्ञा२। कु। कु।
सं१। अ। व२। च। अ। ले२ क शु। भ१। सं१। सासा। सं१। आ२। उ४॥
भा३ अशु

नपुंसकवेदिसम्यग्मिथ्यादुष्टिगन्धो। गु१। मिथ। जी१। प६। प्रा१०। सं४। ग३।
न। ति। म। इं१। पं। का१। यो१०। म४। व४। ओ१। वे१। वे१ नपुं। क४।
१५ ज्ञा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। च। अ। ले६। भ१। सं१। मिथ। सं१। आ१।
उ५॥

यो१ ओमि वैमि का, वे१ पं, क४, ज्ञा२, सं१ अ, द२, ले२ क, शु भ२, सं१ मि, सं२, आ२,
उ४, तत्प्रासादना—गु१। जी२, सं५ अ, प६, ६, प्रा१०, ७, सं४, ग३ न ति म, इं१ पं,
का१ न, यो१२ म४ व४ ओ२ वे१ का१, वे१ पं, क४, ज्ञा३ कु कु वि, सं१ अ, व२ व अ,
२० जे१, भ१, ग१ सा, सं१, आ२, उ५, तत्प्राप्तानां—गु१ सा, जी१ प, प६, प्रा१०, सं४,
१

ग३ न ति म, इं१ पं, का१ न, यो१० म४ व४ ओ२ वे१ का, वे१ न, क४, प्रा३ कु कु वि, सं१
अ, द२, जे१, भ१, सं१ सा, सं१, आ१, उ५। तत्प्राप्तानां—गु१ सा, जी१ अ, प६ अ।
६

प्रा७ अ, सं४, ग२ ति म, इं१, का१, यो२ ओमि का, वे१ न, क४, प्रा२ कु कु, सं१ अ, व२
व अ, जे२ क नु। भ१, ग१ सा, सं१, आ२, उ४। तत्प्राप्तानां—गु१ मिथ, जी१ प,
भा३ अशु

२५ प६, प्रा१०, सं४, व२ न ति म, इं१ पं, का१ न, यो१० म४, व४ ओ२ वे१, वे१ न, क४,

अपगतवेवेगो गु६। अ। सु। उ। सी। सा। अ। जी२। प। अ। प६। प्रा१॥
 २। १। सं१। परि। ग१। म। इ१। पं। का१। यो११। म४। वा४। जी२। म॥
 वे०। क४। २। १। लो। ज्ञा५। म। ध्रु। अ। म। के। सं४। सा। छे। मू। यदा१। १॥
 च। अ। अ। के। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ२। उ२॥
 भा६

५ इतो द्वितीयभाषानिवृत्तिप्रभृति सिद्धपर्वतं मूलोद्यमंगमकुं । मितु वेदमार्गं
 समाप्तमावुदु ॥

कपायानुवाददोळ ओघाळापं मूलोद्यमंगमकुं । विरोधमानुदेवोडे दशगुणस्पर्शगंगु॥
 क्रोधकपायिगळ्गे । गु९। जी१४। प६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०। ७। ९। ७। ८। १।
 ७। ५। ६। ४। ४। ३। सं४। ग४। इ५। का६। यो१५। वे३। क१। जो। ज्ञा॥
 १० कु। कु। वि। म। ध्रु। अ। म। सं५। अ। वे। सा१। छे१। प१। व३। वा३। ३।
 ले६। भ२। सं६। सं२। आ२। उ१०॥

क्रोधकपायिगळ्गे । गु९। जी१४। प६। ६। ५। ५। ४। प्रा१०। ९। ८। ७। ६। १।
 सं४। ग४। इ५। का६। यो११। म४। वा४। ओका१। वेका१। आका१। वे३।
 क१। जो। ज्ञा७। कु। कु। वि। म। ध्रु। अ। म। सं५। अ। वे। सा१। छे। प। व३। ३।
 १५ घ। अ। अ। छे६। भ२। सं६। सं२। आ२। उ१०॥

क्रोधकपायिगळ्गे । गु४। मि। सा। अ। प्र। जी७। अ। प६। ५। ४। ३।
 प्रा७। ७। ६। ५। ४। ३। अ। सं४। ग४। इ५। का६। यो४। ओमि। वेमि। अमि।
 का। वे३। क१। जो। ज्ञा५। कु। कु। म। ध्रु। अ। सं३। अ। सा। छे। व३। वा३।

अपगतवेदमार्गं—गु९। अमि, गू, उ, धी, स, अ, जी२। प५, प६, ६, प्रा१०, ४, २, १, ६।
 २० परि, ग१। म, इ१। पं, का१। यो११। म४। वा४। ओ२। का१, वे०, क४, ३, २, १। लो। ज्ञा५।
 म५। अ। म५, सं४। सा। छे५। य, व४। प५। अ५। के, ले६, भ१, स२। उ५। क्षा, सं१, आ२, उ२।
 भा१

द्वितीयभाषानिवृत्तिः सिद्धपर्वतं मूलोद्यो भवति, वेदमार्गणा यता ।

कपायानुवाददोळ ओघा-ओघिना—गु९, जी१४, प६, ६, ५, ५, ४, ४, प्रा१०, ७, ९,
 ७, ८, ९। ७। ५। ४। ३। सं४, ग४, इ५, का६, यो१५, वे३, क१। जो, ज्ञा७। कु। कु। वि। म५।
 २५ य, सं५। व३। सा। छे५, व३। अ५। अ५, ले६, भ२, ग९, सं२, आ२, उ१०। वदमार्ग-अर्वा—गु९

ओ३। प, व९, ५, ४, प्रा१०, ९, ८, ७, ६, ५, सं४, ग४। इ५, का६, यो११, म५, व५, जो६।
 आ, वे३, क१। जो, ज्ञा७। कु। कु। वि। म५। अ५, सं५। व३। सा। छे५, व३। अ५। अ५, ले६, भ२, क१।

व२, आ१, उ१०। वदमार्ग-अर्वा—गु४। मि। सा। अ। प्र। जी७, प६, ५, ४। अ, प्रा७, ७, ६,
 ५, ४, ३। अ, सं४, ग४, इ५, का६, यो४। ओमि। वेमि। अमि। का, वे३, क१। जो, ज्ञा५। कु। कु।

क्रोधकपायिसासावनपम्यामिकंगे। गु१। सासा। जो१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग४। इं१। पं। का१त्र। यो१०। म४। वा४। ओ। वे। वे३। क१क्रो। जा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। च। अ। ले६। भ१। सं१। सासा। सं१। आ१। उ५।
६

क्रोधकपायिसासादनापम्यामिकंगे। गु१। सासा। जो१। अ। प६। अ प्रा७। अ। सं४। ग३। नरकगतिवज्जित। इं१। पं। का१त्र। यो३। ओमि। वेमि। का। वे३। क१क्रो। जा२। सं१। अ। व२। ले२। भ१। सं१। सासा। सं१। आ२। उ४।
भा६

क्रोधकपायिसम्यग्मिध्यावृष्टिगन्धो। गु१। मिध। जो१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग४। इं१। पं। का१। त्र। यो१०। वे३। क१क्रो। जा३। मिधसं१। व२। ले६।
भ१। सं१। मिध। सं१। आ१। उ५॥

१० क्रोधकपायिससंपत्तसम्यग्दृष्टिगन्धो। गु१। असं। जो२। प। अ। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग४। इं१। पं। का१त्र। यो१३। आहारद्वपरहित। वे३। क१। क्रो। जा३। म। धु। अ। सं१। अ। व३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं३। उ। वे। क्षा। सं१।
आ२। उ६॥

क्रोधकपायि असंपत्तसम्यग्दृष्टिपम्यामिकंगे। गु१। असं। जो१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग४। इं१। पं। का१त्र। यो१०। वे३। क१क्रो। जा३। म। धु। अ। सं१। अ। व३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं३। उ। वे। क्षा। सं१। आ१। उ६॥
६

तत्पर्याप्तानां—गु१। सा। जो१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग४। इं१। पं। का१त्र। यो१०। म४। प४। ओ। वे। वे३। क१क्रो। जा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। च। अ। ले६। भ१। सं१। सा। सं१। आ१। उ५।
६

२० तत्पर्याप्तानां—गु१। सा। जो१। अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग३। नरकगतिवज्जित। इं१। पं। का१त्र। यो३। ओमि। वेमि। का। वे३। क१क्रो। जा२। सं१। अ। व२। ले२। भ१। सं१। सा। सं१। आ२। उ४। सम्यग्मिध्यावृष्ट्यां—गु१। मिधं। जो१। प। प६।
६

प्रा१०। सं४। ग४। इं१। का१त्र। यो१०। ओ। वे३। क१क्रो। जा३। मिधानि। सं१। अ। व२। ले६। भ१। सं१। मिधं। सं१। आ१। उ५। असंपत्तानां—गु१। अ। जो२। प। प६।
६

११ प्रा१०। ७। सं४। ग४। इं१। पं। का१त्र। यो१३। आहारद्वयं नहि। वे३। क१क्रो। जा३। म। धु। अ। सं१। अ। व३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं३। उ। वे। क्षा। सं१। आ१। उ६।
६

तत्पर्याप्तानां—गु१। अ। जो१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग४। इं१। पं। का१त्र। यो१०। वे३। क१क्रो। जा३। म। धु। अ। सं१। अ। व३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं३। उ। वे। क्षा। सं१। आ१। उ६।
६

क्रोयकपायिप्रयमानिवृत्तिकरणगे। गु१। अवि। जी१। प। प६। प्रा१०। सं१।
 मे। प। म१। म। इ१। पं। का१। य। यो९। वे३। क१। को। जा४। म। थु। ब।
 सं२। सा। छे। व३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ३।
 भा१

क्रोयकपायिद्वितीयभागानिवृत्तिकरणगे। गु१। जी१। प६। प्रा१०। सं१।
 ५ ग१। म। इ१। पं। का१। य। यो९। वे०। क१। को। जा४। म। थु। ब। म। सं१।
 सा। छे। व३। च। अ। अ। ले६। भ१। सं२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ३।
 भा१

ई प्रकारविशेषे माननापाकपायंगळगे मिथ्यादृष्टिप्रभृति अनिवृत्तिकरणपर्यंत यत्तव्यमस्य
 विशेषमायुडे बोडे एल्लि एल्लि क्रोयकपायमल्लल्लि माननापाकपायंगळ वस्तव्यंगळपुत्रु। को
 कपायसत् क्रोयकपायभंगमेवशुं। विशेषमायुडे बोडे ओषाछापडोळ बग गुणस्यानंगळ दु बतम
 १० मरुमान संयमगळं लोभकपायमोदे यत्तव्यमवकु॥

अकपायकगळो। गु४। उ। क्षो। स। अ। जी२। प६। ६। प्रा१०। ४। २। १।
 सं१। ०। ग१। म। इ१। पं। का१। य। यो११। म४। पा४। ओ२। का१। वे०।
 क०। गा५। म। भु। अ। म। के। सं१। यया। व४। च। अ। अ। के। ले६। भ१।
 सं२। उ। क्षा। सं१। आ२। उ२॥ भा१

१५ अकपायसामान्यं पेळस्पदुतु। विशेषविशेषमुपशांतकपायप्रभृति सिउपरमेदिगळम्यंत
 सामान्यभंगगळपुत्रु। इनु कपायमागणं समाप्तमायुतु॥

मानानुवावडोळ ओषाछापंगळ मूलोषभंगगळपुत्रु। कुमतिकुभृतमानिगळगे। गु२। वि।
 सा। जी१। प६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०। ७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४।

था। सं१। आ१। उ३। अनिवृत्तिकरणानां प्रथममागे—गु१ अवि। जी१। प। प६। प्रा१०।
 २० म२। वे१। म१। म। इ१। पं। का१। य। यो९। वे३। क१। को। जा४। म। थु। अ। म। सं१।
 उं। व३। व३। व३। ले६। भ१। म२। उ। क्षा। सं१। आ१। उ३। द्वितीयमागे—गु१। जी१।
 प६। प्रा१०। सं१। म१। म। इ१। पं। का१। य। यो९। वे०। क१। को। जा४। म। थु। व३।
 म२। सा। उं। व३। व३। व३। ले६। भ१। म२। उ। क्षा। सं१। उ३। एव माननायमोदे एवमसि

गुणनायनं वस्तव्यं किनु क्रोयकपायने एतन्नायकपायः, तथा लोभकपायि, किनु गुणस्थानानि इव।

१५ अकपायि—गु१ उ क्षो सा अ जी२ प६ ६ प्रा१० ४ २ १ सं० म१ म इ१ प
 ४ १ म म१ म इ१ पं का१ य यो११ म४ पा४ ओ२ का१ वे० क० गा५ म भु अ म के सं१ य व४ च अ के
 ले६ भ१ म२ उ क्षा सं१ आ२ उ२ भा१

मानानुवावडोळ ओषाछापंगळ मूलोषभंगगळपुत्रु। कुमतिकुभृतमानिगळगे। गु२। वि।
 सा। जी१। प६। ६। ५। ५। ४। ४। प्रा१०। ७। ९। ७। ८। ६। ७। ५। ६। ४। ४।

कुमतिकुभृतज्ञानिअपम्याप्तिकम् । गु १ । मि । जो ७ । अ । प ६ । ५ । ४ । ३ ।
प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो ३ । ओ मि । वे मि । का
वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । सं १ । अ । व २ । ले २ क शु । भ २ । सं २ । मि । सा । सं २ ।
आ २ । उ ४ ॥ भा ६

कुमतिकुभृतज्ञानिमिध्यादृष्टिगळ्णे । गु १ । मि । जो १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ३ ।
प्रा १० । ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो ११ ।
आहारकद्वयरहित । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । च । अ । ले ६ । भ २ ।
सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ४ ॥ ६

कुमतिकुभृतज्ञानिमिध्यादृष्टिअपम्याप्तिकम् । गु १ । मि । जो ७ । प । प ६ । ५ । ४ । ५ ।
प्रा १० । ९ । ८ । ७ । ६ । ४ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो १० । म ४ । वा ४ । ओ का ।
वे का । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । च । अ । ले ६ । भ २ । सं १ ।
मि । सं २ । आ १ । उ ४ ॥ ६

कुमतिकुभृतज्ञानिमिध्यादृष्टिअपम्याप्तिकम् । गु १ । मि । जो ७ । अ । प ६ । ५ । ४ ।
अ । प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो ३ । ओ मि । वे मि । का ।
वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । च । अ । ले २ क शु । भ २ । सं १ ।
मि । सं २ । आ २ । उ ४ ॥ भा ६

कुमतिकुभृतज्ञानिसाधनम् । गु १ । सासा । जो २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ ।
सं ४ । ग ४ । इ १ पं । का १ प्र । यो १३ । आहारद्वयवजितं । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ । कु । कु ।
सं १ । अ । व २ । च । अ । ले ६ । भ १ । सं १ । सासा । सं १ । आ २ । उ ४ ॥

कुमतिकुभृतज्ञानिसाधनपम्याप्तिकम् । गु १ । सासा । जो १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
ग ४ । इ १ पं । का १ प्र । यो १० । म ४ । वा ४ । ओ का । ये का । वे ३ । क ४ । ज्ञा २ ।
कु । कु । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ १ । सं १ । सासा । सं १ । आ १ । उ ४ ॥

उ ४ । तत्प्राप्तानां—गु १ मि, जो ७ अ, प ६ ५ ४ अ, प्रा ७ ७ ६ ५ ४ ३, सं ४, ग ४, इ ५, का ६,
यो ३ ओ मि वे मि का, वे ३, क ४, ज्ञा २ कु कु, सं १ अ, व २ च अ, ले २ क शु, भ २, सं १ मि, सं २

२५ आ २, उ ४ । तत्प्राप्तानां—गु १ सा, जो २ प अ, प ६ ६, प्रा १० ७, सं ४, ग ४, इ १ पं, का १ प्र,
यो १३ आहारद्वयवजितं । वे ३, क ४, ज्ञा २ कु कु, सं १ अ, व २ च अ, व २ च अ, ले ६, भ १,
सं १ सा, सं १, आ २, उ ४ । तत्प्राप्तानां—गु १ सा, जो १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ४, इ १ पं,
का १ प्र, यो १० म ४ व ४ यो वे, वे ३, क ४, ज्ञा २ कु कु, सं १ अ, व २, ले ६, भ १, सं १ अ,

म।श्रु।अ।म।सं३।सा।छे।पा।व३।च।अ।अ। ले६ भ१।सं३।उ।वे।
 छा।सं१।आ१।उ७॥

अप्रमत्तसंयतंगे। गु१। अ। जी१। पा।प६। प्रा१०। सं३। आहारसंसारहित।
 ग१म।ई१।पं।का१त्र।यो९।वे३।क४।ज्ञान४।म।श्रु।अ।म।सं३।सा।
 छे।पा।व३। ले६ भ१।सं३।उ।वे।सा।सं१।आ१।उ७॥
 भा३

अपूर्वकरप्रभृति अयोगिकेवलपट्यंतं मूलोपभंगमवकुं। सामायिकसंयतंगे। गु४। प्रा।
 अ।अ।अ।जी२।पा।अ।प६।६। प्रा१०।उ।सं४।ग१।म।ई१।पं।का१त्र।
 यो११।म४।वा४।औ०।का१।आ२।वे३।क४।ज्ञा४।म।श्रु।अ।म।सं३।
 सामायिक।व३।च।अ।अ। ले६ भ१।सं३।उ।वे।सा।सं१।आ१।उ७॥
 भा३

१० अनिवृत्तिपट्यंतमूलोपभंगमवकुं। ऐवोपस्थापनसंयमवकुमुं प्रकारमे वक्तव्यमवकुं॥
 पट्टिहारविशुद्धिसंयमिगज्ये गु२। प्रा।अ।जी१।प६। प्रा१०।सं४।ग१।म।
 ई१।पं।का१त्र।यो९।वे३।पुं।क४।ज्ञा३।म।श्रु।अ।सं१।पट्टिहारविशुद्धि।
 व३।च।अ।अ। ले६ भ१।सं३।उ।वे।सा।सं१।आ१।उ७॥
 भा३

प्रमत्ताप्रमत्तपट्टिहारविशुद्धिसंयतवज्यो वेकल्पदुवल्ति ओषभंगमेयवकुं। वृक्षमत्तापराय-
 संयमवक्ते मूलोपभंगमेयवकुं। यथास्थापनसंयमिगज्यो। गु४।उ।क्षी।सा।अ।जी२।पा।अ।
 प६।६। प्रा१०।४।२।१।सं१०।ग१।म।ई१।का१त्र।यो११।म४।वा४।

१।आ२।वे३।क४।ज्ञा४मश्रुअम।सं३।साछेप। व३चअअ। ले६ भ१।सं३।
 उ।वे।सा।सं१।आ१।उ७। अप्रमत्तानां-गु१।अत्र। जी१।पा।प६। प्रा१०। सं३।आहार-
 मत्तामत्ता।ग१म।ई१।पं।का१त्र।यो९।वे३।क४।ज्ञा४मश्रुअम।सं३।साछेप।
 २०।११।ले६ भ१।सं३।उ।वे।सा।सं१।आ१।उ७। अपूर्वकराद्योपिपट्यंतं मूलोपभंगमेयवकुं।
 १

साधारणवज्यो-गु४अअअअ। जी२पाअ।प६।६। प्रा१०।उ।सं४।प१२।
 ई१।पं।का१त्र।यो११।म४व४मी१।आ२।वे३।क४।ज्ञा४मश्रुअम।सं३।
 साधारण।व३चअअ। ले६ भ१।सं३।उ।वे।सा।सं१।आ१।उ७। अनिवृत्तिपट्यंतं
 १

मूलोपभंगमेयवकुं। ऐवोपस्थापनसंयमवकुमुं प्रकारमे वक्तव्यमवकुं॥
 पट्टिहारविशुद्धिसंयमिगज्ये-गु२अअ। जी१।पा।प६। प्रा१०। सं४।म१म।ई१।
 २१।आ१।उ७। क४।ज्ञा३मश्रुअम।सं३।पट्टि।व३चअअ। ले६ भ१।
 म१वे।सा।सं१।आ१।उ७। अयमवज्यो मूलोपभंगमेयवकुं। यथास्थापनसंयमिगज्यो-
 १

वर्नानुवावदोऽत्र ओषाढारं मूत्रोपभंगमाहं । चतुर्दशनिगन्धो । गु १२ । जो ३ । सं ३ ।
२२२

प ६ । ६ । ५ । ५ । प्रा १० । ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ४ । ग ४ । इ २ । पं । च । का १ ।
यो १५ । वे ३ । क ४ । जा ७ । केवलज्ञानरहित । सं ७ । अ । वे । सा । छे । प । मू । यया ।
वर् १ । च ले ६ । भ २ । सं ६ । सं २ । आ २ । उ ८ ॥

५ चतुर्दशनिपप्याप्तिकं । गु १२ । जो ३ । सं । अ । च । प ६ । ५ । प्रा १० । ९ । ८ । सं ४ ।
१ १ १
ग ४ । इ २ । पं । च । का १ । यो ११ । म ४ । या ४ । ओ का । वे का । आ का । वे ३ । क ४ ।
जा ७ । कु । कु । वि । म । श्रु । अ । म । सं ७ । अ । वे । सा । छे । प । मू । यया । व १ । व ।
ले ६ । भ २ । सं ६ । मि । सा । मि । उ । वे । सा । सं २ । आ १ । उ ८ ॥

चतुर्दशनिपप्याप्तिकं । गु ४ । मि । सा । अ । प्र । जो ३ । सं अ च प ६ । ५ । अ ।
१ १ १
प्रा ७ । ७ । ६ । अ । सं ४ । ग ४ । इ २ । पं । का १ । यो ४ । ओ मि । वे मि । आ मि । का ।
वे ३ । क ४ । सा ५ । कु । कु । म । श्रु । अ । सं ३ । अ । सा । छे । व १ । च । ले २ । क गु । भ २ ।
सं ५ । मि । सा । उ । वे । सा । सं २ । आ २ । उ ६ ॥ भा ६

चतुर्दशनिपप्याप्तिकं । गु १ मि । जो ६ । सं अ च प ६ । ६ । ५ । ५ । प्रा १० ।
२ २ २
७ । ९ । ७ । ८ । ६ । सं ४ । म ४ । इ २ । पं । च । का १ । यो १३ । आहारद्वयरहित । वे ३ ।
१५ क ४ । सा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व १ । च । ले ६ । भ २ । सं १ । मि । सं २ ।
आ २ । उ ४ ॥

चतुर्दशनिपप्याप्तिकं—गु १२, जो ६, सं अ च । प ६, ६, ५, ५, प्रा १०, ७, ९, ७, ८, ६, सं ४,
२ २ २

ग ४ । इ २ । च, पं, का १ । यो १५, वे ३, क ४, जा ७, कु कु वि म श्रु अ म, सं ७ । अ, वे, सा, छे, प, मू,
य । व १ । चयुः, ले ६ । म २ । सं ६ मि सा मि उ वे सा, सं २, आ २, सं ८ । तत्परांशानां—

२० गु १२, जो ३ सं अ च, प ६, ५, प्रा १०, ९, ८, सं ४, ग ४ । इ २ । पं च, का १ । यो ११ म ४ व
४ जो १ व १, आ १, वे ३, क ४, जा ७ कु कु वि म श्रु अ म, सं ७ । अ वे सा छे प मू य, व १ । च । ले ६ ।
म २ । सं ६ मि सा मि उ वे सा, सं २ । आ १ । उ ८ । तत्परांशानां—गु ४ मि, मा, अ, प्र । जो ३
सं अ च । प ६, ५, अ, पा ७ ७, ६ व, सं ४, ग ४, इ २ । पं च । का १ । यो ४ ओ मि वं मि आ मि का,
१ १ १
वे ३, क ४, जा ५ कु कु म श्रु अ । सं ३ । अ, सा छे व १ । च । ले २ । क गु । म २, सं ५ मि सा उ वे सा,
भा ६

२५ सं २ । आ २ । उ ६ । तत्परांशानां—गु १ मि । जो ६ सं अ च । प ६, ६, ५, ५, प्रा १०, ७, ९,
२ २ २

अचक्षुर्दृशनिअप्यमिकग्गे । गु ४ मि । सासा । अ । प्रा । जो ७ । अ । प ६ । ५ । ४ । ३ ।
 अ । प्रा ७ । ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ४ । ओ मि । वे मि । आ मि ।
 का । वे ३ । क ४ । जा ५ । कु । कु । मा । थु । अ । सं ३ । अ । सा । छे । द १ । अ ।
 ले २ क धु । भ २ । सं ५ । मि । सा । उ । वे । सा । सं २ । आ २ । उ ६ ॥

५ अचक्षुर्दृशनिमिम्यादृष्टिगग्गे । गु १ । मि । जो १४ । प ६ । ६ । ५ । ५ । ४ । ४ । प्रा १० ।
 १० । ७ । ९ । ७ । ८ । ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ११ ।
 आहारद्वयरहित । वे ३ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व १ । अच ले ६ । भ २ ।
 सं १ मि । सं २ । आ २ । उ ४ ॥

अचक्षुर्दृशनिमिम्यादृष्टिप्यमिकग्गे । गु १ । मि । जो ७ । प ६ । ५ । ४ । प्रा १० ।
 १० । ९ । ८ । ७ । ६ । ४ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो १० । म ४ । या ४ । ओ का । वे का ।
 वे ३ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व १ । अच । ले ६ । भ २ । सं १ मि ।
 सं २ । आ १ । उ ४ ॥

अचक्षुर्दृशनिमिम्यादृष्टप्यमिकग्गे । गु १ मि । जो ७ । अ । प ६ । ५ । ४ । अ प्रा ७ ।
 ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ३ । ओ मि । वे मि । का । वे ३ ।
 १५ क ४ । जा २ । कु । कु । सं १ । अ । व १ । अच । ले २ क धु । भ २ । सं १ मि । सं २ ।
 आ २ । उ ३ ॥

अचक्षुर्दृशनितासावनप्रभृतिशीगकपायपर्म्यंतं अचक्षुर्दृनिगग्गे बु वस्तव्यमवकुं ।

नहि, सं ७, द १ अ, ले ६ । भ २, स ६, सं २, आ १, उ ८ । वदपर्म्याप्तानां—गु ४ मि सा अ ५, ओ

७ अ, प ६, ५, ४ अ, प्रा ७, ७, ६, ५, ४, ३, सं ४, ग ४, इं ५, का ६, यो ४ ओ मि । वे मि । आ मि ।
 २० वे ३, क ४, जा ५, कु कु म थु अ, सं ३ अ, सा, छे । द १ अ, ले २ क धु । भ २, स ५ मि सा उ ६

सा, सं २, आ २, उ ६ । तमिम्यादृतां—गु १ मि, जो १४, प ६, ६, ५, ५, ४, ४, प्रा १०, ७, ५,
 ७, ८, ६, ७, ५, ६, ४, ४, ३, सं ४, ग ४ । इं ५, का ६, यो १३ आहारद्वयं नहि, वे ३, क ४, जा ३,
 कु कु वि, सं १ अ, द १ अ, ले ६, भ २, सं १ मि, सं २, आ २, उ ४ । तत्पर्म्याप्तानां—गु १ मि ।

जो ७ प, प ६ । ५, ४, प्रा १०, ९, ८, ७, ६, ४, सं ४, ग ४, इं ५, का ६, यो १० म ४ व ४ ओ ।
 २५ वे १, वे ३ । क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, द १ अ, ले ६ । भ २, सं १ मि, सं २, आ १, उ ४ ।

वदपर्म्याप्तानां—गु १ मि, जो ७ अ, प ६, ५, ४ अ, प्रा ७, ७, ६, ५, ४, ३, सं ४, ग ४, इं ५, का ६,
 यो ३ ओ मि । वे मि । का, वे ३, क ४, जा २ कु कु, सं १ अ, द १ अ, ले २ क धु । भ २, सं १ मि, सं २,
 आ २ उ ३ । तत्तासादनात् शीगकपायांतं यथायोग्यं योग्यं ।

गो० जीवकाण्डे

प्रा १०।९।८।७।६।५।४।३।२।१। न। ति। न। इ०। का६। यो १०। म५।
वा४। ओ० का। वे३। क४। न। ति। न। इ०। का६। यो १०। म५।
व३। च। अ। अ। ले६। म२। सं६। मि। सा। मि। उ। वे। सा। सं३।
आ १। उ९॥ भा १६

५ कृष्णलेस्याऽप्यप्यतिकर्णे। गु३। मि। सा। अ। जी७। अ। प६। ५।४। म५।
प्रा ७।७।६।५।४।३।२।१। न। ति। न। इ०। का६। यो ३। ओ० मि। ये मि। का। वे३।
क४। ज्ञा५। कु। कु। म। थु। अ। सं१। अ। व३। ले२। क५। म२। सं३। मि।
सा। वे। पंचमादिपृथिव्यग्निर्यं यत्पं असंपत्तनोऽप्येवं संभविसुपुं। सं२। आ२। उ८॥
भा १६

कृष्णलेस्यामिप्यादृष्टिगन्तव्ये। गु१। मि। जी०। प६। ५।५।४।४। म५।
१०। ७।९।७।८।६।५।४।३।२।१। न। ति। न। इ०। का६। यो १३। वे३।
क४। ज्ञा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ले६। म२। सं१। मि। सं२।
आ२। उ५॥ भा १६

कृष्णलेस्यामिप्यादृष्टिगन्तव्ये। गु१। मि। जी०। प५। प६। ५।४। म५।
९।८।७।६।५।४।३।२।१। न। ति। न। इ०। का६। यो १०। म५। वा४। ओ० का।
१५ वे३। का। वे३। क४। ज्ञा३। कु। कु। वि। सं१। अ। व२। ले६। म२। सं१।
मि। सं२। आ१। उ५॥ भा १६

कृष्णलेस्यामिप्यादृष्ट्यप्यतिकर्णे। गु१। मि। जी०। अ। प६। ५।४। म५।
५।४।३। अ। सं४। ग४। इ०। का६। यो ३। ओ० मि। वे मि। का। वे३। क४।
गु४ मि। सा। मि। अ। जी०। प६। ५।५।४। म५। प्रा ७।६।
२० का६। यो १०। म५। व४। ओ० वे३। क४। ज्ञा६। कु। कु। मि। थु। अ। सं१। म२। व३। व४। अ। ले६।
म२। व३। मि। सा। मि। उ०। वे३। क४। ज्ञा६। कु। कु। मि। थु। अ। सं१। म२। व३। व४। अ। ले६।
५।४। म५। प्रा ७।६।५।४।३।२।१। न। ति। न। इ०। का६। यो ३। ओ० मि। वे मि। का। वे३। क४।
कु। कु। म५। थु। अ। सं१। म२। व३। व४। अ। ले६।
भा १६

सम्यक्त्वसंवागुं। सं२। आ२। उ८। तमिष्यादृष्ट्यां—गु१। मि। जी०। प६। ५।५।४। म५। प्रा १०।
५।४।३। अ। सं४। ग४। इ०। का६। यो ३। ओ० मि। वे मि। का। वे३। क४।
२५ ७।९।७।८।६।५।४।३।२।१। न। ति। न। इ०। का६। यो ३। ओ० मि। वे मि। का। वे३। क४।
सं१। म२। व३। मि। सा। वे। पंचमादिपृथिव्यग्निर्यं यत्पं असंपत्तनोऽप्येवं संभविसुपुं। सं२। आ२। उ८॥
५।४। म५। प्रा १०। म५। व४। ओ० वे३। क४। ज्ञा६। कु। कु। मि। थु। अ। सं१। म२। व३। व४। अ। ले६।
म२। व३। मि। सा। मि। उ०। वे३। क४। ज्ञा६। कु। कु। मि। थु। अ। सं१। म२। व३। व४। अ। ले६।
भा १६

गो० जीवकाण्डे

यो १२। म४। वा४। औ२। वै का१। काम्मं१। कृष्णलेश्यासंयतासम्यगुष्टि भवननते
पुष्टनपुष्टरिर्वैक्रियिकमिथमिल्ल। अथवा घम्मेयं विट्टु मिक्क नरकंगळोळं पुष्टनपुष्टरिर्व
वैक्रियिकमिथमिल्ल। घम्मेयं योळुदुदुयवं कपोतलेश्यासंयतासम्यगुष्टि भवननते कृष्णलेश्यासंयत
संभावनेयिल्लपुष्टरिर्वमनु वैक्रियिकमिथयोगे संभवित्तनु। ये३। क४। ता३। मा३। वा३।
५ सं१। अ३। व३। च३। अ३। ले६। भ१। सं३। उ३। वे३। शा३। सं१। वा२। व३।
भा१कृ

कृष्णलेश्यासंयतासम्यगुष्टिपप्यामिकगो०। गु१। अर्त्त। जो१। प। प६। प्रा१०
सं४। ग३। न। ति। मा३। सं१। पं। का१। यो१०। म४। वा४। औ२। का३।
क४। ता३। म३। अ३। सं१। अ३। व३। च३। अ३। ले६। भ१। सं३। उ३। वे३। शा३। सं१। वा२। व३।
भा१कृ

कृष्णलेश्यासंयतापप्यामिकगो०। गु१। अर्त्त। जो१। अ३। प६। अ३। प्रा७। ३
सं४। ग१। म३। सं१। पं। का१। यो२। औ२। मि। का१। ये१। पुं। क४। ता३।
मा३। अ३। सं१। अ३। व३। च३। अ३। ले२। क३। भ१। सं१। वे३। क३।
भा१कृ

नीललेश्येयै कृष्णलेश्येयोर्येऽर्त्तं पेळु कोळ्ळं। विशेषमायुर्वेदोऽसर्वत्र नीललेश्ये
वक्तव्यमवकुं। कपोतलेश्याजोवंगळो०। गु४। मि। सा। मि। अ३। जो१४। प६। ६। ५। ५।
४। ४। प्रा१०। ७। ९। ७। ८। ६। ७। ९। ६। ४। ४। ३। सं४। ग४। सं५। का६।
यो१३। म४। व४। औ२। वै२। का१। ये३। क४। ता६। कु। कु। मि। म३। थु।
अ३। सं१। अ३। व३। च३। अ३। ले६। भ२। सं६। मि। सा। मि। उ३। वे३। शा३।
भा१कृ

यो १२ म४ व४ औ२ वै का१। तेषां सम्यगुष्टित्वात् भवननमद्वितीयादिपुष्पीष्वनुत्पत्तेः। धर्मोत्पत्त्या
पु क्रोवलेस्या अथवाचित्वादेक्रियिक मिथयोगो नहि। ये३। क४। ता३ म३ थु अ३ सं१ अ३ द३ व
अ३ ले६ भ१ सं३ उ३ वे३ शा३ सं१ वा२ उ६। तत्पप्यामिकानां—गु१ अर्त्त जो१७ प६
भा१कृ
प्रा१० सं४ ग३ न वि म३ सं१ पं। का१ यो१० म४ व४ औ२ वै ये३ क४ ता३ म३ थु अ३
सं१ अ३ द३ व३ अ३ ले६ भ१ सं३ उ३ वे३ शा३ सं१ वा२ उ६। तत्पप्यामिकानां—गु१ अर्त्त जो१७ प६
भा१कृ

क्रोवलेस्यानां—गु४ मि सा मि अ३ जो१४ प६ ६ ५ ५ ४ ४ प्रा१० ७ ९ ७ ८ ६
७ ५ ६ ४ ४ ३ सं४ ग४ य४ सं५ ना६ यो१३ म४ व४ औ२ वै का१ ये३ क४ ता३
गु कु वि म३ थु अ३ सं१ अ३ द३ व३ अ३ ले६ भ२ सं६ मि सा मि उ३ वे३ शा३ सं१ वा२ उ६।
भा१कृ

कपोतलेश्यामिम्यादुष्टपर्म्याप्तिकर्मो । गु १ मि । जो ७ । अ । प ६ । ५ । ४ । अ । प्रा ७ ।
 ७ । ६ । ५ । ४ । ३ । सं ४ । ग ४ । इं ५ । का ६ । यो ३ । ओ मि । वै मि । का । वे ३ । क ४ ।
 जा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । ले २ । क शु । भ २ । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ५ ॥
 भा १ क

कपोतलेश्यासासादनसम्यग्दृष्टिगन्धो । गु १ । सा सा । जो २ । प ५ । प ६ । ६ । प्रा १० ।
 ५ । ७ । सं ४ । ग ४ । इं १ । पं । का १ त्र । यो १३ । वे ३ । क ४ । जा ३ । कु । कु । वि ।
 सं १ । अ । व २ । च । अ । ले ६ । भ १ । सं १ । सा । सं १ । आ २ । उ ५ ॥
 भा १ क

कपोतलेश्यासासादनपर्म्याप्तिकर्मो । गु १ । सा । जो १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
 ग ३ । न । ति । म । इं १ । पं । का १ त्र । यो १० । म ४ । या ४ । ओ का । वै का । वे ३ ।
 क ४ । जा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । च । अ । ले ६ । भ १ । सं १ । सा ।
 १० । सं १ । आ १ । उ ५ ॥
 भा १ क

कपोतलेश्यासासादनापर्म्याप्तिकर्मो । गु १ । सा । जो १ । अ । प । ६ । अ । प्रा ७ । अ ।
 सं ४ । ग ३ । ति । म । वे । इं । पं । का १ त्र । यो ३ । ओ मि । वै मि । का । वे ३ । क ४ ।
 जा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । च । अ । ले २ क शु । भ १ । सं १ । सासादनद्वि ।
 सं १ । आ २ । उ ४ ॥
 भा १ क

१५ कपोतलेश्यासम्यग्मिम्यादुष्टिगन्धो । गु १ । मिथ । जो १ । प । प ६ । प्रा १० । सं ४ ।
 ग ३ । न । ति । म । वेवगतिपौलुशभलेदये पर्म्याप्तिकर्मो संभविसदु । इं १ । पं । का १ त्र । यो
 १० । म ४ । या ४ । ओ का । वै का । वे ३ । क ४ । जा ३ । मिथज्ञानगन्धु । सं १ । अ । व २ ।
 ले ६ । भ १ । सं १ । मिथ । सं १ । आ १ । उ ५ ॥
 भा १ क

१० स १ मि, सं २, आ १, उ ५ । तदपर्याप्तानां—गु १ मि, जो ७ अ, प ६, ५, ४, अ, प्रा ७, ७, ६, ५, ४,
 ३, सं ४, ग ४, इं ५, का ६, यो ३ ओमि वैमि का, वे ३, क ४, जा २ कु कु, सं १, सं १ अ, व २, ले २ क
 गु । भ २, स १ मि, सं २, आ २, उ ४ । तत्सासादनानां—गु १ सा, जो २ प ५, प ६, ६, प्रा १०, ७,
 सं ४, ग ४, इं १ पं, का १ त्र, यो १३, वे ३ क ४, जा ३, कु कु वि, सं १ अ, व २ च अ, ले ६ ।
 भ १, स १ सा, सं १, आ २, उ ५ । तत्पर्याप्तानां—गु १ सा, जो १ प, प ६, प्रा १०, सं ४, ग ३ न
 त्रि म, इं १ पं, का १ त्र, यो १० म ४ व ४ ओ वै, वे ३, क ४, जा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २ च अ,
 २५ ले ६, भ १, स १ सा, सं १, आ १, उ ५ । तदपर्याप्तानां—गु १ सा, जो १ अ, प ६ अ, प्रा ७ अ,
 भा १ क
 सं ४, प ३ त्रि म दे, इं १ पं, का १ त्र, यो ३ ओमि वैमि का, वे ३, क ४, जा २ कु कु, सं १ अ,
 व २ च अ, ले २ क शु, अ १, स १ गा, सं १, आ २, उ ४ । सम्यग्मिम्यादुष्टां—गु १ मिथ, जो १ प,
 प ६, प्रा १०, सं ४, ग ३ न त्रि म, देवगतिनिष्ठ, इं १ पं, का १ त्र, यो १० म ४ व ४ ओ वै, वे ३,

तेजोलेइयामिप्यामृष्टिपमृष्टिगम्गे । गु४ । मि । सा । अ । प्र । जो १ । अ । प६ । अ । प्रा३ ।
अ । सं४ । ग२ । म । वे । इ१ पं । का १ प्र । यो ४ । ओ मि । वेमि आमि । का । वे २ ।
स्त्री । पुं । क४ । ज्ञा ५ । कु । कु । म । भु । अ । सं ३ । अ । सा । छे । व ३ । ले ६ कृ ।
भा १ ते

भ २ । सं ५ । मि । सा । उ । वे । क्षा । सं १ । आ २ । उ ८ ॥

५ तेजोलेइयामिप्यामृष्टिपमृष्टिगम्गे । गु१ । मि । जो २ । प । अ । प६ । ६ । प्रा १० । उ ।
सं४ । ग३ । ति । म । वे । इ१ पं । का १ प्र । यो १२ । म४ । वा ४ । ओ का । वे का ।
वे मि । काम्मंण । वे ३ । क४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ भ २ । सं १ ।
भा १ ते

मि । सं १ । आ २ । उ ५ ॥
तेजोलेइयामिप्यामृष्टिपमृष्टिगम्गे । गु१ । मि । जो १ । प । प६ । प्रा १० । सं४ ।
१० ग३ । ति । म । वे । इ१ पं । का १ प्र । यो १० । म४ । वा ४ । ओ का । वे का । वे २ ।
क४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि । सं १ । व २ । ले ६ । भ २ । सं मि । सं १ । आ १ । उ ५ ॥
भा १ ते

तेजोलेइयामिप्यामृष्टिपमृष्टिगम्गे । गु१ । मि । जो १ । अ । प६ । अ । प्रा ७ । अ ।
सं४ । ग१ । वे । इ१ पं । का १ प्र । यो २ । वे मि । का । वे २ । स्त्री । पुं । क४ । ज्ञा २ ।
कु । कु । सं १ । अ व २ । ले २ कृ । भ २ । सं १ मि । सं १ । आ २ । उ ४ ॥
भा १ ते

१५ तेजोलेइयासासादनसम्यग्दृष्टिगम्गे । गु१ । सासा । जो २ । प । अ । प६ । ६ । प्रा १० ।
७ । सं४ । ग३ । ति । म । वे । इ१ पं । का १ प्र । यो १२ । म४ । वा ४ । ओ का । वे २ ।
इ१ पं । का १ प्र । यो ११ म४ व४ ओ वे आ । वे ३ । क४ । ज्ञा ७ केवलं नहि । सं ५ अ वे सा छे ५ ।
व ३ । ले ६ । भ २ । व ६ । सं १ । आ १ । उ १० । तदपर्याप्ताना—गु४ । मि । सा । अ । प्र । जो १ । अ । प६ । अ ।
भा १ ते

प्रा ७ अ । सं ४ । ग२ म वे । इ१ पं । का १ प्र । यो ४ ओमि वेमि आमि का । वे २ स्त्री पुं । क४ । ज्ञा ५
२० कु कु म भु अ । सं ३ अ सा छे । व ३ । ले २ कृ । भ २ । सं ५ मि सा उ वे क्षा । सं १ । आ २ । उ ८ ।
भा १ ते

तमिप्यामृष्टिगम्गे—गु१ मि । जो २ प । अ । प६ । ६ । प्रा १० । उ । सं४ । ग३ ति म वे । इ१ पं । का १ प्र ।
यो १२ म४ व४ ओ वे वेमि का । वे ३ । क४ । ज्ञा ३ कु कु वि । सं १ अ । व २ । ले ६ । भ २ । सं १ मि ।
भा १ ते

सं १ । आ २ । उ ५ । तदपर्याप्ताना—गु१ मि । जो १ प । प६ । प्रा १० । सं४ । ग३ ति म वे । इ१ पं ।
वा १ प्र । यो १० म४ व४ ओ वे । वे ३ । क४ । ज्ञा ३ कु कु वि । सं १ अ । व २ । ले ६ । भ २ । सं १ मि ।
भा १ ते

५२ मि । सं १ । आ १ । उ ५ । तदपर्याप्ताना—गु१ मि । जो १ अ । प६ । अ । प्रा ७ अ । सं४ । ग१ वे ।
इ१ पं । का १ प्र । यो २ वेमि का । वे २ स्त्री पुं । क४ । ज्ञा २ कु कु । सं १ अ । व २ ।
ले २ कृ । भ २ । सं १ मि । सं १ । आ २ । उ ४ । सासादनाना—गु१ सा । जो २ प । प६ । अ ।
भा १ ते

ति। म। दे। इं१। का१। यो१०। म४। या४॥ ओ० का। वे० का। वे३। क४। जा३।
सं१। अ। व३। ले६। भ१। सं३। सं१। आ१। उ६॥

भा १ ते

तेजोलेश्याअपम्याप्तासंयतगणे। गु१। अ। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४।
ग२। म। दे। इं१। का१। यो३। ओ० मि। वे० मि। का। वे१। पुं। क४। जा३। सं१।
५। अ। व३। ले२। भ१। सं३। सं१। आ२। उ६॥

भा १ ते

तेजोलेश्यादेशयतिगण्ये। गु१। वे। जी१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग२। ति।
म। इं१। का१। यो२। म४। या४। ओ० का। वे३। क४। जा३। म। धु। अ। सं१।
वे। व३। ले६। भ१। सं३। सं१। आ१। उ६॥

भा १ ते

तेजोलेश्याप्रमत्तगणे। गु१। प्र। जी२। प। अ। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग१।
१०। म। इं१। का१। यो११। वे३। क४। जा४। मं३। सा। छे। प। व३। ले६। भ१।
भा १ ते
सं३। सं१। आ१। उ७॥

तेजोलेश्याप्रमत्तगणे। गु१। अ। प्र। जी१। प। प६। प्रा१०। सं३। ग१। म।
इं१। का१। यो२। वे३। क४। जा४। म। धु। अ। म। सं३। सा। छे। प। व३।
ले६। भ१। सं३। सं१। आ१। उ७॥

भा १ ते

१५। १०। सं४। ग३। ति। म। दे। इं१। का१। यो१०। म४। व४। ओ० वे३। क४। जा३। सं१।
अ। व३। ले६। भ१। सं३। सं१। आ१। उ६।

भा १ ते

वदपर्याप्तानां—गु१। अ। जी१। अ। प६। अ। प्रा७। अ। सं४। ग२। म। दे। इं१। का१।
यो३। ओ० मि। वे० मि। का। वे१। पुं। क४। जा३। सं१। अ। व३। ले२। भ१। सं३। सं१।
भा १ ते

आ२। उ६। देवप्रतिनां—गु१। दे। जी१। प। प६। प्रा१०। सं४। ग२। ति। म। इं१। का१।
२०। यो१। म४। व४। ओ० वे३। क४। जा३। म। धु। अ। सं१। दे। व३। ले६। भ१। सं३। सं१।
भा १ ते

आ१। उ६। प्रमत्तानां—गु१। प्र। जी२। प। अ। प६। ६। प्रा१०। ७। सं४। ग१। म। इं१।
का१। यो११। वे३। क४। जा४। सं३। सा। छे। प। व३। ले६। भ१। सं३। सं१। आ१।

भा १ ते

उ७। अप्रमत्तानां—गु१। अ। प्र। जी१। प। प६। प्रा१०। सं३। ग१। म। इं१। का१।
यो२। वे३। क४। जा४। म। धु। अ। म। सं३। सा। छे। प। व३। ले६। भ१। सं३। सं१।
भा १ ते

१०५०

पपलेक्ष्यामिम्यादृष्टपप्यान्तरागे । गु१ । मि । जो१ । अ । प६ । अ । प्रा७ । अ ।
सं४ । ग१ । दे । ई१ । का१ । यो२ । वेमि । का । वे१ । पुं । क४ । ज्ञा२ । कु । कु ।
सं१ । अ । व२ । ले२ कनु । भ२ । सं१ । मि । सं१ । आ२ । उ४ ॥
भा १ प

पपलेक्ष्यासासावनर्गे । गु१ । सासा । जो२ । प । अ । प६ । अ । प्रा१० । उ । सं४ ।
५ ग३ । ति । म । दे । ई१ । का१ । यो१२ । म४ । वा४ । ओ । का१ । वे । का१ । का१ ।
वे३ । क४ । ज्ञा३ । कु । कु । वि । सं१ । अ । व२ । ले६ । भ१ । सं१ । सा । सं१ ।
भा १ प

आ२ । उ५ ॥
पपलेक्ष्यासासावनपप्यान्तरागे । गु१ । सा । जो१ । प । प६ । अ । प्रा१० । सं४ ।
ग३ । ति । म । दे । ई१ । का१ । यो१० । म४ । वा४ । ओ । का१ । वे । का१ । वे३ ।
१० क४ । ज्ञा३ । कु । कु । वि । सं१ । अ । व२ । ले६ । भ१ । सं१ । सासा । सं१ ।
भा १ प

आ१ । उ५ ॥
पपलेक्ष्यासासावनापप्यान्तरागे । गु१ । सा । जो१ । अ । प६ । अ । प्रा७ । अ ।
सं४ । ग१ । दे । ई१ । का१ । यो२ । वेमि । का । वे१ । पुं । क४ । ज्ञा२ । कु ।
सं१ । अ । व२ । ले२ कनु । भ१ । सं१ । सं१ । आ२ । उ४ ॥
भा १ प

१५ पपलेक्ष्यासम्यग्मिम्यादृष्टिगन्धे । गु१ । मिथ । जो१ । प । प६ । प्रा१० । सं१ ।
ग३ । ति । म । दे । ई१ । का१ । यो१० । वे३ । क४ । ज्ञा३ । मिथ । सं१ । अ । व२ ।
ले६ । भ१ । सं१ । मिथरुचि । सं१ । आ१ । उ५ ॥
भा १ प

जा३ कु कु वि । सं१ । अ । व२ । ले६ । भ२ । सं१ । मि । सं१ । आ१ । उ५ । तदप्याप्तानां ।
भा १ प

मि । जी१ । अ । प६ । अ । प्रा७ । अ । सं४ । ग१ । दे । ई१ । व । का१ । यो२ । वेमि । का । वे३ ।
२० क४ । ज्ञा२ । कु कु । सं१ । अ । व२ । ले२ कनु । भ२ । सं१ । मि । सं१ । आ२ ।
भा १ प

तत्प्रासादनानां—गु१ सा । जी२ प६ । प६ । प्रा१० । उ । सं४ । य३ ति म दे । ई१ ।
यो१२ म४ व४ ओ१ वे२ का१ वे३ । क४ । ज्ञा३ कु कु वि । सं१ । अ । व२ ।
भा १

स१ सा । सं१ । अ । आ२ । उ५ । तत्प्राप्तानां—गु१ सा । जी१ । प । प६ । प्रा१० ।
ग३ ति म दे । ई१ । का१ । यो१० म४ व४ ओ१ वे१ । वे३ । क४ । ज्ञा३ ।
२५ सं१ । अ । व२ । ले६ । भ१ । स१ सा । सं१ । आ१ । उ५ । तदप्याप्तानां—
भा १ प

जो१ । अ । प६ । अ । प्रा७ । अ । सं४ । य१ । दे । ई१ । का१ । यो२ । वेमि । का । वे३ ।
ज्ञा२ कु कु । सं१ । अ । व२ । ले२ कनु । भ१ । स१ सा । सं१ । आ२ । उ४ । सम्य ।
भा १ प
गु१ मिथ । जो१ । प६ । प्रा१० । सं४ । य३ ति म दे । ई१ । का१ । यो१० । वे३ ।

पद्मलेश्येय अग्रमत्तर्गो । गु१ । अ प्र । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ । गति १ । मा । ई १ ।
 पं । का १ । प्र । यो ९ । म ४ । या ४ । ओ का १ । वे ३ । क ४ । शा ४ । म । भु । ज । मा । सं ३ ।
 सा । छे । पा । व ३ । ले ६ । भ २ । सं ३ । उ । वे । शा । सं १ । आ १ । उ ७ ॥
 भा १ प

शुक्ललेश्याजीवगच्छे । गु १३ । जी २ । प । अ । प ६ । प्रा १० । उ । ४ । २ ।
 ५ सं ४ । ग ३ । ति । मा । वे । ई १ । का १ । यो १५ । वे ३ । क ४ । शा ८ । सं ७ । द ४ ।
 ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ । आ २ । उ १२ ॥
 भा १ शु

शुक्ललेश्यापर्वामिकर्गो । गु १३ । जी १ । प । प ६ । प्रा १० । ४ । सं ४ । ग ३ । ति ।
 मा । वे । ई १ । का १ । यो ११ । म ४ । या ४ । ओ का । ये का । आ का । वे ३ । क ४ । शा ८ ।
 सं ७ व ४ । च । अ । अ । के । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ । आ १ । उ १२ ॥
 भा १ शु

१० शुक्ललेश्या अपर्वामिकर्गो । गु ५ । मि । सा । अ । प्र । स यो । जी १ । अ । प ६ । अ ।
 प्रा ७ । र । सं ४ । ग २ । म । वे । ई । का १ । यो ४ । ओ मि । ये मि । का । आ । मि । ये १ ।
 पु । क ४ । शा ६ । सं ४ । अ । सा । छे । या । व ४ । ले २ क शु । भ २ । सं ५ । मि । सा ।
 उ । वे । शा । सं १ । आ २ । उ १० ॥
 भा १ शु

शुक्ललेश्यामिष्याहृष्टिगच्छे । गु १ । मि । जी २ । प । अ । प ६ । प्रा १० । उ । सं ४ ।
 १५ ग ३ । ति । मा । वे । ई १ । का १ । यो १२ । म ४ । या ४ । ओ का १ । वे का २ । कामं
 का १ । वे ३ । क ४ । शा ३ । कु । कु । वि । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ । सं १ ।
 मि । सं १ । आ २ । उ ५ ॥
 भा १ शु

सं १, आ १ । उ ७ । अग्रमत्ताना—गु १ अग्र, जी १ प, प ६ । प्रा १०, सं ३, ग १ मा । ई १ पं ।
 का १ प्र । यो ९ म ४ व ४ ओ १ । वे ३, क ४, शा ४ म थु अ म । सं ३ सा छे प । द ३ । ले ६ ।
 भा १ प

२० भ १ । स ३ उ वे शा । सं १ । आ १ । उ ७ । शुक्ललेश्यानां—गु १३ । जी २ प अ । प ६ । प्रा १० । उ ।
 स यो ग ४ । र । सं ४ । ग ३ ति म दे, ई १ । का १ । यो १५ । वे ३ । क ४ । शा ८ ।
 सं ७ । द ४, ले ६ । भ २ । स ६ । सं १, आ २, उ १२ । तदपर्वानां—गु १३ । जी १ प, प ६ ।
 भा १ शु

प्रा १० ४, सं ४, ग ३ ति म दे, ई १, का १, यो ११ म ४ व ४ ओ १ वे १, आ १ । वे ३, क ४, शा ८ ।
 सं ७, द ४ व अ अ के, ले ६ । भ २, स ६, सं १ । आ १, उ १२ । तदपर्वानां—गु ५, मि सा अ प्र स,
 भा १ शु

२५ जी १ अ, प ६ अ, प्रा ७, र, सं ४, ग २ म दे, ई १, का १ यो ४ ओ मि वे मि आ मि का, वे १ पुं,
 क ४, शा ६, सं ४ अ सा छे य, द ४ ले २ क शु । भ २, स ५ मि सा उ वे शा, सं १, आ २, उ १० ।
 भा १ शु

तन्मिष्यादुषां—गु १ मि, जी २ प अ, प ६ ६, प्रा १०, उ, सं ४, ग ३ ति म दे, ई १, का १, यो १२
 म ४ व ४ ओ १ वे २ का १, वे ३, क ४, शा ३ कु कु वि, सं १ अ, व २, ले ६, अ २, स १ मि, सं १,
 भा १ शु

गो० जोरहाडे

गुल्लेइयासम्पत्तिगणने गु० जोताये
। ति। मा। वे। ई। का। यो। म। जा। जो। प। प। मा। न। प। प।
ना। मि। स। अ। व। ले। म। म। जो। ता। वे। ता। ने। ता।
गुल्लेइयासम्पत्तिगणने गु० अं। जो।
। स। प। ति। मा। वे। ई। का। यो। म। जा। जो। प। प। मा। न। प। प।
ना। मि। स। अ। व। ले। म। म। जो। ता। वे। ता। ने। ता।

गुल्लेदियाप्रमंतसम्यग्मुद्रिप्यन्ते गु १। अं०। जो २। प। अ। १६। ६। मा १०।
 सं ४। ग ३। ति। मा। दे। ११। का १। मो १२। आहृदयपान्जित ३३। क १।
 ता २। म। पु। अ। सं १। अ। व ३। ले ६। भ १। सं ३। उ। दे। शा। म ११।
 वा २। उ ६॥

शुक्ललेखासंयतसम्पद्दृष्टिपथ्यामिदम् ॥ पु१॥ ज१॥ जो१॥ प॥ प१॥ प्रा०॥
 सं४॥ ग३॥ ति॥ म॥ वे१॥ का१॥ यो१०॥ म५॥ जा४॥ जो१॥ का१॥ वे१॥
 १०॥ वे३॥ क४॥ ता३॥ म॥ भू॥ अ॥ सं१॥ ज॥ व३॥ ले६॥ भ१॥ तं३॥ तं१॥
 आ१॥ उ६॥ आ१शु

मुचललेयासतसम्यग्दृष्ट्यपम्यमिगणे । पु १ । अ १ । जो १ । अ । प ६ । अ
 प्रा ७ । त ४ । ग २ । म । वे । ई १ । का १ । यो १ । जो मि । वे मि । का । वे १ । पु । क ४ ।
 जा ३ । म । यु । अ । त १ । वा ३ । ले २ क तु । भ १ । त ३ । ज । वे । दा । त १ ।
 अ १ नु
 १५ वा २ । ज ६ ॥
 मुचललेयावेगवतिगणे पु १ । वेग ।
 ई १ । का १ । यो १ । वे ३ ।
 भ १ । त ३ ।

भ१। स१वा। सं१। ना२। उ४। सम्यग्मिथ्याभावे । भा१पु
सं४। न३ति महे । सं१। का१।

[illegible]

७६। तत्पर्याप्तानां—गु ई व। जी ई प। प६। प्रा १०। सं ४। ग२ वि म दे। ई ई। का १। यो १३ वादाद्वयभावात्।
 २५ यो १० म ४ व ४ औ ई। वे ३। क ४। आ ३ म धु व। सं ई व। द३। ले ६। म १। स३ उ वे क्षा। सं १। आ २।
 सं १। आ १। उ६। तदपर्याप्तानां—गु ई व। जी ई व। प६ व। प्रा ७ व। सं ४। म२ म
 दे। ई ई। का १। यो २ ओमि वीमि का। वे १ पुं। क ४। आ ३ म धु व। सं ई व। व३।
 ले २ क। घु। म १। स३ उ वे क्षा। सं १। आ २। उ६। देववर्तानां—गु ई दे। जी ई प।
 मा ई यु। प्रा १०। सं ४। ग२ वि म, ई ई पं। वा १ न। यो ९। वे ३। क ४। आ ३ म धु व।

१०१। यो १३ वाहारायामा
 १०२। यो १३ वाहारायामा
 १०३। यो १३ वाहारायामा
 १०४। यो १३ वाहारायामा
 १०५। यो १३ वाहारायामा
 १०६। यो १३ वाहारायामा
 १०७। यो १३ वाहारायामा
 १०८। यो १३ वाहारायामा
 १०९। यो १३ वाहारायामा
 ११०। यो १३ वाहारायामा

देवताणां-यु १ दे। जो १ प। का १ न। यो १ वे ३। क ४। आ ३ म यु ख।

अभय्यापय्याप्तिकर्णे । गु १ । मि । जी ७ । अ । प ६ । ५ । ४ । प्रा ७ । ७ । ६ ।
५ । ४ । ३ । अ । सं ४ । ग ४ । इ ५ । का ६ । यो ३ । ओ मि । वे मि । का । वे ३ । क ४ ।
जा २ । सं १ । अ । व २ । ले २ क गु । भ १ । अभय्य । सं १ । मि । सं २ । आ २ । उ ४ ॥
भा ६

भय्यदमभय्यदमल्लव सिद्धपरमेष्ठिगच्छे गुणस्यानातीतार्गे मुं पेन्नवतेयकं । इतु भय्य-
५ मार्गणे समाममावुवु ॥

सम्यग्दृष्टिपय्याप्तिकर्णे । गु ११ । असंयतादि । जी २ । प । अ । प ६ । ६ ।
प्रा १० । ७ । सं ४ । ग ४ । इ १ । पं । का १ प्र । यो १५ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ५ । म । भ्रु । अ ।
म । के । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ १ । सं ३ । उ । वे । क्षा । सं १ । आ २ । उ ९ ॥
भा ६

सम्यग्दृष्टिपय्याप्तिकर्णे । गु १ । जी १ । प ६ । प्रा १० । ४ । १ । सं ४ । ग ४ । इ १ ।
१० का १ । यो ११ । म ४ । व ४ । ओ का । वे का । आ का । वे ३ । क ४ । जा ५ । म । भ्रु । अ ।
म । के । सं ७ । व ४ । ले ६ । भ १ । सं ३ । उ । वे । क्षा । सं १ । आ १ । उ ९ ॥
भा ६

सम्यग्दृष्टि अपय्याप्तिकर्णे । गु ३ । अ । प्र । सयो । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ ।
अ २ । सं ४ । ग ४ । इ १ । पं । का १ प्र । यो ४ । ओ मि । वे मि । आ मि । काम्म । वे २ ।
१५ न पं । क ४ । ज्ञा ४ । म । भ्रु । अ । के । सं ४ । अ । सा । छे । यथा । व ४ व । अ । अ के ।
ले २ गु क । भ १ । सं ३ । उ । वे । क्षा । सं १ । आ २ । उ ८ ॥
भा ४ क ते पयु

असंयतसम्यग्दृष्टिप्रभृति अपोगिकेवलपय्यंतं मूलोपभंगमक्कं ॥

उ ५ । तदपय्याप्ताना—गु १ मि । जी ७ अ । प ६ ५ ४ अ । प्रा ७ ७ ६ ५ ४ ३ अ । सं ४ । ग ४ ।
इ ५ । का ६ । यो ३ ओमि वेमि का । वे ३ । क ४ । जा २ कु कु । सं १ अ । व २ । ले २ क गु ।
भा ६

२० भ १ अ । व १ मि । सं २ । आ २ । उ ४ । भय्याभय्यलक्षणरहितसिद्धानां प्राक्त्व । भय्यमापणा गदा ।
सम्यग्दृष्टानुवादे सम्यग्दृष्टीनां—गु ११ असंयतादीनि । जी २ प अ । प ६ ६ । प्रा १० ७ ४ २ १ ।
सं ४, व ४, इ १ पं, का १ प्र, यो १५ । वे ३, क ४, ज्ञा ५ म धु अ म के, सं ७, व ४ ले ६, भ १,
भा ६

व ३ उ वे दा, भं १, आ २, उ ९ । तदपय्याप्ताना—गु ११, जी १, प ६ ४, प्रा १० ४ १, सं ४,
व ४, इ १, का १, यो ११ म ४ व ४ ओ वे आ, वे ३ । क ४, ज्ञा ५ म धु अ म के, सं ७ । व ४,
२५ ले ६, भ १, व ३ उ वे दा । सं १ । आ २ । उ ९ । तदपय्याप्ताना—गु ३ अ प्र अ । जी १ अ ।
१ प ६ अ । प्रा ७ अ । २ । सं ४ । ग ४ । इ १ पं । का १ प्र । यो ४ ओमि वेमि आमि का । वे २ न पं ।
क ४ । ज्ञा ४ म धु अ के । सं ४ अ दा छे य । व ४ व अ अ के । ले २ क गु । भ १ । व ३ उ वे
भा ४

दा । मं १ । आ २ । उ ८ । असंयतादीनिद्वयं मूलोपभंगः ।

येदकसम्यग्दृष्ट्यप्रमत्तसंयतगो० । गु १ । अग्र । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ ।
ग १ म । इं १ पं । का १ न । यो ९ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ४ । सं ३ । सा । छे । प । द ३ ।
ले ६ । भ १ । सं १ । ये । सं १ । आ १ । उ ७ ॥
भा ३

उपशमसम्यग्दृष्टिगन्धो० । गु ८ । जी २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग ४ ।
५ इं १ । का १ । यो १२ । म ४ । वा ४ । ओ का १ । वे २ । का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ४ ।
सं ६ । अ । वे । सा । छे । सू । य । द ३ । ले ६ । भ १ । सं १ उ । सं १ । आ २ । उ ७ ॥
भा ६

उपशमसम्यग्दृष्टिपर्याप्तकगो० । गु ८ । अ । वे । प्रा । अ । अ । सू । उ । जी १ । प ६ ।
प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इं १ । का १ । यो १० । म ४ । व ४ । ओ का १ । वे का १ । वे ३ ।
क ४ । ज्ञा ४ । म । अ । अ । म । स ६ । अ । वे । सा । छे । सू । य । द ३ । ले ६ । भ १ ।
१० सं १ । उ । सं १ । आ १ । उ ७ ॥
भा ६

उपशमसम्यग्दृष्ट्यप्रमत्तकगो० । गु १ । असंयत । जी १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ ।
सं ४ । ग १ । वे । इं १ । का १ । यो २ । वे मि । का । वे १ । पुं । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ । अ ।
द ३ । ले २ क पु । भ १ । सं १ । उ । सं १ । आ २ । उ ६ ॥
भा ३ शुभ

उपशमसम्यग्दृष्ट्यसंयतगो० । गु १ । असंयत । जी २ । प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० ।
१५ ७ । सं ४ । ग ४ । इं १ । का १ । यो १२ । म ४ । वा ४ । ओ का १ । वे २ । का १ । वे ३ ।
क ४ । ज्ञा ३ । म धु । अ । सं १ । अ । द ३ । ले ६ । भ १ । सं १ । उ । सं १ । आ २ । उ ६ ॥
भा ६

३३, ले ९, भ १, स १ वे, सं १, आ १, उ ७ । अप्रमत्तानां—गु १ अ, जी १, प ९, प्रा १०,
सं १, ग १ म, इं १ पं, का १ न, यो ९, वे ३, क ४, ज्ञा ४, सं ३ सा छे प, द ३, ले ९ । भ १,
स १ वे, सं १, आ १, उ ७ । उपशमसम्यग्दृष्टीनां—गु ८, जी २ प अ, प ९ ९, प्रा १० ७, सं ४,
२० प ४, इं १ । का १ न । यो १२ म ४ व ४ ओ १ वे २ का १ वे ३ । क ४ । ज्ञा ४ । सं ६ अ दे सा छे
मू य । द ३ । ले ६ । भ १ । स १ उ । सं १ । आ २ । उ ७ । तत्पर्याप्तानां—गु ८ अ दे प्र अ अ अ
गु उ । यो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इं १ । वा १ । यो १० म ४ व ४ ओ वे । वे ३ ।
क ४ । ज्ञा ४ म धु अ म । सं ६ अ दे सा छे मू य । द ३ । ले ६ । भ १ । स १ उ । सं १ । आ १ ।
उ ७ । तत्पर्याप्तानां—गु १ अ । जी १ अ । प ६ अ । प्रा ७ । सं ४ । ग १ दे । इं १ । का १ । यो २
२५ वे मि का । वे १ पु । क ४ । ज्ञा ३ । सं १ अ । द ३ । ले २ क पु । भ १ । स १ उ । सं १ । आ १ ।
भा ३ शु

उ ९ । अप्रमत्तानां—गु १ अ । जी २ । प ९ ९ । प्रा १० ७ । सं ४ । ग ४ । इं १ । का १ । यो १२ म ४ व ४
ओ १ वे २ का १ वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ म धु अ । द ३ । ले ६ । भ १ । स १ उ । सं १ । आ २ । उ ६ ।
६

संज्ञानुवादेऽङ्गः । संज्ञिगङ्गो । गु १२ । जो २ । प । अ । प ६ । द । प्रा १० । उ ।
 सं । ४ ग ४ । इ १ । का १ । यो १५ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ७ । सं ७ । द ३ । ले ६ । भ २ ।
 सं ६ । सं १ । आ २ । उ १० ॥ भा ६

संज्ञिपर्व्याप्तकर्मो । गु १२ । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इ १ । का १ ।
 ५ यो ११ । म ४ । वा ४ । ओ का १ । वे का १ । आ का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ७ । सं ७ । द ३ ।
 ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ । आ १ । उ १० ॥ भा ६

संज्ञिपर्व्याप्तकर्मो । गु ४ । मि । सा । अ । प्र । जो १ । अ । प ६ । अ । प्रा ७ । सं ४ ।
 ग ४ । इ १ । का १ । यो ४ । ओ मि १ । वे मि १ । आ मि १ । का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ५ ।
 कु । कु । म । यु । अ । सं ३ । अ । सा । छे । द ३ । ले २ क तु । भ २ । सं ५ । मि । सा । उ ।
 १० वे । धा । सं १ । आ २ । उ ८ ॥ भा ६

संज्ञिमिष्यादृष्टिगङ्गो । गु १ । मि । जो २ । प । अ । प ६ । द । प्रा १० । उ । सं ४ ।
 ग ४ । इ १ । पं । का १ । यो १३ । बाह्यद्वयपरहित । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि ।
 सं १ । अ । द २ । ले ६ । भ २ । सं १ मि । सं १ । आ २ । उ ५ ॥ भा ६

संज्ञिमिष्यादृष्टिपर्व्याप्तकर्मो गु १ । मि । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इ १ ।
 १५ का १ । यो १० । म ४ । वा ४ । ओ का १ । वे का १ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ । कु । कु । वि ।
 सं १ । अ । द २ । ले ६ । भ २ । सं १ मि । सं १ । आ १ । उ ५ ॥ भा ६

संज्ञानुवादे संज्ञिनां—गु १२ । जी २ प ख । प ६ । द । प्रा १० । उ । सं ४ । ग ४ । इ १ । का १ ।
 यो १५ । वे ३ । क ४ । ज्ञा ७ । सं ७ । द ३ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ । आ २ । उ १० ।
 २० उत्पत्त्यानां—गु १२ । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इ १ । का १ । यो ११ म ४ व ४ ओ वै
 वा । वे ३ । क ४ । ज्ञा ७ । सं ७ । द ३ । ले ६ । भ २ । सं ६ । सं १ । आ १ । उ १० । उत्पत्त्यानां—
 गु ४ मि सा अ प्र । जी १ ख । प ६ ख । प्रा ७ ख । सं ४ । ग ४ । इ १ । का १ । यो ४ ओ मि वै मि
 आ मि वा । वे ३ । क ४ । ज्ञा ५ कु कु म यु अ । सं ३ अ सा छे । द ३ । ले २ क तु । भ २ । सं ५ मि
 सा उ वे धा । सं १ । आ २ । उ ८ । तन्मिष्यादृष्टां—गु १ मि । जी २ प ख । प ६ । द । प्रा १० । उ ।
 सं ४ । ग ४ । इ १ । का १ । यो १३ बाह्यद्वयाभावात् । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ कु कु वि । सं १ अ ।
 २५ द २ । ले ६ । भ २ । सं १ मि । सं १ । आ २ । उ ५ । उत्पत्त्यानां—गु १ मि । जी १ । प ६ ।
 प्रा १० । सं ४ । ग ४ । इ १ । का १ । यो १० म ४ व ४ ओ वै । वे ३ । क ४ । ज्ञा ३ कु कु वि ।

संयसंयतसम्पदृष्टिगन्धो । गु १ । वसं । जी २ । प । अ । प ६ । द । प्रा १० । उ ।
 सं ४ । ग ४ । इ १ । फा १ । यो १३ । आहारद्वयरहित । ये ३ । क ४ । जा ३ । म । धृ । व ।
 सं १ । ब । व ३ । छे ६ । भ १ । र्खं ३ । सं १ । बा २ । उ ६ ॥
 भा ६

भा ६

संजिपर्यामासंयतसम्प्रवृष्टिम्बो । गु १ । अ सं । जो १ । प ६ । प्रा १० । सं ४ । ग ४ ।
 ५ इ १ । काय १ । यो १० । म ४ । वा ४ । ओ का । वै का । वे ३ । क ४ । जा ३ । म । शु । अ ।
 सं १ । अ । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । । आ १ । उ ६ ॥
 भा ६

भा ६

संययपय्याप्तासंयतसम्पयवृष्टिगन्ध । गु १ । असं । जो १ । प ६ । प्रा ७ । सं ४ । ग ४ ।
हं १ । का १ । यो ३ । ओ मि । वै मि । काम्म । वे २ । न पुं । क ४ । जा ३ । म । श्रु । अ ।
सं १ । अ । व ३ । ले २ क शु । भ १ । सं ३ । सं १ । आ २ । उ ६ ॥
भा ६

भा.द.

१० संजिवेशयति प्रभृति क्षीण कपायपम्यंतं मूलोद्यमंगमक्कं ।
 वसंजिगच्छे । गु १ मि । जी १२ । संजिद्वयरहितं ५५ । ५ । ४ । ४ । प्रा ९ । ७ । ८ ।
 ६ । ७ । ५ । ६ । ४ । ४ । ३ । सं ४ । ग १ ति । ३५ । का ६ । मो ४ । औ २ । का १ । अनु-
 भयवाग्योग १ । वे ३ । क ४ । जा २ । कु । कु । सं १ । अ । व २ । ले ६ । भ २ ।

सं १। मि। सं १। वा २। उ ४॥

भा ४ वसुभ । ते

१५ असंतिपयन्निर्कणे। गु१। नि। ओ६। अ। संशयपयन्निरहित ५५। ४। प्रा९। ८।
 ७। ६। ४। सं४। म१। ति। इ५। का६। यो२। ओ१। अनुभयवचन। वे३।
 क४। मा२। कु। कु। सं१। अ। व२। से६। भ२। सं१। नि। सं१।
 असंतिरयं। आ१। अ५। भा३। अशुभ। ते१।

भा ३ । वयुभ । ते १

४२। ले १। न १। स १ मिथं। सं १। वा १। उ ५। वसंयतानां-पु १ व। जी २ प व। प १।

२. १। ग १०। ७। सं ४। ग ४। ई १। का १। यो १३ बाह्यरक्त्याभावात्। वे ३। क ४। आ ३ म
धु ४। सं १। ब। व ३। ले ६। म १। स ३। सं १। वा २। उ ६। वत्सर्गपितानो-गु १। ब। जो १।

११। ग १०। सं ४। न ४। ह १। का १। यो १०। वे १। क ४। जा ३ म थु अ। सं १ अ। ह ३
अ अ। नि १। भ १। स ३ उ वे दा। सं १। आ १। उ ६। तदपराप्तानां—गु १ अ। जो १ अ।

११। प्रा० ब। सं०। म०। ई०। का०। यो०। ओमि वैमि का क वे २ पुं। न। क०। प्रा० म०
 २५। सं०। ब। द०। र०। ब। ब। ले०। क०। म०। र०। छ०। सं०। बा०। उ०। दे०। ग०। वा०। यो०। म०।
 १२३। म०। यो०। ब०।
 या ६

अमंजिना-गुह मि। जो रर सजिपमप्याप्याप्यो नहि। प ५५। ४४। प्रा ९। ७। ८। ९।
३। ५। ९। ४। ४। ३। सं ४। प १ ति। ई ५। का ६। यो ४। जो २। का १ अनुमयपन।
वे ३। ४४। मर कुकु। मं १ म। द २ ले ६। म १। स १ मि। सं १। वा २। उ ४।
भा ४ म ३ गु १

आहारिवेशसंयतर्गे । गु १ । वे ३ । जी १ । प ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग २ । ति ।
म । इ १ । का १ । यो ९ । म ४ । वा ४ । ओ १ । का १ । वे ३ । क ४ । जा ३ । म । थु । अ ।
सं १ । वे ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ६ ॥

भा ३

आहारिप्रमत्तसंयतर्गे । गु १ । प्र । जी २ प । अ । प ६ । ६ । प्रा १० । ७ । सं ४ । ग १
म । इ १ । का १ । यो ११ । म ४ । वा ४ । ओ १ । आ २ । वे ३ । क ४ । जा ४ । म । थु । अ ।
म । सं ३ । सा । छे । प । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ । सं १ । आ १ । उ ७ ॥

भा ३

आहार्यप्रमत्तसंयतर्गे । गु १ । अ प्र । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ । ग १ । म । इ १ ।
का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ४ । सं ३ । सा । छे । प । व ३ । ले ६ । भ १ । सं ३ ।
सं १ । आ १ । उ ७ ॥

भा ३

आहार्यपूर्वकरणे । गु १ । अ पू । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं ३ । ग १ म । इ १ ।
का १ । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ४ । सं २ । सा । छे । व ३ । ले ६ । भ १ । सं २ ।
उ । सा । सं १ । आ १ । उ ७ ॥

भा १

आहारिप्रयमभागानिवृत्तिगण्ये । गु १ । अ नि । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं २ । ने । प ॥
ग १ । म । इ १ । प । का १ प्र । यो ९ । वे ३ । क ४ । जा ४ । सं २ । सा । छे । व ३ ।
ले ६ । भ १ । सं २ । उ । सा । सं १ । आ १ । उ ७ ॥

भा १

दोषघनुरनिवृत्तिकरण्ये ओषभंगमबहु ॥

आहारिमुष्मसांपरायसंयतर्गे । गु १ । सू । जी १ । प ६ । प्रा १० । सं १ । परिग्रह ।
ग १ । म । इ १ । प । का १ प्र । यो ९ । वे ० । क १ । सूक्ष्मलोभ । जा ४ । सं १ । सू । व ३ ।

दोषप्रदाना—गु १, जी १, प ९, प्रा १०, सं ४, ग २ ति म, इ १, का १, यो ९, वे ३, क ४, जा ३,
सं १ दे, व ३, ले ६, भ १, व ३ उ वे छा, सं १, आ १, उ ६ । प्रमत्तानां—गु १ प्र, जी २ प अ, प ६,

९, प्रा १०, उ, सं ४, ग १ म, इ १, का १, यो ११ म ४ व ४ ओ १ आ २, वे ३, क ४, जा ४ म थु
अ म, सं ३ सा छे प, व ३, ले ६, भ १, व ३, सं १, आ १, उ ७ । अप्रमत्तानां—गु १ अ, जी १, प ९,

भा ३

प्रा १०, सं ३, ग १ म, इ १, का १, यो ९, वे ३, क ४, जा ४, सं ३ सा छे प, व ३, ले ६, म १, व ३,
सं १, आ १, उ ७ । अतुर्द्विराणां—गु १ अ, जी १, प ९, प्रा १०, सं ३, ग १ म, इ १, का १, यो ९,

वे ३, क ४, जा ४, व २ सा छे, व ३, ले ६, भ १, व २ उ छा, सं १, आ १, उ ७ । अनिवृत्तीनां
प्रमत्तानां—गु १ अ, जी १, प ९, प्रा १०, सं २ वे प, ग १ म, इ १, का १, यो ९, वे ३, क ४, जा ४,

व ३ सा छे, व ३, ले ६, भ १, व २ उ छा, सं १, आ १, उ ७ । दोषघनुरनिवृत्तिकरण्ये, मुदमसांपरायानां—
गु १ प्र, यो ९, प ९, प्रा १०, सं १ प, ग १, इ १, का १, यो ९ वे ०, क १, मुदमलोभ, जा ४, सं १

अनाहारकमिध्यादृष्टिगच्छे। गु १। मि। जी ७। प ६। ५। ४। प्रा ७। ७। ६। ५।
४। ३। सं ४। ग ४। इं ५। का ६। यो १। कर्मर्ण। वे ३। क ४। ज्ञा २। कु। कु। सं १।
अ। व २। ले १ शु। भ २। सं १। मि। सं २। आ १। अनाहार उ ४॥
भा ६

अनाहारिसासादनसम्यग्दृष्टिगच्छे। गु १। सासा। जी १। अ। प ६। प्रा ७। सं ४।
५। ग ३। ति। म। वे। इं १। पं। का १ त्र। यो १। कर्मर्णकाय। वे ३। क ४। ज्ञा २। कु।
कु। सं १। अ। व २। ले १ शु। भ १। सं १। सासा। सं १। आ १। अनाहार। उ ४॥
भा ६

अनाहारि असंयतसम्यग्दृष्टिगच्छे। गु १। असं। जी १। अ। प ६। अ। प्रा ७। अ।
सं ४। ग ४। इं १। पं। का १ त्र। यो १। कर्मर्णकाय। वे २। रं। पुं। क ४। ज्ञा ३।
म। शु। अ। सं १। अ। व ३। ले १ शु। भ १। सं ३। सं १। आ १। अनाहार। उ ६॥
भा ६

१० अपर्प्याप्तकत्वदिदमुं प्रमत्तसंयतंगे। गु १। जी १। प ६। प्रा ७। सं ४। ग १ म।
इं १। पं। का १ त्र। यो १। आहारमिधमप्युदरिवनौदारिकापेभ्येयिनाहारियक्कुं। वे १। पुं।
क ४। ज्ञा ३। म। शु। अ। सं २। सा। छे। व ३। ले १ क। भ १। सं ३। सं १।
आ १। उ ६॥
भा ३

अनाहारिसयोगिकेवलिंगच्छे। गु १ सयोग। जी १। अ। प ६। अ प्रा २। कायबल।
११ आयुष्य। सं ०। ग १। म। इं १। पं। का १ त्र। यो १। कर्मर्ण। वे ०। क ०। ज्ञा १ के।
सं १। यया। व १ के। ले १। भ १। सं १। सा। सं ०। आ १। अनाहार। उ २॥
भा १

ले ६, भ २, स ५ मि सा उ वे सा, सं २, आ १, उ १०। तन्मिध्यादृशां—गु १ मि, जी ७, प ६ ५ ४,
भा ६
प्रा ७ ७ ६ ५ ४ ३। सं ४। ग ४। इं ५। का ६। यो १ का। वे ३। क ४। ज्ञा २ कु कु। सं १ अ।
व २। ले १ गु। भ २। स १ मि। सं २। आ १ अ। उ ४। सासादनानां—गु १ सा। जी १ अ।
भा ६

२० प ६। प्रा ७। सं ४। ग ३ ति म वे। इं १ पं। का १ त्र। यो १ का। वे ३। क ४। ज्ञा २ कु कु।
सं १ अ। व २। ले १ गु। भ १। स १ सा। सं १ अ। आ १ अ। उ ४। असंयतानां—गु १ अ।
भा ६

जी १ अ। प ६ अ। प्रा ७ अ। सं ४। ग ४। इं १ पं। का १ त्र। यो १ का। वे २ पुं। पं। क ४।
ज्ञा ३ म यु अ। स १। व ३। ले १ गु। भ १। स ३। सं १। आ १ अ। उ ६। प्रमत्तानां—
भा ६

गु १ द। जी १। प ६। प्रा ७। सं ४। ग १ म। इं १। का १। यो १ यामि तेन ओदारिकापेभ्यो-
२१ नाहार उ १ पु। क ४। ज्ञा ३ म यु अ। सं २ सा छे। व ३। ले १ क। भ १। स २। सं १।
भा ३

आ १। उ ६। अनोमिकेवलिनां—गु १ स। जी १ अ। प ६ अ। प्रा २। कायबलं। आयुष्यं। सं ०।
ग १ म। इं १ पं। का १ त्र। यो १ का। वे ०। क ०। ज्ञा १ के। सं १ य। व १ के। के।
जा १

प्रशस्ति

१३११ श्रीगुरुप्राज्ञाश्रम मठे १२०६ वर्षे क्रोधिनाम संवत्सरे फाल्गुणमासे सुक्लपक्षे शिविरती

उत्तराश्विने श्रद्धां तद्विष्णो तिस्रो बुधशरे सत्तावीसघटिका उपरातिह सप्तम्या तिस्रो अनु-

राधनसरे तीस घटिका उपरातिह ज्येष्ठा नक्षत्रे व्याघातनामयोगे बहु घटिका

उत्तरातिह हर्षनामयोगे बरहरणे सत्तावीस घटिका यस्मिन् पंचांग-

विट्ठि तत्र मोठेव मुनस्थाने धोपंच परमेष्ठिरिष्यधेत्यालपस्थिते,

श्रीमच्छंभुवर्ण विरचितमप्य गोम्मटसारकर्मार्क-

वृत्ति जीवतच्चप्रदीपिकेयोलु जीवकांडं

संरुणंमादुद ।

मण्डं भूयान् ॥

धो धो धो ॥

	पृष्ठ	गाथा		पृष्ठ	गाथा
आवलि असंखभागा	४१७	६५०	ई		
आवलि असंखभागा	४२२	६५६	ईहणकरणेण जदा	३०९	५१७
आवलि असंखभागे	२१३	३४७			
आवलि असंखभागो	४००	६३८	उ		
आवलि असंखभागं	४५८	६७५	उक्कस्सट्ठिदि चरमे	२५०	३८५
आवलि असंखभागं	३८३	६२७	उक्कस्ससंखमेतं	३३१	५५७
आवलि असंखसमया	५७४	८०९	उत्तम अंगमिह हवे	२३७	३७३
आवलि असंखसंखे	२१२	३४६	उदयावणसरोरो	६६४	८९५
आवलिपुपुत्तं पुण	४०५	६४२	उदये दु अपुणस्स य	१२२	२५६
आपासमा हु भव अ०	२५१	३८६	उदये दु वणप्फदिक	१८५	३१६
आसन्नं संवर इब्बं	६४४	८८२	उप्पा[य] पुव्वगोणिय	३४५	५७६
आहार कायजोगा	२७०	४६०	उवजोगो वण्णवऊ	५६५	८०४
आहारदि अणेण गुणी	२३९	३७४	उवयरणं दंसणेण य	१३८	२७१
आहारदि सरोराणं	६६५	८९५	उववादगम्मजेमु य	९२	१६०
आहारदंसणेण य	१३५	२६९	उववादमारभावि य	१९९	३३१
आहार मारणावि य	६६९	८९७	उववाशा सुरभिरया	९०	१६०
आहार य उत्तरं	२४०	३७५	उववादे अन्वितं	८५	१५७
आहारवग्गणादो	६०७	८५४	उववादे पढमपदं	५४९	७७६
आहारसोरोदि य	११९	२५१	उववादे सोदुमणं	८६	१५८
आहारस्सुदणं य	२३५	३७२	उव्वकं चउरंके	३२५	५३०
आहारो गुरुणे			उवसममुत्तुमाहारे	१४३	२७१
आहारो पग्गत्ते	६८३	९०८	उवसंतं सीणमोहो	१०	४०
			उवसंतं सीणे वा	४७५	६८६
			उवहीणं तेतोसं	५५२	७७९
अ					
अगिदुगवंधेवारं	३५९	५९८	ए		
अगिरुखे वत्तीसं	२७८	४९८	एदंदि य पट्टदोणं	४८८	६९५
अग्गिअत्ताविच्छेदं	४२०	६५३	एदंदि यस्स पुसुणं	१६७	२९७
अग्गिअत्ताविच्छेदं	७९	१५१	एकमिह कालसमये	५६	११९
अग्गिअत्ताविच्छेदं	४४	७५	एवकं खलु अट्ठकं	३२९	५५३
अग्गिअत्ताविच्छेदं	४३	७४	एवकपउरकं चउवी	३१४	५२१
अग्गिअत्ताविच्छेदं	४७	७९	एवकत्तु च य य छस्स०	३५४	५८३
अहं अग्गि अग्गिअत्ताविच्छेदं	१३४	२६९	एवकदरगदिनिक्खय	३३८	५७२
अहं अग्गिअत्ताविच्छेदं	१३२	२६७	एवकारसं जोगाणं	७२३	९४४
अहं अग्गिअत्ताविच्छेदं	५	३६	एवकं समयवत्तं	२५४	४०६
अहं अग्गिअत्ताविच्छेदं	४८९	६६८	एगनिगोदयतोरे	१९६	३२६
अहं अग्गिअत्ताविच्छेदं	६७५	९०१	एदमिह गुमट्ठणे	५१	११२

	गाथा	शृङ्ख		गाथा	शृङ्ख
कंदस्स व मूलस्स व	१८९	३२०	चदुगदि भब्बो सण्णो	६५२	८८६
ख			चदुगदिमदिमुदवोहा	४६१	६७७
खयउवसमियविषोही	६५१	८८५	चरमघरासाणहरा	६३८	८७६
खयगे य खोणमोहे	६७	१२९	चरिमव्वकेणवहिद	३३३	५६६
खोणे वंसणमोहे	६४६	८८३	चागी भद्दो चोवखो	५१६	७१०
खेत्तादो अमुहविया	५३८	७३०	चितियमचितियं वा	४३८	६६४
खंपा धर्यखलोमा	१९४	३२५	चितियमाचितियं वा	४४९	६७०
खंधं सयलसमहं	६०४	८४७	चोद्दस मग्गण संजुद	३४०	५७३
ग			चण्णो ण मुचद्द वेरं	५०९	७०७
गहं हंदिसेमु काये	१४२	२७५	चंदरवि जम्बुदीव य	३६१	६००
गहं उदयअपज्जाया	१४६	२७८	छ		
गच्छताम तावकालिय	४१८	६५१	छट्टाणाणं आदो	३२८	५५३
गतम मनमं मोरम	३६३	६०३	छट्ठोत्ति पदम सण्णा	७०२	९१९
गदिठानोग्गहं किरिया	५६६	८०५	छद्भाक्कुणं	५८१	८१३
गदिठानोभाहं किरिया	६०५	८४८	छद्भ्वेसु य नामं	५६२	८०२
गम्भजजीवाणं पुण	८७	१५८	छणपणीलक्खोदसु	४९५	६९९
गम्भज पुहत्ति सण्णो	२८०	४७०	छयं व णवविहाणं	५६१	८०१
गाउय पुपत्तमवरं	४५५	६७३	छयं चावियवीसं	११६	२०५
गुणजीवठानरुद्धिया	७३२	१०७३	छस्स य जोयणकविह्वि	१५९	२८५
गुणजीवा पग्गत्तो	२	३३	छस्सयपण्णासाहं	३६६	६०४
गुणजीवा पग्गत्तो	७२५	९४६	छादयदि सयं दोहे	२७४	४६५
गुणजीवा पग्गत्तो	६७७	९०४	छेतूण य परियायं	४७१	६८४
गुणरावद्धो छट्ठा	३७२	६१९	ज		
गूडमिरसंघि पम्भं	१८७	३१९	जणवद सम्मदिट्ठवणा	२२२	३५९
गोमरधेरं पणमिय	७०६	९३५	जत्थेऽहं सरद्द जीवो	१९३	३२२
घ			जम्भं खलु सम्मुच्छण	८३	१५५
पगं अंगुल पडवपदं	१६१	२९०	जहं कंथं मग्गिययं	२०३	३३५
घ			जहंसारसंभो पुण	४६८	६८३
अउपइउक्कस्सव	३३९	५७३	जहं पुण्णापुग्गाइ	११८	२५१
अउरव चोद्दस अउरो	६७८	९०४	अहं भारवद्दो पुरिसो	२०२	३३५
अउरववावउररइ	६९१	९१२	अहं उउरिय भावा	४८	८०
अउरवट्टरइं विट्ठिय	३५३	५८२	जाइवरामरमया	१५२	२८२
अस्सुय अं उरगइ	४८४	६९२	जाईं अविनाभावो	१८१	३११
अस्सु वीरं वारं	१७१	३००	जानइ कग्गाकग्गं	५१५	७०९
अस्सुविं पेट्ठाई	५५३	८८६	जामइ त्रिडाकविम्य	२९९	५०५

	गाथा	शृङ्ख		गाथा	शृङ्ख
फोहंदिपति सण्या	४४४	६६८	तिरिय गदोए चोदुस	७३०	९१८
फोहंदिपेसु बिरदो	२९	५९	तिरिय चउक्काणोवे	७१३	९३८
फोहंमुरालसंचं	३७७	६२२	तिरियंति कुडिलभावं	१४८	२०९
त			तिविपचपुष्पममाणं	१८०	३०८
तज्जोगो सामण्यं	२६३	४५०	तिव्वतमा तिव्वतरा	५००	७०१
तत्तां उवरि उवसम	१४	४५	तिसयं भणंति केहं	६२६	८९४
तत्तो कम्मइयस्सिवि	३९७	६३७	तिमु तेरं दस मिसे	७०४	९२५
तत्तो ताणुताणं	६३९	८७६	तीसं वासो जम्मे	४७३	६८५
तत्तो लातर कम्म०	४३६	६६३	तेउतियाणं एवं	५५४	७८०
तत्तो संलेखगुणो	६४०	८७७	तेउदु अवंसज्जा	५४२	७३३
तत्तो एगारगव	१६२	२९०	तेउस्स य सट्ठाणे	५४६	७६२
तदियकसापुदयेण य	४६९	६८३	तेऊ तेऊ तेऊ	५३५	७२६
तदियस्सो अंतगदो	३९	६८	तेऊ यम्मे मुक्के	५०३	७०३
तद्देहमंगुलस्साम	१८४	३१४	तेजा सरीरजेदुठं	२५८	४११
तल्लोत्तममुगविमलं	१५८	२८६	तेसोस बेंजणाइ	३५२	५८१
तत्त्वद्दोए चरिमो	१०५	१८४	तेरस कोदो देसे	६४२	८८१
तत्तिविद्यं कप्पाणम	४५४	६७३	तेरिच्छिय लद्धिय य	७१४	९३९
तत्तचदुनुमानमज्जे	७१	१४३	तेवि विषेणहिया	२१४	३४९
तत्तदोवाचं धोवे	७२२	९४३	तेवि य सगाथेहि	३१८	५२५
तत्तराभिपुडविजाघो	२०६	३४०	तो वासय अज्जयणे	३५७	५९५
तत्तदीगो संसारी	१७६	३०४	तत्तुडसलागाहिद	२६८	४९८
तत्तमयवडवमण	२४८	३८३	थ		
तत्तुवरि इगिपदेसे	१०४	१८३	थावरकायप्पहुदो	६८५	९०९
तत्ति तेसदेवणारय	२६९	४५९	थावरकायप्पहुदो	६८६	९०९
तत्ति सभे सुउसला	२६७	४५६	थावरकायप्पहुदो	६८७	९१०
ताव समदवड्डा	२४६	३८१	थावरकायप्पहुदो	६९२	९१३
तात्ति परिणःकट्टिय	५४	११८	थावरकायप्पहुदो	६९४	९१४
तिग्गुता कल्लुगा वा	१६३	२९१	थावरकायप्पहुदो	६९८	९१७
तिग्गुकारि तिग्गुगाव	२७६	४६६	थावरसखणितोळिय	१७५	३०३
तिग्गुमय बोदवाचं	१९०	२८९	थोवा तिमु संखमुवा	२८१	४००
तिग्गुमयवदुंतिविदुंति	१७०	२९९	व		
तिग्गुमय वत्तोवा	१२२	२५६			
तिग्गु दोहं दोहं	१३४	७२६	दम्भं धेतं काळं	४५०	९७०
तिग्गुमयविदुंति	४४१	६६७	दम्भं धेतं काळं	३७३	६२२
तिग्गुमयवदुंति	१३५	८९४	दम्भं टाळमकाळं	६२०	८६१
तिग्गुमय वत्तोवा	४३५	६९८	दस चोउसट्ठवदुंति	३४४	५७५

विवरण	प्रमाण	विवरण	प्रमाण
१. १९००-०१	१००	२. १९०१-०२	१००
३. १९०२-०३	१००	४. १९०३-०४	१००
५. १९०४-०५	१००	६. १९०५-०६	१००
७. १९०६-०७	१००	८. १९०७-०८	१००
९. १९०८-०९	१००	१०. १९०९-१०	१००
११. १९१०-११	१००	१२. १९११-१२	१००
१३. १९१२-१३	१००	१४. १९१३-१४	१००
१५. १९१४-१५	१००	१६. १९१५-१६	१००
१७. १९१६-१७	१००	१८. १९१७-१८	१००
१९. १९१८-१९	१००	२०. १९१९-२०	१००
२१. १९२०-२१	१००	२२. १९२१-२२	१००
२३. १९२२-२३	१००	२४. १९२३-२४	१००
२५. १९२४-२५	१००	२६. १९२५-२६	१००
२७. १९२६-२७	१००	२८. १९२७-२८	१००
२९. १९२८-२९	१००	३०. १९२९-३०	१००
३१. १९३०-३१	१००	३२. १९३१-३२	१००
३३. १९३२-३३	१००	३४. १९३३-३४	१००
३५. १९३४-३५	१००	३६. १९३५-३६	१००
३७. १९३६-३७	१००	३८. १९३७-३८	१००
३९. १९३८-३९	१००	४०. १९३९-४०	१००
४१. १९४०-४१	१००	४२. १९४१-४२	१००
४३. १९४२-४३	१००	४४. १९४३-४४	१००
४५. १९४४-४५	१००	४६. १९४५-४६	१००
४७. १९४६-४७	१००	४८. १९४७-४८	१००
४९. १९४८-४९	१००	५०. १९४९-५०	१००
५१. १९५०-५१	१००	५२. १९५१-५२	१००
५३. १९५२-५३	१००	५४. १९५३-५४	१००
५५. १९५४-५५	१००	५६. १९५५-५६	१००
५७. १९५६-५७	१००	५८. १९५७-५८	१००
५९. १९५८-५९	१००	६०. १९५९-६०	१००
६१. १९६०-६१	१००	६२. १९६१-६२	१००
६३. १९६२-६३	१००	६४. १९६३-६४	१००
६५. १९६४-६५	१००	६६. १९६५-६६	१००
६७. १९६६-६७	१००	६८. १९६७-६८	१००
६९. १९६८-६९	१००	७०. १९६९-७०	१००
७१. १९७०-७१	१००	७२. १९७१-७२	१००
७३. १९७२-७३	१००	७४. १९७३-७४	१००
७५. १९७४-७५	१००	७६. १९७५-७६	१००
७७. १९७६-७७	१००	७८. १९७७-७८	१००
७९. १९७८-७९	१००	८०. १९७९-८०	१००
८१. १९८०-८१	१००	८२. १९८१-८२	१००
८३. १९८२-८३	१००	८४. १९८३-८४	१००
८५. १९८४-८५	१००	८६. १९८५-८६	१००
८७. १९८६-८७	१००	८८. १९८७-८८	१००
८९. १९८८-८९	१००	९०. १९८९-९०	१००
९१. १९९०-९१	१००	९२. १९९१-९२	१००
९३. १९९२-९३	१००	९४. १९९३-९४	१००
९५. १९९४-९५	१००	९६. १९९५-९६	१००
९७. १९९६-९७	१००	९८. १९९७-९८	१००
९९. १९९८-९९	१००	१००. १९९९-२०००	१००

फायरसंग्रह
 फायरसंग्रह
 बंधो समयबद्ध
 बंधो समयबद्ध

गथा	श्रु	गथा	श्रु		
वयणेहि वि हेद्वहि	६४७	८८४	सग सग असंखभागे	२०७	३४१
वरकाओदंसमुदा	५२६	७२१	सग सम खेपत्तदेसस	४३४	६६२
वयहारो पुण कालो	५७७	८११	सट्ठाणसमुग्धादे	५४३	७३५
वयहारो पुण कालो	५९०	८१८	सण्णाणसिगं अविरद	६८८	९११
वयहारो पुण तिविहो	५७८	८११	सण्णाणरासि पंच य	४६४	६७८
वयहारो य वियप्पो	५७२	८०८	सण्णिस्स वारसोदे	१६९	२९९
वहुविह बहुप्पयारा	४८६	६९२	सण्णो ओपे मिच्छे	७२०	९४३
वापणनरनोनानं	३६०	५९९	सण्णो सण्णिप्पहुडि	६९७	९१६
वास पुयसे खइया	६५७	८८८	सत्तण्हं पुडवीणं	७१२	९३८
विडलमदी वि य छज्जा	४४०	६६६	सत्तण्हं जवसमदो	२६	५७
विज्झा सहा कसामा	३४	६२	सत्तमसिदिमि कोसं	४२४	६५७
विग्गहगदिमावण्णा	६६६	८९६	सत्तदिणा छम्मासा	१४४	२७६
वित्ति वचपुण्णजहुणं	९६	१६६	सत्तादी अट्ठंता	६३३	८९९
विवरीयमोहिणाणं	३०५	५११	सदसियसंखो मवक्कहि	६९	१४०
विविहुणुणइक्कित्तुत्तं	२३२	३७०	सट्ठणासट्ठणं	६५५	८८७
वित्तजंतकूड पंजर	३०३	५०९	सम्भावमणो सच्चो	२१८	३५६
वित्तयाणं वित्तहंणं	३०८	५१५	समयत्तय संखावलि	२६५	४५३
वीरमूहकमलणिभय	७२८	९४९	समयो हु वट्टमाणो	५७९	८१२
पीरियजुदमदिलउवस	१३१	२६६	सम्मत्तरयणपञ्चय	२०	५१
वीसं वीसं पाटुड	३४३	५७५	सम्मत्तमिच्छपरिणा	२४	५३
वेगुब्बं परवत्ते	६८२	९०७	सम्मत्तुत्ततोए	६६	१२९
वेगुब्बिय वरसंभं	२५७	४१०	सम्मत्तादेसपाथी	२५	५४
वेगुब्बियउत्तरथं	२३४	३७१	सम्मत्तादेससयल	२८३	४७४
वेगुब्बिय आहारय	२४२	३७६	सम्माइट्ठो जीवो	२७	५८
वेज्जय अत्थ अयमाहु	३०७	५१३	सम्मामिच्छुदयेण य	२१	५१
वेगुबमूलोरकभय	२८६	४७८	सम्भमरुवी रत्नं	५९२	८२१
वेदस्सुदीणाए	२७२	४६४	सम्भसमासो णियमा	३३०	५५५
वेदासाहारोत्ति य	७२४	९४४	सम्भसमासेणवहिह	२९७	५००
वेयणट्ठयायवेगु	६६७	८९६	सम्भगुराणं ओपे	७१७	९४१
वेत्तइट्ठण्णंगुल	५४१	७३३	सम्भावहिस्स एवको	४१५	६४८
			सम्भेज्जि पुक्कभंवा	३६	६४
			सम्भेज्जि मुदुमाणं	४९८	७००
सहोमाणा पडमं	४३०	६६०	सम्भोहितिय कमथो	४२३	६५७
सहो वंदुरीव	२२४	३६१	सम्भं च सोयनालि	४३२	६६०
सवज्जुगुत्तिह तनस्स य	७७	१४९	सम्भं अंग संभर	४४२	६६७
सव मय भवहारोहि	६४१	८७९	मायारो उवजोमो	७	३८
सवमाणोहि विवत्ते	४१	७१	मायाइय चउवीम	३६७	६१२

स

गो० जीवकाण्डटीकागतपद्यानुक्रमणी

अ

अद्वयद्वैत रोमं [ति. प. १११२०]	२२४
अद्वैतमिदं गद्वैतं	७१२
अद्वैतमुच्छिन्नगिगमे	१५३
अद्वैतस्य गिगमे गरीरे	१९२
अद्वैतस्य महाभाषा [ति. प. ११११]	२१
अद्वैतस्य टागेयु	२३५
अद्वैतं गुणद्वैतं [ति. प. १११०४]	२३२
अद्वैतस्य धनलघुस्य	८०९
अनुभाषणपदेद्वैतं [ति. प. १११२]	१२
अण्वैतं अण्वैतं [ति. प. ११०५]	२३
अद्वैतपक्षलच्छेदो [ति. प. १११३१]	२४१
अद्वैतस्य दम्भमलं [ति. प. १११३]	१२
अभिमतफलसिद्धे	२५
अद्वैतस्य सिद्धांशं [ति. प. १११९]	१३
अद्वैतं मज्जिम उक्तं [ति. प. १११२२]	२३५
अद्वैतानामनन्ताद्यो	५६९
अद्वैता भेदगणं [ति. प. १११४]	१२
अद्वैता मंगं सौख्यं [ति. प. १११८]	१३

आ

आद्वैतानलसानुपहत	
आदिम संप्रणयजुदो [ति. प. ११५७]	२५९
आद्वैतारहितं द्रव्यं	२१
आप्तो प्रवे ध्रुवे [सो. उ. २३१]	८०४
आयुर्वेदमुद्भूतः	८०२

इ

इतिवचनदुग्धमुष्णं	
इतिवचने इतिवचो	२८०
इय मूलतत्त्वकृत्ता [ति. प. ११८०]	१५३
इय सखा पचवत्सं [ति. प. ११३८]	२४

उ

उच्छेदं अनुग्रेण [ति. प. ११११०]	२३१
उत्तम भोगसिद्धौ [ति. प. ११११९]	२३४
उत्तमपञ्चावसर्पण	७५९
उत्तमजि जो रायो [ति. सा. ७३]	२४३

ए

एकस्वरूपवर्णनं [ति. प. ११९७]	२३१
एकस्वरूपं रोमं [ति. प. १११२५]	२३५
एकस्वरूपवर्णनौ [ति. प. ११९८]	२२
एदस्व उदाहरणं [ति. प. ११२२]	१४
एदस्मि भाषाणं [ति. प. ११६२]	२२
एद्वैतं अण्वैतं [ति. प. ११९४]	२२
एद्वैतं पक्षानं [ति. प. १११३०]	२३९
एवं अण्वैतं [ति. प. ११२७]	१५

ओ

ओष्ठान्नासन्ना जे [ति. प. १११०३]	२३३
------------------------------------	-----

औ

औपस्थेयिकवै-	८१४
--------------	-----

अं

अंताह मज्जहोणं [ति. प. ११९८]	२३१
अंताह सूहजोगं [ति. सा. ३१५]	२४०

क

कः प्रजापतिर्द्विदष्टः	३०
कणपथराशरघोरं [ति. प. ११५१]	१९
कतारो दुविषयो [ति. प. ११५५]	२०
कम्ममहोए वाळं [ति. प. १११०६]	२३२
करितुरगरहाहिवर्हं [ति. प. ११४३]	१८
केवलप्राणविवायर [ति. प. ११३३]	१६
कणिकं निगुणं चैव	१४०

पल्लं समुद्द उदमं

पार्वं मलेति भण्णद [ति. प. १।१७]

पुण्णं पूढ पविता [ति. प. १।८]

पुण्णं वेदंता पुरिसा [सिद्ध ६]

पुल्लिस्ताहरियेहि [ति. प. १।१६]

पुल्लिस्ताहरियेहि उतो [ति. प. १।१८]

पूरंति गलंति जरो [ति. प. १।१९]

पूरपरिविहङ्गादे

प्रदेयप्रचयात् काया

प्रथमवयसि पीतं

य

वाहिरमूर्ध्वगं [ति. सा. ३।१६]

वाहिरमूर्ध्वबल्य [ति. सा. ३।१८]

वे किक्कूहि दंढो

भ

भज्जमिदहुगुणु

भज्जस्सद्धच्छेदा [ति. सा. १०६]

भब्बाण जेण एस

भवणतियाण बिहारो

भावणवैतर जोहसिय [ति. प. १।१३]

भावसुदपज्जण [ति. प. १।७९]

भावियसिद्धंताणं

भिगारकलसवप्पण [ति. प. १।११२]

म

मंगलणिमित्तहेतु

मंगल पज्जाएहि [ति. प. १।२८]

मलविद्धमणिम्यक्ति [लघीय. ५७ श्लो.]

महम्मङ्गलियाण [ति. प. १।४१]

महम्मङ्गलीयणामो [ति. प. १।४७]

महवीरभासिदत्तो [ति. प. १।७६]

मूतिमरुत्त पदायंयु

मेहव्व णिपकं

मोहो खाइयसम्म

य

यया च पितृमुद्धया

यदीन्द्रस्यात्मनो लिट्ति

यद्यपि विमलो योगी

२३०

१३

११

४६३

१३

१५

२३१

२२

८०२

२६

७६४

७६५

२३४

२४७

२४९

२०

७७४

२२

२४

३२

२३३

११

१५

२९६

१८

१९

२४

८२३

३२

१३८

३१

२९६

११

२

रुद्धा गगा सारग

रोमहृदं छाडेग [ति. गा. १०४]

८

सगगुद्धि मुमुग्धो [ति. गा. १०३]

सोवासागण तद्वा [ति. प. १।७७]

४

समागुत्तरिमागे [ति. गा. ७४]

सण्णरगंभमागे [ति. प. १।१००]

सररयणमउत्तपारो [ति. प. १।४२]

सर्गमन्धरगणयोः

सवद्धारोमपाणि [ति. प. १।१२६]

सवद्धारुत्तरा

सामस्य पद्ममागे [ति. प. १।६९]

सिष्णं नासयितुं

सिष्णोपाः प्रत्यं यान्ति

सिउले मोदममोत्तं [ति. प. १।७८]

सिरलिउत्तमानरासि [ति. सा. १०७] २३७, २४३,

२४५, २४६

सिरिएण तद्वा पाइअ [ति. प. १।७२]

सिरलिदरासिच्छेरा [ति. सा. १०८]

सिरलिदरासोदो पुण [ति. सा. ११०, १११]

२४०

३५२, ३५४, ७७०

सिहिल्लेहि अणत्तं [ति. प. १।५३]

सिहिल्ल वियप्पं दम्भं [ति. प. १।३२]

सिस्साणं लोगाण [ति. प. १।२२]

स्येकपदोत्तरपातः

५४१

३

समबोधवृत्ततपसां [आत्मानु० १५]

स्येयोमागंस्थ ससिद्धिः [आसप० २]

३०

२५

४

सद्देन युगपद् योगात्

८०४

५

सक्तपञ्चवक्त्रपरंवर [ति. प. १।३६]

सद्दो सत्तएहि [ति. सा. १४०]

सत्तणवसुण्णपंच य

१७

७५७

७६३

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००	अनुत्तरोपपादिकदश	५९६	अवाय	५१७
अक्षर (के भेद)	५६८	अनुपक्रमकाल	४५६	अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अक्षर समास	५७०	अनुपक्रमायुक्त	७१३	अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अक्षरात्मक श्रु.	५२४	अनुभागकाण्डकोटकरण	१०४	अविरतसम्पन्नुष्टि ४०, ४३, ५९	
अक्षिप्र	५१९	अनुभयवचन	३६२, ३६३	अष्टाङ्क ५३१, ५५३, ५५५, ५५७	
अगस्त्य	६००	अनुभागवन्ध्याव्यवसाय स्थान		असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
अगाड (दोष)	५६		२२८	असंख्यात भागवृद्धि	५३१
अङ्ग बाह्य	६१२	अनुमान	५२०	असंख्यातागुणवर्गणा	८२३
अद्यायणीयपूर्व	६०५	अनुयोगयु.	५७३	असंज्ञी	८९२, ९३२
अवधारण	६९२	अन्तर्कृद्दर्शाग	५९६	असंयत	५७
अवित्त (योनि)	१५६	अन्तर्गृह्य	८१०	अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५
अज्ञान मिथ्यात्व	४७	अन्योन्याम्यस्तरावि	१२२		
अज्ञानवाद	६००	अपकर्ष	७११, ७१२	आ	
अङ्गज	१५७	अपगतवेद	४६६	आकारयोनि	१५४
अणु वर्गणा	८२३	अपयतिरु	२५१	आकाशगता	६०२
अणुप्रवृत्तकरण ८०, ८१, १०४		अपूर्वकरण ४१, ११२, ११३,		आक्षेपणीकया	५९७
भङ्गापत्त्योपम	२३९		११८	आचाराग	५९२
अष्टम	५१९	अपूर्वस्पर्धक १२१, १२२, १२५		आत्मप्रवाद	६०८
अन्तर्गुणवृद्धि	५३१	अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७	आत्मागुल	२३२
अन्तर्भागवृद्धि	५३१	अप्रत्यास्थानावरण	४७३	आदेश	३४, ३५
अनधरात्मक श्रु.	५२३	अप्रमत्त विरत } ४१, ४४, ७८		आभीत	५१०
अनन्तानुबन्धी	५७, ४७४	„ संयत }		आयुप्राण	२६६
अनन्तानुबन्धना	८२४	अप्रतिपाति	६२१	आश्ली	२१६, ८०९
अननुयायी	६१९	अभिनिरोधिक (यतिज्ञान)	५१२	आश्रयण	६००
अनन्तस्वित्त	६२०	अयोपकेवलित्विन	४१, १२८	आमृत्य	५१०
अनाहार जगोप	१०१	अयंपद	५७०	आस्तित्व	८०२
अनाहारक	८९६	अर्थादर श्रु.	५६६, ५६८	आहारकाययोग	३७४
अनिर्णीतकरण ४१, ११९, १२०		अर्थादरद्व	५१४	आहारपर्याप्ति	२५२
अनिर्णय	५१९	अर्थादरद्व	५१५	आहारक मिथ्याकाययोग	३७५
अनुकृति	८४	अर्थादरज्ञान	६१७	आहार संज्ञा	२६९
अनुपद	५१९	अर्थादरज्ञान	२३१	आहारक	८९५
अनुपानो	६१९	अर्थादरज्ञान	६१२		
		अर्थादरज्ञान	६२०	इ	
				इन्द्र (दे. गुरु)	४७

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००	अनुत्तरोपपादिकदश	५९६	अप्याय	५१७
अक्षर (के भेद)	५६८	अनुपक्रमकाल	४५६	अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अक्षर समास	५७०	अनुपक्रमायुक्त	७१३	अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अक्षरारमक ध्रु.	५२४	अनुभागकाष्ठकोटकरण	१०४	अविरतसम्बन्धद्वि ४०, ४३, ५९	
अक्षिप्र	५१९	अनुभववचन	३६२, ३६३	अष्टाश्रु ५३१, ५५३, ५५५, ५६७	
अगस्त्य	६००	अनुभाववन्ध्याभ्यवसाय स्थान		असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
अगाढ (योष)	५६		२२८	असंख्यात भागवृद्धि	५३१
अङ्ग बाह्य	६१२	अनुमान	५२०	असंख्याताभुवमंगा	८२३
अप्रायणीयपूर्व	६०५	अनुयोगध्रु.	५७३	असंज्ञी	८९२, ९३२
अचक्षुदर्शन	६९२	अन्तर्कृद्दर्शांश	५९६	असंयत	५७
अचित्त (योनि)	१५६	अन्तर्मुहूर्त	८१०	अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५
अज्ञान मिथ्यात्व	४७	अन्योन्याम्यस्तराशि	१२२		
अज्ञानवाद	६००	अपकर्ष	७११, ७१२	आ	
अण्डज	१५७	अपगतवेद	४६६	आकारयोनि	१५४
अणु वर्गणा	८२३	अपर्याप्तक	२५१	आकाशगता	६०२
अथःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४	अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८	आक्षेपणीकथा	५९७
अज्ञापन्योपम	२३९	अपूर्वस्पर्धक १२१, १२२, १२५		आचारांग	५९२
अद्भुत	५१९	अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७	आत्मप्रवाद	६०८
अनन्तगुणवृद्धि	५३१	अप्रत्याख्यानावरण	४७३	आत्मांगुल	२३२
अनन्तभागवृद्धि	५३१	अप्रमत्त विरत } ४१, ४४, ७८		आदेय	३४, ३५
अनन्तारात्मक ध्रु.	५२३	„ संयत }		आभीत	५१०
अनन्तानुबन्धी	५७, ४७४	अप्रतिपाति	६२१	आभुग्राण	२६६
अनन्तानुवर्गणा	८२४	अभिनिवोधिक (मतिज्ञान)	५१२	आवली	२१६, ८०९
अननुगामी	६१९	अयोगकेवलिजिन	४१, १२८	आश्वलायन	६००
अनवस्थित	६२०	अर्थपद	५७०	आगुरुदा	५१०
अनाकार उपयोग	१०१	अर्थादर ध्रु.	५६६, ५६८	आस्तिक्य	८०२
अनाहारक	८९६	अर्थावग्रह	५१४	आहारककाययोग	३७४
अनिवृत्तिकरण	४१, ११९, १२०	अवग्रह	५१५	आहारपर्याप्ति	२५२
अनिमृत्	५१९	अवधिज्ञान	६१७	आहारक मिथ्याकाययोग	३७५
अनुकृष्टि	८४	अवसन्नासन्न	२३१	आहार संज्ञा	२६९
अनुक्त	५१९	अवधिदर्शन	६९२	आहारक	८९५
अनुगामी	६१९	अवस्थित	६२०	इ	

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००
अक्षर (के भेद)	५६८
अक्षर समास	५७०
अक्षरारम्भक ध्रु.	५२४
अक्षिप्र	५१९
अगस्त्य	६००
अगाध (दोष)	५६
अङ्ग बाह्य	६१२
अशायणीयपूर्व	६०५
अशशुदर्शन	६९२
अविज्ञ (योनि)	१५६
अज्ञान मिथ्यात्व	४७
अज्ञानवाद	६००
अष्टादश	१५७
अणु वर्णना	८२३
अवःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४
अडापयोग्य	२३९
अधुव	५१९
अनन्तगुणवृद्धि	५३१
अनन्तभाववृद्धि	५३१
अनक्षरारम्भक ध्रु.	५२३
अनन्तानुशङ्धी	५७, ४७८
अवस्थाधुवर्णना	८२४
अवतुषावो	६१९
अवतुषिप्र	६२०
अनाकार उपयो	१०१
अनःपुरक	८१९
अनिवृत्तिकारक	४१, ११९, १२०
अनिवृत्त	५१९
अनुष्ठित	८४
अनुष्ट	५१९
अनुवाचो	११९

अनृततरोपपादिकद्वय	५९६
अनुपक्रमकाल	४५६
अनुपक्रमायुष्क	७१३
अनुभागकाण्डकोटकरण	१०४
अनुभववचन	३६२, ३६३
अनुभागवर्णनाध्यवसाय स्थान	२२८
अनुमान	५२०
अनुयोगध्रु.	५७३
अन्तर्दृष्टराग	५९६
अन्तर्भूत	८१०
अन्योन्याम्यस्तराधि	१२२
अपकर्ष	७११, ७१२
अपगतवैद	४६६
अपर्याप्तक	२५१
अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८
अपूर्वस्पर्धक	१२१, १२२, १२५
अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७
अप्रत्यास्थानावरण	४७३
अप्रमत्त विरत	} ४१, ४४, ७८
„ संयत	
अप्रतिभाति	६२१
अभिनिर्वाधक (अतिज्ञान)	५१२
अयोग्यैवनिर्दिष्ट	४१, १२८
अर्षपद	५७०
अर्षाक्षर ध्रु.	५६६, ५६८
अर्षविच्छेद	५१४
अवच्छेद	५१५
अवधिज्ञान	६१७
अवधुन्नामन्त्र	२३१
अवधिरर्गन	६९२
अवधिरा	६२०

अवाय	५१७
अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अविरतसम्यग्दृष्टि	४०, ४३, ५९
अष्टाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५, ५६७
असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
असंख्यात भागवृद्धि	५३१
असंख्याताधुवर्णना	८२३
असंज्ञो	८९२, ९३२
असंयत	५७
अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५

आ

आकारयोनि	१५४
आकाशगता	६०२
आक्षेपणीकया	५९७
आचारार्थ	५९२
आत्मप्रवाद	६०८
आत्मांगुल	२३२
आदेश	३४, ३५
आभीष्ट	५१०
आयुषाण	२६६
आवलो	२१६, ८०९
आवलायन	६००
आमुरध	५१०
आस्तिक्य	८०२
आहाररक्षापयोग	३७४
आहारपर्याप्ति	२५२
आहारक मिथ्यामययोग	३७५
आहार संज्ञा	२६९
आहारक	८९५

इ

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००
अक्षर (के भेद)	५६८
अक्षर समास	५७०
अक्षरपरमक ध्रु.	५२४
अक्षिप्र	५१९
अगस्त्य	६००
अगाड (शेष)	५६
अज्ञ बाह्य	६१२
अक्षयणीयपूर्व	६०५
अक्षधुर्दान	६९२
अक्षि (योनि)	१५६
अज्ञान मिथ्यात्व	४७
अज्ञानवाद	६००
अपठन	१५७
अणु वर्णना	८२३
अपःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४
अज्ञापर्यायम	२३९
अप्रवृ	५१९
अनन्तगुणवृद्धि	५३१
अनन्तभागवृद्धि	५३१
अनन्तरात्मक ध्रु.	५२३
अनन्तानुबन्धी	५७, ४७४
अनन्तानुबन्धना	८२४
अननुभाषी	६१९
अनन्तरिपद	६२०
अनाहार उपरोक्त	१०१
अनाहारक	८१९
अनिवृत्तकरण	४१, ११९, १२०
अनिवृत्त	५१९
अनुवृत्ति	८४
अनुवृत्त	५१९
अनुवृत्त	११९

अनन्तरोपपादिकदश	५९६
अनुपक्रमकाल	४५६
अनुपक्रमायुक्त	७१३
अनुभागकाण्डकोरकरण	१०४
अनुभयवचन	३६२, ३६३
अनुभागवर्णाम्यवसाय स्थान	२२८
अनुमान	५२०
अनुयोगध्रु.	५७३
अन्तर्दृष्टि	५९९
अन्तर्मुख	८१०
अन्योग्याम्यस्तपसि	१२२
अपकर्ष	७११, ७१२
अपगतवेद	४६६
अपर्याप्तक	२५१
अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८
अपूर्वस्पर्धक	१२१, १२२, १२५
अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७
अप्रत्याख्यानावरण	४७३
अप्रमत्त विरत } ४१, ४४, ७८	
„ संयत }	
अप्रतिपाति	१२१
अभिनिर्बोधक (मतिज्ञान)	५१२
अयोपदेवलिखित	४१, १२८
अर्थपद	५७०
अर्थाक्षर ध्रु.	५६६, ५६८
अर्थावच्छेद	५१४
अवच्छेद	५१५
अवधिज्ञान	६१७
अवध्यात्मन	२३१
अवधिपर्यन्त	६९२
अवधिपद	६२०

अवाय	५१७
अविनाभावसम्यग्ध	५२१
अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अविरतसम्यग्दृष्टि	४०, ४३, ५९
अष्टाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५, ५५७
असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
असंख्यात भागवृद्धि	५३१
असंख्यातानुवर्णना	८२३
असंज्ञी	८९२, ९३२
असंयत	५७
अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५

आ

आकारयोनि	१५४
आकाशयता	६०२
आक्षेपणीकषा	५९७
आचारांग	५९२
आत्मप्रवाद	६०८
आत्मगुण	२३२
आदेश	३४, ३५
आभीष्ट	५१०
आयुषाण	२९९
आवली	२१९, ८०९
आत्मस्वायत्त	१००
आत्मरस	५१०
आस्तित्व	८०२
आहारकाययोग	३७४
आहारपर्याप्ति	२५२
आहारक मिथ्याकाययोग	३७५
आहार संज्ञा	२१९
आहारक	८१५

इ

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००
अक्षर (के भेद)	५६८
अक्षर समास	५७०
अक्षरात्मक ध्रु.	५२४
अक्षिप्र	५१९
अगस्त्य	६००
अगाढ (दोष)	५६
अङ्ग बाह्य	६१२
अप्रायणीयपूर्व	६०५
अचक्षुदर्शन	६९२
अचित्त (मोति)	१५६
अज्ञान मिथ्यात्व	४७
अज्ञानवाद	६००
अण्डज	१५७
अणु वर्गणा	८२३
अवःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४
अढापस्थोपम	२३९
अध्रुव	५१९
अनन्तगुणवृद्धि	५३१
अनन्तभागवृद्धि	५३१
अनन्तरात्मक ध्रु.	५२३
अनन्तानुबन्धी	५७, ४७४
अनन्ताणुवर्गणा	८२४
अननुगामी	६१९
अनवस्थित	६२०
अनाकार उपयोग	९०१
अनाहारक	८९६
अनिवृत्तिकरण	४१, ११९, १२०
अनिमृत्	५१९
अनुकृष्टि	८४
अनुक	५१९
अनुगामी	६१९

अनूत्तरोपपादिकदश	५९६
अनुपक्रमकाल	४५६
अनुपक्रमायुक्त	७१३
अनुभागकाण्डकोटकरण	१०४
अनुभववचन	३६२, ३६३
अनुभागव्याख्यवसाय स्थान	२२८
अनुमान	५२०
अनुयोगध्रु.	५७३
अन्तर्दृष्टसांग	५९६
अन्तर्मूर्त	८१०
अन्योभ्याम्यस्तराशि	१२२
अपकर्ष	७११, ७१२
अपगतवेद	४६६
अपर्याप्तिक	२५१
अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८
अपूर्वस्पर्शक	१२१, १२२, १२५
अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७
अप्रत्यास्थानावरण	४७३
अप्रमत्त विरत	} ४१, ४४, ७८
„ संयत	
अप्रतिपाति	६२१
अग्निनिबोधिक (मतिज्ञान)	५१२
अयोगकेवलिजिन	४१, १२८
अर्धपद	५७०
अर्थादिर ध्रु.	५६६, ५६८
अर्धविग्रह	५१४
अवग्रह	५१५
अवधिज्ञान	६१७
अवसम्नासन्न	२३१
अवधिदर्शन	६९२
अवस्थित	६२०

अवयव	५१७
अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अविरतसम्बन्ध	४०, ४३, ५९
अष्टादश	५३१, ५५३, ५५५, ५९७
असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
असंख्यात भागवृद्धि	५३१
असंख्याताणुवर्गणा	८२३
असंज्ञी	८९२, ९३२
असंयत	५७
अस्तित्वास्तिप्रवाद	६०५

आ

आकारयोनि	१५४
आकाशयता	६०२
आक्षेपणीकया	५९७
आचारांग	५९२
आत्मप्रवाद	६०८
आरवांगुल	२३२
आदेश	३४, ३५
आभीत	५१०
आयुप्राण	२६६
आवली	२१६, ८०९
आस्वलायन	६००
आसुरस्य	५१०
आस्तिक्य	८०२
आहाररूपाययोग	३७४
आहारपर्याप्ति	२५२
आहारक मिथकामयोग	३७५
आहार संज्ञा	२६९
आहारक	८९५

इ

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००
अक्षर (के भेद)	५६८
अक्षर समास	५७०
अक्षरारमक ध्रु.	५२४
अक्षिप्र	५१९
अगस्त्य	६००
अगाड (दोष)	५६
अज्ञ बाह्य	६१२
अज्ञापणीयपूर्व	६०५
अक्षराद्वय	६९२
अक्षि (योनि)	१५६
अज्ञान मिथ्यात्व	४७
अज्ञानवाद	६००
अष्टादश	१५७
अणु वर्णना	८२३
अणुःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४
अज्ञाप्योपम	२३९
अप्रवृ	५१९
अनन्तगुणवृद्धि	५३१
अनन्तमात्रवृद्धि	५३१
अनन्तरात्मक ध्रु.	५२३
अनन्तानुसंधी	५७, ४७४
अनन्तानुसंधा	८२४
अननुषांगी	६१९
अनरक्षित	६२०
अनाकार उपपन्न	१०१
अनाकारक	८९६
अनिकुलिकरण	४१, ११९, १२०
अनिकुल	५१९
अनुकृति	८४
अनुक	५१९
अनुयायी	११९

अनुत्तरोपपादिकद्वय	५९६
अनुपक्रमकाल	४५६
अनुपक्रमायुक्त	७१३
अनुभागकाण्डकोटकरण	१०४
अनुभववचन	३६२, ३६३
अनुभागवन्धाध्यवसाय स्थान	२२८
अनुमान	५२०
अनुयोगध्रु.	५७३
अन्तर्द्वयसांग	५९६
अन्तर्भूत	८१०
अन्योन्याम्यस्वरूपि	१२२
अपकर्ष	७११, ७१२
अपगतवेद	४६६
अपर्याप्तिक	२५१
अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८
अपूर्वस्पर्धक	१२१, १२२, १२५
अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७
अप्रत्यास्थानावरण	४७३
अप्रमत्त विरत } " संयत }	४१, ४४, ७८
अप्रतिराति	६२१
अभिनिर्गोषिक (अतिज्ञान)	५१२
अयोग्यैवलिङ्गिन	४१, १२८
अर्थपद	५७०
अर्थाक्षर ध्रु.	५६६, ५६८
अर्थावच्छेद	५१४
अवच्छेद	५१५
अवधिज्ञान	६१७
अवध्यात्मन्	२३१
अवधिद्वय	६१२
अवधिवत्	६२०

अवाय	५१७
अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अविरतसम्बन्धवृष्टि	४०, ४३, ५९
अष्टाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५, ५५७
असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
असंख्यात भागवृद्धि	५३१
असंख्यातानुवर्गणा	८२३
असंज्ञी	८९२, ९३२
असंयत	५७
अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५

आ

आकारयोनि	१५४
आकाशगतता	६०२
आक्षेपणीकता	५९७
आचारांग	५९२
आत्मप्रवाद	६०८
आत्मांगुल	२३२
आदेश	३४, ३५
आभीष्ट	५१०
आयुयाग	२६६
आवली	२१६, ८०९
आवृत्तावन	१००
आमुरदा	५१०
आस्तिक्य	८०२
आहारकामययोग	३७४
आहारपर्याप्ति	२५२
आहारक मिथ्याययोग	३७५
आहार संज्ञा	२१९
आहारक	८९५

इ

विशिष्ट शब्द-सूची

अ		अनुत्तरोपपादिकदश	५९६	अवाय	५१७
क्रियावाद	६००	अनुपक्रमकाल	४१६	अविनाभावसामान्य	५२१
क्षर (के भेद)	५६८	अनुपक्रमायुष्क	७१३	अविभागप्रतिच्छेद	१२२
क्षर समास	५७०	अनुभागकाण्डकोटकरण	१०४	अविरतसम्पन्नुष्टि ४०, ४३, ५९	
क्षरात्मक ध्रु.	५२४	अनुभयवचन	३६२, ३६३	अष्टागु ५३१, ५५३, ५५५, ५५७	
क्षिप्र	५१९	अनुभागवन्धाभ्यवसाय स्थान		असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
गस्त्य	६००		२२८	असंख्यात भागवृद्धि	५३१
गाढ (दोष)	५६	अनुमान	५२०	असंख्यातानुगमना	८२३
गङ्गा बाह्य	६१२	अनुयोगध्रु.	५७३	असंज्ञी	८९२, ९३२
प्रायणीयपूर्व	६०५	अन्तर्दृष्टपांश	५९६	असंयत	५७
वक्षुदर्शन	६९२	अन्तर्भूत	८१०	अस्तित्वास्तित्प्रवाद	६०५
वित्त (योनि)	१५६	अन्वोऽभ्याभ्यस्तराशि	१२२	आ	
वित्तान मिथ्यात्व	४७	अपकर्ष	७११, ७१२	आकारयोनि	१५४
वित्तानवाद	६००	अपगतवेद	४९६	आकाशगता	६०२
वृद्धज	१५७	अपर्याप्तक	२५१	आक्षेपणीकषा	५९७
वृणु वर्णना	८२३	अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८	आचाराम	५९२
वृषःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४	अपूर्वस्पर्धक	१२१, १२२, १२५	आत्मप्रवाद	६०८
वृद्धापत्योपम	२३९	अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७	आत्मगुल	२३२
प्रप्रुव	५१९	अप्रत्याक्ष्यानावरण	४७३	आदेश	३४, ३५
अनन्तगुणवृद्धि	५३१	अप्रमत्त विरत	} ४१, ४४, ७८	आभीत	५१०
अनन्तभागवृद्धि	५३१	„ संयत		आयुप्राण	२६६
अनक्षरात्मक ध्रु.	५२३	अप्रतिपाति	६२१	आवली	२१६, ८०९
अनन्तानुबन्धी	५७, ४७४	अभिनिवोधिक (मतिज्ञान)	५१२	आश्वलायन	६००
अनन्तानुपूर्वणा	८२४	अयोगकेवलजिन	४१, १२८	आमुरक्ष	५१०
अननुगामी	६१९	अर्थपद	५७०	आस्तित्व	८०२
अनवस्थित	६२०	अर्थाक्षर ध्रु.	५६६, ५६८	आहारवकाययोग	३७४
अनाकार उपयोग	५०१	अर्थाक्षर	५१४	आहारपर्याप्ति	२५२
अनाहारक	८९६	अवग्रह	५१५	आहारक मिथकाययोग	३७५
अनिवृत्तिकरण	४१, ११९, १२०	अवधिज्ञान	६१७	आहार संज्ञा	२६९
अनिमृत्	५१९	अवसन्नासम्भ	२३१	आहारक	८९५
अनुकृष्टि	८४	अवधिदर्शन	६९२	इ	
अनुक	५१९	अवस्थित	६२०	इन्द्र (स्वे. गुह)	४७
अनुगामी	६१९				

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००	अनुत्तरोपपादिकद्वय	५९६	अवाय	५१७
अक्षर (के भेद)	५९८	अनुपक्रमकाल	४५६	अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अक्षर समाप्त	५७०	अनुपक्रमायुक्त	७१३	अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अक्षरारम्भक ध्रु.	५२४	अनुभागकाष्ठकोटकरण	१०४	अविरतसम्बन्ध	४०, ४३, ५९
अक्षिप्त	५१९	अनुभयवचन	३६२, ३६३	अष्टाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५, ५५७
अगस्त्य	६००	अनुभागवन्धाभ्यवसाय स्थान		असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
अगाह (शेष)	५६		२२८	असंख्यात भागवृद्धि	५३१
अज्ञ बाह्य	६१२	अनुमान	५२०	असंख्याताणुवर्गणा	८२३
अज्ञापनीयपूर्व	६०५	अनुयोगध्रु.	५७३	असंज्ञी	८९२, ९३२
अज्ञाद्वर्तन	६९२	अन्तर्कृद्दसांग	५९६	असंयत	५७
अक्षिप्त (योनि)	१५६	अन्तर्भूत	८१०	अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५
अज्ञान मिथ्यात्व	४७	अन्वेष्याम्यस्तपसि	१२२		
अज्ञानवाद	६००	अपकर्ष	७११, ७१२	आ	
अज्ञात	१५७	अपगतवेद	४६६	आकारयोनि	१५४
अणु वर्णना	८२३	अपर्याप्तिक	२५१	आकाशगतता	६०२
अणुःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४	अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८	आक्षेपणीकथा	५९७
अज्ञातयोगम	२३९	अपूर्वसंगर्भक	१२१, १२२, १२५	आचारार्थ	५९३
अज्ञात	५१९	अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७	आत्मप्रवाद	६०८
अज्ञानवृत्ति	५३१	अप्रत्याख्यानावरण	४७३	आत्मांगुल	२३२
अज्ञानभाववृत्ति	५३१	अप्रमत्त विरत	} ४१, ४४, ७८	आदेश	३४, ३५
अनध्यात्मिक ध्रु.	५२३	„ संयत		आभीष्ट	५१०
अनन्तानुसंधी	५७, ४७८	अप्रतिशक्ति	६२१	आयुषाण	२६९
अनन्तानुसंधा	८२४	अभिनिर्वाहिक (मतिज्ञान)	५१२	आवली	२१६, ८०९
अननुवाची	६१९	अयोध-कैवल्यजिन	४१, १२८	आस्त्रलायन	६००
अनन्तरित्व	६२०	अर्थपद	५७०	आमुरा	५१०
अनाकार तन्मय	५०१	अर्थाक्षर ध्रु.	५६६, ५६८	आस्तिवय	८०२
अनाकारक	८९६	अर्थाक्षर	५१४	आहारककाययोग	३७४
अनिर्दिष्टकरण	४१, ११९, १२०	अर्थवृद्ध	५१५	आहारपर्याप्ति	२५२
अनिर्दिष्ट	५१९	अर्थवृद्ध	५१५	आहारक मिथ्याकाययोग	३७५
अनुष्ठिति	८४	अर्थवृद्धि	६१७	आहार संज्ञा	२१९
अनुष्ठ	५१९	अर्थवृद्धि	२३१	आहारक	८९९
अनुष्ठान	११९	अर्थवृद्धि	६२०		
अनुष्ठान	११९				

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००
अक्षर (के भेद)	५६८
अक्षर समास	५७०
अक्षरारम्भक श्रु.	५२४
अक्षिप्र	५१९
अगस्त्य	६००
अगाड (शेष)	५६
अङ्ग बाह्य	६१२
अप्रायणीयपूर्व	६०५
अचक्षुदर्शन	६९२
अचित्त (योनि)	१५६
अज्ञान मिथ्यात्व	४७
अज्ञानवाद	६००
अण्डज	१५७
अणु वर्णना	८२३
अपःप्रवृत्त करण	८०, ८१, १०४
अष्टावत्स्योपम	२३९
अमृष	५१९
अनन्तगुणबुद्धि	५३१
अनन्तभागबुद्धि	५३१
अनन्तरात्मक श्रु.	५२३
अनन्तानुबन्धी	५७, ४७४
अनन्तानुबन्धना	८२४
अननुगामी	६१९
अनवस्थित	६२०
अनाकार उपयोग	१०१
अनाहारक	८९६
अनिवृत्तिकरण	४१, ११९, १२०
अनिमृष्ट	५१९
अनुकृष्टि	८४
अनुक्त	५१९
अनुगामी	६१९

अनुत्तरोपपादिकदश	५९६
अनुपक्रमकाल	४५६
अनुपक्रमायुक्त	७१३
अनुभागकाण्डकोटकरण	१०४
अनुभयवचन	३६२, ३६३
अनुभागवन्पाठ्यवसाय स्थान	२२८
अनुमान	५२०
अनुयोगश्रु.	५७३
अन्तर्कृद्दद्याग	५९६
अन्तर्गृह्यत	८१०
अन्योन्याम्यस्तराधि	१२२
अपकर्ष	७११, ७१२
अपगतवेद	४६६
अपर्याप्तिक	२५१
अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८
अपूर्वस्पर्शक	१२१, १२२, १२५
अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७
अप्रत्याख्यानावरण	४७३
अप्रमत्त विरत	} ४१, ४४, ७८
„ संयत	
अप्रतिपाति	६२१
अभिनिबोधिक (मतिज्ञान)	५१२
अयोगकेवलजिन	४१, १२८
अर्थपद	५७०
अर्थाक्षर श्रु.	५६६, ५६८
अर्थावच्छेद	५१४
अवग्रह	५१५
अवधिज्ञान	६१७
अवसन्नासन्न	२३१
अवधिदर्शन	६९२
अवस्थित	६२०

अवाय	५१७
अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अविरतसम्बन्ध	४०, ४३, ५९
अष्टाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५, ५६७
असंख्यात गुणबुद्धि	५३१
असंख्यात भागबुद्धि	५३१
असंख्यातानुवर्णना	८२३
असंज्ञी	८९२, ९३२
असंयत	५७
अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५

आ

आकारयोनि	१५४
आकाशगता	६०२
आक्षेपणीकया	५९७
आचारान्त	५९२
आत्मप्रवाद	६०८
आत्मागुल	२३२
आदेत	३४, ३५
आभीत	५१०
आमुप्राण	२६६
आवली	२१६, ८०९
आश्चलायन	६००
आमुरक्ष	५१०
आस्थिरय	८०२
आहाररकाययोग	३७४
आहारपर्याप्ति	२५२
आहारक मिथक्राययोग	३७५
आहार संज्ञा	२६९
आहारक	८९५

इ

विशिष्ट सन्दर्भ

अ	अ	अ	अ
अक्रियावाद	६००	अनुत्तरोपपादिकदस	५९६
अक्षर (के प्रे)	५९८	अनुपक्रमकाळ	४५६
अक्षर समाप्त	५७०	अनुपक्रमामुक्त	७१३
अक्षरात्मक ध्रु.	५२४	अनुभागकाण्डकोटकरण	१०४
अक्षिप्त	५१९	अनुमयवचन	३६२, ३६३
अगस्त्य	६००	अनुभागवत्पाठ्यवृत्ताय स्थान	
अगाड (दोष)	५६	अनुपान	२२८
अज्ञ बाह्य	६१२	अनुषोषधु.	५२०
अज्ञातधर्मपूर्व	६०५	अन्तर्कृतदाय	५७३
अज्ञातदर्शन	६१२	अन्तर्गृह्य	५९६
अक्षिप्त (योनि)	१५६	अन्योन्याम्यस्तरादि	८१०
अज्ञान मिथ्यात्व	४७	अपकर्म	१२२
अज्ञानवाद	६००	अपगतबंध	७११, ७१२
अपह्न	१५७	अपयामिक	४६६
अपु वर्णना	८२३	अपूर्वकरण	२५१
अपःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४	अपूर्वस्पर्शक	११८, ११९, १२०, १२१
अज्ञापत्योपम	२३९	अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७
अप्रुष	५१९	अप्रत्यक्षानावरण	४७३
अनन्तगुणवृद्धि	५३१	अप्रमत्त विरत	४१, ४४, ७८
अनन्तभागवृद्धि	५३१	” संभव	
अनन्तरात्मक ध्रु.	५२३	अप्रतिपाति	६२१
अनन्तानुवर्णी	५७, ४७४	अभिनिर्घोषिक (अभिज्ञान)	५१२
अनन्तागुणवर्णना	८२४	अयोग्येकचित्तिज्ञ	४१, १२८
अननुपामो	६१९	अपपद	५७०
अनरक्षित	६२०	अर्थाक्षर ध्रु.	५९६, ५९८
अनाकार उपयोग	१०१	अपविष्ट	५१४
अनाहारक	८९६	अपह्न	५१५
अनिवृत्तिकरण	४१, ११९, १२०	अवधिज्ञान	६१७
अनिगुण	५१९	अवधनाद्यन्त	२३१
अनुकृष्टि	८४	अवधिदर्शन	६१२
अनुक्त	५१९	अवस्थित	६२०
अनुमानो	११९		
		इ	इन्द्र (स्व. गुरु)

अभाव	५१७
अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अविरतसम्बन्ध	४०, ४३, ५९
अष्टाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५, ५५७
असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
असंख्यात भागवृद्धि	५३१
असंख्यातागुणवर्णना	८२३
असंज्ञो	८९२, ९३२
असंयत	५७
अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५
आ	
आकारयोनि	१५४
आकाशगत	६०२
आलोचनीकथा	५९७
आचाराय	५९२
आत्मप्रवाद	६०८
आत्मगुण	२३२
आदेश	३४, ३५
आभीत	५१०
आनुशासन	२१६
आवली	२१६, ८०९
आवलायन	६००
आमुरक्ष	५१०
आस्तिक्य	८०२
आहाररूपकाययोग	३७४
आहाररूपमिति	२५२
आहारक मिथ्याकाययोग	३७५
आहार धर्म	२१९
आहारक	८१५

विशिष्ट शब्द-सूची

अ

अक्रियावाद	६००
अक्षर (के भेद)	५६८
अक्षर समास	५७०
अक्षरात्मक ध्रु.	५२४
अक्षिप्त	५१९
अक्षत्य	६००
अगाड (दीप)	५६
अज्ञ बाह्य	६१२
अक्षयगोमयपूर्व	६०५
अक्षयदर्शन	६१२
अचित्त (योनि)	१५६
अज्ञान मिथ्यात्व	४७
अज्ञानवाद	६००
अक्षय	१५७
अणु वर्णना	८२३
अणु-वर्णनकरण	८०, ८१, १०४
अज्ञानसंयोग	२३९
अणु	५१९
अनन्तगुणवृद्धि	५३१
अनन्तभाववृद्धि	५३१
अनन्तरात्मक ध्रु.	५२३
अनन्तानुसंधान	५७, ४७४
अनन्तगुणवर्णना	८२४
अनन्तवाची	६१९
अनन्तविषय	६२०
अनन्तरात्मक	१०१
अनन्तरात्मक	८१६
अनन्तविषय	४१, ११९, १२०
अनन्त	५१९
अनन्त	८४
अनन्त	५१९
अनन्त	६१९

अनन्तरोपपादिकद्वय	५९६
अनुपपन्नकाल	४१६
अनुपपन्नमायुष्क	७२३
अनुभागकाण्डकोटकरण	१०४
अनुभववचन	३६२, ३६३
अनुभागबन्धाध्यवसाय स्थान	२२८
अनुमान	५२०
अनुयोगध्रु.	५७३
अन्तर्द्वयता	५९६
अन्तर्भूत	८१०
अन्योन्यात्म्यस्तपसि	१२२
अपकर्ष	७११, ७१२
अपगतवेद	४६६
अपघातिक	२५१
अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३, ११८
अपूर्वत्वार्थक	१२१, १२२, १२५
अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७
अप्रत्याक्षानावरण	४७३
अप्रमत्त विरत	४१, ४४, ७८
संयत	
अप्रतिज्ञाति	६२१
अभिनिर्दोषिक (प्रतिज्ञान)	५१२
अवोषकेनेतिनिनि	४१, १२८
अवर्णन	५७०
अवर्णन ध्रु.	५१६, ५१८
अवर्णन	५१४
अवर्णन	५१५
अवर्णन	५१७
अवर्णनात्म्य	२३१
अवर्णन	६१२
अवर्णन	६२०

अवाय	५१७
अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अविरतसम्बन्धवृद्धि	४०, ४३, ५९
अष्टाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५, ५५७
असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
असंख्यात भागवृद्धि	५३१
असंख्यातागुणवर्णना	८२३
असंज्ञी	८९२, ९१२
असंयत	५७
अस्तित्वास्तिसंभाव	६०५

आ

आकारयोनि	१५४
आकारगता	६०२
आधोपनीकया	५९७
आचारार्थ	५९२
आत्मप्रवाद	६०८
आत्मगुण	२३२
आदेश	३४, ३५
आनीत	५१०
आपुत्राण	२६६
आवली	२१६, ८०९
आस्त्रलायन	६००
आमुरध	५१०
आस्त्रिध	८०२
आहाररक्षायोग	३७४
आहाररक्षाति	२६२
आहाररक्षायोग	३७५
आहार संज्ञा	२६९
आहारक	८९९
इ	
इष्ट (१३. गुण)	४७

विशिष्ट शब्द-सूची

अ					
अक्रियावाद	६००	अनुत्तरोपपादिकदश	५९६	अवयव	५१७
अक्षर (के भेद)	५६८	अनुपक्रमकाल	४५६	अविनाभावसम्बन्ध	५२१
अक्षर समास	५७०	अनुपक्रमायुक्त	७१३	अविभागप्रतिच्छेद	१२२
अक्षरात्मक ध्रु.	५२४	अनुभागकाण्डकोत्करण	१०४	अविरतसम्यग्दृष्टि	४०, ४३, ५९
अक्षिप्र	५१९	अनुभववचन	३६२, ३६३	अष्टाशु	५३१, ५५३, ५५५, ५५७
अगस्त्य	६००	अनुभागबन्धाध्यवसाय स्थान		असंख्यात गुणवृद्धि	५३१
अगाध (दोष)	५६		२२८	असंख्यात भागवृद्धि	५३१
अङ्ग बाह्य	६१२	अनुमान	५२०	असंख्यातानुवर्गणा	८२३
अप्रायणीयपूर्व	६०५	अनुयोगध्रु.	५७३	असंज्ञी	८९२, ९३२
अषष्ठदर्शन	६९२	अन्तकृद्दशांग	५९६	असंपत	५७
अचित्त (योनि)	१५६	अन्तर्ग्रह	८१०	अस्तिनास्तिप्रवाद	६०५
अज्ञान मिथ्यात्व	४७	अभ्योन्ध्याम्यस्तराशि	१२२		
अज्ञानवाद	६००	अपकर्ष	७११, ७१२	आ	
अण्डज	१५७	अपगतवेद	४६६	आकारयोनि	१५४
अणु वर्गणा	८२३	अपयौक्तिक	२५१	आकाशगता	६०२
अवःप्रवृत्तकरण	८०, ८१, १०४	अपूर्वकरण	४१, ११२, ११३,	आक्षेपणीकया	५९७
अडास्योपम	२३९		११८	आचारांग	५९२
अद्भुत	५१९	अपूर्वस्पर्धक	१२१, १२२, १२५	आत्मप्रवाद	६०८
अनन्तगुणवृद्धि	५३१	अप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७	आरमांगुल	२३२
अनन्तभागवृद्धि	५३१	अप्रत्यास्थानावरण	४७३	आदेश	३४, ३५
अनसारात्मक ध्रु.	५२३	अप्रमत्त विरत	} ४१, ४४, ७८	आभीत	५१०
अनन्तानुबन्धो	५७, ४७४	„ संयत		आयुप्राण	२६६
अनन्तानुवर्गणा	८२४	अप्रतिपाति	६२१	आवली	२१६, ८०९
अननुगामी	६१९	अभिनिवोधिक (मतिज्ञान)	५१२	आस्त्रालयन	६००
अनवस्थित	६२०	अयोगकेवलजिन	४१, १२८	आसुरक्ष	५१०
अनाकार उपयोग	१०१	अर्पणद	५७०	आस्तिक्य	८०२
अनाहारक	८९६	अर्पांतर ध्रु.	५६६, ५६८	आहारवकाययोग	३७४
अनिवृत्तिकरण	४१, ११९, १२०	अयविग्रह	५१४	आहारपर्याप्ति	२५२
अनिमृत्	५१९	अवग्रह	५१५	आहारक मिथकाययोग	३७५
अनुदृष्टि	८४	अवधिज्ञान	६१७	आहार संज्ञा	२६९
अनुक्त	५१९	अवसन्नासन्न	२३१	आहारक	८९५
अनुगामी	६१९	अवधिदर्शन	६९२		
		अवस्थित	६२०	इ	
				इन्द्र (देव. मुक्त)	४७

जम्बुद्वीपप्रज्ञप्ति	६०१	द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी	७९,	परिग्रहसंज्ञा	२७१
जरायुज	१५७		९३१	परिहारविमुक्ति	६८४, ६८५
जलगता	६०२	द्विरूपधनधारा	२२१	पर्याप्तिक	२५१, २५५
जीवसमास ३३, ३४, ४२, १४२-		द्विरूपधनधनधारा	२२३	पर्याप्ति	३४, ३५, २५१
	१५३	द्विरूपवर्गधारा	२१५, ५३०	पर्याप्तज्ञान	५२७, ५२९, ५५२
जैमिनि	६००	द्वीपसामर प्रज्ञप्ति	६०१	पर्याप्तसमास	५२९, ५५२
ज्ञातु धर्मकथा	५९५			पत्न्य	२१५
ज्ञानप्रवाद	५०६	घ		पाराशर	६००
ज्ञानमार्गणा	५०५	धारणा	५१७	पारिणामिक भाव	४२, ४३
ज्ञानोपयोग	९३३	ध्रुव (ज्ञान)	५१९	पिण्डलि	५३८
		ध्रुवभागहार	६२८, ६३०	पिण्डलि पिण्डलि	५३८
त				पुण्डरीक	५१५
तर्क	५२१	न		पुद्गल	२३१
तापस	४७	नष्ट	६३, ७१	पूर्वस्पर्धक	१२१, १२५
तिर्यग्गति	२७९	नारायण	६००	वैष्णवाद	६००
तेजोदेव्या	७१०	नामागुणहानि	१२२	पोत	१५७
तद्यथा	२३१	नारकगति	२७८	प्रक्षेपक	५३८
तदुक्तलो	२३२	नामसरय	३५९	प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५३८
तिलोक्तद्विन्दुसार	६१२	नाम सामायिक	६१३	प्रथमानुयोग	६०१
व		निगोदकायस्थिति	२२८	प्रतिपाती	५२१
वज्रसमुद्भास	७५५	निर्यनिगोद	३३०	प्रतिपत्तिमास	५७३
वृद्धिार	५९९	निर्गुत्यधर	५१८, ५५९	प्रवराकाश	२१७
वर्धन	६९१	निर्गुत्यपर्याप्त	२५५, २६१	प्रवरांगुल	२१९, २४२, २४४
वर्धनमोक्ष	४३, ४६	निर्वैजनी कथा	५९७	प्रवरावली	२१९
वर्धनोपयोग	९३३	निविष्टिका	६१६	प्रतिक्रमण	५१४
वर्धनकालिक	६१५	निमृत्त	५१९	प्रतिपत्तिपु.	५७२
वैश्वति	२८१	नीलदेव्या	७०८	प्रतीत्यवस्थ	३६०
वैश्वरिज ४०, ४१, ४६, ६०		नीलम पुद्गलपरिवर्तन	७१०	प्रत्यक्ष	५२१
वैश्वरिजि	६२०, ६२२	नीलमंशरीर	३७९	प्रत्यभिज्ञान	५२०, ५२१
वैश्वरिजि	१२२			प्रत्याख्यानपूर्व	६१०
वैश्वरिजि	४६३	पंचाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५	प्रत्येक घटीर	३१५
वैश्वरिजि	४६३	पञ्चदशजन	५७०	प्रत्येकघटीरवर्गणा	८३०
वैश्वरिजि	२६८	पञ्चमासभू.	५७२	प्रत्यक्षविरत	४१, ४६, ५१
वैश्वरिजि	६१७, ९९१	पञ्चदेवता	७१०	प्रमाणपद	५३०
वैश्वरिजि	६१८	पञ्चदेवता	७१०	प्रमाणगुल	२३२
वैश्वरिजि	६१९	पञ्चदेवता	७१०	प्रमाण	६२, ६३
वैश्वरिजि	४६३	पञ्चदेवता	७१०	प्रमाण	३३, ३५
वैश्वरिजि	२९६, ३९६	पञ्चदेवता	७१०	प्रमाण	४८

जम्बुद्वीपप्रशस्ति	६०१	द्वितीयोपसम सम्यग्दृष्टी	७९,	परिग्रहसंज्ञा	२७१
जरायुज	१५७		९३१	परिहारविमुक्ति	६८४, ६८५
जलगता	६०२	द्विरूपधनधारण	२२१	पर्याप्तक	२५१, २५५
जीवसमाप्त ३३, ३४, ४२, १४२-		द्विरूपधनधनधारा	२२३	पर्याप्ति	३४, ३५, २५१
	१५३	द्विरूपधनधारा	२१५, ५३०	पर्यायज्ञान	५२७, ५२९, ५५२
जैमिनि	६००	द्वोपसागर प्रज्ञप्ति	६०१	पर्यायसमाप्त	५२९, ५५२
जागृ धर्मव्या	५९५			पर्याय	२१५
ज्ञानप्रवाद	५०६	घ		पाराशर	६००
ज्ञानमार्गभा	५०५	घारणा	५१७	पारिणामिक भाव	४२, ४३
ज्ञानोपयोग	९३३	ध्रुव (ज्ञान)	५१९	पिदांलि	५३८
		ध्रुवभागहार	६२८, ६३०	पिदांलि पिदांलि	५३८
त				पुण्डरीक	६१५
ठकं	५२१	न		पुद्गल	२३१
ठापय	४७	नष्ट	६३, ७१	पूर्वस्पर्धक	१२१, १२५
तिर्यग्भगति	२७९	नारायण	६००	रैप्पलाद	६००
तैमोदेवता	७१०	नानामुण्डानि	१२२	पोत	१५७
वृष्टकाय	२३१	भारकगति	२७८	प्रक्षेपक	५३८
वृष्टनाभो	२३२	नामसरय	३५९	प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५३८
विलोडविन्दुकार	६१२	नाम सामायिक	६१३	प्रक्षमापयोग	६०१
व		निगोदकायस्थिति	२२८	प्रतिपाद्यी	५७३
वृष्टसमुद्राव	७५५	नित्यनिगोद	३३०	प्रतिपत्तिमास	२१७
वृष्टिहार	५९९	निर्गुण्यसर	५१८, ५६९	प्रवराकाय	२१७
वर्धन	६९१	निर्गुण्यपर्याप्ति	२५५, २६१	प्रवरागुल	२१६, २४२, २४४
वर्धनबोद्ध	४३, ४६	निर्वर्तनी कथा	५९७	प्रवरावली	२१६
वर्धनोपयोग	९३३	निर्विपत्ति	६१६	प्रतिक्रमण	६१४
वृष्टैकादिक	६१५	निमुत्र	५१९	प्रतिपत्तिधु.	५७३
वैवर्ध	२८१	नौनलेदया	७०८	प्रशोत्तरसरय	३६०
वैवर्धिराज	४०, ४१, ४४, ६०	नोर्धर्म पुद्गलपरिवर्तन	७१०	प्रत्यक्ष	५२१
वैवर्धरश्मि	६२०, ६२२	नोर्धर्मघटीर	३७९	प्रत्यभिज्ञान	५२०, ५२१
वोपुण्डानि	१२२	घ		प्रत्यक्षानुपूर्व	६१०
वृष्ट नपुमक	४६३	पंचाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५	प्रत्यक्ष घटीर	३१६
वृष्ट पुत्र	४६३	पञ्चभूतज्ञान	५७०	प्रत्यक्षघटीरपर्यवगा	८१०
वृष्ट दाय	२६८	पञ्चमयावधु.	५७२	प्रत्यक्षविराज	४१, ४४, ४६
वृष्टनन	६१७, ६१९	पञ्चदेवता	७१०	प्रमाणपद	५७०
वृष्टदेवता	६१८	परार्थेव परिवर्तन	७१३	प्रमाणगुल	२३१
वृष्ट कावर्धिराज	६१९	परवानु	२३१, ८०४	प्रमाद	६२, ६३
वृष्ट वयो	४६३	परमार्थ	६२०, ६४८	प्रक्षमा	३३, ३५
वृष्टि-वृष्ट	२१४, २१६	परिहर्ष	६०१	प्रक्षमन	४८

वैक्रियिक काययोग	३७०
वैक्रियिक मिथका.	३७१
वैनयिक	६१४
वैनयिकवाद	६००
वैशेषिक	१४०
व्यंजनावयुह	५१४
व्यवहारकाल	८०८, ८११
व्यवहारपत्य	२३५
व्यवहारपत्योपम	२३६
व्यवहारसत्य	३६०
व्याख्याप्रज्ञप्ति	६०१
व्याख्याप्रज्ञप्ति (अंग)	५९५
व्याघ्रभूति	६००
व्यास	६००

श

शरीरपर्याप्ति	२५२, २६५
शाकल्य	६००
शोच (योनि)	१४६
शुक्ललेश्या	७१०
श्वालीश्लुवा	२६१, २६६
श्रुत अज्ञान	५१०
श्रुतज्ञान	५२३

ध

धर्क	५३१, ५५३, ५५५
------	---------------

स

संक्षेप	३४
संख्याताणुवर्गणा	८२३
संख्यातगुणवृद्धि	५३१
संख्यात भागवृद्धि	५३१
संघात यु.	५७१
संज्ञा	३४, २६९, ९३२
संज्ञो	८९२, ९३२
संघटनकपाय	४७५
संभावनासत्य	३५९
संमूर्धन (अम्)	१५५, १५८, १६०

संयत्तासंयत	४०
संयम	६८१
संयुति सत्य	३५९
संयुत (योनि)	१५६
संवेजनी कथा	५९७
सांख्यबहुरिक प्रत्यक्ष	५२१
सत्यदत्त	६००
सत्यप्रवाद	६०६
सत्यमनोयोग	३५६
सत्यवचनयोग	३५७
सदाशिव	१४०
सत्तांक	५३१, ५५३, ५५४
सप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७
समय	८०८
समवायांग	५९४
समयप्रबद्ध	३८०
समुद्घात	७३५, ८९६
सम्पत्त्व	८०१
सम्पत्त्व (प्रकृति)	५४, ५७
सम्पद्दुष्टो	४०
सम्पक् मिथ्यात्व प्र.	५१
सम्पक्मिथ्यादुष्टो	५२, ८८७
सयोगकेवलजिन	४१, १२८
सरागसम्पद्दर्शन	८०१
सर्वाविधि	६२०, ६२१
साकार उपयोग	९०१
सापरोपम	२४१, २४९
सातिशयाप्रमत्त	७९, ८०
सात्यमुषि	६००
साधारणशरीर	३१६, ३२१
सान्तरमार्गणा	२७६
सामायिक	६१३
सामायिक संयम	६८४
सासादन गु.	४३, ५०
सासादनसम्पद्दुष्टो	४०, ५०, ५१, ८८७

सिद्ध	४२, १३७
सिद्धगति	२८२
सिद्धपरमेष्ठो	४५
सूक्ष्मनिमोड लब्धपर्याप्तक	५२८, ५२९, ५३०
सूक्ष्मकृष्टि	१२१, १२५
सूक्ष्मसागराय (गु.)	४१, १२१, १२५, १२६
सूक्ष्मसागराय संयम	६८६
सूक्ष्मगुल	२१९, २४२, २४४
सूत्र	६०१
सूत्र कृतांग	५९३
सूयंप्रज्ञप्ति	६०१
सोपक्रमकाल	४५६
सोपक्रमामुष्क	७१३
स्तोक	८१०
स्वलगता	६०२
स्वापनाक्षर	५६८, ५६९
स्वानांग	५९३
स्वापना सत्य	३५९
स्वापनासामायिक	६१३
स्पर्श (क्षेत्र)	७६०
स्मृति	५२१
स्वधेन परिवर्तन	७९३
स्वरूपविपर्याप्त	४९
स्वस्थानाप्रमत्त	७९
स्वस्थान स्वस्थान	७३५
स्वद्विषय	६००
स्थितिकाण्डकोटकरण	१०४
स्थितिबन्धापसरण	१०५
स्थितिबन्धाध्यवसायस्थान	२२७

ह

हरिदमधु	६००
हारीत	६००
होयमान	६२०

जन्मद्वेषप्रज्ञति	६०१	द्वितीयोपनाम सम्यग्दृष्टो	७९,	परिग्रहसंज्ञा	२७१
जरायुज	१५७		९३१	परिहारविमुक्ति	६८४, ६८५
जलमदा	६०२	द्विरूपपनधारा	२२१	पर्याप्तिक	२५१, २५५
जीवधर्मात् ३३, ३४, ४२, १४२-		द्विरूपपनापनधारा	२२३	पर्याप्ति	३४, ३५, २५१
	१५३	द्विरूपवर्गधारा	२१५, ५३०	पर्यायज्ञान	५२७, ५२९, ५५२
जैमिनि	६००	द्वोपसागर प्रज्ञति	६०१	पर्यायसमाप्त	५२९, ५५२
ज्ञानधर्मकथा	५९५			पत्न्य	२१६
ज्ञानप्रसाद	५०६	घ		पारावर	६००
ज्ञानमाधर्मा	५०५	धारणा	५१७	पारिणामिक भाव	४२, ४३
ज्ञानोन्नयन	९३३	मूक (ज्ञान)	५१९	पिपुलि	५३८
		मूर्तभागहार	६२८, ६३०	पिपुलि पिपुलि	५३८
त				पुण्डरीक	६१५
तर्क	५२१	न		पुद्गल	२३१
तारक	४३	नष्ट	६३, ७१	पूर्वस्पर्धक	१२१, १२५
त्रिर्बन्धप्रति	२०२	नारायण	६००	वैष्णवाद	६००
तेजोदेवता	७१०	नानागुणहानि	१२२	पोत	१५७
वपकान	२३१	नारकप्रति	२७८	प्रक्षेपक	५३८
वपनालो	२३२	नामधरय	३५९	प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५३८
विशोक्तिरुद्गार	६१२	नाम सामायिक	६१३	प्रथमानुयोग	६०१
इ		निगोदकायस्थिति	२२८	प्रतिपातो	६२१
एकसमुद्भात	७५५	नित्यनिगोद	३३०	प्रतिपत्तिप्रमाप्त	५७३
दृष्टिकार	५९९	निवृत्त्यपार	५१८, ५९९	प्रत्यक्षात्	२१७
दर्शन	६९१	निवृत्त्यपत्ति	२५५, २६१	प्रत्यगुल	२१९, २४२, २४४
दर्शनमोह	६१, ४९	निर्वन्नी कथा	५९७	प्रत्यगुली	२१९
दर्शनोपपाद	९३३	निर्विच्छिन्ना	६१९	प्रतिक्रमण	६१४
दृष्टीकालक	६१५	निमृत्	५१९	प्रतिपत्तिपु.	५०२
देवप्रति	२८१	नीललेखा	७०८	प्रतीत्यवस्था	३९०
देवप्रति ४०, ६१, ४८, ६३		नोर्ध्वं पुरुषकारिर्बर्धन	७१०	प्रत्यय	५२१
देवप्रति	६२०, ६२२	नोर्ध्वंयथैव	३३९	प्रत्यभिज्ञान	५२०, ५२१
द्विगुणनि	१२२	प		प्रत्यक्षानपूर्व	६१०
द्वय नूनक	४९३	पंचाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५	प्रत्यक्षं धरीर	३१९
द्वय पुरुष	४९३	पञ्चभुजः	५३०	प्रत्यक्षधरीरवर्धना	८३०
द्वय दान	२१४	पञ्चवक्त्रपु.	५३२	प्रत्यक्षरिख	४१, ४४, ९१
द्वयन	६६३, ७९३	पञ्चदेवता	७१०	प्रमाणर	५३०
द्वयदेवता	६९८	पञ्चदेव प्रतिपत्ति	७१३	प्रमाणानुक्त	२३२
द्वय नाना	६१३	पञ्चानु	२३१, ८०६	प्रमाण	१२, ९३
द्वय नाना	४९३	पञ्चकालः	६२०, ६६८	प्रकृत्या	३३, ३५
द्वयदेवता	२१४, २९५	पञ्चकाल	६०१	प्रकृत्य	४८

बन्धुद्वीपनजति	६०१
जरायुज	१५७
जलमदा	६०२
जीवघमाय ३३, ३४, ४२, १४२-	
	१५३
जीमिनि	६००
मातृ धर्मकथा	५९५
मानववाद	५०६
मानवार्थमा	५०५
मानवबोध	९३३

त

घट	५२१
घात	४७
घिर्षवति	२७९
घेदोदका	७१०
घण्टाव	२३१
घण्टावली	२३२
घिनीकविन्दुवार	६१२

द

दण्डवन्धुवत्	७५५
दुष्टिमा	५९९
दुर्धन	५९१
दुर्धनो	४३, ४५
दुर्धनोत्पन्न	९३३
दुर्धनोदका	९१५
दुर्धनो	२८१
दुर्धनो १०, ११, ४६, ५७	
दुर्धनो	५१०, ५२२
दुर्धनो	१२३
दुर्धनो	४९३
दुर्धनो	४९३
दुर्धनो	२६४
दुर्धनो	९६७, ९९३
दुर्धनो	९९८
दुर्धनो	९९३
दुर्धनो	४५३
दुर्धनो	२९६, २९९

द्वितीयोपपन्न सम्पद्दृष्टी	७९,
	९३१
द्विपथनधारा	२२१
द्विपथनधाराधारा	२२३
द्विपथनधाराधारा	२१५, ५३०
द्विपथनधारा प्रजति	६०१
	घ
धारणा	५१७
धृक् (ज्ञान)	५१९
धृक्भागहार	६२८, ६३०

न

नट	६३, ७१
नारायण	६००
नानागुणहानि	१२२
नारकपति	२७८
नामधर	३५९
नाम सामाधिक	६१३
निगोदकापतिवति	२२८
निगोदकापतिवति	३३०
निगोदकापतिवति	५१८, ५५९
निगोदकापतिवति	२५५, २५१
निगोदकापतिवति	५९७
निगोदकापतिवति	६१५
निगोदकापतिवति	५१९
निगोदकापतिवति	७०८
निगोदकापतिवति	७२०
निगोदकापतिवति	३७९

प

पंचाङ्ग	५३१, ५५३, ५५५
पञ्चभुज	५३०
पञ्चभुज	५३२
पञ्चभुज	७१०
पञ्चभुज	७१३
पञ्चभुज	२३१, ८०६
पञ्चभुज	९१०, ९६८
पञ्चभुज	९०१

परिग्रहयज्ञा	२७१
परिहारविमुक्ति	६८४, ६८५
पर्याप्तिक	२५१, २५५
पर्याप्ति	३४, ३५, २५१
पर्याप्तज्ञान	५२७, ५२९, ५५२
पर्याप्तमात्र	५२९, ५५२
पर्याप्त	२१९
पाराधर	६००
पारिणामिक भाव	४२, ४३
पितृलि	५३८
पितृलि पितृलि	५३८
पुण्डरीक	६१५
पुण्डरीक	२३१
पूर्वस्पर्धक	१२१, १२५
पुण्डरीक	६००
पौत्र	१५७
प्रक्षेपक	५३८
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५३८
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	६०१
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	६२१
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५३३
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	२१७
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	२१६, २४२, २४४
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	२१५
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	९१६
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५०२
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	३१०
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५३१
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५२०, ५३१
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	९१०
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	३१६
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	८१०
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	४१, ४४, ५१
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	५३०
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	२३३
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	६२, ६३
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	३३, ३५
प्रक्षेपक प्रक्षेपक	४८

वैद्विषिक कामयोग	३७०	संज्ञासंमत	४०	मित्र	४२, १३७
वैद्विषिक विषयका.	३७१	संनम	१८१	मित्रवति	२८२
वैद्विषिक	११४	संज्ञित सत्य	३१९	मित्रारभेओ	४९
वैद्विषिकवाद	१००	संज्ञा (योनि)	१५९	मृगमनिमोद लभ्यतापीक	
वैद्विषिक	१४०	संज्ञेय्यो कथा	५९७		५२८, ५२९, ५३०
व्यवहारवह	५१४	गोभ्यरक्षारिक प्रत्यय	५२१	मृगमकुडि	१२१, १२५
व्यवहारवह	८०८, ८११	गदपद	१००	मृगमगोराव (गु.)	४१, १२१, १२५, १२६
व्यवहारवह	२३५	गद्यप्रवाह	६०९	मृगमगोराव संयम	१८६
व्यवहारवहोपम	२३६	गद्यमनोयोग	३५९	मृगमगुह	२१६, २४२, २४४
व्यवहारवह	३१०	गद्यमनोयोग	३५७	मृग	१०१
व्याख्याप्रगति	१०१	गद्यप्रति	१४०	मृग कुटीय	५९३
व्याख्याप्रगति (अंग)	५९५	गद्यांक	५३१, ५५३, ५५४	मृगप्रगति	६०१
व्याख्याप्रगति	१००	गद्यप्रतिष्ठित प्रत्येक	३१७	गोपक्रमकाल	४५६
व्याख्या	१००	गद्यप्रति	८०८	गोपक्रममृग	७१३
ग		गद्यप्रति	५९४	स्तोक	८१०
गरीरपपाति	२५२, २६५	गद्यप्रति	३८०	स्वलयता	१०२
गकल्य	६००	गद्यप्रति	७३५, ८९६	स्थापनाशर	५६८, ५६९
गोद (योनि)	१४६	गद्यप्रति	८०१	स्थानाव	५९३
गुणलक्षणा	७१०	गद्यप्रति (प्रति)	५४, ५७	स्थापना घर	३५९
गवाधोद्धवास	२६१, २६६	गद्यप्रति	४०	स्थापनासामायिक	६१३
गुह ज्ञान	५१०	गद्यप्रति मिथ्यात्व प्र.	५१	सर्प (धोत्र)	७९०
गुहज्ञान	५२३	गद्यप्रति मिथ्यादुष्टो	५२, ८८७	स्मृति	५२१
प		गद्यप्रति मिथ्यादुष्टो	४१, १२८	स्वधोत्र परिवर्तन	७९३
पदक	५३१, ५५३, ५५५	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	८०१	स्वरूपविपर्यय	४९
स		गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	६२०, ६२१	स्वस्थानाप्रमत्त	७९
संक्षेप	३४	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	१०१	स्वस्थान स्वस्थान	७३५
संख्यातागुवर्गणा	८२३	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	२४१, २४९	स्वस्थान स्वस्थान	६००
संख्यातागुवर्गणा	५३१	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	७९, ८०	स्थितिबन्ध	१०४
संख्यात भागवृद्धि	५३१	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	६००	स्थितिकाण्डकोटरण	१०५
संख्यात भागवृद्धि	५३१	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	३१६, ३२१	स्थितिकान्ध्यापवर्ण	१०५
संघात शु.	५७१	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	२७६	स्थितिकान्ध्यापवर्ण	२२७
संज्ञा	३४, २६९, ९३२	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	६१३	ह	
संज्ञा	८९२, ९३२	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	६८४	हरिश्मथु	६००
संज्ञा	४७५	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	४३, ५०	हारीत	६००
संभावनासरय	३५९	गद्यप्रति मिथ्यादर्शन	४०, ५०, ५१, ८८७	हीयमान	६२०
संमूर्धन (जन्म)	१५५, १५८, १६०				